आध्यात्मिक प्रश्नोत्तरी

कृति

(संकलन)

स्पार्क (SpARC)

स्पार्क (SpARC)

स्पार्क (SpARC) एक अनुसन्धान प्रभाग (Research Wing) है जो कि देश तथा विदेश के अनेक स्थानों पर कार्य कर रहा है। स्पार्क (SpARC) शब्द का विस्तार (Fullform) Spiritual Applications Research Centre है और इसका लक्ष्य है विश्व नव-निर्माण के कार्य में अध्यात्म एवं विज्ञान को एक-दूसरे का सहयोगी बनाना। इसी लक्ष्य-पूर्ति के लिये स्पार्क मनन-चिंतन और विचार सागर मंथन के द्वारा ईश्वरीय ज्ञान को वैज्ञानिक पृष्ठभूमि और विज्ञान के विरोधोक्ति युक्त शाखाओं को आध्यात्मिक पृष्ठभूमि प्रदान करते हुए दोनों को एक-दूसरे के समीप लाकर आपस में मिलकर कार्य करने के लिए तैयार कर रहा है।

इस कार्य में तीव्र गति से अग्रसर होने के लिए तथा जीवन के समस्त पहलुओं में आध्यात्मिकता का प्रयोग और उपयोग से प्राप्त परिणामों को सर्वमान्य बनाने के लिए प्रभावशाली विधि, साधन और तकनीक का विकास करने आदि कार्य में **स्पार्क सर्व प्रकार के अनुसन्धानों को प्रोत्साहित करता है।**

लोकल चैप्टर:

स्पार्क की गतिविधियों को और अधिक गतिशील बनाने के लिए देश-विदेश में स्पार्क के लोकल चैप्टर्स चल रहे हैं। एक अथवा एक से अधिक सेवाकेन्द्र, शहर, राज्य अथवा देश के 5 से अधिक बी.के. भाई-बहनों के समूह जब मिलकर स्पार्क के गतिविधि को कार्यान्वित करते हैं उसे स्पार्क लोकल चैप्टर (Local Chapter) कहा जाता है। किसी भी स्थान पर लोकल चैप्टर शुरू करने के लिए यह आवश्यक है कि उस स्थान के सेवाकेन्द्र की प्रभारी बहन की स्वीकृति से सेवाकन्द्र पर 5 से अधिक दैवी भाई-बहनों का एक ग्रुप तैयार किया जाए। सभी भाई-बहनें सप्ताह में, 15 दिन में या मास में कम से कम एक बार आपस में मिलकर ईश्वरीय ज्ञान बिन्दु पर रूह-रिहान, विचार-सागर मंथन करें तथा कार्यशाला और परिचर्चा आदि कार्यक्रम का आयोजन करें। ब्र.कु. भाई-बहनों के आध्यात्मिक उन्नत्ति के साथ-साथ अन्य आत्माओं की सेवा करने के लिए नवीन विधियों का निर्माण कर सकें।

इसके तहत कईं वर्षों से गांधीनगर, गुजरात मुख्य सेवाकेन्द्र के भाई-बहनों का एक ग्रुप एवं बी.के महेश भाई, अकाउण्टस् आफिस, पाण्डव भवन, साकार एवं अव्यक्त मुरलियों का गहन अध्ययन कर उस पर अभ्यास कर रहे है। इस पुण्य पुरुषार्थ के फल स्वरूप इस ग्रुप ने 85 से अधिक विषयों पर साकार एवं अव्यक्त बापदादा के महावाक्यों को सुनियोजित तरीके से संकलन किया है। उनमें से **'आध्यात्मिक प्रश्नोत्तरी'** एक है।

प्रस्तावना

''ज्ञान रत्न जो अभी तुम लेते हो, वह फिर सच्चे हीरे-जवाहर बन जाते हैं। 9 रत्न की माला कोई हीरे-जवाहरों की नहीं है। इन रत्नों की ही माला है। मनुष्य लोग फिर यह रत्न समझ अंगूठियां पहन लेते हैं। इन ज्ञान रत्नों की माला इस संगम पर ही मिलती है। ये रत्न ही तुमको भविष्य 21 जन्म मालामाल बनाते हैं।''

सा.बाबा 10.1.69

शिवबाबा सत्य है, ज्ञान का सागर है, सर्वशक्तिवान, सर्वज्ञ है। वही पूर्ण सत्य बताने में समर्थ है और वही सत्य बताता है। उसने जो भी महावाक्य उच्चारे हैं, वे सभी देश-काल-परिस्थिति को देखते हुए सत्य हैं और उस देश-काल-परिस्थिति के अनुसार अति आवश्यक भी हैं। उसमें हमको कोई सन्देह नहीं है और हम समझते हैं कि किसी भी ब्रह्मा वत्स को न उनमें सन्देह है या न ही हो सकता है परन्तु यह भी सत्य है कि सभी आत्माओं की बौद्धिक शक्ति में भिन्नता है, इसलिए उस सत्य को समझने और धारण करने में नम्बरवार होंगे ही हैं। परमात्मा जो ये ज्ञान दिया है, वह अति गूढ़ रहस्यों से युक्त है और आत्मा को परमानन्द को देने वाला है, उसकी सत्यता को अनुभव करने और धारण करने के लिए अभीष्ठ पुरुषार्थ तो हर आत्मा को करना ही होगा। सत्य को अनुभव करने के लिए प्रश्नोत्तर एक सहज विधि-विधान है। बाबा भी समय प्रति समय मुरली में कहते हैं कि ज्ञान का मनन-चिन्तन करो, अपनी घोट तो नशा चढ़े, मैं जो ज्ञान देता हूँ इसकी सत्यता को अनुभव करो और कराओ।

हमको इस सत्य को भी सदा याद रखना है कि शिवबाबा हमारा मात-पिता भी है, शिक्षक भी है और सत्गुरु भी है। मात-पिता के रूप में वह हमारी पालना करता है, हमारे स्वमान को जाग्रत करता है, मात-पिता के समान अपनी उंगली का सहारा देकर चलना सिखाता है। उस भावना से भी बाबा ने अनेक महावाक्य उच्चारण किये हैं।

वह हमारा शिक्षक भी है तो शिक्षक के रूप में भी अनेक बातें समझाई हैं। जैसे कई बार बाबा कहते हैं कि आई. सी. एस. की पढ़ाई पहले तो नहीं पढ़ाई जायेगी, पहले तो पहले क्लास की पढ़ाई ही पढ़ाई जायेगी। इसी लक्ष्य से बाबा ने आत्मा-परमात्मा का स्वरूप पहले अंगुष्ठाकार बताया और बाद में बिन्दु रूप स्पष्ट किया। ऐसे ही अनेक गुह्य रहस्यों का ज्ञान बाबा ने हमको दिया है, जिसको हम सब ने यथा शक्ति धारण किया है।

सतगुरु के रूप में भी बाबा ने हमको इस विश्व नाटक के अनेक गुह्य रहस्यों का ज्ञान

दिया है और मुक्ति-जीवनमुक्ति का मार्ग दर्शाया है। इस तरह से बाबा ने हमको अनेक बातों का ज्ञान दिया है परन्तु ये बात सदा याद रखनी ही होगी कि ये विश्व-नाटक अनादि-अविनाशी है और इसके कुछ नियम और सिद्धान्त हैं, जो अनादि-अविनाशी है, वे सदा ही सत्य है और सदा ही सत्य रहेंगे। उन सभी सत्यों का ज्ञान भी बाबा ने हमको मुरली में दिया है। इसलिए किसी सत्य को निर्णय करने से पहले बाबा ने जो बात बोली है, उसकी पृष्ठभूमि क्या है, उसका भाव क्या है, वह जानना भी अति आवश्यक है। उसके लिए मुरली को आगे-पीछे भी पढ़कर देखना होगा, तब ही हम उसकी सत्यता को समझ सकेंगे और जब हम इस विश्व-नाटक के यथार्थ सत्यों को समझेंगे तब ही इस ब्राह्मण जीवन का सुर-दुर्लभ मुक्ति-जीवनमुक्ति का सच्चा सुख अनुभव कर सकेंगे। ब्राह्मण जीवन की सफलता का आधार बाबा की मुरली ही है। वही सच्चा गीता ज्ञान है।

जो अनादि-अविनाशी (Eternaal) सत्य हैं, वे सदा ही सत्य हैं। उनमें देश-काल-व्यक्ति के कारण कोई अन्तर नहीं हो सकता है। वे सर्व धर्मों के लिए हैं, सर्व को मान्य होंगे और सभी उनको एकमत से स्वीकार करेंगे। इसमें आत्मा, परमात्मा, विश्व-नाटक के अनादि-अविनाशी नियम और सिद्धान्त मुख्य हैं।

जो स्वेच्छिक विषय हैं, उनके विषय में वैचारिक भिन्नता होना अवश्य सम्भावी है क्योंकि ये विश्व-नाटक विविधतापूर्ण है। ऐसे विषयों में एक-दो के विचारों को सम्मान देकर यथार्थ सत्य का निर्णय करना ही यथार्थ है। ऐसे विषयों में देश-काल-परिस्थितियों के आधार पर किसी व्यक्ति के अपने ही विचारों में भिन्नता हो सकती है, वे परिवर्तन हो सकते हैं, इसलिए उनकी कोई निश्चित (Hard Fast) सीमा-रेखा नहीं हो सकती है। इनमें धारणायें और सेवा के क्षेत्र विशेष हैं। बाबा की मुरली में भी कई विषयों पर देश-काल-परिस्थिति के अनुसार अलग-अलग उत्तर होते हैं।

इस प्रश्नावली के उत्तर लिखने के लिए मैंने यथार्थ सत्य को जानने और लिखने के लिए बाबा के महावाक्यों से बाबा के भाव को खोजने और समझने का पूरा पुरुषार्थ किया है। जिस बात के लिए बाबा ने मुरलियों में देश-काल-परिस्थिति के अनुसार अलग-अलग बातें कहीं हैं और यथार्थ सत्य का निर्णय हमारे ऊपर छोड़ दिया है, वहाँ हमने उसके विषय में अपने विचार भी व्यक् किये हैं। जिन आध्यात्मिक विषयों और जानने योग्य तथ्यों के विषय में बाबा ने कुछ नहीं कहा है, उनके विषय में भी मैंने अपने विचार व्यक्त किये हैं। दूसरे भाई-बहनों के विचार हमारे से भिन्न हो सकते हैं। यदि कोई भाई-बहन अपने विचारों से हमको अवगत

कराता है और वे अधिक विवेकयुक्त और तर्क-संगत, ईश्वरीय महावाक्यों के अनुरूप होंगे तो मैं उनको अवश्य स्वीकार करूँगा। उन सत्यों को जानना और अनुभव करना ही हमारा लक्ष्य है।

गीता ज्ञान का महाशास्त्र है, उसमें इस विश्व-नाटक के अनेक गूढ़ रहस्यों का उद्घाटन किया गया है और अनेक विषयों पर प्रकाश डाला गया है, जो भक्ति मार्ग की गीता में भी हैं तो शिवबाबा ने जो सत्य गीता ज्ञान दिया है, उसमें भी शिवबाबा ने अनेक विषयों पर प्रकाश डाला है और बाबा ने हम आत्माओं को समय प्रति समय चेलेन्ज किया है कि तुम जज करो कि क्या सत्य है।

''बाप पुरानी दुनिया में आकर नई दुनिया रचते हैं, फिर पुरानी को खलास कर देते हैं। ... यह ड्रामा में नूँध है, इसलिए गायन में भी आता है। ... ऐसे नहीं कि अन्धश्रृद्धा से मान लिया है। कोई भी बात न समझो तो समझने की कोशिश करो, नहीं तो बेसमझ के बेसमझ ही रह जायेंगे।''

सा.बाबा 19.1.08 रिवा.

''तुम बच्चों को कितनी नॉलेज मिलती है परन्तु बच्चे विचार सागर मन्थन नहीं करते, बुद्धि भटकती रहती है तो ऐसी-ऐसी प्वाइन्ट्स भाषण में सुनाने में भूल जाते हैं। बाप का पैगाम सबको देना है।... बाप कहते हैं - देह सहित देह के सभी सम्बन्धों को भूल मुझे याद करो।... इस योग अग्नि से तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे।''

सा.बाबा 24.1.08 रिवा

आध्यात्मिक प्रश्नावली

विषय सूची-I

प्रस्तावना

आध्यात्मिक प्रश्नावली

आध्यात्मिक प्रश्न और उनके विषय में विचारणीय तथ्य

आत्मा

परमात्मा

त्रिलोक एवं कल्प-वृक्ष

ड्रामा अर्थात् विश्व-नाटक

सृष्टि-चक्र और स्वर्ग-नर्क

सतयुग

योगबल और भोगबल

पुरुषोत्तम संगमयुग और उसकी प्राप्तियाँ

कर्म

जमा का खाता

योग और धारणा

मृत्यु और मृत्यु-विजय

गीता

भारत और भगवान

एडवान्स पार्टी और एडवान्स जन्म एवं दादी जी

साक्षात्कार और ध्यान

स्थापना और विनाश

स्थापना

विनाश

एवर-रेडी और अचानक

बैलेन्स, समान स्थिति और एकरस स्थिति

विभिन्न धर्म और उनकी स्थापना

ब्राह्मण जीवन

सुख का आधार एवं दुख-अशान्ति का कारण और निवारण

पवित्रता

श्रीमत और निश्चयबुद्धि

पुरुषार्थ

साइलेन्स की शक्ति

आत्मिक शक्ति और वास्तु-कला अर्थात् वास्तु-शास्त्र

बाप समान सम्पूर्ण और सम्पन्न

ब्रह्मा और सृष्टि-रचना

विविध विषय

विचारणीय विविध प्रश्न

सारांश

आध्यात्मिक प्रश्नावली

विषय सूची-II

प्रस्तावना

आध्यात्मिक प्रश्नावली

आध्यात्मिक प्रश्न और उनके विषय में विचारणीय तथ्य

Q. एक अच्छे गॉडली स्टूडेण्ट का क्या अधिकार और कर्तव्य है?

Q. सर्व प्वाइन्ट्स का सार क्या है अर्थात् सर्व प्रकार के पुरुषार्थ में सफलता का आधार क्या है?

Q. समर्पित जीवन का अर्थ क्या है? क्या समर्पित जीवन का अर्थ बुद्धि को ताला लगा देना अर्थात् अन्धश्रृद्धा से हर बात को स्वीकार करते जाना है या आत्मा, परमात्मा और विश्व-नाटक के ज्ञान पर निश्चय रखकर ईश्वरीय महावाक्यों पर पूर्ण श्रृद्धा-भावना रखते हुए ईश्वरीय ज्ञान के रहस्यों को समझने का पुरुषार्थ करना, परस्पर विचारों का आदान-प्रदान करके समर्पित जीवन की सफलता का मार्ग प्रशस्त करना है?

Q. परमात्मा ज्ञान का सागर, परम शिक्षक है, वह हमको पढ़ा रहे हैं, उनकी हर बात श्रृद्धा-भावना रखकर आंखे बन्द करके मानते हुए चलने में कल्याण है या उसको समझने के लिए उस पर विचार भी करना चाहिए? यदि श्रृद्धा-भावना से मानकर चलने में कल्याण है तो बाबा जो कहते तुम विचार-सागर मन्थन करो, उसका भाव-अर्थ क्या है?

Q. क्या हमको चिन्तित होकर किसी घटना विशेष, किसी कार्य विशेष, व्यक्ति विशेष ... के लिए चिन्तन करना चाहिए?

Q. बाबा ने सारा ज्ञान दिया है या अभी रहा हुआ है, क्या हम किसी को कह सकते हैं कि यह बात बाबा ने अभी हमको नहीं बताई है?

आत्मा

Q. सतयुग में अकाले मृत्यु नहीं होती है, इसका भाव-अर्थ क्या है?

Q. क्या द्वापर-कलियुग में भी कोई की अकाले मृत्यु होती है? यदि हाँ तो अकाले मृत्यु क्या है और कैसे?

Q. क्या किसी दुर्घटना में शरीर छोड़ने वाली सभी आत्मायें भटकती हैं?

Q. किसी अचानक घटना या दुर्घटना आदि में किसी की मृत्यु होती है तो क्या वह अकाले मृत्यु है और वे सभी आत्मायें भटकती हैं?

Q. चारपाई पर बीमार, दुखी होकर शरीर छोड़ने और किसी आकस्मिक घटना में तुरन्त शरीर छोड़ देने में कौनसा शरीर छोड़ना अच्छा होगा?

Q. जड़-जंगम और चेतन प्रकृतियों के गुण-धर्म क्या हैं और तीनों में अन्तर क्या है?

Q. पेड़-पौधों की प्रक्रिया जीव या शरीर जैसे ही होती है अर्थात् शरीर के समान घटते बढ़ते हैं परन्तु जैसे शरीर में आत्मा अलग से प्रवेश करती है, उस तरह से पेड़-पौधों में कोई अलग से आत्मा प्रवेश करती है? यदि करती है तो कहाँ से और कैसे?

Q. क्या जैसे चेतन मे अपनी प्रजाति को बढ़ाने की होड़ होती है, वैसे जंगम में होती है?

Q. क्या मन-बुद्धि आत्मा से अलग कोई चीज है? यदि है तो उनका क्या अस्तित्व है अर्थात् वे किस तत्व की बनी हैं और देह में और देह के बाद कहाँ रहती हैं अथवा क्या होता है?

Q. मनुष्य-योनि के अतिरिक्त अन्य योनियों की आत्मायें हैं या नहीं? यदि नहीं हैं तो उनमें क्या कमी है, जिससे उनको चेतन आत्मा नहीं कह सकते और यदि हैं तो विनाश के बाद वे परमधाम जायेंगी या नहीं? यदि परमधाम नहीं जायेंगी तो क्यों नहीं जायेंगी और वे बाद में कहाँ रहेंगी?

Q. आत्मा की चेतनता की परख या कसौटी क्या है?

Q. विनाश के बाद कीट-पतंगो, पशु-पक्षी, जानवरों की आत्मायें कहाँ जायेंगी?

Q. क्या जानवरों और अन्य योनि की आत्माओं के भी कर्मों का हिसाब-किताब होता है, उनके सुख-दुख का आधार क्या है?

Q. क्या अन्य योनियां भोग योनियां हैं या उनके लिए कर्म और फल का विधि-विधान है?

Q. भगवानोवाच्य आत्मा में ही खाद पड़ती है - आत्मा में कौनसी खाद पड़ती है और कैसे खाद पड़ती है?

Q. लिंग परिवर्तन की प्रक्रिया होगी या नहीं? यदि होगी तो वह Normal होगी या Abnormal अर्थात् अपवाद के रूप में होगी?

Q. क्या नैसर्गिक संस्कारों में परिवर्तन सम्भव है?

Q. क्या बाबा अर्थात् भगवान जिस आत्मा को चाहे उसको बच्चा अर्थात् लड़का बनाये और जिसको चाहे उसको बच्ची अर्थात् लड़की बनाये या जिसको चाहे स्त्री से पुरुष बनाये और जिसको चाहे पुरुष से स्त्री बनाये? यदि बना सकता है और बनाता है, तो उसका आधार क्या होगा अर्थात् आत्मा की अपनी इच्छा पर बनायेगा या भगवान अपनी इच्छा पर बनायेगा या अन्य कोई आधार होगा?

Q. संस्कार आत्मा में है या शरीर में हैं? यदि संस्कार आत्मा में हैं तो पुरुषत्व और स्त्रीत्व के संस्कारों का गुण-धर्मों का आधार शरीर है या आत्मा? इस सत्य पर विचार करके निर्णय करो कि कहाँ तक पुरुष की आत्मा, स्त्री और स्त्री की आत्मा, पुरुष बन सकती है अर्थात् बन सकती है या नहीं?

Q. क्या बिना शरीर के आत्मा से शक्ति रेडियेट होती है अर्थात् परमधाम में आत्मा से शक्ति रेडियेट होती है और यदि होती है तो क्या दूसरी आत्माओं पर उसका प्रभाव पड़ता है?

Q. क्या मनुष्यात्मा किसी अन्य योनि में जन्म लेती है या ले सकती है या किसी अन्य योनि की आत्मायें मनुष्य योनि में आ सकती हैं? यदि आ सकती हैं तो कैसे और यदि नहीं तो क्यों?

Q. क्या विनाश के समय हर योनि की कुछ आत्मायें बीज रूप में बचेंगी या मनुष्य और कुछ अच्छी योनि की आत्मायें ही बचेंगी अर्थात् क्या सतयुग में हर योनि की आत्मायें बीजरूप में होगी या मनुष्यात्मायें और कुछ अच्छी योनि की आत्मायें ही होंगी?

Q. सतयुग में सर्प-शेर आदि होंगे या नहीं होंगे? यदि नहीं होंगे तो ये बाद में कैसे पैदा होंगे? यदि सर्प-शेर आदि बिना बीज के पैदा हो सकते हैं तो मनुष्य क्यों नहीं पैदा हो सकते हैं?

Q. मुक्ति-जीवनमुक्ति आत्मा की मूलभूत प्यास और हर आत्मा के जीवन का अभीष्ठ लक्ष्य है परन्तु मुक्ति-जीवनमुक्ति का यथार्थ अनुभव कब, कहाँ और कैसे सम्भव है?

Q. पवित्र आत्मा की क्या पहचान है अर्थात् पवित्रता की यथार्थ धारणा क्या है?

Q. पवित्रता का भाव-अर्थ क्या है? क्या ब्रह्मचर्य का पालन ही पवित्रता है।

Q. आत्मायें इस रंगमंच पर आकर पार्ट बजाती हैं। पार्ट बजाने के लिए देह की आवश्यकता होती है तो आत्माओं को पार्ट बजाने के लिए देह धारण करने की कितनी विधियां हैं, जिनसे आत्मा पार्ट बजाने के लिए देह धारण करती है?

Q. क्या एक आत्मा का संकल्प और वायब्रेशन दूसरी आत्मा के संकल्प और विचारों को प्रभावित करता

है? यदि करता है तो कैसे करता है?

Q. समर्थ आत्मा या शक्ति-स्वरूप आत्मा की निशानी क्या है?

Q. योग से आत्मा को शक्ति मिलती है या आत्मा की शक्ति जाग्रत होती है?

Q. हमारे सिर पर पापों का बोझा कितना है, उसकी कसौटी क्या है अर्थात् उसकी पहचान क्या है? आत्मा पर पापों का बोझा कितने जन्मों से चढ़ा है और आत्मा पर जंक कितने जन्मों से चढ़ी है?

Q. आत्मा के संस्कारों और शरीर की स्थिति में क्या सम्बन्ध है, दोनों का क्या प्रभाव है?

Q. विदेही बाप देह में आकर आत्माओं को उनकी विदेही स्थिति का अनुभव कराते हैं, तो क्या परमात्मा ये अनुभव अपनी शक्ति से कराता है या आत्मा स्वयं अपनी शक्ति से करती है?

Q. क्या ईविल सोल्स का कोई स्वरूप है यदि है तो कैसा है और आत्माओं का ईविल सोल्स के रूप में भटकने का कारण क्या होता है?

Q. ईविल स्प्रिट्स का प्रत्यक्ष रूप और गुप्त रूप कौन सा है?

Q. आत्मा थकती है या शरीर थकता है?

Q. सोती आत्मा है या शरीर सोता है अर्थात् थकती आत्मा है या शरीर थकता है?

Q. मानसिक रोग क्या हैं, कैसे हैं और उनका कारण क्या है, उनका आत्मा का अपने ऊपर और शरीर पर क्या प्रभाव होता है?

Q. जीवघात और आपघात अर्थात् आत्म-घात एक ही बात है या दोनों में कोई भिन्नता है?

Q. क्या चाहते हुए शरीर का त्याग कर सकते हैं? यदि कर सकते हैं तो क्यों और कैसे और यदि नहीं कर सकते हैं तो क्यों?

Q. क्या जीवघात करने वाले पर पाप चढ़ता है? यदि हाँ तो क्यों और कैसे? यदि नहीं तो क्यों?

Q. जीवघात या आपघात के लिए उत्तरदायी कौन अर्थात् अपराधी कौन? अर्थात् क्या जिससे परेशान होकर किसी ने जीवघात-आपघात किया, वह या जिसने उसकी बात सुनी नहीं, वह या जीवघात-आपघात करने वाला स्वयं?

Q. भगवानुवाच - 'निश्चयबुद्धि विजयन्ति, प्रीतबुद्धि विजयन्ति' तो इन ईश्वरीय महावाक्यों का अस्तित्व क्या रहा अर्थात् जीवघात-आपघात करने वाले को यथार्थ ज्ञानी कहा जा सकता है?

Q. ये घटनायें रोकने के लिए यथार्थ और प्रभावी पुरुषार्थ क्या?

Q. स्वेच्छा से देह त्याग और जीवघात में क्या अन्तर है, जो एक पुण्यात्मा कहलाता है और दूसरा पापात्मा कहलाता है?

Q. परमात्मा ने कहा है - परमात्मा का सन्देश सर्व आत्माओं को मिलेगा, जिसके आधार पर ही वे मुक्ति में जायेंगी और जीवनमुक्ति का अनुभव करेंगी। मुक्ति-जीवनमुक्ति हर आत्मा का ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार है। अब प्रश्न उठता है कि क्या सर्व आत्माओं को परमात्मा का सन्देश मिलेगा और यदि मिलेगा तो कैसे मिलेगा?

Q. क्राइस्ट को जब क्रास पर चढ़ाया तो क्राइस्ट की आत्मा निकल गई होगी अथवा क्या हुआ अर्थात् दोनों अलग-अलग हो गये होंगे?

Q. आत्मा का इस धरा पर प्रथम बार किसी परिवार में जन्म लेने का आधार क्या है?

Q. आत्मा परमधाम से जब सतयुग में आयेगी तो वहाँ स्थिति क्या होगी और क्यों होगी?

Q. हम सारा हिसाब-किताब समाप्त करके परमधाम जाते हैं और सतयुग से नया हिसाब-किताब आरम्भ

होता है या सतयुग के लिए यहाँ से हिसाब-किताब बनाकर जाते हैं?

Q. क्या आत्मा का कोई वज़न होता है?

Q. आत्मा का परिवार विशेष में या किसी भी रूप में शरीर धारण करने का आधार क्या है?

Q. जीवात्मा अपना आपही मित्र है और आपही अपना शत्रु है, इसका भाव-अर्थ क्या है?

परमात्मा

Q. क्या परमात्मा सृष्टि का रचता है, यदि वह रचता है तो किसका रचता है और कैसे रचता है?

Q. परमात्मा ज्ञाता-दाता अर्थात् विश्व-नाटक के विधि-विधानों को जानने और ज्ञान देने वाला है या विधाता अर्थात् उन विधि-विधानों कों बनाने वाला है? यदि विधाता है तो कैसे?

Q. क्या परमधाम में परमात्मा को संकल्प उठता है कि अब नीचे जाऊं? या और किसी कर्म को करने का संकल्प उठता है?

Q. क्या परमात्मा को परमधाम में यह संकल्प आयेगा? यदि आयेगा तो कैसे और नहीं आयेगा तो क्या होगा?

Q. क्या परमधाम में परमात्मा को संकल्प उठता है, वहाँ वह किसकी पुकार सुनता है?

Q. परमधाम कर्मक्षेत्र नहीं है तो क्या परमात्मा परमधाम में कोई पार्ट बजा सकते हैं अर्थात् कोई कर्म कर सकते हैं?

Q. क्या परमधाम में रहकर कोई आत्मा कोई कार्य कर सकती है? भक्ति मार्ग में जो साक्षात्कार आदि होते हैं, दान-पुण्य का फल मिलता है, वह परमात्मा देते हैं या ड्रामा में नूँध है, उस अनुसार होता है?

Q. क्या कोई भी आत्मा आकाश तत्व में स्थूल या सूक्ष्म शरीर के बिना रह सकती है?

Q. क्या शिवबाबा या ब्रह्मा बाबा को ये संकल्प उठता है या उठ सकता है कि इस दुखी दुनिया का जल्दी विनाश हो? इस विषय में आपका संकल्प और भावना क्या है अर्थात् जल्दी विनाश हो?

Q. परमात्मा को संकल्प उठता है, तब आते हैं या ड्रामा प्लेन अनुसार आते हैं? यदि परमात्मा को संकल्प उठता है तब आते हैं तो क्या आत्माओं को भी संकल्प उठता है, तब आती हैं?

Q. क्या परमात्मा परमधाम में किसकी पुकार सुनता है और वहाँ से किसी की मनोकामनायें पूरी करता है या ये सारा खेल ड्रामा अनुसार ही चलता है और संगमयुग पर ही परमात्मा का पार्ट चलता है जब आत्माओं को ज्ञान देकर पावन बनाने का समय होता है?

Q. क्या इस साकार तन में आने से पहले सूक्ष्मवतन में संकल्प हो सकता है?

Q. क्या परमात्मा को किसी दुखी को देखकर उसके दुख-दर्द की अनुभूति होती है?

Q. परमात्मा सर्वशक्तिवान है और वह सदा अच्छा ही सोचता और करता है परन्तु क्या वह जो चाहे सो कर सकता है?

Q. क्या परमात्मा किसको अधिक देता है और किसको कम? या उसका भण्डारा समान रूप से सब के लिए खुला रहता है, जो जितना चाहे उतना ले?

Q. क्या परमपिता परमात्मा का स्वरूप परिवर्तन होता है, कभी प्यार का सागर हो, कभी न हो, कभी धर्मराज के रूप में हो ...? अर्थात् क्या उसका रूप परिवर्तन होता है या वह सदा एकरस है, हमको अपनी भावना और कर्मों अनुसार अनुभव होता है?

Q. क्या हम परमात्मा की कोई मदद करते हैं या परमात्मा को हमसे किसी मदद की आपेक्षा है?

Q. परमात्मा मनुष्य सृष्टि का ही बीजरूप है या सर्व योनियों की आत्माओं का बीजरूप है? यदि मनुष्य

आत्माओं का ही बीजरूप है तो अन्य योनि की आत्माओं का बीजरूप कौन है?

Q. परमपिता परमात्मा सर्वात्माओं का बाप है या केवल मनुष्यात्माओं का बाप है?

Q. सभी आत्मायें परमात्मा को याद करती हैं और उनसे मिलना चाहती हैं तो उनसे मिलने का विधि-विधान क्या है?

Q. शिवबाबा ब्रह्मा बाबा के ही अन्तिम जन्म में आकर मिलते हैं या सर्वात्माओं के अन्तिम जन्म में आकर मिलते हैं?

Q. परमात्मा सूक्ष्म सृष्टि रचते हैं या ड्रामा अनुसार रच जाती है क्योंकि परमात्मा को ब्रह्मा तन में प्रवेश होने से पहले शरीर ही नहीं तो रचने का संकल्प कैसे आयेगा और रचेंगे भी कैसे?

Q. परमात्मा आकर भक्ति का फल देते हैं या ड्रामा के विधि-विधान अनुसार कर्मों का फल स्वत: मिलता है? भक्ति का फल क्या है और परमात्मा कब, कहाँ और कैसे वह फल देते हैं?

Q. क्या परमात्मा भक्ति मार्ग में भक्तों को साक्षात्कार कराता है और यदि कराता है तो कैसे और यदि नहीं तो भक्तों को साक्षात्कार कैसे होता है? भक्तों को यदि परमात्मा साक्षात्कार नहीं कराता है तो वह क्यों कहते हैं कि मैं ही भक्तों को साक्षात्कार कराता हूँ?

Q. क्या परमात्मा में देहभान है? यदि नहीं तो क्या कोई भी आत्मा बिना देहभान के इस विश्व-नाटक में पार्ट बजा सकती है, तो परमात्मा कैसे पार्ट बजाते हैं?

Q. क्या परमात्मा कल्प के पुरुषोत्तम संगमयुग के अतिरिक्त किसी समय आता है या आ सकता है?

Q. अनेक दुर्घटनाओं को हम विचार करें तो प्रश्न उठता है कि क्या परमपिता परमात्मा हमको उन दुर्घटनाओं से बचा सकता है या नहीं? यदि बचा सकता है तो क्यों नहीं बचाया? यदि वह हमको उनसे नहीं बचा सकता है तो हम परमात्मा को क्यों याद करें?

Q. क्या परमात्मा हर आत्मा के सभी कार्मो को देखता है और उसके अनुसार उनके अच्छे-बुरे कार्मं के फल को निश्चित करता है?

Q. क्या परमात्मा सर्वात्माओं के दिलों को जानता है या जानने की प्रयत्न करता है?

Q. भक्ति मार्ग में भक्तों को साक्षात्कार होता है, उसके लिए बाबा कहते हैं मैं ही कराता हूँ, कभी बाबा कहते हैं साक्षात्कार भी ड्रामा में नूँध है, उस अनुसार होता है, तो सत्य क्या है? यदि बाबा कराता है तो वह यहाँ आता है या परमधाम से ही कराता है और यदि परमधाम से कराता है तो क्या आत्मा को परमधाम में संकल्प उठ सकता है, वहाँ से आत्मा कर्म कर सकती है क्योंकि बाबा यह भी कहता है - परमधाम में संकल्प की भी गम नहीं है अर्थात् परमधाम में संकल्प और कर्म नहीं होता है। अब यथार्थ क्या है?

Q. भक्ति मार्ग में परमात्मा स्वयं साक्षात्कार कराते हैं या ड्रामानुसार होता है?

Q. भक्तिमार्ग में परमात्मा साक्षात्कार कराता है या ड्रामानुसार होता है। यदि परमात्मा साक्षात्कार कराता है तो वह यहाँ साकार में आता है या परमधाम से ही साक्षात्कार कराता है। यदि यहाँ आता है तो कैसे आता है और किसमें आता है और यदि परमधाम से ही कराता है तो क्या परमधाम में आत्मा कर्म कर सकती है? यह सब कैसे होता है?

Q. क्या शंकर या परमात्मा विनाश कराता या विनाश की प्रेरणा देता है?

त्रिलोक एवं कल्प-वृक्ष

Q. ब्रह्मलोक है क्या?

Q. क्या ब्रह्मलोक और सूक्ष्म वतन, भूमण्डल या आकाश तत्व के ऊपर की तरफ है या भूमण्डल के ऊपर

चारो तरफ है?

Q. क्या आत्मायें ब्रह्माण्ड में शिवबाबा के आसपास चारो ओर समस्त ब्रह्माण्ड में रहती हैं या ब्रह्माण्ड के एक विशेष भाग में ही रहती हैं?

Q. मूलवतन में आत्माओं का झाड़ ऐसा ही है, जैसा चित्रों में दिखाया है या ये समझाने के लिए नक्शेमात्र है। इस चित्र और परमधाम की वास्तविकता में कोई अन्तर है?

Q. सूक्ष्म वतनवासी ब्रह्मा-विष्णु-शंकर का क्या अस्तित्व है? क्या सूक्ष्म वतनवासी ब्रह्मा विष्णु शंकर की तीन आत्मायें ब्रह्मलोक में है, जैसे ब्रह्मलोक के चित्र में आत्माओं के झाड़ में दिखाई गई हैं - यथार्थ क्या है?

Q. क्या सूक्ष्म वतनवासी ब्रह्मा-विष्णु-शंकर की अपनी आत्मायें हैं?

Q. सूक्ष्म वतन में सभी के सूक्ष्म शरीर हैं या केवल एक ब्रह्मा बाबा का ही है?

Q. क्या सूक्ष्म शरीर से किये गये कर्मों का प्रभाव भी आत्मा पर पर पड़ता है और उसकी शक्ति में कोई परिवर्तन होता है?

Q. क्या सभी आत्मायें सूक्ष्म शरीर धारण कर सूक्ष्म वतन में जायेंगी?

Q. क्या सतयुग-त्रेता-द्वापर-कलियुग में सूक्ष्मवतन होगा? यदि हाँ तो उसका स्वरूप क्या होगा और यदि नहीं तो क्यों?

Q. क्या सूक्ष्मवतन सदा रहता है या केवल संगम में ही पार्ट है या साक्षात्कार मात्र है?

Q. सूक्ष्म वतन क्या है, वहाँ कौन सा तत्व है, जिसके आधार पर सूक्ष्म वतन का अस्तित्व है?

Q. क्या सभी जन्मों के सूक्ष्म फीचर्स, नेगेटिव फार्म में सूक्ष्म वतन में रहते हैं?

Q. परमधाम शान्ति की दुनिया से आत्मा को इस साकार लोक में लाने का आधार क्या है? परमधाम से आने वाली आत्मा के पहले जन्म के फीचर्स किस आधार पर बनते हैं। क्या सूक्ष्म शरीर जो परमधाम जाते समय होता है, वह सूक्ष्म वतन में विद्यमान रहता है, उसके आधार पर या संस्कार-स्वभाव के कारण जिस मात-पिता के पास जन्म लेना है, उसके आधार पर बनते हैं?

Q. संगमयुग पर ब्रह्मा से सूक्ष्म शरीर और धर्मपिताओं के सूक्ष्म शरीर के रूप में साक्षात्कार होता है तो दोनों में क्या अन्तर है?

Q. जो भी धर्मपिता ऊपर से आते हैं, उस समय उन्होंने गर्भ से जन्म तो लिया नहीं, फिर भी उनका साक्षात्कार होता है अर्थात् लोगों को उनके सूक्ष्म रूप का साक्षात्कार होता है - जैसे मोहम्मद के लिए कहते हैं कि कोई फरिश्ता आता था और कुरान की आयतें सुनाकर जाता था, ऐसे उन धर्मपिताओं का साक्षात्कार कैसे होता है?

Q. निराकार परमपिता परमात्मा कब गर्भ से जन्म नहीं लेते इसलिए उनका सूक्ष्म या स्थूल शरीर नहीं है, इसलिए वे साकार ब्रह्मा बाबा का सम्पूर्ण स्वरूप सूक्ष्मवतन में इमर्ज करते हैं अर्थात् सूक्ष्म रचना रचते हैं और उसमें प्रवेश करके अपना कार्य करते हैं। ऐसे धर्मपिताओं का भी सूक्ष्म शरीर सूक्ष्मवतन में रहता है? या

Q. क्या धर्मराजपुरी अलग है? यदि है तो कहाँ है और धर्मराज कौन बनेंगा तथा धर्मराज द्वारा सजायें कैसे मिलेंगी?

Q. दिव्यदृष्टि क्या है? उसकी चाबी किसके हाथ में है? यदि परमात्मा के हाथ में है तो वह उसे अपने मन से प्रयोग करता है या ड्रामानुसार प्रयोग होती है?

Q. क्या शंकर या परमात्मा विनाश कराता या विनाश की प्रेरणा देता है?

Q. क्या आत्मायें सारे ब्रह्माण्ड में स्थित हैं और यदि स्थित हैं तो क्या उन सभी का परमात्मा के साथ सम्बन्ध है?

Q. जब सूक्ष्मवतन में जवाहरात आदि नहीं हो सकती तो क्या कपड़े आदि हो सकते हैं? ... यह सूक्ष्म वतन का राज़ क्या है?

Q. इस सृष्टि की तुलना वृक्ष से क्यों की गई है?

Q. परमात्मा को वृक्षपति क्यों कहा गया हे?

Q. वृक्षपति अर्थात् बृहस्पति की इतनी महिमा क्यों है?

ड्रामा अर्थात् विश्व-नाटक

Q. ड्रामा का सबसे गुह्य राज़ क्या है, जिसका रहस्योद्घाटन अभी परमात्मा ने किया है?

Q. परमात्मा ने हमको विश्व-नाटक का ज्ञान दिया है, इसके ज्ञान से हमारे इस पुरुषार्थी जीवन में क्या फायदा है, इसका क्या उपयोग है?

Q. ड्रामा हू-ब-हू रिपीट होता है तो क्या अणु और परमाणु के साथ रिपीट होता है या केवल मानव पार्ट रिपीट होता?

Q. क्या परमपिता परमात्मा ने इस विश्व-नाटक की कभी रचना की है? अथवा क्या ये कभी रचा गया है? यदि हाँ, तो कब और कैसे?

Q. ड्रामा कहने का अधिकारी कौन हो सकता है?

Q. बाबा ने विश्व-नाटक का ज्ञान दिया है और बताया है कि इस विश्व-नाटक में जो हुआ वह अच्छा है; जो हो रहा है, वह अच्छा है और जो होगा वह भी अच्छा होगा - इस रहस्य की प्रक्टिकल जीवन में धारणा कैसे हो?

Q. क्या ड्रामा में किसी का पार्ट परिवर्तन हो सकता है? यदि हाँ, तो कैसे और यदि नहीं, तो क्यों?

Q. क्या ये ड्रामा बीती हुई बात पर ही लागू होता है या भूत-वर्तमान-भविष्य तीनों कालों पर? क्या पुरुषार्थ से पार्ट परिवर्तन हो सकता है? यदि हाँ तो कैसे? यदि नहीं तो जीवन में पुरुषार्थ का क्या महत्व है?

Q. क्या ये नाटक सुख-दुख का है? यदि हाँ तो कैसे, यदि नहीं तो कैसे?

Q. इस ड्रामा में हम कुछ परिवर्तन कर सकते हैं या नहीं? यदि हाँ तो क्यों और कैसे? यदि नहीं तो क्यों और कैसे? इसमें आत्माओं को दुख क्यों भोगना पड़ता है?

Q. क्या इस विश्व-नाटक में किसको VIP या हीरो पार्ट मिला है और किसी को साधारण? यदि ऐसा है तो क्यों और कैसे?

Q. यदि किसी आत्मा को विशेष पार्ट (हीरो पार्ट) मिला है और किसी को साधारण या निकृष्ट पार्ट मिला है - यह इस विश्व नाटक में पक्षपात है, गलत है या इसमें कोई न्यायपूर्ण समानता है?

Q. क्या इस विश्व-नाटक की फिल्म अभी शूट हो रही है या पहले से ही शूट हुई है? यदि अभी हो रही है तो कैसे? यदि पहले से शूट हुई है तो अभी हमारा क्या कर्तव्य है?

Q. ये ड्रामा अच्छा है तो क्यों है? यदि नहीं तो क्यों?

Q. इस ड्रामा में पूर्व का याद नहीं रहता तो क्यों और उससे क्या लाभ है? यह भूलना अच्छा है या खराब?

Q. ये विश्व-नाटक हर क्षण नया लगता है, क्यों अर्थात् विश्व-नाटक की नवीनता का क्या रहस्य है?

Q. क्या इस विश्व-नाटक में किसी को कोई दोष दिया जा सकता है?

Q. क्या विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञाता किसी आत्मा को दोष दे सकता है?

Q. जब ये विश्व-नाटक हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है तो हमारा कर्तव्य क्या है?

Q. क्या ड्रामा के यथार्थ ज्ञान से कोई पुरुषार्थी पुरुषार्थहीन हो सकता है?

Q. ये विश्व-नाटक क्या है, इसकी यथार्थता को जानते हुए हमारा कर्तव्य क्या है अर्थात् क्या हमारे हाथों में है?

Q. विश्व-नाटक की 5000 वर्ष की गणना का आधार-वर्ष क्या है अर्थात् सौर-वर्ष या चन्द्र-वर्ष?

Q. सृष्टि-चक्र के 5000 वर्ष का की गणना कैसे, उसके आदि-अन्त का केन्द्र-बिन्दु क्या है अर्थात् कल्प की गणना कब से कब तक मानी जाये?

Q. तीनों लोकों और तीनों कालों में सबसे सुन्दर, सुखमय, मन-भावन समय और स्थान कौनसा है, क्यों है और कैसे है?

Q. सतयुग के 1250 वर्ष की गणना कब से कब तक होगी?

Q. क्या विश्व में सर्व आत्माओं को एक समान साधन-सम्पत्ति, सुविधायें प्राप्त होना सम्भव है? या किसको अधिक और किसको कम प्राप्त होना ये विविधता इस विश्व-नाटक में पक्षपातपूर्ण है?

Q. क्या आत्मायें भक्ति से देहाभिमानी बनती हैं या ड्रामा के अनादि-अविनाशी नियमानुसार देहाभिमानी बनती हैं? आत्मा के देहाभिमानी बनने में भक्ति का क्या स्थान है?

Q. इस विश्व-नाटक में सर्वश्रेष्ठ जीवन अर्थात् अवस्था क्या है?

Q. बाबा के पास हर आत्मा का सारा रिकार्ड है परन्तु वह कहाँ है, क्या कोई ऑफिस आदि है? बाबा के पास कैसे और कहाँ खाता जमा होता है?

Q. ड्रामा पूर्व-निश्चित (Pre-ordained) होते हुए पुरुषार्थ का क्या महत्व है और अभीष्ट पुरुषार्थ क्या है?

Q. सतयुग में साधन-सम्पत्ति, साइन्स आदि उत्तरोत्तर उन्नतिशील (Progressive) होगी या अवनतिशील (Decressive) होगी अर्थात् उत्तरोत्तर साधन उन्नति को पायेंगे या अवनति को पायेंगे ?

Q. हमारे दुख का निमित्त कौन? ड्रामा के यथार्थ ज्ञान को विचार करके निश्चित करो कि दुख का कारण कौन? क्या ड्रामा या ड्रामानुसार हमारा अपना ही कर्म?

Q. ये विश्व एक अनादि-अविनाशी नाटक है, जिसमें आत्मा पार्टधारी है तो आत्मा पर पापों का बोझा क्यों चढ़ता है, कैसे चढ़ता है, उसका स्वरूप क्या है और उसको उतारने का विधि-विधान क्या है?

Q. इस विश्व-नाटक का परम सुख कब और कैसे अनुभव होगा या होता है?

Q. ड्रामा को समझते हुए भी क्या है, क्यों है, ऐसी घटनायें क्यों होती है, ऐसे प्रश्न क्यों उठते हैं?

Q. क्या त्रेता के अन्त और द्वापर के आरम्भ में भी कोई बड़े भूकम्प आदि आते हैं, उथल-पथल होती है, मनुष्य दर-बदर होते हैं या काल-चक्र की गति के अनुसार समय के साथ स्वत: परिवर्तन होता है? यदि भूकम्प आदि होता है तो उसका स्वरूप और प्रभाव क्या होता है?

Q. क्या त्रेता के बाद नेचुरल केलेमिटीज होंगी? यदि होंगी तो उनका स्वरूप क्या होगा, उनका मानव जीवन पर क्या प्रभाव होगा? क्योंकि वहाँ तक किसी आत्मा ने कोई विकर्म तो किया नहीं, तो मनुष्य को दुख कैसे हो सकता है?

Q. दैवी सभ्यता द्वापर से भूकम्प आदि प्राकृतिक आपदाओं के कारण विलीन होगी या 25 सौ वर्षों में प्रकृति के अनादि-आदि नियमानुसार ह्रास होते-होते सभ्यता और साधनों में स्वत: परिवर्तन होगा?

Q. प्राकृतिक आपदाओं और प्रकृति द्वारा मनवांच्छित फल देने का कारण और आधार क्या है?

Q. द्वापर के आदि में परिवर्तन, अर्थ-क्वेक आदि क्यों होगी?

Q. क्या सतयुग-त्रेतायुग में पृथ्वी समतल होगी या वर्तमान जैसी गोल ही होगी?

Q. क्या सतयुग-त्रेतायुग में रात को सदैव चांदनी रहेगी या वर्तमान के समान चांदनी और अंधेरी रात होगी?

Q. कल्प के पुरुषोत्तम संगमयुग पर आने वाली प्राकृतिक आपदाओं और त्रेतायुग-द्वापर के संगमयुग पर आने वाली प्राकृतिक आपदाओं में क्या अन्तर होगा?

Q. विश्व में अनन्त साधन-सुविधायें हैं। हमारे लिए क्या आवश्यक है, हमको क्या रखना चाहिए, क्या नहीं रखना चाहिए, इस सम्बन्ध में हमारे लिए क्या कृत्य है और क्या अकृत्य है ... उसका निर्णायक बिन्दु क्या है?

सृष्टि-चक्र और स्वर्ग-नर्क

सतयुग

Q. सतयुग के आदि में कितनी आत्मायें होंगी और त्रेता के अन्त में कितनी मनुष्यात्मायें इस धरा पर होगी?

Q. क्या सतयुग में ये ज्ञान रहेगा कि मैं आत्मा भृकुटी में रहती हूँ?

Q. क्या सतययुग-त्रेतायुग में जन्म लेने वाले सभी मनुष्यों की आयु एक समान ही होगी या अन्तर होगा?

Q. सतयुग के प्रथम जन्म की आयु और सतयुग के अन्त के जन्म की आयु में अन्तर होगा या नहीं, यदि होगा तो वह अन्तर क्या होगा?

Q. सतयुग में लक्ष्मी-नारायण की कितनी गद्दियाँ चलेंगी? त्रेता में राम-सीता की कितनी गद्दियाँ चलेंगी?

Q. सतयुग की आठ गद्दियां और त्रेता युग की 12 गद्दियों का भाव-अर्थ क्या है? वे कैसे होंगी?

Q. सतयुग की 8 गद्दियों से त्रेतायुग में 12 गद्दियां कैसे होंगी? ये गद्दियां एक ही समय समानान्तर (Horizontal) होंगी या एक के बाद एक क्रमानुसार (Vertical) होंगी?

Q. सतयुग में 8 जन्म और 8 ही गद्दियाँ होंगी या दोनों की समय-गणना अलग-अलग है?

Q. सतयुग आदि से त्रेता अन्त तक कितनी राजाई चलेंगीं?

Q. अष्ट रतन, 8 युगल हैं या 8 आत्मायें अर्थात् 4 युगल हैं?

Q. क्या सतयुग की राजाई की स्थापना वर्तमान के किन्हीं राजघरानों के द्वारा होगी या किन्हीं भक्त-आत्माओं के द्वारा होगी?

Q. सतयुग की राजाई कैसे स्थापन होगी अर्थात् क्या श्रीकृष्ण और उनके समकक्ष अष्ट राजाओं को राजाई अपने माता-पिता से उत्तराधिकार के रूप में मिलेगी या विनाश के बाद खेलपाल के समान श्रीकृष्ण और अन्य राजाओं को उनके साथी आदि राजा चुन लेंगे या जहाँ श्रीकृष्ण और अन्य राजाओं का जन्म होगा, उन एडवान्स पार्टी वालों को ऐसे खेलपाल में राजा चुन लिया जायेगा क्योंकि विनाश के बाद विश्व में अनेक प्रकार की उथल-पुथल होगी, पृथ्वी की दिशा और दशा में परिवर्तन होगा, अनेक लोग दर-बदर होंगे फिर सतयुग की राजाई कैसे स्थापन होगी?

Q. सतयुगी चक्रवर्ती राजाई और समानान्तर राजाइयों की स्थापना की नींव विनाश के पहले होगी या विनाश के बाद होगी? सतयुगी राजाई की स्थापना की नींव पुरानी दुनिया की आत्माओं से पड़ेगी या एडवान्स पार्टी की आत्माओं के द्वारा पड़ेगी या सतयुग की प्रथम राजाइयों में राजा बनने वाली आत्माओं के द्वारा होगी?

Q. सूर्यवंशी डायनेस्टी, चन्द्रवंशी में कैसे बदलती है?

Q. चन्द्रवंश में जो चक्रवती राजा-रानी बनेंगे, वे परमधाम से नई आत्मायें आयेंगी या जो पहले से चले आ रहे हैं, उनमें से ही बनेंगे?

Q. चक्रवर्ती राजा, राजा-रानी, राजाई परिवार, नौकर-चाकर, दास-दासियां, रायल प्रजा और साधारण प्रजा बनने वालों की वर्तमान में क्या पहचान है, उनके क्या स्वभाव-संस्कार होंगे?

Q. स्वर्ग के आदि में आने वालों में राजा-प्रजा-दास-दासी बनने वालों और त्रेता में आने वाले राजा-रानी, प्रजा, दास-दासी में मूलभूत अन्तर क्या होगा?

Q. सतयुगी और त्रेतायुगी समाज में मनुष्यों की कौन-कौन श्रेणियां होंगी, उनके गुण-कर्तव्य-धर्म-संस्कार क्या होंगे, जिसके कारण वे एक-दूसरे से भिन्न होंगे और उन गुण-कर्तव्यों-धर्म-संस्कारों का वर्तमान से क्या सम्बन्ध है?

Q. किस बात में फेल होंगे, जिससे कोई चन्द्रवंशी बनेंगे और त्रेता में आयेंगे?

Q. सतयुग की प्रथम आठ राजाइयों में कौन-कौन राजा-रानी होंगे या हो सकते हैं?

Q. अष्ट रतनों की गणना दिल्ली की चक्रवर्ती गद्दी पर क्रमानुसार (Vertical order) बैठने वालों में से होगी या समानान्तर (Horizontal order) चलने वाली अन्य राजाइयों में राजा बनने वालों में से होगी?

Q. अष्ट रतन, जिनके सुमिरन से आत्माओं की ग्रहचारी उतर जाती है और 108 विजयी रतन, जिनकी भक्त आत्मायें माला सुमिरन करते, वे कौन होंगे?

Q. प्रथम लक्ष्मी-नारायण के समानान्तर (Horizontal) राजाओं और चक्रवर्ती लक्ष्मी-नारायण की गद्दी पर क्रमानुसार (Vertical) गद्दी पर बैठने वालों में कौन महान हैं?

Q. सतयुगी राजाई की स्थापना कब और कैसे?

Q. क्या श्रीकृष्ण का जन्म किसी राजा के घर में होगा या वह जन्म के बाद राजा बनेगा या लक्ष्मी-नारायण से ही राजाई की स्थापना होगी?

Q. सतयुग-त्रेता में राजायें अपनी कन्या को शादी के समय दास-दासियां दहेज में देते हैं तो उनकी शादी आदि का क्या विधि-विधान क्या होगा या शादी किये हुए दास-दासी युगल ही दहेज में देते होंगे?

Q. सतयुगी सृष्टि में ऊंच पद किसका होगा अर्थात् जो यहाँ नियम-संयम, त्याग-तपस्या कर सादा जीवन व्यतीत करते हैं और यज्ञ सेवा में रहते हैं या जो कूटनीति से साधन-सम्पत्ति, सुख-साधनों का उपभोग करते हुए यज्ञ सेवा कर रहे हैं और दूसरों पर शासन करने का प्रयत्न करते हैं?

Q. इसी सन्दर्भ में ये विचारणीय बात है कि मुख्य गद्दियों पर बैठने वाले राजायें ऊपर से नई आत्मायें आयेंगी या जो पहले से जन्म लेकर आ रहे हैं, उनमें से ही पुनर्जन्म लेकर मुख्य गद्दी पर बैठेंगे?

Q. क्या लक्ष्मी-नारायण सतयुग में प्रतिदिन नई ड्रेस पहनेंगे? ये जो गायन है कि लक्ष्मी-नारायण रोज नई ड्रेस पहनते हैं, इसका भाव-अर्थ क्या है?

Q. भगवानो वाच्य - स्वर्ग है वण्डर आफ दि वर्ल्ड। स्वर्ग में क्या विशेष वण्डर होगा? विचार करो - वण्डर ऑफ दि वर्ल्ड सतयुग है या संगमयुग है?

Q. क्या सतयुग में जानवरों का दूध पियेंगे? यदि पियेंगे तो क्यों अर्थात् सतयुग में जानवरों का दूध पीने की आवश्यकता क्यों होगी? यदि होगी तो क्या स्वाद के लिए पियेंगे या स्वास्थ्य लाभ के लिए? जब सतयुग में सभी स्वस्थ होंगे, तो जानवर के दूध पीने की आवश्यकता क्यों होगी?

Q. ये प्रकृति का नियम है कि जो जिसका दूध पीता है तो उसके संस्कार-स्वभाव, गुण-धर्मों का प्रभाव पीने वाले के ऊपर अवश्य पड़ता है। तो क्या जानवरों का दूध पीने से उनके स्वभाव-संस्कारों का प्रभाव मनुष्यों पर नहीं होगा?

Q. सतयुगी देवी-देवताओं को सम्पूर्ण पवित्र कहेंगे अर्थात् देवतायें सम्पूर्ण पवित्र कहे जायेंगे तो कब कहे जायेंगे?

Q. आत्मा के शरीर में आने से ही कलायें कम होना आरम्भ हो जाती हैं और जब कलायें कम हो गई तो सम्पूर्ण पवित्र कैसे कहेंगे? फिर प्रश्न उठता है कि सम्पूर्णता कब और कहां?

Q. सतयुग में स्वर्ण-मुद्रा का प्रचलन होगा या वस्तु-विनिमय की आवश्यकतानुसार स्वतन्त्र प्रथा होगी?

Q. सतयुग में प्रकृति मनवांछित फल देने वाली होगी तो वहाँ मनुष्यों की दिनचर्या क्या होगी?
Q. सतयुग-त्रेता की दिनचर्या, द्वापर-कलियुग की दिनचर्या और संगमयुग की दिनचर्या में क्या मूलभूत अन्तर है?
Q. क्या सतयुग में एक-दो को सुख देते हैं और सतयुग को सुख देने-लेने की दुनिया कहेंगे?
Q. क्या सतयुग में सतो-रजो-तमो तीनों गुण होते हैं?
Q. क्या ब्रह्मा बाबा किसी समय राम भी बनता है?
Q. सतयुग में एक ही समय मनुष्यात्माओं की आयु में अन्तर होगा या नहीं? युगुलों में स्त्री-पुरुष की आयु में अन्तर होगा या नहीं? यदि होगा तो किस क्रम में?
Q. विधवा का यथार्थ अर्थ क्या है, सतयुग-त्रेता में स्त्रियां विधवा होंगी या नहीं?
Q. सतयुग में विमान होंगे या ऐसे ही अन्त:वाहक शरीर द्वारा दूसरे स्थान के दृष्य देखेंगे या दूसरे स्थान पर रहने वाले व्यक्तियों से मिलन का अनुभव करेंगे और करायेंगे?
Q. क्या सतयुग-त्रेता में नाम-रूप की आकर्षण होती है?
Q. सतयुग और त्रेतायुग में किस बात की खुशी है, क्यों है और कैसे है?
Q. सतयुग के बाद जब त्रेता की आदि में सूर्यवंशी से चन्द्रवंशी राजाई परिवर्तन होती है तो उसी लक्ष्मी-नारायण के घराने का राम राजा बनता है या राजाई परिवार भी परिवर्तन होता है? यदि परिवर्तन होता है तो कैसे?
Q. देवताओं को अपना वह स्वरूप कैसे भूल गया? क्या द्वापर तक आते-आते देवतायें इतने गिर गये कि उनको अपना देवताई स्वरूप ही भूल गया या भूकम्प आदि की उथल-पुथल में अपना अस्तित्व भूल गया?
Q. स्वर्ग को नर्क किसने बनाया और नर्क को स्वर्ग किसने बनाया? नर्क को स्वर्ग बनाने में महिमा देवताओं की है या असुरों की कहेंगे?
Q. रावण की मत सीढ़ी उतरते हैं तो सतयुग-त्रेता में सीढ़ी कैसे उतरते हैं?
Q. रावण कौन है, क्या है? रावण किसको कहें - देह को, देहाभिमान को, 5 विकारों को, अज्ञानता (Ignorance of self, God Father, world cycle) को? रावण का जन्म कहाँ और कैसे हुआ?
Q. क्या सतयुग में मनुष्य देही-अभिमानी होंगे?
Q. स्वर्ग की ओपनिंग सेरीमनी कौन करेगा?
Q. राधे-कृष्ण कब जन्म लेंगे? सतयुग में या संगमयुग पर?
Q. अच्छे गुण तो कलियुग में भी अनेक मनुष्यों में होते हैं, जिनकी ब्रह्मा बाबा ने भी महिमा की है परन्तु मुख्य दैवीगुण कौनसा है, जो देवताओं और मनुष्यों को अलग-अलग करता है?
Q. स्वर्ग और नर्क की सीमा-रेखा क्या है अर्थात् स्वर्ग और नर्क में मूलभूत अन्तर क्या है?
Q. पुरुषोत्तम संगमयुग के विधि-विधान और सतयुग-कलियुग के विधि-विधान में क्या अन्तर है?
Q. सतयुग की आदि श्रीकृष्ण के जन्मदिन से होगी या लक्ष्मी-नारायण के गद्दी पर बैठने के दिन से?
Q. श्रीकृष्ण का जन्म रामराज्य होता है या रावण राज्य में?
Q. बेसमझ कब से बनें, उस बेसमझी का प्रमाण क्या है और समझदारी की हाईएस्ट स्टेज कब होती है?
Q. सतयुग-त्रेता है स्वर्ग परन्तु जो अभी ऊपर से नई आत्मायें आती हैं, तो उनका पहला जन्म या आने का आदि समय स्वर्ग का कहेंगे? यदि स्वर्ग नहीं कहेंगे तो क्या कहेंगे?

Q. स्वर्गवासी बनने और जीवनमुक्त स्थिति में क्या अन्तर है और क्या समानता है?
Q. चढ़ती कला, चढ़ी हुई कला और उतरती कला में क्या अन्तर है?
Q. देवी-देवताओं की चढ़ती कला कहेंगे या चढ़ी हुई कला कहेंगे?
Q. पतित और पावन का निर्णायक बिन्दु (Critatia) क्या है?
Q. भक्ति से आधा कल्प रात और ज्ञान से आधा कल्प दिन होता है। ज्ञान कब होता है और दिन-रात कब होते हैं?
Q. संगमयुग के राजे अर्थात स्वराज्य अधिकारी, सतयुग के राजाओं तथा द्वापर-कलियुग के राजाओं में क्या अन्तर होता है?
Q. परमात्मा पिता आकर सारे सृष्टि-चक्र की हिस्ट्री-जॉग्राफी बताते हैं तो हिस्ट्री क्या है और जॉग्राफी क्या है और बाबा ने इस ज्ञान को रिलीजियो-पॉलिटिकल हिस्ट्री-जॉग्राफी क्यों कहा है?
Q. बाबा ने कहा है - सतयुग से त्रेता के अन्त तक 16,108 प्रिन्स-प्रिन्सेज होंगे तो उन प्रिन्स-प्रिन्सेज बनने वालों में कौन-कौन होंगे?
Q. सतयुग में कोई किसको फूल माला पहनायेंगे और यदि पहनायेंगे तो किस भावना से?
Q. क्या सतयुग में किसकी जयन्ति आदि मनायेंगे?

योगबल और भोगबल

Q. देवताओं और मनुष्यों की पहचान क्या है, स्वर्ग और नर्क की सीमा-रेखा क्या है? मनुष्य, देवताओं को पूजते हैं, उसका कारण या आधार क्या है अर्थात् पूज्य और पुजारी की सीमा-रेखा क्या है?
Q. योगबल और भोगबल से जन्म का स्वरूप क्या है? सतयुग मे सन्तानोत्पत्ति की प्रक्रिया जैसे बाबा ने पपीता, मोर, मुख के प्यार का उदाहरण दिया, उस तरह से कोई भिन्न होगी या वर्तमान स्वरूप का ही सतोप्रधान स्वरूप होगा?
Q. क्या विषय-भोग स्वभाविक है और जीवन के लिए आवश्यक क्रिया है?
Q. योगबल से क्या-क्या काम कर सकते हैं और क्या-क्या होता है?

पुरुषोत्तम संगमयुग और उसकी प्राप्तियाँ

Q. संगमयुग का समय कब से कब तक है अर्थात् संगमयुग की गणना कब से कब तक की जायेगी?
Q. संगम के दो भाग हैं। एक है पुरानी दुनिया अर्थात् पुराने कल्प में और दूसरा है नई दुनिया अर्थात् नये कल्प में। अब प्रश्न उठता है कि दोनों कल्प में अर्थात् पुराने और नये में संगम का समय समान होगा या अन्तर होगा?
Q. प्रायः सभी शास्त्रों में संगमयुग की ही महिमा है, त्योहार आदि भी संगमयुग की यादगार के रूप में मनाये जाते हैं, अन्य धर्मों में भी संगमयुग की महिमा जाने-अन्जाने की हुई है, तो संगमयुग की इतनी महिमा क्यों है?
Q. विनाश और संगमयुग का क्या सम्बन्ध है और संगमयुग की आयु कब से कब तक गिनी जायेगी?
Q. आत्मा जब नये कल्प में परमधाम से आकर जन्म लेती है, तो जहाँ जन्म लेती है, उन मात-पिता के साथ कलियुग का बनाया हिसाब-किताब होता है या नये कल्प का?
Q. विचार करो - क्या तुम भविष्य के दिलासे पर जी रहे हो या वर्तमान जीवन की परम-प्राप्तियों की अनुभूतियों में जी रहे हो?
Q. सतयुग में अगर यह ज्ञान हो तो घुटका खायेंगे अर्थात् खुशी गुम हो जायेगी परन्तु अभी ज्ञान होते भी घुटका क्यों नहीं खाते हैं?
Q. संगमयुग पर मुक्त-जीवनमुक्त स्थिति का अनुभव कौन और कैसे कर सकता है?

Q. वर्तमान संगमयुग की विशेष प्राप्तियां क्या हैं और उनका जीवन में क्या महत्व है?

Q. संगमयुग की प्राप्तियों और सतयुग की प्राप्तियों में मूलभूत अन्तर क्या है?

Q. क्या बाप का वर्सा सतयुग की राजधानी में ही मिलेगा, यहाँ कुछ नहीं मिलता है? बेहद के बाप यथार्थ वर्सा क्या है और कब और कहाँ मिलता है?

Q. संगमयुग के सुख क्या-क्या हैं और सतयुग के सुख क्या-क्या हैं? दोनों युगों के सुखों में मूलभूत अन्तर क्या है?

Q. संगमयुग पर परमात्मा से क्या2 खज़ाने मिले हैं, क्या-क्या प्राप्तियां हुई हैं, जो हमारी सम्पन्नता का आधार हैं?

Q. हमारे खाते में ईश्वरीय खज़ाने सदा जमा होते रहें, उसमा विधि-विधान क्या है? हमारा सर्वात्माओं के प्रति शुभ-भाव और शुभ-भावना कब और कैसे रह सकती है?

Q. जब सारी पुरानी दुनिया खत्म हो जाती है, तब यह यज्ञ खत्म होता है। क्या यज्ञ के साथ ही संगमयुग भी खत्म हो जाता है या संगमयुग बाद में भी चलता है?

Q. सभी आत्माओं में परमात्मा के प्रति इतनी श्रद्धा है, उनको याद करते हैं - तो क्या उनको परमात्मा से परमधाम में कोई प्राप्ति की अनुभूति होती है, जिस अनुभूति के आधार पर भगवान को याद करते हैं? यदि हाँ तो कैसे और यदि नहीं तो ये अनुभूति कब और कहाँ होती है, जिससे वे भगवान को याद करते हैं?

Q. बाबा ने कहा है - सतयुग-त्रेता युग का वर्सा परमात्मा द्वारा संगमयुग पर ही मिलता है, लौकिक बाप से नहीं। भल लौकिक बाप ही वर्सा देने के निमित्त बनते हैं - इसका क्या प्रमाण है और विधि-विधान क्या है?

Q. बेहद के बाप का वर्सा क्या है और कहाँ मिलता है?

Q. यथार्थ ईश्वरीय सम्पत्ति क्या है?

Q. क्या अभी संगमयुग पर हम तन-मन-धन से पूर्ण स्वस्थ हो सकते हैं? यदि हाँ तो कैसे और उसके लिए अभीष्ट पुरुषार्थ क्या है और यदि नहीं तो हमारा कर्तव्य क्या है?

कर्म और कर्मों की गहन गति

Q. कर्म और फल का विधि-विधान क्या है? क्या ये विधि-विधान सर्वात्माओं पर एक समान प्रभावित होता है या उसमें कोई सैद्धान्तिक अन्तर है?

Q. क्या कर्म का सिद्धान्त सर्व आत्माओं पर समान रूप से लागू होता है या कोई भेद है?

Q. क्या कोई आत्मा पुरुषार्थ करके कर्म-भोग से मुक्त हो सकती है? यदि हो सकती है तो कहाँ तक और कैसे?

Q. कर्म-फल के निर्णय में प्रधानता कर्म के स्वरूप की होती है या करने वाले भावना की?

Q. मानव जीवन में खाता जमा करने की क्या प्रक्रिया है? अर्थात् Plus-minus 0 or Plus-minus Plus or Plus-minus Minus ?

Q. आत्मा के पावन बनने और खाता जमा करने में कोई अन्तर है या एक ही बात है?

Q. समय और संकल्प आत्मा के श्रेष्ठ खज़ाने हैं, उन खज़ानो को जमा करने की विधि क्या है और सिद्धि क्या है?

Q. क्या विकल्प से पाप लगता है?

Q. क्या अभी के पुरुषार्थ का फल भविष्य में ही मिलेगा या अभी भी कोई प्राप्ति है। यदि अभी भी प्राप्ति है तो वह क्या है?

Q. ज्ञान-योग से पुराने स्वभाव-संस्कार, विकर्मों का बोझ खत्म होता है? यदि हाँ तो कहाँ तक और कैसे, यदि नहीं तो क्यों?

Q. क्या कोई आत्मा, किसी दूसरी आत्मा के सुख-दुख का कारण हो सकती है? यदि हाँ तो कैसे और कितना?

Q. क्या वहाँ सतयुग-त्रेता में ऐसे समझेंगे कि हम अगले जन्म के कर्मों के अनुसार राजा, प्रजा, दास-दासी बने हैं और उस स्थिति के ऊंच-नीच की महसूसता होती है? यदि वहाँ राजा, प्रजा, दास-दासी की ये फीलिंग होगी और कर्मों का ये ज्ञान होगा तो दुख की फीलिंग क्यों नहीं होगी?

Q. क्या हर आत्मा अपने ही कर्म से सुखी-दुखी होती है? कैसे कहें कि हर आत्मा अपने कर्मानुसार सुखी-दुखी होती है?

Q. क्या कोई कर्म अकर्म होता है, यदि हाँ तो कैसे और कब होता है और नहीं तो क्यों और कैसे? अकर्म कौनसा कर्म है?

Q. कर्म और पुरुषार्थ में क्या अन्तर है? या दोनों एक ही बात है?

Q. क्या स्थूल रतनों (पत्थरों) से आत्माओं की ग्रहचारी उतर सकती है? यदि हाँ तो कैसे और यदि नहीं तो क्यों? आत्मा पर वास्तविक ग्रहचारी है क्या?

Q. आज जो लोग अपनी ग्रहचारी उतारने के लिए विभिन्न प्रकार के स्थूल रतनों अर्थात् पत्थरों का प्रयोग करते हैं, उसका आधार क्या है?

Q. क्या परमपिता परमात्मा की छत्रछाया में बैठी आत्मा पर किसी प्रेतात्मा या रिद्धि-सिद्धि वाले का प्रभाव हो सकता है? यदि हाँ तो क्यों और कैसे?

Q. क्या जो यहाँ सर्व सुखों का अनुभव नहीं करता, इस जीवन से परेशान है, वह भविष्य जीवन में या सतयुग में सर्व सुखों का अनुभव कर सकता है?

Q. शुभ-भावना और शुभ-कामना तथा न्याय-प्रक्रिया में क्या सामन्जस्य है?

Q. क्या समर्थ और उत्तरदायी आत्मा को किसी आत्मा को पाप कर्म करते हुए देखकर, जानकर उसको साम-दाम-दण्ड-भेद से रोकना ही शुभ-भावना और शुभ-कामना है, न्याय है, कर्तव्य है या करने देना शुभ-भावना और शुभ-कामना है, न्याय है, कर्तव्य-पालन है?

Q. किन्ही दो व्यक्तियों के द्वारा किसी समान या समकक्ष पाप कर्म, विकर्म करने पर उनको समान दण्ड देना यथार्थ है या बड़े-छोटे, नये-पुराने, अपने निकट या दूर का भेद करके न्याय करना न्याय है?

Q. किसी पाप कर्म करने पर शुभ भावना, शुभ कामना, ड्रामा समझ कर छोड़ देना न्याय है या संगठन के हित को देखकर दण्ड देना न्याय है?

Q. यदि कोई न्याय अयुक्त प्रतीत होता है तो आवाज उठाना उचित है या ड्रामा समझकर आंखे बन्द कर लेना न्याय है, उचित है?

Q. प्रायः हम किसी भी बात को न जानते, न समझते हुए भी उसके विषय में अपना निर्णय दे देते हैं। वह निर्णय अपने मन में हो या शब्दों में हो - ये कहाँ तक यथार्थ है?

Q. कर्मातीत स्थिति और विकर्माजीत स्थिति में क्या अन्तर है?

Q. क्या धर्मराजपुरी सूक्ष्मवतन में अलग कोई स्थान है, जहाँ आत्माओं के कर्मों का हिसाब-किताब होता है?

Q. क्या धर्मराज का अपना कोई स्वतन्त्र अस्तित्व है अर्थात् उनकी अपनी आत्मा है, यदि है तो कैसे और यदि नहीं तो धर्मराज कौन?

Q. कर्मों की गहन गति क्या है?

Q. सूक्ष्म वतन में किये गये कर्मों का प्रभाव होता है, क्या ब्रह्मा बाबा सूक्ष्मवतन से जो कर्म कर रहे हैं, उनका उनके ऊपर प्रभाव हुआ है या हो रहा है

Q. कर्म-फल का विधि-विधान क्या है और उसका अन्य योनि की आत्माओं से क्या सम्बन्ध है?

Q. जानवरों को जो सुख-दुख होता है, वह कर्म और फल के विधि-विधान अनुसार होता है या उनका कोई और विधि-विधान है?

Q. कर्मातीत स्थिति के समीप पहुँचने की क्या पहचान है?

Q. क्या देवतायें कर्मातीत होंगे या उनको कर्मातीत कहा जायेगा?

Q. क्या देवताओं के कर्मों को सुकर्म कहा जा सकता है?

Q. क्या साकार बाबा के समय के कर्म और फल के नियम-सिद्धान्तों और आज के कर्म-फल के नियम-सिद्धान्तों में कोई अन्तर है? यदि है तो क्या है?

Q. विकर्मों और व्यर्थ कर्मों के भोग का विधि-विधान क्या है?

Q. विकर्मो का कारण क्या है अर्थात् मनुष्य विकर्म क्यों करता है और उसका निवारण क्या है?

Q. पाप-कर्म का निर्णय किस आधार पर होगा या होता है? वह दर्पण क्या है, जिससे हम सहज समझ सकें, अनुभव कर सकें कि यह पाप-कर्म है? पाप-कर्म के फल का निर्णय क्या और कैसे होता है?

Q. क्या परमात्मा की याद से बुरे संस्कार भस्म होते हैं? यदि होते हैं तो कैसे और नहीं होते हैं तो पावन बनने का क्या विधि-विधान है?

Q. क्या किसी आत्मा के स्थान पर किसी दूसरी आत्मा को कोई जमदूत ले जा सकते हैं? यदि ले जा सकते हैं तो वे जमदूत कौन हैं, क्या उनकी अपनी आत्मायें हैं? यदि हैं तो विनाश के बाद वे आत्मायें कहाँ रहती हैं?

Q. हम योग स्थिति में बैठे हैं और उस किसी आत्मा के चीखने की आवाज़ आ जाये कि बचाओ-बचाओ या पास ही किसी शेर के दहाड़ने की आवाज़ आ जाये तो हमको क्या करना चाहिए या उस समय हमारा क्या कर्तव्य है?

Q. क्या किसी दुर्घटना, जैसे किसी हिंसक जीव द्वारा किसको घायल कर देना या मार देना आदि को सुनकर या देखकर हमको भयभीत होकर अपने यथार्थ पुरुषार्थ या पथ से विचलित होना चाहिए?

Q. शास्त्रों में जो राजा बलि और दानवीर कर्ण के उपाख्यान हैं, वे कहाँ से आये हैं

जमा का खाता

Q. कितने प्रकार से हम अपना खाता जमा कर सकते हैं और दुआओं का खाता और पुण्य के खाते जमा में क्या अन्तर है, दोनों को जमा करने का क्या विधि-विधान है?

Q. हमारा खाता जमा है, उसकी परख क्या है?

Q. आत्मा का पुण्य-पाप का खाता का हिसाब कैशबुक है या खाताबही (Ledger) अर्थात् + - or - or ö और भोग से + - कम होता है?

योग और धारणा

Q. यथार्थ योग की स्थिति क्या है?

Q. हमारा योग यथार्थ है अर्थात् योग की सफलता की कसौटी क्या है?

Q. भगवानोवाच्य - एक निराकार परमपिता परमात्मा की याद से ही विकर्म विनाश होते हैं, तो परमात्मा को कहाँ याद करें और किस रूप में याद करें? परमात्मा को परमधाम में याद करने का क्या प्रभाव है और ब्रह्मा-

तन में याद करने का क्या प्रभाव है?

Q. परमात्मा की यथार्थ याद कब, कहाँ और कैसे अर्थात् परमात्मा को परमधाम में याद करना यथार्थ है या ब्रह्मा तन में याद करना है?

Q. हमारी परमात्मा और घर की ओर तीव्र आकर्षण हो, उसका पुरुषार्थ अर्थात् साधन और साधना क्या है?

Q. परमात्मा की याद के साथ ब्रह्मा बाबा को याद करना यथार्थ है या नहीं?

Q. परमात्मा को याद की आवश्यकता क्यों?

Q. परमात्मा ने कहा है प्यार से दिल से याद करो, मतलब से नहीं तो बाप की मदद अवश्य मिलेगी। तो ये दो रूप की याद में क्या अन्तर है और वह याद कैसी होगी?

Q. योग क्या है, योग क्यों और योग कैसे अर्थात् योग का विधि-विधान और प्रभाव क्या है?

Q. धारणा नहीं होती इसलिए किसको समझा नहीं सकते। किस बात की धारणा नहीं होती और क्यों नहीं होती जो किसको समझा नहीं सकते?

Q. परमात्मा बल देते हैं? तो क्या उनका बल मेरे में आता है और यदि उनका बल मेरे में आता है तो क्या उनका बल कम होता है? क्योंकि यदि किसी से कोई शक्ति निकल कर दूसरे में प्रवेश कर रही है तो पहले वाले में जरूर कम होगी। यह बल देने का विधि-विधान क्या है?

Q. परमात्मा को याद करने से सतोप्रधान बन जाते हैं, ये प्रक्रिया क्या है और कैसे चलती है? क्या परमात्मा की याद से कोई शक्ति परमात्मा से निकल कर हमारे में प्रवेश करती है या परमात्मा से प्रगट होकर हमारे में भरती है या परमात्मा की याद से हमारे अन्दर से ही हमारी सोई हुई शक्ति जाग्रत होती है, जो आत्मा को सतोप्रधान बना देती है?

Q. परमात्मा की याद या परमात्मा की मदद से हमारे क्या दुख दूर हो सकते हैं और कैसे?

Q. योग से क्या बदल सकता है और क्या नहीं बदल सकता है?

Q. बाप की मिल्कियत क्या है और बाप को क्यों भूल जाते हैं? मिल्कियत भूल जाती है, इसलिए बाप भी भूल जाता है या बाप भूल जाता है तो मिल्कियत भी भूल जाती है?

Q. काम और क्रोध में क्या मूलभूत अन्तर है और दोनों का जीवन पर क्या प्रभाव है?

Q. क्रोध वाले बाप को याद क्यों नहीं कर सकते हैं?

Q. क्या बाबा को याद करें तो बरसात होगी? क्या बरसात आदि के लिए बाबा को याद करना चाहिए?

Q. दुनिया में जो ट्रान्स में जाते हैं, भक्ति मार्ग में जो ट्रान्स में जाते हैं और अभी ज्ञान मार्ग में जो ट्रान्स में जाते हैं, उन तीनों में क्या अन्तर है और ट्रान्स का जीवन में क्या महत्व है?

Q. ट्रान्स और योग में क्या अन्तर है?

Q. दिव्य-दृष्टि अर्थात् ध्यान और साक्षात्कार में क्या अन्तर है और उस समय उन आत्माओं की क्या स्थिति होती है अर्थात् वे कहाँ होती हैं?

Q. आत्मा और शरीर में क्या सम्बन्ध दोनों के क्या गुण-धर्म हैं और सुख-दुख भोगने में दोनों की क्या भूमिका है?

Q. हमारा यह योग जो परमात्मा सिखाते हैं, वह राजयोग क्यों है?

Q. परमात्मा को कहाँ, कैसे याद करना चाहिए?

Q. अभी परमात्मा कहाँ है और उनको कहाँ और कैसे याद करें?

Q. शिवबाबा के साथ की अनुभूति परमधाम में होगी? यदि होगी तो कैसे होगी और यदि नहीं होगी तो उनके

साथ की अनुभूति कहाँ और कैसे होगी?

Q. बाबा कहते - सदा उड़ती कला में रहो, तो उड़ती कला क्या है और उसका क्या अनुभव होगा और उसका पुरुषार्थ क्या है?

Q. ये विश्व-नाटक अनादि-अविनाशी है, जो हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है, अब प्रश्न उठता है कि परमात्मा का इसमें क्या महत्व है और उसको क्यों याद करें? वह क्या कर सकता है या उसकी याद से क्या होता है, जिसके लिए आत्मायें उनको याद करती हैं और हमको भी याद करना ही चाहिए?

Q. निराकार परमात्मा साकार तन में आये तो उसको परमात्मा कहेंगे और उनको साकार रूप में याद करना यथार्थ याद है?

Q. स्वप्नों का आधार क्या है और उनका हमारे योग पर क्या प्रभाव होता है?

Q. व्यर्थ चिन्तन आत्मिक शक्ति के ह्रास का बड़ा कारण है परन्तु व्यर्थ चिन्तन का कारण क्या है और उनका निवारण क्या है?

Q. वर्तमान समय तमोप्रधान दुनिया है, जहाँ अनेक प्रकार के विघ्न आते हैं, जो आत्मा को परेशान कर देते हैं और आत्मा को अभीष्ट पुरुषार्थ करने नहीं देते हैं, तो उन विघ्नों को सहज पार करने का क्या उपाय है?

मृत्यु और मृत्यु-विजय

Q. प्राय: संसार का हर प्राणी पुरानी देह का त्याग करने में भयभीत होता है। जब कि आत्मा अविनाशी है, जन्म और मृत्यु एक वस्त्र बदलना है, फिर जीवन के प्रति मोह क्यों, मृत्यु से भय क्यों?

Q. क्या मृत्यु पर विजय पायी जा सकती है, यदि पाई जा सकती है तो उसका साधन और साधना क्या है?

Q. अभी स्वेच्छा से शरीर छोड़ने का पुरुषार्थ करते और सतयुग में स्वेच्छा से शरीर छोड़ते। दोनों में अन्तर क्या है और सतयुग में शरीर छोड़ने के समय की स्थिति का निर्णायक बिन्दु (Critaria) क्या है?

Q. देवतायें जरा-मृत्यु से मुक्त होते हैं, अमर होते हैं, मृत्यु उनके लिए वस्त्र बदलना होता है - तो मृत्यु या वस्त्र बदलने का निर्णायक बिन्दु क्या होता है और उसका निर्णय कैसे करते हैं?

Q. मृत्यु-विजय अर्थात् स्वेच्छा से देह त्याग की प्रक्रिया क्या है?

Q. स्वेच्छा से देह-त्याग और सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता में क्या सम्बन्ध है?

Q. मृत्यु-दुख और कर्मभोग का सम्बन्ध क्या है और उस पर विजय का पुरुषार्थ क्या है?

Q. देह धारण करना और देह का त्याग करना जीवन की अपरिहार्य घटनायें हैं, जो इस विश्व-नाटक में पार्ट बजाने के लिए अनिवार्य है फिर भी आत्मा को मृत्यु-दुख और मृत्यु-भय क्यों? मृत्यु-दुख और मृत्यु-भय से मुक्त होने का सहज साधन क्या है?

Q. देह से न्यारे होने की प्रक्रिया क्या है, उसका अनुभव क्या है?

Q. मूर्छा (Coma), दवाई आदि से (enasthesia etc) अचेत होने और योग के पुरुषार्थ से देह से न्यारे हो जाना (Detached) तीनों में क्या समानतायें हैं और क्या विषमतायें हैं, तीनों के लाभ-हानि क्या हैं?

Q. संजीवनी बूटी क्या है?

Q. मृत्यु अच्छी चीज है या बुरी चीज है?

Q. जीते जी मरना किसको कहा जाता है?

Q. जीना और मरना दोनों समान सुखदाई हों, उसके लिए अभीष्ट पुरुषार्थ क्या है?

Q. अकाले मृत्यु का अर्थ क्या है?

Q. अमरत्व का क्या तात्पर्य है और काल पर जीत कैसे पायी जा सकती है?

Q. बाबा ने हमको अनेक प्रकार के खज़ाने दिये हैं और उनको जमा करने का विधि-विधान भी बताया है, तो अभी हम जो खज़ाने जमा करते हैं, वे भविष्य के लिए ही हैं या इस जीवन में भी उनका कोई विशेष महत्व है, उनसे कोई विशेष अनुभूति होती है?

Q. सतयुगी देह-त्याग, कलियुगी देह-त्याग और संगमयुगी देह-त्याग की दिशा और दशा अर्थात् प्रक्रिया में क्या अन्तर है?

Q. क्या चाहते हुए शरीर का त्याग कर सकते हैं? यदि कर सकते हैं तो क्यों और कैसे और यदि नहीं कर सकते हैं तो क्यों?

Q. चारपाई पर बीमार, दुखी होकर शरीर छोड़ने और किसी आकस्मिक घटना में तुरन्त शरीर छोड़ देने में कौनसा शरीर छोड़ना अच्छा होगा?

गीता

Q. क्या गीता का भगवान किसी लौकिक न्यायालय में सिद्ध होगा? या ये भी पुरुषार्थ की एक विधि है, जिसके द्वारा बाबा पुरुषार्थ के लिए प्रेरित करते हैं, जिससे सर्वात्माओं को बाप का सन्देश मिले?

Q. क्या कोई लौकिक दुनिया वाला जज ये निर्णय कर सकता है कि गीता का भगवान श्रीकृष्ण नहीं, निराकार परमात्मा शिव है?

Q. क्या वह समय आयेगा जब कोई ब्रह्मा कुमार-कुमारी लौकिक दुनिया में किसी उच्च या उच्चतम न्यायालय में जज बनेगा और उसके सामने गीता ज्ञान के विषय में केस हो और वह निर्णय दे कि गीता ज्ञानदाता श्रीकृष्ण नहीं निराकार परमपिता परमात्मा शिव है?

Q. क्या कभी गीता के भगवान के विषय में कोर्ट में केस होगा? यदि होगा तो उसको कौन करेगा अर्थात् ज्ञानी आत्माओं की ओर से केस होगा या अज्ञानी आत्माओं की तरफ से होगा?

Q. क्या गीता का भगवान श्रीकृष्ण नहीं, ज्ञान सागर निराकार परमपिता परमात्मा शिव है - यह किसी लौकिक दुनिया के न्यायालय में सिद्ध होगा?

Q. क्या परमपिता परमात्मा गीता का भगवान या परमात्मा सर्वव्यापी नहीं ... सिद्ध करने के लिए किसी न्यायालय में केस करने की स्वीकृति देगा?

Q. यदि परमात्मा केस करने की स्वीकृति नहीं देगा तो ये कैसे सिद्ध होगा?

Q. बाप को प्रत्यक्ष कौन करेंगे?

Q. बाबा को प्रत्यक्ष करने का आधार क्या है?

Q. चाहते हुए भी स्व-परिवर्तन क्यों नहीं होता है?

Q. यथार्थ आध्यात्मिक ज्ञान क्या है?

Q. लौकिक गीता में भी कुछ निम्नलिखित महावाक्य हैं, जिनका हमारे जीवन की सफलता से गहरा सम्बन्ध है और उनके विषय में बाबा ने भी ज्ञान दिया है परन्तु लौकिक गीता के महावाक्यों को पढ़ते-सुनते भी हमारी स्थिति वैसी क्यों नहीं बन पायी?

Q. सत्य आध्यात्मिक ज्ञान की परख क्या है अर्थात् हमको जो ज्ञान मिला है, वही सत्य है, वह कैसे समझ सकते या किसको सिद्ध कर सकते हैं?

Q. यह कैसे कहा जा सकता कि इनमें भगवान आते हैं?

Q. यथार्थ आध्यात्मिक ज्ञान और उसकी धारणा की कसौटी (Test) क्या है?

Q. सारे ज्ञान का सार क्या है?

Q. गीता में है नष्टोमोहा-स्मृतिलब्धा, शिवबाबा ने भी कहा है - नष्टोमोहा और स्मृति स्वरूप बनो - तो किन-किन बातों से नष्टोमोहा बनना है और किन बातों में स्मृति-स्वरूप बनना है अर्थात किन-किन बातों की स्मृति जागृत रखनी है?

Q. परमानन्द अर्थात् योगानन्द और विषयानन्द दोनों का गायन है और दोनों में ही आनन्द शब्द आता है परन्तु एक से आत्मा मुक्त होना चाहती है और दूसरे में लीन होना चाहती है तो दोनों में क्या मूलभूत अन्तर है, जिसको जानने, समझने से आत्मा विषयानन्द से विमुक्त हो परमानन्द अर्थात् योगानन्द का गहन अनुभव सहज कर सकती है?

Q. सबसे श्रेष्ठ सुख क्या और क्यों है तथा सबसे निकृष्ट सुख क्या है और क्यों है?

Q. आध्यात्मिक शक्ति का स्वरूप क्या है?

Q. क्या हमारा ज्ञान मनोविज्ञान है?

Q. मनोविज्ञान और आध्यात्मिकता में क्या अन्तर है?

Q. क्या ये कहा जा सकता है कि हमारे जैसा ही ज्ञान दूसरे धर्मशास्त्रों, धर्मों में भी है या हमारा ज्ञान भी दूसरे धर्मों, धर्मशास्त्रों जैसा है?

भारत और भगवान

Q. क्या भारत या विश्व प्रजातन्त्र में सुखी-शान्त रहा है और रह सकता है?

Q. विश्व और भारत राजशाही में सुखी, शान्त और समृद्ध होता है या प्रजातन्त्र में? यथार्थ राजतन्त्र क्या है?

Q. भारतीय सभ्यता और भारतवासियों में इतनी सहिष्णुणता, दया-भाव, दान-भावना, त्याग क्यों है, जो अन्य धर्मों और सभ्यताओं में देखने में नहीं आता है?

Q. भारत पर विभिन्न सभ्यताओं और देशों ने राज्य किया है, तो क्या हमारा दृष्टिकोण उनके प्रति शत्रुता या घृणा का होना चाहिए? क्या उनका वह राज्य करना अनाधिकार था?

Q. क्या अन्त समय विनाश होगा तो सारे संसार का सोना-चांदी, हीरे-जवाहर भारत में आकर एकत्रित हो जायेंगे या क्या होगा?

Q. स्वर्ग भारत में ही होता है, इसका अर्थ क्या है?

Q. भारत की सीमायें कब कैसी होंगी, भारत के उत्थान-पतन अर्थात् उत्कर्ष-अपकर्ष की कहानी कब कैसी रही और रहेगी?

Q. द्वापर के बाद भी आत्मायें आती रहती हैं, जो हिन्दू कहलाती हैं, उनको किस धर्म कहा जायेगा? Q. पुरानी दुनिया के विनाश के अन्तिम लड़ाई होती है, उसको महाभारत लड़ाई क्यों कहा जाता है, भारत से उसका क्या सम्बन्ध है?

एडवान्स पार्टी और एडवान्स जन्म एवं दादी जी

Q. बापदादा ने दादी को कौनसा राज़ बताया होगा, जिससे जन्म लेने का संकल्प न होते हुए भी दादी खुशी से जन्म लेने को राज़ी हो गई?

Q. गर्भ, गर्भ-महल और गर्भ-जेल का राज़ क्या है?

Q. दादी का पिता परमधाम से आने वाली नई आत्मा होगी या पहले से आई हुई कोई भक्त आत्मा होगी या ब्राह्मण परिवार से गयी हुई कोई आत्मा होगी?

Q. कर्मातीत स्थिति का अनुभव जैसा दादी ने अन्त समय किया और हम सबको भी करने के लिए प्रेरणा दी, उस अनुभव का आधार क्या है अर्थात् हमको वह कब और कैसे हो सकता है?

Q. अन्त समय कर्मातीत स्थिति के अनुभव के लिए किस पुरुषार्थ की आवश्यकता है?

Q. संगमयुगी एडवान्स जन्म और सतयुगी देवताई जन्म में क्या मूलभूत अन्तर है, जिसके आधार पर एडवान्स जन्म में स्पष्ट ज्ञान न होते भी चढ़ती कला की स्थिति होती है और देवताई जन्म में उतरती कला की स्थिति होती है?

Q. एडवान्स पार्टी, एडवान्स जाने वाली आत्माओं और ब्राह्मण आत्माओं में क्या विशेष अन्तर है? तीनों की कार्य विधि क्या और कैसी होगी?

Q. एडवान्स में जाने वाली पार्टी से क्या आशय है अर्थात् उसमें कौनसी आत्मायें होंगी?

Q. बाबा ने कहा है जब लक्ष्मी-नारायण गद्दी पर बैठते हैं तो पुरानी दुनिया के कोई भी नहीं रहेंगे। जब पुरानी दुनिया के कोई नहीं होंगे तो लक्ष्मी-नारायण के मात-पिता उनको गद्दी पर बैठायेंगे या क्या वहाँ के लोग उनको चुनकर गद्दी पर बैठायेंगे और यदि उनके मात-पिता गद्दी पर बैठायेंगे तो उनको पुरानी दुनिया का कहेंगे या नई दुनिया का कहेंगे क्योंकि उनका जन्म तो भोगबल से ही हुआ होगा, इसलिए उनको नई दुनिया का तो कहा नहीं जा सकता?

Q. विनाश के बाद जब नये चक्र का आरम्भ होगा तो उस समय एडवान्स पार्टी वाली और एडवान्स में जाने वाली कितनी आत्मायें होंगी अर्थात् 9,16,108 पहले-पहले एडवान्स में जाने वाले होंगे और उनको जन्म देने वाले एडवान्स पार्टी वाले होंगे तो दोनों की मिलाकर कम से कम कितनी संख्या अन्त समय तक ब्राह्मणों की होनी चाहिए अर्थात् जो ब्राह्मण शरीर छोड़कर एडवान्स में गये हैं और अभी जो पक्के ब्राह्मण हैं, दोनों मिलाकर कितने होने चाहिए?

Q. निमित्त, निर्मान और निर्मल वाणी के लिए जो दादी ने कहा है, वह धारणा कब और कैसे होगी?

Q. यज्ञ के वर्तमान परिपेक्ष में कृत्य-अकृत्य, राइट-रांग का निर्णय कैसे करें, जिससे हमारा जीवन सदा सफलता के पथ पर अग्रसर रहे?

Q. एडवान्स पार्टी वालों का जन्म चढ़ती कला का है या उतरती कला का है? यदि चढ़ती कला का है तो कैसे?

Q. एडवान्स पार्टी वालों का पुरुषार्थी जन्म कहेंगे? यदि हाँ तो वे कैसे और क्या पुरुषार्थ करते हैं? पुरुषार्थ का आधार क्या है?

Q. एडवान्स पार्टी का क्या काम है और उनकी गति-विधि क्या है अर्थात् वे किस-किस कार्य के निमित्त हैं?

Q. सतयुग के आदि में जो 9,16,108 की जनसंख्या होगी, उनको योगबल से जन्म देने वाली आत्मायें कौन होंगी अर्थात् कोई नई आत्मायें ऊपर से आयेंगी या यहाँ से गई हुई एडवान्स पार्टी की आत्मायें होंगी या ब्राह्मणों के सम्बन्ध-सम्पर्क में आने वाली सहयोगी पुरानी दुनिया की पतित आत्मायें होंगी?

Q. अब प्रश्न उठता है कि 84 जन्म कौन लेंगे और सतयुग के आदि की 9 लाख जनसंख्या कहाँ से और कैसे आयेगी? जब यहाँ 9 लाख पूरे ब्रह्मा कुमार-कुमारी बनेंगे तब तो सतयुग के आदि में आयेंगे और फिर उनको योगबल से जन्म देने वाले भी एडवान्स पार्टी में जाने वाले ब्रह्मा कुमार-कुमारी ही होने चाहिए क्योंकि पतित तो योगबल से जन्म दे न सकें?

Q. बापदादा वतन में ब्राह्मणों और एडवान्स पार्टी वाली आत्माओं को ही इमर्ज करते है, प्रेरणा देते हैं, सहयोग देते हैं या अन्य आत्माओं को अर्थात् धर्म-नेतायें, राज-नेतायें, वैज्ञानिकों आदि को भी इमर्ज करके प्रेरणा देते, शक्ति देते, डायरेक्शन देते हैं?

Q. बापदादा ब्राह्मणों को, एडवान्स पार्टी की आत्माओं को और अन्य आत्माओं को भी वतन में इमर्ज करके

प्रेरणा देता, डायरेक्शन देता, सहयोग-शक्ति देता है तो तीनों की अनुभूति में क्या अन्तर है?

Q. योगबल से जन्म देने वाली आत्मायें कौन होंगी?

Q. क्या जिन्होंने ईश्वरीय ज्ञान नहीं लिया होगा, वे बाहर वाली आत्मायें एडवान्स पार्टी की प्रेरणा से सतयुग में प्रथम जन्म वाली आत्माओं को जन्म देंगी और यदि देंगी तो क्या वे ब्रह्मा के बच्चे कहे जायेंगे या नहीं?

Q. क्या ज्ञानी आत्मा को किसी के देह त्याग के समय आंसू आयेंगे और यदि आयेंगे तो किस हद तक अर्थात् बहकर नीचे गिरेंगे या आंखों में आकर आंखों में ही विलीन हो जायेंगे?

Q. दैवी परिवार में कोई देह का त्याग करता तो भी रोते और लौकिक दुनिया में कोई देह का त्याग करता तो वे भी रोते तो दोनों में अन्तर क्या है और दोनों में क्या समानता है?

Q. सतयुग है प्यार की दुनिया तो क्या सतयुग में भी ये आंसू रूपी प्यार के मोती आंखों में आयेंगे?

Q. क्या किसी भी प्रसंग में शिवबाबा की रोने की छुट्टी है?

Q. भक्ति में भी आत्माओं में भावना होती है, जिसके आधार पर वे भक्ति करते हैं। अभी निमित्त आत्माओं के प्रति हमारे मन में जो भावना होती है, जिसके कारण उनसे बिछुड़ने में आंसू आते हैं तो दोंनों में क्या अन्तर है और क्या सामन्जस्य है?

Q. यदि प्यार के कारण बिछुड़ने पर आंसू आते हैं तो जो आत्मायें देह त्याग कर वतन में जाती हैं, उनके द्वारा भी ऐसी ही महसूसता आनी चाहिए? क्या उनसे वह महसूसता आती है? क्या ब्रह्मा बाबा, जो वतन में बैठे हैं, उनको ऐसी महसूसता आयेगी? इस सत्य पर विचार कर हम निर्णय करें कि हमको आंसू आने चाहिए या नहीं क्योंकि अभी हमको उनके समान बनना है तो हमारी क्या स्थिति होनी चाहिए?

Q. दुख के आंसू और प्यार के आंसुओं में क्या अन्तर है?

Q. ब्राह्मण जीवन और एडवान्स पार्टी के जीवन, उनके पुरुषार्थ और प्राप्तियों का क्या विधि-विधान है और क्या अन्तर है?

साक्षात्कार और ध्यान

Q. क्या आत्मा शरीर छोड़कर जाकर फिर शरीर में प्रवेश कर सकती है?

विचारणीय है -

Q. जब ध्यान में जाते हैं तो यदि आत्मा शरीर से अलग नहीं होती है तो झटका क्यों लगता है, उसका क्या कारण है?

Q. गुल्जार दादी जब वापस आती है तो जो प्रतीक्षा करते हैं, वह क्या है?

Q. साक्षात्कार और ध्यान में क्या अन्तर है या दोनों एक ही हैं?

Q. ध्यान में जाते हैं तो आत्मा वतन में जाती है या यहाँ ही सूक्ष्मवतन का साक्षात्कार होता है? यदि यहाँ ही साक्षात्कार होता है तो बाबा से जो सन्देश लेते-देते हैं, वह ड्रामा अनुसार होता है या बाबा यहाँ टच करता है अर्थात् क्या और कैसे होता है?

Q. क्या आत्मा देह में रहते, देह से अलग होकर कहाँ जाकर कोई कार्य कर सकती है? यदि हाँ तो कैसे और यदि नहीं तो जो बाबा कहते तुम दुनिया में किसी भी कोने में बैठे कहाँ भी बैठी आत्मा की सेवा कर सकते हो, अनुभव करा सकते हो, वह कैसे होता है? कई आत्मिक शक्ति से सम्पन्न आत्मायें दूसरों के मन के भाव को कैसे जान लेते हैं?

Q. जिस दिन अव्यक्त बापदादा के मिलन का दिन होता है, उस दिन गुल्जार दादी सवेरे बापदादा को निमन्त्रण देने जाती हैं और शाम को आने के समय लेने जाती हैं तो ये प्रक्रिया क्या है और कैसे चलती है अर्थात् यहाँ

से ही निमन्त्रण देती हैं या वतन में जाकर निमन्त्रण देती हैं?

स्थापना और विनाश

स्थापना

Q. यदि सतयुग आदि से त्रेता अन्त तक की आत्मायें अभी ज्ञान में या सम्बन्ध-सम्पर्क में नहीं आती है तो उनको परमात्मा द्वारा स्वर्ग का अधिकार किस आधार पर मिलेगा क्योंकि वर्सा तो बीज बोने, परमात्मा का बनने के आधार पर ही मिलता है और यदि वे अन्त तक आयेंगी और अपना बीज बोयेंगी तो यह यज्ञ कब तक चलेगा अर्थात् विनाश कब तक होगा?

Q. क्या हम सतयुग के सुखों के लिए ब्राह्मण बने हैं अर्थात् क्या ब्राह्मण जीवन का लक्ष्य है कि विनाश जल्दी हो और हम सतयुग में जायें और सतयुगी भौतिक सुखों का उपभोग करें?

Q. आत्मायें सतयुग के लिए .. उत्सुक (Eager) क्यों होते अर्थात् विनाश की प्रतीक्षा क्यों करते हैं?

Q. ये विश्व एक अनादि-अविनाशी नाटक है, जो हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है तो विनाश भी अपने समय पर होगा और आत्मायें भी ड्रामानुसार अपने समय पर परिवर्तन होंगी फिर भी बाबा क्यों कहता कि अपनी सम्पूर्णता और सम्पन्नता की डेट बताओ अर्थात् बाबा का भाव-अर्थ क्या है?

Q. क्या अभी हमारे जो किताब आदि हैं, वे विनाश के समय भूगर्भ में दब जायेंगे और द्वापर से वे निकलेंगे? अथवा क्या होगा?

Q. हमारा ये जन्म हमारे पूर्व कर्मों का फल है, जो हमको भोगना ही है और हमारे वर्तमान के कर्मों अनुसार ही हमारा भविष्य जीवन और जन्म होगा, फिर विनाश की जल्दी क्यों?

Q. श्रीकृष्ण के जन्म होते ही विनाश शुरू होगा या विनाश के बाद श्रीकृष्ण का जन्म होगा या श्रीकृष्ण के जन्म होने के बाद विनाश हो?

विनाश

Q. विनाश के समय बचने वाली आत्माओं की स्थिति कैसी होगी या विनाश के समय आत्माओं की स्थिति कैसी होगी?

Q. क्या स्वराज्य अधिकारी अर्थात् स्व-स्थिति में स्थित आत्मा को विनाश की जल्दी होगी या उसको जल्दी विनाश की इच्छा होगी?

Q. विनाश की प्रक्रिया कब, क्यों और कैसे?

Q. क्या आप चाहते हैं कि समय से पहले जल्दी विनाश हो?

Q. बाबा ने कहा पहले आये वे ही पहले घर जायेंगे - इस सत्य को समझ कर विचार करो कि ये सब कब और कैसे होगा? कब एटमिक वार होगी?

Q. स्थापना-विनाश की प्रक्रिया अर्थात् सम्पूर्णता और सम्पन्नता का दर्पण क्या है?

Q. क्या विनाश के समय सृष्टि में जलमई होगी?

Q. विनाश कब और कैसे तथा उसका वर्तमान जीवन से सम्बन्ध क्या है? विनाश को देखने के लिए कैसे शक्ति धारण करें?

Q. ब्राह्मण जीवन का समय कितना है? क्या एडवान्स जन्म का समय ब्राह्मण जन्म में गिना जायेगा?

Q. अब हम चेक करें -

हमारी स्थिति सतयुग के योग्य बनी है?

हमको विनाश की इच्छा क्यों होती है, जब कि संगम का सुख और प्राप्तियाँ सतयुग से भी श्रेष्ठ हैं?
क्या स्वराज्य अधिकारी अर्थात् स्व-स्थिति में स्थित आत्मा को विनाश जल्दी होगी, उसको इच्छा होगी?
क्या सर्व आत्माओं को बाप का और घर का परिचय मिला है, जिससे वे परमधाम जा सकें?
विनाश के लिए बेचैनी क्यों जबकि भविष्य का आधार वर्तमान प्राप्तियाँ और स्थिति हैं?

Q. इन महावाक्यों पर विचार कर हम निर्णय करें कि विनाश कब तक होगा, संगमयुग कितना समय चलेगा हमारा क्या कर्तव्य है और हमको अभी क्या पुरुषार्थ करना है?

Q. विनाश कैसे होगा अर्थात् विनाश के समय क्या स्थिति होगी, क्या-क्या घटनायें होंगी?

Q. विनाश के समय हमारी स्थिति कैसी हो और उसके लिए अभीष्ट पुरुषार्थ क्या है?

Q. विश्व के विनाश से हमारे पुरुषार्थ का क्या सम्बन्ध है?

Q. विनाश के सम्बन्ध में उपर्युक्त बातों को देखने, समझने, विचार करने के बाद प्रश्न उठता है - क्या परमात्मा विनाश के लिए आते हैं, क्या हम विनाश के आधार पर परमात्मा के बने हैं या जी रहे हैं, विनाश का हमारे जीवन से क्या सम्बन्ध है, विनाश से हमारे पुरुषार्थ का क्या सम्बन्ध है, क्या हमको पुरुषार्थ में अलबेला हो जाना चाहिए या और तीव्र पुरुषार्थ करके संगमयुग के सुख का अनुभव करना चाहिए?

एवर-रेडी और अचानक

Q. शिवबाबा सदा एवर-रेडी रहने के लिए कहते हैं तो एवर-रेडी के लिए बाबा का भाव-अर्थ क्या है अर्थात् वह स्थिति क्या है और कैसे होगी, जिसके लिए हम कहें कि हम एवर-रेडी हैं? एवर-रेडी स्थिति के लिए अभीष्ट पुरुषार्थ क्या है?

Q. बाबा ने अनेक बार कहा है - बच्चे एवर-रेडी रहो, अचानक कुछ भी हो सकता है। तो एवर-रेडी स्थिति क्या है और अचानक क्या हो सकता है अर्थात् बाबा का भाव-अर्थ क्या? क्या बाबा ने दुनिया के विनाश के लिए अचानक शब्द बोला है?

Q. बाबा ने कहा एवर-रेडी अर्थात् ब्राह्मणपन के सारे कर्तव्य पूरे कर लेना, तो ब्राह्मणपन के कर्तव्य क्या-क्या है?

Q. सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता और एवर-रेडी स्थिति में क्या सामन्जस्य है?

Q. एवर-रेडी का भाव-अर्थ क्या है, वह स्थिति क्या है?

Q. सम्पूर्णता का दर्पण क्या है?

Q. सम्पन्नता का आधार क्या है?

बैलेन्स, समान स्थिति और एकरस स्थिति

Q. किन बातों में बैलेन्स रखने के लिए और किन परिस्थितियों में एकरस स्थिति रखने के लिए बाबा ने कहा है?

Q. बाबा ने अनेक बार यह श्रीमत दी है कि स्व-उन्नति और सेवा की उन्नति का बैलेन्स रखो? तो स्वउन्नति क्या है अर्थात् उसका मापदण्ड क्या है?

Q. बाबा ने अनेक बार यह श्रीमत दी है कि स्व-उन्नति और सेवा की उन्नति का बैलेन्स रखो? तो स्वउन्नति क्या है अर्थात् उसका मापदण्ड क्या है? स्व-स्थिति और सेवा की उन्नति के बैलेन्स का मापदण्ड क्या है?

विभिन्न धर्म और उनकी स्थापना

Q. बाप आकर जो धर्म स्थापन करते हैं और अन्य धर्म स्थापक आकर जो धर्म स्थापन करते हैं तो दोनों के

धर्म स्थापन करने के विधि-विधान में क्या विशेष अन्तर होता है?

Q. दूसरे धर्म-पितायें आते हैं तो वे भी परकाया में प्रवेश करते हैं परन्तु उससे निकल सकते हैं या नहीं? यदि नहीं निकल सकते हैं तो शंकराचार्य का परकाया प्रवेश, मुसलमान धर्म में कहते कि कोई फरिश्ता आता था और कुरान की आयतें आदि सुनाकर जाता था - यह सब क्या है?

Q. देवी-देवता धर्म वालों के लिए बाबा ने श्याम-सुन्दर क्यों कहा, जबकि सभी धर्म वाले पहले पावन फिर पतित बनते हैं?

Q. देवी-देवता धर्म की स्थापना कौन करता है अर्थात् शिवबाबा या ब्रह्मा बाबा और दोनों के कर्तव्य में क्या अन्तर अर्थात् कौन क्या करता है क्योंकि शिवबाबा तो सतयुग में पालना करने आते ही नहीं हैं?

Q. परमपिता परमात्मा और ब्रह्मा दोनों को क्रियेटर कहा जाता है तो एक क्रियेशन के दो क्रियेटर कैसे हुए अथवा परमपिता परमात्मा किसका क्रियेटर है और प्रजापिता ब्रह्मा किसका क्रियेटर है?

Q. राजाई तो सब धर्म वालों की चलती है, फिर बाबा क्यों कहते कि राजाई शिवबाबा ही स्थापन करते हैं, और कोई धर्म-स्थापक राजाई नहीं स्थापन करते हैं?

Q. भारत में विभिन्न धर्म हैं, उस धर्मवंश की आत्मायें और सब अपने को हिन्दू कहलाते हैं तो उसमें देवी-देवता धर्म वाले कौन हैं, उसकी पहचान कैसे हो?

Q. भारत में विभिन्न धर्म हैं, उनमें आदि सनातन देवी-देवता धर्म की आत्माओं की पहचान कैसे हो?

Q. क्या जैसे देवी-देवता धर्म की कलम लगती है, ऐसे ही अन्य धर्मों की भी कलम लगती है? यदि लगती है तो दोनों की कलम लगने में क्या अन्तर है?

Q. क्या जिस तन में धर्मपितायें आकर अपने धर्म की कलम लगाते हैं, वह और उसके साथ निमित्त बनी आत्मायें उसी समय या कुछ समयान्तर में उसी कल्प में वापस अपने मूल धर्म में आती हैं?

Q. क्राइस्ट को क्रास पर किस धर्म की आत्माओं ने चढ़ाया?

ब्राह्मण जीवन

Q. ब्राह्मण जीवन क्या है, ब्राह्मण जीवन के गुण-धर्म और विशेषतायें क्या हैं, जिसके कारण इसका इतना महत्व और गायन है?

Q. ब्राह्मण जीवन को चोटी क्यों कहा गया है, इसका आधार क्या है?

Q. हमारे जीवन का लक्ष्य क्या है, हमको इस जीवन में और क्या चाहिए?

Q. इस पुरुषार्थी जीवन में सबसे अच्छी अवस्था क्या है?

Q. मानव जीवन का प्रयोजन क्या है?

Q. ब्राह्मण जीवन का प्रयोजन क्या है?

Q. हमारे इस ब्राह्मण जीवन का लक्ष्य क्या है और उसका अभीष्ठ पुरुषार्थ क्या है?

Q. ब्राह्मण जीवन में क्या आकर्षण (Charm) है या ब्राह्मण जीवन में क्या आकर्षण है, जिसके कारण मनुष्य का जीवन में इतना मोह है कि असाध्य रोगों से ग्रसित, मृत्यु-शैय्या पर पड़ा हुआ व्यक्ति भी शरीर छोड़ना नहीं चाहता? क्या मौज से खाना-पीना, रहना, साधन-सम्पत्ति का उपभोग करना, उसका संग्रह करना यही जीवन का आकर्षण है या इस जीवन का कोई और प्रयोजन है?

Q. संगमयुगी ब्राह्मण कितने पकार होते हैं और कैसे?

Q. क्या कोई आत्मा ब्राह्मण कुल में जन्म ले सकती है और यदि ले सकती है तो कैसे?

Q. ये संगमयुगी जीवन परम-प्राप्तियों से परिपूर्ण, परमानन्दमय है, सभी वेद-पुराण, धर्म-ग्रन्थ इसकी गौरव-

गाथा से भरे हुए हैं, ये सदा परमानन्दमय अनुभव हो, इसके लिए अभीष्ठ पुरुषार्थ क्या है?

Q. जीवन की परम-प्राप्ति क्या है अर्थात् जीवन की सर्वश्रेष्ठ प्राप्ति क्या है?

Q. ब्राह्मण जीवन का अभीष्ट कर्तव्य क्या है?

Q. सतोप्रधान पुरुषार्थ ज्ञान में आने के प्रारम्भिक काल में होता है या अन्त में शरीर छोड़ते समय?

Q. हमारे जीवन के लिए उत्तरदायी कौन है? क्या कोई व्यक्ति, सेन्टर, यज्ञ, परमात्मा हमारे जीवन के लिए उत्तरदायी है? क्या हमको उनके ऊपर आधारित रहना चाहिए? या किसी दुख-दर्द के लिए उनको उत्तरदायी ठहराना चाहिए?

Q. विचार करो बाबा ने हमको क्या दिया है, हमारे पास क्या है और अब हमारा कर्तव्य क्या है? हम क्या कर सकते हैं और हमको क्या करना चाहिए? समय की पुकार क्या है और हम क्या कर रहे हैं?

Q. क्या ये जीवन इन्द्रिय सुख-साधनों की प्राप्ति, उनके संग्रह, उनके उपभोग, उनकी प्राप्ति की खुशी मनाने के लिए ही है? क्या उनकी प्राप्ति की ये खुशी हमको अपने अभीष्ट लक्ष्य की प्राप्ति करायेगी?

Q. क्या साधन-सम्पत्ति, पद की प्राप्ति ही जीवन की सफलता, जीवन का चरमोत्कर्ष है?

Q. संगमयुगी ब्राह्मण जीवन सर्वोत्कृष्ट जीवन है, इसका क्या आधार और विशेषतायें क्या हैं?

Q. क्या ये ब्राह्मण जीवन इन्द्रिय सुखों और साधन-सम्पत्ति के संग्रह के लिए है?

Q. मानव जीवन का लक्ष्य क्या है?

Q. हम आत्माओं का अभीष्ट लक्ष्य कया है और उसके लिए अभीष्ट पुरुषार्थ क्या है?

Q. आध्यात्मिक जीवन का अभीष्ट लक्ष्य क्या है और उसकी सफलता क्या है?

Q. बेहद के बाप परमपिता परमात्मा की यथार्थ में प्रापर्टी क्या है? ईश्वरीय वर्सा क्या है और कब प्राप्त होता है?

Q. विश्व की वर्तमान और यज्ञ की वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए हमारा कर्तव्य क्या है?

Q. ट्रस्टी जीवन क्या और ट्रस्टी के गुण-धर्म-कर्तव्य क्या2 हैं?

Q. जो ब्रह्माकुमार-कुमारी बनकर पतित बन जाते हैं तो क्या वे सतयुग के आदि में आ सकते हैं? यदि आ सकते हैं तो कैसे और उनकी स्थिति क्या होगी?

सुख का आधार एवं दुख-अशान्ति का कारण और निवारण

Q. जीवन में दुख-अशान्ति का कारण क्या और उसका निवारण क्या है अर्थात् दुख-अशान्ति की प्रक्रिया आत्मा पर कैसे प्रभावित होती है? दुख-अशान्ति की पहेली का हल क्या है?

Q. बापदादा चाहते हैं - कारण को निवारण में परिवर्तन करो तो कारण का निवारण अर्थात् कारण, निवारण में परिवर्तन कब और कैसे होगा?

Q. सुख-शान्ति-आनन्द कहा जाता है? तो आनन्द क्या है, उसकी अनुभूति क्या है और उसकी अनुभूति कब और कहाँ होती है?

Q. सुख-दुख का निर्णायक बिन्दु (Critaria) क्या है?

Q. इस परम दुख की दुनिया में क्या स्मृति रहे, जिससे जीवन में परम सुख की अनुभूति होती रहे?

Q. जीवन की सफलता अर्थात् सदा सुखमय जीवन का सहज मार्ग क्या है?

Q. क्या भौतिक साधन-सम्पत्ति आत्मा को स्थाई सुख-शान्ति दे सकते हैं?

Q. सबसे श्रेष्ठ सुख क्या है?

Q. जीवन की सर्वोच्च सुख की स्थिति कब, कहाँ और कैसे है?

Q. सुख-शान्ति अर्थात् मुक्ति-जीवनमुक्ति हर आत्मा के जीवन का लक्ष्य है। सुख-शान्ति का आधार क्या है और सुख-शान्ति का दर्पण क्या है?

Q. मानव जीवन की सर्वोत्तम प्राप्ति क्या है और अभी हमको क्या प्राप्त है?

Q. वह कौनसा साधन है, जो परमात्मा पिता ने हमको दिया है, जिस साधन से हर आत्मा सुख-शान्ति को पा सकती है, पा रही है और उसका प्रैक्टिकल स्वरूप क्या है?

Q. कर्मभोग से सहज मुक्त होने का विधि-विधान और साधन क्या है?

Q. दुख-अशान्ति से छूटने का यथार्थ पुरुषार्थ क्या है?

पवित्रता

Q. सच्ची पवित्रता क्या है, कब और कहाँ होती है?

Q. सतयुग की पवित्रता और संगमयुग की पवित्रता अर्थात् देवताओं की पवित्रता और ब्राह्मणों की पवित्रता में क्या अन्तर है?

Q. पवित्रता का दर्पण क्या है?

Q. प्राय: कई भाई-बहनें कहते हैं ज्ञान के विस्तार में क्या जाना है, बाबा कहते हैं बाबा को याद करना है, जिससे धारणा अच्छी हो। अब प्रश्न उठता है कि धारणा क्या चीज है, धारणा का भाव-अर्थ क्या है?

Q. बाबा ने कहा है पवित्रता की धारणा अच्छी होगी तो योग अच्छा लगेगा और योग अच्छा होगा तो ज्ञान-गुण-शक्तियों की धारणा अच्छी होगी। तो धारणा शब्द का अर्थ क्या है?

Q. आत्मा पवित्र होगी तब धारणा होगी? आत्मा कैसे पवित्र होगी और पवित्र होने पर किस बात की धारणा होगी? पवित्रता से भाव-अर्थ क्या है?

Q. धारणा नहीं होती इसलिए किसको समझा नहीं सकते। किस बात की धारणा नहीं होती और क्यों नहीं होती जो किसको समझा नहीं सकते?

Q. सम्पूर्ण पवित्रता क्या है? क्या ब्रह्मचर्य के पालन करने वाले को पवित्र कहेंगे? यदि हाँ तो क्यों और यदि नहीं तो क्यों? क्या देवताओं को सम्पूर्ण पावन कहेंगे? यदि देवतायें सम्पूर्ण पावन हैं तो कब तक और कहाँ तक? क्या सम्पूर्ण निर्विकारी और सम्पूर्ण पवित्र में कोई अन्तर है? सतयुग में जो आत्मा दूसरा जन्म लेती है, उसको सम्पूर्ण पवित्र कहेंगे? निर्विकारी और सम्पूर्ण निर्विकारी में कोई अन्तर है?

Q. पवित्र आत्मा की क्या पहचान है अर्थात् पवित्रता की यथार्थ धारणा क्या है?

Q. पवित्रता का भाव-अर्थ क्या है? क्या ब्रह्मचर्य का पालन ही पवित्रता है।

Q. कोई तुम से पूछे - तुम पावन हो या पतित हो तो क्या उत्तर देंगे?

Q. सन्यासियों और देवताओं की पवित्रता में क्या अन्तर है, जिससे देवताओं के मन्दिर बनते, सन्यासियों के नहीं?

Q. पवित्र आत्माओं की दुनिया कहाँ है?

श्रीमत और निश्चयबुद्धि

Q. निश्चयबुद्धि आत्मा की निशानी क्या है?

Q. श्रीमत का आधार क्या है?

Q. निश्चय और विजय में क्या सामन्जस्य है अर्थात् दोनों में क्या सम्बन्ध है?

Q. निश्चयबुद्धि विजयन्ति का भाव-अर्थ क्या है?

Q. निश्चयबुद्धि विजयन्ति कहा है तो क्या2 निश्चय हो, जिससे आत्मा को जीवन में सदा विजय की अनुभूति

हो ?

Q. जो आत्मायें यज्ञ की स्थापना के समय आई और बाद में बेगरी पार्ट आदि के कारण चली गई, वे अधिक भाग्यशाली कही जायेंगी या जो बाद में आई और अन्त तक यज्ञ सेवा में रहेंगी, वे अधिक भाग्यशाली कही जायेंगी ?

Q. यज्ञ के वर्तमान परिपेक्ष में श्रीमत क्या है, उसका निर्णय और उसका पालन कैसे करें ?

Q. वर्तमान समय श्रीमत का विधि-विधान क्या है ?

Q. ज्ञान मार्ग में होते भी विभिन्न व्यक्तियों की प्राप्तियों, स्थिति को देखते हुए हमारा कर्तव्य क्या है ?

Q. निश्चयबुद्धि और यज्ञ का बेगरी पार्ट - यज्ञ में ड्रामानुसार बेगरी पार्ट आया, जिसकी यज्ञ के इतिहास में बहुत चर्चा है परन्तु विचारणीय विषय है कि क्या सर्वशक्तिवान परमात्मा के द्वारा रचे हुए यज्ञ में बेगरी पार्ट आ सकता है ? फिर भी यदि आया तो ये बेगरी पार्ट क्यों आया, उसमें परमात्मा और ड्रामा का क्या राज़ भरा हुआ है या भरा हुआ था ? क्या परमात्मा जैसे आदि में ब्रह्मा को टच कर सकता है, वैसे बेगरी पार्ट के समय किसी अन्य आत्मा को टच नहीं कर सकता था ?

Q. इस ईश्वरीय यज्ञ में बेगरी पार्ट क्यों आया ? क्या सर्वशक्तिवान परमात्मा के रचे यज्ञ में बेगरी पार्ट आ सकता है ?

Q. क्या यज्ञ में जैसे पहले बेगरी पार्ट आया वैसे फिर आयेगा और यदि फिर आयेगा तो उसका स्वरूप क्या होगा ?

Q. समर्पित जीवन में हमारी सम्पत्ति क्या है, जो आपत्ति काल में हमारे काम आयेगी ?

Q. क्या जो समर्पित होकर धन-सम्पत्ति इकट्ठा करते या करने के सोच-विचार में रहते, वे निश्चयबुद्धि हैं या उनको निश्चयबुद्धि कहेंगे ?

Q. सर्वशक्तिवान परमात्मा के बच्चे और उनका साथ होते हुए भी ब्राह्मणों और विशेषकर समर्पित भाई-बहनों में असुरक्षा की भावना क्यों जागृत होती है या है ?

Q. सबसे बड़ी विजय क्या है और उसका आधार क्या है ?

पुरुषार्थ

Q. पुरुषार्थ क्या है और विश्व-नाटक के ज्ञान का इस पुरुषार्थी जीवन में क्या महत्व है ?

Q. सबसे श्रेष्ठ, अच्छा और सहज पुरुषार्थ क्या है ?

Q. सच्चा पुरुषार्थ क्या है ?

Q. क्या शिवबाबा ने मम्मा-बाबा को, उनके पुरुषार्थ को देखकर ये पद दिया या ड्रामा अनुसार कल्प पहले अनुसार मिला है ?

Q. संगमयुग और सतयुग के सुखों के लिए एक ही पुरुषार्थ है या अलग-अलग है ?

Q. परमानन्दमय जीवन का राज़ क्या है अर्थात् परमानन्दमय जीवन की अनुभूति केसे हो अर्थात् परमानन्द का अभीष्ट पुरुषार्थ क्या है ?

Q. अभी के पुरुषार्थ से 21 जन्मों की राजाई कैसे और क्यों मिलती है ?

Q. कारण को निवारण और समस्या को समाधान में परिवर्तन करने के लिए किस पुरुषार्थ की आवश्यकता है ?

Q. सुख-शान्ति के सागर के बच्चे बनकर भी जीवन में खुशी क्यों नहीं रहती ? खुशी स्थाई ठहर जाये, उसके लिए क्या पुरुषार्थ करें ?

Q. जब अचल-अडोल, स्थेरियम अवस्था होगी तब पुरुषार्थ कर सकेंगे या पुरुषार्थ से अचल-अडोल, स्थेरियम अवस्था होगी?

Q. हमारा लक्ष्य क्या है, उसको प्राप्त करने का अभीष्ठ पुरुषार्थ क्या है और हमारा समय, शक्ति, संकल्प कहाँ तक उसमें लगा है और लग रहा है?

Q. जीवन में सबसे श्रेष्ठ पुरुषार्थ क्या है और सबसे बड़ी सफलता क्या है?

Q. ज्ञान की हर प्वाइन्ट्स को शक्ति या शस्त्र के रूप में धारण करने के लिए क्या पुरुषार्थ है?

Q. ज्ञान मार्ग के पुरुषार्थ और भक्ति मार्ग के पुरुषार्थ में क्या अन्तर है और क्या-क्या समानतायें हैं अर्थात् यथार्थ सत्य को बिना जाने के पुरुषार्थ और सत्य को जानने के बाद के पुरुषार्थ में क्या अन्तर है?

Q. खुशी सदा स्थाई रहे, उसका अभीष्ट पुरुषार्थ क्या है?

Q. संगठित पुरुषार्थ और व्यक्तिगत पुरुषार्थ दोनों में क्या-क्या लाभ हैं?

Q. स्वर्ग अर्थात् मुक्ति-जीवनमुक्ति का सुख हम आत्माओं का भाग्य है, यह ड्रामा में हमारा पार्ट ही है या हमारे पुरुषार्थ की बलिहारी है?

Q. एक सोते हुए व्यक्ति के मौन और जागृत व्यक्ति के मौन में क्या अन्तर है, आत्मा पर दोनों का क्या प्रभाव है और दोनों में कौनसा मौन श्रेष्ठ है?

Q. बाबा ने कहा है आगे कड़ी परीक्षायें आने वाली हैं, उनको पास करने अर्थात् सामना करने के लिए अभी से कड़ा पुरुषार्थ चाहिए - तो वह कड़ा पुरुषार्थ क्या है?

Q. ड्रामा, पुरुषार्थ और भाग्य में क्या अन्तर है और क्या-क्या समानतायें हैं?

Q. सेवा हमारे जीवन का मुख्य अंग है, सेवा में मनवांच्छित सफलता प्राप्त करने के लिए यथार्थ पुरुषार्थ क्या है?

Q. बाबा कहता ज्ञान में चलने वाले अच्छे-अच्छे बच्चों को भी माया खा लेती है - इसका कारण क्या है?

Q. अच्छे पुरुषार्थी की निशानी क्या है, उसका कर्तव्य क्या है?

Q. वर्तमान विश्व की चकाचौंध और यज्ञ में भी साधन और सत्ता की दौड़ को देखते हुए एक अच्छे पुरुषार्थी का क्या कर्तव्य है?

Q. हर चीज सतोप्रधान, सतो, रजो, तमो में अवश्य आती है, इस विश्व में कोई भी चीज स्थिर नहीं है तो हमारा जो पुरुषार्थ है, उसमें भी सतोप्रधान, सतो, रजो, तमो होता है? यदि होता है तो वह गति-विधि सतोप्रधान, सतो, रजो, तमो के क्रम से चलती है या तमोप्रधान, तमो, रजो फिर सतो और सतोप्रधान क्रम से चलती है अर्थात् उसकी गति-विधि क्या है?

Q. अमृतवेला का समय कब होता है?

Q. अमृतवेला का प्रभाव क्या और कैसे आत्मा और शरीर को और प्रकृति को प्रभावित करता है?

Q. वास्तविकता को देखें तो 24 घण्टों में हर क्षण अमृतवेला है क्योंकि पृथ्वी की गति और सूर्य की स्थिति को देखते हुए हर क्षण किसी न किसी स्थान या देश में अमृतवेले का समय होता ही है। फिर भी बाबा कहते हैं कि अमृतवेले का समय विशेष बच्चों के लिए है - इसका भाव-अर्थ क्या है?

साइलेन्स की शक्ति

Q. साइलेन्स की शक्ति क्या है, उसको जमा करने का विधि-विधान क्या है?

Q. साइलेन्स की शक्ति की साइन्स की शक्ति पर विजय का भाव अर्थ क्या है?

Q. साइलेन्स शक्ति से क्या2 कार्य किये जा सकते हैं?

Q. साइलेन्स शक्ति बढ़ाने के लिए क्या साधन और साधना है?

Q. साइलेन्स की शक्ति को जमा करने की बैंक अभी संगमयुग पर ही खुलती है, इसका क्या भाव-अर्थ है?

Q. बाबा ने कहा है साइलेन्स की शक्ति जमा करो, उसके लिए बीजरूप स्थिति का अभ्यास करना अति आवश्क है। इसके लिए विशेष एकान्त में बैठकर निर्संकल्प होकर बीजरूप स्थिति का अभ्यास करो और चलते-फिरते कर्म करते बीच-बीच में देह से न्यारे होने का अभ्यास भी करो तब ये साइलेंन्स की शक्ति जमा होगी। अब इस अभ्यास के लिए साधन और साधना क्या है?

Q. बाबा ने कहा है - साइन्स की शक्ति पर साइलेन्स की शक्ति की विजय विश्व-परिवर्तन करेगी, इसका भाव-अर्थ क्या है और यह कब और कैसे होगा?

आत्मिक शक्ति और वास्तु-कला अर्थात् वास्तु-शास्त्र

Q. वास्तु-कला का जनक अर्थात् निर्माता कौन अर्थात् वास्तु-कला साइलेन्स की शक्ति का जनक है या साइलेन्स शक्ति वास्तु-कला का जनक है? किसका प्रभाव प्रधान है?

Q. क्या वास्तु-कला आत्मिक शक्ति का आधार है या आत्मिक शक्ति वास्तु-कला का आधार है?

Q. क्या वास्तु कला के आधार पर ड्रामा को बदला जा सकता है? यदि हाँ तो कैसे और यदि नहीं तो हमारा कर्तव्य क्या है?

Q. बाबा के समय और बाबा के बाद 1990 तक जो भवन निर्माण हुए वे वास्तु-कला के आधार पर निर्माण हुए हैं या आत्मिक शक्ति के आधार पर निर्माण हुए हैं?

Q. क्या वास्तु-कला पर ध्यान केन्द्रित करने अर्थात् उस अनुसान निर्माण करने, सुधार करने से मृत्यु नहीं होंगी, कोई दुर्घटनायें नहीं होगी, कोई दुख-दर्द नहीं होगा, कोई विघ्न नहीं आयेंगे? दुर्घटनाओं और दुख-दर्द, विघ्नों का कारण हमारे संचित कर्म हैं या वास्तु-निर्माण?

Q. वर्तमान में हमारे व्यक्तिगत जीवन में और समग्र यज्ञ में अनेक प्रकार की अप्रिय घटनाओं और विघ्नों का कारण ईश्वरीय नियम-संयम में गिरावट और ढीलापन है या वास्तु-निर्माण?

Q. आत्मा का प्रभाव तत्वों पर प्रधान है या तत्वों का प्रभाव आत्मा पर प्रधान है? वास्तु-दोष की क्या स्थिति है

Q. आत्मा के दुख का कारण तत्व, आत्मा के कर्मों के आधार पर बनते हैं या तत्वों की विकृति अर्थात् वास्तु-दोष से आत्मा दुखी होती है? सृष्टि का विधान क्या है?

Q. क्या हम अपने योगबल से वास्तु-दोष को निष्क्रिय कर सकते हैं या वास्तु-सुधार से कर्म-फल को टाल सकते हैं अर्थात् कर्म के फलस्वरूप आये दुख-दर्द से मुक्ति पा सकते हैं? दोनों स्थितियों में हमारा क्या कर्तव्य है?

बाप समान सम्पूर्ण और सम्पन्न

Q. बाप समान बनने का लक्ष्य है तो बाप समान स्थिति क्या है और उसके लिए अभीष्ट पुरुषार्थ क्या है?

Q. सम्पूर्ण पवित्रता क्या है, सम्पूर्ण पवित्रता और बाप समान स्थिति में क्या अन्तर है और उसके लिए अभीष्ट पुरुषार्थ क्या है?

Q. शिवबाबा और ब्रह्मा बाबा के गुणों में क्या अन्तर है और क्या समानता है?

Q. सम्पूर्णता सन्तुष्टता का और सन्तुष्टता प्रसन्नता का आधार है। तो हमारी सम्पूर्णता और परमात्मा की सम्पूर्णता में क्या अन्तर है और क्या सामन्जस्य है?

Q. एक साधारण आत्मा, राजा और परमपिता परमात्मा की सम्पूर्णता में क्या समानता है, जिसके कारण

साधारण आत्मा और राजा में अहंकार और हीनता का बीज अंकुरित नहीं हो सकता?

Q. संगमयुग पर सम्पूर्णता की प्राप्ति और भविष्य में लक्ष्मी-नारायण की प्राप्ति में क्या सामन्जस्य है?

ब्रह्मा और सृष्टि-रचना

Q. नई सृष्टि की रचना कैसे होती है अर्थात् सृष्टि रचना की अति रहस्यमय पहेली का हल क्या है?

Q. ब्रह्मा कौन है, ब्रह्मा का जन्म कैसे होता है और ब्रह्मा और परमात्मा में क्या सम्बन्ध है?

Q. ब्रह्मा और भागीरथ का क्या सम्बन्ध है? भागीरथ ने गंगा लाई, इसका क्या रहस्य है?

Q. ब्रह्मा और सरस्वती का क्या सम्बन्ध है?

Q. ब्रह्मा का अन्य धर्मों से क्या सम्बन्ध है?

Q. ब्रह्मा को भी अनेक भुजायें दिखाते हैं और देवियों को भी अनेक भुजायें दिखाते हैं तो ब्रह्मा और देवियों का क्या सम्बन्ध है और क्या रहस्य?

Q. ब्रह्मा और दादा लेखराज में क्या सम्बन्ध है?

Q. ब्रह्मा और नई दुनिया की रचना का क्या सम्बन्ध है?

Q. शिवबाबा और ब्रह्मा बाबा के गुण-कर्तव्यों, विशेषताओं का अनुभव इस एक ही तन द्वारा होता है तो दोनों के अन्तर को कैसे पहचाना जा सकता है?

Q. नई दुनिया की स्थापना में परमात्मा और ब्रह्मा का क्या पार्ट है, स्थापना में दोनों का क्या अस्तित्व है?

Q. नई दनिया अर्थात् स्वर्ग को रचने वाला और देवी-देवता धर्म की स्थापना करने वाला एक ही है या दो हैं? यदि एक है तो वह कौन है अर्थात् शिवबाबा या प्रजापिता ब्रह्मा बाबा और यदि दो हैं तो उनमें कौन क्या कार्य करता है और कैसे करता है?

Q. शिवबाबा और ब्रह्मा बाबा के एक ही शरीर से पार्ट बजाते हुए भी दोनों के पार्ट में क्या अन्तर है और दोनों के पार्ट की क्या विशेषता है?

Q. क्या ब्रह्मा बाबा की आत्मा किसी जन्म बच्ची के रूप में जन्म लेता है अर्थात् स्त्री बनता है?

Q. साकार ब्रह्मा और अव्यक्त ब्रह्मा या सूक्ष्म वतन वासी ब्रह्मा में क्या अन्तर है? क्या साकार ब्रह्मा बाबा जो फरिश्ता बनकर सूक्ष्म वतन से जो कार्य कर रहे हैं, उनसे उनकी आत्मा प्रभावित होती है अर्थात् सूक्ष्म शरीर से कार्य करने का भी फल होता है?

Q. अव्यक्त ब्रह्मा और धर्मराज में क्या सम्बन्ध है अर्थात् दोनों अलग-अलग हैं या एक ही हैं?

Q. साकार ब्रह्मा बाबा की याद, अव्यक्त रूपधारी ब्रह्मा की याद और निराकार शिवबाबा की याद में क्या अन्तर है और उसका क्या फल है?

Q. साकार ब्रह्मा बाबा और अव्यक्त रूपधारी ब्रह्मा बाबा के कर्तव्यों में क्या अन्तर है?

Q. संगम की आयु, ब्रह्मा की आयु और दादा लेखराज की आयु में कितना अन्तर है अर्थात् तीनों की आयु कितनी गिनी जायेगी?

विविध विषय

Q. मन्सा सेवा एवं मन्सा भोगना का स्वरूप क्या है?

Q. कैसी स्थिति हो जो ज्ञान की यह सब बातें रियलाइज कर सकें?

Q. ज्ञान की इन सब बातों को कौन धारण कर सकेंगे? क्या धारणा हो, जो ज्ञान की सब बातों की धारणा कर सकें?

Q. अधिकार और कर्तव्य जीवन रूपी गाड़ी के दो चक्र हैं, दोनों के सन्तुलन वाले की जीवन रूपी गाड़ी

सफलतापूर्वक अपनी मंजिल पर पहुँच सकती है परन्तु ये संतुलन स्थिर कैसे हो?

Q. अहंकार और हीनता आत्मा के बड़े शत्रु हैं, जो जाने-अन्जाने आत्मा को पतन के गर्त में गिरा देते हैं परन्तु किस सत्य की स्मृति और धारणा हो तो जीवन में अहंकार और हीनता न आये?

Q. अहंकार-हीनता (Superiority inferiority) दोनों आत्मा के बड़े शत्रु हैं, इनसे मुक्त होने का साधन क्या है? अहंकार-हीनता है क्या?

Q. किस स्थिति में स्थित आत्मा अहंकार-हीनता दोनों से मुक्त होती है, जहाँ मान-शान, साधन-सम्पत्ति ऊंच-नीच का भेद मिट जाता है?

Q. ज्ञान सागर बाप ने हमको जो ज्ञान दिया है, उसकी यथार्थ धारणा क्या है?

Q. सन्यासियों ने परमात्मा के लिए नेति-नेति शब्द क्यों कहा और जो ज्ञान मार्ग में भी सत्य है?

Q. आत्मिक स्मृति और आत्मिक स्वरूप की स्थिति में क्या अन्तर है?

Q. जो अव्यक्त स्थिति में स्थित होंगे, वे ही अव्यक्त मिलन का अनुभव कर सकेंगे? तो वह अव्यक्त स्थिति क्या है, कैसी है, उसका अनुभव क्या है, उसका पुरुषार्थ क्या है, उसके लिए साधन और साधना क्या है?

Q. क्या सतयुगी-त्रेतायुगी राजाई के उत्तराधिकार की वंश परम्परा वर्तमान के सेन्टरों के उत्तराधिकार परम्परा से प्रभावित होगी अर्थात् सतयुग-त्रेतायुग की राजाई के उत्तराधिकार की वंश परम्परा और वर्तमान सेन्टरों के उत्तराधिकार की परम्परा में क्या सामन्जस्य है और क्या अन्तर है?

Q. ईश्वरीय प्राप्तियों का विधि-विधान क्या है?

Q. बाबा हमको क्या माल देते हैं?

Q. साकार मिलन और अव्यक्त मिलन में क्या अन्तर है?

Q. दुनिया और आत्माओं की कलायें तो सतयुग से ही गिरती जाती हैं, फिर बाबा ऐसा क्यों कहते हैं कि दुनिया को पुराना रावण बनाते हैं, जबकि सतयुग में रावण होता ही नहीं? बाबा के कहने का भाव-अर्थ क्या है?

Q. हम आत्माओं की ज्ञान स्वरूप स्थिति कैसी होनी चाहिए अर्थात् ज्ञान स्वरूप स्थिति क्या है?

Q. क्या सब बाप समान सम्पन्न बनेंगे?

Q. जीवन के सब प्रश्नों का उत्तर क्या है, जिससे सहज ही इस पढ़ाई में पास हो जायें?

Q. काम-वासना और कामोत्तेजना का कारण क्या है और उससे मुक्त होने का पुरुषार्थ क्या है?

Q. श्रीकृष्ण का जन्मदिन 12 बजे रात्रि को दिखाते, शिव-जयन्ति, नव वर्ष आदि भी 12 बजे मनाते हैं तो ये 12 बजे मनाने की प्रथा कब से आरम्भ हुई, इसका आधार क्या है?

Q. परमात्मा दैवी गुण और आसुरी गुण दोनों से न्यारा है तो परमात्मा में कौनसे गुण हैं और वे क्या हैं?

Q. क्या भक्ति मार्ग में काशी कलवट आदि खाने से विकर्म विनाश होते हैं?

Q. क्या पावन या कर्मातीत आत्मा को दूसरी आत्माओं के सुख-दुख की फीलिग होगी?

Q. हम रावणराज्य में आ गये तो हमारा धर्म-कर्म गिर गया या हमारी स्थिति गिरने के कारण हमारे धर्म-कर्म गिर गये और ये दुनिया रावण राज्य बन गयी?

Q. क्या सतयुगी देवताओं को ब्रह्मा-भोजन की इच्छा होती है? यदि नहीं तो किन देवताओं को ये दिल होती है?

Q. तनाव (Stress) क्या है? तनाव का कारण क्या है और निवारण क्या है?

Q. परमात्मा पिता को पाकर, ज्ञान को समझकर आत्मा इस युद्ध के मैदान में आकर भी इससे पलायन क्यों

कर जाती है?

Q. दृढ़ संकल्प तो सभी करते हैं परन्तु दृढ़ संकल्प की परिभाषा क्या है अर्थात् दृढ़ संकल्प है क्या?

Q. मनुष्य देवताओं की लायकी और अपनी ना लायकी की महिमा गाते हैं परन्तु यथार्थ लायकी क्या है और देवताओं की लायकी तथा ब्राह्मणों की लायकी में किसकी लायकी महान है?

Q. पाप-पुण्य की परिभाषा क्या है और पुण्य जमा करने का साधन और साधना क्या ?

Q. देहाभिमानी को ठौर नहीं मिल सकता, देहाभिमानी से पाप अवश्य होता है - क्यों?

Q. चलते-फिरते फरिश्ता स्वरूप कब, कैसे और क्यों दिखाई देगा? इसका क्या विधि-विधान है?

Q. रावण राज्य क्या है, जिसके आने से आत्मा वाम मार्ग अर्थात् विकारी मार्ग में चली जाती है और विकार में जाने से दुखी हो जाती है? विकार में जाने से रावण राज्य शुरू होता है या रावणराज्य में आने से विकार में जाते हैं?

Q. जो ब्रह्माकुमार-कुमारी बनकर पतित बन जाते हैं तो क्या वे सतयुग के आदि में आ सकते हैं? यदि आ सकते हैं तो कैसे और उनकी स्थिति क्या होगी?

Q. भक्ति मार्ग में मरने के बाद शरीर की जो रस्म-रिवाज, क्रिया-कर्म, संस्कार आदि करते हैं, वह किसको फॉलो करते हैं?

Q. क्या भक्ति से सृष्टि नर्क बनती है या नर्क बनने से भक्ति आरम्भ होती है?

Q. ज्ञान धन शिवबाबा से मिलता है या ब्रह्मा बाबा और सरस्वती मां से, तो ब्रह्मा-सरस्वती से क्या मिलता है?

Q. अभी क्या-क्या साइन दिखाई देते हैं और दिखाई देंगे, जो सतयुग में काम आने वाले हैं?

Q. व्यर्थ संकल्पों का मूल कारण है क्यों-क्या की क्यू - तो ये क्यों-क्या की क्यू कैसे समाप्त हो?

Q. क्यों की क्यू खत्म होगी तब ड्रामा की भावी पर एकरस होंगे या ड्रामा की भावी पर एकरस होंगे तब क्यों की क्यू खत्म होगी?

Q. फेथफुल बनने का भाव-अर्थ क्या है?

Q. परमात्मा मनुष्य सृष्टि का ही बीजरूप है या सर्व योनियों की आत्माओं का बीजरूप है? यदि मनुष्य आत्माओं का ही बीजरूप है तो अन्य योनि की आत्माओं का बीजरूप कौन है?

Q. बीजरूप स्थिति क्या है और अव्यक्त स्थिति क्या है अर्थात् दोनों एक स्थिति के ही पर्याय हैं या दोनों में कोई मूलभूत अन्तर है?

Q. सृष्टि-चक्र और जीवन में सुख-दुख, पुण्य-पाप के संचित का क्रम क्या चलता है?

Q. विकार आत्मा में हैं या शरीर में अर्थात् विकारी आत्मा बनती है या शरीर? क्यों और कैसे?

Q. पूरे 84 जन्म कौन लेते हैं और कैसे?

Q. शिवबाबा कब आता है अर्थात् उस समय को कौनसा समय कहा जायेगा?

Q. सतयुग में नम्बरवार महल बनायेंगे, साधन-सम्पत्ति की प्राप्ति भी नम्बरवार होगी, फिर भी सब सुखी होंगे, तो उसका आधार क्या होगा?

Q. आत्माओं के ऊंच-नीच बनने का राज़ क्या है?

Q. क्या ज्ञान में भी अव्यभिचारी और व्यभिचारी स्थिति होती है? यदि नहीं तो कैसे और हाँ तो क्यों और कैसे?

Q. क्या मीरा स्वर्ग में आयेगी, क्या वह ज्ञान में आयेगी?

Q. क्या यथार्थ में विश्व में मनुष्यों की वृद्धि हो रही है और जानवरों की संख्या कम हो रही है?

Q. मरजीवा स्थिति या जीते जी मरने की स्थिति क्या और कैसी है?

Q. बहुत सी बातों के विषय में बाबा दुनिया वालों की बातों का या धर्मों का उदाहरण देते हैं, तो उन बातों का उद्गम कहाँ से है अर्थात् दुनिया वालों से या बाबा से?

Q. सहज में ब्रह्मचर्य की धारणा कैसे हो?

Q. कब से राम को भूले हैं अर्थात् कब से रावण ने राम को भुलाया है?

Q. नग्न सभ्यता का प्रादुर्भाव कहाँ से और किसके द्वारा हुआ अर्थात् किस धर्म की आत्माओं ने इस सभ्यता को जन्म दिया?

Q. सतयुग से ही आत्मा की उतरती कला होती है - तो सतयुग से त्रेता के अन्त तक की उतरती कला और द्वापर आदि से कलियुग अन्त तक की उतरती कला में क्या अन्तर होता है, जिससे सतयुग-त्रेता में चार कलायें उतरती हैं और द्वापर-कलियुग में 12 कलायें उतर जाती हैं?

Q. प्रिन्स बनने के लिए बेगर क्यों बनना आवश्यक है?

Q. परमात्मा के द्वारा दिये गये ज्ञान के सर्व रहस्य हमारे सामने प्रत्यक्ष हैं, उन सब पर विचार करके अपने को चेक करो कि वे सब हमारे अनुभव, निश्चय और धारणा में हैं? यदि हैं तो हमारी अवस्था कैसी होनी चाहिए?

Q. क्या शास्त्र लिखने वालों ने परमात्मा से सम्मुख में ये ज्ञान सुना होगा?

Q. मृग-मरीचिका या रुण्य के पानी का हमारे ब्राह्मण जीवन से क्या भाव-अर्थ या तुलना है?

Q. पावन बनने का भाव-अर्थ क्या है?

Q. फॉलो फादर क्या है और कैसे?

Q. ज्ञान, गुण, शक्तियों की धारणा का दर्पण क्या है?

Q. बाबा बच्चों से क्या चाहता है?

Q. बाबा हमारे जीवन में परिवर्तन चाहते हैं परन्तु परिवर्तन क्या, क्यों और कैसे हो? क्या हमारे परिवर्तन से परमात्मा का कोई स्वार्थ है? परिवर्तन हुआ, उसकी पहचान क्या है?

Q. किस सत्य का ज्ञान रहे तो हमारे सम्बन्ध सदा मधुर रहें?

Q. ये सत्य है या किंवदन्ति मात्र है कि

1. एक मरने वाले व्यक्ति को कांच के हवा-प्रूफ बॉक्स में बन्द करके रखा और जब वह मरा तो उसकी आत्मा के बाहर निकलने से कांच क्रेक हो गया।

2. जापान के माओ धर्म वालों ने... परमात्मा का फोटो खीचा, उसमें स्टार आया।- रमेश भाई का लेख मार्च 04

Q. विश्व-स्तरीय शक्ति (Cosmic Energy) क्या है?

Q. विकार में जाने से पाप-कर्म की प्रक्रिया क्या है, उसका आत्मा पर प्रभाव कैसे होता है?

Q. किस बात की स्मृति रहे तो कोई चिन्ता और व्यर्थ चिन्तन नहीं हो?

Q. आत्मा पर माया का वार क्यों होता है?

Q. वर्तमान विश्व उन्नति के पथ पर है या पतन के पथ पर है? यदि उन्नति के पथ पर है तो कैये और यदि पतन के पथ पर है तो कैसे?

Q. क्या वर्तमान में यज्ञ-व्यवस्था एक मत की ओर अग्रसर है? यदि है तो कैसे और यदि नहीं है तो क्यों और कैसे? ऐसे में हमारा कर्तव्य क्या है?

Q. स्वर्ग है वण्डर आफ दि वर्ल्ड, उसको बनाने वाले नरक वाले मनुष्य होंगे या स्वर्ग वाले होंगे?

Q. सतयुग-त्रेता के कर्म-फल-महसूसता और द्वापर-कलियुग के कर्म-फल-महसूसता और संगमयुग के कर्म-फल-महसूसता में क्या अन्तर है?

Q. जीवन में सच्चा सुखी कौन है और कौन रह सकता है?

Q. सतयुग-त्रेता परमात्मा का वर्सा है या स्व-पुरुषार्थ का फल है?

Q. किस राज का ज्ञान रहे तो कर्म सदा श्रेष्ठ हों?

Q. क्या सूक्ष्म वतनवासी ब्रह्मा, विष्णु, शंकर की आत्मायें हैं और वे शिवबाबा के बच्चे हैं या साक्षात्कार मात्र हैं?

Q. 16 कलाओं से क्या तात्पर्य है अर्थात् क्या किन्हीं विशेष नामों से 16 कलायें होती हैं या यह सम्पूर्णता की निशानी है?

Q. हम शान्तिधाम को याद करते ... तो क्या हम शान्तिधाम जाते है या उसको याद कर स्वयं शान्ति का अनुभव करते है?

Q. सागर अहमदाबाद, असलम बेग बागलकोट आदि जैसे केसों में हमारे यज्ञ के शीर्ष भाई-बहनें, सन्देशियां क्यों धोखा खाते हैं, उनके कर्मों को कैसे स्वीकार कर लेते हैं? उनके ऐसे कर्मों से हमारे यज्ञ की व्यवस्था पर, हमारे ज्ञान की क्षमता पर, बाबा की प्रत्यक्षता पर क्या प्रभाव पड़ता है? इस स्थिति में साधारण स्टूडेण्ट की क्या भूमिका होनी चाहिए?

Q. परमात्मा पिता आकर सारे सृष्टि-चक्र की हिस्ट्री-जॉग्राफी बताते हैं तो हिस्ट्री क्या है और जॉग्राफी क्या है?

Q. विश्व की रिलीजियो-पॉलिटिकल हिस्ट्री-जाग्राफी क्या है?

Q. तुमको कोई पूछते तुमको यहाँ क्या मिलता है, तो तुम क्या उत्तर देंगे?

Q. पढ़ते-पढ़ते मर गये तो वह पढ़ाई खत्म हो जाती है और ये पढ़ाई खत्म नहीं होती - इसका राज़ क्या है?

Q. ज्ञान माला और भक्त माला का गायन है तो भक्त माला में केवल देवी-देवताओं के भक्त होंगे या अन्य धर्मो के बड़ों की भी भक्त माला में गिनती होगी?

Q. काशी कलवट खाते हैं, शिव पर बलि चढ़ते हैं, उसका राज़ क्या है? यथार्थ बलि चढ़ना किसको कहा जाता है?

Q. क्या कोई हमारा मित्र या शत्रु है, यदि है तो कैसे और यदि नहीं है तो कैसे?

Q. अपनी महिमा या प्रशंसा सुनने में जितनी खुशी होती है, उतनी ही अपनी निन्दा या आलोचना सुनने में भी हो, उसकी साधना और साधन क्या है?

Q. सात दिन के सप्ताह का विधान कहाँ से बना अर्थात् सप्ताह के सात दिन के आधार बाबा ने सप्ताह कोर्स की बात कही है या बाप ने सारे ज्ञान को देने के लिए सात दिन के कोर्स का और पावन बनने के लिए सात दिन की भट्ठी का विधि-विधान बनाया, जिसके आधार पर सप्ताह के सात दिनों की गणना की गई?

Q. बाबा ने कहा ज्ञान माला अलग है और भक्ति माला अलग है - तो ज्ञान माला में कौनसी आत्मायें आती हैं और भक्ति माला में कौन-कौन सी आत्मायें आती हैं?

Q. परमपिता परमात्मा सत्, चेतन्य, आनन्द का सागर, ज्ञान का सागर ... है, उनका यह पद अविनाशी है। आत्मा का पार्ट भी तो हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है, तो मनुष्यों का पद अविनाशी क्यों नहीं हो सकता?

Q. हम कैसे कह सकते कि आगे सतयुग अवश्य आयेगा अर्थात् हम कैसे किसको सिद्ध कर बता सकते हैं

कि सतयुग आने वाला है?

Q. पर-चिन्तन पतन की जड़ है और स्व-चिन्तन उन्नति की सीढ़ी है? आत्मा पर दोनों का प्रभाव क्या है?

Q. दुख और दर्द अर्थात् वेदना में क्या मूलभूत अन्तर है और दोनों का कारण एवं प्रभाव क्या है?

Q. ज्ञान मार्ग और भक्ति मार्ग में क्या अन्तर है और दोनों का परस्पर क्या सम्बन्ध है?

Q. दान कितने प्रकार का होता है? सबसे श्रेष्ठ दान क्या है और कौन कर सकता है?

Q. बाबा ने 3-3 बातें क्या-क्या समझाई हैं?

Q. शान्ति से सुख या सुख से शान्ति?

Q. क्या सभी आत्मायें परमात्मा से शक्ति लेकर पावन बनती हैं?

Q. ड्रामा के पार्ट और कर्मों की गहन गति एवं पुरुषार्थ में क्या सम्बन्ध है?

Q. सतयुग-त्रेता में लौकिक बाप से जो वर्सा पाते हैं, वह बेहद का बाप का वर्सा है, लौकिक बाप का नहीं और द्वापर-कलियुग में लौकिक बाप से जो वर्सा पाते हैं, वह लौकिक बाप है - यह कैसे कहेंगे?

Q. लक्ष्मी-नारायण को यह सृष्टि-चक्र, कल्प-वृक्ष आदि का ज्ञान दिया जाये, तो क्या वे इसको समझेंगे? यदि हाँ तो क्यों और कैसे और यदि नहीं तो क्यों और कैसे? हम अभी इस ज्ञान को क्यों समझते हैं?

Q. सबसे श्रेष्ठ पुरुषार्थ कौन सा हे, जिसमें सर्व पुरुषार्थ समा जायें अर्थात् सिद्ध हो जायें?

Q. जब बाबा साकार में था तो कोई भी उनसे मिलकर अपने दिल की बात कह सकता था और उनकी श्रीमत ले सकता था परन्तु अभी की परिस्थितियाँ भिन्न दिखाई देती हैं अर्थात् अभी बाबा तो अव्यक्त हो गये, साकार में जो मुख्य दादियाँ हैं, उनसे मिलने के लिए भी ब्राह्मणी की छुट्टी लेकर ही मिलना सम्भव है तो ऐसी परिस्थिति में हमारा कर्तव्य क्या है?

Q. पाप के खाते और आत्मा पर चट चढ़ने का क्या सम्बन्ध है, उसका क्या विधि-विधान है?

Q. गर्भ में मनुष्य की आत्मा कितने दिनों के बाद प्रवेश करती है?

Q. 33.33 प्रतिशत में पास होने का विधि-विधान कहाँ से चालू हुआ?

Q. क्या संगमयुग केवल पुरुषार्थ का युग है अर्थात् केवल पुरुषार्थ के लिए ही है या संगमयुग की कोई और भी विशेषतायें हैं?

Q. क्या संगमयुग के अतिरिक्त किसी समय शिवबाबा को ये ज्ञान अनुभव में आता है?

Q. 21 पीढ़ी की गणना का सिद्धान्त क्या है अर्थात् एक मनुष्य के 21 जन्म से 21 पीढ़ी की गणना है या एक मनुष्य की वंशावली में दादे-परदादे-पोत्र-परपोत्रे के रूप में गणना होती है?

विचारणीय विविध प्रश्न

Q. Concentration - दृष्टि, शब्द,.. और योग में क्या अन्तर है? दोनों में क्या समानतायें हैं और क्या अन्तर हैं? दोनों के क्या लाभ हैं?

Q. व्यर्थ संकल्पों से मुक्त होने का साधन क्या है?

Q. मनुष्यों की बुद्धि में क्यों नहीं बैठता है और कब बैठेगा?

Q. जैसे बाप अपकारी पर उपकार करता है, वैसे हम भी अपकारी पर उपकार कब और कैसे कर सकेंगे? अर्थात् इसके लिए क्या धारणा चाहिए?

Q. सर्व आत्मायें बाप के बच्चे हैं तो वे सब कब और कहाँ और कैसे बाप से मिलती हैं?

Q. स्पेस जहाँ सेटेलाइट आदि छोड़ते हैं, वह स्पेस क्या है और कहाँ है?

Q. द्वापर से तुम्हारे भक्तों की मनोकामनायें पूर्ण करता हूँ . तो वे भक्त कहाँ से आये और वे किस धर्म के हैं? क्या वे सतयुग-त्रेता में आये या कब आये? क्या त्रेता के बाद भी देवी-देवता घराने की आत्मायें आती रहती हैं? या वे भक्त वे आत्मायें होती हैं, जो सतयुग में राजाओं की प्रजा आदि होते हैं?

Q. लाइट के ताज का आधार क्या है?

Q. वर्तमान तमोप्रधान समय है, हम बाप द्वारा ऊपर चढ़ रहे हैं तो परिस्थितियां आना अवश्य सम्भावी है परन्तु उनमें हम मूँझें नहीं, उन पर सहज विजय पा सकें, उसका साधन और साधना क्या है?

Q. क्या इस विश्व-नाटक में कोई आत्मा पुरुषार्थ करके दूसरी आत्मा से आगे जा सकती (Overtake) है?

Q. सबसे श्रेष्ठ सुख क्या और क्यों है तथा सबसे निकृष्ट सुख क्या है और क्यों है?

Q. परमात्मा पिता आकर सारे सृष्टि-चक्र की हिस्ट्री-जॉग्राफी बताते हैं तो हिस्ट्री क्या है और जॉग्राफी क्या है?

Q. ज्ञान-सागर मन्थन, अपने से बातें करना, रूह-रुहान करने में क्या अनतर है?

Q. सुख, अतीन्द्रिय सुख, आनन्द, खुशी, नशा में क्या मूलभूत अन्तर है?

Q. दृष्टि-वृत्ति-संकल्प-वायुमण्डल या दृष्टि-संकल्प-वृत्ति-वायुमण्डल या दृष्टि-स्मृति-संकल्प-वृत्ति-वायुमण्डल?

Q. समर्पित जीवन की मर्यादा और अन्ध-श्रृद्धा में क्या अन्तर है?

सारांश

Q. आध्यात्मिक जीवन के गुण-धर्म क्या हैं, जीवन में अध्यात्मिकता का महत्व क्या है?

Q. आध्यात्मिकता क्या है?

Q. बाबा जो कहता है कि तुम्हारी उड़ती कला होनी चाहिए, वह उड़ती कला क्या है?

Q. सबसे रेष्ठ पुरुषार्थ कौन सा हे, जिसमें सर्व पुरुषार्थ समा जायें अर्थात् सिद्ध हो जायें?

Q. वर्तमान संगमयुग पर हमारा कर्तव्य क्या है?

आध्यात्मिक प्रश्नावली

आध्यात्मिक प्रश्न और उनके विषय में विचारणीय तथ्य

किसी प्रश्न को करने में प्रश्न-कर्ता के दो भाव होते हैं। एक प्रश्न होता है संशय एवं दूसरे को नीचा दिखाने या भ्रमित करने के लिए और दूसरा प्रश्न होता है किसी रहस्य को जानने के दृष्टिकोण से। जो संशय से प्रश्न उठता है या किसी को नीचा दिखाने या भ्रमित करने के के लिए किया जाता , वह पतन की ओर ले जाता है, जिसके लिए बाबा ने कहा संशयबुद्धि विनश्यन्ति। परन्तु जो प्रश्न किसी रहस्य को जानने के उद्देश्य से किया जाता है, वह प्रश्न-कर्ता और दूसरों के उत्थान का आधार बनता है। ज्ञान के किसी रहस्य को जानने के उद्देश्य से प्रश्न उठना अच्छी बात है। यदि कोई बात समझते नहीं हैं और पूछेंगे भी नहीं तो वह अन्धश्रृद्धा हो जाती है और अन्धश्रृद्धा कभी भी धोखा दे सकती है। इस लक्ष्य से ही यहाँ कुछ विचारणीय प्रश्न और उनके सम्भावित उत्तर लिखे गये हैं, जिनके विषय में जानना आवश्यक है।

हम किसी बात की घोषणा करते या लिखते तो वह बात वैज्ञानिक दृष्टि से अर्थात् प्रकृति के नियमानुसार हो, विवेकसंगत हो और बाबा के महावाक्यों के अनुसार भी हो अर्थात् तीनों से प्रमाणित हो तब ही उसको यथार्थ सत्य माना जा सकता है। जैसे योगबल की सन्तान की बात बाबा ने कही है, जिसके रहस्य को प्रत्यक्ष रूप में सिद्ध करना असम्भव सा ही है परन्तु उसके लिए बाबा ने पपीते का, मोर का प्रमाण भी दिया है, शास्त्रों में भी इसके विषय में वर्णन है और बुद्धि भी समझती है कि जीवात्मा के नेत्रों से, मुख से, स्पर्श से ऐसे सूक्ष्म अणु-परमाणु प्रवाहित होते हैं, जो एक-दूसरे पर प्रभावित होते हैं। तो उसी अनुसार ये सन्तानोत्पत्ति का कार्य भी सम्भव है, असम्भव नहीं। ये योगबल और भोगबल से सन्तानोत्पत्ति ही स्वर्ग और नर्क की सीमा-रेखा है। नहीं तो स्वर्ग और नर्क की सीमा रेखा क्या होगी, ये भी एक प्रश्न है।

बाबा ने मुरली में जो महावाक्य उच्चारे हैं या जो बातें कही हैं, उन पर विचार करें तो हम देखेंगे कि बाबा ने देश-काल और परिस्थिति के अनुसार बात कही है, इसलिए कहाँ-कहाँ उनमें विरोधाभास भी प्रतीत होता है। परन्तु उन देश-काल-परिस्थिति को विचार करें तो वह सही है। बाबा ने जो बात कही है, उनमें तीन बातें या भाव या दृष्टिकोण विशेष रूप से देखने में आते हैं। एक है शिक्षा की दृष्टि से, दूसरे आदर्श के रूप में और तीसरे हैं अविनाशी सत्य। जो अविनाशी सत्य हैं, वे सृष्टि के नियमानुसार अर्थात् वैज्ञानिक दृष्टि से भी सत्य सिद्ध होते हैं और बौद्धिक दृष्टि से विवेकसंगत हैं।

किसी अविनाशी सत्य का निर्णय करने के पहले आदर्श और यथार्थ दोनों को ही ध्यान में रखना अति आवश्यक है क्योंकि जीवन में आदर्श का महत्व है परन्तु सत्य की उपेक्षा नहीं की जा सकती है। सत्य सदा ही सत्य होता है और उसका जीवन में महत्वपूर्ण प्रभाव होता है।

वर्तमान जगत में जो बातें पुनर्जन्म को सिद्ध करती हैं अर्थात् जो प्रत्यक्ष प्रमाण मिले हैं, उनके अनुसार स्त्री का पुरुष के रूप में जन्म लेना या पुरुष का स्त्री के रूप में जन्म लेना यथार्थ और विवेकसंगत नहीं लगता है। इसलिए ये बात असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य है क्योंकि कोई भाई स्त्री के रूप में जन्म लेकर गर्भ धारण करे, बच्चों को जन्म दे, उनकी पालना करे, ये संस्कार पुरुष में जाग्रत होना असम्भव सा ही है परन्तु बाबा ने मुरली में कहा है, इसलिए उसकी अवहेलना नहीं की जा सकती। परन्तु दुनिया में मिले पुनर्जन्म के उदाहरणों को अध्ययन करने से ये बात व्यवहारिक नहीं लगती है। अब बाबा ने वह बात किस भाव-अर्थ से कही, यह देश-काल-परिस्थिति को समझने और विचार करने की बात है।

ऐसे ही परमधाम ऊपर है, परमधाम में झाड़ जैसा तीन लोक के चित्र में दिखाया है, वैसा ही है या वह नक्शे के रूप में बताया है। ऐसे ही पशु योनियों के विषय में बाबा ने अधिक नहीं बताया और कहा तुम उसके विषय में मत सोचो, तुम पहले पावन बनने का पुरुषार्थ करो। परन्तु इसका मतलब ये नहीं कि उसके विषय में विचार करना गलत है। जब कोई व्यक्ति इस विषय में प्रश्न पूछता है तो क्या हम सदैव ये कहेंगे कि बाबा ने ये बात अभी बताई नहीं है। किसी बात में ये कहा भी जा सकता है और कभी उसके विषय में उत्तर देना भी आवश्यक होगा।

‘‘ड्रामानुसार दिन-प्रतिदिन ज्ञान की प्वाइन्ट्स गुह्य होती जाती हैं तो चित्रों में भी चेन्ज होगी। बच्चों की बुद्धि में भी चेन्ज होती है। आगे यह थोड़ेही समझते थे कि शिवबाबा बिन्दी है। ऐसे थोड़ेही कहेंगे कि पहले ऐसा क्यों नहीं बताया।... बाप ज्ञान का सागर है तो ज्ञान देते रहेंगे, करेक्शन होती रहेगी।’’ सा.बाबा 6.10.06 रिवा.

बाबा ने हमको ये सत्य ज्ञान दिया है, उसकी सत्यता में कोई सन्देह नहीं है परन्तु बाबा ने कहा है - ये ज्ञान अन्धश्रृद्धा से मानने का नहीं है, इसको तुम अच्छी रीति समझो, विचार करो, अनुभव करो, तब ही तुम किसको भी समझा सकेंगे। इसीलिए बाबा सदैव विचार-सागर मन्थन के लिए प्रेरणा देते रहते हैं।

Q. एक अच्छे गॉडली स्टूडेण्ट का क्या अधिकार और कर्तव्य है?

जीवन का सच्चा सुख पाने के लिए मनुष्य को अपने अधिकार और कर्तव्य की सीमा को भी समझना परमावश्यक है क्योंकि अधिकार और कर्तव्य जीवन रूपी गाड़ी के दो पहिए हैं, जो सदा समानान्तर चलते तब ही जीवन सुखी होता है। अधिकार की प्रधानता आत्मा को उदण्ड बना देती है और अधिकार को भूलकर कर्तव्य की प्रधानता आत्मा में दासता का बीजारोपण करती है। इसलिए दोनों में सन्तुलन होना परमावश्यक है। बाबा के महावाक्यों को धारण करने के लिए उनको पढ़ना-सुनना, उनका मनन-चिन्तन करना अति आवश्यक है। हर आत्मा की शक्ति अपनी-अपनी है, इसलिए एक-दूसरे के विचारों में भिन्नता होना स्वाभाविक है। अपने विचारों को अभिव्यक्त करना और दूसरे के विचारों को समझना, उन पर विचार करना और जो यथार्थ हो उसे स्वीकार करना ही अच्छे स्टूडेण्ट की निशानी है और यही स्टूडेण्ट जीवन की सफलता का आधार है। अन्धश्रृद्धा से बिना विचार किये हर बात को स्वीकार करने से इस जीवन का सच्चा सुख अनुभव नहीं हो सकता है। इसलिए ही बाबा ने अनेक बार कहा है - बाबा जो समझाता है, उसको जज करो, विचार-सागर मंथन करो, तब ही तुमको खुशी अनुभव होगी।

''अगर गाय न उगारे, ऐसा मुख न चले तो समझना चाहिए गाय बीमार है। यह भी ज्ञान का मंथन अगर नहीं करते तो गोया रोगी बीमार हो... अनहेल्दी हो।''

सा.बाबा 6.12.69 रिवा.

Q. सर्व प्वाइन्ट्स का सार क्या है अर्थात् सर्व प्रकार के पुरुषार्थ में सफलता का आधार क्या है?

सर्व प्वाइन्टस का सार है प्वाइन्ट बन जाना, जो सर्व प्रकार के पुरुषार्थ का आधार है और जिस पर सर्व प्रकार के पुरुषार्थ की सफलता आधारित है। जो अपने इस पुरुषार्थ में सफल हो जाता है अर्थात् देह और देह की दुनिया को भूल अपने मूल स्वरूप प्वाइन्ट रूप में स्थित होने की सफलता प्राप्त कर लेता है, उसके लिए इस ज्ञान मार्ग में सब सहज हो जाता है। ब्रह्मा बाबा ने सबसे अधिक ये पुरुषार्थ किया और हमको भी ये अभ्यास करने के लिए प्रेरित करते रहते हैं। इसके महत्व को साकार बाबा और अव्यक्त बापदादा ने अनेक मुरलियों में भिन्न-भिन्न रूप से स्पष्ट किया है और अभी भी अव्यक्त मिलन के समय ड्रिल के रूप में ये अभ्यास कराते हैं। 69-70 की अव्यक्त बापदादा ने भट्ठी के समय एक प्रश्न पूछा कि प्रश्नों का उत्तर देने में कौन-कौन होशियार हैं तो कई नाम सामने आये, फिर बाबा ने कहा - प्रश्नों से पार जाने में कौन होशियार है तो एक भी भी नाम सामने नहीं आया। फिर बाबा ने कहा - ये प्रश्नों से पार अपने

बिन्दुरूप में स्थित होना सबसे बड़ा पुरुषार्थ है। इस बात को बाबा ने अनेक शब्दों में स्पष्ट किया है, जैसे - तीन बिन्दियों को याद करते रहो तो खज़ाने सदा जमा होते रहेंगे, बीजरूप स्थिति का अभ्यास करना पहले नम्बर का पुरुषार्थ है। हठयोग में निर्विकल्प समाधि की सिद्धि का आधार निर्संकल्प समाधि की सिद्धि है।

Q. समर्पित जीवन का अर्थ क्या है ? क्या समर्पित जीवन का अर्थ बुद्धि को ताला लगा देना अर्थात् अन्धश्रृद्धा से हर बात को स्वीकार करते जाना है या आत्मा, परमात्मा और विश्व-नाटक के ज्ञान पर निश्चय रखकर ईश्वरीय महावाक्यों पर पूर्ण श्रृद्धा-भावना रखते हुए ईश्वरीय ज्ञान के रहस्यों को समझने का पुरुषार्थ करना, परस्पर विचारों का आदान-प्रदान करके समर्पित जीवन की सफलता का मार्ग प्रशस्त करना है ?

ज्ञान आत्माओं को परमात्मा का परम वरदान है। समर्पित जीवन का यथार्थ सुख लेने के लिए ज्ञान के रहस्यों को समझना और उनको जीवन में अपनाना परमावश्यक है। ज्ञान के रहस्यों को यथार्थ रीति समझने और धारण करने के लिए उन ज्ञान बिन्दुओं पर मनन-चिन्तन करना, परस्पर अनुभवों का आदान-प्रदान करना अति आवश्यक है। सेवा ब्राह्मण जीवन का परम कर्तव्य है परन्तु यथार्थ सेवा के लिए ज्ञान के सभी रहस्यों को समझना भी परमावश्यक है, जिससे किसी भी देश-काल-परिस्थिति में किसी भी व्यक्ति को हम प्रश्न का उत्तर दे सकें और उसको सन्तुष्ट कर सकें। यदि किसी बात को हम बिना समझे विचार किये मान लेते तो वह अन्ध-श्रृद्धा हो जायेगी और अन्ध-श्रृद्धा कभी न कभी धोखा अवश्य देगी। इस प्रकार समर्पित जीवन के यथार्थ रहस्य को समझकर, उसको सफल बनाना है। ज्ञान को समझने के लिए पुरुषार्थ करना अलग बात है और ज्ञान में संशय उठाना अलग बात है। इन दोनों के अन्तर को जानना भी अति आवश्यक है।

इस भाव और भावना से कुछ प्रश्न यहाँ दे रहे हैं और उन पर विचार करके अपने सम्भावित उत्तर भी लिख रहे हैं। कोई भी भाई-बहन इन विषयों पर अपने विचारों को व्यक्त करेगा और उसका उत्तर अधिक विवेकसंगत, ईश्वरीय महावाक्यों के अनुरूप होगा तो हम उसको अवश्य स्वीकार करेंगे। आशा है कि अन्य भाई-बहनें भी इन सत्यों पर विचार करेंगे और अपने विचारों से हमको अवगत करायेंगे। बाबा भी हमको सदा ही विचार-सागर मंथन के लिए प्रेरित करते हैं।

हर आत्मा के अपने-अपने संस्कार हैं, शक्ति है इसलिए सबमें वैचारिक भिन्नता होना स्वाभाविक है, इसलिए परस्पर अपने विचारों का आदान-प्रदान करके ही किसी सत्य को

अनुभव किया जा सकता है विचारों में एकता स्थापित की जा सकती है।

''अब बाप कहते हैं बुद्धि से जज करो भक्ति मार्ग में भी तुम वेद-शास्त्र पढ़ते आये हो, अभी मैं तुमको ज्ञान सुनाता हूँ। तुम जज करो - भक्ति में सुनते वह राइट है या मैं जो सुनाता वह राइट है ? ... यह ज्ञान की बातों के लिए कहा जाता है।''

सा.बाबा 6.4.04 रिवा.

Q. परमात्मा ज्ञान का सागर, परम शिक्षक है, वह हमको पढ़ा रहे हैं, उनकी हर बात श्रृद्धा-भावना रखकर आंखे बन्द करके मानते हुए चलने में कल्याण है या उसको समझने के लिए उस पर विचार भी करना चाहिए ? यदि श्रृद्धा-भावना से मानकर चलने में कल्याण है तो बाबा जो कहते तुम विचार-सागर मन्थन करो, उसका भाव-अर्थ क्या है ?

''यह कोई कॉमन सतसंग नहीं है, जहाँ ढेर आकर इकट्ठे हों। ... स्कूल में टीचर किस पर कृपा करते हैं क्या! टीचर को तो पढ़ाना है और तुमको पढ़ना है। यह नॉलेज है, इसमें अन्धश्रृद्धा की कोई बात नहीं है। यह कोई कॉमन सतसंग नहीं है। यह है ईश्वरीय सतसंग।''

सा.बाबा 22.4.08 रिवा.

Q. क्या हमको चिन्तित होकर किसी घटना विशेष, किसी कार्य विशेष, व्यक्ति विशेष ... के लिए चिन्तन करना चाहिए ?

विश्व-नाटक की यथार्थता अर्थात् विधि-विधान को देखें तो पवित्र आत्मा अर्थात् अपने मूल आत्मिक स्वरूप में स्थित आत्मा, परमात्मा की याद में स्थित आत्मा में समय पर कृत्य का संकल्प स्वत: जागृत होता है, उसकी शुभ में अभिरुचि और अशुभ में अरुचि स्वत: होती है, इसलिए आत्मा को चिन्तित होकर किसी भी प्रकार के चिन्तन की आवश्यकता नहीं है। आवश्यकता है अपने को पवित्र बनाने की, अपने मूल आत्मिक स्वरूप में स्थित रहने की, जिसके लिए परमात्मा की याद और विश्व-नाटक के विधि-विधानों को समझना अति आवश्यक है। पुरुषार्थ उसके लिए करना है। इसके लिए ही परमात्मा ने हमको ये ज्ञान दिया है।

Q. बाबा ने सारा ज्ञान दिया है या अभी रहा हुआ है, क्या हम किसी को कह सकते हैं कि यह बात बाबा ने अभी हमको नहीं बताई है ?

जब ब्रह्मा बाबा सम्पूर्णता को प्राप्त हो गया और समय सम्पूर्णता की ओर जा रहा है तो ये कैसे कहा जा सकता है कि बाबा ने हमको ये बात नहीं बताई है। बाबा ने बताई है, उसको समझकर ही ब्रह्मा बाबा सम्पूर्ण बना है अर्थात् बाबा ने तो बताई है परन्तु वह बात हमने अभी तक नहीं समझी है, यह बात अलग है।

''जैसे अशरीरी, कर्मातीत बनकर क्या किया ? एक सेकेण्ड में पंछी बन उड़ गया। साकार शरीर से एक सेकेण्ड में उड़े ना। ता अब पढ़ाई पूरी हुई। ... अब उड़ाने के लिए आते हैं।... कहाँ तक रिवाइज कोर्स पूरा हुआ है। कितना समय और चाहिए ? साकार तन के हर कर्म, हर स्थिति से अपने को भेंट करो और देखो तो पता पड़ेगा कि हम कहाँ तक हैं।''

अ.बापदादा 26.6.69

''साकार तन द्वारा पढ़ाने का पार्ट था, वह पढ़ाई का कोर्स तो पूरा हुआ। अब पढ़ाई पढ़ाने के लिए नहीं आते हैं। वह कोर्स, उसी तन द्वारा पार्ट पूरा हो चुका है। अभी तो आते हैं मिलने के लिए, बहलाने के लिए। मुख्य बात है अशरीरी बनने की। कर्मातीत बनकर क्या किया ? एक सेकण्ड में पंछी बन उड़ गया। ... पढ़ाई तो पूरी हुई, बाकी एक कार्य रहा हुआ है, वह है साथ ले जाने का।''

अ.बापदादा 26.6.69

''यह भी तुम जानते हो कि इस समय जो हम इस ज्ञान से पद पाते हैं, चक्र लगाकर फिर वही बनेंगे। यह बड़ी आश्चर्यवत् विचार सागर मंथन करने की बातें हैं।... यह बातें तुम बच्चे ही समझते और समझाते हो। तुम थोड़ेही कहेंगे कि हम नहीं जानते हैं। तुमको बाप इस समय सब समझाते हैं।''

सा.बाबा 12.2.04 रिवा.

''मूर्ति कहती तो नहीं है कि तुम नीच हो लेकिन स्वयं ही साक्षात्कार करते हैं। ऐसे ही आप लोगों के सामने कोई भी आये तो ऐसे ही अनुभव करे कि यह क्या है और मैं क्या हूँ। ... अभी जबकि ज्ञान का कोर्स समाप्त हो, रिवाइज़ कोर्स चल रहा है।''

अ.बापदादा 21.4.73

आत्मा

Q. सतयुग में अकाले मृत्यु नहीं होती है, इसका भाव-अर्थ क्या है ?

पहले तो ये समझना आवश्यक है कि अकाले मृत्यु क्या है ? वास्तव में अकाले मृत्यु कोई होती नहीं है क्योंकि हर घटना पहले से ही विश्व-नाटक में नूँधी हुई है। प्राय: लोगों की यह अभिधारणा है कि किसी दुर्घटना आदि में किसी की मृत्यु हो जाती है, तो वह अकाले मृत्यु है। वास्तव में ऐसा नहीं है। दुर्घटना आदि तो वर्तमान कलियुग में सामान्य बात है और ये शरीर त्याग का एक माध्यम है। यदि एक ही आयु का कोई व्यक्ति सालो-साल असाध्य बीमारी से दुखी होकर मरे और एक किसी दुर्घटना में तुरन्त शरीर छोड़ दे तो आप अपेक्षाकृत कौनसी मृत्यु को अच्छा कहेंगे ? हमारा विचार तो ये है कि सालों साल बीमारी से दुखी होकर मरने से दुर्घटना में तुरन्त मर जाना अच्छी बात है। परन्तु अकाले मृत्यु के विषय में हमारी मान्यता है

कि बहुत छोटी आयु में शरीर छोड़ना, माँ-बाप के आगे बच्चे का शरीर छोड़ना, बड़े भाई के आगे छोटे भाई का शरीर छोड़ देना आदि-आदि अकाले मृत्यु है, जो सतयुग में नहीं होगा। सतयुग में हरेक अपनी पूरी आयु के बाद ही शरीर छोड़ते हैं। सतयुग में भी शरीर छोड़ने की कोई निर्धारित सीमा या आयु-नियम (Standard Age) नहीं होगा, जिसको पाकर सभी एक समान आयु में शरीर छोड़ें। वहाँ भी विभिन्न मनुष्यों के शरीर छोड़ने में भिन्नता अवश्य होगी, सबकी आयु एक समान नहीं हो सकती है अर्थात् आयु में भी भिन्नता अवश्य होगी।

विश्व-नाटक की वास्तविकता को देखा जाये तो अकाले मृत्यु कोई होती ही नहीं है अर्थात् अकाले मृत्यु जैसी कोई बात ही नहीं है क्योंकि अनादि-अविनाशी ड्रामा के नियमानुसार जिस आत्मा को जब और जैसे शरीर छोड़ना है, तब ही छोड़ती है, एक सेकेण्ड भी उससे आगे-पीछे नहीं हो सकती है। ड्रामा के इस अटल सत्य को कभी भूलना नहीं चाहिए।

''स्वर्ग में शरीर छोड़ने के पहले साक्षात्कार होता है। अभी हम यह शरीर छोड़ जाये बालक बनेंगे। शरीर की आयु पूरी हुई है। वहाँ अकाले मृत्यु होता नहीं है। पुराना शरीर छोड़कर नया ले लेते हैं।'' सा.बाबा 10.5.08 रिवा.

Q. क्या द्वापर-कलियुग में भी कोई की अकाले मृत्यु होती है ? यदि हाँ तो अकाले मृत्यु क्या है और कैसे ?

द्वापर-कलियुग में आत्माओं के हिसाब-किताब, विकर्मों के कारण माँ-बाप के रहते, बच्चे शरीर छोड़ देते, बड़े भाई के रहते छोटा भाई शरीर छोड़ देता, इसलिए उसको अकाले मृत्यु कहा जाता है। इस विषय में एक ऐतिहासिक उदाहरण हैं - जब गुरु गोबिन्द सिंह के दो बच्चों को औरंगजेब ने कैद कर लिया और उनको मुसलमान बनने के लिए कहा तो उन्होंने मना कर दिया। तब उसने उनको जीते जी दीवार में चिनने का आज्ञा दे दी। जब दीवार उनके चारो तरफ चिनने लगी और छोटे भाई के गले तक आ गई तो बड़ा भाई रोने लगा। उसको रोता देखकर छोटे ने पूछा तू रोता क्यों है ? तब बड़े ने कहा - मैं इसलिए नहीं रोता हूँ कि हम मर रहे हैं परन्तु मुझे दुख इस बात का हो रहा है कि इस संसार में तू मेरे बाद में आया और मेरे से पहले जा रहा है।

Q. क्या किसी दुर्घटना में शरीर छोड़ने वाली सभी आत्मायें भटकती हैं ?

Q. किसी अचानक घटना या दुर्घटना आदि में किसी की मृत्यु होती है तो क्या वह अकाले मृत्यु है और वे सभी आत्मायें भटकती हैं ?

नहीं। कुछ लोगों की ऐसी अभिधारणा है कि जब किसी दुर्घटना में किसी की मृत्यु हो जाती है

तो उसे अकाले मृत्यु की संज्ञा दे देते हैं और समझते हैं कि वे आत्मायें भटकती है। परन्तु विवेक कहता कि ऐसा नहीं है, ये एक भ्रान्ति है। यदि ड्रामा की भावी पर विचार करें तो अकाले मृत्यु होती ही नहीं। हर आत्मा ड्रामानुसार अपने निश्चित समय पर ही शरीर छोड़ती है, हर एक का शरीर छोड़ने का विधि-विधान अलग है। कोई का दुर्घटना में शरीर छोड़ने का है, कोई का चारपाई पर दुखी होकर शरीर छोड़ने का विधि-विधान है। या कोई अन्य कारण हो आत्मायें दुर्घटना में मरती हैं, वे सभी भटकती नहीं हैं। प्रेत योनि में भटकने का भी किन्हीं आत्माओं का पार्ट है, उनमें अधिकांश वे होती हैं, जिनकी हत्या की जाती है और मरते समय उनके अन्दर बदला लेने आदि की भावना बलवती होती है। किन्हीं-किन्हीं आत्माओं का परस्पर हिसाब-किताब इतना जटिल और खराब होता है, इसलिए अपने उस हिसाब-किताब को पूरा करने के लिए अर्थात् बदला लेने के लिए, बदला आदि लेने के लिए कुछ आत्मायें भूत-प्रेत योनि में भटकती हैं, जो सूक्ष्म शरीर के अस्तित्व को सिद्ध करता है।

Q. चारपाई पर बीमार, दुखी होकर शरीर छोड़ने और किसी आकस्मिक घटना में तुरन्त शरीर छोड़ देने में कौनसा शरीर छोड़ना अच्छा होगा ?

कोई भी आत्मा जब किसी प्रकार की वेदना महसूस करती है, वह कर्मभोग विशेष दुखदाई होता है। इसलिए जब कोई आत्मा किसी भी घटना में अचानक देह का त्याग कर देती है तो वह देह त्याग की दुखद वेदना से बच जाती है, जबकि कोई आत्मा असाध्य रोगों से पीड़ित होकर दुखी होकर देह का त्याग करती है, देह त्याग के लिए तड़फती है, तो हमारा विचार है कि दुर्घटना में बिना दुख-दर्द के अचानक देह का त्याग करना श्रेष्ठ है। उसमें कोई बुराई नहीं है। ये विश्व एक नाटक है, जिसमें पार्ट बजाने के लिए आत्मा को नये वस्त्र अर्थात देह को धारण करने के लिए देह का त्याग तो करना ही पड़ता है और पड़ेगा।

Q. जड़-जंगम और चेतन प्रकृतियों के गुण-धर्म क्या हैं और तीनों में अन्तर क्या है ?

जड़ चीजें जैसे पत्थर, सूखी लकड़ी आदि में कोई महसूसता शक्ति नहीं होती है, इनमें अपनी कोई बढ़ने की शक्ति नहीं होती है परन्तु इनमें भी आकर्षण शक्ति (Magnetic power) होती है, जिससे वे अपने समकक्ष तत्वों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं और उनके सामूहीकरण से इनकी मात्रा में वृद्धि होती है और विघटन से घटती होती है।

जंगम प्रकृति में भिन्न-भिन्न प्रकार हैं और उनके अपने बीज होते हैं, जिनके आधार पर वे अनुकूल वातावरण में अंकुरित होते हैं, फलते-फूलतू हैं और अपने गुण-धर्म के अनुरूप पंच तत्वों अर्थात् मिट्टी, पानी, हवा, अग्नि, आकाश से अणु-परमाणु आकर्षित करके अपनी वृद्धि

करते हैं और आगे के लिए नये बीजों का सृजन करते हैं। इनके विकास में उसके बीज और खेत तथा पालना तीनों का महत्व समान होता है - जैसे सन्तानोत्तपत्ति में माँ, बाप और आने वाली आत्मा तीनों का महत्व होता, वैसे ही जंगम प्रकृति में भी बीज प्रधान होता है, बीज के आधार पर वृक्ष बनता है और उसके आधार पर ही उसके गुण-धर्म कार्य करते हैं परन्तु चेतन प्रकृति में नर के बीज और मादा के सहयोग से शरीर का निर्माण तो होता है परन्तु उसमें आने वाली आत्मा का पार्ट प्रधान होता है। चेतन प्रकृति में शरीर रचना के लिए नर का बीज प्रधान होता है और वह मादा के गर्भ में प्रस्थापित होकर उसके शरीर से तत्वों को आकर्षित करके देह का निर्माण करता है परन्तु उस निर्मित पिण्ड में चेतनता तब आती है, जब उसमें आत्मा प्रवेश करती है परन्तु जंगम में अलग से कोई आत्मा आदि प्रवेश नहीं करती है। चेतन प्रकृति में भी शरीर धारण करने की चार प्रक्रियायें हैं - अंडज, उद्भिज, स्वेदज और जलज। चारों प्रकार की प्रक्रियाओं में जब शरीर का निर्माण हो जाता है तब चेतन आत्मा उसमें प्रवेश करती है और वह जड़ से चेतन हो जाता है।

जंगम का बीज होता है, जो अनुकूल स्थान और वातावरण पाकर अंकुरित होता है और वृक्ष के रूप में विकसित होता है - जैसे शुक्राणु से शरीर निर्मित होता। उसका एक मैगनेटिक फील्ड होता है जो उसके आकार, प्रकार और स्वरुप पर निर्भर करता परन्तु उसमें सोचने समझने कुछ नया बढ़ाने-घटाने की, स्थानान्तरित होने आदि की अपनी शक्ति नहीं होती है जैसे आत्मा में होती है। आत्मा शरीर निर्मित होने के बाद अलग से प्रवेश करती तब शरीर में चेतनता अर्थात् महसूसता अर्थात् अनुभव की शक्ति आती है। आत्मा शरीर से अलग है इसलिए उसका अपना रुप-देश-काल-गुण-धर्म हैं। आत्मा देश-काल-परिस्थिति के अनुसार अपनी अनुभव शक्ति को परिवर्तन करती है। प्यार, राग-द्वेष, भय-चिन्ता आदि से प्रभावित होती है और उसके प्रभाव को अपने में संचित करती है, जो जंगम प्रकृति में नहीं होता है। चेतन में प्रतिशोध करने की शक्ति होती है परन्तु जंगम में प्रतिशोध करने की शक्ति नहीं होती है।

ऐसे आत्मा चेतन है इसलिए वह अपने सुख-दुख की अभिव्यक्ति कर सकती है, स्मृति को संचित कर सकती है, अपनी शक्ति का विकास कर सकती है, समयानुसार अपने को स्थानान्तरित कर सकती है परन्तु जंगम अर्थात पेड़-पौधे ऐसा नहीं कर सकते हैं। कुछ पेड़-पौधे ऐसे होते हैं, जिनका बीज नहीं होता है, उनकी कलम लगती है। कुछ पेड़-पौधे मांसाहारी भी होते हैं परन्तु उनका वह संस्कार सीमित ही होता है।

जंगम में आदि से अन्त तक शाखायें-प्रशाखायें निकलती हैं परन्तु चेतन आत्मा में

ऐसा नहीं होता है और न ही चेतन आत्मा के शरीरों में ऐसा होता है। चेतन आत्मा का जन्म लेते ही जो शरीर होता है, वही उसी रूप में वृद्धि को पाता है।

आत्मा में पूर्व नीहित अविनाशी पार्ट ही संस्कार कहलाता है, उस पार्ट को पुनरावृत्त करने में मन-बुद्धि सहयोगी बनती है, जिसके आधार पर ही आत्मा में अनुभव होता है और आत्मा अपना पार्ट पुनरावृत्त करने का निर्णय करती है। ये संस्कार जड़, जंगम और चेतन तीनों में होते हैं परन्तु जड़-जंगम में मन-बुद्धि न होने के कारण अनुभव और निर्णय करने की शक्ति एवं उसे व्यक्त करने की शक्ति नहीं है।

जैसे किसी योनि के शरीर के निर्माण में उसके नर का बीज समकक्ष योनियों की मादा तक ही काम कर सकता है, सब में नहीं। जंगम में भी कुछ पेड़-पौधों की कलम लगती है परन्तु एक पेड़ की कलम उसकी समकक्ष पेड़ों के साथ ही लग सकती है, सब में नहीं।

बाबा ने भी कहा है परमात्मा ज्ञान का सागर सृष्टि का चेतन बीजरूप है, इसलिए वह इस कल्प-वृक्ष के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान देता है। उसमें ये ज्ञान देने के संस्कार हैं। जैसे परमात्मा में संस्कार हैं, वैसे आत्माओं में भी अविनाशी संस्कार नीहित होते हैं, वैसे ही जड़ बीज में भी वृक्ष के विकास के सारे संस्कार होते हैं परन्तु वह चेतन नहीं है, इसलिए बता नहीं सकता। आत्मा अविनाशी है, उसमें संस्कार भी अविनाशी होता है परन्तु जंगम प्रकृतियों के बीज में अविनाश्यता शक्ति नहीं होती है अर्थात् वह आग-पानी में जल या गल सकता है।

''आत्मा अविनाशी है, शरीर विनाशी है। आत्मा 84 जन्म लेकर सारा पार्ट बजाती है। आत्मा घटती-बढ़ती नहीं है, शरीर घटता-बढ़ता है। आत्मा कैसे शरीर में आती, कैसे और कहाँ से निकलती है? ... आत्मा अलग है, जीव अलग है।''

सा.बाबा 4.9.04 रिवा.

Q. पेड़-पौधों की प्रक्रिया जीव या शरीर जैसे ही होती है अर्थात् शरीर के समान घटते बढ़ते हैं परन्तु जैसे शरीर में आत्मा अलग से प्रवेश करती है, उस तरह से पेड़-पौधों में कोई अलग से आत्मा प्रवेश करती है? यदि करती है तो कहाँ से और कैसे?

पेड़-पौधों में अलग से कोई आत्मा प्रवेश नहीं करती है। परन्तु वे शरीर की तरह बढ़ते अवश्य हैं और उनमें जड़ तत्वों से विशेष गुण होते हैं, इसलिए वे जंगम कहलाते हैं। पेड़-पौधों में कुछ विशेष गुण होते हैं, जो चेतन जैसे प्रतीत होते हैं परन्तु आत्मा की चेतनता अलग चीज है और उसके अलग गुण हैं, जो जंगम प्रकृति में नहीं होते हैं।।

''परमात्मा को ही नॉलेजफुल बीजरूप कहा जाता है, उनको सत्-चित्-आनन्द का सागर क्यों

कहा जाता है ? झाड़ का बीज है, उनको भी झाड़ का मालूम तो है ना परन्तु वह है जड़ बीज। उसमें आत्मा जैसे जड़ है, मनुष्य में है चेतन्य आत्मा। चेतन्य आत्मा को ज्ञान का सागर भी कहा जाता है। झाड़ भी छोटे से बड़े होते हैं, तो जरूर उनमें आत्मा है परन्तु बोल नहीं सकती। परमात्मा की महिमा है ज्ञान का सागर।''

सा.बाबा 6.8.04 रिवा.

Q. क्या जैसे चेतन मे अपनी प्रजाति को बढ़ाने की होड़ होती है, वैसे जंगम में होती है ?

उनमें होड़ नहीं होती परन्तु हर पेड़-पौधे में जो प्रजनन शक्ति अर्थात् नये पेड़-पौधे को जन्म देने अर्थात् उत्पन्न करने की शक्ति होती है, वह किसी न किसी रूप में नये पौधे को पैदा करने का प्रयत्न अवश्य करती है। इस जगत में जो भी जड़, जंगम, चेतन प्रकृतियां हैं, वे सब आवश्यक हैं और सबका इस विश्व-नाटक में महत्वपूर्ण स्थान है। उन सबसे ही इस विश्व-नाटक की शोभा है और वे सब एक-दूसरे के सहयोगी हैं।

Q. क्या मन-बुद्धि आत्मा से अलग कोई चीज है ? यदि है तो उनका क्या अस्तित्व है अर्थात् वे किस तत्व की बनी हैं और देह में और देह के बाद कहाँ रहती हैं अथवा क्या होता है ?

नहीं। ज्ञान सागर परमपिता परमात्मा ने जो ज्ञान दिया और अनुभव कराया और जैसा कि हम अनुभव करते हैं, उसके अनुसार मन-बुद्धि आत्मा से अलग कोई चीज नहीं है। जीवात्मा में दो ही चीजें हैं - एक जड़ शरीर और दूसरी चेतन आत्मा। मन-बुद्धि-संस्कार आत्मा के अभिन्न अंग हैं अर्थात् कार्य-शक्तियाँ हैं। यदि किसी के दृष्टिकोण में मन-बुद्धि अलग कोई चीज हैं तो वे क्या है, किस तत्व (जड़ या चेतन) के बने हुए हैं और विनाश के समय उसकी क्या भूमिका अर्थात् स्थिति रहती है ? वर्तमान जीवन में उसकी क्या भूमिका है ? जीवन के उत्थान-पतन में प्रभाव मन-बुद्धि का है या आत्मा का ? पवित्र और अपवित्र मन-बुद्धि होता है या आत्मा ?

''बाप ने समझाया है आत्मा अमर है। कहेंगे बुद्धि पढ़ती है परन्तु बुद्धि किसमें है ? (आत्मा में) पतित व पावन बुद्धि बनती है। आत्मा में ही मन-बुद्धि है, तो आत्मा ही कहेंगे।''

सा.बाबा 20.12.68 रात्रि क्लास

Q. मनुष्य-योनि के अतिरिक्त अन्य योनियों की आत्मायें हैं या नहीं ? यदि नहीं हैं तो उनमें क्या कमी है, जिससे उनको चेतन आत्मा नहीं कह सकते और यदि हैं तो विनाश के बाद वे परमधाम जायेंगी या नहीं ? यदि परमधाम नहीं जायेंगी तो क्यों नहीं जायेंगी और वे बाद में कहाँ रहेंगी ?

जिनमें चेतनता है, उन सभी योनि की आत्मायें हैं। जैसे मनुष्य की आत्मा है, वैसे ही जानवरों

या अन्य योनि की आत्मायें भी हैं, जिसके लिए बाबा ने अनेक मुरलियों में कहा कि एक मच्छर की आत्मा और मनुष्य की आत्मा दोनों रूप में समान हैं, उनके मन-बुद्धि-संस्कारों में भिन्नता है, जिसके आधार पर उनका पार्ट चलता है।

विनाश के बाद वे आत्मायें भी परमधाम जायेंगी क्योंकि परमधाम सर्व आत्माओं का घर है। भले वहाँ सभी आत्माओं का उनके गुणों-संस्कारों के आधार पर अपना-अपना सेक्शन है। उसके लिए तो बाबा ने मनुष्यात्माओं के लिए भी कहा है कि भिन्न-भिन्न धर्मो की आत्मायें अलग-अलग सेक्शन में रहती हैं। जैसे कि परमधाम में आत्माओं के झाड़ में दिखाया है। एक धर्म की आत्मायें भी एक साथ एक ही स्थान पर नहीं रह सकती, उनमें भी गुणों और संस्कारों के आधार पर भिन्नता होगी अर्थात् उनके ग्रुप होंगे। कोई परमात्मा के निकट रहेंगी कोई दूर रहेंगी। इस सत्य को समझने के लिए चेतनता की क्या कसौटी है, वह भी जानना अति आवश्यक है, जिसके आधार पर जड़, जंगम और चेतन का निर्णय होता है। जब हम जानवरो का मां के समान दूध पी सकते, प्यार से गोद में उठा सकते तो परमाधाम जाने में या परमधाम में रहने में हमको क्या आपत्ति है।

आत्मा में रूप में सभी आत्मायें चाहे वे किसी भी योनि की हों, परमात्मा के बच्चे हैं क्योंकि निराकार आत्मिक स्व रूप में ऊंच-नीच, बड़े-छोटे की कोई बात नहीं है, वह तो शरीर में आने के बाद आती है। परन्तु परमात्मा मनुष्य तन में आते हैं, इसलिए मनुष्यों का पिता कहा जायेगा। मनुष्य संसार का सर्वश्रेष्ठ प्राणी है, जिसके उत्थान-पतन पर सभी प्राणियों और समग्र विश्व का उत्थान-पतन आधारित होता है, इसलिए मनुष्यों की सद्गति होने से सर्वात्माओं की सद्गति हो जाती है। किन्हीं मनुष्यों के कर्मों और संस्कारों को देखें तो वे जानवरों से भी बद्तर देखने में आते हैं जब कि कई जानवरों के गुण-संस्कार मनुष्यों से श्रेष्ठ देखने में आते हैं। बाबा ने भी कई योनि की आत्माओं के गुण-संस्कारों की महिमा की है। जैसे मधु-मक्खी, भ्रमरी आदि।

Q. आत्मा की चेतनता की परख या कसौटी क्या है ?

आत्माओं की चेतनता के निर्णय के लिए विभिन्न मापदण्ड हैं, उनमें से कुछ का यहाँ वर्णन करते हैं। इन मापदण्डों में से 75 परसेन्ट तथ्य किसी में देखने में आते हैं तो कहा जायेगा कि उसमें चेतन आत्मा है और जो चेतन आत्मा है, वह परमधाम में अवश्य जायेगी क्योंकि परमधाम सभी आत्माओं का घर है।।

1. आत्मा शरीर में प्रवेश करती और शरीर छोड़ती है अर्थात् आत्मा और देह दोनों अलग-

अलग हैं अर्थात् दोनों में अन्तर दिखाई दे।

2. आत्माओं में मादा गर्भ-धारण करती, वह भले अण्डे के रुप में हो या बच्चे के रुप में अर्थात् नर-मादा का अन्तर होता है।

3. आत्माओं में नर-मादा का संयोग होता, जिससे आत्माओं के लिए शरीर का निर्माण होता है।

4. आत्मा स्मृति को संचित करती और उस संचित स्मृति का भविष्य में उपयोग करती है।

5. आत्माओं में परस्पर राग-द्वेष, भय-चिन्ता, सुख-दुख, ईर्ष्या-घृणा, प्यार, इच्छा-आकांक्षा आदि होती हैं, जिससे उनके कर्म प्रभावित होते हैं।

6. मनुष्यात्माओं के समान जानवर भी अपने सुख-दुःख को प्रगट करते हैं। अनेक परिस्थितियों में भयभीत होकर बचने आदि का पुरुषार्थ आदि करते हैं।

7. जानवर भी समयानुसार कृत्य-अकृत्य का निर्णय करते हैं।

8. जानवर भी मान-अपमान की अनुभूति करते हैं, जिसके अनेक उदाहरण दुनिया में हैं। उनमें भी विशेष हाथी आदि के विषय में देखने में आया है।

9. बाबा ने गऊ का, मधुमक्खी का, बिछू का, सर्प का, मोर का, कछुये का, बन्दर का, शेर-शेरनी आदि का उदाहरण आत्मा के सन्दर्भ में दिया, तो हम कैसे कह सकते बाबा ने पशु योनियो के विषय में नहीं बताया, बाबा ने अनेक जगह 84 लाख योनियों की बात कही है।

10. बाबा ने मुरलियों में हजारो बार कहा कि परमधाम आत्माओं का घर है, जब आत्माओं का घर है तो जो भी आत्मायें हैं वे सभी घर में जायेंगी।

11. मनुष्य सृष्टि में सबसे अधिक बुद्धिमान और चिन्तनशील प्राणी है, इसलिये बाबा ने उसकी बात कही है क्योंकि उसके आधार पर अन्य सब योनियों में परिवर्तन हो जाता है। जैसे बाबा ने ब्रह्मा बाबा के 84 जन्मो की कहानी बता कर सारे चक्र का राज़ समझाया तो क्या हम ये कह सकते हैं कि फलाने व्यक्ति की आत्मा के विषय में बाबा ने नहीं बताया। फिर मनुष्यों में भी भिन्नता है कोई राजा-रानी, कोई दास-दासी के संस्कारों वाली है, तो दोनों में कितना अन्तर है।

12. आत्मा में अपनी चेतना होती है, उसके आधार पर वह स्वतन्त्र रूप से स्थान परिवर्तन कर सकती हैं।

13. आत्मा में स्वतन्त्र रहने की प्रवृति है।

14. आत्माओं में कृतज्ञता के संस्कार होते हैं, जानवरों में भी स्वामि-भक्ति के संस्कार होते हैं - राणा प्रताप का घोड़ा, झांसी की रानी का घोड़ा, अनेक कुत्तों आदि के उदाहरण दुनिया में विद्यमान हैं।

15. हर योनि की आत्मा का शरीर धारण करने का विधि-विधान, प्रक्रिया अलग-अलग है, जिसमें अण्डज, उद्भिज, स्वेदज, जलज आदि हैं।

16. कई योनियो में नर-मादा के जोड़े होते हैं, जो बड़े प्रेम से रहते है और किन्हीं विशेष परिस्थितियों में एक मर जाता है तो दूसरा भी बेचैन होकर देह त्याग देता है।

17. आत्मा में संग्रह प्रवृति होती है, जो भी अनेक अन्य योनियों में देखने में आती है। जैसे चींटी, मधुमक्खी, चूहे आदि आदि में।

18. आत्मायें एक-दूसरे को अपने गुण धर्म सिखाते भी हैं, जैसे कुतिया अपने बच्चों को, शेरनी अपने बच्चों को आदि आदि।

19. जानवर भी मनुष्यों के समान मनोरंजन करते हैं। जैसे कुत्ते, बिल्ली, बन्दर, चिड़िया आदि सभी खेलते-कूदते हैं।

20. वर्तमान जगत में जो काम मनुष्य नहीं कर सकते, वह कार्य जानवर करके दिखा रहे हैं। जैसे पुलिस वालों के पास खोजी कुत्ते करते हैं।

21. चेतन आत्मायें अपनी मन-बुद्धि का उपयोग करती हैं, जिसके आधार पर कर्म करती हैं।

''आत्मा जब गर्भ में प्रवेश करती है, तब ही चुरपुर होती है। यूँ तो 5 तत्वों में भी कुछ चेतन्यता है, तब तो (पेड़-पौधे) बढ़ते हैं परन्तु उनमें मन-बुद्धि नहीं है, इसलिए उन चीजों में संकल्प आदि की बात नहीं है। गर्भ में पिण्ड भी बढ़ता है। जैसे झाड़ बढ़ता है, वैसे पिण्ड बढ़ता है परन्तु उनमें ज्ञान नहीं है।'' सा.बाबा 24.9.07 रिवा

''भगवान के बच्चे तो सभी हैं। जो भी मनुष्य मात्र हैं, सब भगवान को बाबा कहते हैं। वह सर्व का एक ही बाप है। ... सर्व का सद्गति दाता वह एक ही है।''

सा.बाबा 23.3.07 रिवा.

''स्वर्ग में समझते हैं - बस आयु पूरी हुई, सक शरीर छोड़ दूसरा लेना है। जैसे सर्प का मिसाल है, जानवरों का मिसाल देते हैं। जरूर उनको पता पड़ता होगा।''

सा.बाबा 15.6.07 रिवा.

Q. विनाश के बाद कीट-पतंगो, पशु-पक्षी, जानवरों की आत्मायें कहाँ जायेंगी ?

सभी आत्मायें परमधाम में जायेंगी क्योंकि परमधाम है आत्माओं की दुनिया। कोई भी आत्मा स्थूल या सूक्ष्म शरीर के बिना कोई भी कर्म नहीं कर सकती और न ही कोई भी आत्मा आकाश तत्व में स्थूल या सूक्ष्म शरीर के बिना रह सकती, इसलिए जानवरों या कीट-पतंगों की आत्मायें भी सतयुग में इस वातावरण में नहीं रह सकती हैं। कई भाई-बहनों का मन्तव्य है कि विनाश के समय कीट-पतंगों की आत्मायें परमधाम नहीं जायेंगी, वे आकाश तत्व में भटकती रहेंगी अर्थात् केवल मनुष्यात्मायें ही परमधाम जाती हैं। ये भी एक भ्रम प्रतीत होता है। ब्रह्म तत्व आत्माओं की दुनिया है और अन्त में सभी आत्माओं को आत्माओं की दुनिया परमधाम में जाना ही चाहिए और जाती ही हैं और जायेंगी ही।

''सब पुरुषार्थी हैं। अब सबको स्वीट होम, वाणी से परे जाना है। वह है हम आत्माओं का घर, निर्वाणधाम। धाम में कोई एक नहीं रहते। जितनी अभी जीव-आत्मायें हैं वे सभी शरीर छोड़कर जायेंगे अपने घर बाबा के पास। वह है निराकारी झाड़।''

सा.बाबा 6.08.03 रिवा.

''मनुष्यों को मनुष्यों की ही बात समझाई जाती है, जानवरों की बातें जानवर जाने। यहाँ मनुष्य सृष्टि है तो बाप भी मनुष्यों को बैठ समझाते हैं। मनुष्य में भी जो आत्मा है, उनको बैठ समझाते हैं।''

सा.बाबा 30.10.03 रिवा.

''सतयुग में विकार की कोई बात नहीं। देवतायें पवित्र थे। वहाँ योगबल से ही सब-कुछ होता है। यहाँ पतित मनुष्यों को क्या पता वहाँ बच्चे कैसे पैदा होते हैं? उसका नाम ही है वाइसलेस वर्ल्ड। विकार की बात ही नहीं। कहेंगे जानवर आदि कैसे पैदा होते हैं? बोलो वहाँ है ही योगबल, विकार की बात ही नहीं। सौ परसेन्ट वाइसलेस हैं।''

सा.बाबा 23.2.04 रिवा.

Q. क्या जानवरों और अन्य योनि की आत्माओं के भी कर्मों का हिसाब-किताब होता है, उनके सुख-दुख का आधार क्या है?

Q. क्या अन्य योनियां भोग योनियां हैं या उनके लिए कर्म और फल का विधि-विधान है?

हर आत्मा के कर्मों का हिसाब-किताब होता है, भले वह किसी योनि की हो। कर्मों के हिसाब-किताब के आधार पर ही कोई आत्मा सुखी होती है, कोई दुखी होती है और ये सुख-दुख की अनुभूति प्राय: सभी योनि की आत्माओं में देखने में आती है। विश्व-नाटक का कर्म और फल का सिद्धान्त हर योनि की आत्मा के ऊपर लागू होता है परन्तु उसका प्रभाव उस योनि के बौद्धिक स्तर के आधार पर होता है। जिसके लिए बाबा ने अनेक बार कहा है एक समझदार व्यक्ति के द्वारा किये गये विकर्म का फल और एक अबोध बच्चे द्वारा किये गये उसी प्रकार

के विकर्म का दण्ड अलग-अलग होता है। दुनिया के दण्ड विधान में भी ऐसा ही देखने में आता है।

''इसको कयामत का समय कहा जाता है। सबका हिसाब-किताब चुक्तू होने वाला है। जानवरों का भी हिसाब-किताब होता है ना। कोई-कोई राजाओं के पास रहते हैं, उन्हों की कितनी पालना होती है। ... यह भी ड्रामा में नूँध है। यह सारा बना-बनाया खेल है।''

सा.बाबा 21.2.04 रिवा.

Q. भगवानोवाच्य आत्मा में ही खाद पड़ती है - आत्मा में कौनसी खाद पड़ती है और कैसे खाद पड़ती है ?

आत्मा में यथार्थ ज्ञान की कमी होने के कारण पहले देह-भान और फिर देहाभिमान रूपी खाद पड़ती है और यह देहभान और देहाभिमान की खाद पड़ने से अज्ञानता जनित देहाभिमान दिनोदिन गहरा होता जाता है। आत्मा में ये खाद सतयुग के प्रथम जन्म और प्रथम क्षण से ही पड़ना आरम्भ हो जाती है क्योंकि वहीं से आत्मा को यथार्थ ज्ञान भूल जाता है परन्तु उसका आभास बाद में होता है, जब आत्मा की अपनी शक्ति क्षीण हो जाती है अर्थात् आत्मा की खक्ति क्षीण होने से देहाभिमान उस पर प्रभावी हो जाता है, जिससे आत्मा अनेक प्रकार के विकर्म करने में प्रवृत्त हो जाती है और उन विकर्मों के फलस्वरूप उसका पाप का खाता बढ़ता जाता है। कल्पान्त में ज्ञान-सागर परमात्मा आकर यथार्थ ज्ञान देकर और योग सिखलाकर इस खाद को निकालते हैं और आत्मा अपने मूल स्वरूप में आ जाती है, पावन बनकर आत्मायें घर जाती हैं और फिर इस धरा पर आती है, जिससे सृष्टि का नया चक्र आरम्भ होता है। ये खाद पड़ने और निकालने का चक्र अनादि काल से चलता आ रहा है और अनन्त काल तक चलने वाला है क्योंकि ये विश्व-नाटक अनादि-अविनाशी है।

Q. लिंग परिवर्तन की प्रक्रिया होगी या नहीं ? यदि होगी तो वह Normal होगी या abnormal अर्थात् अपवाद के रूप में होगी ?

यदि विचार किया जाये तो लिंग परिवर्तन की क्रिया भी योनि परिवर्तन के समान ही है। जैसे योनि परिवर्तन नहीं होता, वैसे लिंग परिवर्तन भी नहीं होना चाहिए। स्त्री-पुरुष के मूलभूत संस्कारों को देखें तो लिंग परिवर्तन की क्रिया असम्भव नहीं तो अति कठिन अवश्य है क्योंकि लिंग परिवर्तन के लिए नैसर्गिक संस्कारों में भी परिवर्तन होना आवश्यक है। पुनर्जन्म के प्रमाणों देखें तो भी उनसे ऐसा परिवर्तन देखने में नहीं आता है। दुनिया में पुनर्जन्म का कोई भी ऐसा उदाहरण नहीं मिलता है, जिससे ये सिद्ध हो कि स्त्रीलिंग वाला पुरुषलिंग या पुरुषलिंग

वाला स्त्रीलिंग बना हो। परन्तु बाबा ने परिवर्तन की बात कही है, इसलिए उसको अस्वीकार भी नहीं किया जा सकता है परन्तु विचारणीय बात ये है कि बाबा ने ये बात किस भाव-अर्थ में कही है अथवा किन देश-काल-परिस्थिति में कही है। क्या अविनाशी सत्य को स्पष्ट करते हुए कही है या शिक्षा के रूप में या आदर्श के रूप में कही या बहनों में स्वाभिमान जाग्रत करने के लिए, दुखी बहनों को सांत्वना देने के लिए कही है। महाभारत में भी शिखण्डी का उदाहरण है परन्तु उसका कितना परिवर्तन हुआ और किस आधार पर हुआ, वह भी विचारणीय है

किसी स्त्री पर पुरुष के द्वारा अत्याचार होते, कन्यायें मात-पिता के बन्धन में होती हैं, ये सब परस्पर कर्मों के हिसाब-किताब हैं। वास्तव में किसी स्त्री के पुरुष हो जाने से वह पुरुषों के द्वारा होने वाले अत्याचारों से मुक्त नहीं हो जाती। ये तो स्त्री-पुरुष के अनेक जन्मों के परस्पर के हिसाब-किताब हैं, जो भोगना होते हैं। बाबा ने भी इस सम्बन्ध में कहा है - ये तुम्हारा कर्म-बन्धन है, कर्मों के हिसाब-किताब हैं। उसमें पुरुष होना या स्त्री होने की बात नहीं है।

''अबलाओं पर कितने अत्याचार होते हैं। गायन है द्रोपदी का, वह सब प्रेक्टिकल में हो रहा है। ... ऐसे नहीं कि फीमेल सदैव फीमेल ही बनती है। दो बारी फीमेल बन सकती है, जास्ती नहीं। मातायें पुकारती हैं - बाबा रक्षा करो।''

सा.बाबा 7.4.04 रिवा.

बहनों के लिए तो बाबा ने कहा है परन्तु बाबा ने ये कहाँ भी नहीं कहा है कि पुरुष स्त्री के रूप में जन्म लेता है। ऊपर के महावाक्यों को देखने से तो यही समझ में आता है कि बाबा ने अत्याचारों से दुखी बहनों को सांत्वना देने के लिए ही ये बात कही है। फिर भी मैं ये बात किसी वाद-विवाद के लिए नहीं, परन्तु सत्य को जानने और सत्य के स्पष्टीकरण के लिए ही विचार कर रहा हूँ।

शिव बाबा ने ब्रह्मा बाबा के तीन जन्मों (कल्प के अन्त अर्थात संगमयुग पर दादा लेखराज अर्थात् ब्रह्मा बाबा के रूप में, आदि में श्रीकृष्ण और मध्य में राजा विक्रमादित्य के रूप में) की जो बात बताई है, उसमें ब्रह्मा बाबा ने पुरुष के रूप में ही जन्म लिया है। शिवबाबा ने ब्रह्मा बाबा के स्त्री रूप में लिए गये किसी जन्म की बात नहीं बताई है और न ही स्पष्ट रूप से कहीं कहा है कि ब्रह्मा बाबा की आत्मा कभी स्त्री रूप में जन्म लेती है। ये भी विचारणीय है।

यथार्थता को विचार करें तो कोई भी आत्मा किसी भी योनि या परिस्थिति में हो, किस भी शरीर में है यदि वह सुख-शान्ति-आनन्द में है तो उसको देह परिवर्तन, लिंग परिवर्तन करने की कोई इच्छा नहीं होती। जैसे सतयुग-त्रेता में कोई मुक्ति नहीं मांगता, कोई

मोक्ष में जाने की इच्छा नहीं करता। ये इच्छा आत्माओं को द्वापर-कलियुग में ही होती है, जब दुख-अशान्ति होती है। ऐसे ही जब जीवन में पूर्ण सुख-शान्ति है तो कोई भी आत्मा लिंग परिवर्तन नहीं चाहती है अर्थात् स्त्री पुरुष और पुरुष स्त्री बनने की इच्छा नहीं रखता है। ये इच्छा तो जब दुखी होते, ऊंच-नीच की दुर्भावना के शिकार होते तो परिवर्तन करना चाहते हैं।

संस्कारों में परिवर्तन एक साथ नहीं होता है, धीरे-धीरे होता है। तो लिंग परिवर्तन के लिए भी संस्कारों में परिवर्तन एक साथ होगा या धीरे-धीरे होगा - यह भी विचारणीय है। एक दम पुरुष शरीर छोड़े और स्त्री बन जाये या स्त्री शरीर छोड़े और पुरुष बन जाये - ये कहाँ तक सम्भव है। ये विचारणीय है। वास्तविकता ये है कि हर आत्मा अपने नैसर्गिक संस्कारों में ही खुश रहती है।

Q. क्या नैसर्गिक संस्कारों में परिवर्तन सम्भव है ?

संस्कार आत्मा में होते हैं। आत्मा अविनाशी है और आत्मा में कुछ संस्कार अविनाशी अर्थात् नैसर्गिक होते हैं, जिनमें मूलभूत परिवर्तन नहीं हो सकता है, भले काल चक्र के अनुसार वे संस्कार भी सतो, रजो, तमो अवस्थाओं में आते हैं। आत्मा में स्त्री या पुरुष के संस्कार भी ऐसे ही प्रतीत होते हैं। आत्मा के ये नैसर्गिक अर्थात् मूल संस्कार, जो परिवर्तन नहीं होते हैं। दूसरे हैं व्यवहारिक संस्कार, जो परिवर्तनशील होते हैं और समय की गति के साथ परिवर्तन होते हैं। जैसे सतयुग-त्रेता में दैवी गुण-संस्कार होते हैं, जो द्वापर से देहाभिमान आने से आसुरी बन जाते हैं।

नैसर्गिक संस्कार अनादि-अविनाशी होते हैं, उनमें परिवर्तन नहीं हो सकता है और यदि अपवाद के रूप में परिवर्तन होता भी है तो वह ड्रामानुसार ही कहेंगे, जिसका कोई विशेष कारण होता है। जैसे भिन्न2 योनियों के अपने संस्कार-स्वभाव हैं, उनकी अपनी प्रजनन क्रियायें हैं। ऐसे ही एक ही योनि में नर और मादा के अपने-अपने नैसर्गिक संस्कार होते हैं, उनमें परिवर्तन होना असम्भव सा ही लगता है। बाबा ने मुरली में परिवर्तन की बात कही है परन्तु उस बात के स्पष्टीकरण के लिए कोई प्रमाण नहीं दिया है, जैसे योगबल से सन्तानोत्पत्ति के लिए पपीते, मोर आदि का उदाहरण दिया है। बाबा ने एक-दो बार मुरली में ये बात कही है कि स्त्री पुरुष बनेगी परन्तु उसी मुरली के आगे-पीछे के पैराग्राफ को ध्यान से पढ़ते और देखते हैं तो उसमें किन्हीं माताओं-बहनों पर पुरुषों के द्वारा अत्याचार होने की बात अवश्य होती है। उन अत्याचारों से दुखी माताओं-बहनों को सांत्वना देने या धैर्य देने के लिए वह बात कही हुई समझ में आती है।

जैसे विभिन्न योनियों के नैसर्गिक संस्कार हैं, जिसके कारण वे अपनी-अपनी योनियों में ही जन्म लेती हैं, उस योनि में ही खुश रहती हैं। ऐसे ही स्त्री-पुरुष के भी अपने-अपने कुछ नैसर्गिक संस्कार हैं, जिसके कारण कोई स्त्री और कोई आत्मा पुरुष रूप में जन्म लेती है, उसमें ही उनको सुख होता है। ये संस्कार कहाँ तक परिवर्तन होंगे, यह भी विचारणीय प्रश्न है। ये भी व्यवहारिक प्रतीत नहीं होता है कि जब संगमयुग पर बाबा आकर बहनों को प्रधानता देते हैं तो बहनें बहन बनना ही अच्छा समझें और द्वापर-कलियुग में पुरुष बनना चाहें। सतयुग-त्रेता में तो दोनों को समान अधिकार होते हैं। वास्तव में इस विश्व-नाटक में हर आत्मा के साथ न्याय है और उसका न्यायपूर्ण पार्ट है।

साधारण और सुखी जीवन व्यतीत करने वाली बहनों और पुरुषों के जीवन को अध्ययन करें तो एक प्रतिशत आत्मायें भी नहीं मिलेंगी, जो लिंग परिवर्तन की इच्छा रखते हों। जैसे मृत्यु-शैय्या पर लेटा हुआ व्यक्ति भी शरीर को छोड़ना नहीं चाहता है, ऐसे ही सभ्य-सुखी स्त्री अगले जन्म में भी उसी पति की स्त्री बनना चाहती है। किसी भी योनि की आत्मा, अपने वातावरण, सह-संग में ही खुश रहती है। ऐसे ही ये भी समझ में आता है।

व्यवहारिक संस्कार भी हर योनि के अपने-अपने हैं और उनमें देश-काल-परिस्थिति के अनुसार परिवर्तन होता है। जैसे सतयुग-त्रेता में जब देही-अभिमानी होते तो संस्कार-स्वभाव निर्विकारी होता है और द्वापर-कलियुग में जब देहाभिमान आ जाता है तो संस्कार-स्वभाव में विकारों की प्रवेशिता हो जाती है। ये परिवर्तन मनुष्यों में भी होता है तो पशु-पक्षियों में भी होता है।

Q. क्या बाबा अर्थात् भगवान जिस आत्मा को चाहे उसको बच्चा अर्थात् लड़का बनाये और जिसको चाहे उसको बच्ची अर्थात् लड़की बनाये या जिसको चाहे स्त्री से पुरुष बनाये और जिसको चाहे पुरुष से स्त्री बनाये ? यदि बना सकता है और बनाता है, तो उसका आधार क्या होगा अर्थात् आत्मा की अपनी इच्छा पर बनायेगा या भगवान अपनी इच्छा पर बनायेगा या अन्य कोई आधार होगा ?

यहाँ ये बात भी विचारणीय है कि यदि परमात्मा किसको स्त्री से पुरुष बनाता है तो जितनो को स्त्री से पुरुष बनाया, उतने ही पुरुषों को स्त्री बनाना ही होगा। चाहे वे चाहें या न चाहें क्योंकि इस सृष्टि के विधि-विधान अनुसार सृष्टि में स्त्री-पुरुष का पूर्ण सन्तुलन है, जिसके आधार पर ही ये सफलता पूर्वक चलती है। इसलिए दोनों के सन्तुलन को स्थिर रखना ही होगा। यदि आत्मा की अपनी इच्छा है कि हम स्त्री से पुरुष बनें तो उतने ही पुरुषों को भी ऐसी इच्छा होनी चाहिए

परन्तु ज्ञान में चलने वालों को ही देखें तो उनमें ऐसी इच्छा दिखाई नहीं देती है। कई बहनें तो राजा बनने के लिए पुरुष बनना चाहती हैं परन्तु भाई शायद ही कोई हो जो पुरुष से स्त्री बनना चाहता हो। तो यह स्त्री-पुरुष का सन्तुलन जो सृष्टि का अनादि-अविनाशी विधि-विधान है, जिस पर इस विश्व-नाटक की सफलता का आधार है, वह कैसे रहेगा। वास्तविकता तो ये है कि किसी अपवाद को छोड़कर स्त्री, स्त्री और पुरुष, पुरुष ही बनता है। बाबा ने भी ये बात किन्ही विशेष परिस्थितियों में ही कही है और जिन परिस्थितियों में कही है, वे परिस्थितियां भी विचारणीय हैं। परमात्मा भी इस सृष्टि के विधि-विधान को तोड़कर कोई कर्म नहीं करता है क्योंकि वह त्रिकादर्शी है और हर बात के अच्छे-बुरे परिणाम को जानता है। वैसे भी देखा जाये तो सारा खेल ड्रामा अनुसार ही चलता है, परमात्मा तो संगमयुग पर आकर नई दुनिया की कलम लगाने का पार्ट बजाता है।

Q. संस्कार आत्मा में है या शरीर में हैं? यदि संस्कार आत्मा में हैं तो पुरुषत्व और स्त्रीत्व के संस्कारों का गुण-धर्मों का आधार शरीर है या आत्मा? इस सत्य पर विचार करके निर्णय करो कि कहाँ तक पुरुष की आत्मा, स्त्री और स्त्री की आत्मा, पुरुष बन सकती है अर्थात् बन सकती है या नहीं?

संस्कार आत्मा में हैं, न कि शरीर में और आत्मा अनादि-अविनाशी है तो उसके संस्कार भी अनादि-अविनाशी हैं। दोनों के संस्कारों में कुछ मूलभूत विशेषतायें हैं, जो परिवर्तन होना असम्भव नहीं तो अति कठिन अवश्य है।

''साक्षात्कार में प्रिन्स को देखते हैं तो समझते हैं हमको यह बनना है। खुशी हो जाती है। बहुत करके प्रिन्स का ही साक्षात्कार होता है। अगर विचार किया जाये तो मुकुटधारी तो सब बनते हैं। मेल-फीमेल में फर्क नहीं रहता है। ... आत्मा में अविनाशी पार्ट है, जो कभी बदल नहीं सकता। कैसे वण्डरफुल खेल बना हुआ है।''

सा.बाबा 10.9.07 रिवा.

''आत्मा ही तन का आधार लेकर सबकुछ करती है। संस्कार सब आत्मा में हैं। आत्मा ही अच्छे-बुरे संस्कारों अनुसार जन्म लेती है। इन सब बातों को अच्छी रीति समझना है।''

सा.बाबा 21.1.08 रिवा.

यज्ञ में जो आत्मायें शरीर छोड़कर गई हैं, उनमें अनेक आत्माओं के विषय में ये चर्चा होती है कि उसने अमुख व्यक्ति के घर में जन्म लिया। इस सन्दर्भ में ये विचारणीय यह है कि जब कोई बहन शरीर छोड़कर जाती है तो उसके विषय में कहा जाता है कि वह फलाना बच्चा

(मेल) बना परन्तु कभी किसी भाई के सम्बन्ध में ये नहीं कहा गया कि उसने अमुख व्यक्ति के घर में जाकर बच्ची के रूप में जन्म लिया।

दीदी और विश्व किशोर भाऊ के विषय में भी इस सन्दर्भ में चर्चा होती है परन्तु उसमें लिंग परिवर्तन की बात नहीं कही गई है। विश्वकिशोर भाऊ के विषय में पहले श्रीकृष्ण के बाप और बाद में प्रथम नारायण का बच्चा बनने की ही चर्चा है। बाबा ने भी कहा है कि उनको नशा था कि मैं प्रथम नारायण का प्रिन्स बनूँगा।

''कई बच्चे मूँझते हैं कि साकार द्वारा तो कहा कि सूक्ष्मवतन है ही नहीं, तो बाबा कहाँ गये ? कहाँ से मिलने आते हैं। ... अगर सूक्ष्मवतन है ही नहीं तो भोग कहाँ लगाते हो ? इस रसम-रिवाज को कायम क्यों रखा ? ... सूक्ष्मवतन है लेकिन अब सूक्ष्मवतन में आने-जाने के बजाये स्वयं ही सूक्ष्म वतनवासी बनना है। यही बापदादा की बच्चों में आशा है। ... बाप बच्चों की कमाई को देखते हैं और कमाई के लायक बनाते हैं, इसलिए यह सभी रहस्य से बोलते रहे।''

अ.बापदादा 2.2.69

Q. क्या बिना शरीर के आत्मा से शक्ति रेडियेट होती है अर्थात् परमधाम में आत्मा से शक्ति रेडियेट होती है और यदि होती है तो क्या दूसरी आत्माओं पर उसका प्रभाव पड़ता है ?

नहीं। शक्ति रेडियेट तब होती है, जब आत्मा को स्थूल या सूक्ष्म शरीर होता है और संकल्प उठता है। जब आत्मा को शरीर ही नहीं तो शक्ति कैसे रेडियेट होगी। इसलिए परमधाम में आत्मा से कोई शक्ति रेडियेट नहीं होती है परन्तु वहाँ आत्मा हीरे के समान प्रकाशित अवश्य रहती है। जब आत्मा इस धरा पर पार्ट बजाने आती है, तब से उसके साथ सूक्ष्म या स्थूल काया होती ही है। परमधाम में आत्मा बिना स्थूल या सूक्ष्म काया के होती है, इसलिए परमधाम में शक्ति रेडियेट होने का प्रश्न ही नहीं है और आवश्यकता भी नहीं क्योंकि वहाँ सभी आत्मायें अपने सम्पूर्ण स्वरूप में स्वतः प्रकाशित हैं।

बिना शरीर के आत्मा पर किसी प्रकार के रेडियेशन का प्रभाव भी नहीं पड़ सकता है, इसलिए वहाँ आत्मायें एकरस स्थिति में रहती हैं। आत्मा की शक्ति का विकास या ह्रास इस साकार वतन में या सूक्ष्म वतन तक ही होता है।

''यहाँ आकर 5 तत्वों का शरीर लिया है। सूक्ष्मवतन में 5 तत्व होते नहीं हैं। 5 तत्व यहाँ होते हैं, जहाँ तुम पार्ट बजाते हो। हमारा असली देश वहाँ है।''

सा.बाबा 14.12.02 रिवा.

Q. क्या मनुष्यात्मा किसी अन्य योनि में जन्म लेती है या ले सकती है या किसी अन्य योनि

की आत्मायें मनुष्य योनि में आ सकती हैं? यदि आ सकती हैं तो कैसे और यदि नहीं तो क्यों?

हर आत्मा में और हर योनि की आत्माओं में अपने-अपने अविनाशी संस्कार आत्मा में भरे हुए हुये हैं, जिनमें परिवर्तन होना असम्भव है, इसलिए हर योनि की आत्मा अपनी योनि में ही पुनर्जन्म लेकर अपना पार्ट बजाती है और अपने कर्मों का फल भोगती है। कुछ योनियां कहें या प्रजातियां कहें, जिनकी क्रास-जेनरेशन पैदा होती है।

''मनुष्य को परमात्मा नहीं कह सकते हैं। आत्मा तो सबकी एक जैसी है। बाकी ऐसे नहीं कि मनुष्यात्मा कुत्ता, बिल्ली आदि बनती है। मनुष्य, मनुष्य ही बनते हैं। जानवरों की वैराइटी अलग है। इस समय मनुष्य जैसे जानवर से भी बदतर हैं।''

सा.बाबा 9.6.08 रिवा.

Q. क्या विनाश के समय हर योनि की कुछ आत्मायें बीज रूप में बचेंगी या मनुष्य और कुछ अच्छी योनि की आत्मायें ही बचेंगी अर्थात् क्या सतयुग में हर योनि की आत्मायें बीजरूप में होगी या मनुष्यात्मायें और कुछ अच्छी योनि की आत्मायें ही होंगी?

विवेक कहता है कि हर योनि की या समकक्ष योनि की आत्मायें विनाश के समय बीजरूप में बचनी ही चाहिए अन्यथा उस योनि की उत्पत्ति कैसे होगी? यदि किसी योनि की उत्पत्ति अनायास या बिना किसी बीज के हो सकती है तो फिर मनुष्य की क्यों नहीं हो सकती है। फिर तो यही कहा जायेगा कि पूर्ण विनाश या जलमई हो जाये तो भी सृष्टि की रचना हो सकती है। इसलिए जैसे मनुष्य योनि की जनसंख्या बीजरूप में बचती है, ऐसे हर योनि की आत्मायें बीज रूप में बचना ही चाहिए। शास्त्रों में भी ऐसा वर्णन है कि मतस्यावतार में मनु को कहा कि सभी योनियों का बीज नाव में रख लो ...।

Q. सतयुग में सर्प-शेर आदि होंगे या नहीं होंगे? यदि नहीं होंगे तो ये बाद में कैसे पैदा होंगे? यदि सर्प-शेर आदि बिना बीज के पैदा हो सकते हैं तो मनुष्य क्यों नहीं पैदा हो सकते हैं?

इसकी वास्तविकता पर विचार करें तो यही निष्कर्ष निकलता है कि सभी योनियों का बीज सतयुग में भी होगा परन्तु उनका स्वभाव-संस्कार मनुष्य के लिए या परस्पर दुखदायी नहीं होगा। भले वे होंगे परन्तु वे मनुष्यों के बीच में नहीं होंगे, उनके लिए भी उस दुनिया में कोई न कोई स्थान अवश्य होगा।

Q. मुक्ति-जीवनमुक्ति आत्मा की मूलभूत प्यास और हर आत्मा के जीवन का अभीष्ठ लक्ष्य है परन्तु मुक्ति-जीवनमुक्ति का यथार्थ अनुभव कब, कहाँ और कैसे सम्भव है?

पुरुषोत्तम संगमयुग पर जब परमात्मा आकर इस सृष्टि-चक्र का पूरा ज्ञान देते हैं, आत्माओं को अपने मूल स्वरूप का ज्ञान होता है, तब ही आत्मा मुक्ति-जीवनमुक्ति का यथार्थ अनुभव करती है। आत्मा का मुक्ति-जीवनमुक्ति का वह अनुभव परमधाम की मुक्ति और स्वर्ग की जीवनमुक्ति से अति श्रेष्ठ और सुर-दुर्लभ है। अव्यक्त बापदादा ने भी कहा है - मुक्ति-जीवनमुक्ति परमात्मा का वर्सा है तो परमात्मा संगमयुग पर आते हैं तो वह वर्सा भी संगमयुग पर ही देंगे। इस सम्बन्ध में अव्यक्त बापदादा ने भी कई बार कहा है कि संगमयुग की मुक्ति-जीवनमुक्ति परमधाम की मुक्ति और सतयुग की जीवनमुक्ति से अति श्रेष्ठ है। बाबा ने प्रश्न रूप में भी पूछा है कि क्या सतयुग की दिलासा पर जी रहे हो या अभी भी जीवनमुक्ति का अनुभव कर रहे हो ?

''संगमयुग की प्राप्तियों की प्रालब्ध का अनुभव अब नहीं करेंगे तो कब करेंगे ! भविष्य की प्रालब्ध अलग चीज है, वह तो आपके इस पुरुषार्थ के प्रालब्ध की परछाई है। ... वह प्रालब्ध है - सर्व शक्ति सम्पन्न, सर्व ज्ञान सम्पन्न, सर्व विघ्न विनाशक मूर्त।''

अ.बापदादा 13.11.97

''बापदादा हर एक बच्चे को जीवनमुक्त स्थिति में सदा देखने चाहते हैं। ... मुक्तिधाम में या सतयुग में मुक्ति वा जीवनमुक्ति का अनुभव नहीं कर सकेंगे। मुक्ति-जीवनमुक्ति के वर्से का अनुभव अभी संगमयुग पर ही करना है। ... हर एक ब्राह्मण बच्चे को बाप को बन्धनमुक्त, जीवनमुक्ति बनाना ही है। चाहे किसी भी विधि से बनाये ... देह में होते भी विदेही अवस्था का अनुभव। ... संगमयुग की प्रालब्ध है जीवनमुक्त की।''

अ.बापदादा 21.11.98

''अपने से पूछो - क्या मुक्तिधाम में मुक्ति का अनुभव करना है वा सतयुग में जीवनमुक्ति का अनुभव करना है वा अब संगमयुग में मुक्ति-जीवनमुक्ति का संस्कार बनाना है ? ... इस ब्राह्मण जीवन में मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करना ही ब्राह्मण जीवन की श्रेष्ठता है क्योंकि सतयुग में जीवनमुक्ति और जीवनबन्ध दोनों का ज्ञान ही नहीं होगा। अभी अनुभव कर सकते हो कि जीवनबन्ध क्या है और जीवनमुक्त क्या है।'' (परमधाम में शरीर ही नहीं होगा तो मुक्ति का अनुभव भी कैसे होगा)

अ.बापदादा 15.10.07

Q. आत्मायें इस रंगमंच पर आकर पार्ट बजाती हैं। पार्ट बजाने के लिए देह की आवश्यकता होती है तो आत्माओं को पार्ट बजाने के लिए देह धारण करने की कितनी विधियां हैं, जिनसे आत्मा पार्ट बजाने के लिए देह धारण करती है ?

प्रकृति में आत्मा के देह धारण करने की मुख्यता चार विधियां हैं। अंडज, उद्भित, स्वेदज, जलज।

मनुष्यात्माओं के इस विश्व-नाटक में पार्ट बजाने के लिए शरीर धारण करने के लिए एक साधन है गर्भ से जन्म लेकर शरीर धारण करना। दूसरा है परकाया प्रवेश होकर पार्ट बजाना। सभी धर्मपितायें धर्म स्थापना के लिए परकाया प्रवेश करते हैं। प्रेत योनि में भटकने वाली आत्मायें भी परकाया प्रवेश करती हैं। परमात्मा भी परकाया प्रवेश होकर पार्ट बजाते हैं परन्तु उनके परकाया प्रवेश होने और और धर्म-पिताओं के परकाया प्रवेश एवं भूत-प्रेत के परकाया प्रवेश में दिन और रात का अन्तर है।

Q. क्या एक आत्मा का संकल्प और वायब्रेशन दूसरी आत्मा के संकल्प और विचारों को प्रभावित करता है ? यदि करता है तो कैसे करता है ?

करता है। एक आत्मा की विचार तरंगें, दूसरी आत्मा के मन पर प्रभाव डालते हैं। इसके लिए भक्ति मार्ग में भी प्रमाण हैं और ज्ञान मार्ग में भी बाबा अनेक बार मुरलियों में समझानी दी है। बाबा ने कहा है - तुम दूर बैठी आत्मा को परमात्मा की ओर आकर्षित कर सकते हो, बाबा का सन्देश दे सकते हो।

''विचार-सागर मंथन करना है। विचार सागर मंथन करने में बड़ा एकान्त चाहिए। रामतीर्थ के लिए बताते हैं - जब वह लिखता था तो चेले को कहा - तुम दो माइल दूर चले जाओ, नहीं तो वायब्रेशन आयेगा।'' सा.बाबा 24.3.04 रिवा.

Q. समर्थ आत्मा या शक्ति-स्वरूप आत्मा की निशानी क्या है ?

समर्थ अर्थात् शक्तिशाली आत्मा राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति, ईर्ष्या-घृणा, इच्छा-आकांक्षा से सदा मुक्त अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति में होगी और वह औरों को भी ऐसा ही समर्थ अर्थात् शक्तिशाली बनायेगा। शक्तिशाली आत्मा अपने शक्ति से दूसरों को देह से न्यारा करके अपने समर्थ स्वरूप में स्थित करके उसकोआत्मिक स्वरूप का अनुभव करायेगी, अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करायेगी। वह कब दूसरों की छोटी-छोटी बातों के चिन्तन में न जाकर सदा चिन्ता और व्यर्थ चिन्तन से मुक्त होगी। जैसे ब्रह्मा बाबा सदा दूसरों को कराते थे।
''अपने सम्बन्ध-सम्पर्क में आने वाली आत्माओं को परिवर्तन कर देना, वायुमण्डल को परिवर्तन कर देना ही आत्मा की समर्थता की निशानी है।... कलियुग अन्त में भी भल कोई-कोई राजाई रह जाती है, निल तो कभी होती नहीं।''

सा.बाबा 24.5.04 रिवा.

''प्रश्न तो भिन्न-भिन्न पूछेंगे, उनका रेस्पॉन्स भी चाहिए रियल। देखना चाहिए, उनको कशिश में लाया, सेटिस्फाइ हुआ ? नहीं तो फिर करेक्शन निकालनी चाहिए।''

सा.बाबा 29.5.04 रिवा.

Q. योग से आत्मा को शक्ति मिलती है या आत्मा की शक्ति जाग्रत होती है ?

ज्ञान सागर परमात्मा से आत्मा को ज्ञान मिलता है, जिस ज्ञान को समझकर आत्मा परमात्मा को याद करती है तो आत्मा अपने स्वरूप को अनुभव करती है, उसमें स्थित होती है, जिससे आत्मा की सोई हुई शक्ति जाग्रत होती है क्योंकि आत्मा में शक्ति तो पहले से ही नीहित है, वह देहाभिमान के कारण विस्मृत हो जाती है। आत्मा अविनाशी है, परमात्मा भी अविनाशी है, इसलिए स्थूल चीज के समान किसी चीज के देने और लेने का कोई विधि-विधान नहीं है।

''तुम शिवबाबा के साथ योग लगाकर शक्ति ले रहे हो। वर्सा बाप ही देगा ना। वह बाप ही सर्वशक्तिवान है।''

सा.बाबा 29.10.01 रिवा.

Q. हमारे सिर पर पापों का बोझा कितना है, उसकी कसौटी क्या है अर्थात् उसकी पहचान क्या है ? आत्मा पर पापों का बोझा कितने जन्मों से चढ़ा है और आत्मा पर जंक कितने जन्मों से चढ़ी है ?

आत्मा पर जंक आदि से ही अर्थात् प्रथम जन्म से ही चढ़ना आरम्भ हो जाती है क्योंकि अपने मूल स्वरूप की विस्मृति और देह-भान में आना, गिरती कला में आना भी आत्मा पर जंक की शुरूआत की ही निशानी है। परन्तु आत्मा पर पापों का बोझा 63 जन्मों का है क्योंकि द्वापर से जब देहाभिमान में आते हैं तो विकारों के वशीभूत पाप कर्म करते हैं, इसलिए बाबा कहते हैं आत्मा पर 63 जन्मों के पापों का बोझा है। देह-भान में आने से भी आत्मा पर जंक चढ़ना आरम्भ हो जाती है, इसलिए बाबा पहले कहते थे देह-अभिमान को छोड़ो परन्तु अभी कहते हैं ये देह-भान भी छोड़ो, तब ही तुम पावन बनेंगे और घर चल सकेंगे।

''जन्म-जन्मान्तर का पापों का बोझा सिर पर रहा हुआ है, यह कैसे पता पड़े। ... देखना है - बाप से हमारी दिल लगती है या देहधारियों से। कर्म सम्बन्धियों आदि की याद आती है तो समझना चाहिए हमारे विकर्म बहुत हैं।... बाप को याद कर अपने सिर से पापों का बोझा उतारना है।''

सा.बाबा 30.4.05 रिवा.

''नम्बरवन है काम, उनको ही पतित कहा जाता है। क्रोधी को पतित नहीं कहेंगे। ... सतोप्रधान को पुण्यात्मा और तमोप्रधान को पापात्मा कहा जाता है। विकार में जाना पाप है। बाप कहते हैं अब पवित्र बनो।''

सा.बाबा 7.5.05 रिवा.

Q. आत्मा के संस्कारों और शरीर की स्थिति में क्या सम्बन्ध है, दोनों का क्या प्रभाव है ?

आत्मा का संस्कारों अनुसार चिन्तन चलता है, संकल्प जाग्रत होता है, जो शरीर की ग्रन्थियों को प्रभावित करता है, जिससे ग्रन्थियां उस अनुसार रस स्त्रवित करती हैं और वह स्त्रवित रस शरीर के निर्माण में, रोग-शोक, सुख-दुख, शान्ति-शान्ति के अनुभव में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। आत्मा के संस्कारों के अनुसार ही आत्मा को कहाँ जन्म लेना है, वह निश्चित होता है, जिसके अनुसार उसका गर्भ में शरीर निर्मित होता है। संस्कारों और शरीर का गहरा सम्बन्ध है, दोनों मिलकर आत्मा के सुख-दुख का कारण बनते हैं। उदाहरणार्थ एक आत्मा किसी आत्मा के प्रेम में मग्न है तो उसकी ग्रन्थियों से प्रेमरस स्त्रवित होता है, जो अन्दर और बाहर प्रेम का निर्माण करता है और उसी समय उसको कोई शोक समाचार मिलता है या किसी कारण क्रोध आ जाता है तो उस अनुसार ग्रन्थियों से रस स्त्रवित होने लगता है, जो उस अनुसार वातावरण निर्माण करता है और वह वातावरण उसके शरीर पर भी प्रभाव डालता है तो आत्मा के सुख-दुख का भी कारण बनता है। इस प्रकार हम देखें तो दोनों एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं परन्तु आत्मा प्रधान है, इसलिए उसका शरीर पर विशेष प्रभाव होता है।

Q. विदेही बाप देह में आकर आत्माओं को उनकी विदेही स्थिति का अनुभव कराते हैं, तो क्या परमात्मा ये अनुभव अपनी शक्ति से कराता है या आत्मा स्वयं अपनी शक्ति से करती है ?

परमात्मा अपनी शक्ति से आत्माओं को उनके स्वरूप में स्थित कर देता है, जिससे आत्मा देह को भूलकर विदेही स्थिति का अनुभव करती है। अनुभव आत्मा ही अपनी शक्ति से करती है परन्तु कराते परमात्मा अपनी शक्ति से हैं अर्थात् परमात्मा अपनी शक्ति से आत्मा को उसके आत्मिक स्वरूप में स्थित करते हैं। दोनों की शक्तियां एक साथ काम करती हैं। विदेही स्थिति का अनुभव करने के बाद आत्मा उसको स्थाई बनाने का पुरुषार्थ करती है और अपने पुरुषार्थ अनुसार उस अनुभव को चिर-स्थाई बनाती है।

''विदेही बापदादा को भी देह का आधार लेना पड़ता है। किसलिए ? बच्चों को भी विदेही बनाने के लिए। जैसे बाप विदेही, देह में आते हुए भी विदेही स्वरूप में, विदेहीपन का अनुभव कराते हैं, ऐसे आप सभी जीवन में रहते, देह में रहते विदेही आत्मिक स्थिति में स्थित हो इस देह द्वारा करावनहार बनकर कर्म कराओ।''

अ.बापदादा 19.12.85

Q. क्या ईविल सोल्स का कोई स्वरूप है यदि है तो कैसा है और आत्माओं का ईविल सोल्स

के रूप में भटकने का कारण क्या होता है?

ईविल सोल्स दो प्रकार की होती है अर्थात् ईविल सोल्स सूक्ष्म शरीरधारी भी हो सकती हैं और साकार रूप में भी हो सकती हैं अर्थात् भूत-प्रेत के रूप में भी हो सकती है और साकर में ईविल संस्कार वाले मनुष्य भी ईविल सोल्स ही हैं। यदि हम अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित नहीं हैं, हमको यथार्थ रूप से बाप की याद नहीं है अर्थात् हमारा योग सही नहीं है तब ही कोई भी ईविल सोल हमको प्रभावित करती है। जब ईविल सोल्स के साथ हमारा कोई हिसाब-किताब होता है तब ही दोनों प्रकार की ईविल आत्मायें हमारे दुख-अशान्ति का कारण बन सकती हैं। हमारे अपने ईविल संस्कार भी हमारे दुख का कारण हैं। सत्यता ये है कि हमारे अपने ईविल संस्कारों के कारण ही ईविल सोल्स हमको दुखी-अशान्त करती हैं या हमारे ईविल संस्कारों के कारण ही ऐसी आत्माओं के साथ हमारा हिसाब-किताब बनता है, जिसके फलस्वरूप हमारा योग सही नहीं होता है और वे आत्मायें हमारे दुख-अशान्ति का निमित्त कारण बनती हैं, वे आत्मायें भी अपना हिसाब-किताब चुक्ता करती हैं। अन्यथा कोई भी आत्मा किसी आत्मा को दुखी-अशान्त कर नहीं सकती।

''एक तरफ संकल्पों की स्पीड और दूसरी तरफ ईविल स्प्रिट्स की भी वृद्धि होगी। ... ईविल स्प्रिट्स का कुछ गुप्त रूप भी होता है। ... लेकिन आप लोगों के सामने स्पष्ट रूप में कम आयेंगी, गुप्त रूप में बहुत आयेंगी। ... जितना बिन्दुरूप की स्थिति होगी उतना कोई भी ईविल स्प्रिट वा ईविल संस्कार का फोर्स आप लोगों पर वार नहीं करेगा।''

अ.बापदादा 24.7.70

''घोस्ट छाया के मुआफिक आते हैं। यह भी वण्डर है कि कैसे घूमते-फिरते रहते हैं। ड्रामा में आत्मा को शरीर न मिलने के कारण भटकती है। छाया रूप ले लेती है। जैसे परछाई होती है। घोस्ट की परछाई नहीं पड़ती है। इन बातों में अपने को नहीं जाना है। दरकार ही नहीं है। इस खोज में जायें तो शिवबाबा भूल जाये।''

सा.बाबा 12.10.07 रिवा.

''अशुद्ध आत्माओं की वासनायें जो रह जाती हैं, वे आत्मायें फिर अशुद्ध आत्माओं के रूप में भटकती हैं। ... उनको भगाने के लिए आप सभी को योग अग्नि से काम लेना है। सभी कर्मेन्दियों को योगाग्नि में तपाना है, तो फिर कोई भी अशुद्ध आत्मा वार नहीं कर सकेगी।''

अ.बापदादा 18.5.69

Q. ईविल स्प्रिट्स का प्रत्यक्ष रूप और गुप्त रूप कौन सा है?

सूक्ष्म शरीर धारी ईविल स्प्रिट्स हैं प्रत्यक्ष रूप में, जो किसमें प्रवेश कर अपना काम करती हैं और ईविल संस्कार या ईविल संस्कार वाली आत्मायें हैं गुप्त रूप में ईविल स्प्रिट्स। दोनों प्रकार की ईविल स्प्रिट्स उनके ईविल संस्कारों के आधार पर ही कही जाती हैं।

''अव्यक्त स्थिति जिसकी सदा काल रहती है, वह बिन्दुरूप स्थिति में भी सहज स्थित हो सकेगा। अगर अव्यक्त स्थिति नहीं तो बिन्दुरूप में स्थित होना भी मुश्किल लगता है। यह है फाइनल स्टेज। ... दो शब्द - अन्तर और मन्त्र। ... बापदादा समान है या नहीं ? अन्तर करके सेकेण्ड में नॉट या डॉट लगाओ। ... ये अन्तर और मन्त्र प्रैक्टिकल में होंगे तो ईविल स्प्रिट सामना नहीं कर सकेंगी। ... ईविल स्प्रिट्स आप लोगों के सामने स्पष्ट रूप में कम आयेंगी लेकिन गुप्त रूप में बहुत आयेंगी।''

अ.बापदादा 24.7.70

Q. आत्मा थकती है या शरीर थकता है ?

वास्तव में थकता शरीर है, आत्मा नहीं। लेकिन शरीर की थकावट की महसूसता आत्मा को आती है क्योंकि ड्राइवर को गाड़ी का ख्याल तो रहेगा ना, इसलिए कहेंगे कि आत्मा थकती है। शरीर जड़ है, उसमें अनुभव की शक्ति नहीं है, इसलिए उसको थकावट की महसूसता नहीं हो सकती, इसलिए शरीर की थकावट की महसूसता आत्मा करती है।

आत्मा भी थकती है। आत्मा थकती है संकल्प-विकल्पों से और शरीर थकता है अधिक कार्य करने से। दोनों का एक-दूसरे से सम्बन्ध है और एक का दूसरे पर प्रभाव पड़ता है। यदि आत्मा थकी हुई न हो तो वह थके हुए शरीर से भी कार्य करा सकती है परन्तु यदि आत्मा थकी हुई है तो स्वस्थ और बिना थके हुए शरीर भी कार्य नहीं करा सकती है अर्थात् आत्मा के थके होने पर स्वस्थ शरीर भी कार्य नहीं कर सकता है। इसलिए कहेंगे कि दोनों थकते हैं परन्तु दोनों के थकने का विधि-विधान और प्रभाव अलग-अलग होता है परन्तु दोनों के थकावट की महसूसता आत्मा ही करती है क्योंकि आत्मा चेतन है, इसलिए बाबा ने कहा है - आत्मा थकती है।

''रात को भी जागते हैं परन्तु आत्मा थक जाती है तो सोना होता है। आत्मा के सोने से शरीर भी सो जाता है। आत्मा न सोये तो शरीर भी न सोये। थकती आत्मा है। ... तुम बच्चों को आत्माभिमानी होकर रहना है, इसमें ही मेहनत है।''

सा.बाबा 7.2.05 रिवा.

Q. सोती आत्मा है या शरीर सोता है अर्थात् थकती आत्मा है या शरीर थकता है ?

वास्तव में थकता तो शरीर ही है, आत्मा तो अथक है परन्तु शरीर की थकावट महसूस आत्मा करती है, इसलिए आत्मा शरीर से न्यारी अशरीरी हो जाती है अर्थात् सो जाती है। जैसे मोटर खराब होती है तो उसे गैरेज में देते हैं, ऐसे ही आत्मा शरीर को आराम देती है। बाबा ने मुरली में कहा है - बाबा की याद में तुम आबू से दिल्ली तक चले जाओ तो भी थकेंगे नहीं अर्थात् आत्मा शरीर की थकावट को महसूस नहीं करती है। आत्मा के अपने संकल्पों का प्रभाव शरीर पर पड़ता है, जिससे शरीर के विभिन्न सेल्स, ग्रन्थियां प्रभावित होती हैं, जिससे शरीर से आत्मा को काम कराने में कठिनाई अनुभव होती है और शरीर की उस थकावट को आत्मा महसूस करती है। आत्मा की थकावट है आत्मिक शक्ति का ह्रास, जिस ह्रास से आत्मा के कर्म गिरते हैं अर्थात् विकर्म होते हैं और आत्मा उनका फल दुख-अशान्ति के रूप में भोगती है। सतयुग-त्रेता में आत्मिक शक्ति होने के कारण आत्मा किसी प्रकार की थकावट अर्थात् दुख-अशान्ति अनुभव नहीं करती परन्तु द्वापर से वह थकावट अर्थात् अपनी शक्ति का ह्रास अनुभव करती है और उसको पूरा करने के लिए भक्ति आदि के अनेक कर्म-काण्ड करती है।

Q. मानसिक रोग क्या हैं, कैसे हैं और उनका कारण क्या है, उनका आत्मा का अपने ऊपर और शरीर पर क्या प्रभाव होता है?

व्यर्थ चिन्तन, बीती का चिन्तन, पर-चिन्तन, काम-वासना एवं अन्य विकार, राग-द्वेष, भय-चिन्ता, ईर्ष्या-घृणा आदि-आदि सब मानसिक रोग हैं, जो आत्मिक शक्ति को क्षीण करते हैं या कहें कि आत्मिक शक्ति के क्षीण होने के कारण पैदा होते हैं, जिसके परिणाम स्वरूप आत्मा राइट-रांग, कृत्य-अकृत्य का निर्णय करने में असमर्थ हो जाती है, जिससे वह न चाहते हुए भी अनेक प्रकार के विकर्मों में प्रवृत्त हो जाती है। विकर्मों के फलस्वरूप आत्मा दुख-अशान्ति को भोगती है। इन सबका कारण आत्मिक ज्ञान और उसके निश्चय में कमी अर्थात् अपने आप का, परमात्मा का, कर्म और फल के विधि-विधान का, विश्व-नाटक के विधि-विधान का यथार्थ रूप से ज्ञान का न होना और होते हुए भी उसमें निश्चय की कमी, उसके अनुभव की कमी। इस कमी के कारण मानसिक रोग पैदा होते हैं और उनको दूर करने का एकमात्र साधन है बाबा के साथ योग का गहरा अभ्यास और बाबा की मुरली का गहन अध्ययन और उसका मनन-चिन्तन करके ज्ञान की सत्यता को अनुभव करना।

Q. जीवघात और आपघात अर्थात् आत्म-घात एक ही बात है या दोनों में कोई भिन्नता है?

दुनिया में दोनों को एक ही समझते हैं परन्तु अभी हमको परमात्मा द्वारा यथार्थ ज्ञान मिला है,

तब हमने दोनों के अन्तर को समझा है। जब आत्मा अति दुखी हो जाती है और जीने में असमर्थ हो जाती है तो दुखी होकर अपने शरीर को किन्हीं क्रत्रिम साधनों के द्वारा छोड़ देती है, उसको जीवघात कहा जाता है। परन्तु परमात्मा पिता का बनकर, आत्म-कल्याण के पथ पर चलकर किन्हीं कारणों से बिचलित होकर जब आत्मा ज्ञान को छोड़ देती है अर्थात् परमात्मा को छोड़ देती है, उसको आपघात या आत्म-घात कहा जाता है क्योंकि उससे आत्मा का बड़ा अकल्याण होजाता है। परमात्मा जो आत्माओं को सुरजीत करने आया है, ज्ञानामृत पिता रहा है, उससे आत्मा अपने को बंचित कर देती है। बाबा ने कहा है जीवघात से भी आत्म-घात अधिक हानिकारक है क्योंकि उससे आत्मा अपने भविष्य को भी अन्धकार बना देती है।

Q. क्या चाहते हुए शरीर का त्याग कर सकते हैं? यदि कर सकते हैं तो क्यों और कैसे और यदि नहीं कर सकते हैं तो क्यों?

Q. क्या जीवघात करने वाले पर पाप चढ़ता है? यदि हाँ तो क्यों और कैसे? यदि नहीं तो क्यों?

जब तक आत्मा का इस शरीर के साथ अच्छा या बुरा कैसा भी पार्ट है, तब तक चाहते हुए भी शरीर का त्याग नहीं कर सकते हैं। कोई भी आत्मा चाहे वह जीवघात करता है या सतयुग में स्वेच्छा से देह का त्याग करता है, वह सब तभी हो सकता है, जब उसका इस देह से पार्ट पूरा हो गया है।

जीवघात करने वालों पर पाप चढ़ता है क्योंकि वे दुखी होकर देह का त्याग करते हैं अर्थात् वे देह का त्याग करना नहीं चाहते हैं परन्तु परिस्थितियों का सामना करने में असमर्थ हो जाते हैं, जिस कारण वे बाध्य हो जाते हैं देह का त्याग करने के लिए अर्थात् जीवघात करने के लिए। वे जीवघात करके दूसरों को भी दुखी करते हैं, इसलिए उन पर पाप चढ़ता है। सतयुग में स्वेच्छा से समय पर खुशी से देह का त्याग करते हैं और उनके देह के त्याग करने से दूसरे भी दुखी नहीं होते हैं, इसलिए उन पर पाप चढ़ने का प्रश्न ही नहीं उठता। उनके देह के त्याग करने को जीवघात नहीं कहा जाता है, उसको वस्त्र बदलना कहा जाता है।

बाबा ने कहा जीवघात से भी आत्म-घात महान पाप है। भले आत्मा तो मरती नहीं है परन्तु बाप का बनकर, बाप को छोड़ देना आत्म-घात ही है। आत्म-घात से परमात्मा और उसके कर्म की, उसके यज्ञ की निन्दा होती है, इसलिए उसको महापाप कहा जाता है। वास्तव में अज्ञानतावश इस आत्म-घात का सम्बन्ध जीवघात के साथ लगाने से जीवघात को महापाप

कहा गया है।

Q. जीवघात या आपघात के लिए उत्तरदायी कौन अर्थात् अपराधी कौन ? अर्थात् क्या जिससे परेशान होकर किसी ने जीवघात-आपघात किया, वह या जिसने उसकी बात सुनी नहीं, वह या जीवघात-आपघात करने वाला स्वयं ?

कर्म के नियम-सिद्धान्त को विचार करते हुए निर्णय करें तो जीवघात या आपघात करने वाला स्वयं ही उसके लिए उत्तरदायी है अर्थात् उसका मूल कारण उसके अपने ही कर्म है, जिनके आधार पर दूसरे निमित्त कारण बनते हैं। किसके आपघात या जीवघात करने से दूसरों को जो परेशानी या दुख भोगना पड़ता है, उसके लिए वे परेशानी या दुख भोगने वाले उत्तरदायी हैं, जिसका कारण उनके अपने कर्म हैं। ये जीवघात या आपघात भी आत्माओं के परस्पर हिसाब-किताब का परिणाम होता है, जो अचानक या अनायास नहीं लेकिन अनेक जन्मों के विकर्मों के आधार पर निर्मित होता है। जीवघात और आपघात दो भिन्न क्रियायें हैं, दोनों के अपने-अपने Cause and Effect हैं।

विचारणीय है - क्या जिस आत्मा पर सर्वशक्तिवान परमात्मा की छत्रछाया हो, परमात्मा से प्रीतबुद्धि हो उसको कोई आत्मा इस स्थिति तक परेशान कर सकती है कि वह जीवघात या आपघात जैसा जघन्य कर्म करने के लिए बाध्य हो जाये ?

Q. भगवानुवाच - 'निश्चयबुद्धि विजयन्ति, प्रीतबुद्धि विजयन्ति' तो इन ईश्वरीय महावाक्यों का अस्तित्व क्या रहा अर्थात् जीवघात-आपघात करने वाले को यथार्थ ज्ञानी कहा जा सकता है ?

वास्तव में जीवघात और आपघात करने वाले को यथार्थ ज्ञानी नहीं कहा जा सकता है। उसको परमात्मा से प्रीतबुद्धि भी नहीं कहा जा सकता है क्योंकि जिसको परमात्मा पर पूरा निश्चय होगा, जिसकी परमात्मा से प्रीत होगी, उसको परमात्मा अवश्य ही मदद करेगा - ये निर्विवाद सत्य है अर्थात् इसमें कुछ सोचने की भी गुन्जाइश नहीं है। जिस आत्मा को सर्वशक्तिवान परमात्मा मदद कर रहा हो, वह ऐसा कृत्य कैसे कर सकती है। यथार्थ ज्ञानी भी कब ऐसा कर्म नहीं कर सकता क्योंकि यथार्थ ज्ञानी विश्व-नाटक और कर्म-फल के विधि-विधान को जानने के कारण ऐसा कर नहीं सकता। वह तो अपने कर्म को सुधार कर अपने वर्तमान और भविष्य को श्रेष्ठ बनाने का ही पुरुषार्थ करेगा।

Q. ये घटनायें रोकने के लिए यथार्थ और प्रभावी पुरुषार्थ क्या ?

वास्तव में कर्म सिद्धान्त को विचार करें और जीवघात करने वाले व्यक्ति की मनः स्थिति को विचार करें तो 65-70 प्रतिशत तो वह व्यक्ति ही उत्तरदायी होता है और 25-30 प्रतिशत

अन्य आत्मायें निमित्त बनती हैं, जो भी अपने अपराध के लिए पश्चाताप अवश्य करती हैं उसके फलस्वरूप उनके मान-प्रतिष्ठा में ह्रास अवश्य होता है। जो समर्थ है, निमित्त है, वह ध्यान नहीं देता तो उसका भी कुछ न कुछ अपराध अवश्य बनता है और उसको भी उसका फल पश्चाताप के रूप में भोगना ही पड़ता है। इसके लिए ज्ञान की समझ में उन्नति अति आवश्यक है अर्थात् ज्ञान की अच्छी समझ ही इसका एकमात्र उपाय है। वास्तव में ये भी एक मानसिक बीमारी है, जो आत्मा के अपने कर्मों अनुसार ही आती है। इन सब से मुक्त करने के लिए ही परमात्मा अवतरित हुए हैं और हमको ये सारा ज्ञान दिया है, इसकी यथार्थ धारणा अर्थात् समझ से ही ये घटनायें रोकी जा सकती है।

Q. स्वेच्छा से देह त्याग और जीवघात में क्या अन्तर है, जो एक पुण्यात्मा कहलाता है और दूसरा पापात्मा कहलाता है ?

सतयुग में देह त्याग करने का विधि-विधान और अभी भी जैसे बाबा ने कई हठयोगी सन्यासियों के विषय में कहा है कि वे बैठे-बैठे देह का त्याग कर देते हैं। जो इस तरह से देह का त्याग करते हैं, वे अपनी आयु पूरी होने पर ही देह का त्याग करते हैं, उनके देह त्याग करने में उनके सम्बन्धियों और साथ वालों का कोई विरोध नहीं होता है, वे सबकी जानकारी में और अपनी जिम्मेवारियों को पूरा करके देह का स्वेच्छा से त्याग करते हैं, इसलिए उनको पुण्यात्मा कहा जाता है। जीवघात करने वाले किसी न किसी प्रकार के तनाव के कारण जीवघात करते हैं, अपनी जिम्मेवारियों से विमुख होकर जीवघात करते हैं, कर्म-भोग या कर्म-बन्धन से दुखी होकर जीवघात करते हैं, चोरी-छिपे जीवघात करते हैं, आदि-आदि कारणों के कारण जीवघात करने वाले पापात्मा कहे जाते हैं।

Q. परमात्मा ने कहा है - परमात्मा का सन्देश सर्व आत्माओं को मिलेगा, जिसके आधार पर ही वे मुक्ति में जायेंगी और जीवनमुक्ति का अनुभव करेंगी। मुक्ति-जीवनमुक्ति हर आत्मा का ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार है। अब प्रश्न उठता है कि क्या सर्व आत्माओं को परमात्मा का सन्देश मिलेगा और यदि मिलेगा तो कैसे मिलेगा ?

परमात्मा का सन्देश सर्वात्माओं को अवश्य मिलेगा परन्तु हर एक को मिलने का विधि-विधान अलग-अलग है अर्थात् किसी को प्रत्यक्ष रूप में और किसी को अप्रत्यक्ष रूप में मिलेगा। प्राय: हर धर्मवंश की आत्मा को परमात्मा का सन्देश उनके धर्म-पिताओं के द्वारा ही मिलेगा। जैसे हम देवी-देवता धर्म की आत्माओं को परमात्मा का सन्देश ब्रह्मा बाबा द्वारा साकार में या अव्यक्त रूप में मिल रहा है और मिलेगा। ऐसे ही अन्य धर्मवंश की स्थापना करने वाली

आत्मायें जिस तन में प्रवेश करेंगी, उसको सन्देश ब्रह्मा द्वारा मिलेगा और उनके धर्मवंश की आत्माओं को सन्देश उसके द्वारा मिलेगा। इसलिए बाबा ने कहा है - हर धर्म-स्थापक किसी न किसी रूप में यहाँ आकर परमात्मा का सन्देश लेंगे और जाकर अपने धर्मवंश की आत्माओं को देंगे।

Q. क्राइस्ट को जब क्रास पर चढ़ाया तो क्राइस्ट की आत्मा निकल गई होगी अथवा क्या हुआ अर्थात् दोनों अलग-अलग हो गये होंगे ?

धर्म स्थापन होने के बाद तो दोनों आत्माओं को अलग-अलग शरीर धारण कर पार्ट बजाना ही है। द्वापर से धर्म-सत्ता और राज-सत्ता अलग-अलग हो जाती है, इसलिए दोनों आत्माओं को अलग-अलग जन्म लेकर ही अपना-अपना पार्ट बजाना है। इसलिए क्रास पर चढ़ाने से पहले ही क्राइस्ट की आत्मा अवश्य ही निकल गई होगी और क्रास पर चढ़ाते समय उसमें जीसस की आत्मा ही रही होगी अर्थात् उसने ही उस घटना का दुख सहन किया होगा। क्राइस्ट के संग से उस आत्मा में भी विशेष सहनशक्ति आ गई होगी, जिससे उस दुख को सहज सहन करने में समर्थ हुई।

''क्राइस्ट की नई आत्मा ने आकर तन में प्रवेश किया, तो जिसमें प्रवेश किया, उसके मुख से प्रजा रची, वे हो गये क्रिश्चियन।... परमपिता परमात्मा कभी दुख नहीं भोग सकते, दुख अथवा गाली आदि सब इस साकार को देते हैं। क्राइस्ट को भी जब क्रास पर चढ़ाया तो जरूर जिस तन में क्राइस्ट की आत्मा ने प्रवेश किया, उसने ही यह दुख सहन किया।''

सा.बाबा 1.1.08 रिवा.

Q. आत्मा का इस धरा पर प्रथम बार किसी परिवार में जन्म लेने का आधार क्या है ?

ड्रामा का पार्ट, संस्कारों की समानता और संगमयुग पर बनाये आत्माओं के परस्पर के हिसाब-किताब ही नये चक्र में आत्मा के प्रथम जन्म लेने का आधार बनते हैं। ये हिसाब-किताब प्राय: सभी आत्माओं के परमधाम जाने से पहले बन जाते हैं।

''आत्मा को निराकारी व अव्यक्त स्टेज से व्यक्त में लाने का कारण क्या होता है ? एक कर्मो का बन्धन, दूसरा सम्बन्ध का बन्धन, तीसरा व्यक्त सृष्टि के पार्ट का बन्धन और देह का बन्धन - चोला तैयार होता है और आत्मा को पुराने से नये में आकर्षित करता है - तो इन सब के बन्धनों को सोचो।''

अ.बापदादा 30.6.74

''देहधारी बन कर्म-बन्धनों का बन्धन समाप्त कर लिया। ... तो धरनी उनको खींच नहीं सकती। ऐसे ही जब तक नये कल्प में, नये जन्म और नई दुनिया में पार्ट बजाने का समय नहीं

आया है, तब तक यह आत्मा (ब्रह्मा बाबा) स्वतन्त्र है और व्यक्त बन्धनों से मुक्त है।''

अ.बापदादा 30.6.74

Q. आत्मा परमधाम से जब सतयुग में आयेगी तो वहाँ स्थिति क्या होगी और क्यों होगी ?

आत्मा जब पहली बार मूलवतन से आती है तो आत्मा में कोई स्मृति नहीं होती है, आत्मा निर्संकल्प होती है क्योंकि परमधाम में कोई संकल्प होता नहीं। आत्मा में इन्द्रिय सुखों की भी कोई विशेष आकर्षण नहीं होगी, सम्बन्धों में भी मोह के वशीभूत कोई आकर्षण नहीं होगा। विनाश के बाद दुनिया में भी मूलवतन जैसी ही शान्ति हो जायेगी क्योंकि विनाश के समय बेहद के वैराग्य का वातावरण बन जाये और जब सब आत्मायें परमधाम चली जायेंगी, केवल थोड़ी सी आत्मायें रह जायेंगी तो वामावरण में भी बहुत कम वायब्रेशन्स होंगे। फिर जैसे-जैसे आत्मायें देह में आकर पार्ट बजायेंगी, संकल्प चलेंगे वैसे-वैसे वातावरण में विचार तरंगें बढ़ेंगी। इसलिए वहाँ आत्माओं को शान्ति ही प्रिय लगेगी और आत्मायें शान्ति में ही रहेंगी।

Q. हम सारा हिसाब-किताब समाप्त करके परमधाम जाते हैं और सतयुग से नया हिसाब-किताब आरम्भ होता है या सतयुग के लिए यहाँ से हिसाब-किताब बनाकर जाते हैं ?

भगवानोवाच्य - सतयुग पारलौकिक बाप का वर्सा है, लौकिक बाप का नहीं अर्थात् अभी जो हम करते हैं वह परमात्मा के नाम पर करते हैं तो हमारा हिसाब-किताब परमात्मा के साथ जुटता है और सर्व आत्माओं से पुराना हिसाब-किताब चुक्ता करके परमधाम जाते हैं। भल परमात्मा के साथ हमारा लेनदेन का हिसाब-किताब होता है परन्तु उस हिसाब-किताब का आधार तो आत्मायें ही बनती हैं क्योंकि परमात्मा आत्माओं को ही निमित्त बनाकर सारा कार्य कराते हैं। विश्व-नाटक के नियमानुसार हम सतयुग में जन्म लेते हैं और वहाँ परमात्मा का वर्सा हमको मिलता है परन्तु वर्सा देने-लेने के लिए निमित्त तो आत्मायें ही बनती हैं। इसलिए सतयुग-त्रेता के लिए परमात्मा के आधार से आत्माओं के साथ नया हिसाब-किताब हम संगमयुग पर बनाकर जाते है। बाबा ने अनेक बार कहा है - अभी तुम आधे कल्प के लिए खाता जमा करके जाते हो। आधे कल्प बाद लेन-देन का नया खाता चलता है।

Q. क्या आत्मा का कोई वज़न होता है ?

विवेक कहता है - जब आत्मा का रूप है, अस्तित्व है तो उसका वज़न भी जरूर होना चाहिए, भले हम उसको किसी स्थूल चीज से वजन नहीं कर सकते।

''हम आत्माओं का रुहानी बाप एक है, उनका रूप दिखाई नहीं पड़ता है। उस निराकार का चित्र भी है सालिग्राम मिसल है। हर वस्तु का आकार जरूर होता है। ... आत्मा बहुत छोटी

है, जो इन आंखों से देखने में नहीं आती है।''

सा.बाबा 5.1.05 रिवा.

Q. आत्मा का परिवार विशेष में या किसी भी रूप में शरीर धारण करने का आधार क्या है ?

ड्रामा का पार्ट, आत्मा के नैसर्गिक संस्कार और आत्माओं का परस्पर का हिसाब-किताब। अपने नैसर्गिक संस्कारों के अनुसार ही आत्मा शरीर धारण कर ड्रामा में पार्ट बजाती है।

Q. जीवात्मा अपना आपही मित्र है और आपही अपना शत्रु है, इसका भाव-अर्थ क्या है ?

ड्रामानुसार हर आत्मा अपने कर्मों अनुसार सुखी-दुखी होती है, कोई दूसरी आत्मा, उसके लिए उत्तरदायी नहीं है। दूसरे तो केवल निमित्तमात्र होते हैं, मूल आधार तो हर आत्मा के अपने ही कर्म होते हैं। इसलिए हमको पर-दर्शन, पर-चिन्तन, पर-आधार, पर-दोषारोपण में अपनी समय और शक्ति व्यर्थ नहीं करना चाहिए और नये विकर्मों का बीज नहीं बोना चाहिए क्योंकि दूसरे को मित्र-शत्रु समझ लेते हैं तो उनके प्रति मन में राग-द्वेष पैदा होता है और व्यवहार बदल जाता है। इसमें ड्रामा का पार्ट और आत्मा का कर्म दोनों की महत्वपूर्ण भूमिका है।

परमात्मा

Q. क्या परमात्मा सृष्टि का रचता है, यदि वह रचता है तो किसका रचता है और कैसे रचता है ?

परमात्मा कोई नई सृष्टि नहीं रचता है क्योंकि सृष्टि का चक्र तो अनादि-अविनाशी है, जो सतत चलता रहता है। परमात्मा सृष्टि-चक्र के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञाता है, वह आकर उसका ज्ञान देता है और ज्ञान देकर, आत्माओं को पावन बनाकर पुरानी सृष्टि अर्थात् पुराने चक्र में नई सृष्टि अर्थात् नये चक्र की कलम लगाता है, इसलिए उसको रचता कहा जाता है।

परमात्मा नर्क में आकर स्वर्ग रचता है, इसलिए उनको स्वर्ग का रचता कहा जाता है, परन्तु नई सृष्टि का रचता नहीं कहा जा सकता है क्योंकि सृष्टि तो अनादि-अविनाशी है, उसको रचने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता है। नर्क को ही स्वर्ग बनाता है अर्थात् नर्क से ही स्वर्ग की रचना करता है अर्थात् आसुरी संस्कारों से दैवी संस्कारों की कलम लगाता है।

Q. परमात्मा ज्ञाता-दाता अर्थात् विश्व-नाटक के विधि-विधानों को जानने और ज्ञान देने वाला है या विधाता अर्थात् उन विधि-विधानों कों बनाने वाला है ? यदि विधाता है तो कैसे ?

परमात्मा विश्व-नाटक के सभी विधि-विधानों का ज्ञाता-दाता है और वही आकर हम आत्माओं

को सारे विधि-विधानों का ज्ञान देता है, इसलिए परमात्मा को विश्व-नाटक और उसके विधि-विधानों का ज्ञाता और दाता कहेंगे परन्तु वह उनका विधाता नहीं क्योंकि परमात्मा ने इस विश्व-नाटक को और उसके विधि-विधानों को बनाया नहीं है। ये विश्व-नाटक अनादि-अविनाशी है इसलिए उसके विधि-विधान भी आनादि-अविनाशी हैं। परमात्मा उन विधि-विधानों में न कोई परिवर्तन करता है और न कर सकता है, वह उनके अनुसार ही सारा कार्य करता हे क्योंकि वह धर्मराज भी है। विश्व-नाटक के विधि-विधान छोटे-बड़े सबके लिए बने हुए हैं, जिनके अनुसार सभी आत्मायें कर्म करने के लिए बाध्य हैं और सबको अपने कर्मानुसार अच्छा-बुरा फल मिलता है और ये विश्व-नाटक सफलता पूर्वक चलता है। परमात्मा इस सृष्टि-चक्र की नई कलम लगाता है, इसलिए उसको विधाता कहा जाता है और कह सकते हैं ।उन विधि-विधानों को जानकर कर्म करने वाला इस विश्व-नाटक के परमानन्द को अनुभव करता है।

Q. क्या परमधाम में परमात्मा को संकल्प उठता है कि अब नीचे जाऊं ? या और किसी कर्म को करने का संकल्प उठता है ?

नहीं। परमधाम में संकल्प उठने का कोई प्रश्न ही नहीं क्योंकि संकल्प भी एक कर्म है, जो स्थूल या सूक्ष्म शरीर के बिना हो नहीं सकता। परमधाम में स्थूल या सूक्ष्म शरीर ही नहीं है तो वहाँ संकल्प अर्थात् कर्म कैसे हो सकता है। वहाँ आत्मायें पूर्ण शान्ति में रहती हैं, इसलिए उसको साइलेन्स वर्ल्ड कहा जाता है। परमात्मा भी शान्ति में ही रहते हैं। परमात्मा के लिए जो ये गायन है - बिनु पग चलै, सुनै बिनु काना, कर बिनु कर्म करै विधि नाना। ये सब इस समय की बात है, जब वह निराकार ब्रह्मा तन में आकर कर्म करता है।

''आधा कल्प मैं वहाँ आराम से बैठा रहता हूँ वानप्रस्थ में। तुम मुझे पुकारते हो। ऐसे भी नहीं कि मैं वहाँ सुनता हूँ। मेरा पार्ट ही इस समय का है। ड्रामा के पार्ट को मैं जानता हूँ।''

सा.बाबा 21.10.69 रिवा.

परमधाम में कोई संकल्प नहीं उठता, ये सब आत्मा के पार्ट के समय ड्रामा अनुसार ही होता है। परमात्मा भी ड्रामा अनुसार ही आते हैं। परमात्मा ने अनेक बार कहा है - मैं कोई तुम्हारे बुलाने या पुकारने पर नहीं आता हूँ, मैं तो अपने समय ड्रामा अनुसार आता हूँ, उसमें एक सेकेण्ड की देर नहीं हो सकती।

''बाप कहते हैं - मैं आया हूँ तुमको ले जाने के लिए। तुम्हारे बिगर हमको बेआरामी होती है। जब समय आता है तो हमको बेआरामी हो जाती है, बस अब जाऊं, बच्चे बहुत दुखी हैं, पुकारते हैं। ड्रामा में जब समय होता है, तब ख्याल होता है, बस अब जाऊं। ... मैं सभी को

साथ ले जाता हूँ, फिर तुमको भेज देता हूँ। फिर मेरा पार्ट पूरा। आधा कल्प कोई पार्ट नहीं। फिर भक्ति मार्ग में पार्ट शुरू होता है, यह भी ड्रामा बना हुआ है।''

सा.बाबा 26.3.04 रिवा.

वास्तव में परमधाम में कोई संकल्प नहीं उठ सकता, इस विषय में बाबा ने कई बार मुरलियों में कहा है और विवेक भी कहता है कि परमधाम में कोई संकल्प नहीं उठ सकता क्योंकि आत्मा में स्थूल व सूक्ष्म शरीर के बिना कोई संकल्प उठ नहीं सकता परन्तु बाबा ये बात किस भाव-अर्थ में कही है, ये विचारणीय है। ये भी निश्चित है कि जब आत्मा का इस धरा पर आने का समय होता होगा तो उसमें हलचल होना अवश्य सम्भावी है, तब ही तो वह यहाँ आती है या आयेगी।

Q. क्या परमात्मा को परमधाम में यह संकल्प आयेगा ? यदि आयेगा तो कैसे और नहीं आयेगा तो क्या होगा ?

Q. क्या परमधाम में परमात्मा को संकल्प उठता है, वहाँ वह किसकी पुकार सुनता है ?

नहीं। विवेक कहता है कि शरीर के बिना आत्मा को संकल्प आ नहीं सकता। इसलिए ये सारा खेल ड्रामा अनुसार चलता है। जैसे अन्य आत्मायें परमधाम से पार्ट बजाने आती हैं, वैसे ही परमात्मा भी पार्ट बजाने आते हैं परन्तु उनका पार्ट और पार्ट बजाने का विधि-विधान मनुष्यों के विधि-विधान से भिन्न है। परमात्मा जब ब्रह्मा तन में आते हैं तब ही संकल्प उठ है। कई बार बाबा ने कहा है - मैं कोई संकल्प नहीं करता हूँ, न मुझको कोई संकल्प करने की आवश्यकता है। जिस समय जो बोलना होता है, वह आपही बोलता हूँ। ये सब ड्रामा में नूँधा हुआ है। मैं आता भी अपने समय पर ड्रामा अनुसार ही हूँ।

''तुम ब्रह्माण्ड में रहते हो। वहाँ तुम अशरीरी हो, इसलिए कोई संकल्प-विकल्प नहीं चलता है। फिर पार्ट में आते हो - यह भी ड्रामा बना हुआ है। ... अभी तुम त्रिकालदर्शी हो, यह ज्ञान के संस्कार तुम्हारे यहाँ ही प्राय: लोप हो जाते हैं। यह ज्ञान वहाँ नहीं रहेगा। ... फिर राजधानी के संस्कार आयेंगे।''

सा.बाबा 19.6.08 रिवा.

इस सबका अर्थ ये नहीं कि सब ड्रामा अनुसार होता है तो हम परमात्मा को याद ही क्यों करें। बिना परमात्मा के याद के आत्मा में न ज्ञान की पराकाष्टा होगी, न आत्मा श्रेष्ठ बनेगी और न आत्मा पावन बनेंगी। इसलिए परमात्मा को याद भी करना ही है, उनकी श्रीमत पर चलना ही है और उनके साथ सम्बन्ध रखना ही है, तब ही हमारा योग सफल होगा, आत्मा पावन बनेंगी। ज्ञान की यथार्थ रीति धारणा भी परमात्मा की याद साथ ज्ञान के मनन-चिन्तन से

होगी।

अनेक बार बाबा ने कहा है कि अपने समय पर आत्मा आपही पार्ट बजाने आती है, परमधाम में संकल्प की बात ही नहीं। सिद्धान्त: जब आत्मा को नहीं उठ सकता तो परमात्मा को भी नहीं उठना चाहिए। सत्यता ये है कि सब ड्रामा अनुसार समय पर होता है। परमात्मा का विशेष पार्ट है, परन्तु वह भी तब चलता है, जब वे ब्रह्मा तन में आते हैं।

वास्तव में परमधाम में न संकल्प है और सुनने, बोलने की बात है। ये सारा खेल ड्रामा अनुसार चलता है। संकल्प, बोल और कर्म सब सूक्ष्मवतन और स्थूल वतन में होते हैं। परमात्मा संगमयुग पर ब्रह्मा तन में आकर ही सब कार्य करते हैं।

''कहते हैं - परमात्मा को संकल्प उठा कि सृष्टि रचने के लिए जाऊं। जब समय होगा तब ही एक्ट करने का विचार आयेगा और आकर पार्ट बजायेगा। बाप कहते हैं - जैसे तुम पार्ट बजाते हो, वैसे मैं भी बजाता हूँ।'' सा.बाबा 9.11.07 रिवा.

''मुझे भी कर्म करने के लिए कर्मेन्द्रियों का आधार चाहिए। ... ज्ञान सागर परमात्मा संगम पर ही आकर ज्ञान स्नान से सबकी सद्गति करते हैं।'' (संकल्प भी एक कर्म है, बिना स्थूल या सूक्ष्म शरीर के संकल्प भी नहीं हो सकता है)

सा.बाबा 20.4.06 रिवा.

''ऐसे भी नहीं कि मैं तुम्हारी आत्मा के बुलाने पर आता हूँ। ... ड्रामा अनुसार एक्यूरेट टाइम पर आ जाता हूँ। वहाँ मुझे आरगन्स ही कहाँ हैं, जो मैं तुम्हारी पुकार सुनूँगा। यह ड्रामा बना-बनाया है। जब समय होता है तो आकर पतितों को पावन बनाता हूँ।''

सा.बाबा 20.12.06 रिवा.

''भक्ति में तुम मुझे पुकारते आते हो। ऐसे नहीं कि मैं वहाँ बैठ तुम्हारी पुकार सुनता हूँ। मेरा पार्ट ही इस समय का है। अभी संगमयुग पर ही मैं आता हूँ। ड्रामा के पार्ट को मैं जानता हूँ।''

सा.बाबा 11.11.05 रिवा.

Q. परमधाम कर्मक्षेत्र नहीं है तो क्या परमात्मा परमधाम में कोई पार्ट बजा सकते हैं अर्थात् कोई कर्म कर सकते हैं?

Q. क्या परमधाम में रहकर कोई आत्मा कोई कार्य कर सकती है? भक्ति मार्ग में जो साक्षात्कार आदि होते हैं, दान-पुण्य का फल मिलता है, वह परमात्मा देते हैं या ड्रामा में नूँध है, उस अनुसार होता है?

परमधाम में रहते होई आत्मा कोई कर्म नहीं कर सकती और विवेक कहता है कि परमात्मा भी

वहाँ रहते न कोई कर्म करता है और न ही कर सकता है। कर्म करने के लिए स्थूल या सूक्ष्म शरीर अवश्य चाहिए, जो इस कर्म-क्षेत्र पर ही होता है। परमात्मा का पार्ट भी संगमयुग पर ही ब्रह्मा-तन के द्वारा चलता है।

''ब्रह्मलोक को वास्तव में दुनिया नहीं कहेंगे। वहाँ तुम आत्मायें रहती हो। वास्तव में पार्ट बजाने की दुनिया यही है। वह है शान्तिधाम, रहने का घर।''

सा.बाबा 29.4.04 रिवा.

''सृष्टि के आदि में भारत में देवी-देवताओं का राज्य था, जिनके हीरे-जवाहरों के महल थे। ... मुसाफिर तो सभी आत्मायें हैं, कितना दूर से पार्ट बजाने आती हैं। ... आत्मायें हैं निराकारी दुनिया में रहने वाली। यह कर्मक्षेत्र है, जहाँ आत्मायें आती हैं पार्ट बजाने। परमधाम को कर्मक्षेत्र नहीं कहेंगे।'' सा.बाबा 2.6.08 रिवा.

''बच्चों ने सब साक्षात्कार किया है। वह पार्ट सब बीत गया। उस समय इतना ज्ञान नहीं था। ... यह भी सब पार्ट ड्रामा में नूँधा हुआ है।... ऊपर ब्रह्माण्ड में बैठ मैं कितना काम करता हूँ। नीचे तो कल्प में एक ही बार आता हूँ।''

सा.बाबा 26.5.08 रिवा.

Q. क्या कोई भी आत्मा आकाश तत्व में स्थूल या सूक्ष्म शरीर के बिना रह सकती है?

नहीं। परमधाम है आत्माओं की दुनिया, जहाँ ही आत्मायें बिना शरीर के रह सकती है और रहती हैं। आकाश तत्व में कोई भी आत्मा स्थूल या सूक्ष्म शरीर के साथ ही रह सकती है क्योंकि परमधाम से इस इस कर्मक्षेत्र पर आने से ही आत्मा का कर्मों का हिसाब-किताब आरम्भ हो जाता है और देह मिलते या देह में प्रवेश करते ही उसका सूक्ष्म शरीर भी तैयार हो जाता है।

Q. क्या शिवबाबा या ब्रह्मा बाबा को ये संकल्प उठता है या उठ सकता है कि इस दुखी दुनिया का जल्दी विनाश हो? इस विषय में आपका संकल्प और भावना क्या है अर्थात् जल्दी विनाश हो?

नहीं। क्योंकि शिवबाबा और ब्रह्माबाबा दोनों ज्ञानी आत्मायें हैं और सृष्टि-चक्र के पूर्ण ज्ञाता हैं। वे दोनों ही जानते हैं कि ये सारा खेल ड्रामा समयानुसार ही चलेगा अर्थात् समय पर ही दुनिया बदलेगी। दोनों की, विशेष ब्रह्मा बाबा की ये प्रबल इच्छा है और हो सकती है कि हम आत्मायें बाप समान सम्पूर्ण बनें और सर्व आत्मायें इस सत्य ज्ञान को समझकर पुरुषार्थ करके इस संगमयुगी जीवन का परमसुख अर्थात् मुक्ति-जीवनमुक्ति का परमसुख अनुभव करें और हम

बच्चे भी अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर साक्षी होकर इस जीवन का परम सुख अनुभव करें क्योंकि इस जीवन की मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव सुर-दुर्लभ स्वर्ग से भी श्रेष्ठ है, इसीलिए आपदादा ने 20.3.04 की मुरली में कहा - ''इस ज्ञान के खजाने से प्रत्यक्ष जीवन में, हर कार्य में यूज करने से विधि से सिद्धि मिलती है अर्थात् कई बन्धनों से मुक्ति और जीवनमुक्ति मिलती है। अनुभव करते हो। ऐसे नहीं कि सतयुग में जीवनमुक्ति मिलेगी।... स्व-परिवर्तन से सर्व-परिवर्तन''।

हमारा तो यही विचार है कि ड्रामा अपने समय पर पूरा होगा, इसलिए हम उसके लिए व्यर्थ संकल्प क्यों चलायें। हमको अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर इस संगमयुगी जीवन का सुख लेना है और सर्व आत्माओं के प्रति अपनी जिम्मेवारी को पूरा करना है अर्थात् उनको भी इस सुख का रास्ता बताना है। हाँ बाप और दादा दोनों को यह संकल्प जरूर उठता होगा कि सभी दुखी आत्मायें दुख-ददै से छूट जायें। उसमें भी विशेष ब्रह्मा बाबा को उठता होगा क्योंकि वह दुख-सुख दोनों का अनुभवी है, उनको दुखी आत्माओं के दुख की महसूसता विशेष होती होगी।

Q. परमात्मा को संकल्प उठता है, तब आते हैं या ड्रामा प्लेन अनुसार आते हैं? यदि परमात्मा को संकल्प उठता है तब आते हैं तो क्या आत्माओं को भी संकल्प उठता है, तब आती हैं?

मनुष्य भक्ति करते हैं तो जड़ मूर्ति में भी चेतन्य परमात्मा की भावना रखते हैं, तब ही साक्षात्कार होता है, इसलिए कहेंगे कि परमात्मा ही साक्षात्कार कराता है परन्तु यह सब होता ड्रामानुसार ही है क्योंकि परमात्मा तो कल्पान्त में ही आते हैं। परमधाम में संकल्प और कर्म होता ही नहीं है क्योंकि बिना स्थूल या सूक्ष्म शरीर के आत्मा को संकल्प भी नहीं उठ सकता और संकल्प ही नहीं तो कर्म की तो बात ही नहीं है।

भक्त जड़ चित्रों से मांग रहे हैं, तो वह अनुभूति उन आत्माओं को चेतन्य में भी अवश्य हुई होगी, तब ही तो वे फिर से मांग रहे हैं अर्थात् वे जो मांगते हैं, वह चैतन्य में अनुभूति अवश्य करते हैं।

''आत्मा और परमात्मा का पार्ट और महिमा अलग-अलग है। ... सभी एक्टर्स का पार्ट एक जैसा हो नहीं सकता। इसको ही ईश्वर की कुदरत कहा जाता है। वास्तव में ड्रामा की कुदरत कहेंगे क्योंकि बाबा ऐसे नहीं कहते कि मैंने ड्रामा बनाया है। बनाया कहें तो प्रश्न उठेगा कि कब बनाया? ... परमात्मा को सर्वशक्तिवान, वर्ल्ड ऑलमाइटी अथॉरिटी ज्ञान का सागर कहा

जाता है।'' सा.बाबा 7.8.07 रिवा.

''भक्ति मार्ग में मेरे में ज्ञान इमर्ज नहीं होता है। उस समय सारा रसम-रिवाज़ भक्ति मार्ग का चलता है। ड्रामा अनुसार जो भक्त जिस भावना से पूजा करते हैं, उनको साक्षात्कार कराने मैं निमित्त बना हुआ हूँ। उस समय मेरी आत्मा में ज्ञान का पार्ट इमर्ज नहीं है।''

सा.बाबा 18.6.07 रिवा.

''उनको जरूर पहले सूक्ष्मवतन रचना पड़े क्योंकि ब्रह्मा तो जरूर चाहिए।... यह व्यक्त ब्रह्मा ही फिर अव्यक्त बनता है। तुम भी व्यक्त ब्रह्मा की औलाद फिर अव्यक्त औलाद बनते हो। ये बड़ी गुह्य बातें हैं।'' (Q. शिवबाबा ब्रह्मा में प्रवेश होने से पहले सूक्ष्म वतन कैसे रचते हैं? क्योंकि शिवबाबा कहते - बिना शरीर के आत्मा कोई कर्म नहीं कर सकती)

सा.बाबा 26.6.07 रिवा.

''आत्मायें स्टेजज में आती हैं, मैं नहीं आता हूँ। ... बाप खुद बतलाते हैं - मैं कैसे प्रवेश करता हूँ। इसको जन्म नहीं कहेंगे। जब समय पूरा होता है, तब भगवान को संकल्प उठता है- जाकर रचना रचें। ड्रामा में उनका भी पार्ट है ना। परमपिता परमात्मा भी ड्रामा के अधीन है।''

सा.बाबा 27.7.07 रिवा.

''बाबा आत्माओं से बात करते हैं। आत्मा न कह जीवात्मा कहेंगे क्योंकि जब आत्मा अकेली होती है तो बोल नहीं सकती। ... परमधाम में क्या परमात्मा आत्माओं से बात करेंगे? भल कह देते क्राइस्ट को परमात्मा ने भेजा परन्तु वहाँ परमात्मा बोलता ही नहीं है। वहाँ इशारा भी नहीं होता है। ड्रामा अनुसार आत्मा आपही पार्ट बजाने नीचे आ जाती है।''

सा.बाबा 8.10.07 रिवा.

Q. क्या परमात्मा परमधाम में किसकी पुकार सुनता है और वहाँ से किसी की मनोकामनायें पूरी करता है या ये सारा खेल ड्रामा अनुसार ही चलता है और संगमयुग पर ही परमात्मा का पार्ट चलता है जब आत्माओं को ज्ञान देकर पावन बनाने का समय होता है?

नहीं। आत्मा स्थूल या सूक्ष्म देह में रहते ही किसकी पुकार सुन सकता या अनुभव कर सकता है। मूल वतन में आत्मा न सुन सकती और न ही अनुभव कर सकती है। ये विचारणीय हे कि परमधाम में परमात्मा को कान ही नहीं हैं तो वहाँ सुनेंगे कैसे! संगमयुग पर ब्रह्मा तन में आकर परमात्मा आत्माओं की पुकार सुनता है और सर्व आत्माओं पर उपकार करता है। संगमयुग पर आकर सबको मुक्ति-जीवनमुक्ति का ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार देता है क्योंकि परमात्मा सर्व आत्माओं का अनादि-अविनाशी पिता है।

ये सारा खेल ड्रामानुसार ही चलता है। भले बाबा ने ये कहा है कि मैं भक्ति मार्ग में

साक्षात्कार कराता हूँ, तुम्हारी पुकार सुनता हूँ परन्तु बाबा ने अनेक बार ये भी कहा है कि ये सब कार्य ड्रामा अनुसार ही चलता है, मैं संगम पर ही आकर तुमको पावन बनाकर सतयुग की स्थापना करता हूँ। बाबा ने ये भी कहा है कि तुम विचार सागर मंथन करो और जज करो कि क्या सत्य है।

''आधा कल्प मैं वहाँ आराम से बैठा रहता हूँ, वानप्रस्त। तुम मुझे पुकारते हो ऐसे भी नहीं कि मैं वहाँ सुनता हूँ, मेरा पार्ट ही इस समय का है। ड्रामा के पार्ट को मैं जानता हूँ।''

सा.बाबा 21.10.69 रिवा.

''माया से बुद्धि मारी जाती है। माया का नाम भारत में मशहूर है। ... राम की शक्ति के सिवाए रावण पर जीत पा नहीं सकते। ... वह निराकार भारत में कैसे आया। आत्मा आरगन्स बिगर तो कोई कर्म कर नहीं सकती।'' **Q.** विचारणीय है - फिर परमात्मा को परमधाम में संकल्प कैसे आ सकता है ?

सा.बाबा 24.5.07 रिवा.

Q. क्या इस साकार तन में आने से पहले सूक्ष्मवतन में संकल्प हो सकता है ?

हाँ, हो सकता है। ये स्थूल शरीर भी जड़ है, जिसमें आत्मा प्रवेश होने से चेतन हो जाता है, तो सूक्ष्म शरीर भी जड़ ही है, उसमें प्रवेश होने से संकल्प उठ सकता है। तो शिवबाबा ब्रह्मा के सूक्ष्म शरीर को सूक्ष्मवतन में इमर्ज करके नई रचना का कार्य आरम्भ कर देते हैं। साकार ब्रह्मा बाबा भी समय-समय पर सन्देशियों को सूक्ष्मवतन में भेजकर अपने संकल्प को वेरीफाइ कराते थे, कोई बात पूछना होती थी तो पूछते थे। विनाश के बाद जो आत्मायें बचती हैं या नई आत्मायें आकर शरीर धारण करती हैं, उनके सूक्ष्म शरीर तो होते ही हैं और विनाश के बाद भी रहते ही हैं, जो स्थूल वतन के पार्ट के अनुसार परिवर्तन होते रहते हैं। सूक्ष्म शरीर के साथ ही कोई आत्मा एक देह का त्याग करके दूसरे शरीर में जाकर प्रवेश करती है।

ड्रामा अनुसार शिवबाबा को भी ड्रामा के पार्ट की आकर्षण होती है और वे अपना पार्ट बजाने आ जाते हैं, फिर ब्रह्मा के सूक्ष्म शरीर या स्थूल शरीर में प्रवेश होकर नई रचना का कार्य करते हैं।

Q. क्या परमात्मा को किसी दुखी को देखकर उसके दुख-दर्द की अनुभूति होती है ?

नहीं। जिसको स्वयं के दुख-दर्द की अनुभूति होती है, वही दूसरे के दुख-दर्द की अनुभूति कर सकता है। परमात्मा सुख-दुख दोनों से न्यारा, अभोक्ता है। हम भी इस देह और देह की दुनिया से ऊपर उठकर इस विश्व-नाटक को देखें तो ये नाटक परमानन्दमय अनुभव होगा

और सारा पार्ट कठपुतलियों के खेल के समान अनुभव होगा और इस विश्व की किसी आत्मा के दुख-सुख की अनुभूति नहीं होगी। यदि परमात्मा किसी के दुख को देखकर दुख की अनुभूति करे तो वह भी दुख-सुख का भोक्ता बन जाये। उसमें इस विश्व-नाटक का सारा ज्ञान अनादि-अविनाशी भरा हुआ है, जो अपने समय पर पुनरावृत्त होता है अर्थात् उस अनुसार वह ज्ञान देता है।

शिवबाबा ज्ञान का सागर है, ब्रह्मा बाबा अनुभवों का सागर है क्योंकि उनको सारे कल्प के सुख-दुख का अनुभव, इसलिए दोनों मिलकर विश्व-परिवर्तन का कार्य करते हैं।

''शिवबाबा इन द्वारा समझाते हैं, इनकी आत्मा भी सुनती है। यह बाबा सब बतलाते हैं। शिवबाबा को तो अनुभव नहीं है। बच्चों को अनुभव होता है। माया के तूफान कैसे आते हैं। पहले नम्बर में यह है, तो इनको सब अनुभव होगा। ... शिवबाबा तो दाता है, देने वाला है ना। वह कुछ लेने वाला नहीं है।''

सा.बाबा 27.10.06 रिवा.

Q. परमात्मा सर्वशक्तिवान है और वह सदा अच्छा ही सोचता और करता है परन्तु क्या वह जो चाहे सो कर सकता है?

नहीं। ये विश्व एक अनादि-अविनाशी नाटक है, जिसमें परमात्मा सहित हर आत्मा का पार्ट नूँधा हुआ है। परमात्मा भी इस विश्व-नाटक के विधि-विधान और मर्यादा के अनुसार ही कर्म करता है, वही आकर हमको भी मर्यादा पुरुषोत्तम बनाता है। परमात्मा भी विश्व-नाटक की मर्यादा में बंधा हुआ है और उस अनुसार ही कार्य करता है। वह सर्वशक्तिवान होते भी विश्व-नाटक की मर्यादा के विपरीत कोई कार्य न ही करता है और न ही कर सकता है।

Q. क्या परमात्मा किसको अधिक देता है और किसको कम? या उसका भण्डारा समान रूप से सब के लिए खुला रहता है, जो जितना चाहे उतना ले?

परमात्मा ज्ञान-गुण-शक्तियों का सागर है, उनका ज्ञान-गुण-शक्तियों का भण्डारा सदा समान रूप से सबके लिए खुला है, लेकिन लेना हर आत्मा का अपना कार्य है और हर आत्मा ड्रामा के पार्ट, अपनी आवश्यकता और अपनी शक्ति के अनुसार उसको लेती है। ये विविधता पूर्ण विश्व-नाटक है, जिसके अनुसार आत्माओं के लेने में भिन्नता है। परमात्मा की महिमा तो सागर या सूर्य से की जाती है, जिनकी सर्व शक्तियाँ अखुट हैं और सबके लिए बिना किसी भेदभाव के खुली हैं। बाबा ने अनेक बार कहा है - सूर्य किसको देखकर नहीं किसको देता है, उसकी तो किरणे समान रूप से सबके लिए फैलती रहती हैं।

''भगवान आकर बच्चों को विश्व के मालिकपने का वर्सा देते हैं। तुम पुरुषार्थ से विश्व के मालिक बनते हो। बाप है विश्व का रचता। ... तुम बाप से सुख का वर्सा लेते हो, बाकी सबको शान्तिधाम का वर्सा मिल जायेगा। अब तुम दुख का खाता खलास कर सुख का खाता जमा करते हो।'' सा.बाबा 10.5.08 रिवा.

Q. क्या परमपिता परमात्मा का स्वरूप परिवर्तन होता है, कभी प्यार का सागर हो, कभी न हो, कभी धर्मराज के रूप में हो ... ? अर्थात् क्या उसका रूप परिवर्तन होता है या वह सदा एकरस है, हमको अपनी भावना और कर्मों अनुसार अनुभव होता है ?

नहीं अर्थात् परमात्मा का रूप कभी परिवर्तन नहीं होता है, वह सदा एकरस है। परमात्मा इस विश्व-नाटक का पूर्ण ज्ञाता है, इसलिए वह इस विश्व-नाटक की किसी भी घटना या दृश्य से प्रभावित नहीं होता है। ज्ञान का सागर है और इस विश्व-नाटक का पूर्ण ज्ञाता होने के कारण परमात्मा इसके हर दृश्य और घटना को साक्षी-दृष्टा होकर देखता है, उनसे प्रभावित नहीं होता है, इसलिए उसका हर आत्मा के प्रति समान प्यार है और उसकी सर्व शक्तियाँ सर्व आत्माओं के लिए सदा-सर्वदा, समान रूप से बरस रहीं हैं। आत्मायें अपनी भावना, पुरुषार्थ और ड्रामा के पार्ट अनुसार उनको अनुभव करती हैं और उसका लाभ उठाती हैं।

Q. क्या हम परमात्मा की कोई मदद करते हैं या परमात्मा को हमसे किसी मदद की आपेक्षा है ?

नहीं। परमात्मा सम्पूर्ण, सर्वशक्तिवान, निराकार है। हम उनकी क्या मदद कर सकते हैं, उनको क्या चाहिए, जो हम उनकी मदद करेंगे। वही हमारी मदद करते हैं। उनकी मदद के लिए गायन है - तुम उनकी तरफ एक कदम उठाओगे तो परमात्मा तुम्हारे तरफ सौ कदम उठायेगा। अंग्रेजी में भी कहा गया है - God help them who help themselves. परमात्मा को हमसे कोई अपेक्षा नहीं है, वह इस धरा पर नई दुनिया की स्थापना के लिए अवतरित होता है, जिस दुनिया में हम आत्मायें सुख भोगती हैं परन्तु उस सुख को आत्माओं को कैसे दे, इसके लिए इस विश्व-नाटक में कर्म और फल का विधि-विधान है, उस विधि-विधान अनुसार वह हमसे ऐसे कर्म कराता है, जिससे हमारा भाग्य बनता। जो जितना करता है, उस अनुसार वहाँ फल पाता है।

''शिवबाबा ने तुमको अपना बनाया है और तुम शिवशक्तियों ने फिर शिवबाबा को अपना बनाया है। ... हम उनके वारिस हैं, उनके साथ मददगार हैं, उनसे वर्सा पाने के लिए। ... वारिस अक्षर फेमिली से लगता है।'' सा.बाबा 15.2.08 रिवा.

Q. परमात्मा मनुष्य सृष्टि का ही बीजरूप है या सर्व योनियों की आत्माओं का बीजरूप है ? यदि मनुष्य आत्माओं का ही बीजरूप है तो अन्य योनि की आत्माओं का बीजरूप कौन है ?

Q. परमपिता परमात्मा सर्वात्माओं का बाप है या केवल मनुष्यात्माओं का बाप है ?

वास्तव में परमात्मा सर्वात्माओं का बाप है क्योंकि वह सर्वात्माओं को मुक्ति-जीवनमुक्ति देता है और वह निराकार है, इसलिए उसके लिए किसी योनि विशेष की बात नहीं उठती है परन्तु मनुष्यात्मायें सर्व आत्माओं में श्रेष्ठ, बुद्धिमान ओर चिन्तनशील है, इसलिए उससे सर्व आत्मायें प्रभावित होती है, सबका आधार मनुष्य पर होता है अर्थात् जब मनुष्य श्रेष्ठ बनता है तो सभी श्रेष्ठ बनते हैं, विश्व श्रेष्ठ बन जाता है। इसलिए परमात्मा मनुष्य तन में आकर मनुष्यों को पावन बनाता है, सुधारता है, जिससे सर्व आत्मायें स्वत: सुधर जाती हैं और मुक्ति-जीवनमुक्ति को पाती हैं, इसलिए उसको मनुष्यात्माओं का बाप कहा जाता है। वास्तव में परमात्मा सर्वात्माओं का बाप है, प्रजापिता ब्रह्मा सर्व मनुष्यात्माओं का बाप है, सर्व धर्मों की आत्माओं का पितामह है। परमात्मा मनुष्य तो क्या जड़ तत्वों को भी पावन बनाने वाला है।

Q. सभी आत्मायें परमात्मा को याद करती हैं और उनसे मिलना चाहती हैं तो उनसे मिलने का विधि-विधान क्या है ?

जो आत्मायें परमात्मा से मिलना चाहती हैं, जो जरूर कभी वे परमात्मा से मिली हैं, इसलिए फिर मिलने की इच्छा है। अब आत्मा, परमात्मा के कब और कहाँ मिल सकती है, इस बात का भी ज्ञान आवश्यक है। आत्मा और परमात्मा परमधाम में एक साथ रहते हैं परन्तु परमधाम में आत्मा को न देह है, इसलिए वहाँ कोई संकल्प भी नहीं है, इसलिए मिलने की कोई अनुभूति सम्भव नहीं है। मिलने की अनुभूति और उसका सुख आत्मा को साकार देह के साथ ही हो सकता है। परमात्मा जब साकार में ब्रह्मा तन में आते हैं, उस समय जो उनसे मिलते हैं, वही यथार्थ मिलन का अनुभव है। यही यथार्थ मिलन है और इसी मिलन को आत्मायें भक्ति मार्ग में याद करती है, इसका ही शास्त्रों आदि में गायन है।

''परमधाम में हैं ही निराकारी आत्मायें, बिन्दी। बिन्दी, बिन्दी से तो मिल न सके। तो शिवबाबा से कैसे मिलेंगे। इसलिए यहाँ समझाया जाता है - हे आत्माओं, तुम अपने आत्मा समझ बुद्धि में यह रखो कि हम शिवबाबा से मिलते हैं। ... शिवबाबा इसमें आकर ज्ञान सुनाते हैं।''

सा.बाबा 6.10.06 रिवा.

''बाबा तो बहुत बिज़ी रहते हैं। कहते हैं - मैं आया हूँ पतित दुनिया को पावन बनाने। तो मुझे कितने रूप धारण करने होते हैं। बहुतों की ज्योति जगाता हूँ।'' सा.बाबा 6.5.08 रिवा.

Q. शिवबाबा ब्रह्मा बाबा के ही अन्तिम जन्म में आकर मिलते हैं या सर्वात्माओं के अन्तिम जन्म में आकर मिलते हैं?

वास्तव में परमात्मा ब्रह्मा बाबा के अन्तिम जन्म के अन्तिम समय में आते हैं और उनसे मिलते हैं। ब्रह्मा बाबा के साथ अन्य आत्मायें भी उनको पहचानते और मिलती हैं। विश्व-नाटक के विधि-विधान अनुसार हर आत्मा अपने अन्तिम जन्म के अन्त में ही परमात्मा को पहचानती है, ज्ञान में आती है और उनसे मिलती है। हर एक आत्मा मिलने का समय और पार्ट अलग-अलग है। परमात्मा हर आत्मा का कल्याण करते हैं परन्तु हर एक के कल्याण करने का विधि-विधान अलग-अलग है।

Q. परमात्मा सूक्ष्म सृष्टि रचते हैं या ड्रामा अनुसार रच जाती है क्योंकि परमात्मा को ब्रह्मा तन में प्रवेश होने से पहले शरीर ही नहीं तो रचने का संकल्प कैसे आयेगा और रचेंगे भी कैसे?

परमात्मा का ब्रह्मा तन में प्रवेश होना और ब्रह्मा का सूक्ष्म शरीर सूक्ष्मवतन में प्रगट होना दोनों क्रियायें साथ-साथ ही होंगी और वहीं से परमात्मा का कर्तव्य आरम्भ हो जायेगा।

''कहते हैं ब्रह्मा का दिन है ज्ञान और ब्रह्मा की रात है भक्ति। ... परमपिता परमात्मा ही पहले-पहले सूक्ष्म सृष्टि रचते हैं। सूक्ष्म वतन में ब्रह्मा दिखाते हैं।''

सा.बाबा 7.11.07 रिवा.

Q. परमात्मा आकर भक्ति का फल देते हैं या ड्रामा के विधि-विधान अनुसार कर्मों का फल स्वत: मिलता है? भक्ति का फल क्या है और परमात्मा कब, कहाँ और कैसे वह फल देते हैं?

भक्ति का फल है ज्ञान, ज्ञान से मिलती है - मुक्ति-जीवनमुक्ति, जो परमात्मा सभी आत्माओं को संगमयुग पर ही आकर देते हैं। भक्ति मार्ग में साक्षात्कार आदि सब भक्तों को नवधा भक्ति से ड्रामानुसार ही होता है, उसके लिए परमात्मा को आने की आवश्यकता नहीं है। परमात्मा का पार्ट पतितों को पावन बनाने का, सर्व को गति-सद्गति देने का है, जो संगम युग पर ही होता है। भक्ति में भी जो फल मिलता है, वह भक्त परमात्मा के नाम पर पाते हैं, इसलिए उसको परमात्मा के द्वारा दिया हुआ ही कहेंगे परनतु होता सब ड्रामा अनुसार ही है।

''मैं भक्ति मार्ग में भी इन्श्योरेन्स करता हूँ। ईश्वर अर्थ मनुष्य दान करते हैं। ... हर कर्म का अच्छा या बुरा फल मिलता है, तो कितना बड़ा इन्श्योरेन्स हुआ। जो जैसे कर्म करते हैं, उस अनुसार फल मिलता है। ... बनी बनाई बन रही ... जो कुछ होता है, सब ड्रामा में नूँध है, इसको साक्षी होकर देखो।'' सा.बाबा 30.5.08 रिवा.

Q. क्या परमात्मा भक्ति मार्ग में भक्तों को साक्षात्कार कराता है और यदि कराता है तो कैसे और यदि नहीं तो भक्तों को साक्षात्कार कैसे होता है? भक्तों को यदि परमात्मा साक्षात्कार नहीं कराता है तो वह क्यों कहते हैं कि मैं ही भक्तों को साक्षात्कार कराता हूँ?

वास्तव में परमात्मा का पार्ट संगमयुग पर ही चलता है, जब वह ब्रह्मा तन में आता है। परमधाम में न कोई संकल्प उठता है और न ही वहाँ से कोई कर्म होता है। परन्तु संगमयुग पर जब परमात्मा आते हैं तो वे सभी भक्तों की ये मनोकामना पूर्ण करते हैं, जिस अनुभव और स्मृति के आधार पर भक्ति मार्ग में वे परमात्मा को याद करती हैं और ड्रामा तथा उनकी भावना अनुसार उनको साक्षात्कार होता है, इसलिए बाबा कहते हैं कि मैं ही भक्तों को भक्ति मार्ग में साक्षात्कार कराता हूँ अर्थात् परमात्मा के नाम से भक्ति मार्ग में काम होता है। बिना तन के आत्मा कोई कर्म कर नहीं सकती तो भक्ति मार्ग में साक्षात्कार कैसे करायेगा। संगमयुग पर भी साकार ब्रह्मा तन में प्रवेश करते हैं, सूक्ष्म वतन में ब्रह्मा के सम्पूर्ण स्वरूप को इमर्ज करते हैं, तब ही स्थूल और सूक्ष्म शरीर द्वारा स्थापना का सारा कर्तव्य करते हैं। बाबा का हर शब्द का अपना भाव-अर्थ होता है, जिसको समझने का हमको पुरुषार्थ करना होता है और हम भी अपनी बुद्धि और अपने पुरुषार्थ अनुसार नम्बरवार ही समझते हैं। बाबा ने अनेक बार कहा है - भक्ति में साक्षात्कार मैं कराता हूँ और अनेक बार कहा है कि ड्रामा में साक्षात्कार की भी नूँध है, जो समय पर अपने आप होता है। अब हमको निर्णय करना है कि दोनों महावाक्यों का क्या महत्व है?

Q. क्या परमात्मा में देहभान है? यदि नहीं तो क्या कोई भी आत्मा बिना देहभान के इस विश्व-नाटक में पार्ट बजा सकती है, तो परमात्मा कैसे पार्ट बजाते हैं?

देह-भान के बिना इस विश्व-नाटक में पार्ट बजाना सम्भव नहीं है, इसलिए हर पार्ट बजाने वाली आत्मा में देह-भान या देहाभिमान होता ही है। परन्तु परमात्मा विशेष आत्मा है, इसलिए वह बिना देहभान के ड्रामा अनुसार पार्ट बजाता है। वास्तविकता पर हम विचार करें तो परमात्मा में देहभान नहीं है परन्तु देह का ज्ञान अवश्य है, जिसके आधार पर वह ब्रह्मा तन में आकर पार्ट बजाता है और देह की दुनिया का सारा ज्ञान देता है। देह और आत्मा का क्या सम्बन्ध है और क्या होना चाहिए, उसके विषय में भी पूरा ज्ञान देता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि परमात्मा में देह-ज्ञान है, देवताओं में देह-भान है और मनुष्यों में देहाभिमान होता है, जिसके आधार पर तीनों अपना-अपना पार्ट इस विश्व-नाटक में बजाते हैं।

Q. क्या परमात्मा कल्प के पुरुषोत्तम संगमयुग के अतिरिक्त किसी समय आता है या आ

सकता है ?

विवेक कहता है नहीं। बाबा ने अनेक बार कहा है - मैं कल्प के संगमयुग पर ही आता हूँ, अन्य किसी भी समय पर नहीं। संगमयुग पर ही हमको सत्य ज्ञान देकर और राजयोग से पतितों को पावन बनाकर घर वापस ले जाना होता है और सतयुग अर्थात् स्वर्ग की स्थापना और कलियुग अर्थात् पुरानी दुनिया नर्क का विनाश करके नये चक्र को आरम्भ करना होता है। बाबा ने कहा है मेरा पार्ट ही संगमयुग पर है।

''वे हैं विनाश काले विपरीत बुद्धि। यह भी ड्रामा बना हुआ है। ड्रामा को बुद्धि मे बहुत अच्छी रीति रखना है। यह बेहद का ड्रामा रिपीट होता है। ... बाप खुद भी कहते हैं - मैं भी ड्रामा के बन्धन में हूँ। दुख तो भारतवासियों पर बहुत आते रहते हैं परन्तु ऐसे थोड़ेही घड़ी-घड़ी अवतार लेकर छुड़ाऊंगा। मैं एक ही बार आता हूँ।''

सा.बाबा 19.5.08 रिवा.

Q. अनेक दुर्घटनाओं को हम विचार करें तो प्रश्न उठता है कि क्या परमपिता परमात्मा हमको उन दुर्घटनाओं से बचा सकता है या नहीं ? यदि बचा सकता है तो क्यों नहीं बचाया ? यदि वह हमको उनसे नहीं बचा सकता है तो हम परमात्मा को क्यों याद करें ?

आत्मिक स्वरूप में स्थित आत्मा स्वत: ही सर्व दुखों से, सर्व अप्रिय घटनाओं से मुक्त होती है और आत्मिक स्वरूप में स्थित होने में सफलता प्राप्त करने के लिए अर्थात् आत्मिक स्वरूप में स्थित होने के लिए परमात्मा की याद के अतिरिक्त और कोई उपाय नहीं है। किसी आत्मा के दुख-दर्द या दुर्घटना की यथार्थता के विषय में परमात्मा ने स्पष्ट ज्ञान दिया है कि अनेक आत्माओं के अनेक आत्माओं के साथ सारे कल्प के अर्थात् जन्म-जन्मान्तर के अनेक प्रकार के हिसाब-किताब हैं, जो पूरे होने ही हैं। उनमें परमात्मा कुछ नहीं करता है और न ही कर सकता है क्योंकि इससे ड्रामा का अनादि विधान टूटता है। आत्मिक स्वरूप में स्थित आत्मा स्वत: और सहज ही उनको पार कर लेती है। परमात्मा न्यायकारी, समदर्शी, विश्व-नाटक का पूर्ण ज्ञाता और विश्व-नाटक का साक्षी दृष्टा है। बाबा ने अनेक बार कहा है - ये विश्व-नाटक अर्थात् ड्रामा बड़ा एक्यूरेट बना हुआ है, यह सत्य, न्यायपूर्ण और कल्याणकारी है।

इस विश्व-नाटक में ड्रामा के पार्ट, समय, स्थान और व्यक्तियों के साथ आत्माओं के हिसाब-किताब का बड़ा सुन्दर सन्तुलन है, जिसके कारण न कोई घटना टल सकती है, न टाली जा सकती है और न ही परमात्मा ड्रामा के विधि-विधान में कोई हस्तक्षेप करता है। परमात्मा तो विश्व-नाटक का ज्ञान देता है और सतोप्रधान होने का रास्ता बताता है, जिसको समझकर यथार्थ पुरुषार्थ करके आत्मायें सतोप्रधान बनती है। सतोप्रधान आत्मा को कब कोई दुख-दर्द हो नहीं

सकता। यथार्थ ज्ञानी आत्मा कब किसी दुर्घटना या दुख-दर्द के समय बिचलित नहीं होता है।

Q. क्या परमात्मा हर आत्मा के सभी कर्मो को देखता है और उसके अनुसार उनके अच्छे-बुरे कार्मं के फल को निश्चित करता है ?

Q. क्या परमात्मा सर्वात्माओं के दिलों को जानता है या जानने की प्रयत्न करता है ?

परमात्मा सर्वशक्तिवान, सर्वज्ञ, ज्ञान का सागर है। वह विश्व की सर्व बातों को और सर्व आत्माओं की सर्व बातों को जानता भी है और जब चाहे तब जान भी सकता है क्योंकि वह सर्वशक्तिवान, सर्वज्ञ है परन्तु वह ज्ञान का सागर है अर्थात् विश्व-नाटक का पूर्ण ज्ञाता है। यह अनादि-अविनाशी नाटक है, जिसमें हर आत्मा के कर्म और कर्मफल का अनादि-अविनाशी विधि-विधान नूँधा हुआ है, जिसके अनुसार हर आत्मा को उसके सेकेण्ड-सेकेण्ड के कर्म का फल स्वतः मिलता ही है। इसलिए परमात्मा को किसके दिलों को, किसके कर्मों को जानने की आवश्यकता नहीं है और न ही वह जानने का कोई प्रयत्न करता है। किसी आत्मा के अच्छे-बुरे कर्मों के फल निश्चित करने में भी परमात्मा का कोई सीधा सम्बन्ध नहीं है। वह आकर कर्मों का ज्ञान देता है, श्रेष्ठ कर्म करने का विधि-विधान बताता है, उस अनुसार जो जैसा करता है, वह उस अनुसार फल पाता है। परमात्मा को उसकी श्रीमत अनुसार याद करने से आत्मा की शक्ति बढ़ती है, वह श्रेष्ठ कर्म करने में समर्थ होती है, इसलिए हर आत्मा को उसको याद करने का पुरुषार्थ करना ही चाहिए। यहाँ ये बात विशेष महत्वपूर्ण है कि परमात्मा को भय से याद करने की अपेक्षा प्यार से याद करना अधिक श्रेष्ठ है। परमात्मा से प्राप्त हुई प्राप्तियों को याद करने से, परमात्मा को प्यार से याद करने से आत्मा वर्तमान में भी अतीन्द्रिय सुख पाती है तो भविष्य के लिए भी सुख का खाता जमा करती है।

Q. भक्ति मार्ग में भक्तों को साक्षात्कार होता है, उसके लिए बाबा कहते हैं मैं ही कराता हूँ, कभी बाबा कहते हैं साक्षात्कार भी ड्रामा में नूँध है, उस अनुसार होता है, तो सत्य क्या है ? यदि बाबा कराता है तो वह यहाँ आता है या परमधाम से ही कराता है और यदि परमधाम से कराता है तो क्या आत्मा को परमधाम में संकल्प उठ सकता है, वहाँ से आत्मा कर्म कर सकती है क्योंकि बाबा यह भी कहता है - परमधाम में संकल्प की भी गम नहीं है अर्थात् परमधाम में संकल्प और कर्म नहीं होता है। अब यथार्थ क्या है ?

Q. भक्ति मार्ग में परमात्मा स्वयं साक्षात्कार कराते हैं या ड्रामानुसार होता है ?

''यह तो बच्चों को समझाया गया है कि निराकार, साकार के बिगर कोई कर्म कर नहीं सकते, पार्ट बजा नहीं सकते।'' सा.बाबा 23.9.06 रिवा.

''नम्बरवार आत्मायें वहाँ से आती रहती हैं। कोई किसी को भेजते नहीं हैं। यह तो कहने में

आता है लेकिन यह ऑटोमेटिकली ड्रामा चलता रहता है। अपने टाइम पर धर्म स्थापन करने आना ही है।'' सा.बाबा 13.5.08 रिवा.

Q. भक्तिमार्ग में परमात्मा साक्षात्कार कराता है या ड्रामानुसार होता है। यदि परमात्मा साक्षात्कार कराता है तो वह यहाँ साकार में आता है या परमधाम से ही साक्षात्कार कराता है। यदि यहाँ आता है तो कैसे आता है और किसमें आता है और यदि परमधाम से ही कराता है तो क्या परमधाम में आत्मा कर्म कर सकती है? यह सब कैसे होता है?

परमधाम में न संकल्प उठ सकता है और न वहाँ से कोई कर्म हो सकता है। परमात्मा के लिए भी ये नियम-मर्यादा है। बाबा ने अनेक बार कहा है कि ये सब ड्रामा में नूँध है, उस अनुसार भक्तों को साक्षात्कार होता है परन्तु भक्त भगवान के नाम पर भक्ति करते हैं, इसलिए कहा जाता है कि परमात्मा साक्षात्कार कराते हैं। परमात्मा बहुत सी बातें भक्तों और बच्चों की भावना को रखने के लिए भी ऐसी बातें कहते हैं।

''परमात्मा आनन्द, ज्ञान, प्रेम का सागर है। हमको मालूम है, तब हम उनकी महिमा करते हैं ... कोई प्रश्न उठायेगा कि आप कहते हो कि इन्कारपोरियल वर्ल्ड में तो दुख-सुख से न्यारी अवस्था रहती है, तो वहाँ सुख, आनन्द, प्रेम कहाँ से आया? वह सुख का सागर जब इस साकार सृष्टि में आते हैं, तब आकर सुख देते हैं। वहाँ तो सुख-दुख से न्यारी अवस्था में रहते हैं।... वह आकर इस दुख की दुनिया को बदलाकर आनन्द, सुख, प्रेम की दुनिया बनाते हैं।'' सा.बाबा 11.10.06 रिवा.

''निर्वाण धाम में सुख-दुख की कोई फीलिंग नहीं रहती। सुख-दुख का पार्ट तो इस कारपोरियल वर्ल्ड में चलता है।'' सा.बाबा 11.10.06 रिवा.

''शिवबाबा का भक्ति मार्ग में भी पार्ट है आर ज्ञान मार्ग में भी पार्ट है।... 84 के चक्र में सबसे नम्बरवन पार्ट है बाबा का। शिवबाबा का तो सबसे बड़ा पार्ट है। **Q.** शिवबाबा भक्ति मार्ग में कैसे पार्ट बजाते हैं अर्थात् क्या किसी के शरीर में प्रवेश करते हैं या किसी मूर्ति में प्रवेश करते हैं, क्या करते हैं और कैसे करते हैं?'' सा.बाबा 9.3.07 रिवा.

Q. क्या शंकर या परमात्मा विनाश कराता या विनाश की प्रेरणा देता है?

नहीं। परमात्मा या शंकर न विनाश कराते हैं और न ही विनाश की प्रेरणा देते हैं। परमात्मा ज्ञान का सागर है, वह इस ड्रामा का ज्ञान देता है और नई दुनिया की स्थापनार्थ आत्मा को पावन बनने का रास्ता बताता है। विश्व-नाटक के नियमानुसार हर चीज नई से पुरानी और समय पर विनाश को अवश्य पाती है, परमात्मा का कार्य है नई दुनिया सतयुग की स्थापना करना।

त्रिलोक एवं कल्प-वृक्ष

बाबा ने हमको अभी जो तीनों लोकों का ज्ञान दिया है, जिससे हमको इस विश्व-नाटक की यथार्थता और अपने घर परमधाम का यथार्थ रीति पता चला है। मुक्ति-जीवनमुक्ति का क्या महत्व है, कब और कैसे प्राप्त होती है, वह सब जानकारी भी मिली है, जिससे हमको पुरुषार्थ करना सहज हो गया है।

Q. ब्रह्मलोक है क्या ?

ब्रह्म लोक आत्माओं के रहने का स्थान अर्थात् आत्माओं का घर अर्थात् आत्माओं का विश्रामग्रह है, जहाँ आत्माये और परमात्मा रहते हैं और वहाँ से इस साकार लोक रूपी रंगमंच पर पार्ट बजाने आते हैं और फिर पार्ट पूरा करके वापस घर जाते हैं।

Q. क्या ब्रह्मलोक और सूक्ष्म वतन, भूमण्डल या आकाश तत्व के ऊपर की तरफ है या भूमण्डल के ऊपर चारो तरफ है ?

यह भूमण्डल अर्थात आकाश तत्व सूक्ष्म वतन से आवृत है और सूक्ष्म वतन, ब्रह्मलोक अर्थात् ब्रह्म-तत्व से आवृत है, ब्रह्म तत्व असीम है। इस प्रकार हम देखें तो सूक्ष्मवतन और ब्रह्मलोक इस भूलोक के चारो तरफ हैं। परन्तु पृथ्वी की आकर्षण शक्ति के कारण पृथ्वी पर खड़ा मनुष्य उनको अपने ऊपर की ओर अनुभव करता है अर्थात् उसकी स्मृति की उड़ान ऊपर की ओर जाती है।

Q. क्या आत्मायें ब्रह्माण्ड में शिवबाबा के आसपास चारो ओर समस्त ब्रह्माण्ड में रहती हैं या ब्रह्माण्ड के एक विशेष भाग में ही रहती हैं ?

हमारे विचार से आत्मायें ब्रह्माण्ड में एक के नीचे एक होकर नहीं लटकी हैं और न किसी एक कोने में रहती हैं बल्कि आत्मायें समस्त ब्रह्माण्ड में एक-दूसरे की आकर्षण शक्ति से स्थित हैं। हर धर्म-मठ-पंथ, समूह की आत्मायें एक-दूसरे के निकट अपने समूह में अवश्य रहती हैं। मनुष्यात्मायें परमात्मा के चारो ओर नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार निकट या दूर रहती हैं।

ज्ञान सागर परमात्मा ने आत्माओं और ब्रह्माण्ड की तुलना आकाश मण्डल और तारों से की है। जैसे तारे सारे आकाश में विद्यमान हैं, भल हमारी दृष्टि की सीमा होने के कारण वे दिन में हमको दिखाई नहीं देते हैं। जब कभी पूर्ण सूर्य-ग्रहण होता है तो दिन में भी सारे आकाश में तारे दिखाई पड़ते हैं। ऐसे ही सारे ब्रह्माण्ड में आत्मायें रहती हैं। इस बात को समझाने के लिए ही ब्रह्माण्ड में मनुष्यात्माओं का झाड़ नक्शे मात्र दिखाया गया है परन्तु उसकी स्थिति इससे

भिन्न है।

यद्यपि आत्मा अति सूक्ष्म है इसलिए उसको रहने के लिए कोई अधिक स्थान की आवश्यकता नहीं है परन्तु हर आत्मा में अपनी पवित्रता की शक्ति है और उसकी अपनी आकर्षण शक्ति है, जो आत्माओं को एक-दूसरे से निकट या अलग रखती है। इसलिए आत्मायें ब्रह्माण्ड में भी एक-दूसरे के साथ चिपक कर न रहकर दूर-दूर सारे ब्रह्माण्ड में रहती हैं।

''हर एक आत्मा अपना-अपना पार्ट बजाकर फिर जब परमधाम जायेंगी तो अपनी-अपनी जगह पर जाकर खड़ी रहेगी। अपने-अपने धर्म में अपनी जगह पर नम्बरवार खड़े होंगे, फिर नम्बरवार नीचे आना है। ... निराकारी दुनिया में आत्माओं की बहुत छोटी जगह होगी, इसलिए इन चित्रों में दिखाया गया है। यह बना-बनाया नाटक है। ... मनुष्य जब तक ज्ञान को पूरा नहीं समझते हैं तब तक अनेक प्रश्न पूछते हैं। ज्ञान है तुम ब्राह्मणों के पास। ... बाप बहुत सहज करके समझाते हैं।'' सा.बाबा 1.6.04 रिवा.

Q. मूलवतन में आत्माओं का झाड़ ऐसा ही है, जैसा चित्रों में दिखाया है या ये समझाने के लिए नक्शेमात्र है। इस चित्र और परमधाम की वास्तविकता में कोई अन्तर है?

बाबा ने कहा है कि ये चित्र तुम्हारे नक्शे हैं, जिससे तुम स्वयं भी समझ सकते हो और दूसरों को भी समझा सकते हो। ये चित्र तो बाबा ने नक्शेमात्र समझाने के लिए बनवाया है, वास्तविकता इससे भिन्न है, जैसे ऊपर स्पष्ट किया गया है।

अभी जैसे सारे भूमण्डल पर जीवात्मायें रहती हैं वैसे ही शरीर छोड़कर सारे ब्रह्माण्ड में आत्मायें स्थित हो जायेंगी। अभी सारे विश्व की स्थिति देखें तो अनुभव में आता है कि हर धर्म के अपने-अपने भूभाग हैं, जिनमें प्रधानता किसी धर्म-विशेष की आत्माओं की ही है। बहुत थोड़ी आत्मायें एक-दूसरे के साथ या बीच में रहती हैं। हर देश और नगर में भी सभी धर्म वालों की अपनी-अपनी कालोनियां हैं। जीवात्मायें पृथ्वी के चारो ओर हैं, ऐसे ही ब्रह्माण्ड में भी चारो ओर आत्मायें रहेंगी या रहती होंगी।

त्रिमूर्ति के चित्र के लिए भी बाबा ने कहा है - विष्णु का चित्र अन्त में होना चाहिए परन्तु अन्त में देने से शोभेगा नहीं, इसलिए ब्रीच में दिखाया है। ब्रह्मा द्वारा स्थापना, शंकर द्वारा विनाश फिर विष्णु द्वारा पालना गाई हुई है। बाबा ने यथार्थता, चित्र की शोभा और समझने-समझाने की सुविधा तीनों को ध्यान में रखकर चित्र बनवाये हैं। पढ़ाई में भी जब विश्व का नक्शा दीवाल पर टांगते हैं तो दिशाओं को समझाने के समय कहते हैं कि उत्तर ऊपर में है और दक्षिण नीचे है तो क्या उत्तर ऊपर और दक्षिण नीचे है? ये तो समझाने के लिए कहा जाता है, उसका

स्पष्टीकरण अलग से दिया जाता है, जो उससे भिन्न होता है।

''बच्चों को चक्र का राज़ भी बताया है। सिजरा कैसे बनता है। आत्माओं का भी सिजरा होता है। उसको फिर रुहानी सिजरा कहेंगे। ... ब्रह्माण्ड में पहला नम्बर है शिवबाबा, फिर ब्रह्मा-विष्णु-शंकर, फिर हैं लक्ष्मी-नारायण, उनका घराना।''

सा.बाबा 14.5.08 रिवा.

''आत्माओं का झाड़ है। आगे चल शायद छोटी छोटी बिन्दियों का झाड़ बनाना पड़े और यह केन्सिल करना पड़े। चित्रों में भी दिन प्रतिदिन करेकन करते, बदलते जायेंगे जैसे बाबा सूक्ष्म वतन के लिए समझाते थे। अब बाबा क्या कहते हैं कि वह है नहीं ... दिन प्रति दिन करेक्शन होती जाती।''
सा.बाबा 10.8.69 रिवा.

''ड्रामा अनुसार दिन-प्रतिदिन ज्ञान की प्वाइन्ट्स गुह्य होती जाती है, तो चित्रों में भी चेन्ज होगी। ... बाप कहते हैं - सब बातें पहले ही थोड़ेही समझाई जाती हैं। बाप ज्ञान का सागर है तो ज्ञान देते ही रहेंगे, करेक्शन होती रहेगी। पहले से ही थोड़ेही बता देंगे, फिर तो आर्टिफिशियल हो जाये। अचानक इन्तफाक आदि होते रहेंगे, फिर कहेंगे ड्रामा।... ड्रामा में जो हुआ सो राइट, बाबा ने भी जो कहा सो ड्रामा अनुसार कहा। ड्रामा में मेरा पार्ट ऐसा है।''

सा.बाबा 24.10.01 रिवा.

Q. सूक्ष्म वतनवासी ब्रह्मा-विष्णु-शंकर का क्या अस्तित्व है? क्या सूक्ष्म वतनवासी ब्रह्मा विष्णु शंकर की तीन आत्मायें ब्रह्मलोक में है, जैसे ब्रह्मलोक के चित्र में आत्माओं के झाड़ में दिखाई गई हैं - यथार्थ क्या है?

Q. क्या सूक्ष्म वतनवासी ब्रह्मा-विष्णु-शंकर की अपनी आत्मायें हैं?

यह भी समझाने के लिए दिखाया गया है। बाबा ने अनेक बार कहा है कि सूक्ष्म वतन में ब्रह्मा, विष्णु, शंकर की कोई आत्मायें नहीं है क्योंकि उनका अलग से स्वतन्त्र चेतन अस्तित्व नहीं है, ये तो समझाने के लिए बाबा ने इमर्ज किया है। परमात्मा सहित जो भी आत्मायें मूलवतन में हैं, सबका इस सृष्टि रंगमंच पर पार्ट चलता है परन्तु ब्रह्मा-विष्णु-शंकर का अपना कोई स्वतन्त्र पार्ट नहीं है। ये तो परमात्मा तीनों कर्तव्यों की अभिव्यक्ति मात्र है। बाबा ने कहा भी है - ब्रह्मा ही विष्णु बनते हैं और शंकर का कोई पार्ट नहीं है, ये विनाश के कर्तव्य का प्रतीक दिखाया गया है।

Q. सूक्ष्म वतन में सभी के सूक्ष्म शरीर हैं या केवल एक ब्रह्मा बाबा का ही है?

विवेक कहता है कि जब ब्रह्मा का सूक्ष्म शरीर सूक्ष्मवतन में है तो सभी जीवात्माओं के भी

सूक्ष्म शरीर होने ही चाहिए। इस विषय में बाबा ने भी कहाँ-कहाँ मुरलियों में कहा है।

Q. क्या सूक्ष्म शरीर से किये गये कर्मों का प्रभाव भी आत्मा पर पर पड़ता है और उसकी शक्ति में कोई परिवर्तन होता है ?

सूक्ष्म या स्थूल शरीर दोनों से आत्मा जो भी कर्म करती है, उसका प्रभाव उसकी स्थिति पर पड़ता है और उसका फल उसको मिलता है क्योंकि परमात्मा को छोड़कर अन्य किसी आत्मा का कोई भी कर्म निष्फल नहीं होता है। साकार ब्रह्मा बाबा जो साकार से अव्यक्त हुए हैं, उनके विषय में भी सन्देशियों के सन्देश सुनें तो इस बात की पुष्टि होती है। सन्देशियां, जिन्होंने बाबा के अव्यक्त होने के समय सूक्ष्मवतन में बाबा को देखा है और अभी जो देखती हैं, उनमें अन्तर दिखाई देता है अर्थात् ब्रह्मा बाबा का रूप पहले की अपेक्षा अभी अधिक चमकीला, तेजस्वी दिखाई देता है। बाबा के हाव-भाव में भी अन्तर दिखाई देता है अर्थात् अभी बाबा पहले की अपेक्षा अधिक साक्षी हो गया है, जो बाबा की मुरलियों से भी स्पष्ट होता है।

''स्टूडेण्ट्स के साथ टीचर का कनेक्शन तब तक है, जब तक फाइनल पेपर हो। रिवाइज कोर्स के लिए टीचर हर वक्त साथ नहीं रहता है। तो अभी टीचर दूर से ही देख-रेख कर रहे हैं। ... तरस तो आता है लेकिन तरस के साथ-साथ जो सम्बन्ध है, वह सम्बन्ध भी खींचता है। फिर दिल होती है कि अभी-अभी बाबा से छुट्टी लेकर साकार रूप में उन्होंका ध्यान खिंचवायें लेकिन वह साकार रूप का पार्ट पूरा हुआ, इसलिए दूर से ही सकाश देते हैं। ... लाल झण्डी दिखाते थे ना।''

अ.बापदादा 26.6.69

Q. क्या सभी आत्मायें सूक्ष्म शरीर धारण कर सूक्ष्म वतन में जायेंगी ?

हाँ, सभी को सूक्ष्म वतन को पार करना ही है और जब पार करेंगी तो सूक्ष्म शरीर भी अवश्य होगा ही। इसलिए सभी आत्मायें सूक्ष्मवतन में अवश्य जायेंगी। सृष्टि के विधि-विधान अनुसार स्थूल से सूक्ष्म और फिर सूक्ष्म से ही मूल में जाना होता है।

''कर्मातीत अवस्था हो जाये तो यह शरीर न रहे। फिर नया शरीर चाहिए। जब तक नया शरीर नहीं मिले तब तक सूक्ष्म वतन में ठहर जाते हैं।''

सा.बाबा 30.9.69 रिवा.

''ब्रह्मा फरिश्ता बन जाते हैं तो उनका साक्षात्कार होता है। बाकी सारा कारोबार यहाँ स्थूल वतन में चलता है। सूक्ष्मवतन माना साक्षात्कार, वह सिर्फ मनुष्यों को समझाना होता है।''

सा.बाबा 13.11.69 रिवा.

''बाप को जब पहले-पहले नई रचना रचनी होती है तो पहले सूक्ष्मवतन को ही रचेंगे। ...

पहले-पहले तुम वाया सूक्ष्मवतन से नहीं आते हो, सीधे आते हो। अभी तुम सूक्ष्मवतन में आ-जा सकते हो। ... जब तक तुम सम्पूर्ण पवित्र नहीं बने, तब तक तुम ऐसे नहीं कह सकते हो कि हम सूक्ष्मवतन में जा सकते हैं। तुम साक्षात्कार कर सकते हो।''

सा.बाबा 7.9.06 रिवा.

Q. क्या सतयुग-त्रेता-द्वापर-कलियुग में सूक्ष्मवतन होगा ? यदि हाँ तो उसका स्वरूप क्या होगा और यदि नहीं तो क्यों ?

Q. क्या सूक्ष्मवतन सदा रहता है या केवल संगम में ही पार्ट है या साक्षात्कार मात्र है ?

सूक्ष्मवतन सतयुग में भी होगा क्योंकि कभी भी कोई भी तत्व का न विनाश होता है और न ही किसी स्थान का विनाश होता है अर्थात् तत्व और स्थान दोनों ही अविनाशी हैं। विश्व-नाटक में जैसे आत्माओं का पार्ट परिवर्तन होता है, वैसे ही तत्वों का रूप परिवर्तन होता है अर्थात् सूक्ष्म वतन अवश्य होगा परन्तु वहाँ कोई कारोबार नहीं होगा और न ही आत्माओं को उसका ज्ञान होगा।

''आकाश बहुत सूक्ष्म तत्व है। अच्छा उनसे भी ऊपर देवता (B.V.S. सूक्ष्म देवतायें) रहते हैं। वह भी पोलार है। आकाश में बैठे हैं। फिर उनसे भी ऊपर और आकाश (ब्रह्म तत्व) है, उसमें भी आत्माओं के बैठने की जगह है। वह भी आकाश है, जिसको ब्रह्म तत्व कहते हैं। यह तीन तत्व हैं - स्थूल, सूक्ष्म और मूल।''

सा.बाबा 19.12.02 रिवा.

Q. सूक्ष्म वतन क्या है, वहाँ कौन सा तत्व है, जिसके आधार पर सूक्ष्म वतन का अस्तित्व है ?

विवेक कहता है कि सूक्ष्म वतन का अपना कोई स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं है और न ही वहाँ कोई अलग से तत्व है। आकाश तत्व और ब्रह्म तत्व दोनों के संगम पर दोनों तत्वों के मिश्रण से निर्मित क्षेत्र ही सूक्ष्म वतन कहलाता है। जैसे दो रंगों के मिलने से तीसरा रंग बन जाता है, ऐसे ही नीले आकाश तत्व और लाल ब्रह्म महतत्व के मिश्रण से जो रंग और क्षेत्र अस्तित्व में है, वह सूक्ष्मवतन कहलाता है। पावन बनने वाली सूक्ष्म शरीरधारी फरिश्ता आत्मायें सूक्ष्म वतन के ऊपरी भाग में रहती हैं और निकृष्ट आत्मायें आकाश तत्व के साथ वाले क्षेत्र में रहती हैं या वे आकाश तत्व में ही भटकती रहती हैं और समय और पार्ट आने पर पुन: जन्म लेती हैं परन्तु जो पावन बनने वाली जो आत्मायें फरिश्ता रूप धारण करती हैं, वे सूक्ष्मवतन का पार्ट पूरा करके परमधाम जाती हैं। जैसे साकार रूप से फरिश्ता बने ब्रह्मा बाबा। ऐसे ही सभी आत्मायें

सूक्ष्मवतन से होकर ही परमधाम जायेंगी परन्तु हर एक का समय अलग-अलग होगा।

Q. क्या सभी जन्मों के सूक्ष्म फीचर्स, नेगेटिव फार्म में सूक्ष्म वतन में रहते हैं?

नहीं। सूक्ष्म फीचर्स तो हर जीवात्मा के हर जन्म में बनते हैं और एक जन्म में भी समय और स्थिति अनुसार परिवर्तन होते रहते हैं। उस सूक्ष्म शरीर के साथ ही आत्मा एक शरीर छोड़कर दूसरे में प्रवेश करती है। जीवात्मा अपने अन्तिम जन्म के अन्तिम समय के फीचर्स के साथ सूक्ष्म वतन से पार होकर मूलवतन में जाती है और उस सूक्ष्म शरीर के आधार पर ही आत्मा भविष्य जन्म लेती है।

Q. परमधाम शान्ति की दुनिया से आत्मा को इस साकार लोक में लाने का आधार क्या है? परमधाम से आने वाली आत्मा के पहले जन्म के फीचर्स किस आधार पर बनते हैं। क्या सूक्ष्म शरीर जो परमधाम जाते समय होता है, वह सूक्ष्म वतन में विद्यमान रहता है, उसके आधार पर या संस्कार-स्वभाव के कारण जिस मात-पिता के पास जन्म लेना है, उसके आधार पर बनते हैं?

परमधाम जाते समय के फीचर्स एवं स्वभाव-संस्कार और जहाँ जन्म लेना है, उन माता-पिता के फीचर्स एवं स्वभाव-संस्कार मिलकर परमधाम से आने वाली आत्मा के लिए फीचर्स अर्थात् शरीर का निर्माण करते हैं। विश्व-नाटक के पार्ट अनुसार ये पंच तत्व और जहाँ पार्ट है, उन आत्माओं के संकल्प मिलकर आत्मा को परमधाम से नीचे पार्ट बजाने के लिए आकर्षित करते हैं, जिस आकर्षण के कारण आत्मा परमधाम से यहाँ आ जाती है।

''पतित आत्मायें तो मेरे पास मुक्तिधाम में आ न सकें। वह है ही पवित्र आत्माओं का घर। यह है मनुष्यों का घर। यह शरीर बनते हैं 5 तत्वों से, तो 5 तत्व यहाँ रहने के लिए आत्मा को खींचते हैं। पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश, ये पांच तत्व वहाँ नहीं होते। यह विचार सागर मंथन करने की युक्तियाँ हैं।'' सा.बाबा 3.3.04 रिवा.

''हर आत्मा के संस्कार कर्म अपने-अपने हैं। एक जैसे संस्कार हो नहीं सकते। अगर एक जैसे संस्कार हों, फिर तो फीचर्स भी एक जैसे हों। कभी भी एक जैसे फीचर्स नहीं हो सकते हैं। थोड़ा फर्क जरूर होता है।'' सा.बाबा 9.3.04 रिवा.

Q. संगमयुग पर ब्रह्मा से सूक्ष्म शरीर और धर्मपिताओं के सूक्ष्म शरीर के रूप में साक्षात्कार होता है तो दोनों में क्या अन्तर है?

Q. जो भी धर्मपिता ऊपर से आते हैं, उस समय उन्होंने गर्भ से जन्म तो लिया नहीं, फिर भी

उनका साक्षात्कार होता है अर्थात् लोगों को उनके सूक्ष्म रूप का साक्षात्कार होता है - जैसे मोहम्मद के लिए कहते हैं कि कोई फरिश्ता आता था और कुरान की आयतें सुनाकर जाता था, ऐसे उन धर्मपिताओं का साक्षात्कार कैसे होता है ?

Q. निराकार परमपिता परमात्मा कब गर्भ से जन्म नहीं लेते इसलिए उनका सूक्ष्म या स्थूल शरीर नहीं है, इसलिए वे साकार ब्रह्मा बाबा का सम्पूर्ण स्वरूप सूक्ष्मवतन में इमर्ज करते हैं अर्थात् सूक्ष्म रचना रचते हैं और उसमें प्रवेश करके अपना कार्य करते हैं। ऐसे धर्मपिताओं का भी सूक्ष्म शरीर सूक्ष्मवतन में रहता है ? या

धर्मपिता के सूक्ष्म शरीर और जिसमें प्रवेश करते हैं, उनके अन्त समय सम्पूर्ण बनकर अन्त समय परमधाम वापस जाने के समय के सूक्ष्म-शरीरों में बहुत कुछ समानता होती है, जिनको पहचानना भी कठिन होता है। जैसे किन्हीं-किन्हीं जुड़वां बच्चों के शरीर। जैसे आत्मा सूक्ष्म शरीर के बाद मूल में प्रवेश करती है या जाती है वैसे ही आदि समय अर्थात् परमधाम से आते समय हर आत्मा पहले उस सूक्ष्म शरीर में प्रवेश कर, जो सूक्ष्मवतन में विद्यमान होता है, उसमें प्रवेश कर फिर स्थूल (गर्भ में) प्रवेश करती है या धर्म स्थापना के लिए जिस परकाया में प्रवेश करती, उसके आधार पर उनका साक्षात्कार होता है। जैसे पॉजेटिव (Real) से नेगेटिव बनता और नेगेटिव से फोटो बनते, ऐसे ही ये प्रथम शरीर की प्रक्रिया होती है या क्या होता है ? ये विचारणीय है।

शिवबाबा संगम पर आकर सूक्ष्म वतन रचता है अर्थात् शिवबाबा संगम पर आकर सूक्ष्म वतन का ज्ञान देता है, सूक्ष्म वतन में आने-जाने का रास्ता बताता है। परमधाम से आते समय ये क्रिया स्वभाविक होती है, उसका कोई ज्ञान नहीं होता। धर्मपितायें भी स्वभाविक ही प्रवेश होकर अपने धर्म की स्थापना का ज्ञान देते हैं क्योंकि सूक्ष्मवतन का जैसे परमात्मा हमको अभी ज्ञान देते वैसे उनमें ज्ञान नहीं होता, इसलिए वे इस तरह का कोई ज्ञान न देते और न दे सकते हैं। धर्मपिताओं को जो धर्म स्थापना के लिए शरीर में प्रवेश होने और चले जाने का ज्ञान होता है, वह भी धर्म-स्थापना के बाद जन्म लेने या गर्भ में प्रवेश होने के बाद भूल जाता है। बाबा ने जो ज्ञान दिया ये अति गुह्य, श्रेष्ठ और परमसुख देने वाला है। बाबा के इस ज्ञान की एक-एक बात को विचार करें तो आत्मा परम सुख को अनुभव करती है और उसको धारण करने से वह सुख जीवन में स्थाई हो जाता है।

Q. क्या धर्मराजपुरी अलग है ? यदि है तो कहाँ है और धर्मराज कौन बनेंगा तथा धर्मराज द्वारा सजायें कैसे मिलेंगी ?

अन्त समय आत्मा को इस शरीर में रहते ही अपने बचे हुए सभी विकर्मो की सजायें भोगने के लिए साक्षात्कार आदि होता है, बाबा के द्वारा जो शिक्षायें आदि मिली, वे सब याद आती हैं और आत्मा स्वतः पश्चाताप करती है और दुखी होती है - यही धर्मराज की सजायें हैं। शिवबाबा-ब्रह्माबाबा दोनों मिलकर धर्मराज का पार्ट बजाते हैं अर्थात् उनका धर्मराज के रूप में साक्षात्कार होता है। रामायण में इस सत्य का बहुत सुन्दर उदाहरण राजा दशरथ के शरीर छोड़ने के समय का है कि कैसे उनको श्रवणकुमार को मारने के समय की घटना और उनके माता-पिता का श्राप याद आता है और उसका पश्चाताप होता है।

Q. दिव्यदृष्टि क्या है ? उसकी चाबी किसके हाथ में है ? यदि परमात्मा के हाथ में है तो वह उसे अपने मन से प्रयोग करता है या ड्रामानुसार प्रयोग होती है ?

ड्रामानुसार समय पर परमात्मा के द्वारा साक्षात्कार होता है। परमात्मा को भी किसी कर्म करने का संकल्प ड्रामानुसार ही उठता है और वह कार्य होता है। वास्तव में परमधाम में तो कोई संकल्प उठने का प्रश्न ही नहीं उठता है, परमात्मा को भी संकल्प जब ब्रह्मा तन में आते हैं, तब ही उठता है। ये सारा कार्य ड्रामा अनुसार ही होता है, जिसके लिए बाबा ने अनेक बार मुरलियों में कहा भी है कि ये साक्षात्कार आदि सब ड्रामा अनुसार होता है।

Q. क्या आत्मायें सारे ब्रह्माण्ड में स्थित हैं और यदि स्थित हैं तो क्या उन सभी का परमात्मा के साथ सम्बन्ध है ?

परमधाम में आत्मायें सारे ब्रह्माण्ड में स्थित हैं और सभी का परमात्मा के साथ सम्बन्ध है। जैसे आकाश में तारे सर्वत्र स्थित हैं और सबका सूर्य के साथ सम्बन्ध है, सभी सूर्य के प्रकाश से प्रकाशित हैं ऐसे ही सारे ब्रह्माण्ड में आत्मायें रहती हैं और सबका सम्बन्ध परमात्मा है। जैसे इस साकार वतन में एक देश के एक कोने में बैठी आत्मा का मन्सा से सम्बन्ध दुनिया के किसी भी कोने में बैठी आत्मा से हो सकता है, ऐसे ही सर्वात्माओं का सम्बन्ध परमात्मा से रहता है। परमात्मा भारत में आते भी विश्व की सर्व आत्माओं को सकाश देते हैं, उनका कल्याण करते हैं। ब्रह्मा बाबा सूक्ष्म वतन में रहते भी विश्व की सर्व आत्माओं के साथ सम्बन्ध रखते हैं, सबके कल्याण के लिए कर्म करते हैं, ऐसे ही ब्रह्माण्ड में सर्वात्माओं का परमात्मा से सूक्ष्म सम्बन्ध है। न केवल मनुष्यात्माओं का परमात्मा से सम्बन्ध है बल्कि हर आत्मा का परमात्मा से सम्बन्ध है और हर आत्मा का परस्पर भी सम्बन्ध है। एक आत्मा कुछ करती है तो जाने-अन्जाने सारे विश्व की आत्मायें उससे प्रभावित होती हैं। कोई कर प्रत्यक्ष में और अधिक सम्बन्ध होता हैं और कोई का अप्रत्यक्ष और कम होता है परन्तु होता अवश्य है। जैसे

इस आकाश तत्व में कोई एक अणु-परमाणु का भी स्थान बदली होता है तो सारा भूमण्डल प्रभावित होता है।

Q. जब सूक्ष्मवतन में जवाहरात आदि नहीं हो सकती तो क्या कपड़े आदि हो सकते हैं? ... यह सूक्ष्म वतन का राज़ क्या है?

''सूक्ष्म वतन में ये बातें होती नहीं हैं। न जवाहरात आदि हो सकते हैं, इसलिए ब्रह्मा को सफेद पोशधारी ब्राह्मण दिखाया है। ... सूक्ष्म वतन में तो यह श्रृंगार आदि होना नहीं चाहिए। परन्तु चित्रों में दिखाया है तो बाबा उसका ही साक्षात्कार कराये फिर अर्थ समझाते हैं।''

सा.बाबा 9.11.05 रिवा.

Q. इस सृष्टि की तुलना वृक्ष से क्यों की गई है?

Q. परमात्मा को वृक्षपति क्यों कहा गया है?

Q. वृक्षपति अर्थात् बृहस्पति की इतनी महिमा क्यों है?

गीता में इस सृष्टि को एक उल्टा वृक्ष कहा गया है क्योंकि इसका बीजरूप परमात्मा परमधाम में रहते हैं, जो ऊपर दिखाया गया है। वास्तव में तो परमधाम या ब्रह्मलोक भूमण्डल के चारो ओर है लेकिन हम जहाँ खड़े होते हैं, उससे वह हमारे सिर की ओर अर्थात् ऊपर है, इसलिए ब्रह्म लोक को ऊपर कहा गया है, जहाँ सृष्टि के बीजरूप परमात्मा और हम आत्मायें रहते हैं और वृक्ष नीचे की ओर विस्तार को पाया हुआ है।

परमात्मा को वृक्षपति भी कहा गया है, जिसके कारण सप्ताह के दिनों में बृहस्पतिवार का विशेष महत्व है। अपने ज्ञान यज्ञ में भी बृहस्पतिवार को विशेष दिन के रूप में माना जाता है।

जो गुण-धर्म एक वृक्ष में होते हैं, वे सब इस सृष्टि में होने के कारण इसकी वृक्ष से तुलना की गई है। जैसे वृक्ष में शाखायें-प्रशाखायें निकलती हैं और वृक्ष वृद्धि को प्राप्त होता है, वैसे ही इस वृक्ष में भी विभिन्न धर्मों, मठ-पंथों रूपी शाखायें-प्रशाखायें निकलती हैं और यह सृष्टि वृद्धि को पाती है। फिर कल्पान्त में परमात्मा आकर पुराने वृक्ष से नये वृक्ष की कलम लगाते हैं, इसलिए उनको सृष्टि का बीजरूप वृक्षपति कहा जाता है।

''अभी तुम बरोबर कल्प वृक्ष के नीचे बैठे हो। राजयोग सीख रहे हो, भविष्य में राजा-रानी पद पाने के लिए। ... नेचुरल केलेमिटीज़ आदि सब अचानक ही आयेंगी। पिछाड़ी में विनाश तो होना ही है।''

सा.बाबा 7.5.08 रिवा.

''तुम अभी झाड़ के नीचे बैठकर राजयोग की तपस्या करते हो। जगत-अम्बा, जगत-पिता

भी हैं और तुम बच्चे भी हो। तुम सभी की मनोकामनायें पूरी करने वाले अथवा मनुष्यों को मुक्ति-जीवनमुक्ति का फल देने वाले हो।''   सा.बाबा 8.5.08 रिवा.

''तुम अभी झाड़ के नीचे बैठकर राजयोग की तपस्या करते हो। जगत-अम्बा, जगत-पिता भी हैं और तुम बच्चे भी हो। तुम सभी की मनोकामनायें पूरी करने वाले अथवा मनुष्यों को मुक्ति-जीवनमुक्ति का फल देने वाले हो।''

सा.बाबा 8.5.08 रिवा.

ड्रामा अर्थात् विश्व-नाटक

''एक-एक सेकेण्ड ड्रामा अनुसार पास होता रहता है ... ऐसे नहीं कि पत्ता-पत्ता भगवान के हुक्म पर चलता है। यह सब ड्रामा की नूँध है, इसको अच्छी रीति समझाना पड़ता है। बाप राजयोग सिखलाते हैं और ड्रामा की नॉलेज देते हैं।''

सा.बाबा 26.5.08 रिवा.

ये सृष्टि आत्मा, परमात्मा और प्रकृति का एक अनादि-अविनाशी खेल है। हम सभी आत्मायें इसके पार्टधारी हैं। पार्टधारी होने के सम्बन्ध से इसके विधि-विधान, क्रिया-कलापों को जानना अति आवश्य है और हमारा परम कर्तव्य है। इनको जानने से ही हम इसके परम सुख को अनुभव कर सकेंगे, इसलिए ही परमात्मा ने हमको इसका ज्ञान दिया और इस अभिधारणा से ही कुछ बातों पर यहाँ विचार किया गया है।

Q. ड्रामा का सबसे गुह्य राज़ क्या है, जिसका रहस्योद्घाटन अभी परमात्मा ने किया है ?

ये विश्व-नाटक अनादि-अविनाशी है, जो हू-ब-हू चक्रवत् पुनरावृत्त होता है, परमपिता परमात्मा परकाया प्रवेश करके इस कलम लगाते हैं अर्थात् इसको रिन्यू करते हैं,यह ड्रामा का सबसे गुह्य राज़ है, जो यथार्थ रीति अभी परमात्मा ने अभी बताया है।

Q. परमात्मा ने हमको विश्व-नाटक का ज्ञान दिया है, इसके ज्ञान से हमारे इस पुरुषार्थी जीवन में क्या फायदा है, इसका क्या उपयोग है ?

इस पुरुषार्थी जीवन की सफलता के लिए जैसे आत्मा-परमात्मा, कर्मों का ज्ञान आवश्यक है, वैसे ही इस विश्व-नाटक का ज्ञान परमावश्यक है। परमात्मा के द्वारा इस विश्व-नाटक का ज्ञान मिलने से -

हमारी बुद्धि भरपूर हो गई है अर्थात् इस सृष्टि के विषय में हम सब कुछ जान गये हैं अर्थात्

जीवन में सन्तुष्टता की अनुभूति करते हैं।

विश्व-नाटक के ज्ञान को जानने से विश्व-रचना की जटिल पहेली हल हो गई है।

विश्व-नाटक के ज्ञान को जानने योग साधना सहज हो गई है क्योंकि इस ज्ञान की धारणा से निर्संकल्प स्थिति सहज होने से योग का अभ्यास सहज हो गया है।

विश्व-नाटक के ज्ञान को जानने से साक्षी-भाव आ गया है, जिसके लिए अनेक महापुरुषों ने कहा है परन्तु यथार्थ साक्षी भाव हो नहीं पाता था।

विश्व-नाटक के ज्ञान को जानने से परस्पर व्यवहार शुद्धि आई है क्योंकि विश्व-नाटक के ज्ञान जो एक-दो को दोष देने की बात खत्म हो गई है।

विश्व-नाटक के ज्ञान से जीवन में खेल-भावना जागृत हुई है अर्थात् जो इसकी यथार्थ रीति धारणा कर लेता है, उसको ये खेल अनुभव होता है और इसमें परमानन्द की अनुभूति करता है।

विश्व-नाटक के ज्ञान को समझने से मुक्ति-जीवनमुक्ति के राज़ का पता लगने से उसका पुरुषार्थ सहज हो गया है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि विश्व-नाटक के ज्ञान जीवन सहज हो गया है और इस आध्यात्मिक जीवन का सच्चा सुख अनुभव होता है और इसकी सफलता सहज हो गई है।

Q. ड्रामा हू-ब-हू रिपीट होता है तो क्या अणु और परमाणु के साथ रिपीट होता है या केवल मानव पार्ट रिपीट होता ?

ये विश्व-नाटक अणु-परमाणु के साथ हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है। जब अणु-परमाणु के साथ पुनरावृत्त हो तब ही हू-ब-हू पुनरावृत्त कहा जा सकता है और हू-ब-हू पुनरावृत्त हो सकता है। एक अणु के भी हू-ब-हू पुनरावृत्त न होने से हू-ब-हू पुनरावृत्त नहीं हो सकता है और न ही कहा जा सकता है।

‘‘बाप जो समझाते हैं, उसकी एक-एक बात में बहुत ही गुह्य राज़ भरा हुआ है, जो समझाना बहुत जरूरी है। ... यह सृष्टि का चक्र फिरता है, ऐसा कहते भी हैं परन्तु कैसे फिरता है, हू-ब-हू फिरता है या कोई चेन्ज होती है, यह किसको पता नहीं है।’’

सा.बाबा 9.11.05 रिवा.

Q. क्या परमपिता परमात्मा ने इस विश्व-नाटक की कभी रचना की है ? अथवा क्या ये कभी रचा गया है ? यदि हाँ, तो कब और कैसे ?

नहीं, ये विश्व-नाटक अनादि-अविनाशी है। अनादि-अविनाशी चीज के लिए कब रचने का प्रशन हीं नहीं उठ सकता। परमात्मा इस विश्व-नाटक का ज्ञाता है, जो संगमयुग पर ज्ञान देकर और योग सिखलाकर स्वर्ग की रचना करता है, जिससे पुराने चक्र का अन्त होता है और नये चक्र का आरम्भ होता है।।

''बाप 84 के चक्र में नहीं आते हैं परन्तु उनमें सारा ज्ञान है .. उनमें फिर यह ज्ञान कहाँ से आया जबकि वह 84 के चक्र में नहीं आते .. इसीलिए उनको ज्ञान का सागर कहा जाता है। दूसरी बात - क्या ब्रह्मा और विष्णु की दो सोलें हैं? .. नहीं, ब्रह्मा ही विष्णु बनते हैं। बाकी शंकर की न आत्मा है, न शरीर है। ब्रह्मा और विष्णु की सोल एक ही है।''

सा.बाबा 4.11.68

''यह भी ड्रामा में नूँध है। क्यों का सवाल नहीं उठता। यह तो बना-बनाया खेल है। तुम बच्चों को बाप समझाते हैं कि ऐसे-ऐसे होता है। ... मेरा पार्ट ही संगमयुग पर है, सो भी एक्यूरेट समय पर आता हूँ। ... ड्रामा में सब आत्माओं को अपना-अपना पार्ट मिला हुआ है। यह बहुत गुह्य बातें हैं।... यह अनादि-अविनाशी बना-बनाया ड्रामा है, कब शुरू हुआ, कह नहीं सकते। चक्र फिरता ही रहता है। संगमयुग पर बाप आकर बतलाते हैं - यह ड्रामा 5000 वर्ष का है।''

सा.बाबा 22.3.04 रिवा.

Q. ड्रामा कहने का अधिकारी कौन हो सकता है?

जो पूर्ण देही-अभिमानी है, वही ड्रामा कहने का अधिकारी है क्योंकि वही इसके यथार्थ राज़ को जानता है और उस अनुसार उसके संकल्प और कर्म होते हैं। यथार्थ में ड्रामा कहने का अधिकारी एक परमात्मा ही है और वही ज्ञान का सागर है और ड्रामा का पूर्ण ज्ञाता है, इसलिए वह पूर्ण साक्षी है अर्थात् सदा साक्षी होकर इसे देखता है। बाकी ब्रह्मा बाबा सहित सभी आत्मायें नम्बरवार हैं। ब्रह्मा तन में परमात्मा की प्रवेशता होती है, इसलिए ब्रह्मा बाबा भी शिवबाबा के समान ही ड्रामा का ज्ञाता और साक्षी बन जाता है परन्तु शिवबाबा के बाद। इसीलिए ब्रह्मा का स्थान Next to God कहा जाता है। वास्तव में शिवबाबा के समान तो कोई बन नहीं सकता है क्योंकि वह निराकार है और सभी आत्मायें नम्बरवार हैं। एक परमात्मा ही ज्ञान का सागर निराकार है।

''बच्चों को ड्रामा पर पक्का रहना है। पक्के रहेंगे तो उस समय ही फिकर से फारिग हो जायेंगे।''

सा.बाबा 23.12.68 रात्रि क्लास

''आगे चल ड्रामा क्या दिखलाता है सो साक्षी होकर देखना है। पहले से ही बाबा साक्षात्कार

नहीं करायेंगे कि यह होगा। फिर तो आर्टीफिशियल हो जाये। यह बड़ी समझ की बातें हैं।''

सा.बाबा 24.10.69 रिवा.

''पहले से थोड़ेही सब बता देंगे। फिर तो आर्टीफिशियल हो जाये। अचानक कोई इत्तफाक आदि होते रहेंगे, उसको कहेंगे ड्रामा। ऐसे नहीं कि यह नहीं होना चाहिए। मम्मा को तो पिछाड़ी तक रहना था। ... ड्रामा में जो हुआ सो राइट। ... ईश्वर ने बोला या इसने बोला, सब ड्रामा में था।''

सा.बाबा 6.10.06 रिवा.

Q. बाबा ने विश्व-नाटक का ज्ञान दिया है और बताया है कि इस विश्व-नाटक में जो हुआ वह अच्छा है; जो हो रहा है, वह अच्छा है और जो होगा वह भी अच्छा होगा - इस रहस्य की प्रक्टिकल जीवन में धारणा कैसे हो ?

इस विश्व-नाटक की वास्तविकता पर विचार करें तो ये सत्य, न्यायपूर्ण और कल्याणकारी है, जो इसके विधि-विधानों को समझ लेता है और इसको नाटक की तरह देखता है, वह इसके परमानन्द को अनुभव करता है। भले ये हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है परन्तु इसमें जो हुआ वह Nothing New लेकिन जो होगा वह Something New होगा।

Q. क्या ड्रामा में किसी का पार्ट परिवर्तन हो सकता है ? यदि हाँ, तो कैसे और यदि नहीं, तो क्यों ?

ड्रामा में किसी आत्मा का पांच हजार साल का पार्ट परिवर्तन नहीं हो सकता, वह तो समय पर पुनरावृत्त होगा ही परन्तु ये विश्व-नाटक विविधतापूर्ण है और हर क्षण परिवर्तनशील है इसलिए हर क्षण पार्ट परिवर्तन होता है। आत्मा पतित भी बनती और पावन भी बनती है। यथार्थ ज्ञानी आत्मा अर्थात् देही-अभिमानी आत्मा जहाँ है और जैसे है, वहीं ड्रामा के इस सत्य को समझकर पूर्ण सुख-शान्ति का अनुभव करती है और समय पर अभीष्ठ पुरुषार्थ भी अवश्य करती है।

''वर्ल्ड एक ही है, उनको रिपीट करना है। जो भी धर्म हैं, सबको चक्र लगाना है। सब एक्टर हैं अविनाशी पार्टधारी। कोई का भी पार्ट बदल नहीं सकता है। हर एक को अपना पार्ट बजाना ही है।''

सा.बाबा 9.6.08 रिवा.

Q. क्या ये ड्रामा बीती हुई बात पर ही लागू होता है या भूत-वर्तमान-भविष्य तीनों कालों पर ? क्या पुरुषार्थ से पार्ट परिवर्तन हो सकता है ? यदि हाँ तो कैसे ? यदि नहीं तो जीवन में पुरुषार्थ का क्या महत्व है ?

ड्रामा का अनादि-अविनाशी नियम भूत-वर्तमान-भविष्य तीनों कालों पर समान रूप से लागू होता है। यदि कोई भूतकाल पर लागू हो और वर्तमान और भविष्य पर लागू न हो - यह हो नहीं सकता क्योंकि ये विश्व-नाटक चक्रवत् चलता है। जो आज वर्तमान है, वही कल भूतकाल होगा और जो भूतकाल कै वही कल वर्तमान काल होगा।

ड्रामा का पार्ट और कर्म अर्थात् पुरुषार्थ समानान्तर चलते हैं या कहें एक सिक्के दो पहलू हैं, जो साथ-साथ ही रहते हैं। कोई भी आत्मा इस कर्मक्षेत्र पर पुरुषार्थ के बिना रह नहीं सकती। अब प्रश्न ये है कि पुरुषार्थ क्या करें ? समय पर पुरुषार्थ से ही पार्ट परिवर्तन होता है। अंग्रेजी में भी कहावत है - Events can't be changed but we can change our attitude towards events. कोई भी आत्मा किसी भी क्षण पुरुषार्थ के बिगर रह नहीं सकती, समय पर आत्मा अभीष्ठ पुरुषार्थ अवश्य करती है। अच्छे पुरुषार्थी और ज्ञानी आत्मा का कर्तव्य है कि वह सदा अपने मूल आत्मिक स्वरूप में स्थित रहे, आगे का पुरुषार्थ स्वतः होगा अर्थात् पुरुषार्थ है देहाभिमान को छोड़कर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होने का।

Q. क्या ये नाटक सुख-दुख का है ? यदि हाँ तो कैसे, यदि नहीं तो कैसे ?

इस विश्व-नाटक में सुख-दुख दोनों का महत्वपूर्ण स्थान है। सुख-दुख, हार-जीत का ये विश्व-नाटक बड़ा ही सुन्दर बना है। इसमें सुख और दुख दोनों का समान महत्व है क्योंकि बिना सुख के दुख की और बिना दुख के सुख की महसूसता नहीं होती है। हर आत्मा का सुख और दुख का समान पार्ट है अर्थात् हर आत्मा अपने पार्ट का आधा समय सुख का और आधा समय दुख का पार्ट बजाती है। इसमें जिसको जितना सुख है, उसके अनुसार ही दुख भी होता है। दोनों का बड़ा सुन्दर सन्तुलन है।

Q. इस ड्रामा में हम कुछ परिवर्तन कर सकते हैं या नहीं ? यदि हाँ तो क्यों और कैसे ? यदि नहीं तो क्यों और कैसे ? इसमें आत्माओं को दुख क्यों भोगना पड़ता है ?

पांच हजार साल के पार्ट में हम कोई परिवर्तन नहीं कर सकते हैं, वह समय पर हू-ब-हू अवश्य पुनरावृत्त होगा परन्तु कर्म और फल पर आधारित इस नाटक में हर क्षण परिवर्तन होता है और ये परिवर्तन ही इसकी शोभा है। आत्मा को यथार्थ रीति सुख की अनुभूति के लिए दुख की अनुभूति भी आवश्यक है, इसलिए ये विश्व-नाटक सुख-दुख का बना हुआ है। दोनों का इसमें समान महत्व है। बिना दुख की अनुभूति के सुख की अनुभूति हो नहीं सकती।

Q. क्या इस विश्व-नाटक में किसको VIP या हीरो पार्ट मिला है और किसी को साधारण ? यदि ऐसा है तो क्यों और कैसे ?

Q. यदि किसी आत्मा को विशेष पार्ट (हीरो पार्ट) मिला है और किसी को साधारण या निकृष्ट पार्ट मिला है - यह इस विश्व नाटक में पक्षपात है, गलत है या इसमें कोई न्यायपूर्ण समानता है?

ये विश्व-नाटक सत्य, न्यायपूर्ण और कल्याणकारी है। इसमें देश-काल-परिस्थितियों के अलग-अलग हीरो होते हैं और पूरे ड्रामा के भी हीरो हैं परन्तु सभी आत्माओं के सुख-दुख में अद्वितीय सन्तुलन है अर्थात् हर आत्मा को अपने पार्ट के समय का आधा समय सुख और आधा समय दुख का पार्ट बजाना ही पड़ता है, जिससे कोई भी पार्टधारी, जिसको इसका यथार्थ ज्ञान है, इसमें कोई दोष नहीं निकाल सकता। जो इसको यथार्थ रीति जानता है, वह इसके परम सुख को अनुभव करता है। वास्तव में कोई राजा है और कोई प्रजा है, इसका महत्व नहीं है परन्तु महत्व इसका है कि वह आत्मा अपना पार्ट कितना सफलता पूर्वक बजाती है। महिमा उसकी होती है, जो अपने पार्ट को सफलतापूर्वक बजाता है। नाटक की यथार्थता को देखेंगे तो इसमें किसी आत्मा के प्रति किसी भी प्रकार का पक्षपात नहीं है।

Q. क्या इस विश्व-नाटक की फिल्म अभी शूट हो रही है या पहले से ही शूट हुई है? यदि अभी हो रही है तो कैसे? यदि पहले से शूट हुई है तो अभी हमारा क्या कर्तव्य है?

इस विश्व-नाटक की शूटिंग तो अनादि-अविनाशी है, फिर भी हर क्षण शूटिंग हो रही है क्योंकि हमको इसकी शूटिंग का यथार्थ ज्ञान नहीं है। इस सत्य को समझकर और ध्यान में रखकर अपने पार्ट की शूटिंग पर सदा ध्यान रखना हमारा परम कर्तव्य है, जिससे हम समयानुसार अच्छा पार्ट बजा सकेंगे और इसका यथार्थ आनन्द ले सकें। हमारा वह पार्ट ही हमारी अनादि-अविनाशी शूटिंग क्या है, उसकी पहचान कराता है।

Q. ये ड्रामा अच्छा है तो क्यों है? यदि नहीं तो क्यों?

ये विश्व-नाटक बहुत ही सुन्दर, अद्भुत रहस्यों से युक्त परमानन्दमय बना हुआ है। खेल को खेल की भावना से देखें तो खेल सदा ही अच्छे होते हैं, तब तो सभी उनको देखने जाते हैं, खेलते हैं और देखकर-खेलकर खुश होते हैं। जो इसके यथार्थ रहस्य को समझकर इसे खेल समझकर देखता है, खेलता है, वह इसके परमानन्द को अनुभव करता है।

''यह बना-बनाया नाटक है। हम समझते हैं कि ये सभी एक्टर्स हैं। निन्दा तो कर नहीं सकते। नाटक की तो जरूर महिमा ही करनी पड़े। अपना ही नाटक है, हम उस नाटक के एक्टर्स हैं। नाटक को एक्टर्स खराब थोड़ेही मानेंगे। इसको देखकर तुम खुश होते हो, निन्दा नहीं कर सकते। बाकी मनुष्यों को माया के फंदे से छुड़ाने के लिए समझाते हैं।''

सा.बाबा 28.1.69 रात्रि क्लास रिवा.

Q. इस ड्रामा में पूर्व का याद नहीं रहता तो क्यों और उससे क्या लाभ है ? यह भूलना अच्छा है या खराब ?

इस विश्व-नाटक में भूतकाल का भूल जाने की प्रक्रिया परम कल्याणकारी है, उससे ही इसका यथार्थ आनन्द अनुभव होता है। यदि भूतकाल की सभी बातें याद रहें तो आत्मा उनको सोच-सोच कर पागल हो जाये और इस विश्व-नाटक के सफल मंचन में अनेक प्रकार के व्यवधान पैदा हो जायें, जिससे सारा खेल ही खराब हो जाये अर्थात् इसका आनन्द ही चला जाये। भूतकाल की बातों के याद रहने से आत्माओं के परस्पर सम्बन्धों अनेक प्रकार की कटुता आ जाये, जिससे उनके व्यवहार में परिवर्तन हो जाये, आत्मायें दुखी हो जायें।

Q. ये विश्व-नाटक हर क्षण नया लगता है, क्यों अर्थात् विश्व-नाटक की नवीनता का क्या रहस्य है ?

ये विश्व-नाटक हर क्षण परिवर्तनशील है। इसका ये परिवर्तन और विविधिता ही इसकी शोभा है, जो इसको हर क्षण नवीनता प्रदान करती है अर्थात् हर क्षण और हर दृश्य नया लगता है।

''दुनिया पुरानी हो गई है, नाटक को पुराना नहीं कहेंगे। नाटक तो कब पुराना होता ही नहीं। नाटक तो नित्य नया है। यह तो चलता ही रहता है। बाकी दुनिया पुरानी होती है। हम एक्टर्स तमोप्रधान दुखी हो जाते हैं, फिर परमात्मा आकर सतोप्रधान सुखी बनाता है।''

सा.बाबा 3.2.69 रिवा.

Q. क्या इस विश्व-नाटक में किसी को कोई दोष दिया जा सकता है ?

नहीं, क्योंकि इस विश्व-नाटक में कर्म और फल का बहुत सुन्दर सन्तुलन है। ड्रामा हू-ब-हू पुनरावृत्त होते भी इसमें कर्म और फल का नियम अवश्य लागू होता है। जीवात्मा अपना आपही मित्र है और आपही अपना शत्रु है अर्थात् किसी आत्मा के सुख-दुख का मूल कारण उसके अपने कर्म ही होते हैं, अन्य आत्मायें तो निमित्त कारण होती हैं।

''नेपाल में छोटे बच्चों को भी शिकार करना सिखलाते हैं। कुछ न कुछ मारना जरूर है। फिर उसको महा प्रसाद समझते हैं। यह सभी ड्रामा में नूँध है। दोष कोई को दे नहीं सकते। समझाना होता है। ड्रामा कैसे चलता है।'' सा.बाबा 25.12.68 रात्रि क्लास

''ये ड्रामा है, इसमें किसी का भी दोष नहीं है। किसकी निन्दा करते तो ज्ञान पूरा बुद्धि में नहीं बैठा है।'' सा.बाबा 27.10.97 रिवा.

Q. क्या विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञाता किसी आत्मा को दोष दे सकता है ?

नहीं। इस विश्व-नाटक सत्य, न्यायपूर्ण और कल्याणकारी है। इस में हर आत्मा का अनादि-अविनाशी पार्ट है, जो ड्रामानुसार कल्प-कल्प पुनरावृत्त होता है, इसलिए ज्ञानी आत्मा किसी आत्मा को दोष दे नहीं सकती। वह हर आत्मा के पार्ट को साक्षी होकर देखता है। यदि कोई किसको दोष देता है, तो उसने इस विश्व-नाटक के गुण-धर्मों को यथार्थ रीति समझा नहीं है।

''वह तो कह देते हैं - परमात्मा नाम-रूप से न्यारा है, परन्तु ऐसा है नहीं। उनका भी कोई दोष नहीं है। बाबा ने आकर उनको अपना बच्चा बनाया नहीं है, जो वे बैठकर बाप का सही परिचय दें। तकदीर में हो तो समझें।'' सा.बाबा 6.12.03 रिवा.

Q. जब ये विश्व-नाटक हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है तो हमारा कर्तव्य क्या है ?

इस विश्व-नाटक को यथार्थ रीति जानना और साक्षी होकर इसे देखना और ट्रस्टी होकर पार्ट बजाना ही हमारा कर्तव्य है और यही जीवन की सफलता है तथा सुखमय जीवन का प्रशस्त पथ है। इस विश्व-नाटक को यथार्थ रीति जानना और साक्षी होकर देखना जीवन का बहुत बड़ा पुरुषार्थ है। परमात्मा इसका पूर्ण ज्ञाता है और वही इसके आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान देकर आत्माओं को जाग्रत करते हैं, जिससे विश्व का नव-निर्माण होता है। इसके लिए ही परमात्मा ने हमको इस विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान दिया है। ये ज्ञान हमारे पुरुषार्थ में परम सहयोगी है।

''शिव बाबा को थैंक्स देंगे ? नहीं। ड्रामा अनुसार मैं पढ़ाने आता हूँ.. थैंक्स भक्ति मार्ग में देते हैं। टीचर कहेंगे अच्छी रीति पढ़ते हैं तो हमारा नाम वाला होगा।''

सा.बाबा 19.6.69 रिवा.

''जो विशाल बुद्धि वाले बच्चे हैं वही इन बातों को समझेंगे और जो कल्प पहले विशाल बुद्धि बने थे वही बनेंगे - वही पार्ट फिर से रिपीट करना है।''

सा.बाबा 4.10.97 रिवा.

Q. क्या ड्रामा के यथार्थ ज्ञान से कोई पुरुषार्थी पुरुषार्थहीन हो सकता है ?

नहीं, ड्रामा का ज्ञान तो हमारे पुरुषार्थ में तीव्रता लाने के लिए ही परमात्मा ने दिया है। ड्रामा को यथार्थ रीति समझने का प्रयत्न भी बहुत बड़ा पुरुषार्थ है। जो ड्रामा के राज़ को समझ लेगा वह कभी पुरुषार्थहीन हो नहीं सकता क्योंकि ड्रामा उसको पुरुषार्थ अवश्य करायेगा। ये विश्व-नाटक ही कर्म और फल पर बना हुआ है, तो ड्रामा का ज्ञान पुरुषार्थहीन कैसे बना सकता है! वास्तविकता ये है कि ड्रामा का ज्ञान तो हमको पुरुषार्थ में परम सहयोगी है। ड्रामा के ज्ञान से

ही हम निर्संकल्प स्थिति द्वारा मुक्ति का अनुभव कर सकते हैं और निर्विकल्प स्थिति के द्वारा जीवनमुक्ति का अनुभव कर सकते हैं। ड्रामा के यथार्थ ज्ञान की धारणा वाला निर्संकल्प स्थिति में सहज स्थित होकर बीजरूप परमात्मा को याद करने का अभीष्ठ पुरुषार्थ कर सकता है अर्थात् स्वयं भी बीजरूप स्थिति में स्थित हो सकता है। ड्रामा का ज्ञान ही हमको साक्षी स्थिति का अनुभव कराता है अर्थात् साक्षी होकर इस विश्व-नाटक का आनन्द अनुभव कराता है।

''पुरुषार्थ अनुसार प्रारब्ध बनती है। पुरुषार्थ ड्रामा अनुसार चलता है परन्तु ड्रामा समझ बैठ नहीं जाना। खांसी का मिसाल, बिना दवाई खाये ठीक नहीं होगी।''

सा.बाबा 19.7.68

''सतयुग से लेकर जो भी ड्रामा में पास्ट हुआ है, वह सब ड्रामा में नूँध है। भक्ति मार्ग में जो साक्षात्कार आदि होता है, सेकेण्ड बाई सेकेण्ड फिर कल्प बाद रिपीट होगा। इस ड्रामा के चक्र को समझना है।... पुरुषार्थ बिगर रह नहीं सकते।''

सा.बाबा 16.3.08 रिवा.

Q. ये विश्व-नाटक क्या है, इसकी यथार्थता को जानते हुए हमारा कर्तव्य क्या है अर्थात् क्या हमारे हाथों में है?

विश्व-नाटक की यथार्थता को जानने वाली आत्मा का कर्तव्य है कि वह साक्षी होकर इस विश्व-नाटक को देखे और ट्रस्टी बनकर अपना पार्ट बजाये और इस जीवन का अर्थात् इस विश्व-नाटक का परम सुख अनुभव करे। यही हमारे हाथों में है।

Q. विश्व-नाटक की 5000 वर्ष की गणना का आधार-वर्ष क्या है अर्थात् सौर-वर्ष या चन्द्र-वर्ष?

ये विश्व-नाटक का चक्र 5000 वर्ष के बाद हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है परन्तु ये 5000 वर्ष की गणना का आधार क्या है, यह विचारणीय है। विश्व में अनेक प्रकार के सन्-सम्वत् प्रचलित हैं। विश्व-नाटक के 5000 वर्ष की गणना के लिए किसको आधार-वर्ष माना जाये, ये एक विचारणीय बात है। विश्व में मुसलमानों के संवत् हिजरी की गणना चन्द्र-वर्ष के आधार पर है, जिसमें वर्ष 354-355 दिन का होता है। वर्तमान ईसवी सम्वत् भी पहले चन्द्र-वर्ष के आधार पर अर्थात् 354 या 355 दिन का था, जो बाद में सुधार कर सौर-वर्ष के आधार पर 365 दिन का किया गया है। भारत के मुख्य सम्वत् विक्रम और शक हैं, जिनकी गणना सूर्य और चन्द्र दोनों के सन्तुलन से होती है। इसलिए भारत में हर तीन वर्ष के बाद एक पुरुषोत्तम मास होता है क्योंकि 3 साल में 37 मास हो जाते हैं। इन सब बातों को समझकर, उसके निष्कर्ष के आधार पर ही कल्प के 5000 वर्ष की गणना का राज़ समझा जा सकता है।

महाभारत में भी वर्ष के दिनों की गणना के आधार पर विवाद दिखाया गया है। इस गणना के आधार पर ही पाण्डवों के वनवास और अज्ञात-वर्ष के पूरे होने के विषय में कौरवों का मत था कि पाण्डवों के वनवास के 14 साल पूरे नहीं हुए हैं, जबकि पाण्डवों का मत था कि पूरे हो गये हैं।

इस सब बातों पर विचार करने के बाद यही निष्कर्ष निकलता है कि सूर्य-वर्ष से गणना करना ही यथार्थ है क्योंकि सौर-मण्डल में सूर्य सबसे अधिक प्रभावशाली है। और सभी ग्रह उसके चारो ओर चक्कर लगाते हैं। परन्तु ये गणना हो कैसे अर्थात् इसके 5000 वर्ष पूरे हुए हैं या नहीं, यह भी एक प्रश्न है। बाबा ने हमको जो ज्ञान दिया है वर्तमान परिस्थितियों का जो ज्ञान दिया है, उससे हम समझते हैं कि अब ये नाटक पूरा होने वाला है अर्थात् अभी पुरुषोत्तम संगमयुग का समय है।

Q. सृष्टि-चक्र के 5000 वर्ष का की गणना कैसे, उसके आदि-अन्त का केन्द्र-बिन्दु क्या है अर्थात् कल्प की गणना कब से कब तक मानी जाये ?

ब्रह्मा बाबा की आत्मा के परमधाम से आकर श्रीकृष्ण के रूप में गर्भ में प्रवेश करने से लेकर कल्प के अन्त में वापस घर परमधाम जाने के समय तक अर्थात् यही कल्प के आदि और अन्त का केन्द्र बिन्दु है, जिससे सहज रीति समझा जा सकता है कि ये कल्प कहाँ से आरम्भ होता है और कब इसका अन्त होता है।

''तुम 5 हजार वर्ष का हिसाब-किताब बताते हो। क्राइस्ट को दो हजार वर्ष हुए, बुद्ध को 2250 वर्ष और इस्लामी को 2500 वर्ष हुए हैं। सबको मिलाकर आधा कल्प हुआ।... कहते हैं क्राइस्ट से 3 हजार वर्ष पहले भारत में आदि सनातन देवी-देवता धर्म था। ... ये बड़ी गुह्य बातें हैं।''

सा.बाबा 5.4.08 रिवा.

Q. तीनों लोकों और तीनों कालों में सबसे सुन्दर, सुखमय, मन-भावन समय और स्थान कौनसा है, क्यों है और कैसे है ?

सारे कल्प के विषय में विचार करें तो सारे कल्प में सबसे मन-भावन समय है पुरुषोत्तम संगमयुग, जब यथार्थ ज्ञान के साथ परमात्मा के साथ का, मुक्ति-जीवनमुक्ति का हम अनुभव करते हैं। अभी हम जहाँ खड़े हैं यदि वहाँ हम अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित हैं, हमको परमात्मा की याद है, ज्ञान बुद्धि में है तो आत्मा अतीन्द्रिय सुख का अर्थात् परमानन्द का अनुभव करता है, जो सारे कल्प में अनुभव होना सम्भव नहीं है, इसलिए यह समय और स्थान सबसे श्रेष्ठ समय और स्थान है। आत्मा को अभी ही यथार्थ रीति मुक्ति-जीवनमुक्ति का परम-

सुख अर्थात् परमानन्द की अनुभूति होगी, जो तीनों कालों और तीनों लोकों में और कहाँ और कब भी सम्भव नहीं है।

संगठित रूप से पाण्डव भवन सबसे सुन्दर मन-भावन स्थान है, जो हम सभी के परमपिता परमात्मा और आदि-पिता ब्रह्मा बाबा की कर्तव्य-भूमि है। इसी भूमि के लिए ही महाकवि तुलसीदास ने गाया है - धन्य भूमि वन पंथ पहारा, जहाँ जहाँ नाथ पाँव तुम धारा। हम सब के लिए भी यह तपस्या स्थान सबसे श्रेष्ठ है।

बाबा ने भी कहा है - भारत सबसे महान देश है, आबू सबसे महान तीर्थ है, जहाँ सर्वात्माओं के पिता आकर पार्ट बजाते हैं, सर्वात्माओं को पावन बनाने का कर्तव्य करते हैं।

इस प्रकार इस स्थान और समय का महत्व जान, उसका लाभ उठाना, उसके महत्व को स्थिर रखना हम सभी का पावन कर्तव्य है।

Q. सतयुग के 1250 वर्ष की गणना कब से कब तक होगी ?

श्रीकृष्ण की आत्मा के गर्भ में प्रवेश होने के समय से लेकर पहले राम की आत्मा के राम के रूप में गर्भ में प्रवेश होने के समय तक की जानी चाहिए, तब ही सतयुग के 1250 वर्ष पूरे होंगे। भले बाबा कहता है कि नया सम्वत् लक्ष्मी-नारायण के सिंहासन पर बैठने के समय से गिना जायेगा परन्तु उस समय से गिनने से सतयुग के 1250 की आयु की गणना और कल्प की 5000 वर्ष की गणना में अन्तर हो जायेगा। हर युग के बीच 50 वर्ष का समय संगम के रूप में होता है, उसको भी युग की गणना करते समय ध्यान में रखना होगा।

Q. क्या विश्व में सर्व आत्माओं को एक समान साधन-सम्पत्ति, सुविधायें प्राप्त होना सम्भव है ? या किसको अधिक और किसको कम प्राप्त होना ये विविधता इस विश्व-नाटक में पक्षपातपूर्ण है ?

नहीं। ये विश्व-नाटक विविधितापूर्ण है और ये विविधिता ही इस विश्व-नाटक की शोभा है। साधन-सम्पत्ति, सुविधायें सर्व आत्माओं को एक समान न प्राप्त हैं और न ही हो सकती है परन्तु जिसको जो मिलता है, वह विश्व-नाटक के विधि-विधान और आत्मा के पार्ट के अनुसार न्यायपूर्ण है अर्थात् हर आत्मा को अपने पार्ट और पुरुषार्थ अनुसार साधन-सम्पत्ति अवश्य प्राप्त होती हैं, इसलिए किसकी साधन-सम्पत्ति को देखकर ईर्ष्या आदि करने की आवश्यकता नहीं है। आवश्यकता है अपनी प्राप्तियों को देखकर उनका उपयोग करके उनका सुख लेने की और अभीष्ट पुरुषार्थ करके भविष्य के लिए श्रेष्ठ प्राप्तियों का बीज बोने की।

Q. क्या आत्मायें भक्ति से देहाभिमानी बनती हैं या ड्रामा के अनादि-अविनाशी नियमानुसार देहाभिमानी बनती हैं? आत्मा के देहाभिमानी बनने में भक्ति का क्या स्थान है?

बाबा ने जो कहा है कि भक्ति से आत्मा पतित बनी है अर्थत देहाभिमानी बनी है, उसका भाव-अर्थ है कि भक्ति करने से आत्मा की चढ़ती कला नहीं होती है, भक्ति करते भी आत्मा की उतरती कला ही होती है। चढ़ती कला तो बाबा जो ज्ञान देते हैं, उसकी धारणा और राजयोग के अभ्यास से ही होती है। परन्तु ऐसे भी नहीं कहेंगे कि भक्ति से उतरती कला होती है। भक्ति में आत्मा की उतरती कला होती है परन्तु भक्ति से आत्मा की उतरती कला होती है, यह यथार्थ नहीं है। भक्ति से तो आत्मा की उतरती कला की गति मन्द हो जाती है क्योंकि सच्चे भक्त पाप करने से डरते हैं, अनेक प्रकार के तीर्थ-व्रत, नियम-संयम अपनाते हैं, जिससे वे बहुत से पाप-कर्मों से बचे रहते हैं। बाबा ने भी अनेक बार कहा है - अच्छे भक्त पाप कम करते हैं, वे भी बहुत नियम-संयम में रहते हैं, वे दान-पुण्य करते हैं। वास्तविकता ये है कि ड्रामानुसार समयान्तर में जब आत्मा देहाभिमानी हो जाती है, तो विकारों के वशीभूत विकर्मों में प्रवृत्त होने से दुखी होती है और उस दुख से छूटने के लिए भक्ति करती है, भगवान को याद करती है। इस सत्य पर विचार करें तो आत्मा देहाभिमानी भक्ति से नहीं हुई है, बल्कि देहाभिमानी होने से दुखी होती है और उन दुखों से छूटने के लिए भक्ति करती है वास्तव में आत्मा की गिरती कला तो संगमयुग को छोड़कर सारे कल्प में होती है। आत्मा की कलायें सतयुग से गिरनी आरम्भ हो जाती हैं और गिरते-गिरते आत्मा देहाभिमानी बन जाती है।

''तुम आत्मायें सतोप्रधान पवित्र थी, फिर तुम पार्ट बजाते-बजाते पतित बने हो, तब पुकारते हो बाबा आकर हमको पावन बनाओ। ... तुम भक्ति करते-करते देह-अभिमानी बन जाते हो। अब बाप कहते हैं - बच्चे, आत्म-अभिमानी बनो।'' सा.बाबा 8.6.04 रिवा

''इसको याद की यात्रा कहा जाता है। योग कहने से यात्रा सिद्ध नहीं होती है। तुम आत्माओं को यहाँ से जाना है, तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है। तुम अभी यात्रा कर रहे हो। उन्होंका जो योग है, उसमें यात्रा की बात नहीं है।'' सा.बाबा 8.6.04 रिवा

''बाप किस तन में आते हैं, वह खुद ही बताते हैं।... बाकी रहे भारतवासी भक्त। अब भक्तों में भी किस भक्त में आये। भक्त भी पुराना चाहिए, जिसने सबसे ज्यादा भक्ति की हो। भगवान को भक्ति का फल देने आना पड़ता है। ... नम्बरवन जो पूज्य था वही फिर नम्बरवन पुजारी भी बनेगा। ... यह भी बहुत भक्ति करते थे, भक्ति का फल भी इनको ही मिलना चाहिए।''

सा.बाबा 11.6.04 रिवा.

''बाप को याद करना है, वही सर्वशक्तिवान है, उनको याद करने से पाप कट जायेंगे। ... बाप ही कैरेक्टर्स सुधारते हैं। ... बाप को याद करना है तब ही तुम पतित से पावन बन सकेंगे। दैवी गुण भी धारण करने हैं। सतोप्रधान बनना है।''

सा.बाबा 12.6.04 रिवा.

Q. इस विश्व-नाटक में सर्वश्रेष्ठ जीवन अर्थात् अवस्था क्या है?

विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान को धारण कर देह में रहते देह और देह की दुनिया से न्यारे आत्मिक स्वरूप में स्थित हो, परमात्मा का कल्याणमयी हाथ सिर पर हो और अन्तर्मन में ज्ञान की चिन्तनधारा बहती हो, यही सर्वश्रेष्ठ जीवन है और संगमयुग पर ये परमपिता परमात्मा का आत्माओं को परम वरदान है। आत्मा की चढ़ती कला का यही सर्वश्रैष्ठ साधन और साधना है।

इस विश्व-नाटक में सबसे बड़ा सम्बन्धी कौन है?	-	परमपिता परमात्मा
इस विश्व-नाटक में सबसे बड़ी प्राप्ति क्या है?	-	ज्ञान धन
इस विश्व-नाटक में सबसे अच्छा घर क्या है?	-	निरोगी काया
इस विश्व-नाटक में सबसे बड़ी टेक्निक क्या है?	-	देह में रहते देह से न्यारे होकर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होना।
इस विश्व-नाटक में सबसे बड़ा सुख क्या है?	-	अतीन्द्रिय सुख

Q. बाबा के पास हर आत्मा का सारा रिकार्ड है परन्तु वह कहाँ है, क्या कोई ऑफिस आदि है? बाबा के पास कैसे और कहाँ खाता जमा होता है?

सारा विश्व बाबा ऑफिस है। हर आत्मा में उसके अच्छे-बुरे कर्मों का हिसाब जमा होता है और समय पर प्रकृति द्वारा उनका फल उसको मिलता है। बाबा कोई को फल देता नहीं है लेकिन ये सृष्टि अर्थात् विश्व-नाटक एक स्वचालित मशीनरी है, जिसके आधार पर हर आत्मा को उसके अच्छे या बुरे कर्मों का फल मिलता है।

''बापदादा के पास सभी सेवाधारियों का पूरा रिकार्ड है। सेवा करते चलो, नाम हो - यह संकल्प नहीं करो। जमा हो, यह सोचो। अविनाशी फल के अधिकारी बनो। ... गुप्त दान और गुप्त सेवा का महत्व ज्यादा होता है। वह आत्मा सदा स्वयं में भरपूर होगी। बेपरवाह बादशाह

होगी। ... वे स्वमान के तख्तनशीन, अविनाशी तख्तनशीन होंगे।''

अ.बापदादा 22.02.86

''विश्व-शान्ति भी आत्मिक शान्ति के आधार पर होगी ना। प्रकृति भी पुरुष के आधार से चलती है।''

अ.बापदादा 22.02.86

Q. ड्रामा पूर्व-निश्चित (Pre-ordained) होते हुए पुरुषार्थ का क्या महत्व है और अभीष्ट पुरुषार्थ क्या है ?

ये विश्व-नाटक परम सुखमय है, इस के यथार्थ ज्ञान की धारणा से आत्मा को अभूतपूर्व शक्ति मिलती है और सुख की अनुभूति होती है, उस सुख को अनुभव करने और परमात्मा पिता की याद से जो अतीन्द्रिय सुख की प्राप्ति होती है, अनुभूति होती है तथा आत्मिक स्वरूप में स्थित होने से आत्मा को जो शान्ति और सुख की प्राप्ति होती है, उस सुख को अनुभव करने के लिए पुरुषार्थ करना ही पड़ता है और करना ही होगा तथा ड्रामा करायेगा ही। आत्मा का पुरुषार्थ ही इस विश्व-नाटक में भिन्नता का आधार है अर्थात् उसके आधार पर ही राजा-प्रजा, साहूकार-गरीब आदि का निर्णय होता है। ये विश्व-नाटक ही कर्म और फल अर्थात् पुरुषार्थ और प्रालब्ध पर आधारित है। पुरुषार्थ करना आत्मा निजी स्वभाव है, इसलिए कर्म के बिना आत्मा एक सेकेण्ड भी इस कर्मक्षेत्र पर रह नहीं सकती।

परमात्मा ने हमको विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान दिया है, उसका गुह्य राज़ समझाया है तो विश्व-नाटक के गुह्य राज़ को यथार्थ रीति जानने, अनुभव करने और अन्य आत्माओं को भी समझाने के लिए भी पुरुषार्थ तो करना ही पड़ेगा।

''हर एक का वही पार्ट बजता है, जो कल्प-कल्प बजता है। उसमें कोई फर्क नहीं हो सकता। यह सारा बना-बनाया खेल है। कोई पूछते हैं - पुरुषार्थ बड़ा या प्रालब्ध बड़ी ? अब पुरुषार्थ बिगर प्रालब्ध मिलती नहीं है। ड्रामा अनुसार पुरुषार्थ से ही प्रालब्ध मिलती है।''

सा.बाबा 27.12.04 रिवा.

Q. सतयुग में साधन-सम्पत्ति, साइन्स आदि उत्तरोत्तर उन्नतिशील (Progressive) होगी या अवनतिशील (Decressive) होगी अर्थात् उत्तरोत्तर साधन उन्नति को पायेंगे या अवनति को पायेंगे ?

जैसे आत्माओं की कलायें गिरती जाती हैं, वैसे ही साइन्स एण्ड टेक्नॉलॉजी भी पतनोन्मुख (Decressive) होती है और पतन होते-होते द्वापर आदि में बिल्कुल समाप्त हो जाती है। फिर द्वारा से नये इन्वेन्शन आदि चालू होते हैं।

Q. हमारे दुख का निमित्त कौन ? ड्रामा के यथार्थ ज्ञान को विचार करके निश्चित करो कि दुख

का कारण कौन ? क्या ड्रामा या ड्रामानुसार हमारा अपना ही कर्म ?

यह कर्म और फल का ड्रामा बना हुआ है। ड्रामा का पार्ट और कर्म साथ-साथ ही चलता है, इसलिए सुख-दुख दोंनों में ड्रामानुसार हमारा कर्म ही कारण बनता है।

''मैं चाहता नहीं हूँ लेकिन फिर भी हो जाता है। अब उसकी समझ अर्थात् नॉलेज होनी चाहिए। ... मेरा-मेरा कहकर दुख का रूप बना दिया है।... जब कारण है तो उसको मिटाने का इलाज भी जरूर होगा। ... इन सब दुखों से छूटने का रास्ता खुद बाप बैठकर समझा रहे हैं, फिर भी कोई की बुद्धि में बैठता नहीं है।''

मातेश्वरी 15.12.63

Q. ये विश्व एक अनादि-अविनाशी नाटक है, जिसमें आत्मा पार्टधारी है तो आत्मा पर पापों का बोझा क्यों चढ़ता है, कैसे चढ़ता है, उसका स्वरूप क्या है और उसको उतारने का विधि-विधान क्या है ?

अज्ञानतावश देहाभिमान आना, उसका पक्का होना और उसके वशीभूत विकर्म करने से विकार्मों का खाता ही आत्मा पर पापों का बोझ है। देहाभिमान का बीज देह-भान है, जो सतयुग से ही आ जाता है परन्तु आत्मिक शक्ति होने के कारण आत्मा उसके वशीभूत नहीं होती, जिससे आत्मा कोई विकर्म नहीं करती अर्थात् आत्मा से कोई पाप कर्म नहीं होता। काम विकार पाप का मूल कारण है और यह इस देहाभिमान को पक्का करने में अहम् भूमिका निभाता है।

Q. इस विश्व-नाटक का परम सुख कब और कैसे अनुभव होगा या होता है ?

जब आत्मा को परमात्मा के द्वारा विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान मिलता है और उसकी बुद्धि में उसकी धारणा होती है तथा परमात्मा हाथ और साथ होता है, जिसके आधार से आत्मा देह में रहते देह और देह की दुनिया से परे अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होती है। आत्मिक स्वरूप परमानन्दमय है और ये विश्व-नाटक परम सुखमय है। इस परम सुख का समय ये पुरुषोत्तम संगम युग ही है। यही मुक्ति-जीवनमुक्ति का सच्चा सुख है।

Q. ड्रामा को समझते हुए भी क्या है, क्यों है, ऐसी घटनायें क्यों होती है, ऐसे प्रश्न क्यों उठते हैं ?

यथार्थ से अनभिज्ञता अर्थात् विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान की कमी ही इन सब प्रश्नों का कारण है। इस विशाल विश्व-नाटक की हर बात के तथ्य को तो न हम जानते हैं और न ही जान सकते हैं परन्तु परमात्मा ने हमको जो ज्ञान दिया है, उससे इस मूल सत्य को अवश्य जाना है कि इस

विश्व-नाटक में हर घटना किसी न किसी कारण को लेकर ही होती है। आत्मा का परस्पर का हिसाब किताब में प्लस और माइनस बराबर है, जिससे कोई आत्मा किसी दूसरे के सुख-दुख का कारण नहीं है और हर आत्मा का सुख-दुख का हिसाब-किताब भी बराबर है। ये सब घटनायें इस विश्व-नाटक को 5000 वर्ष तक चलाने और रुचिकर बनाने के लिए हैं। वास्तविकता तो ये है कि ये विश्व-नाटक सत्य, न्यायपूर्ण और परम कल्याणकारी है अर्थात् इसमें जो होता है, वह आवश्यक है और सही है।

Q. क्या त्रेता के अन्त और द्वापर के आरम्भ में भी कोई बड़े भूकम्प आदि आते हैं, उथल-पथल होती है, मनुष्य दर-बदर होते हैं या काल-चक्र की गति के अनुसार समय के साथ स्वत: परिवर्तन होता है ? यदि भूकम्प आदि होता है तो उसका स्वरूप और प्रभाव क्या होता है ?

Q. क्या त्रेता के बाद नेचुरल केलेमिटीज होंगी ? यदि होंगी तो उनका स्वरूप क्या होगा, उनका मानव जीवन पर क्या प्रभाव होगा ? क्योंकि वहाँ तक किसी आत्मा ने कोई विकर्म तो किया नहीं, तो मनुष्य को दुख कैसे हो सकता है ?

Q. दैवी सभ्यता द्वापर से भूकम्प आदि प्राकृतिक आपदाओं के कारण विलीन होगी या 25 सौ वर्षों में प्रकृति के अनादि-आदि नियमानुसार ह्रास होते-होते सभ्यता और साधनों में स्वत: परिवर्तन होगा ?

जब नौ लाख से 33 करोड़ मनुष्य हो जायेंगे तो साधन और सम्पत्ति में प्रति व्यक्ति कमी अवश्य होगी। समय के साथ पुरानी सभ्यता और साधनों में भी ह्रास होगा और परिवर्तन अवश्य होगा। इस प्रकार सतयुग की आदि दैवी सभ्यता का अधिकांश तो काल-चक्र के अनुसार स्वत: ही खत्म हो जायेगा और जो त्रेता के अन्त में नाम मात्र बचेगा वह भूकम्प आदि में विलीन हो जायेगा। देवतायें जब वाममार्ग में जाते, विकारी बनते तो उसके फलस्वरूप भूकम्प आदि तो होंगे परन्तु उससे आत्माओं को दुख नहीं होगा और यदि होगा तो भी नाम मात्र ही होगा परन्तु दैवी सभ्यता का नाम-निशान मिट जायेगा।

''पहले-पहले गोल्डन एज में हैं सम्पूर्ण गोरे, फिर दो कला कम हो जाती है। त्रेता को स्वर्ग नहीं कहेंगे, वह है सेमी स्वर्ग। बाप ने समझाया है रावण के आने से ही तुम्हारे ऊपर कट चढ़ना शुरू हुई है। पूरे क्रिमिनल अन्त में बनते हो।... सतयुग वाला सुख त्रेता में नहीं हो सकता क्योंकि आत्मा की दो कला कम हो जाती हैं।''

सा.बाबा 9.7.04 रिवा.

''भारत जब पतित बनता है, रावण का राज्य शुरू होता है तो धरनी हिलने लगती है। सोने-चांदी के महल आदि सब नीचे चले जाते हैं। देवी-देवताओं के महलों आदि को कोई लूटता थोड़ेही है।'' सा.बाबा 15.8.06 रिवा.

Q. प्राकृतिक आपदाओं और प्रकृति द्वारा मनवांच्छित फल देने का कारण और आधार क्या है ?

ये विश्व-नाटक पुरुष अर्थात् आत्मा और प्रकृति का खेल है। जड़ प्रकृति चेतन आत्मा के वृत्ति और वायब्रेशन्स के आधार पर कार्य करती है अथवा ऐसा कहें कि जड़ प्रकृति चेतन आत्मा के कर्मों अनुसार सुख-दुख का कारण और आधार बनती है अर्थात् आत्मा की जैसी स्थिति होती है, वैसे ही उसके वृत्ति और वायब्रेशन्स होते हैं, जो जड़ प्रकृति को प्रभावित करते हैं और उस अनुसार प्रकृति में भी परिवर्तन होता है, उस अनुसार ही फल देती है।

Q. द्वापर के आदि में परिवर्तन, अर्थ-क्वेक आदि क्यों होगी ?

देवतायें वाममार्ग में गये अर्थात् देहाभिमान प्रभावी हो गया, आत्माओं में विकार की प्रवृत्ति आ गई। जब देवतायें विकारी हो गये तो दैवी दुनिया की साधन-सम्पत्ति का उपभोग कर नहीं सकते, इसलिए वह अर्थ-क्वेक में नीचे चली जाती है, परन्तु वहाँ आत्माओं को कोई विशेष दुख नहीं होता है।

इस प्रकार देखें तो भूकम्प आदि तो होते हैं परन्तु आत्माओं को दुख नहीं होता है। उस समय के भूकम्प में साधन-सम्पत्ति की हानि होती है परन्तु जन-हानि नहीं होती है। उस समय दुनिया में मनुष्य की आवश्यकता से अधिक साधन-सम्पत्ति होती ही है और आत्माओं में लोभ-मोह आदि नाममात्र होता है, इसलिए उसके कारण दुख की अनुभूति नहीं होती है।

द्वापर के आदि में जो भूकम्प आदि होते हैं, उसके कारण ही पृथ्वी जो सतयुग-त्रेतायुग में 90 अंश के कोण पर अपनी धूरी पर सीधी होती है, वह साढ़े 23 अंश झुक जाती है, जिससे दुनिया में जल-स्तर में बदलाव आता है, पृथ्वी की दशा और दिशा बदलती है, जिससे वह अनेक खण्डों में बट जाती है, नदियों आदि के बहाव में परिवर्तन होता है, सागर की स्थिति में परिवर्तन होता है, इसलिए पहले जो सारा विश्व एक होता है, वह अनेक भू-भागों में विभाजित हो जाता है। उस समय जो जिस भूभाग में होता है, वहाँ ही रह जाता है और वहाँ ही सुख से रहने लगता है, बाद में उस खण्ड का नामकरण होता है और वह अलग देश कहलाने लगता है।

''सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी फिर वैश्य वर्ण में आये। रावण राज्य होने से सब विकार में गिर पड़े, भक्ति शुरू हो गई। बड़े-बड़े सोने, हीरे, जवाहरों के महल अर्थक्वेक में अन्दर चले गये। भारत विकारी बनने से ही अर्थक्वेक हुई। फिर रावण राज्य हो गया। पवित्र से अपवित्र बन पड़े। कहते भी हैं सोने की द्वारका अन्दर चली गई।''

सा.बाबा 22.3.71 रिवा.

Q. क्या सतयुग-त्रेतायुग में पृथ्वी समतल होगी या वर्तमान जैसी गोल ही होगी ?

Q. क्या सतयुग-त्रेतायुग में रात को सदैव चांदनी रहेगी या वर्तमान के समान चांदनी और अंधेरी रात होगी ?

विवेक कहता है परिवर्तन के समय वर्तमान में पृथ्वी जो अपनी धूरी पर साढ़े तेईस अंश झुकी हुई है, वह सीधी हो जायेगी, जिससे दिन और रात का अन्तर समाप्त हो जायेगा अर्थात् पूरे वर्ष समान होंगे। परन्तु पृथ्वी गोल ही रहेगी, सूर्य-चांद-पृथ्वी की गति भी ऐसी ही होगी, चांदनी और अंधेरी रात भी होगी परन्तु दोनों ही सुखदायी होंगे। ॠतु-परिवर्तन भी होगा परन्तु किसी प्रकार की अति नहीं होगी, इसलिए सब सुखदायी होगा।

Q. कल्प के पुरुषोत्तम संगमयुग पर आने वाली प्राकृतिक आपदाओं और त्रेतायुग-द्वापर के संगमयुग पर आने वाली प्राकृतिक आपदाओं में क्या अन्तर होगा ?

कल्प के संगमयुग पर आने वाली आपदाओं में प्रकृति के पांचो तत्व पूरी शक्ति के साथ अपना काम करेंगे, जिसमें भूकम्प, ज्वालामुखी, जल-प्लावन, मूसलाधार बरसात, तूफान अर्थात् तेज हवायें, सूर्य की गर्मी आदि सबका एक साथ प्रकोप होगा, जिससे भूमण्डल और सारे सौर मण्डल में उथल-पुथ्ल होगी, जिससे पृथ्वी अपनी धूरी पर, जो साढ़े तेईस अंश झुकी हुई है, वह समकोण में स्थित हो जायेगी, जन-हानि होगी, सारी सृष्टि की सफाई होगी और पृथ्वी की नई सेटिंग होगी। परन्तु त्रेतायुग-द्वापर के संगम पर होने वाली प्राकृतिक आपदाओं में मूल होगा भूकम्प, जिससे पृथ्वी अपनी धूरी पर 23.5 अंश झुक जायेगी, जिससे नदियों के बहाव में परिवर्तन हो जायेगा, पृथ्वी में दरारें पड़ जायेंगी, जिससे भूखण्ड विभाजित हो जायेंगे, सागर की स्थिति भी परिवर्तन हो जायेगी, उसमें दैवी सभ्यता के अवशेष भी विलीन हो जायेंगे परन्तु उसमें गर्मी, ज्वालामुखी आदि का प्रकोप नाममात्र होगा, जिससे जन-हानि नहीं होगी, आत्माओं को दुख नहीं होगा।

Q. विश्व में अनन्त साधन-सुविधायें हैं। हमारे लिए क्या आवश्यक है, हमको क्या रखना चाहिए, क्या नहीं रखना चाहिए, इस सम्बन्ध में हमारे लिए क्या कृत्य है और क्या अकृत्य

है... उसका निर्णायक बिन्दु क्या है?

आत्मिक स्थिति में स्थित और परमात्मा की मधुर याद में स्थित आत्मा को ये स्वतः ही कृत्य-अकृत्य का आभास होता है और आवश्यकता अनुसार समय पर सभी साधन-सुविधायें स्वतः ही प्राप्त होती हैं। अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होना ही हमारे लिए आवश्यक कृत्य है, जिसमें अन्य सब निर्णय आवश्यकता अनुसार समय पर स्वतः होते हैं। प्रकृति के विधि-विधान अनुसार हर आत्मा को उसी सीमा तक संग्रह करने और प्रयोग करने का अधिकार है, जिससे उसकी कार्य-क्षमता की वृद्धि हो, जिससे दूसरों के अधिकारों का हनन न हो, और जिससे देश-काल-संगठन की मर्यादा का उलंघन न हो अर्थात् उसके अनुकूल हो। जिसको संग्रह करने और रखने से मन में कोई द्वन्द न हो, वह साधन-सम्पत्ति अपने स्वस्थ पुरुषार्थ से अर्जित की हुई हो और बाबा के महावाक्यों के अनुकूल हो। अन्यथा वह साधन-सम्पत्ति आत्मा को परम-पद से वंचित कर देती है अर्थात् आत्मा पर बोझ चढ़ता है। इस सम्बन्ध में अज्ञानकाल में भी साधारण आत्मायें भी कहती हैं।

सृष्टि-चक्र अर्थात् स्वर्ग-नर्क

सतयुग

Q. सतयुग के आदि में कितनी आत्मायें होंगी और त्रेता के अन्त में कितनी मनुष्यात्मायें इस धरा पर होगी ?

सतयुग के आदि में 9,16,108 लक्ष्मी-नारायण के गददी पर बैठने के समय अर्थात् 1-1-1 के समय होंगी और त्रेता के अन्त में 33 करोड़ होंगे, जो 33 करोड़ देवी-देवताओं का गायन है। सतयुग के विषय में बाबा ने अनेक बातों का ज्ञान दिया है, जिसको समझने के लिए बुद्धि बड़ी विशाल चाहिए। सतयुग से कलियुग अन्त तक की सारी हिस्ट्री-जाग्राफी बाप ने बताई है।

''सतयुग दैवी राज्य में 9 लाख होंगे। कोई बोले इसका क्या प्रूफ है ? बोलो - यह समझ की बात है कि सतयुग में झाड़ होगा ही छोटा। ... अब कितना बड़ा झाड़ हो गया है, यह अब विनाश होना है।''

सा.बाबा 6.10.06 रिवा.

''पहले-पहले सतयुग में 9 लाख थे, देवी-देवता धर्म की शुरूआत थी। यह सब बातें समझाने वाला ज्ञान का सागर, मनुष्य सृष्टि का बीजरूप बाप ही है।... अभी कितने करोड़ आत्मायें हैं, सतयुग में इतनी शरीरधारी आत्मायें नहीं होंगी।''

सा.बाबा 13.6.08 रिवा.

Q. क्या सतयुग में ये ज्ञान रहेगा कि मैं आत्मा भृकुटी में रहती हूँ ?

नहीं। ये ज्ञान अभी ही है, सतयुग में ये ज्ञान ही नहीं रहता। सतयुग में आत्मा को इन बातों पर विचार भी नहीं चलता है। केवल अन्त में शरीर छोड़ते समय ये संकल्प आता है कि इस शरीर को छोड़कर नया लेना है और आत्मा सहज ही शरीर को छोड़ देती है और जाकर दूसरे शरीर में अर्थात् गर्भ में प्रवेश करती है।।

''वहाँ अकाले मृत्यु नहीं होगा। वह है ही अमरलोक, काल का नाम नहीं। वहाँ अचानक मृत्यु होती नहीं। तुम एक शरीर छोड़कर दूसरा लेते हो, दुख की कोई बात नहीं। सर्प को दुख होता होगा क्या ? और ही खुशी होती होगी।''

सा.बाबा 24.1.04 रिवा.

Q. क्या सतययुग-त्रेतायुग में जन्म लेने वाले सभी मनुष्यों की आयु एक समान ही होगी या अन्तर होगा ?

अन्तर होगा। ये विविधतापूर्ण विश्व-नाटक है और ये विविधता ही इस विश्व-नाटक की शोभा है, इसलिए वहाँ भी सभी मनुष्यों की आयु में भिन्नता अर्थात् अन्तर अवश्य होगा परन्तु सभी की सतयुग में औसत आयु 150 साल और त्रेता की 100 साल होगी। सतयुग में भी ऐसा कोई हार्ड एण्ड फास्ट नियम नहीं है कि हर आत्मा अमुख आयु में ही शरीर छोड़ेगी और वहाँ सभी मनुष्यों की आयु एक समय पर एक समान ही हो। हर आत्मा के हर जन्म की आयु में अन्तर होगा परन्तु औसत लगभग समान ही होगा।

Q. सतयुग के प्रथम जन्म की आयु और सतयुग के अन्त के जन्म की आयु में अन्तर होगा या नहीं, यदि होगा तो वह अन्तर क्या होगा?

अन्तर अवश्य होगा। सतयुग के आदि के जन्म और सतयुग के अन्त के जन्म की आयु एक समान नहीं हो सकती क्योंकि समय की गति और सतोप्रधानता की कलायें कम होंगी तो उस अन्तर के अनुसार आयु में भी अन्तर अवश्य होगा परन्तु औसत आयु सतयुग में 150 वर्ष और त्रेतायुग में 100 वर्ष होगी।

Q. सतयुग में लक्ष्मी-नारायण की कितनी गद्दियाँ चलेंगी? त्रेता में राम-सीता की कितनी गद्दियाँ चलेंगी?

विवेक कहता है कि सतयुग में लक्ष्मी-नारायण की 8 गद्दियाँ समानान्तर (Horizontal) एवं 20-22 गद्दियां क्रमानुसार (Vertical) चलेंगी और त्रेता में राम-सीता की 12 गद्दियाँ समानान्तर एवं 33-34 गद्दियां क्रमानुसार (Vertical) चलेंगी।

Q. सतयुग की आठ गद्दियां और त्रेता युग की 12 गद्दियों का भाव-अर्थ क्या है? वे कैसे होंगी?

Q. सतयुग की 8 गद्दियों से त्रेतायुग में 12 गद्दियां कैसे होंगी? ये गद्दियां एक ही समय समानान्तर (Horizontal) होंगी या एक के बाद एक क्रमानुसार (Vertical) होंगी?

सतयुग में लक्ष्मी-नारायण की 8 गद्दियाँ समानान्तर (Horizontal) और 20-22 गद्दियाँ क्रमानुसार (Vertical) होंगी। ऐसे ही त्रेता में 12 गद्दियाँ समानान्तर और 30-35 गद्दियाँ क्रमानुसार होंगी। इस विषय में बाबा ने भी मुरलियों में कहाँ-कहाँ महावाक्य उच्चारे हैं।

''राजा-रानी के एक-दो बच्चे होंगे, उनको राजकुल का कहेंगे। प्रजा तो कितनी ढेर होती है। प्रजा तो झट बनती है, राजायें थोड़े ही बनते हैं। 16108 राजायें त्रेता के अन्त में जाकर बनते हैं।''

सा.बाबा 25.12.03 रिवा.

''मनुष्यों को तो यह पता नहीं है कि लक्ष्मी-नारायण और राधे-कृष्ण का क्या कनेक्शन है? वह राजकुमारी, वह राजकुमार, दोनों अलग-अलग राज्य के हैं। ऐसे नहीं कि दोनों ही आपस में भाई-बहन हैं। वह अलग अपनी राजधानी में थी, कृष्ण अपनी राजधानी का राजकुमार था। उन्हों का स्वयंवर होता है तो लक्ष्मी-नारायण बनते हैं।''

सा.बाबा 8.10.03 रिवा.

सतयुग पूरा होते-होते समय की गति के साथ मानव-मन में और सतयुगी की दैवी सभ्यता में कुछ बदलाव अवश्य ही आयेगा और जनसंख्या की भी वृद्धि हो जायेगी, जिसके फलस्वरूप विश्व के आवासीय क्षेत्रफल में भी विस्तार हो जायेगा, जिससे त्रेता के आदि में चली आ रही 8 गद्दियों से 12 गद्दियां हो जायेंगी। ये कैसे होगा? उस समय तक चले आ रहे राजाओं में या तो किन्हीं राजाओं के दो-दो पुत्र होंगे, जिनमें से कोई अपनी नई राजाई स्थापन करेगा या व्यवस्था की दृष्टि से राज-घराने का ही कोई सदस्य सुदूर में जाकर अपनी नई राजाई स्थापन करेगा, जिससे त्रेता में राजाइयों की संख्या 8 से बढ़कर 12 हो जायेगी और त्रेता में 12 गद्दियां चलेंगी परन्तु सारे विश्व में सभी राजाइयां एक ही चक्रवर्ती राजा के झण्डे के नीचे प्रेम से चलेंगी, जिसकी राजधानी इन्द्रप्रस्थ (वर्तमान दिल्ली या उसके आसपास के क्षेत्र में) होगी। भल सृष्टि-चक्र के अनुसार त्रेता को भी स्वर्ग कहा जाता है परन्तु सतयुग की राजाई परम्परा, सभ्यता और त्रेता की राजाई परम्परा और सभ्यता में कुछ अन्तर अवश्य होगा, जिससे वह त्रेता कहलाता है। फिर त्रेता के अन्त और द्वापर के आदि में राजाइयों की संख्या और भी बढ़ जायेगी।

''सूर्यवंशी में आठ गद्दियाँ चलती हैं, फिर चन्द्रवंशी में 12 चलती हैं। डिनायस्टी होती है ना। ... बाप फिर वर्ल्ड ऑलमाइटी अथॉर्टी, वन गवर्मेन्ट, वन राज्य स्थापन करते हैं।'' (सूर्यवंशी की आठ गद्दियाँ और चन्द्रवंशी की 12 गद्दियों का अर्थ क्या है और कैसे चलती हैं?)

सा.बाबा 21.07.03 रिवा.

''सतयुग में विष से जन्म नहीं होता। नहीं तो उन्हों को निर्विकारी कह न सकें।''

सा. बाबा 22.1.72 रिवा.

''यह है ही पापात्माओं की दुनिया, इसमें कोई भी पुण्यात्मा होती नहीं। पुण्यात्माओं की दुनिया में फिर कोई पापात्मा नहीं होती।'' सा.बाबा 1.08.03 रिवा.

Q. सतयुग में 8 जन्म और 8 ही गद्दियाँ होंगी या दोनों की समय-गणना अलग-अलग है? दोनों की गणना अलग-अलग है। एक व्यक्ति की जितनी आयु हो, उतना ही उसका शासनकाल हो, ये सम्भव नहीं है क्योंकि न कोई जन्म से सिंहासन पर बैठ जायेगा और न ही अन्तिम घड़ी

तक गद्दी पर बैठा रह सकता है। राजकुमार जब योग्य हो जाता है तो उसको सिंहासन पर बिठाकर, राजा के वानप्रस्थ में रहने का विधान वहाँ चलता है। इस प्रश्न का उत्तर निकालने या समझने के लिए निम्न बातों पर विचार करना आवश्यक है।

''जरूर वहाँ का कायदा होगा। बच्चा किस आयु में आयेगा। वहाँ सब रेग्यूलर चलता है ना। वह आगे चलकर महसूस होगा।... वहाँ 150 वर्ष की आयु होती है, तो बच्चा तब आयेगा जब आधा लाइफ से थोड़ा आगे होंगे।... पहले बच्चे की, फिर बच्ची की आत्मा आती है। विवेक कहता है पहले बच्चा आना चाहिए। पहले मेल, पीछे फीमेल। आठ-दस वर्ष की देरी से आयेंगे। ... रस्म-रिवाज भी जरूर सुनाते जायेंगे। आगे चलकर बहुत सुनायेंगे और सब साक्षात्कार होते रहेंगे।'' सा.बाबा 28.6.04 रिवा.

किसी राजा को राजकुमार का जन्म कब अर्थात् किस आयु में होगा, उसकी शादी किस आयु में होगी एवं गद्दी पर बैठने का समय अर्थात् किस आयु में राजकुमार गद्दी पर बैठेगा, फिर उसको बच्चे का जन्म किस आयु में होगा, किस आयु में राजा अपने राजकुमार को गद्दी देकर वानप्रस्थ में जायेगा, देह-त्याग किस आयु में करेगा। इस हिसाब से उसके राज्य करने का समय निश्चित होगा और उसके आधार पर कुल गद्दियों की गणना हो सकेगी।

विचारणीय ये है कि राजा को राजकुमार का जन्म जितना बड़ी आयु में दिखायेंगे तो क्रमानुसार चलने वाली गद्दियों की संख्या घटती जायेगी और जितना जल्दी अर्थात् कम आयु में दिखायें, उतना गद्दियों की संख्या बढ़ती जायेगी। यदि बच्चे का जन्म 70-75 की आयु में होता है तो गद्दियों की संख्या 17-18 हो जायेगी और यदि बच्चे का जन्म 60-65 में दिखाते हैं तो गद्दियों की संख्या 20-22 हो जायेगी।

सतयुग में

जन्म	शादी एवं गद्दी	बच्चे का जन्म	वानप्रस्थ	देह-त्याग	राज्य का समय	कुल गद्दियाँ
आदि	30-40	60-70	90-100	160-180	60	21
मध्य	25-35	55-65	80-90	140-150	55	23
अन्त	25-30	45-50	75-85	125-135	53	24
औसत				150	57	22

महाराजायें - राजायें **176**

त्रेतायुग में

जन्म	शादी एवं गद्दी	बच्चे का जन्म	वानप्रस्थ	देह-त्याग	राज्य का समय	कुल गद्दियाँ
आदि	25-30	45-50	75-85	120-130	52	24
मध्य	25-30	40-45	60-70	110-120	38	33
अन्त	25	30-35	50-60	80-90	28	42

औसत 105 40 33

राजायें **396**

Q. सतयुग आदि से त्रेता अन्त तक कितनी राजाई चलेंगीं ?

सतयुग में लगभग 176 प्लस त्रेता में लगभग 396 दोनों युगों में कुल 572 के लगभग राजा-महाराजायें होंगे। यह भी ध्यान में रखना है कि जब इतने राजायें होंगे तो इतनी ही रानियां भी अवश्य होंगी क्योंकि राजा-रानी समान स्थिति वाले ही बनेंगे।

नोट:- ये बात विशेष ध्यान देने योग्य है कि ये सब गणना अनुमानित है, जिसमें वहाँ की रीति-रिवाज के आधार पर कुछ घटत-बढ़त भी अवश्य होगी। इसलिए इसको शत प्रतिशत सही नहीं माना जाना चाहिए परन्तु वास्तविकता को समझने के दृष्टिकोण से ये स्पष्ट किया गया है। प्राय: अधिकांश भाई-बहनों का मन्तव्य है कि वहाँ 1250 वर्ष में आठ ही जन्म होंगे और आठ ही गद्दियाँ चलेंगी अर्थात् सतयुग में 8 ही लक्ष्मी-नारायण गद्दी पर बैठेंगे और एक-एक राजा 150 वर्ष तक राज्य करेगा, जो सिद्धान्त: और गणित के हिसाब से सम्भव नहीं होता है क्योंकि एक व्यक्ति की 150 वर्ष आयु हो और 150 राज्य भी करे, यह सम्भव नहीं है। इस आधार पर गणना सिद्धान्त: सही नहीं बैठेगी। बाबा ने 8 जन्म और 150 वर्ष औसत आयु कहा है, 150 वर्ष राज्य करने की बात नहीं कही है। इन दोनों बातों के भेद को भी समझना और ध्यान में रखना अति आवश्यक है। दोनों को एक साथ मिलाकर देखना यथार्थ नहीं है।

सतयुग-त्रेता में आत्मा में चिर काल तक राज्य करने का कोई लोभ-मोह तो होता नहीं हैं, इसलिए जब उत्तराधिकारी योग्य हो जाता है तो खुशी से उसे राज्य देकर स्वयं निवृत वानप्रस्थ होकर शान्ति का और प्रकृति के सुख को अनुभव करने में अपना समय व्यतीत करते हैं।

Q. अष्ट रत्न, 8 युगल हैं या 8 आत्मायें अर्थात् 4 युगल हैं ?

अष्ट रत्नों में 4 युगल अर्थात् 8 आत्मायें हैं।

‘‘उन्हों का मान बहुत है। हमेशा नौ रतन गाये जाते हैं, आठ नहीं। चार की जोड़ी हो जाती है, बाकी है एक बीच में है बाप।’’ सा.बाबा 20.06.03 रिवा.

‘‘बाप कहते हैं - दिन प्रतिदिन तुमको गुह्य राज़ सुनाता हूँ। अन्त तक यह नॉलेज धारण करनी है। पिछाड़ी में जाकर कर्मातीत अवस्था होगी।... कर्मातीत बनने की यह रेस है। ... 9 रतन गाये जाते हैं, उन्होंका बहुत मान है। आठ रत्न अर्थात् चार जोड़ी और बीच में एक बाप।’’

सा.बाबा 19.6.08 रिवा.

Q. क्या सतयुग की राजाई की स्थापना वर्तमान के किन्हीं राजघरानों के द्वारा होगी या किन्हीं भक्त-आत्माओं के द्वारा होगी ?

वर्तमान के राजघरानों के जीवन व्यवहार और खानपान को देखें तो वह साधारण व्यक्तियों से भी अधिक तमोप्रधान है और ऐसी तमोप्रधान आत्माओं के द्वारा सतोप्रधान सतयुगी राजाई की सथापना होना सम्भव नहीं लगती है अर्थात् जंचती नहीं है और उनके घर में एडवान्स पार्टी की आत्मायें जन्म लें, ये भी जंचता नहीं है। इसलिए ही बाबा ने दादी के भक्त-आत्मा के घर में जन्म लेने की बात बताई है। अन्य एडवान्स पार्टी की आत्माओं का जन्म भी ऐसे ही घरों में होगा। इसलिए सतयुगी राजाई की स्थापना के निमित्त एडवान्स पार्टी की आत्मायें बनेंगी, जो ऐसे भक्त-आत्माओं के घर में जन्म लेंगी, जहाँ से वे सतयुगी राजाई की स्थापना का कार्य करेंगी।

सतयुगी राजाई की स्थापना के लिए हमको संगमयुगी राजाई और सतयुगी राजाई का अध्ययन करना चाहिए, बाबा के महावाक्यों पर विचार करना चाहिए और दोनों में क्या सम्बन्ध है, उस पर विचार करेंगे तब ही इसका यथार्थ निर्णय कर सकेंगे। वर्तमान संगमयुग का स्वराज्य का अधिकार और सफलता ही सतयुगी राजाई का आधार है। तो उसकी कलम भी ऐसी ही आत्माओं के सम्बन्ध से लगेगी।

Q. सतयुग की राजाई कैसे स्थापन होगी अर्थात् क्या श्रीकृष्ण और उनके समकक्ष अष्ट राजाओं को राजाई अपने माता-पिता से उत्तराधिकार के रूप में मिलेगी या विनाश के बाद खेलपाल के समान श्रीकृष्ण और अन्य राजाओं को उनके साथी आदि राजा चुन लेंगे या जहाँ श्रीकृष्ण और अन्य राजाओं का जन्म होगा, उन एडवान्स पार्टी वालों को ऐसे खेलपाल में राजा चुन लिया जायेगा क्योंकि विनाश के बाद विश्व में अनेक प्रकार की उथल-पुथल होगी, पृथ्वी की दिशा और दशा में परिवर्तन होगा, अनेक लोग दर-बदर होंगे फिर सतयुग की राजाई कैसे स्थापन होगी ?

बाबा ने कहा है कि जब लक्ष्मी-नारायण गद्दी पर बैठेंगे तो उस समय इस पुरानी दुनिया की न कोई चीज होगी और न इस पुरानी दुनिया का कोई मनुष्य होगा और यदि नारायण को राजाई अपने माता-पिता से उत्तराधिकार के रूप में मिलेगी, तो नम्बर - 1. उनके माता-पिता को पुरानी दुनिया का कहेंगे या नई दुनिया का क्योंकि वे भी कम से कम उस समय 70-75 साल के जरूर होंगे और उन्होंने विकारी बीज से ही जन्म लिया होगा,

2. अभी कलियुग में कहाँ भी राजाई नहीं है तो वह राजाई कैसे स्थापन होगी अर्थात् उसका विधि-विधान और आधार क्या होगा ?

यदि श्रीकृष्ण का बाप राजा होगा और राजाई देकर जायेगा तो स्वर्ग की स्थापना में कितना समय लगेगा क्योंकि अभी कोई राजाई नहीं है और विनाश होगा और विनाश के बाद राजाई स्थापन होगी, जिस घर में श्रीकृष्ण और उनके समकक्ष राजकुमारों का जन्म होगा और उनके बाप उनको राजाई देंगे।

''प्रलय हो तो फिर यह भारतखण्ड ही न रहे। परन्तु यह भारत अविनाशी खण्ड है। यहाँ बहुत रह जाते हैं। ... कलियुग विनाश हो सतयुग की स्थापना होने में बीच का थोड़ा सा यह टाइम मिलता है, जिसमें थोड़े रह जाते हैं, जो नये सिर अपनी राजधानी बनाते हैं।''

सा.बाबा 7.2.08 रिवा.

''माया विघ्न भी डालती है। सहज हो तो फिर सब पास कर लें। लाखों की माला बन जाये। यह तो ड्रामा बड़ा कायदे अनुसार बना हुआ है। ... यहाँ किंगडम स्थापन हो रही है। बाप ही आकर किंगडम स्थापन करते हैं। और कोई प्रीसेप्टर किंगडम नहीं स्थापन करते हैं। यह बड़ा वण्डरफुल राज़ है। सतयुग में लक्ष्मी-नारायण का राज्य कहाँ से आया ? कलियुग में तो राजाई है नही।''

सा.बाबा 24.3.08 रिवा.

परमात्मा अभी आत्माओं में राजाई के संस्कार भर रहे हैं, जिन संस्कारों के अनुसार सतयुग के आदि में राजाई की स्थापना होगी।

''प्रलय हो तो फिर यह भारतखण्ड ही न रहे। परन्तु यह भारत अविनाशी खण्ड है। यहाँ बहुत रह जाते हैं। ... कलियुग विनाश हो सतयुग की स्थापना होने में बीच का थोड़ा सा यह टाइम मिलता है, जिसमें थोड़े रह जाते हैं, जो नये सिर अपनी राजधानी बनाते हैं।''

सा.बाबा 7.2.08 रिवा.

Q. सतयुगी चक्रवर्ती राजाई और समानान्तर राजाइयों की स्थापना की नींव विनाश के पहले होगी या विनाश के बाद होगी ? सतयुगी राजाई की स्थापना की नींव पुरानी दुनिया की आत्माओं से पड़ेगी या एडवान्स पार्टी की आत्माओं के द्वारा पड़ेगी या सतयुग की प्रथम

राजाइयों में राजा बनने वाली आत्माओं के द्वारा होगी ?

विवेक कहता है कि सतयुग के आदि के विधि-विधानों की नींव एडवान्स पार्टी की आत्माओं से ही होना चाहिए। जैसे योगबल से जन्म देने का विधि-विधान और उसका अविष्कार एडवान्स पार्टी की आत्मायें करेंगी, वैसे ही सतयुगी राजाई की स्थापना की नींव भी एडवान्स पार्टी की आत्माओं के द्वारा ही होनी चाहिए।

अभी तो विश्व में कहाँ भी राजाई नहीं है और सतयुग में राज-व्यवस्था राजाई की होती है तो फिर से राजाई स्थापन करने के लिए भी किसी आत्मा को निमित्त बनना ही है, वह काम भी दादी और एडवान्स पार्टी की अन्य आत्माओं को मिलकर करना है, उसके सम्बन्ध में भी बाबा ने दादी को बताया होगा। जो पुराने राजघराने हैं, उनसे सतयुग की राजाई की कलम लगने की बात जंचती नहीं है क्योंकि उनके जीवन व्यवहार, खानपान को देखें तो साधारण व्यक्तियों से भी पतित है। ऐसे में सतयुग की राजाई की स्थापना किन्हीं भक्त आत्माओं के द्वारा ही होनी चाहिए, इसलिए ही बाबा ने दादी को भक्त-आत्माओं के घर में भेजने की अर्थात् जन्म लेने की बात कही है।

Q. सूर्यवंशी डायनेस्टी, चन्द्रवंशी में कैसे बदलती है ?

Q. सतयुग के बाद जब त्रेता की आदि में सूर्यवंशी से चन्द्रवंशी राजाई परिवर्तन होती है तो उसी लक्ष्मी-नारायण के घराने का राम राजा बनता है या राजाई परिवार भी परिवर्तन होता है ? यदि परिवर्तन होता है तो कैसे ?

विवेक कहता है कि त्रेता में प्रथम राम-सीता बनने वाला लक्ष्मी-नारायण के घराने का ही होता होगा। ड्रामा अनुसार जब सतयुग का समय पूरा हो जाता है और त्रेता का आरम्भ होता है उस समय सतयुग के अन्तिम चक्रवर्ती लक्ष्मी-नारायण का उत्तराधिकारी त्रेता के आदि में गद्दी पर बैठता होगा, तो उसको ड्रामानुसार संकल्प उठता होगा और वह गद्दी का नाम लक्ष्मी-नारायण से बदलकर राम-सीता रख लेता होगा और उसको देखकर अन्य समानान्तर राजायें भी गद्दी का नाम बदली कर लेते होंगे। राजपरिवार के परिवर्तन की बात नहीं होती क्योंकि वहाँ स्वर्ग में राजाई की छीना-झपटी की तो कोई बात ही नहीं होती। त्रेता भी स्वर्ग ही है परन्तु स्तर गिर जाता है।

''ऐसे नहीं कि चन्द्रवंशियों ने सूर्यवंशियों पर जीत पाई। नहीं, जो चन्द्रवंशी का राजा होता है तो सूर्यवंशी राजा-रानी उनको राज्य भाग्य का तिलक दे तख्त पर बिठाते हैं और उनको राजा राम, रानी सीता का टाइटिल मिलता है। किसने दिया ? कहेंगे सूर्यवंशियों ने ट्रान्सफर

किया कि अब तुम राज्य करो। यह सीन भी बच्चों ने साक्षात्कार में देखी है।''

सा.बाबा 15.6.06 रिवा.

Q. चन्द्रवंश में जो चक्रवती राजा-रानी बनेंगे, वे परमधाम से नई आत्मायें आयेंगी या जो पहले से चले आ रहे हैं, उनमें से ही बनेंगे ?

विवेक कहता है कि मुख्य चक्रवर्ती गद्दी पर बैठने वाली आत्मायें परमधाम से आने वाली नई आत्मायें होनी चाहिए और पहले से आने वाले राजा-रानी, राज-परिवार के उस राजाई में ऊंच पदों पर अवश्य होंगे।

''यह है ईश्वरीय लॉटरी। एक तो बाप को याद करना है, दूसरा दैवी गुण धारण करने हैं और राजा-रानी बनना है तो प्रजा भी बनानी है।... यह है ब्राह्मणों का कुल। मैं एक कुल और दो डायनेस्टी बनाता हूँ। डबल सिरताज सूर्यवंशी महाराजा-महारानी, चन्द्रवंशी राजा-रानी।''

सा.बाबा 4.9.04 रिवा.

''यह है बेहद की पढ़ाई। सूर्यवंशी बनेंगे या चन्द्रवंशी बनेंगे, वह मालूम पड़ जाता है। चन्द्रवंशी जब राजा-रानी बनते हैं तो उनके आगे सूर्यवंशी जैसे सेकेण्ड नम्बर में हो जाते हैं। राम-सीता का जब राज्य चलता है तो लक्ष्मी-नारायण छोटे हो जाते हैं। सूर्यवंशी नाम ही खत्म हो जाता है। यह नॉलेज बड़ी रमणीक है।''

सा.बाबा 9.3.07 रिवा.

Q. चक्रवर्ती राजा, राजा-रानी, राजाई परिवार, नौकर-चाकर, दास-दासियाँ, रायल प्रजा और साधारण प्रजा बनने वालों की वर्तमान में क्या पहचान है, उनके क्या स्वभाव-संस्कार होंगे ?

चक्रवर्ती राजा - जिन आत्माओं में ज्ञान की यथार्थ धारणा होती और परमात्मा की अव्यभिचारी याद होती। पूर्ण नष्टोमोहा होंगे, जिनका अपनी स्थूल-सूक्ष्म कर्मेन्द्रियों पर पूर्ण नियन्त्रण (Controling & Ruling Power) होता है, सारे विश्व की आत्माओं के प्रति निस्वार्थ प्यार होता है, मन्सा-वाचा-कर्मणा, तन-मन-धन से विश्व की सर्वात्माओं की सेवा करते हैं। यज्ञ अर्थात् परमात्मा के प्रति सम्पूर्ण समर्पित होते हैं। पवित्रता की धारणा आदि से ही पक्की होगी, जिससे सेवा में सफलता अच्छी होगी। फॉलो फादर होंगे। सदा सम्पन्न और सन्तुष्ट होंगे, सदा देने की भावना वाले होंगे, लेने का संकल्प भी नहीं होगा अर्थात् सर्व के प्रति दाता-वरदाता होंगे।

''वह दे तब मैं दूँ, यह भिखारीपन के संस्कार हैं। दाता के बच्चे कभी लेने का हाथ नहीं फैलाते। बुद्धि से भी यह संकल्प करना कि यह करे तो मैं करूँ, यह स्नेह दे तो मैं दूँ, यह मान

दे तो मैं दूँ। यह भी हाथ फैलाना है। यह भी रॉयल भिखारीपन है। इसमें निष्काम योगी बनो।''

अ.बापदादा 16.02.86

राजा-रानी - जिन आत्माओं में ज्ञान की यथार्थ धारणा होती है और परमात्मा की अव्यभिचारी याद होती है। पूर्ण नष्टोमोहा होते हैं परन्तु अलौकिक प्रवृत्ति में मोह जाग्रत हो जाता है। अपनी स्थूल-सूक्ष्म कर्मेन्द्रियों पर पूर्ण नियन्त्रण होता है। यज्ञ में सम्पूर्ण समर्पित होते भी किसी सेन्टर या क्षेत्र विशेष में सेवा का लगाव होता है। पवित्रता की धारणा आदि से ही पक्की होती है। दातापन का संस्कार होगा, लेने की इच्छा नहीं होगी।

''हर एक ने कितनी प्रजा बनाई है? ... जैसे रोज़ का चार्ट देखते हो, वैसे प्रजा बनाने का भी चार्ट रखना चाहिए। ... राजा बनने के लिए प्रजा तो सबको बनानी है।''

अ.बापदादा 19.4.69

शाही परिवार - संस्कार शालीनता के होंगे लेकिन स्वतन्त्र रूप से सेवा करने में समर्थ नहीं होंगे, किसी के आधार पर सेवा करने वाले होंगे अर्थात् एक परमात्मा का आधार न लेकर किसी व्यक्ति विशेष के आधार पर चलते हैं।

नौकर-चाकर - किसी विषेष कला के आधार पर यज्ञ में समर्पित हो जायेंगे परन्तु ज्ञान-योग में इतनी अभिरुचि नहीं होगी। अन्य सेवाओं में भी रुचि नहीं होगी। पवित्रता की धारणा भी यथाशक्ति होगी। यज्ञ के साधन-सम्पत्ति का उपभोग अधिक करेंगे, लौकिक सम्बन्धियों और व्यक्तियों के प्रति लगाव होगा, लेनदेन करते रहेंगे। ऐसी आत्मायें वहाँ जाकर नौकर-चाकर बनेंगे।

दास-दासियाँ - यज्ञ में किसी आत्मा विशेष के हितार्थ समर्पित होंगे, उस आत्मा की कमाई पर आधारित होंगे अर्थात् स्वतन्त्र रूप से अपनी कमाई करने की न शक्ति होगी और न ही संकल्प होगा। उस आत्मा की सेवा में ही अपना स्वमान अनुभव करेंगे। उस आत्मा के आगे परमात्मा को भी भूले हुए होंगे। अपनी ज्ञान-योग और अन्य आत्माओं की सेवा की कमाई विशेष नहीं होगी। पवित्रता की धारणा अच्छी होगी। छोटी-छोटी बातों में उदास हो जायेंगे, सदा खुशी नहीं रहेगी। अपनी सर्व कर्मेन्द्रियों पर भी नियन्त्रण नहीं होगा।

रायल प्रजा - अपनी स्थूल-सूक्ष्म कर्मेन्द्रियों पर पूर्ण नियन्त्रण होगा, तन-मन-धन से यज्ञ सेवा करेंगे परन्तु यज्ञ में समर्पित होने की शक्ति नहीं होगी। ज्ञान-योग होगा परन्तु देह और देह के सम्बन्धों से नष्टोमोहा नहीं होंगे। पवित्रता की अच्छी धारणा होगी। सेवा में भी यथा शक्ति समय देने वाले होंगे।

साधारण प्रजा - अपनी स्थूल-सूक्ष्म कर्मेन्द्रियों पर नियन्त्रण होगा परन्तु पूर्ण रूप से नहीं होगा।

तन-मन-धन से यथा शक्ति यज्ञ सेवा करेंगे परन्तु यज्ञ में समर्पित होने की शक्ति नहीं होगी। ज्ञान-योग भी यथा शक्ति होगा, देह और देह के सम्बन्धों से नष्टोमोहा नहीं होंगे। पवित्रता की धारणा धीरे-धीरे होगी और अन्त में सफल होंगे।

''अभी बाप टीचर बनकर पढ़ा रहे हैं।... स्वदर्शन चक्रधारी बनने से फिर चक्रवर्ती महाराजा-महारानी बनते हो... राजा कौन बनता है और प्रजा, दास-दासी कौन बनते हैं, वह अभी ही सारा पढ़ाई से पता पड़ता है।'' सा.बाबा 3.6.08 रिवा.

''बाप का बनकर अन्दर (यज्ञ में) रहकर रुहानी सर्विस नहीं करते, वे जाकर दास-दासियाँ बनते हैं, फिर पिछाड़ी में नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार ताज मिल जाता है। उन्हों (दास-दासियों) का भी घराना होता है, वे प्रजा में नहीं आ सकते। कोई बाहर का आये अन्दर वाला नहीं बन सकता। वल्लभाचारी बाहर वालों को कभी अन्दर आने नहीं देते। यह सब समझने की बातें हैं।'' सा.बाबा 2.9.04 रिवा.

''ऐसे कर्मेन्द्रियजीत बनो तब प्रकृतिजीत बन कर्मातीत स्थिति के आसनधारी सो विश्व-राज्य अधिकारी बन सकेंगे।... जो किसी भी समस्या या संस्कार के अधीन बन उदास रहता है, तो यह उदासी निशानी है कि दास-दासी बनने की।... ज्ञान रत्नों का खज़ाना बहुत है, सेवा करके पुण्य का खाता जमा किया लेकिन कन्ट्रोलिंग-रूलिंग पॉवर नहीं है... साहूकार बनने वाले हैं। तो चेक करो 'मैं कौन' ?'' अ.बापदादा 18.1.08 रिवा.

''जब चाहो तब संकल्प में आओ, विस्तार में आओ और जब चाहो तब विस्तार को फुल स्टॉप में समा दो। स्टार्ट करने और स्टॉप करने की दोनों ही शक्तियां समान रूप में हैं? ... ऐसे कर्मेन्द्रिय जीत बनो तब प्रकृतिजीत बन कर्मातीत स्थिति के आसनधारी सो विश्व-राज्य अधिकारी बन सकेंगे।'' अ.बापदादा 18.1.08 रिवा.

''कितने भी संकल्प-विकल्प, तूफान आयें, सारी रात संकल्पों में नींद फिट जाये तो भी डरना नहीं है। बहादुर रहना है। ... युद्ध का मैदान है ना तो ये सब आयेंगे जरूर। तुम युद्ध करते हो माया को जीतने के लिए। बाकी इसमें कोई स्वांस आदि बन्द नहीं करना है। ... बहुत बच्चे हैं जो युद्ध करते नहीं हैं। समझा जाता है राजधानी स्थापन हो रही है तो नापास भी बहुत होंगे। गरीब प्रजा भी चाहिए। भल वहाँ दुख नहीं होता है परन्तु गरीब और साहूकार तो हर हालत में होंगे।'' सा.बाबा 18.8.04 रिवा.

''सतयुग में दुख की कोई भी बात होती ही नहीं। प्रजा के पास थोड़ेही इतना धन माल आदि होता है। बाकी हाँ, सुख होगा, आयु बड़ी होगी। राजधानी में राजा-रानी, दास-दासी, साहूकार-

गरीब प्रजा सब चाहिए ना।'' सा.बाबा 12.8.04 रिवा.

''जिन्होंने कल्प पहले जो पुरुषार्थ किया है, वह हम साक्षी होकर देखते हैं। एक होता है राजाई घराना, दूसरा होता है प्रजा घराना। प्रजा में भी कोई बहुत साहूकार होते हैं, कोई कम। राजाओं में भी कोई बहुत साहूकार होते, कोई कम होते हैं।'' (Q. दोनों घरानों के भातियों के पुरुषार्थ में मूलभूत अन्तर क्या देखने में आयेगा ?)

सा.बाबा 28.7.06 रिवा.

''108 पक्के सन्यासी विजय माला के दाने बनने वाले हैं ... घर में योग लगाते-लगाते कोई फिर अन्दर आ जाते हैं तो प्रजा से वारिस बन जाते हैं। ... जो सन्यास करते हैं, वे वारिस बन जाते हैं। उनको रॉयल घराने में अवश्य ले जाना है। लेकिन अगर ज्ञान इतना नहीं उठाया तो पद नहीं पायेंगे।'' सा.बाबा 11.10.06 रिवा.

''एक है 108 की माला, दूसरी है फिर उससे बड़ी 16108 की माला। वह है चन्द्रवंशी घराने की रॉयल प्रिन्स-प्रिन्सेज की माला। जो इतना ज्ञान नहीं उठा सकते, पूरा प्योरीफाय नहीं बनते हैं तो सजायें खाकर चन्द्रवंशी घराने की माला में चले जायेंगे। ... यह राज़ भी तुम अभी सुनते हो, जानते हो। वहाँ यह ज्ञान की बातें नहीं रहती हैं। यह ज्ञान सिर्फ अब संगमयुग पर मिलता है।... जो पूरा कर्मेनद्रियों को नहीं जीतेंगे, वे चन्द्रवंशी घराने की माला में चले जायेंगे। जो जीतेंगे, वे सूर्यवंशी घराने में आयेंगे।'' सा.बाबा 11.10.06 रिवा.

Q. स्वर्ग के आदि में आने वालों में राजा-प्रजा-दास-दासी बनने वालों और त्रेता में आने वाले राजा-रानी, प्रजा, दास-दासी में मूलभूत अन्तर क्या होगा ?

बाबा ने कहा है - जो स्वराज्य अधिकारी बन अपनी कर्मेन्द्रियों के राजा बनते हैं, वे ही स्वर्ग में राजा-रानी बनते हैं क्योंकि वे ही यथार्थ रीति सेवा कर सकते हैं अर्थात् प्रजा बनाते हैं। राजाओं के दास-दासी भी उनमें से ही बनते हैं, जो समर्पित होते हैं परन्तु सेवा नहीं करते, अपने संस्कारों को परिवर्तन नहीं करते हैं। जो ज्ञान को अच्छी रीति समझते हैं, सेवा भी करते हैं परन्तु समर्पित नहीं होते अर्थात् समर्पित होने में डरते हैं कि बाबा हमारी साधन-सम्पत्ति को ले लेंगे, यज्ञ में रहकर चल सकेंगे या नहीं चल सकेंगे, इसलिए वे प्रजा में आ जाते हैं और उनके दास-दासी भी प्रजा से ही बनते हैं।

जो बाद में आते हैं और पूरा पावन नहीं बन पाते लेकिन संकल्प रखते हैं पावन बनने का, वे त्रेता में आ जाते हैं परन्तु जो बाद में आते हैं और पूरा सरेण्डर होकर स्वराज्य अधिकारी बन सेवा करते हैं, वे सतयुग में भी राजा-रानी बन सकते हैं, जिनके लिए बाबा ने कहा है - लॉस्ट सो फास्ट और फास्ट सो फर्स्ट। अब प्रश्न उठता है कि वर्तमान में कितने ऐसे पावन बनें हैं, जो

सतयुग में आने के लायक हैं और सतयुग की स्थापना कब और कैसे होगी।

जो सम्पूर्ण पावन बनेंगे, आने से ही जिनकी धारणा अच्छी होगी, वे सतयुग के आदि में आयेंगे परन्तु राजा बनेंगे या प्रजा बनेंगे, यह उनकी सेवा पर निर्भर करती है। त्रेता में राजा बनने वाले पावन बनेंगे लेकिन धीरे-धीरे परन्तु सेवा बहुत अच्छी करेंगे, प्रजा बनायेंगे। ऐसे ही प्रजा वालों को भी धीरे-धीरे निश्चय होगा और धीरे-धीरे पावन बनेंगे। अन्त तक गिरते-चढ़ते रहेंगे।

''भले चले गये परन्तु ऐसे मत समझना कि वे स्वर्ग में नहीं आयेंगे। परवाने बनें, आशिक हुए, फिर माया ने हरा दिया तो भी स्वर्ग में आयेंगे परन्तु पद कम पायेंगे।''

सा.बाबा 30.4.04 रिवा.

तुम्हारे में साहूकार कौन बनते हैं? जो सब कुछ बाप को दे देते हैं। कहते हैं - बाबा यह सब कुछ आपका है। भारत में ही बाप की महिमा सौदागर, जादूगर, रत्नागर ... गाई जाती है। ... भारत की महिमा बहुत है। भारत जितना ऊंच देश कोई हो नहीं सकता है। भारत ही परमपिता परमात्मा का बर्थ प्लेस है।

सा.बाबा 28.4.08 रिवा.

''श्रीमत पर चलने से कब कोई नुकसान नहीं है। ... तुमको सगे और सौतेले का राज़ भी समझाया है। सगे पर बाप का ध्यान रहता है। सगे राजाई का वर्सा लेंगे, लगे प्रजा का वर्सा लेंगे। डिटी किंगडम स्थापन हो रही है।''

सा.बाबा 6.5.08 रिवा.

Q. सतयुगी और त्रेतायुगी समाज में मनुष्यों की कौन-कौन श्रेणियां होंगी, उनके गुण-कर्तव्य-धर्म-संस्कार क्या होंगे, जिसके कारण वे एक-दूसरे से भिन्न होंगे और उन गुण-कर्तव्यों-धर्म-संस्कारों का वर्तमान से क्या सम्बन्ध है?

समाज में ब्राह्मण, क्षत्रीय, वैश्य, शूद्र वर्ण-व्यवस्था तो द्वापरयुगी वर्ण-व्यवस्था है। सतयुगी-त्रेतायुगी समाज में मुख्यता राजा-रानी, राजाई घराना, दास-दासी, नौकर-चाकर, प्रजा के रूप में होंगे। इन सबके संस्कार वर्तमान संगमयुग पर ही भरते हैं। वर्तमान पुरुषार्थी जीवन में समर्पित जीवन, स्टूडेण्ट्स जीवन, ट्रस्टी जीवन आदि-आदि हैं। समर्पित जीवन में टीचर्स का जीवन और समर्पित होकर अन्य प्रकार की सेवा करने वालों का जीवन है। अपनी लेखनी द्वारा दूसरों की सेवा करने वाले भी हैं परन्तु इन सबमें आत्मा की आन्तरिक स्थिति का विशेष महत्व है। जिनका इन्द्रियों पर पूर्ण शासन है, यज्ञ के वफादार-ईमानदार हैं, उसका भी वहाँ की प्राप्ति पर प्रभाव होता है।

किसी सेवा विशेष में निपुणता है परन्तु इन्द्रियों पर शासन नहीं, यथार्थ निश्चय नहीं, ज्ञान-योग

की स्थिति पक्की नहीं परन्तु यज्ञ में सेवा करते हैं, उसका अपना प्रभाव होगा।
तन-मन-धन से सहयोगी हैं, दूसरों को प्रेरणा-स्रोत हैं, उसका भी महत्व होगा।

वर्तमान में मजदूरी करते हैं, जिससे सम्बन्ध-सम्पर्क में आते हैं, यज्ञ की प्रेम से सेवा करते हैं परन्तु ज्ञान-योग में यथार्थ निश्चय नहीं है, उसका भी वहाँ के जीवन में प्रभाव होगा क्योंकि वे भी हमारे स्वभाव-संस्कार से सम्बन्धित हैं, उनका भी यज्ञ व्यवस्था में महत्व है।
वर्तमान के वैज्ञानिक और टेक्नीशियन, जिनका ज्ञान और योग्यता, अविष्कार सतयुग की स्थापना में मददगार बनती है, इसलिए वहाँ के जीवन में उनका भी स्थान अवश्य होगा।
साइन्स में जो काम की चीजें हैं, वे वहाँ भी होंगी। उनको बनाने वाले भी वहाँ जायेंगे। वे राजा तो बनेंगे नहीं। वे लोग पिछाड़ी में तुम्हारे पास आयेंगे, फिर औरों को भी सिखायेंगे।... वहाँ भी साइन्स तो चाहिए ना। सा.बाबा 6.7.04 रिवा.

जो ज्ञान-योग में अच्छे चले, तन-मन-धन, साधन-सम्पत्ति से सेवा की फिर पतित बन गये ट्रेटर बन गये, उनका भी वहाँ के जीवन में स्थान होगा और उनके कर्म-संस्कारों का वहाँ की समाज व्यवस्था में स्थान होगा।

पहले आत्मायें आई, नियम-संयम से रहीं, सेवा की और शरीर छोड़कर चली गई और जो अन्त तक नियम-संयम से रहीं, सेवा की उसका भी वहाँ के जीवन पर प्रभाव होगा।

जो आत्मायें यज्ञ में समर्पित हुई पवित्रता को धारण किया परन्तु यज्ञ सेवा में विशेष रुचि नहीं रखी, उसका भी वहाँ के जीवन में प्रभाव होगा।

वर्तमान में लव एण्ड लॉ के बैलेन्स से शासन चलाने वाले, कूटनीति से सत्ता हथियाने वाले और चलाने का भी वहाँ के जीवन पर प्रभाव होगा।
''पुरुषार्थ से पद तो स्पष्ट हो ही जाता है। एक होते हैं विश्व के राजे तो विश्व-महाराजन के साथ अपने राज्य के राजे भी होते हैं। ... जो विश्व-महाराजन बनने हैं उनका इस विश्व अर्थात् ब्राह्मण कुल के हर आत्मा के साथ सम्बन्ध होगा। ... जो पूरा दैवी परिवार है उन सर्व आत्माओं का किस न किस प्रकार से सहयोगी बनना होगा।''

अ.बापदादा 25.12.69

''सतयुग से लेकर कलियुग अन्त तक सारी हिस्ट्री-जॉग्राफी रिपीट होती है। यह तो जानना चाहिए ना। दुखधाम-सुखधाम, नर्क-स्वर्ग क्यों कहा जाता है ? सारा मदार है पतित और पावन होने पर। इसलिए बाप कहते हैं - काम महाशत्रु है, इसको जीतने से जगतजीत बनेंगे।''

सा.बाबा 7.7.04 रिवा.

Q. किस बात में फेल होंगे, जिससे कोई चन्द्रवंशी बनेंगे और त्रेता में आयेंगे ?

देही-अभिमानी स्थिति को धारण करने में। शत प्रतिशत देही-अभिमानी को ही पूर्ण पवित्र कहा जायेगा। शत प्रतिशत या उसके निकटतम अष्ट रतन ही होते हैं। बाकी सभी नम्बरवार होते हैं। जो इस स्थिति में एक निश्चित सीमा के बाहर हो जाते हैं, वे फेल कहे जायेंगे और वे चन्द्रवंशी में जायेंगे। देही-अभिमानी स्थिति ही ब्रह्मचर्य की धारणा का मूलाधार है। यह विचारणीय बात है परन्तु विवेक कहता है कि मूल बात जो मन्सा-वाचा-कर्मणा ब्रह्मचर्य की है, उसमें ही फेल होते होंगे।

Q. सतयुग की प्रथम आठ राजाइयों में कौन-कौन राजा-रानी होंगे या हो सकते हैं ?

Q. अष्ट रतनों की गणना दिल्ली की चक्रवर्ती गद्दी पर क्रमानुसार (Vertical order) बैठने वालों में से होगी या समानान्तर (Horizontal order) चलने वाली अन्य राजाइयों में राजा बनने वालों में से होगी ?

Q. अष्ट रतन, जिनके सुमिरन से आत्माओं की ग्रहचारी उतर जाती है और 108 विजयी रतन, जिनकी भक्त आत्मायें माला सुमिरन करते, वे कौन होंगे ?

Q. प्रथम लक्ष्मी-नारायण के समानान्तर (Horizontal) राजाओं और चक्रवर्ती लक्ष्मी-नारायण की गद्दी पर क्रमानुसार (Vertical) गद्दी पर बैठने वालों में कौन महान हैं ?

ये भी विचारणीय बात है। जो अधिक महान होंगे, वे ही अष्ट रत्न में गिने जायेंगे। सतयुग के आदि में कम से कम आठ राजाइयां तो अवश्य होंगी, वे कहाँ-कहाँ और कैसे होंगी, उनमें कौन-कौन राजा होंगे आदि-आदि विचारणीय तथ्य हैं। विवेक कहता है कि अष्ट रतनों का जो गायन है, वे उन समानान्तर राजाइयों वाले ही होने चाहिए क्योंकि नम्बरवार चक्रवर्ती गद्दी पर बैठने वाले तो सतयुग के आदि में नहीं आ सकते हैं, कुछ साल बाद ही आयेंगे, वे पूर्ण सम्पूर्णता का सुख भी अनुभव नहीं कर सकेंगे।

अब इन प्रथम राजाइयों में कौन-कौन राजा-रानी बनेंगे, यह भी विचारणीय है। यज्ञ के इतिहास को देखते हुए निम्नलिखित नाम मुख्य हैं -

1. राजस्थान में मम्मा-बाबा तो प्रथम गद्दी के लिए निश्चित हैं। इसके अतिरिक्त विभिन्न स्थानों सेवा करने वाले अर्थात् राजाइ स्थापन करने वालों में -

2. दिल्ली में मनमोहिनी दीदी, आलाराउण्डर दादी,

3. कलकत्ता में निर्मलशान्ता दादी,

4. पटना में और फिर बाद में यज्ञ के मुख्यालय में प्रकाशमणी दादी,

5. पंजाब में चन्द्रमणी दादी,

6. बाम्बे में पुष्पशान्ता दादी, बृजेन्द्रा दादी,

7. यू.पी. में आत्म इन्द्रा दादी,

8. लखनऊ में शान्तामणी दादी, गुल्जार दादी,

9. पूना में जानकी दादी,

10. बैंगलौर में टिक्कन दादी आदि, जिन्हों ने जिन्होंने वहाँ अपनी-अपनी सेवा की राजाई बनाई है, सेवा की है।

इसके अतिरिक्त विशेषात्मायें

मनोहर दादी, ध्यानी दादी, कमलसुन्दरी दादी, सन्तरी दादी, मिट्ठू दादी, रतनमोहिनी दादी, भाऊ विश्वकिशोर, दादा विश्वरतन, आनन्दकिशोर दादा, दादा रतनचन्द, दादा रीजूमल, आदि आदि का नाम भी विशेष है, उनमें से कौन हो सकते हैं।

दादी प्रकाशमणी और दीदी मनमोहिनी ने तो ब्रह्मा बाबा के बाद सारे विश्व की सेवा की है, इसलिए उनका विशेष पार्ट होगा ही।

ब्रह्मा बाबा के अव्यक्त होने के बाद मुख्य दादियों की जो भट्ठी हुई थी, जिसमें - दादी प्रकाशमणी, दादी चन्द्रमणी, हृदयमोहिनी दादी, दादी आत्म इन्द्रा, मनोहर दादी, शान्तामणी दादी, रतनमोहिनी दादी, बृजशान्ता दादी, मिट्ठू दादी,

दीदी मनमोहिनी, जानकी दादी, पुष्पशान्ता दादी, आलराउण्डर दादी, बृजेन्द्रा दादी,

निर्मलशान्ता दादी, ध्यानी दादी, कमलसुन्दरी दादी, सन्तरी दादी उनके नाम भी विचारणीय हैं।

वर्तमान में चार भाई जगदीश भाई, निर्वैर भाई, रमेश भाई, बृजमोहन भाई

इन सबसे कौन समानान्तर राजाई में होंगे और कौन अष्ट रत्नों में होंगे। जो अष्ट रत्नों में होंगे, वे समानान्तर राजाइयों में होंगे या मूल चक्रवर्ती राजा के साथ साथी-सहयोगियों में से होंगे। इस सबमें महत्वपूर्ण बात ये है कि अष्ट रत्न बनने वाले सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता की प्रतिमूर्ति अवश्य होने चाहिए।

यज्ञ के इतिहास में इनके अतिरिक्त आदि से अब तक और अब से अन्त तक पर विचार करें तो और भी कई विशेष आत्मायें हैं, जिनके विषय में हम नहीं जान सकते हैं परन्तु

उनका खाता बाबा के पास है और उनको बाबा और ड्रामा ही जानता है, वे भी अपना स्थान लेंगे।

अष्ट रत्न में - जिनका पुरुषार्थ अष्ट रत्नों का था और पुरुषार्थ करते हुए देह त्याग कर एडवान्स पार्टी में गये, वे अष्ट रत्नों में आयेंगे या बाद में जो यज्ञ में ऊंचे पदों पर रहे और पुरुषार्थ भी अच्छा किया, वे अष्ट रत्नों में आयेंगे।

Q. सतयुगी राजाई की स्थापना कब और कैसे ?

Q. क्या श्रीकृष्ण का जन्म किसी राजा के घर में होगा या वह जन्म के बाद राजा बनेगा या लक्ष्मी-नारायण से ही राजाई की स्थापना होगी ?

क्रमानुसार आने वाले द्वितीय और तृतीय लक्ष्मी-नारायण स्वर्ग की आदि के 50-100 साल बाद आयेंगे, जिससे वे सतयुग का सतोप्रधान सुख का अनुभव नहीं कर पायेंगे, इसलिए अष्ट रतन की गिनती क्रमानुसार में से होगी या समानान्तर में से होगी, ये भी विचारणीय है।

''नई दुनिया, नया युग था, तब भारत में बरोबर देवी-देवताओं का राज्य था।... मैं गाइड भी हूँ, पीस-मेकर भी हूँ। पीस स्थापन करता हूँ, सावरण्टी भी स्थापन करता हूँ।''

सा.बाबा 19.5.08 रिवा.

''कृष्ण का कितना नाम गाया जाता है, उनके बाप का नाम ही नहीं। ... वह पतित राजा होने के कारण उनका नाम थोड़ेही होगा। कृष्ण जब जन्म लेता तब थोड़े पतित भी रहते हैं। जब वे बिल्कुल खलास हो जाते हैं तब वह गद्दी पर बैठता है। तब से ही उनका संवत शुरू होता है।'' सा.बाबा 9.8.06 रिवा.

कृष्ण को उनके मां-बाप गद्दी पर बिठायेंगे या उनके साथ पैदा होने वाली पावन आत्मायें उनको गद्दी पर बिठायेंगे अर्थात् राजा बनायेंगे, इसके बाबा के उपर्युक्त महावाक्यों पर विचार करना अति आवश्यक है।

Q. सतयुग-त्रेता में राजायें अपनी कन्या को शादी के समय दास-दासियां दहेज में देते हैं तो उनकी शादी आदि का क्या विधि-विधान क्या होगा या शादी किये हुए दास-दासी युगल ही दहेज में देते होंगे ?

''वहाँ महाराजाओं के पास दास-दासियां तो बहुत होती हैं, जो फिर दहेज में भी देते हैं। ... पुरुषार्थ करके अच्छा पद पाना चाहिए।'' सा.बाबा 11.12.06 रिवा.

Q. सतयुगी सृष्टि में ऊंच पद किसका होगा अर्थात् जो यहाँ नियम-संयम, त्याग-तपस्या कर

सादा जीवन व्यतीत करते हैं और यज्ञ सेवा में रहते हैं या जो कूटनीति से साधन-सम्पत्ति, सुख-साधनों का उपभोग करते हुए यज्ञ सेवा कर रहे हैं और दूसरों पर शासन करने का प्रयत्न करते हैं ?

सतयुगी सृष्टि श्रृद्धा-भावना से युक्त सृष्टि है इसलिए उसमें राज्य कारोबार भी श्रृद्धा और भावना के आधार पर ही चलेगा, इसलिए वहाँ त्याग-तपस्या, नियम-संयम से यज्ञ सेवा करने वालों का ही ऊंच पद होगा, कूटनीति से सेवा करने वालों का नहीं। वहाँ के पद के लिए निर्णय करने में भी कर्म के स्वरूप से भी आत्माओं की सेवा में भाव-भावना, त्याग-तपस्या का महत्व प्रधान होगा। इसलिए बाबा ने कई बार कहा है, जो निमित्त् और निर्माण भाव से सेवा करते हैं, वही सच्ची सेवा है और वे ही बाबा के दिल तख्त पर विराजमान होते हैं।

Q. इसी सन्दर्भ में ये विचारणीय बात है कि मुख्य गद्दियों पर बैठने वाले राजायें ऊपर से नई आत्मायें आयेंगी या जो पहले से जन्म लेकर आ रहे हैं, उनमें से ही पुनर्जन्म लेकर मुख्य गद्दी पर बैठेंगे ?

अभी की यज्ञ-कारोबार में देखते तो देखने में आता है कि नये आने वाले राज्य कर रहे हैं और पुराने प्राय: तटस्थ हो गये हैं परन्तु उन्होंने बाबा के साथ जो अतीन्द्रिय सुख भोगा है, वह उन नयों को अनुभव नहीं हो रहा है और मिल नहीं सकता। अभी नये ही जोन-इन्चार्ज आदि हैं। बाबा ने भी कहा है नये आने वाले भी माला का दाना बन सकते हैं। मधुवन हेड क्वार्टर की व्यवस्था में देखें तो भी ऐसा ही अनुभव है। जो पहले आये उन्होंने बाबा के साथ अतीन्द्रिय सुख भोगा परन्तु साधन और सत्ता का सुख तुलना में पीछे वाले अधिक भोग रहे हैं। क्या ऐसा ही सतयुग में पहले आने वालों और बाद में आकर राजा-रानी बनने वालों में भी होगा ? अर्थात् पहले अष्ट नम्बर में आने वाले, प्रकृति का सतोप्रधान सुख भोगने वाले होंगे और बाद में भी राजाई परिवार में ऊंचे पदों पर रहकर भी सुख भोगेंगे परन्तु राजा-रानी नई आने वाली आत्मायें बनेंगी।

इस विराट विश्व-नाटक में अनेक हीरो पार्टधारी हैं। कोई पूरे ड्रामा के हीरो पार्टधारी हैं, जैसे ब्रह्मा-सरस्वती। कोई समय, स्थान और परिस्थितियों के हीरो पार्टधारी हैं। जैसे अनेक धर्म-पितायें, राजायें आदि। Number one means the then Hero actor अर्थात् समय पर हीरो एक्टर। इस सम्बन्ध में बाबा ने भी कहा है - जब दूसरे नम्बर के लक्ष्मी-नारायण गद्दी पर बैठेंगे तो पहले वाले उनसे नीचे अर्थात् दूसरे नम्बर में आ जायेंगे। त्रेता में राम-सीता जब गद्दी पर बैठेंगे तो पहले लक्ष्मी-नारायण भी उनके नीचे आ जायेंगे।

Q. क्या लक्ष्मी-नारायण सतयुग में प्रतिदिन नई ड्रेस पहनेंगे ? ये जो गायन है कि लक्ष्मी-नारायण रोज नई ड्रेस पहनते हैं, इसका भाव-अर्थ क्या है ?

लक्ष्मी-नारायण प्रतिदिन और समय-समय पर नई ड्रेस पहनते हैं परन्तु इसका अर्थ ये नहीं कि एक बार पहनी ड्रेस दुबारा नहीं पहनते हैं। विचार करें - क्या ये प्रैक्टिकल है कि लक्ष्मी-नारायण प्रतिदिन नई ड्रेस पहनें और एक बार पहनी ड्रेस को फिर कभी न पहनें ? यदि लक्ष्मी-नारायण प्रतिदिन नई ड्रेस पहनेंगे तो पुरानी बहुमूल्य ड्रेसों का क्या होता होगा ?

सम्भव है एक निश्चित समय के बाद या एक साल के बाद वे ड्रेस को रिपीट करते हों या कुछ कपड़े रोज बदलते हों और कुछ नहीं या एक दिन में भी समय-समय पर अलग-अलग ड्रेस पहनते हों। परन्तु एक बार की पहनी ड्रेस फिर कभी नहीं पहनें, ये सम्भव प्रतीत नहीं होता है और यदि ऐसा होता है तो उस ड्रेस का क्या होगा, यह भी विचारणीय है कि वह कहाँ जायेगी अर्थात् क्या कोई और उसे पहनेगा और यदि पहनता है तो स्थिति क्या होगी।

Q. भगवानोवाच्य - स्वर्ग है वण्डर आफ दि वर्ल्ड। स्वर्ग में क्या विशेष वण्डर होगा ? विचार करो - वण्डर ऑफ दि वर्ल्ड सतयुग है या संगमयुग है ?

सतयुग अर्थात् स्वर्ग में साइन्स का चरमोत्कर्ष होगा, भौतिक सुख-साधन प्रचुर मात्रा में होंगे, सतोप्रधान प्रकृति का सौदर्य होगा, आत्मायें पावन होंगी, इसलिए मृत्यु का भय नहीं होगा, कोई भी प्रकार का दैहिक-दैविक-भौतिक दुख नहीं होगा। आत्मिक शक्ति होगी, जिससे आत्मा का कर्मेन्द्रियों पर शासन होगा परन्तु वहाँ आत्मा और विश्व की उतरती कला होगी। यदि हम संगमयुग की विशेषताओं को देखें और सतयुग से उनकी भेंट करें तो वण्डर ऑफ दि वर्ल्ड संगमयुग लगेगा। अभी विज्ञान भी अपनी चरम सीमा पर है, आध्यात्मिक ज्ञान भी अपनी चरम सीमा पर है, परमात्मा पिता का साथ है, तीनों लोकों, तीनों कालों का ज्ञान है, आत्मा और विश्व की चढ़ती कला का समय है। अभी हम ज्ञान सहित आत्मिक स्थिति में स्थित होकर मुक्ति-जीवनमुक्ति का सच्चा सुख अनुभव करते हैं, वह त्रिलोक और त्रिकाल में कहाँ भी उपलब्ध नहीं है, भल हमको उसको अनुभव करने में पुरुषार्थ करना पड़ता है, कोई न कोई प्रकार कर्मभोग भी आता रहता है। इन सब सत्यों पर विचार करके निर्णय करो कि वण्डर ऑफ दि वर्ल्ड क्या है। विवेक तो कहता है कि वण्डर ऑफ दि कल्प संगमयुग है और भौतिक सुखों के हिसाब से वण्डर आफ दि वर्ल्ड सतयुग है। बाबा ने प्रकृति की शोभा और भौतिक सुख-साधनों की सम्पन्नता के हिसाब से ही वण्डर ऑफ दि वर्ल्ड स्वर्ग को कहा है। परन्तु बाबा ने संगमयुग की भी बहुत महिमा की है। यदि हम अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर विचार

करेंगे तो दोनों के अन्तर का अनुभव होगा। जब हमको संगमयुग की विशेषताओं का अनुभव होगा, तब ही हम संगमयुग की विशेषताओं को समझकर उसका सच्चा सुख अनुभव कर सकेंगे।

Q. क्या सतयुग में जानवरों का दूध पियेंगे ? यदि पियेंगे तो क्यों अर्थात् सतयुग में जानवरों का दूध पीने की आवश्यकता क्यों होगी ? यदि होगी तो क्या स्वाद के लिए पियेंगे या स्वास्थ्य लाभ के लिए ? जब सतयुग में सभी स्वस्थ होंगे, तो जानवर के दूध पीने की आवश्यकता क्यों होगी ?

Q. ये प्रकृति का नियम है कि जो जिसका दूध पीता है तो उसके संस्कार-स्वभाव, गुण-धर्मों का प्रभाव पीने वाले के ऊपर अवश्य पड़ता है। तो क्या जानवरों का दूध पीने से उनके स्वभाव-संस्कारों का प्रभाव मनुष्यों पर नहीं होगा ?

प्राय: देखा गया है कि सामान्य परिस्थिति में हर योनि में अपनी माँ का दूध उसका बच्चा ही पीता है अर्थात् किसी योनि का बच्चा दूसरी योनि की माँ का दूध नहीं पीता है। मनुष्य ही ऐसा प्राणी है, जो अन्य योनियों की माताओं का दूध पीता है। हर माँ के पास दूध उसके बच्चे की पालना के लिए ही प्रकृति ने पैदा किया है, जो बच्चे के जन्म के समय ही पैदा होता है। ये मनुष्य की अपनी कमजोरी का ही प्रतीक है क्योंकि कलियुग में अनेक बीमारियों के कारण मनुष्य ऐसा करता है परन्तु सतयुग में तो कोई ऐसी बात होगी ही नहीं तो फिर जानवरों का दूध पीने की आवश्यकता क्यों होगी। वहाँ तो स्वास्थ्य के लिए खाने-पीने के अनेक प्रकार के साधन उपलब्ध हैं। इसलिए विवेक कहता है कि वहाँ मनुष्य को जानवरों के दूध पीने की आवश्यकता नहीं होगी और न ही पियेंगे। श्रीकृष्ण के साथ जो गायें दिखाई गई हैं, वह संगम युग की ही बात है। बाबा ने भी अनेक बार और अनेक शब्दों में यह बात कही है कि - तुम मातायें-कन्यायें चेतन्य गायें हो और बाबा तुमको ज्ञान घास खिलाते हैं, बाबा तुमको माखन खिलाते हैं, सारी दुनिया तो छाछ पीती है आदि-आदि। श्रीकृष्ण, ब्रह्मा बाबा और शिवबाबा की जीवन कहानी, कर्तव्य मिला देने के कारण श्रीकृष्ण के साथ गायें दिखाई हैं और माखन आदि की बात कही गई है।

''यह जल इत्र-फुलेल का कार्य करेगा। जैसे जड़ी-बूटियों के कारण गंगा जल अभी भी और जल से पवित्र है। ऐसे खुशबूदार जड़ी-बूटियाँ होने के कारण जल में नेचुरल खुशबू होगी। जैसे यहाँ दूध शक्ति देता है, ऐसे वहाँ का जल ही शक्तिशाली होगा, स्वच्छ होगा। इसलिए कहते हैं कि दूध की नदियां बहती हैं।'' अ.बापदादा 30.1.85

Q. सतयुगी देवी-देवताओं को सम्पूर्ण पवित्र कहेंगे अर्थात् देवतायें सम्पूर्ण पवित्र कहे जायेंगे तो कब कहे जायेंगे ?

Q. आत्मा के शरीर में आने से ही कलायें कम होना आरम्भ हो जाती हैं और जब कलायें कम हो गई तो सम्पूर्ण पवित्र कैसे कहेंगे ? फिर प्रश्न उठता है कि सम्पूर्णता कब और कहां ? जहाँ आत्मा में देह-भान या देहाभिमान है तो उसे सम्पूर्ण पवित्र नहीं कहा जा सकता है। सम्पूर्ण पवित्र आत्मा तो परमधाम में ही होती है या परमधाम जाने के समय और परमधाम से सतयुग में आने के समय की स्थिति को सम्पूर्ण पवित्र कहेंगे। ऐसे ही हर आत्मा की स्थिति है अर्थात् परमधाम जाने के समय सम्पूर्ण पवित्र कही जायेगी और परमधाम से आने के समय सम्पूर्ण पवित्र कही जायेगी। बाकी समय में तो कुछ न कुछ अपवित्रता अर्थात् कमी रहती ही है। इसलिए बाबा ने कहा है - श्रीकृष्ण का मान नारायण से अधिक है क्योंकि श्रीकृष्ण को ही सम्पूर्ण पावन कहेंगे। वास्तविकता तो ये है कि श्रीकृष्ण के जन्म लेते ही आत्मा की गिरती कला आरम्भ हो जायेगी।

''ऐसे नहीं वहाँ (सतयुग में) आत्माभिमानी होंगे। नाम रखा जाता है तो आत्माभिमानी रह कैसे सकेंगे। इतना जरूर है आत्मा पवित्र हो जाती है तो वहाँ विकर्म नहीं होता है।''

सा.बाबा 13.11.69 रिवा.

''पूरे 84 जन्म श्रीकृष्ण के ही कहेंगे, नारायण के भी नहीं। फिर भी कुछ दिन कम हो जाते हैं।'' सा.बाबा 29.7.69 रिवा.

''भल उतरती कला तो सतयुग त्रेता में भी है, कलायें तो कम होती हैं परन्तु दुख नहीं होता है क्योंकि प्रारब्ध भोग रहे हैं। भल कहा जाता है सतयुग-त्रेता में प्रारब्ध भोग रहे हैं परन्तु डिटेल में आयेंगे तो सीड़ी थोड़ा थोड़ा उतरना होता है। बाकी इतना जरुर कहेंगे दुख तब होता है जब तुम तमोप्रधान बनते हो।'' सा.बाबा 21.5.71 रिवा.

''कृष्ण का नाम गाया जाता है, उनके बाप का नाम है नहीं .. जहाँ जीत वहाँ बड़े राजा के घर में जन्म होता है परन्तु वह पतित राजा होने के कारण उनका नाम थोड़ेही होता है।''

सा.बाबा 17.7.71 रिवा.

Q. सतयुग में स्वर्ण-मुद्रा का प्रचलन होगा या वस्तु-विनिमय की आवश्यकतानुसार स्वतन्त्र प्रथा होगी ?

विवेक कहता हूँ कि सतयुग में मुद्रा का प्रचलन नहीं होगा। वहाँ वस्तु-विनिमय की आवश्यकतानुसार स्वतन्त्र प्रथा होगी। मुद्रा का प्रचलन द्वापर से हुआ होगा। जब सतयुग में साधन-सम्पत्ति अथाह है और किसी में लोभवश संग्रह वृत्ति है नहीं, आपस में प्रेम-प्यार अथाह है तो क्रय-विक्रय की

बात ही नहीं उठती है और जब क्रय-विक्रय नहीं तो मुद्रा की क्यों आवश्यकता होगी।

''भगवान ने भक्तों को भक्ति का फल दिया आधा कल्प सुख का, फिर रावण राज्य में दुख शुरू होता है। आहिस्ते-आहिस्ते सीढ़ी उतरते हैं। तुम सतयुग में हो तो भी एक दिन जो बीता, सीढ़ी उतरनी होती है। तुम 16 कला सम्पूर्ण बनते हो, फिर सीढ़ी उतरते ही रहते हो। सेकेण्ड बाई सेकेण्ड टिक-टिक होती है और सीढ़ी उतरते ही जाते हैं। ... रावण राज्य शुरू होता है तो तुम गिरने लग पड़ते हो। बाप आकर तुम्हारी चढ़ती कला करते हैं।''

सा.बाबा 25.8.04 रिवा.

Q. सतयुग में प्रकृति मनवांछित फल देने वाली होगी तो वहाँ मनुष्यों की दिनचर्या क्या होगी?

Q. सतयुग-त्रेता की दिनचर्या, द्वापर-कलियुग की दिनचर्या और संगमयुग की दिनचर्या में क्या मूलभूत अन्तर है?

परमधाम से आत्मायें आती हैं तो शान्तिप्रिय होती हैं, इसलिए उनके मन में अधिक संकल्प आदि नहीं होते हैं। वे सदा शान्ति में रहते हैं। प्रकृति का भी अपना सुख होता है तो वहाँ आत्मायें प्रकृति के सुख में अधिक रहते हैं और खेलपाल में भी कुछ समय बितायेंगे, आर्ट और कल्चर में भी बिजी रहते हैं और कुछ समय अपने दैनिक जीवन के व्यवहारिक कार्यों में भी लगाते हैं परन्तु वहाँ मनुष्यों को कोई विशेष मेहनत नहीं करनी होती। जो कार्य करते हैं, वह भी मेहनत से नहीं लेकिन खुशी-खुशी करते हैं। जैसे अच्छें योग से उठने के बाद आत्मा को शान्ति खींचती रहती है, ऐसे ही परमधाम से आने वाली आत्माओं को शान्ति खींचती रहेगी और आत्मायें बहुत कार्य-व्यवहार में आयेंगी।

द्वापर-कलियुग में अज्ञानता के वशीभूत देहाभिमान में आने के कारण कुछ मनुष्य विकारों के वशीभूत साधन-सम्पत्ति के संग्रह, उसकी वृद्धि, विषय-विकारों में प्रवृत्त जीवन व्यतीत करते हैं, कुछ भक्ति-भावना आदि में, कुछ नये अविष्कारों की खोज में जीवन व्यतीत करते हैं। उनके जीवन का लक्ष्य इतना ही होता है। जो आत्मायें परमधाम से आती हैं, वे शान्तिप्रिय होती हैं, इसलिए कुछ समय तक उसकी अनुभूति में रहती हैं परन्तु परिस्थितियों और विश्व-नाटक के विधि-विधान अनुसार वे भी विकारों के वशीभूत हो जाती हैं।

पुरुषोत्तम संगमयुग पर परमात्मा आकर विश्व-नाटक का सत्य ज्ञान देते और शूद्र वर्ण से ब्राह्मण वर्ण में परिवर्तित करके आत्माओं उनके वास्तविक स्वरूप की अनुभूति कराते हैं और उस अनुभूति को कराकर उनको नई दुनिया के नव-निर्माण के कार्य में लगाते हैं। सत्य ज्ञान को पाकर ब्राह्मण आत्मायें परमानन्द की अनुभूति करने और अन्य आत्माओं को कराने के कार्य में बिज़ी रहते हैं।

Q. क्या सतयुग में एक-दो को सुख देते हैं और सतयुग को सुख देने-लेने की दुनिया कहेंगे ?

नहीं, सतयुग सुख देने या सुख लेने की दुनिया नहीं है परन्तु सुखी दुनिया है। सुख देने-लेने की बात वहाँ उठती है, जहाँ दुख हो। सतयुग सुख की दुनिया है क्योंकि संगमयुग के पुरुषार्थ और सुख-दाता बाप से सुख का वर्सा लिया हुआ है, जिसके फलस्वरूप सुख में जन्म लेते हैं परन्तु वहाँ न कोई किसको सुख देता है और न ही लेता है। वह सुख की दुनिया है, जिससे वहाँ स्वभाविक ही सबको सुख है।

Q. क्या सतयुग में सतो-रजो-तमो तीनों गुण होते हैं ?

सतयुग में आत्मा में और विश्व में सतोगुण प्रधान होता है परन्तु तमोगुण का मूल देह-भान तो वहाँ पर भी होता ही है, जिसके कारण आत्मा की गिरती कला आरम्भ होती है। वह देह-भान ही देहाभिमान का बीज है, जो ही समयान्तर में देहाभिमान में परिवर्तन हो जाता है और आत्मा में विकारों की प्रवेशिता का कारण बनता है। इसलिए कहा जायेगा कि सतो, रजो, तमो गुण होते तो हैं परन्तु सतोगुण प्रधान होता है, तमोगुण बीजरूप में ही होता है अर्थात् नाममात्र होता है।

''और कोई ऐसी जगह नहीं, जहाँ सुनने वाले और सुनाने वाले दोनों देही अभिमानी हों। बाप तो है ही निराकार। वह आकर तुमको राजयोग सिखलाते हैं। अगर कृष्ण होता, वह तो देहाभिमानी ठहरा। सुनने वाले भी देहाभिमानी हो जायें। यहाँ वह बात नहीं। मनुष्य हैं ही देहाभिमानी। भल लक्ष्मी नारायण के लिए कहेंगे वे देही अभिमानी थे। फिर भी देह अभिमान तो रहता है ना।'' सा.बाबा 4.9.71 रिवा.

''अभी तुम बच्चों को अपने को देही आत्मा निश्चय करना है न कि परमात्मा निश्चय। तुम बच्चे सतयुग से लेकर देहाभिमानी बनते आये हो ... देही अभिमानी अभी ही बनते हो। वहाँ देही अभिमानी कहेंगे नहीं। वहाँ प्रारब्ध है, वहाँ देहाभिमानी, देही अभिमानी शब्द ही नहीं कहेंगे।''

सा.बाबा 24.7.80 रिवा.

Q. क्या ब्रह्मा बाबा किसी समय राम भी बनता है ?

इस विषय में बाबा ने कोई स्पष्ट नहीं कहा है परन्तु विवेक कहता है कि ब्रह्मा बाबा राम नहीं बनेगा क्योंकि जो आत्मा एक बार चक्रवर्ती राजा बन गयी, वह दुबारा चक्रवर्ती राजा नहीं बनता होगा। हाँ ब्रह्मा बाबा राम राज्य में भी ऊंचे पद पर मान-मर्यादा वाला ही होगा।

Q. सतयुग में एक ही समय मनुष्यात्माओं की आयु में अन्तर होगा या नहीं? युगुलों में स्त्री-पुरुष की आयु में अन्तर होगा या नहीं? यदि होगा तो किस क्रम में?

आयु में अन्तर अवश्य होगा। विविधतापूर्ण ड्रामा में सबकी आयु एक समान हो नहीं सकती। परन्तु कुल मिलाकर आयु का औसत समान होगा। स्त्री-पुरुष की आयु के विषय में जो मान्यता है कि स्त्री की आयु पुरुष से कम होगी और वह पुरुष से पहले शरीर त्याग कर देगी तो आयु का औसत कैसे 150 होगा, ये भी विचारणीय बात है।

Q. विधवा का यथार्थ अर्थ क्या है, सतयुग-त्रेता में स्त्रियां विधवा होंगी या नहीं?

विवेक ऐसा कहता है कि स्त्री-पुरुष में कोई भी पहले शरीर छोड़ सकता है परन्तु स्त्रियों को भी वैधव्य या विधवापन का दुख नहीं होगा क्योंकि वहाँ सभी नष्टोमोहा और सुख-शान्ति से सम्पन्न होते, जिससे पुरुष के पहले शरीर छोड़ देने में भी न कोई दुख होता है और न ही किसी प्रकार की मानसिक ग्लानि होती है अर्थात् विधवा जीवन होगा परन्तु विधवा शब्द नहीं होगा और विधवा जीवन का कोई दुख नहीं होगा। जैसे मृत्यु होगी परन्तु मृत्यु-दुख या मृत्यु-भय की महसूसता नहीं होगी, ऐसे ही पुरुष भी स्त्री से पहले शरीर छोड़ सकते हैं परन्तु स्त्री को उसका दुख नहीं होगा क्योंकि देह से मोह या लगाव नहीं होता है। इसलिए कहेंगे कोई विधवा नहीं होगी क्योंकि विधवा शब्द ही नहीं होगा।

यदि सदा ही स्त्री पुरुष से छोटी होगी और वह पुरुष से पहले देह का त्याग भी करेगी तो आयु का जो अन्तर होगा, वह कैसे पूरा होगा। यदि शादी के समय स्त्री की आयु पुरुष से 10 साल छोटी और वह 10 साल पहले शरीर छोड़ देती तो 20 साल का अन्तर कैसे पूरा होगा या क्या होगा। ये सब विचानणीय है।

अविनाशी आत्मा का विनाशी शरीर के साथ प्यार हो गया है, इसलिए रोना पड़ता है।... देहाभिमान होने के कारण विनाशी शरीर के पिछाड़ी रोते हैं।... कोई-कोई का बहुत प्यार होता है तो मोह में जैसे पागल बन जाते हैं।... माताओं को ज्ञान न होने के कारण विनाशी शरीर के पिछाड़ी विधवा बनकर रोती रहती हैं।... वहाँ मरने का फिकर नहीं होता। मोहजीत होते हैं। सा.बाबा 28.8.04 रिवा.

Q. सतयुग में विमान होंगे या ऐसे ही अन्त:वाहक शरीर द्वारा दूसरे स्थान के दृष्य देखेंगे या दूसरे स्थान पर रहने वाले व्यक्तियों से मिलन का अनुभव करेंगे और करायेंगे?

सतयुग में विमान तो होंगे, परन्तु उनका उपयोग बहुत कम होगा क्योंकि वहाँ की दिनचर्या और कार्य व्यवहार ही ऐसा होगा। आत्मिक शक्ति होने से आत्मायें अन्त:वाहक स्थिति द्वारा भी

बहुत कुछ व्यवहार चलता होगा।

Q. क्या सतयुग-त्रेता में नाम-रूप की आकर्षण होती है ?

सतयुग-त्रेता में नाम-रूप की बीमारी तो नहीं होती है परन्तु नाम-रूप की बीमारी का बीज अर्थात् नाम-रूप का आकर्षण अवश्य होता है तब ही तो स्त्री-पुरुष का आपस में प्यार होता है और शादी करते हैं। वहाँ आत्माओं में जो देहभान होता है, वही नाम-रूप की बीमारी का बीज है, जो द्वापर से देहाभिमान के रूप में परिणित हो जाता है नाम-रूप की बीमारी अर्थात् काम विकार का रूप धारण करता है।

Q. सतयुग और त्रेतायुग में किस बात की खुशी है, क्यों है और कैसे है ?

देवताओं को खान-पीने की कोई हवच नहीं, उनको कोई मोह नहीं, विषय-वासना नहीं, इन्द्रिय सुखों का आकर्षण नहीं, उनमें संग्रह वृत्ति नहीं होती परन्तु आत्मिक शक्ति होती है, जिससे वे प्रकृति के सौंदर्य- अद्भुतता के अवलोकन का भरपूर सुख अनुभव करते हैं, उसकी खुशी में रहते हैं।

''कहा जाता है - खुशी जैसी खुराक नहीं। तुम बच्चों को अथाह खुशी होनी चाहिए। ... खुशी में खाना भी बहुत थोड़ा, सूक्ष्म खायेंगे। यह भी एक कायदा है। ... ये ज्ञान की बातें तो बड़ी खुशी से सुननी-सुनानी चाहिए।''

सा.बाबा 29.5.04 रिवा.

सतोप्रधान प्रकृति, निरोगी काया, भय-चिन्ता से मुक्त स्वच्छन्द जीवन (पशु-पक्षियों के समान) आत्मा को सुख देने वाले हैं। सतोप्रधान प्रकृति का भी अपना विशेष सुख है।

अभी संगमयुग पर आत्मा को सत्य ज्ञान और परमात्मा के सानिध्य का परम सुख है, उसमें किसी साधन-सम्पत्ति का आधार नहीं होता है परन्तु अभी आत्मा का कर्मभोग उसमें सबसे बड़ी बाधा है। सारे कल्प में आत्मा के सुख-दुख का कारण या आधार आत्मा का अपना कर्मफल ही है। सतयुग-त्रेतायुग में विकर्म होते नहीं, सुकर्म भी होते नहीं परन्तु प्रकृति सतोप्रधान सुखदायी होती, इसलिए वहाँ सब सुख का अनुभव करते हैं।

जीवन में रहते निर्संकल्पता आत्मा के लिए परम सुखदायी है, इसीलिए बापदादा ने अनेक बार मधुवन निवासियों से मिलन में ये बात कही है कि मधुवनवासी बनना निश्चिन्त जीवन है, परम सुखमय जीवन है ... परन्तु इसमें भी आत्मा का कर्मफल ही प्रधान है। सतयुग में किसी प्रकार की कमी होती नहीं, इसलिए किसी प्रकार की चिन्ता नहीं, इसलिए आत्मायें निर्संकल्प रहती हैं

और प्रकृति का सुख अनुभव करती हैं और उसमें खुश रहती हैं। सतयुग में कोई विकर्म होता नहीं है, इसलिए किसी प्रकार दुख तो है नहीं, इसलिए जब किसी प्रकार दुख नहीं है तो सुख और खुशी ही रहेगी।

परन्तु महत्वपूर्ण बात ये ये कि संगमयुग की खुशी विशेष खुशी है क्योंकि हम दुख-अशान्ति के वातावरण को देखते, अनुभव करते हुए भी खुशी का अनुभव कर रहे हैं। इसलिए इस समय की खुशी विशेष खुशी है - इस बात को कभी भूलना नहीं चाहिए। बाबा ने कई बार कहा है - खुशी आत्माओं को परमात्मा का वर्सा है, इसलिए चाहे शरीर चला जाये लेकिन खुशी न जाये।

''बाप आकर स्वर्ग की स्थापना करते हैं। भगवान एक है, जरूर वही पुरानी दुनिया को नया बनायेंगे, फिर नये को पुराना कौन बनाता है ? रावण, क्योंकि रावण ही देह-अभिमानी बनाते हैं। दुश्मन को जलाया जाता है।'' सा.बाबा 2.6.04 रिवा.

Q. देवताओं को अपना वह स्वरूप कैसे भूल गया ? क्या द्वापर तक आते-आते देवतायें इतने गिर गये कि उनको अपना देवताई स्वरूप ही भूल गया या भूकम्प आदि की उथल-पुथल में अपना अस्तित्व भूल गया ?

प्रकृति के नियमानुसार अवश्य ही सतयुग से त्रेता के अन्त तक आते-आते अधिकांश देवताई स्वरूप और देवताई सभ्यता, देवताई लक्षण खत्म हो गयी होगी और रहा-सहा स्वरूप भी त्रेतायुग के अन्त और द्वापरयुग के संगम पर हुए भूकम्प आदि में भूल गया होगा।

''बरसात नहीं पड़ती तो यज्ञ रचते हैं। ऐसे नहीं कि सदैव यज्ञ करने से बरसात पड़ती है। नहीं, कहाँ फैमन पड़ता है भल यज्ञ करते हैं परन्तु यज्ञ करने से कुछ होता नहीं है। यह तो ड्रामा है। आफतें जो आनी हैं, वे तो आती ही रहती हैं।''

सा.बाबा 2.7.04 रिवा.

''वही देवतायें जब वाममार्ग में जाते हैं तो कोई भी ऐसे नहीं कहेंगे कि हम उनकी (देवताओं) वंशावली के हैं।'' (क्योंकि देवताओं की वंशावली भी देवता ही होनी चाहिए अर्थात् वाममार्ग में जाने के बाद वे अपने वंश को ही भूल जाते हैं।)

सा.बाबा 29.6.04 रिवा.

Q. स्वर्ग को नर्क किसने बनाया और नर्क को स्वर्ग किसने बनाया ? नर्क को स्वर्ग बनाने में महिमा देवताओं की है या असुरों की कहेंगे ?

यह बड़ा विचारणीय विषय है और सत्य को कहना अति कठिन है। ड्रामा के अनादि-अविनाशी नियमानुसार हर चीज नई से पुरानी होती है। ड्रामा के उसी नियमानुसार स्वर्ग, जहाँ

देवतायें रहते हैं, वह आधा कल्प बाद नर्क बन जाता है। फिर वही नर्क आधा कल्प बाद रौरव नर्क बन जाता है। यथार्थ दृष्टि से देखें तो देवताओं के भोगने से ही स्वर्ग द्वापर से नर्क बन जाता है और द्वापर से असुरी संस्कारों की प्रवेशता से कलियुग के अन्त में रौरव नर्क बन जाता है। जब द्वापर आदि में स्वर्ग से नर्क बनता है तब तो न रावण अर्थात् 5 विकार होते हैं और न असुर अर्थात् मनुष्य होते हैं। देवतायें ही मनुष्य बनते हैं और वहाँ से मनुष्यों में देह-भान, देहाभिमान में बदल जाता है, जिसके कारण सबसे मुख्य आसुरी गुण काम-विकार का जन्म होता है। तो ऐसा ही कहा जायेगा कि स्वर्ग को नर्क तो देवताओं ने ही बनाया परन्तु नर्क को रौरव नर्क असुरों ने बनाया है। कलियुग अन्त और सतयुग आदि के पुरुषोत्तम संगम युग पर परमात्मा आकर असुरों को ब्राह्मण बनाकर उनके द्वारा नर्क को स्वर्ग बनाते हैं। तो यह तो कह नहीं सकते कि देवताओं ने स्वर्ग बनाया। स्वर्ग तो परमात्मा ने बनाया लेकिन सहयोग मनुष्यों का ही रहा अर्थात् मनुष्यों के द्वारा ही बनाया। सतयुग-त्रेतायुग में देवताओं को न किसी चीज के अविष्कार की आवश्यकता होती है और न ही उनकी उसमें कोई अभिरुचि होती है। इसलिए देवताओं ने किसी भी प्रकार की चीज का अविष्कार नहीं किया। वहाँ सभी प्रकार के सुख होते हैं, उनको भोगने में ही उनका जीवन व्यतीत होता है, इसलिए ड्रामानुसार समय की गति के साथ सभी प्रकार की साइन्स एण्ड टेक्नॉलॉजी द्वापरयुग आते-आते विलुप्त हो जाती है और स्वभाव-संस्कार भी आसुरी बन जाता है, जिसके कारण नर्क का प्रारम्भ होता है। द्वापर से मनुष्य अविष्कार करना आरम्भ करते हैं और सभी प्रकार के अविष्कार द्वापरयुगी और कलियुगी मनुष्य ही करते हैं परन्तु आपसी मतभेद के कारण वे उन अविष्कारित ज्ञान और चीजों का सुख नहीं भोग पाते। वे उनका प्रयोग एक-दूसरे के अहित में ही करते हैं और अन्त में वे सभी चीजें विनाश के निमित्त बनती हैं। ज्ञान सागर परमात्मा पुरुषोत्तम संगमयुग पर आकर सत्य आध्यात्मिक ज्ञान देकर आत्माओं को पावन बनाते हैं और उनकी मत पर असुर ही ब्राह्मण बनते हैं और असुरों के द्वारा अविष्कारित साइन्स एण्ड टेक्नॉलॉजी का सुदुपयोग करके नर्क को स्वर्ग बनाते हैं। तो ऐसा ही कहा जायेगा कि नर्क को स्वर्ग बनाने में परमात्मा के साथ मनुष्य ही निमित्त बनते हैं।

महिमा न देवताओं की है और न असुरों की है। महिमा सारी परमात्मा और ब्राह्मणों की है। क्योंकि देवताओं ने न सुकर्म किये, न ही विकर्म किये और न कोई नई चीज का अविष्कार किया। असुरों ने सभी प्रकार की सुख-साधनों का अविष्कार तो किया परन्तु आत्मिक ज्ञान न होने के कारण विकारों के वशीभूत उस सबका दुरुपयोग किया। ब्राह्मणों ने किसी नई चीज का अविष्कार तो नहीं किया परन्तु परमात्मा के साथ प्रीतबुद्धि होने के कारण

परमात्मा की मत पर असुरों के द्वारा अविष्कारित चीजों का सदुपयोग करके नर्क को स्वर्ग बनाया, इसलिए महिमा सारी परमात्मा और ब्राह्मणों की है। ब्राह्मण भी वह हुनर अवश्य सीखेंगे, जो सतयुग में साथ ले जायेंगे या अविष्कार करने वालों में से भी कोई ब्राह्मण अवश्य बनेंगे, जो वहाँ जाकर ऐसी चीजें बनायें, जिससे स्वर्ग का निर्माण होगा।

परन्तु ऐसा कहना शोभा नहीं देता कि स्वर्ग को देवताओं ने बनाया क्योंकि उससे देवताओं पर दोष आ जाता है, इसलिए यही कहा जायेगा कि स्वर्ग से नर्क ड्रामानुसार प्रकृति के विधि-विधान अनुसार स्वत: ही बन जाता है क्योंकि सृष्टि-चक्र के विधि-विधान अनुसार हर चीज़ नई से पुरानी होती है, सतोप्रधान से तमोप्रधान बनती है, उस विधि-विधान अनुसार ही स्वर्ग नर्क बनता है। नई बनाने में पुरुषार्थ करना होता है, जो परमात्मा पिता आकर करते और कराते हैं अर्थात् नर्क को स्वर्ग बनाते हैं।

सतयुग से यथार्थ ज्ञान भूलने के कारण, जो देह-भान आता है, वही सृष्टि के पतित बनने का बीज है अर्थात् कारण बनता है अर्थात् स्वर्ग से नर्क ड्रामा अनुसार आपही बनता है।

''यहाँ सब बैठे हैं, उनमें कोई तो देह-अभिमान में होंगे और कोई देही-अभिमानी होंगे। ... देहाभिमान में आने से ही उल्टे काम करते हैं, देही-अभिमानी होने से अच्छा काम करेंगे।''

सा.बाबा 5.7.04 रिवा.

''आसुरी मत द्वापर से शुरू होती है, जिसको विशश वर्ल्ड कहा जाता है। विशश वर्ल्ड स्थापन करने वाला है रावण, वाइसलेस वर्ल्ड स्थापन करने वाला है राम, शिवबाबा।''

सा.बाबा 19.4.08 रिवा.

Q. रावण की मत सीढ़ी उतरते हैं तो सतयुग-त्रेता में सीढ़ी कैसे उतरते हैं?

वास्तव में सीढ़ी तो सतयुग आदि से ही उतरना आरम्भ हो जाती है परन्तु वहाँ जो उतरते हैं, उसमें हमारा जमा का खाता कम होता जाता है परन्तु द्वापर से जब रावण की मत अर्थात् देहाभिमान अर्थात् 5 विकारों के वशीभूत हो जाते हैं तो हमारा खाता घाटे में जाता है अर्थात् माइनस होता है, इसलिए बाबा कहते हैं कि रावण की मत पर सीढ़ी उतरते आये हो। सतयुग से ही आत्मा जितना इस प्रकृति के सम्पर्क में आती है, प्रकृति के साधन-सम्पत्ति का उपभोग करती है, उस अनुसार उसका जमा का खाता कम होता जाता है परन्तु उसे आत्मा पर जंक नहीं कहेंगे, जंक तब चढ़ती है, जब विकारों के वशीभूत होती है।

''सीढ़ी कैसे उतरते हैं, यह तुम बच्चों की बुद्धि में नम्बरवार बैठता है। ... रावण की मत से सीढ़ी उतरते आये हो। ... ईश्वरीय बुद्धि से तुम सारे सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त को जान जाते हो। तुम्हारा ये जीवन बहुत अमूल्य है।'' सा.बाबा 21.4.06 रिवा.

Q. रावण कौन है, क्या है ? रावण किसको कहें - देह को, देहाभिमान को, 5 विकारों को, अज्ञानता (Ignorance of self, God Father, world cycle) को ? रावण का जन्म कहाँ और कैसे हुआ ?

अज्ञानता तो आत्मा में सतयुग से ही आ जाती है। इस प्रकार विचार करें तो रावण का जन्म तो सतयुग में ही हो जाता है परन्तु रावण आत्मा के वश में होता है क्योंकि आत्मा में आत्मिक शक्ति होती है। रावण के कारण ही तो आत्मा की दो कलायें सतयुग में और दो कलायें त्रेता में कम हो जाती है, जिससे द्वापर से रावण शक्तिशाली हो जाता है और आत्मा विकारों में गिर जाती है। यथार्थ में रावण अज्ञानता ही है क्योंकि आत्मा-परमात्मा, विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान की अनभिज्ञता से देह-भान और देह-भान से देहाभिमान आता है, फिर देहाभिमान से ही 5 विकारों का जन्म होता है। सतयुग-त्रेता में आत्मिक शक्ति होती है, इसलिए विकारों की दाल नहीं गलती है।

''भारत को स्वर्ग कहा जाता था ... जब द्वापर से दुखधाम शुरू होता है तो भक्ति मार्ग शुरू होता है। भारत जो सद्गति में था सो दुर्गति में आ जाता है। ... द्वापर से वाम मार्ग शुरू हुआ तो भारतवासी दुखी होने शुरू हुए। दुखी बनाया है रावण (5 विकारों) ने।''

सा.बाबा 10.5.08 रिवा.

''छोटेपन में राधे-कृष्ण भाई-बहन भी नहीं थे, दोनों अलग-अलग राजाई के थे।... मूल बात है काम पर जीत पाने से ही जगतजीत बनेंगे।''

सा.बाबा 7.8.04 रिवा.

''पहले-पहले गोल्डन एज में हैं सम्पूर्ण गोरे, फिर दो कला कम हो जाती है। त्रेता को स्वर्ग नहीं कहेंगे, वह है सेमी स्वर्ग। बाप ने समझाया है रावण के आने से ही तुम्हारे ऊपर कट चढ़ना शुरू हुई है। पूरे क्रिमिनल अन्त में बनते हो। ... सतयुग वाला सुख त्रेता में नहीं हो सकता क्योंकि आत्मा की दो कला कम हो जाती हैं।''

सा.बाबा 9.7.04 रिवा.

Q. क्या सतयुग में मनुष्य देही-अभिमानी होंगे ?

नहीं, क्योंकि वहाँ मनुष्यों में देही अर्थात् आत्मा का यथार्थ ज्ञान होता ही नहीं है। आत्माओं में आत्मिक शक्ति होती है, जिससे शरीर छोड़ते समय मृत्यु का भय नहीं होता, मृत्यु का दुख नहीं होता। समझते हैं यह पुराना शरीर छोड़कर दूसरा लेना है। यदि देही-अभिमानी होते तो श्रेष्ठ कर्म करने चाहिए और अगर श्रेष्ठ कर्म होते तो आत्मा की उतरती कला ही नहीं होती। उतरती कला है तो सिद्ध होता है कि श्रेष्ठ कर्म नहीं होते परन्तु देहाभिमान नहीं है इसलिए

विकर्म भी नहीं होते। वैसे ही अभी कलियुग में भी मनुष्यों में आत्मा का कुछ ज्ञान है, इसीलिए तो आत्म-कल्याण के लिए पुरुषार्थ करते हैं परन्तु यथार्थ ज्ञान नहीं है और आत्मिक शक्ति भी नहीं है, इसलिए देहाभिमान के कारण विकर्म करते हैं, जिसके फलस्वरूप मृत्यु-भय होता, मृत्यु-दुख भोगना होता है।

''अभी तक तुम देहाभिमानी बनते आये हो, अब देही-अभिमानी बनो। यह शिक्षा मिलती है वापस घर जाने के लिए। ... वहाँ सतयुग में प्रालब्ध का पार्ट बजाते हो। वहाँ तो देहाभिमान वा देही-अभिमानी का प्रश्न ही नहीं है।'' सा.बाबा 7.5.08 रिवा.

''अभी समय बहुत थोड़ा है। ड्रामा तो अपने समय पर पूरा होगा ना। ... रावण है सबका दुश्मन, उसको मारते भी हैं परन्तु मरता नहीं है।... रावण ने तुमको पतित बनाया है, अब मैं पावन बनाने आया हूँ।'' सा.बाबा 7.7.04 रिवा.

Q. स्वर्ग की ओपनिंग सेरीमनी कौन करेगा ?

जरूर स्वर्ग का फर्स्ट प्रिन्स श्रीकृष्ण ही करेगा। स्वर्ग की ओपनिंग सेरीमनी श्रीकृष्ण ही करते हैं क्योंकि परमात्मा उस समय परमधाम चले जाते हैं और योगबल से जन्म लेने वालों में पहला जन्म श्रीकृष्ण का ही होता है। स्वर्ग की फाउण्डेशन सेरेमनी परमात्मा और ब्राह्मण करते हैं और ओपनिंग सेरेमनी श्रीकृष्ण करते हैं। योगबल से और भोगबल से जन्म लेना ही स्वर्ग-नर्क की मूल सीमा रेखा है। श्रीकृष्ण के जन्म से स्वर्ग का शुभारम्भ होता है और द्वापर से भोगबल से जन्म लेने का विधि-विधान चलने से नर्क का आरम्भ होता है।

''बाप ने स्वर्ग फाउण्डेशन तो लगा दिया है। ... सतयुग की स्थापना बाप ने की है, फिर तुम आयेंगे तो स्वर्ग की राजधानी मिल जायेगी। बाकी स्वर्ग की ओपनिंग सेरीमनी कौन करेगा ? बाप तो वहाँ आते नहीं।'' सा.बाबा 9.9.04 रिवा.

''स्वर्ग का स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और संगमयुग पर बाप का खज़ाना जन्मसिद्ध अधिकार है। ... संगमयुग के सुखों की लिस्ट बनायेंगे तो सतयुग के सुखों से दोगुणी हो जायेगी। सतयुग के संस्कार भी अभी भरने हैं। ... यह लिस्ट बुद्धि में दौड़ाते रहो अर्थात् इन सुखों रूपी रतनों से खेलते रहो तो कभी भी ड्रामा के खेल में हार न हो।''

अ.बापदादा 17.5.69

''घर का गेट कौन खोलेगा ? ... जो घर का गेट खोलेंगे, वे ही स्वर्ग का गेट भी खोलेंगे।''

अ.बापदादा 20.1.86

Q. राधे-कृष्ण कब जन्म लेंगे ? सतयुग में या संगमयुग पर ?

संगमयुग के दो भाग हैं। एक है पुराने कल्प में और दूसरा है नये कल्प में। राधे-कृष्ण का जन्म नये कल्प के संगमयुग के आदि में होगा अर्थात जब नया कल्प अर्थात् नई दुनिया आरम्भ हो जायेगी परन्तु स्वर्ग का पूरा निर्माण नहीं होगा। ये समय 25-30 साल तक चलेगा।

''अक्षर बहुत विचार कर डालना चाहिए - त्रिलोकीनाथ कृष्ण को भी कहते हैं और शिव को भी कहते परन्तु त्रिलोकीनाथ दोनों ही नहीं हैं। कृष्ण जब स्वर्ग का मालिक बनते तो मूल वतन को जानते ही नहीं और शिव बाबा न स्वर्ग का मालिक बनता, न पतित दुनिया का।''

सा.बाबा 2.7.69 रिवा.

Q. अच्छे गुण तो कलियुग में भी अनेक मनुष्यों में होते हैं, जिनकी ब्रह्मा बाबा ने भी महिमा की है परन्तु मुख्य दैवीगुण कौनसा है, जो देवताओं और मनुष्यों को अलग-अलग करता है ?

Q. स्वर्ग और नर्क की सीमा-रेखा क्या है अर्थात् स्वर्ग और नर्क में मूलभूत अन्तर क्या है ?

पवित्रता अर्थात् ब्रह्मचर्य अर्थात् योगबल से सन्तानोत्पत्ति, उसके लिए देही-अभिमानी स्थिति चाहिए। देवतायें देही-अभिमानी होते हैं, इसलिए उनमें ब्रह्मचर्य की स्वभाविक धारणा होती है और स्वर्ग में सन्तानोत्पत्ति भी योगबल से होती है। नर्क में मनुष्य होते हैं देहाभिमानी, इसलिए सन्तानोत्पत्ति भोगबल से होती है। देही-अभिमानी होने के कारण स्वर्ग में सब नष्टोमोहा होते हैं, इसलिए मृत्यु का नाम नहीं होता, जीवन एक वस्त्र बदलना होता है, इसलिए देवतायें अमर कहे जाते हैं और नर्क में इस वस्त्र बदलने को मृत्यु का नाम दिया जाता है, इसलिए नर्क को मृत्युलोक भी कहा जाता है।

''बाप कहते - इस अन्तिम जन्म में पवित्र बनो। वहाँ स्वर्ग में कोई विकार नहीं होता। अगर वहाँ भी विकार होता तो फिर स्वर्ग और नर्क में फर्क ही क्या हुआ ?''

सा.बाबा 8.6.06 रिवा.

''दैवीगुण होते ही हैं देवताओं में, मनुष्यों में नहीं होते हैं।... मनुष्य में दैवी गुण हो न सकें। ... रावणराज्य में दैवीगुण वाले हो न सकें।'' सा.बाबा 19.4.05 रिवा.

''अपने से ऐसी-ऐसी बातें करेंगे तब बाप और वर्से से दिल लगेगी। ... अगर स्वर्ग में भी विकारों से ही पैदाइश होती तो फिर उनको निर्विकारी क्यों कहते ? वहाँ तो आत्मा और शरीर दोनों पवित्र होते हैं।'' सा.बाबा 10.4.08 रिवा.

Q. पुरुषोत्तम संगमयुग के विधि-विधान और सतयुग-कलियुग के विधि-विधान में क्या अन्तर है ?

पुरुषोत्तम संगमयुग पर सारे कल्प के विधि-विधानों का बीज पड़ता है अर्थात् शिवबाबा सारे कल्प के लिए विधि-विधानों का ज्ञान देते हैं। सतयुग-त्रेतायुग में आत्मायें उन विधि-विधानों के अनुसार चलती हैं, कार्य करती हैं परन्तु द्वापर-कलियुग में सतयुग-त्रेतायुग के विधि-विधानों के चिन्ह मात्र रह जाते हैं, उनका विकृत रूप हो जाता है और संगमयुग के विधि-विधानों को यादगार रूप में मनाते हैं।

Q. सतयुग की आदि श्रीकृष्ण के जन्मदिन से होगी या लक्ष्मी-नारायण के गद्दी पर बैठने के दिन से ?

वास्तव में सतयुग की आदि श्रीकृष्ण के जन्म से होगी परन्तु नया संवत् अर्थात् 1-1-1 लक्ष्मी-नारायण के गद्दी पर बैठने से कहा जायेगा।

''यह संगमयुग है ही पुरुषोत्तम बनने का युग। पुरुषोत्तम श्रीकृष्ण था। स्वयंवर के बाद उनकी डिग्री कुछ कम हो जाती है, इसलिए श्रीकृष्ण की महिमा बहुत है।''

सा.बाबा 9.9.06 रिवा.

''पहले नम्बर में है श्रीकृष्ण, फर्स्ट प्रिन्स। श्री नारायण तो बाद में बनता है, जब बड़ा होता है। वह भी 20-25 वर्ष कम हो जाते हैं। उनके भी पूरे 84 जन्म नहीं कहेंगे।... हिसाब तो बच्चों को करना है ना। पूरे 84 जन्म, 5 हजार वर्ष श्रीकृष्ण के ही कहेंगे।... मैं कल्प-कल्प उसी ही तन में आता हूँ, जिसका आदि से अन्त तक पार्ट है।''

सा.बाबा 20.9.06 रिवा.

Q. श्रीकृष्ण का जन्म रामराज्य होता है या रावण राज्य में ?

रामराज्य में, कंस के राज्य जो श्रीकृष्ण का जन्म दिखाया है वह परमात्मा शिव की जीवन कहानी और श्रीकृष्ण की जीवन कहानी मिलाने से दिखाया है। नर्क अर्थात् रावण राज्य में श्रीकृष्ण का योगबल से जन्म हो नहीं सकता। शिवबाबा रावण राज्य अर्थात् कंस के राज्य में आता है। शिवबाबा का सतयुग की स्थापना का कार्य पूरा हो जाता है और विनाश आरम्भ हो जाता है, भोगबल से सन्तानोत्पत्ति बन्द हो जाती है, आत्मायें परमधाम जाने लगती हैं। परमधाम जाने के लिए पहले ब्रह्मा बाबा शिवबाबा के साथ परमधाम जाते हैं और आकर श्रीकृष्ण के रूप में जन्म लेते हैं। उस सतयुग अर्थात् रामराज्य की आदि हो जाती है, इसलिए श्रीकृष्ण का जन्म रामराज्य में होता है।

Q. बेसमझ कब से बनें, उस बेसमझी का प्रमाण क्या है और समझदारी की हाईएस्ट स्टेज कब होती है ?

बाबा के निम्नलिखित महावाक्यों पर विचार करें तो स्पष्ट होता है कि हम बेसमझ कब से बने। हम सतयुग की आदि से ही बेसमझ बन जाते हैं क्योंकि आदि से ही यथार्थ ज्ञान तो बुद्धि में रहता नहीं है, मर्ज हो जाता है। जिसके करण वहाँ से ही आत्मा की कलायें गिरना आरम्भ हो जाती हैं परन्तु पावन हैं, इसलिए उनको बेसमझ कह नहीं सकते। समझदारी की हाइएस्ट स्टेज है ही पुरुषोत्तम संगम युग पर जब हमारी बुद्धि में सारा ज्ञान होता है, जिससे हमारे कर्म सुकर्म होते हैं, हमारी चढ़ती कला होती है और हम घर जाते हैं। समझदारी की प्रमाण यही है कि उससे हमारी उन्नति हो, चढ़ती कला हो।

''बाप समझाते हैं - तुम बेसमझ थे। कब से बेसमझ बनें ? 16 कला से 12-14 कला बनते जाते, माना बेसमझ बनते जाते।'' सा.बाबा 12.7.04 रिवा.

Q. सतयुग-त्रेता है स्वर्ग परन्तु जो अभी ऊपर से नई आत्मायें आती हैं, तो उनका पहला जन्म या आने का आदि समय स्वर्ग का कहेंगे ? यदि स्वर्ग नहीं कहेंगे तो क्या कहेंगे ?

स्वर्ग-नर्क तो कल्प का आधा-आधा होता है, इसलिए द्वापर-कलियुग में आने वाली नई आत्माओं का जन्म स्वर्ग का नहीं कह सकते परन्तु उसको जीवन-मुक्त जन्म या जीवनमुक्ति का समय अवश्य कहेंगे। परमात्मा सर्व आत्माओं को मुक्ति-जीवनमुक्ति का वर्सा देता है, इसलिए सभी आत्मायें मुक्ति में जाती हैं परन्तु हर आत्मा का समय की अवधि अपनी-अपनी है। ऐसे ही जीवनमुक्ति में भी हर आत्मा आती है। कोई भी आत्मा जब वह परमधाम से इस धरा पर आती है तो पहले जीवनमुक्त होती है, बाद में जीवनबन्ध में जाती है परन्तु उस समय को स्वर्ग नहीं कहा जा सकता है।

Q. स्वर्गवासी बनने और जीवनमुक्त स्थिति में क्या अन्तर है और क्या समानता है ?

ड्रामा में अपने पार्ट के समय अनुसार जीवनमुक्त सभी आत्मायें बनती हैं परन्तु स्वर्ग में सब आत्मायें नहीं आती है, कुछ आत्मायें ही आती हैं और जो आती भी हैं, उनमें भी नम्बरवार आती हैं। सतोप्रधान स्वर्ग के समय अर्थात् स्वर्ग के आदि में तो केवल 9,16,108 आत्मायें ही आती हैं और स्वर्ग के अन्त में 33 करोड़ मनुष्यात्मायें अर्थात् देवी-देवतायें हो जाते हैं। स्वर्ग में सभी आत्मायें जीवनमुक्त होती हैं परन्तु त्रेता के अन्त में अर्थात् स्वर्ग पूरा होने के बाद परमधाम से आने वाली आत्मायें पहले जीवनमुक्त होती हैं परन्तु उस समय संसार में जीवनबन्ध वाली आत्मायें भी होती हैं।

Q. चढ़ती कला, चढ़ी हुई कला और उतरती कला में क्या अन्तर है ?

Q. देवी-देवताओं की चढ़ती कला कहेंगे या चढ़ी हुई कला कहेंगे ?

देवताओं में आत्मिक शक्ति संचित होती है, इसलिए उनको चढ़ी हुई कला कहेंगे परन्तु चढ़ती कला नहीं क्योंकि चढ़ती कला ब्राह्मणों की ही पुरुषोत्तम संगमयुग पर होती है। वास्तविकता तो ये है कि देवताओं की भी उतरती कला ही होती है। इस विश्व में कोई भी चीज स्थिर (Static) नहीं है। हर चीज और स्थिति या तो उतरती कला में होती है या चढ़ती कला में होती है। ऐसे ही आत्माओं की भी स्थिति है। आत्माओं की स्थिर स्थिति तो परमधाम में ही होती है क्योंकि वहाँ आत्माओं की सुसुप्त अवस्था होती है।

''यह भी तुम अभी जानते हो बरोबर हमारी चढ़ती कला है। चढ़ती कला और उतरती कला को तुम बच्चों ने अच्छी रीति समझा है। तुम यह भी समझते हो - भारत जब चढ़ती कला में था, तब उनको देवी-देवता कहते थे।'' सा.बाबा 2.8.07 रिवा.

Q. पतित और पावन का निर्णायक बिन्दु (Critatia) क्या है ?

विकार से जन्म लेना और योगबल से जन्म लेना ही पतित और पावन का निर्णायक बिन्दु हो सकता है।

''सब पतित खलास हो जायें, हिसाब-किताब चुक्तू कर सब वापस चले जायें। एक भी पतित न रहे, तब कहेंगे पावन दुनिया। ... जब विनाश होगा, तब सारी दुनिया पावन होगी, उसको नई दुनिया कहेंगे। नई दुनिया का संवत् कोई पूछे तो समझाना चाहिए, जब महाराजा-महारानी तख्त पर बैठते हैं तब से नया संवत् शुरू होता है।''

सा.बाबा 7.8.07 रिवा.

''जब तक लक्ष्मी-नारायण तख्त पर नहीं बैठे हैं, तब तक कुछ न कुछ खिटपिट होती रहेगी। ... यह सब हैं विचार-सागर मन्थन करने की बातें। सतयुग जब शुरू होगा तब नया सम्वत् शुरू होगा। ... बाकी बीच के समय में आना-जाना होता रहता है।''

सा.बाबा 7.8.07 रिवा.

Q. ये विश्व-नाटक अनादि-अविनाशी है, जो हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है, अब प्रश्न उठता है कि परमात्मा का इसमें क्या महत्व है और उसको क्यों याद करें ? वह क्या कर सकता है या उसकी याद से क्या होता है, जिसके लिए आत्मायें उनको याद करती हैं और हमको भी याद करना ही चाहिए ?

Q. भक्ति से आधा कल्प रात और ज्ञान से आधा कल्प दिन होता है। ज्ञान कब होता है और दिन-रात कब होते हैं ?

भक्ति होती है द्वापर-कलियुग में और ज्ञान होता है संगमयुग पर जब अमृतवेला होती है।

सतयुग-त्रेता होता है दिन। दिन और रात दोनों में ही आत्मा की उतरती कला होती है, संगमयुग पर ही आत्मा और विश्व की चढ़ती कला होती है। इसलिए वास्तविक दिन का समय तो संगमयुग ही है, जब हमको सारा ज्ञान होता है परन्तु उस समय अज्ञान अन्धकार भी अपनी चरम सीमा पर होता है, इसलिए उसको दिन कहना शोभता नहीं है, इसलिए उसको अमृतवेला कहना अच्छा है। सतयुग-त्रेता में दुख-अशान्ति नहीं होती है, इसलिए उसको दिन कहा गया है।

''अभी तुम कितनी रोशनी में आ गये हो। तुमने अब भक्ति मार्ग छोड़ दिया है। आज भक्ति है, कल नहीं होगी। ऐसे नहीं कि आज भक्ति है, कल फिर ज्ञान होगा। नहीं, भक्ति तो आधा कल्प चलती है, ज्ञान एक ही बार संगमयुग पर मिलता है।''

सा.बाबा 14.5.08 रिवा.

''इस समय तुम्हारी बुद्धि में सारा झाड़ है। वहाँ यह ज्ञान नहीं है। ... परन्तु वहाँ अज्ञान भी नहीं कहेंगे। वह है प्रालब्ध, जो तुम इस ज्ञान से पाते हो। अभी है चढ़ती कला, पीछे है गिरती कला।''

सा.बाबा 14.5.08 रिवा.

Q. संगमयुग के राजे अर्थात स्वराज्य अधिकारी, सतयुग के राजाओं तथा द्वापर-कलियुग के राजाओं में क्या अन्तर होता है?

संगमयुग के राजे अर्थात् आत्मा का अपनी कर्मेन्द्रियों पर राज्य होता है, जिससे आत्मा मुक्ति-जीवनमुक्ति का परम-सुख अनुभव करती है। ये राज्य अधिकार कितनी भी आत्मायें एक साथ प्राप्त कर सकती हैं। सतयुग-त्रेतायुग में राजा-प्रजा का परस्पर परिवारिक प्यार होता है, शासक प्रवृत्ति नहीं होती है। द्वापर-कलियुग में शासक प्रवृत्ति होती है, इसलिए राजा-प्रजा के सम्बन्धों में कटुता रहती है, भय रहता है।

''स्वराज्य की नीति है - मन, बुद्धि, संस्कार और सर्व कर्मेन्द्रियों के ऊपर स्व अर्थात् आत्मा का अधिकार। ... विश्व-राज्य की नीति क्या है? प्रजा भी एक परिवार है। तो परिवार की नीति - यह है सतयुग-त्रेता की राजनीति। (राजा-प्रजा में पिता-पुत्र का सम्बन्ध) ... द्वापर-कलियुग की राजनीति में लॉ एण्ड ऑर्डर चलता है।''

अ.बापदादा 12.11.92

Q. परमात्मा पिता आकर सारे सृष्टि-चक्र की हिस्ट्री-जॉग्राफी बताते हैं तो हिस्ट्री क्या है और जॉग्राफी क्या है और बाबा ने इस ज्ञान को रिलीजियो-पॉलिटिकल हिस्ट्री-जॉग्राफी क्यों कहा है?

सृष्टि-चक्र का ज्ञान है हिस्ट्री और झाड़ तथा त्रिमूर्ति का ज्ञान है जॉग्राफी। इस ज्ञान से विश्व में

फिर से राजवंश की स्थापना होती है और विश्व की सारी जॉग्राफी परिवर्तन होती है। साथ ही इस ज्ञान से जो नई दुनिया की स्थापना होती है, उसमें राज-सत्ता और धर्म-सत्ता एक के ही हाथ में होती है। समय-समय पर विश्व की जॉग्राफी में क्या मूलभूत परिवर्तन होता है, उसके विषय में भी बाबा ने ज्ञान दिया है। जैसे त्रेता के अन्त और द्वापर के आदि में भूमण्डल में जो परिवर्तन होता है अर्थात् हिस्ट्री-जॉग्राफी में मूलभूत परिवर्तन होता है, वह भी बाबा ने बताया है।

''कितनी गुह्य बातें हैं। सतोप्रधान बुद्धि वाले ही अच्छी रीति समझेंगे। नम्बरवार तो होते ही हैं। रॉयल घराने और प्रजा में फर्क तो रहता है ना। प्रजा भी अपने पुरुषार्थ से बनती है और राजा भी अपने पुरुषार्थ से बनते हैं। ... बहुतों को आप समान बनाना, यह है ऊंचे ते ऊंची सेवा। दुखी मनुष्यों को सदा सुखी बनाना है। अपना धन्धा ही यह ठहरा।''

सा.बाबा 16.4.08 रिवा.

Q. बाबा ने कहा है - सतयुग से त्रेता के अन्त तक 16,108 प्रिन्स-प्रिन्सेज होंगे तो उन प्रिन्स-प्रिन्सेज बनने वालों में कौन-कौन होंगे ?

विवेक कहता है कि सतयुग से त्रेता अन्त तक 16,108 राजा-रानी तो होंगे नहीं, तो इतने प्रिन्स-प्रिनसेज कैसे हो जायेंगे क्योंकि सतयुग में आठ समानान्तर गद्दियां होंगी और एक गद्दी पर क्रमानुसार अधिक से अधिक से 21 महाराजा-राजा बैठ सकते हैं, इस प्रकार सतयुग में 8x21 अर्थात् 168 महाराजायें-राजायें हो सकते हैं। ऐसे ही त्रेता की 12 समानान्तर गद्दियों पर क्रमानुसार अधिक से अधिक 33 राजायें बैठेंगे तो त्रेता में 12x33 अर्थात् 396 राजायें होंगे। इस प्रकार सतयुग-त्रेता दोनों युगों में 564 महाराजायें और राजायें होंगे तथा इतनी ही उनकी रानियां होंगी, जिससे दोनों मिलाकर 1128 हो जायेंगे अर्थात् इतने ही प्रिन्स-प्रिन्सेज हुये।

इसके अतिरिक्त हर राजा-महाराजा के राज-परिवार में और निकट सम्बन्धी भी होंगे, राज्य में विशेष ऊंच पदों वाले होंगे जिनके बच्चे भी प्रिन्स-प्रिन्सेज ही कहलायेंगे, वे क्राउन प्रिन्स के साथ खेलेंगे। ऐसे ही राज्य के बड़े जमीनदार, विशेष साहूकार, राजाई में बड़े पदों वाले जो राज-दरबार में बैठते होंगे, उनके बच्चे प्रिन्स-प्रिन्सेज के रूप में गिने जायेंगे, तब ही 16,108 प्रिन्स-प्रिन्सेज हो सकते हैं।

''कर्मों की गति बड़ी गहन है। बाप कहते हैं - मैं तुमको कर्म, अकर्म, विकर्म का राज़ समझाता हूँ। ... यह राजधानी स्थापन हो रही है। माला को फिराते राम-राम कहते रहते हैं। त्रेता अन्त तक 16,108 प्रिन्स-प्रिन्सेज हो जाते हैं। इसमें आठ हैं मुख्य। आठ रतनों की बड़ी

महिमा है।'' सा.बाबा 26.4.08 रिवा.

Q. सतयुग में कोई किसको फूल माला पहनायेंगे और यदि पहनायेंगे तो किस भावना से ?

Q. क्या सतयुग में किसकी जयन्ति आदि मनायेंगे ?

सतयुग में जिस भावना से यहाँ पहनाते हैं या देवी-देवताओं पर फूल-माला चढ़ाते हैं, ऐसे तो नहीं पहनायेंगे परन्तु साधारण रूप में फूलों आदि का उपयोग करते होंगे। वैसे तो वहाँ पर सारा वातावरण ही सुखदायी होता है तो इस सबकी कितनी और कहाँ तक आवश्यकता होगी, यह विचारणीय है।

''शिवबाबा कहते हैं - हमको हार की दरकार नहीं है। तुम ही पूज्य बनते हो, तुम ही पुजारी बनते हो। ... मैं तो न पूज्य बनता हूँ, न मुझे फूलों आदि की दरकार हे।''

सा.बाबा 26.5.08 रिवा.

''बाबा तो पूज्य और पुजारी नहीं बनते हैं। बाबा फूल-हार भी स्वीकार नहीं करते हैं। तुम भी फूल-हार स्वीकार नहीं कर सकते हो। कायदे अनुसार जिनकी आत्मा और शरीर दोनों पवित्र हैं, वे ही फूलों के हकदार हैं।'' सा.बाबा 26.5.08 रिवा.

''स्वर्ग में तो कोई की भी जयन्ति नहीं मनाते हैं। कृष्ण, राम आदि की भी जयन्ति नहीं मनायेंगे। वे तो खुद प्रैक्टिकल में होंगे। यह तो जब होकर गये हैं, तब मनाते हैं। वहाँ वर्ष-वर्ष कृष्ण का बर्थ डे नहीं मनायेंगे। वहाँ तो सदैव खुशियां है ही, बर्थ डे क्यों मनायेंगे। ... वास्तव में इन बातों का ज्ञान और योग से कोई कनेक्शन नहीं है। बाकी वहाँ की रस्म क्या है, सो बाबा से पूछना होता है। बाबा से पूछेंगे तो ड्रामा अनुसार कुछ बताना होगा तो बतायेंगे या तो बाबा कह देंगे, वहाँ के कायदे जो होंगे, वे चल पड़ेंगे, पहले मेहनत कर लायक तो बनो। ... ड्रामा में कोई न कोई कायदे होंगे।'' सा.बाबा 11.1.08 रिवा.

योगबल और भोगबल

योगबल का प्रयोग जीवन के अनेक कार्यों में सफलता का आधार है, परमात्मा पिता आकर जो योग सिखाते हैं, उससे आत्मायें जो बल जमा करती हैं, उसके आधार पर जो कर्म करते हैं, उससे ही सतयुग की स्थापना होती है परन्तु योगबल और भोगबल की सबसे महत्वपूर्ण बात है सन्तानोत्पत्ति की। जब योगबल से सन्तानोत्पत्ति होती है, तो दुनिया स्वर्ग कहलाती है और जब भोगबल से सन्तानोत्पत्ति की प्रथा चालू होती है तो दुनिया नर्क कहलाती है। असुरों और देवताओं के जीवन में भी यही सबसे महत्वपूर्ण पहलू है।

Q. देवताओं और मनुष्यों की पहचान क्या है, स्वर्ग और नर्क की सीमा-रेखा क्या है ? मनुष्य, देवताओं को पूजते हैं, उसका कारण या आधार क्या है अर्थात् पूज्य और पुजारी की सीमा-

रेखा क्या है ?

योगबल और भोगबल से सन्तानोत्पत्ति ही स्वर्ग-नर्क की सीमा-रेखा है, देवताओं और असुरों की मूल पहचान है। इसके आधार पर ही सृष्टि-चक्र का आधा भाग स्वर्ग कहलाता है और आधा भाग नर्क कहलाता है।

''भगवानुवाच है ना - काम महाशत्रु है, इस पर जीत पाने से तुम जगतजीत बन जायेंगे। ... इस पर जीत पाने के लिए मामेकम् याद करो तो तुम पावन बन जायेंगे। दैवीगुण धारण करो, किसको दुख मत दो। पहला नम्बर दुख है - काम कटारी चलाना। यही आदि-मध्य-अन्त दुख देने वाला है। सतयुग में यह होता नहीं है।... जैसे तुम योगबल से राज्य लेते हो, वैसे वहाँ योगबल से बच्चा पैदा होता है।'' सा.बाबा 6.2.04 रिवा.

Q. योगबल और भोगबल से जन्म का स्वरूप क्या है ? सतयुग मे सन्तानोत्पत्ति की प्रक्रिया जैसे बाबा ने पपीता, मोर, मुख के प्यार का उदाहरण दिया, उस तरह से कोई भिन्न होगी या वर्तमान स्वरूप का ही सतोप्रधान स्वरूप होगा ?

''बाबा ने कहा देवी-देवताओं के पैर इस तमोप्रधान सृष्टि पर नहीं पड़ सकते।'' - 24.8.2000 रिवा। तो (वह वार्डर लाइन क्या है, जहाँ देवी-देवताओं के पैर पड़ते और जहाँ नहीं पड़ते हैं ?)

''वहाँ कोई तमोगुणी जानवर होता ही नहीं है। तुमको मालूम है कि मोर-मोरनी विकार से बच्चा पैदा नहीं करते हैं। उनका ऑसू गिरते हैं तो उनको धारण करती है। नेशनल बर्ड कहते हैं। वहाँ विकार का नाम नहीं। उनका पंख, पहला नम्बर प्रिन्स है उनके माथे पर लगाते हैं तो उनका कोई तो रहस्य होगा ना। तो यह सब बातें बाप रिफाइन कर समझाते हैं। वहाँ बच्चे कैसे पैदा होते हैं, वह भी तुम जानते हो। प्यार से भी हो सकता है ना। वहाँ भ्रष्टाचार बिल्कुल नहीं।'' सा.बाबा 30.9.69 रिवा.

''मोर डेल का भी मिसाल देते हैं। आंखों से आंसू गिरने से गर्भ होता है। अच्छा यह पपीता का झाड़ है, उसका भी एक मेल का झाड़, एक फीमेल का झाड़ एक दो के बाजू में होने से फल निकलता है। यह भी वण्डर है ना। एक-दो के बाजू में झाड़ है तो बच्चा हो जाता है, यह भला कैसे होता है। बाजू में खड़े हो देखते हैं और बच्चा हो जाता है। जब जड़ चीज में भी ऐसे है तो चेतन में क्या नहीं हो सकता है। यह भी डिटेल में तुम बच्चों को आगे समझ में आ जायेगा।'' सा.बाबा 23.10.71 रिवा.

Q. क्या विषय-भोग स्वभाविक है और जीवन के लिए आवश्यक क्रिया है ?

आत्मिक शक्ति के ह्रास के कारण देहाभिमान में आने से द्वापर युग से सन्तानोत्पत्ति के लिए विषय-भोग की क्रिया स्वभाविक और आवश्यक रही है, जैसे आज भी अन्य प्राणियों में भी होती है अर्थात् प्राय: सभी प्राणी सन्तानोत्पत्ति के लिए ही विकार में जाते हैं। सन्तानोत्पत्ति से अधिक विषय-भोग में जाना अज्ञानता जनित निश्चय का परिणाम है। अधिक विषय-विकार में जाना अज्ञानता अर्थात् देहाभिमान वश अप्राकृतिक खान-पान, जीवन-व्यवहार से उत्पन्न एक मानसिक रोग है, जो आत्मिक शक्ति के ह्रास का मूल कारण है। इस रोग का निदान परमात्मा से प्राप्त यथार्थ आध्यात्मिक ज्ञान की धारणा से ही सम्भव है।

''तुम बिल्कुल फूल बन जाते हो। काँटे और फूल हैं ना। यहाँ सब काँटे ही काँटे हैं। जो विकार के सिवाए रह नहीं सकते तो उनको जरूर काँटा ही कहना पड़े। राजा से लेकर सब काँटे हैं। ... यह काँटे, फूलों (देवी-देवताओं) के आगे जाकर माथा झुकाते हैं।''

सा.बाबा 3.5.04 रिवा.

राजायें भी देवी-देवताओं के मन्दिरों में जाकर उनके आगे सिर झुकाते हैं, दोनों में कोई विशेष अन्तर अवश्य होगा, जो विचारणीय है। बाबा ने भी अनेक बार इस विषय में कहा है।

Q. योगबल से क्या-क्या काम कर सकते हैं और क्या-क्या होता है?

योगबल से पुरानी दुनिया का विनाश और नई दुनिया की स्थापना होती है अर्थात् दुनिया पुरानी से नई, नर्क से स्वर्ग बनता है।

योगबल से आत्मा पावन बनकर और सुकर्म करके नई दुनिया में उंच पद पाते हैं।

योगबल से जीवात्मा अपने कर्मभोग पर विजय पा सकता है, उसकी वेदना से मुक्त हो सकता है।

अपने योगबल से आत्मा किसी दूसरे जीवात्मा को उसके कर्मभोग की वेदना से मुक्त कर सकता है, उसको सहयोग दे सकता है।

योगबल से आत्मा अपने विचार दूसरी आत्माओं तक पहुँचा सकता है, उनको ईश्वरीय सनदेश दे सकता है।

योगबल से आत्मा जड़ तत्वों को भी पावन बना सकता है और बनायेगा।

योगबल से भोजन को शुद्ध कर सकते हैं।

योगबल से आत्मा मृत्यु पर विजय पा सकते हैं अर्थात् मृत्यु-दुख और मृत्यु-भय से मुक्त हो सकते हैं।

योगबल से आत्मा दूसरी आत्माओं के भावों को जान सकता है और जानकर अपने को सुरक्षित रख सकता है और दूसरी आत्माओं को भी सहज सन्तुष्ट कर सकता है।

योगबल को बढ़ाने के लिए एकाग्रता, एकान्त, निर्संकल्प-निर्विकल्प स्थिति चाहिए, उस स्थिति को धारण करने के लिए सत्य ईश्वरीय ज्ञान की अति आवश्यकता है।

योगबल जो आत्मा संगमयुग पर संचित करती है, उससे ही आत्मा विषय-भोग के बिना सतयुग-त्रेता में सन्तानोत्पत्ति करती है, जिसे योगबल की सन्तान कहा जाता है।

पुरुषोत्तम संगमयुग और उसकी प्राप्तियों का अनुभव

Q. संगमयुग का समय कब से कब तक है अर्थात् संगमयुग की गणना कब से कब तक की जायेगी ?

शिवबाबा के ब्रह्मा तन में प्रवेश होने की वेला से लेकर लक्ष्मी-नारायण के सिंहासनारूढ़ होने के समय तक होनी चाहिए।

''कृष्ण का जब जन्म होता है तब थोड़े पतित भी होते हैं। जब बिल्कुल वह खत्म हो जाते हैं तब यह गद्दी पर बैठ अपना राज्य लेते हैं, तब से ही उनका सम्वत् शुरु होता है।''

सा.बाबा 17.7.71 रिवा.

Q. संगम के दो भाग हैं। एक है पुरानी दुनिया अर्थात् पुराने कल्प में और दूसरा है नई दुनिया अर्थात् नये कल्प में। अब प्रश्न उठता है कि दोनों कल्प में अर्थात् पुराने और नये में संगम का समय समान होगा या अन्तर होगा ?

पुराने कल्प में संगमयुग का जो समय है, वह नये कल्प के संगम के समय से अपेक्षाकृत कम है। बाबा ने अनेक बार कहा है कि आत्माओं को पावन बनने में समय लगता है, नई दुनिया बनने में समय नहीं लगेगा। इसलिए पुरानी दुनिया में संगम का भाग परमात्मा के अवतरण से विनाश तक का है और नई दुनिया में संगम का भाग विनाश और श्रीकृष्ण के जन्म से लक्ष्मी-नारायण के गद्दी पर बैठने के समय तक होगा। नया सम्वत् लक्ष्मी-नारायण के गद्दी पर बैठने से आरम्भ होगा। उस बीच पुरानी दुनिया के सफाई और नई दुनिया के निर्माण का कार्य सम्पन्न होगा और वह पूरा होने के बाद ही नयी दुनिया कही जायेगी।

''शास्त्रों में ब्रह्मा की आयु 100 वर्ष दिखाई है। यह जो ब्रह्मा है, जिसमें बाप बैठ वर्सा देते हैं, इनका भी यह शरीर छूट जायेगा।'' सा.बाबा 27.9.06 रिवा.

Q. प्राय: सभी शास्त्रों में संगमयुग की ही महिमा है, त्योहार आदि भी संगमयुग की यादगार के रूप में मनाये जाते हैं, अन्य धर्मों में भी संगमयुग की महिमा जाने-अन्जाने की हुई है, तो संगमयुग की इतनी महिमा क्यों है ?

संगमयुग ही चढ़ती कला का युग है, और सब उतरती कला के युग हैं। इसलिए बाबा कहते हैं, सतयुग-त्रेता की या देवताओं की कोई महिमा नहीं है क्योंकि वह उतरती कला का जीवन है। महिमा सारी संगमयुग की, परमात्मा और ब्राह्मणों की है, जो चढ़ती कला के निमित्त बनते हैं।

''तुम जानते हो - हम स्वर्ग की राजधानी स्थापन कर रहे हैं। वहाँ और भी बहुत प्रिन्स-प्रिनसेज बनते हैं। ... उतरती कला में सबको जाना ही है। मेरा तो पार्ट ही तब है जब चढ़ती कला होती है।'' सा.बाबा 28.5.07 रिवा.

''कलियुग को बदल सतयुग होना ही है, इसलिए इसको कल्याणकारी संगमयुग कहा जाता है। सतयुग से त्रेता होता है, फिर त्रेता से द्वापर होता है तो कलायें कम होती जाती हैं। अकल्याण होता ही जाता है। जब पूरा अकल्याण हो जाता है तब बाप आते हैं सभी का कल्याण करने।'' सा.बाबा 4.6.07 रिवा.

Q. विनाश और संगमयुग का क्या सम्बन्ध है और संगमयुग की आयु कब से कब तक गिनी जायेगी ?

विनाश शुरू होते ही पुरानी दुनिया अर्थात् पुराने कल्प का समय पूरा हो जायेगा अर्थात् संगमयुग का पुरानी दुनिया का भाग पूरा हो जायेगा और विनाश से प्रथम लक्ष्मी-नारायण के गद्दी पर बैठने का समय संगमयुग का नये कल्प का समय माना जायेगा। विनाश शुरू होते ही परमात्मा पिता परमधाम चला जायेगा और ब्रह्मा बाबा परमधाम जाकर अपने नये जन्म में अर्थात् श्रीकृष्ण के रूप में जन्म लेगा और उनके साथ कुछ समयान्तर में सतयुग की प्रथम जनसंख्या की सर्व आत्मायें अर्थात् कम से कम 9,16,108 आत्मायें जन्म लेंगी।

वास्तव में संगमयुग की आयु जब से बाप आते हैं तब ले लेकर लक्ष्मी-नारायण के गद्दी पर बैठने तक गिनी जायेगी क्योंकि विनाश के बाद भी एडवान्स पार्टी की आत्मायें रहती हैं और सतयुग के निर्माण का कार्य चलता है, इसलिए बाबा ने कहा नया सम्वत् जक्ष्मी-नारायण के गद्दी पर बैठने से ही गिना जाता है।

''संगमयुग में बाप आकर पतितों को पावन बनाते हैं। इसलिए इस युग की आयु, जब से बाप आया है, तब से गिनेगे।'' सा.बाबा 27.10.06 रिवा.

Q. आत्मा जब नये कल्प में परमधाम से आकर जन्म लेती है, तो जहाँ जन्म लेती है, उन मात-पिता के साथ कलियुग का बनाया हिसाब-किताब होता है या नये कल्प का ?

नये कल्प में जब आत्मा परमधाम से आती है तो नये कल्प का हिसाब-किताब होने का तो प्रश्न ही नहीं है और पुराने कल्प का सारा हिसाब-किताब चुक्ता करके ही आत्मा परमधाम जा सकती है। इसलिए नये कल्प के लिए हिसाब-किताब आत्मा संगमयुग पर बनाती है, जिसके आधार पर नये कल्प में आकर जन्म लेती है और सुख का अर्थात् जीवनमुक्त जीवन का पार्ट बजाती है। संगमयुग पर ही सर्व आत्मायें अपना पुराना हिसाब-किताब चुक्ता करते हैं और नये कल्प के लिए हिसाब-किताब बनाते हैं।

Q. विचार करो - क्या तुम भविष्य के दिलासे पर जी रहे हो या वर्तमान जीवन की परम-प्राप्तियों की अनुभूतियों में जी रहे हो ?

वर्तमान जीवन और उसकी प्राप्तियां भविष्य सतयुगी जीवन और उसकी प्रापतियों से पद्मापदम गुणा श्रेष्ठ है। ये संगमयुगी जीवन सारे कल्प का फूल है। इस जीवन जैसा सुख त्रिलोक्य में कहाँ भी नहीं है। इस सत्य को जानकर इस जीवन का परम सुख अनुभव करो और कराओ। आत्मिक स्वरूप परमानन्दमय है, जिसका यथार्थ ज्ञान और अनुभव अभी ही हो सकता है। वर्तमान जीवन की परम-प्राप्ति है परमात्मा और उनसे प्राप्त सत्य ज्ञान तथा ईश्वरीय गुण और शक्तियाँ। जो आत्मा इन ईश्वरीय प्राप्तियों की अनुभूति में रहता है, उसको सतयुगी प्राप्तियों की भी आकर्षण नहीं होती है। अभी हमको ईश्वरीय पालना है, जो सतयुगी देवताओं की पालना से पदमगुणा श्रेष्ठ और सुखदायी है।

''ड्रामा में इस समय तुम सबसे जास्ती मर्तबे वाले हो क्योंकि परमपिता परमात्मा की गोद ली है ... यह ईश्वरीय सुख बहुत ऊंच है।... सतयुग में अगर यह ज्ञान हो तो अन्दर ही घुटका खाते रहें।... संगमयुग पर ही बाबा आकर ज्ञान का तीसरा नेत्र देकर त्रिकालदर्शी बनाते हैं।''

सा.बाबा 23.1.07 रिवा.

''कितनी गुह्य बातें हैं। गुह्य से गुह्य बातें सुनाते रहेंगे। ... ट्रेन अपने टाइम पर ही पहुँचेगी।... राजाई की स्थापना पूरी हो जाये तब तो चलेंगे ना। कई कहते हैं - बाबा, यहाँ रहकर हम तंग हो गये हैं। बाबा कहते हैं - यह तो तुम्हारा नम्बरवन जन्म है, इसमें तुम्हें कभी तंग नहीं होना है।''

सा.बाबा 22.3.08 रिवा.

Q. सतयुग में अगर यह ज्ञान हो तो घुटका खायेंगे अर्थात् खुशी गुम हो जायेगी परन्तु अभी ज्ञान होते भी घुटका क्यों नहीं खाते हैं ?

यह चढ़ती कला का समय है, इस ज्ञान से ही चढ़ती कला हो रही है और बाप हमारे साथ में है, इसलिए ज्ञान होते भी खुशी गुम नहीं होती है क्योंकि चढ़ती कला और बाप के साथ होने से आत्मा को अतीन्द्रिय सुख की जो अनुभूति होती है, वह अविनाशी है और निरन्तर वृद्धि को पा रही है, इसलिए अभी ज्ञान होते और कर्मभोग होते भी आत्मा को घुटका आ नहीं सकता परन्तु सतयुग में सर्व सुख होते हैं परन्तु वहाँ समय उतरती कला का होता है, इसलिए वहाँ आत्मा को यह तीनों लोकों और तीनों का कालों का ज्ञान होने से घुटका आयेगा क्योंकि भविष्य दुखदायी समय की चिन्ता उसको अवश्य सतायेगी।

''ज्ञान की बात यहाँ होती है, सतयुग में ज्ञान की बात नहीं होती है। सतयुग में त्रिकालदर्शीपन का ज्ञान नहीं होता है। ... राधे-कृष्ण को वहाँ यह पता हो कि फिर हम 14 कला बनेंगे तो राज्य और ताज की खुशी ही गुम हो जाये।'' सा.बाबा 3.5.08 रिवा.

Q. संगमयुग पर मुक्त-जीवनमुक्त स्थिति का अनुभव कौन और कैसे कर सकता है?

जिस आत्मा को जितना देह में रहते देह से न्यारी स्थिति का अनुभव होगा, सहज देह से न्यारे होने का अभ्यास होगा, वही अभी संगमयुग पर मुक्त-जीवनमुक्त स्थिति का अनुभव कर सकता है, जो परमधाम की मुक्ति और सतयुग की जीवनमुक्ति से भी अति श्रेष्ठ है।

''एक सेकेण्ड में जब चाहें देह धारण करें और एक सेकेण्ड में जब चाहें छोड़ दें - ऐसा अभ्यास है? ... जब चाहें तब न्यारे हो जायें और जब चाहें तब प्यारे बन जायें। इतना बन्धनमुक्त बने हो? ... जितना बन्धनमुक्त, उतना ही योगयुक्त होंगे और जितना योगयुक्त होंगे, उतना ही जीवनमुक्त में ऊंच पद की प्राप्ति होती है।''

अ.बापदादा 6.8.70

Q. वर्तमान संगमयुग की विशेष प्राप्तियां क्या हैं और उनका जीवन में क्या महत्व है?

वर्तमान में परमात्मा के सानिध्य और उनसे प्राप्त ज्ञान-गुण-शक्तियों की प्राप्तियों के आगे ये साधन-सम्पत्ति, मान-शान की प्राप्ति और उनका सुख तो पाई-पैसे की बात है। भले लौकिक दुनिया में या यज्ञ में रहते भी हमको जो साधन-सम्पत्ति, सुख-सुविधा मिल रही है, उससे संगमयुग की सूक्ष्म प्राप्तियां पद्मगुणा महान हैं, उनके आगे साधन-सम्पत्ति का कोई महत्व नहीं है। ये स्थूल साधन सम्पत्ति तो लौकिक दुनिया में भी अनेकों को प्राप्त है। विचारणीय है कि राजा भृतर्हरि, राजा गोपीचन्द ने इन संगमयुगी प्राप्तियों के लिए ही राजाई का त्याग कर दिया। परमात्मा का सनिध्य, आत्मिक स्वरूप की स्थिति, ज्ञान-धन की अनुभूति, ईश्वरीय सेवा का सुख अति महान और परमानन्द को देने वाला है।

Q. संगमयुग की प्राप्तियों और सतयुग की प्राप्तियों में मूलभूत अन्तर क्या है ?

संगमयुग की प्राप्तियाँ हैं परमपिता परमात्मा और उनसे प्राप्त आत्मा-परमात्मा-ड्रामा का ज्ञान, योग का ज्ञान, कर्म का ज्ञान, जो ही आत्मा की चढ़ती कला का एकमात्र आधार है और जब मनुष्यात्माओं की चढ़ती कला होगी तो समस्त विश्व की भी चढ़ती कला होगी।

सतयुग की प्राप्तियों हैं सर्व गुण सम्पन्न, सर्व शक्तियों से सम्पन्न, प्रचुर प्राकृतिक सुख-साधनों की प्राप्ति। भल सतयुग की आदि में वहाँ ये सब अपनी चरम सीमा पर होंगे परन्तु सब उतरती कला में होंगे, जिससे आत्मा की और विश्व की उतरती कला होगी।

अतीन्द्रिय सुख या आनन्द संगमयुग की प्राप्ति है, सतयुग की नहीं। सतयुग की प्राप्ति है इन्द्रीय सुख, जिनको जितना आत्मा भोगती है, उतनी उसकी कलायें उतरती जाती हैं। अतीन्द्रिय सुख संगमयुग की विशेष प्राप्ति है और उसमें आत्मा जितना गहरा जाती है, उतनी उसकी अनुभूति और गहरी होती जाती है अर्थात् बढ़ती जाती है।

Q. क्या बाप का वर्सा सतयुग की राजधानी में ही मिलेगा, यहाँ कुछ नहीं मिलता है ? बेहद के बाप यथार्थ वर्सा क्या है और कब और कहाँ मिलता है ?

बाबा ने भी कहा है कि बाप अभी मिला है तो वर्सा भी अभी ही देगा। ज्ञान-गुण-शक्तियां ही बाप का यथार्थ वर्सा है, जिनकी धारणा से अभी संगमयुग पर अतीन्द्रिय सुख मिलता है, जो सारे कल्प में कब नहीं मिल सकता है और अभी ज्ञान-गुण-शक्तियों की धारणा से ही भविष्य स्वर्ग का वर्सा मिलता है।

''एक-एक बात समझने से तुम बच्चों को बहुत खुशी होनी चाहिए। ... बच्चा फादर कहे और कभी मिले ही नहीं तो वह फादर कैसे हो सकता ! बाप सारी दुनिया के बच्चों की आश पूर्ण करते हैं। सबकी कामना रहती है कि हम शान्तिधाम जायें। आत्मा को अपना घर याद पड़ता है।'' सा.बाबा 22.7.04 रिवा.

''यह है तुम्हारा मरजीवा जन्म। जो जीते जी मरते नहीं हैं, उनका मरजीवा जन्म नहीं कहेंगे। उनको तो खुशी का पारा चढ़ नहीं सकता। जब तक मरजीवा नहीं बनें हैं अर्थात् बाप को अपना नहीं बनाया है, तब तक पूरा वर्सा भी मिल नहीं सकता। ... अभी बाप हमको अपना ज्ञान का वर्सा देते हैं।'' सा.बाबा 5.1.08 रिवा.

Q. संगमयुग के सुख क्या-क्या हैं और सतयुग के सुख क्या-क्या हैं ? दोनों युगों के सुखों में मूलभूत अन्तर क्या है ?

सतयुग के सुखों और संगमयुग के सुखों की लिस्ट लिखें तो बहुत बड़ी है, इसलिए उसको यहाँ लिखना सम्भव नहीं है परन्तु सतयुग के सुखों और संगमयुग के सुखों में मूलभूत अन्तर क्या वह जानना अति आवश्य है। सतयुग में भौतिक सुख-साधनों की बहुतायत होगी, जिनका हर आत्मा अपनी आत्मिक शक्ति और संगमयुग पर किये हुए पुरुषार्थ अनुसार करेग परन्तु वे सभी सुख उतरती कला के होंगे अर्थात् दिनोदिन सुख अनुभूति में कमी होती रहेगी परन्तु कमी हो रही है, उसका अनुभव वहाँ नहीं होगा। अभी संगमयुग पर जो सुख मिलता है, वह आत्मिक सुख है अर्थात् अतीन्द्रिय सुख है, जो परमात्मा से प्राप्त ज्ञान-गुण-शक्तियाँ, वरदान-स्वमान के आधार पर मिलता है। संगमयुग के सुखों में जितना गहरा जाते हैं, उतना उनकी उपयोगिता बढ़ती जाती है अर्थात् उनके सुख में वृद्धि होती है। संगमयुग के सुख चढ़ती कला के सुख हैं। संगमयुग पर सतयुग के सुखों, कलियुग के सुखों और दुखों तथा संगमयुग के सुखों का ज्ञान है। मुक्ति-जीवनमुक्ति के यथार्थ सुख की अनुभूति अभी संगमयुग पर ही होती है। बाबा ने यह सत्य भी बताया है कि अगर सतयुग में ये ज्ञान हो तो आत्मा को वहाँ के सुखों की अनुभूति ही न हो क्योंकि उनको चिन्ता लग जाये कि हम गिरते जायेंगे और अन्त में दुखी हो जायेंगे।

Q. संगमयुग पर परमात्मा से क्या2 खज़ाने मिले हैं, क्या-क्या प्राप्तियां हुई हैं, जो हमारी सम्पन्नता का आधार हैं?

परमात्मा से हमको अभी ज्ञान, गुण, शक्तियाँ, स्वमान, वरदान, खुशी, संगमयुग का समय, संकल्प ... के जो खज़ाने मिले हैं, वे सब अभी जमा करेंगे, तब हम सदा सम्पूर्णता, सम्पन्ता, सन्तुष्टता और प्रसन्नता का अनुभव कर सकेंगे। इसलिए सबको जमा करना है। जमा करने की बाबा ने विधि बताई है तीन बिन्दियां अर्थात् आत्मिक स्थिति में स्थित होकर परमात्मा की स्नेहयुक्त याद होगी और विश्व-नाटक का ज्ञान बुद्धि में इमर्ज रूप में होगा तब ही इन खज़ानों को जमा करते हैं अर्थात् ये खज़ाने सदा जमा होते रहेंगे और आत्मा सदा प्रसन्नता का अनुभव करती है। जिसके पास खज़ाने जमा होते हैं, उनको नशा और खुशी स्वत: रहती है, जो उनके चलन और चेहरे से दिखाई पड़ती है। कहना नहीं पड़ता है।

''समय प्रमाण अभी बापदादा सभी बच्चों को सर्व खज़ानों से सम्पन्न देखना चाहते हैं क्योंकि ये खज़ाने सिर्फ अभी एक जन्म के लिए नहीं हैं लेकिन ये अविनाशी खज़ाने अनेक जन्म साथ चलने वाले हैं। इस समय के खज़ानों को सभी बच्चे जानते ही हो कि बापदादा ने क्या2 खज़ाने दिये हैं।''
अ.बापदादा 18.3.08

''सबके सामने खज़ानों की लिस्ट इमर्ज हो गई है क्योंकि बापदादा ने पहले भी बताया कि

खज़ाने तो मिले हैं लेकिन जमा करने की विधि क्या है ? जो जितना निमित्त और निर्मान बनता है, उतना ही खज़ाने जमा होते हैं।'' अ.बापदादा 18.3.08

''श्रेष्ठ संकल्प रूपी कलम से अपना चित्र अभी-अभी सामने लाओ। पहले सभी ड्रिल करो, माइण्ड ड्रिल। ... देखो सबसे श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ चित्र होता है - ताज, तख्त, तिलकधारी का।''

अ.बापदादा 18.3.08

''अभी बच्चे तीन प्रकार के खाते जमा किये हैं और कर सकते हैं। एक है - अपने पुरुषार्थ प्रमाण खज़ाने जमा करना, दूसरा है - दुआओं का खाता। दुआओं का खाता जमा होने का साधन है सदा सम्बन्ध-सम्पर्क और सेवा में रहते हुए संकल्प, बोल और कर्म में स्वयं भी स्वयं से सन्तुष्ट और दूसरे भी सर्व और सदा सन्तुष्ट हों।'' अ.बापदादा 18.3.08

''एक है - अपने पुरुषार्थ प्रमाण खज़ाने जमा करना, दूसरा है - दुआओं का खाता। ... सन्तुष्टता दुआओं का खाता बढ़ाती है और तीसरा खाता है - पुण्य का खाता। पुण्य का खाता जमा करने का साधन है ... मन, वाणी, कर्म, सम्बन्ध-सम्पर्क में आते सदा निस्वार्थ और बेहद की वृत्ति, शुभ भाव और भावना से सेवा करना।'' अ.बापदादा 18.3.08

''मैं विशेष आत्मा, स्वमानधारी आत्मा, बापदादा की पहली रचना श्रेष्ठ आत्मा, बापदादा के दिल तख्तनशीन हूँ। साथ में परमात्म रचना इस वृक्ष के जड़ में बैठी हुई पूर्वज और पूज्य आत्मा हूँ - इस स्मृति का तिलकधारी हूँ। साथ में बेफिकर बादशाह, सारा फिकर का बोझ बापदादा को अर्पण कर डबल लाइट की ताजधारी हूँ ... परमात्म-प्यारी आत्मा हूँ।''

अ.बापदादा 18.3.08

''चेक करो - निमित्त और निर्मान बनने की विधि से हमारे खाते में कितने खज़ाने जमा हुए हैं। जितने खज़ाने जमा होंगे, भरपूर होगा, उनके चलन और चेहरे से भरपूर आत्मा का रुहानी नशा स्वत: ही दिखाई देगा। उसके चेहरे पर सदा रुहानी फखुर चमकता है और जितना ही रुहानी फखुर होगा, उतना ही वह बेफिकर बादशाह होगा।''

अ.बापदादा 18.3.08

''चेक करो - स्व-पुरुषार्थ का खाता, दुआओं का खाता और पुण्य का खाता कितनी परसेन्ट में जमा हुआ है ? ... बापदादा ने सुना दिया है, इशारा दे दिया है कि अभी समय की समीपता तीव्रगति से आगे बढ़ रही है, इसलिए अपनी चेकिंग बार-बार करनी है।''

अ.बापदादा 18.3.08

Q. हमारे खाते में ईश्वरीय खज़ाने सदा जमा होते रहें, उसमा विधि-विधान क्या है? हमारा सर्वात्माओं के प्रति शुभ-भाव और शुभ-भावना कब और कैसे रह सकती है?

परमात्मा से हमको अभी ज्ञान, गुण, शक्तियाँ, स्वमान, वरदान, खुशी, संगमयुग का समय, संकल्प ... के जो खज़ाने मिले हैं, वे सब अभी जमा करेंगे, तब हम सदा सम्पूर्णता, सम्पन्ता, सन्तुष्टता और प्रसन्नता का अनुभव कर सकेंगे। इसलिए सबको जमा करना है। जमा करने की बाबा ने विधि बताई है तीन बिन्दियां अर्थात् आत्मिक स्थिति में स्थित होकर परमात्मा की स्नेहयुक्त याद होगी और विश्व-नाटक का ज्ञान बुद्धि में इमर्ज रूप में होगा तब ही ये खज़ानें जमा होते हैं अर्थात् ये खज़ाने सदा जमा होते रहेंगे और आत्मा सदा प्रसन्नता का अनुभव करती है। जिसके पास खज़ाने जमा होते हैं, उनको नशा और खुशी स्वत: रहती है, जो उनके चलन और चेहरे से दिखाई पड़ती है। कहना नहीं पड़ता है। ज्ञान में बाबा ने क्या-क्या ज्ञान दिया है, गुणों में क्या-क्या और कैसे दिया है, परमात्मिक-शक्तियाँ क्या-क्या हैं और हमने कितनी धारण की हैं - ये सब हमारी स्मृति में जाग्रत रहेगा, तब ही उनकी धारणा होगी और जीवन खुशी औन नशा रहेगा। जो आत्मा सम्पन्न और सन्तुष्ट होती है, उसका सर्व आत्माओं के प्रति भाव और भावना स्वत: ही शुभ होती है क्योंकि उसको कभी किसी से कुछ लेने की इच्छा नहीं होती है, सदा सर्व को देने की इच्छा रहती है क्योंकि वह दूसरों को भी अपने समान सम्पन्न और सन्तुष्ट देखना चाहता है।

''बापदादा से जो खज़ाने मिले हैं, उनको जमा करने की बहुत सहज विधि है। विधि कहो या चाबी कहो ... तीन बिन्दियां। सभी के पास है ना यह चाबी? तीन बिन्दियां लगाओ और खज़ाने जमा होते जायेंगे।''
अ.बापदादा 18.3.08

''चैक करो - निमित्त और निर्मान बनने की विधि से हमारे खाते में कितने खज़ाने जमा हुए हैं। जितने खज़ाने जमा होंगे, भरपूर होगा, उनके चलन और चेहरे से भरपूर आत्मा का रुहानी नशा स्वत: ही दिखाई देगा। उसके चेहरे पर सदा रुहानी फखुर चमकता है और जितना ही रुहानी फखुर होगा, उतना ही वह बेफिकर बादशाह होगा।''

अ.बापदादा 18.3.08

''बेफिकर बादशाह का संकल्प यही होगा कि जो हो रहा है, वह बहुत अच्छा है और जो होने वाला है, वह और ही अच्छे ते अच्छा होगा। इसको कहा जाता है रुहानी फखुर अर्थात् स्वमानधारी आत्मा।''
अ.बापदादा 18.3.08

''बापदादा ने पहले भी बच्चों को यह सूचना दे दी है कि जमा के खाते जमा करने का समय

अब संगमयुग ही है। इस संगमयुग पर अब जितना जमा करने चाहो, कर सकते हो। सारे कल्प का खाता अब जमा कर सकते हो। फिर जमा के खाते की बैंक ही बन्द हो जायेगी।''

अ.बापदादा 18.3.08

Q. जब सारी पुरानी दुनिया खत्म हो जाती है, तब यह यज्ञ खत्म होता है। क्या यज्ञ के साथ ही संगमयुग भी खत्म हो जाता है या संगमयुग बाद में भी चलता है?

पुरानी दुनिया स्वाहा अर्थात् विनाश होने से यज्ञ तो समाप्त हो जाता है और परमात्मा भी परमधाम चले जाते हैं परन्तु संगमयुग समाप्त नहीं होता है। संगमयुग तो आगे भी अवश्य चलेगा क्योंकि बाबा ने कहा है - जब लक्ष्मी-नारायण गद्दी पर बैठते हैं, तब से नई दुनिया की आदि होती है अर्थात् उस समय तक संगमयुग ही माना जायेगा। विनाश के बाद नई दुनिया का निर्माण होगा और लक्ष्मी-नारायण गद्दी पर बैठेंगे, तब तक इस दुनिया में पुरानी दुनिया के अर्थात् एडवान्स पार्टी आदि की आत्मायें रहेंगी, इसलिए तब तक संगमयुग चलेगा।

''शिवबाबा को रुद्र भी कहा जाता है। रुद्र यज्ञ भी मशहूर है। इतना बड़ा यज्ञ और कोई रच न सके।... इसमें जो भी सब पुरानी चीजें हैं, वे सब खत्म होनी हैं।... ख्याल करो जब सबके शरीर स्वाहा हों, तब तो सभी आत्मायें वापस परमधाम जायें।''

सा.बाबा 12.3.08 रिवा.

Q. सभी आत्माओं में परमात्मा के प्रति इतनी श्रृद्धा है, उनको याद करते हैं - तो क्या उनको परमात्मा से परमधाम में कोई प्राप्ति की अनुभूति होती है, जिस अनुभूति के आधार पर भगवान को याद करते हैं? यदि हाँ तो कैसे और यदि नहीं तो ये अनुभूति कब और कहाँ होती है, जिससे वे भगवान को याद करते हैं?

वास्तव में हर आत्मा को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष परमात्म मिलन की अनुभूति अभी संगमयुग पर ही हो सकती है। परमात्मा सर्वात्माओं का पिता है, तो वह अवश्य ही सर्वात्माओं को ये परमात्म मिलन की अनुभूति कराता होगा, भले ही हम उसको न समझ सकें।

''सतयुग में सूर्यवंशी देवी-देवताओं का राज्य था तो जरूर थोड़े मनुष्य होंगे, बाकी सब आत्मायें मुक्तिधाम में रहती हैं। भगवान से तो सबको मिलना होता है ना। सब बाप को सलाम तो करेंगे ना।''

सा.बाबा 22.2.08 रिवा.

Q. बाबा ने कहा है - सतयुग-त्रेता युग का वर्सा परमात्मा द्वारा संगमयुग पर ही मिलता है, लौकिक बाप से नहीं। भल लौकिक बाप ही वर्सा देने के निमित्त बनते हैं - इसका क्या प्रमाण है और विधि-विधान क्या है?

सतयुग-त्रेता युग में बाप और बच्चे में मोह नहीं होता है, भल परस्पर प्रेम होता है। वहाँ सम्पत्ति का भी लोभ नहीं होता है। ड्रामा का यथार्थ ज्ञान न होते हुए भी सभी ड्रामा की तरह अपना-अपना पार्ट बजाते रहते हैं। सतयुग-त्रेता में बाप और बच्चे दोनों को ये संकल्प नहीं रहता कि हम वर्सा दे रहे हैं या वर्सा ले रहे हैं। एक खेल की भांति एक-दो को अपना अधिकार ट्रान्सफर कर देते हैं। सतयुग की स्थापना परमात्मा संगमयुग पर करते हैं और सतयुग-त्रेता में आने वाली सभी आत्मायें परमात्मा की श्रीमत अनुसार स्वर्ग की स्थापना में जितना सहयोग करते हैं, उस अनुसार वहाँ फल पाते हैं। वहाँ आत्मा कोई कमाई भी नहीं करती हैं, जिससे ये कहा जाये कि बाप ने कुछ अपनी कमाई करके बच्चे को वर्सा दिया।

''बाप भारत को हेविन बनाते हैं। जब तक अपने को आत्मा, परमात्मा का बच्चा नहीं समझा है, तब तक वर्सा मिल न सके।'' सा.बाबा 29.5.08 रिवा.

Q. बेहद के बाप का वर्सा क्या है और कहाँ मिलता है?

यथार्थ में बेहद के बाप का वर्सा है ज्ञान, गुण, शक्तियाँ और परमात्म प्यार है, जो संगमयुग पर ही मिलता है अर्थात् उसकी यथार्थ अनुभूति संगमयुग पर ही होती है। बाबा ने अनेक बार कहा है कि बाप अभी संगमयुग पर मिला है तो वर्सा भी संगमयुग पर ही देगा। इन ज्ञान-गुण-शक्तियों के आधार पर जो अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति होती है, वही बेहद के बाप परमात्मा का यथार्थ वर्सा है।

स्थूल धन अर्थात् स्वर्ग का वर्सा तो इन ज्ञान, गुण, शक्तियों के आधार पर स्वत: ही प्राप्त होता है। स्थूल धन है और ज्ञान, गुण, शक्तियाँ नहीं है तो यथार्थ सुख की अनुभूति नहीं हो सकती परन्तु यदि आत्मा में ज्ञान, गुण, शक्तियाँ हैं तो वह स्थूल धन न होते अर्थात् कम होते भी सुख की अनुभूति कर सकती है। इतिहास इसका साक्षी है कि अनेक राजाओं ने ईश्वरीय ज्ञान, गुण, शक्तियों की प्राप्ति के लिए अपनी राजाई का त्याग कर दिया और अनेक राजायें विपुल धन-सम्पत्ति होते भी सच्ची सुख-शान्ति को नहीं पा सके, उनका सारा जीवन युद्धों ही गया।

वास्तव में बेहद के बाप का वर्सा है मुक्ति-जीवनमुक्ति, जो संगमयुग पर सर्व आत्माओं को मिलता है क्योंकि बेहद का बाप सर्व आत्माओं का बाप है, तो वर्सा भी सबको देता है।

''मैं ही ज्ञान का सागर हूँ, पवित्रता का सागर हूँ। तुम बेहद के बाप से बेहद का वर्सा लेते हो। ... बाप आते हैं सबको सतोप्रधान बनाने। इस बेहद के ड्रामा को भी तुम अभी जानते हो।''

सा.बाबा 10.5.04 रिवा.

‘‘सुख है? शान्ति है? सम्पत्तिवान हैं? सुख अभी साधनों के आधार पर तो नहीं है? अतीन्द्रिय सुख है। … सम्पत्ति से सम्पन्नता होती है। सर्व सम्पत्ति है? गुण, शक्तियाँ, ज्ञान - यह सम्पत्ति है। अगर मैं इस सम्पत्ति में सम्पन्न हूँ तो उसकी निशानी क्या? सन्तुष्टता। … यह चेकिंग एक दर्पण है।’’ अ.बापदादा 05.3.04

‘‘बेहद के बाप का वर्सा जरूर बेहद का ही है।… गायन है अतीन्द्रिय सुख गोप-गोपियों से पूछो। … मुक्ति भी है तो जीवनमुक्ति भी है।… गायन भी है - बाप आकर सबकी सद्गति करते हैं।’’ सा.बाबा 12.11.04 रिवा.

‘‘अगर अपनी ही मुक्ति-जीवनमुक्ति को प्राप्त करने की आश अभी तक पूर्ण न करेंगे तो दूसरों की कैसे करेंगे! मुक्ति-जीवनमुक्ति का वास्तविक अनुभव क्या होता है, वह क्या मुक्तिधाम वा जीवनमुक्तिधाम में अनुभव करेंगे? मुक्ति में तो अनुभव करने से परे होंगे और जीवनमुक्ति में जीवनबन्ध क्या होता है, वह अविद्या होने के कारण हम जीवनमुक्ति में हैं, वह भी क्या अनुभव करेंगे! बाप द्वारा जो मुक्ति-जीवनमुक्ति का वर्सा प्राप्त होता है, उसका अनुभव तो अभी ही कर सकते हैं।’’ अ.बापदादा 24.10.71

Q. यथार्थ ईश्वरीय सम्पत्ति क्या है?

ज्ञान, गुण, शक्तियाँ ही यथार्थ ईश्वरीय सम्पत्ति है, जो संगमयुग पर अपने पार्ट अनुसार सर्व आत्माओं को मिलती है, जो अखुट है और लेने के लिए सब स्वतन्त्र हैं।

‘‘समय फास्ट जा रहा है। … अतीन्द्रिय सुख साधनों के आधार पर नहीं है। … सर्व सम्पत्ति है? गुण, शक्तियाँ, ज्ञान - यह सम्पत्ति है। उसकी निशानी क्या होगी? अगर मैं सम्पत्ति में सम्पन्न हूँ तो उसकी निशानी क्या? सन्तुष्टता। … अभी के संस्कारों के आधार पर ही भविष्य का संसार बनेगा।… यह चेकिंग एक दर्पण है, इस दर्पण से अपने वर्तमान और भविष्य को देखो।’’ अ.बापदादा 05.3.04

Q. क्या अभी संगमयुग पर हम तन-मन-धन से पूर्ण स्वस्थ हो सकते हैं? यदि हाँ तो कैसे और उसके लिए अभीष्ट पुरुषार्थ क्या है और यदि नहीं तो हमारा कर्तव्य क्या है?

नहीं। तन से पूर्ण स्वस्थ होना संगमयुग पर असम्भव नहीं तो अति कठिन अवश्य है। हमको कोई बीमारी आदि होती है तो उसके निदान के लिए अभीष्ट पुरुषार्थ अवश्य करना चाहिए परन्तु हमको अति आशावादी (Over optimistic) नहीं बनना चाहिए कि हम हठयोग, तन्त्र-मन्त्र, वास्तु-शास्त्र या किसी अन्य विधि-विधान से सदा स्वस्थ हो जायेंगे और उसके कारण अपने योग में, जो परमात्मा ने सिखाया, उसमें अलबेलापन आ जाये और उससे विश्वास उठ

जाये अर्थात् संशय आ जाये या पुरुषार्थ में ढीले हो जायें। हमको इस सत्य को नहीं भूल जाना चाहिए कि संगमयुग पर अनेक जन्मों के विकर्मों का खाता चुकता करना है। हमारे आदर्श मम्मा-बाबा को भी इस परीक्षा से पास करना पड़ा है। इसलिए उनके पद-चिन्हों पर चलते हुए अपने योग में पूर्ण श्रृद्धा-भावना रखकर, श्रीमत अनुसार उसकी सफलता के लिए पुरुषार्थ करना चाहिए। इनके चक्कर में भटकना भी एक विकर्म है, अपने योग की निन्दा कराना है, अपने सिद्धान्त की निन्दा कराना माना बाप की निन्दा कराना है, इससे हमारे कर्मभोग का खाता कम नहीं होता बल्कि और बढ़ता ही जाता है, उसकी वेदना बढ़ती जाती है। इसके चक्कर में अपना अभीष्ट पुरुषार्थ न करना भी एक बहानेबाजी है।

कर्म और कर्मों की गहन गति

''आत्मा का स्व-धर्म है शान्त और मनुष्य बाहर ढूँढ़ते हैं। ... तुम अपने को शरीर से डिटेच करके बैठ जाओ। कुछ न बोलो परन्तु ऐसे डिटेच होकर कहाँ तक बैठेंगे! यह तो तुम जानते हो यहाँ कर्म बिगर कोई रह न सके। ... डिटेच होकर बैठने में इतना फायदा नहीं है। डिटेच होकर फिर मुझे याद करो तो तुमको फायदा होगा, शक्ति मिलेगी।''

सा.बाबा 8.5.08 रिवा.

Q. कर्म और फल का विधि-विधान क्या है? क्या ये विधि-विधान सर्वात्माओं पर एक समान प्रभावित होता है या उसमें कोई सैद्धान्तिक अन्तर है?

Q. क्या कर्म का सिद्धान्त सर्व आत्माओं पर समान रूप से लागू होता है या कोई भेद है?

ये सारा विश्व-नाटक कर्म और फल पर आधारित घटना-चक्र है। यहाँ हर आत्मा कर्म करती है और उस अनुसार उसका फल सुख या दुख के रूप में भोगती है। ये कर्म और फल का विधि-विधान विश्व-नाटक में अनादि-अविनाशी नूँधा हुआ है, जो सर्वात्माओं पर समान रूप से लागू होता है परन्तु विभिन्न श्रेणी की आत्माओं का विधि-विधान अपना है और उस श्रेणी के अनुसार ही प्रभावित होता है अर्थात् एक अबोध बच्चे के कर्म का फल में तथा एक बुद्धिमान जानकार व्यक्ति के कर्म के फल में; एक ज्ञानी ब्राह्मण आत्मा के कर्म के फल और एक साधारण आत्मा के कर्म के फल में ... और एक मनुष्य के कर्म के फल में और एक पशु-योनि की आत्मा के कर्म के फल में अन्तर अवश्य होता है अर्थात् दोनों के विधि-विधान में अन्तर अवश्य होता है और उस विधि-विधान के अनुसार ही उनको फल मिलेगा। हर आत्मा को अपने कर्मों का फल अवश्य मिलता है, अच्छे का अच्छा और बुरे का बुरा। फल का अन्तर कर्ता के भाव और भावना पर आधारित होता है।

‘‘फारकती दे दी तो थोड़ेही खजाना मिलेगा। बुरा कर्म करने से सौगुणा दण्ड हो जाता है। ज्ञान नहीं तो एक पाप का एक दण्ड। ज्ञान में आने के बाद फिर ऐसे कोई विकर्म करते हैं तो सौगुणा पाप लगता है .. बाप कहते हैं देह के सभी सम्बन्ध छोड़ मामेकं याद करो।’’

सा.बाबा 24.11.69 रिवा.

Q. क्या कोई आत्मा पुरुषार्थ करके कर्म-भोग से मुक्त हो सकती है ? यदि हो सकती है तो कहाँ तक और कैसे ?

कहावत है - Events can't be changed, but we can change our attitude towards events. किये हुए कर्मों के अनुसार कर्मभोग तो आयेगा ही और उसको चुक्ता भी करना ही होगा क्योंकि उसके साथ हमारे अनेक आत्माओं के साथ के हिसाब-किताब चुक्तू होते हैं परन्तु यदि हमने आत्मिक स्थिति का अर्थात् देह से न्यारे होने का सफल अभ्यास किया होगा तो हम उसकी वेदना से बहुत कुछ मुक्त हो सकते हैं।

Q. कर्म-फल के निर्णय में प्रधानता कर्म के स्वरूप की होती है या करने वाले भावना की ?

कर्म-फल के निर्णय में कर्म के स्वरूप और भावना दोनों का महत्व होता है परन्तु फल के निर्णय में कर्म के स्वरूप की तुलना में करने वाले की भावना प्रधान होती है।

‘‘कोई तो दो पैसा भी देते हैं, बाबा हमारी एक ईट लगा दो। कोई हजार भेज देते हैं। भावना तो दोनों की एक है ना तो दोनों को बराबर मिल जाता है।’’

सा.बाबा 30.11.69 रिवा.

Q. मानव जीवन में खाता जमा करने की क्या प्रक्रिया है ? अर्थात् Plus-minus 0 or Plus-minus Plus or Plus-minus Minus?

Plus-minus 0 - सत्यता ये है कि कोई ऐसा समय नहीं होता जब आत्मा इस कर्मक्षेत्र पर हो और उसके खाते में कुछ भी प्लस या माइनस न हो, Plus-minus Plus संगमयुग पर ही होता क्योंकि संगमयुग में आत्मा का खाता जमा अधिक होता है और घटता कम है इसलिए बैलेन्स में प्लस ही होता है और ये प्लस होते-होते अन्त में सम्पूर्ण बन जाते हैं। Plus-minus Minus सतयुग से लेकर कलियुग अन्त तक आत्मा का जमा कम होता है और खर्च अधिक होता है, इसलिए खाता घटता ही जाता है। वास्तव में सतयुग में भी खाता घटता ही होता है क्योंकि वहाँ जमा करने का संकल्प ही नहीं उठता है। ये संकल्प द्वापर से ही उठता है, जब आत्मा का दुखी होना आरम्भ होता है परन्तु द्वापर से देहाभिमान होने के कारण आत्मा के विकर्म अधिक होते हैं, सुकर्म कम होते हैं, इसलिए खाता घटता ही जाता है।

‘‘साइलेन्स शक्ति या अपने श्रेष्ठ कर्मों की शक्ति जमा करने की बैंक सिर्फ अभी खुलती है। और किसी भी जन्म में जमा करने की बैंक नहीं है। अभी अगर जमा नहीं किया तो फिर ये बैंक ही नहीं होगी तो जमा किसमें करेंगे!’’ अ.बापदादा 5.3.08

‘‘बापदादा ने पहले भी बच्चों को यह सूचना दे दी है कि जमा के खाते जमा करने का समय अब संगमयुग ही है। इस संगमयुग पर अब जितना जमा करने चाहो, कर सकते हो। सारे कल्प का खाता अब जमा कर सकते हो। फिर जमा के खाते की बैंक ही बन्द हो जायेगी।’’

अ.बापदादा 18.3.08

‘‘बापदादा से जो खज़ाने मिले हैं, उनको जमा करने की बहुत सहज विधि है। विधि कहो या चाबी कहो ... तीन बिन्दियां। सभी के पास है ना यह चाबी? तीन बिन्दियां लगाओ और खज़ाने जमा होते जायेंगे।’’ अ.बापदादा 18.3.08

Q. आत्मा के पावन बनने और खाता जमा करने में कोई अन्तर है या एक ही बात है?

आत्मा योग से या कर्मभोग से पावन बनती है परन्तु खाता जमा कमाई करने से होता है। जब योगयुक्त होकर, ज्ञान की धारणा करके अच्छे कर्म करते हैं तो आत्मा का आत्मिक शक्ति का खाता जमा होता है। जब हम अपने ज्ञान, गुण, शक्तियों, संकल्प, समय का ईश्वरीय सेवा में सदुपयोग करते हैं तो हमारा खाता जमा होता है। खाता जमा करना कमाई है और पावन बनना आत्मा के ऊपर चढ़े हुए बोझ को उतारना है। वास्तव में आत्मा के खाता जमा होने का भावार्थ आत्मा के पावन बनने और श्रेष्ठ कर्मों की कमाई दोनों के संयोग से है।

‘‘बनते हैं, वही इष्ट भी इतने ही महान बनते हैं।... यह जन्म वा जीवन वा युग सारे कल्प के खाते को जमा करने का युग वा जीवन है। ‘अब नहीं तो कब नहीं’ ... ब्रह्मा बाप के नम्बरवन जाने की विशेषता क्या देखी? कब नहीं, लेकिन अब करना है। ‘तुरत दान महापुण्य’ कहा जाता है।’’ अ.बापदादा 24.3.85

‘‘आज बापदादा सभी के जमा के खाते देख रहे थे। ज्ञान का खजाना, शक्तियों का खजाना, श्रेष्ठ संकल्पों का खजाना कहाँ तक जमा किया है और समय का खजाना कहाँ तक जमा किया है। अभी इन चारो ही बातों का खाता अपना चेक करना।’’

अ.बापदादा 24.3.85

Q. समय और संकल्प आत्मा के श्रेष्ठ खज़ाने हैं, उन खज़ानो को जमा करने की विधि क्या है और सिद्धि क्या है?

समय और संकल्प के खज़ाने को जमा करने की विधि है - मन्सा-वाचा-कर्मणा खज़ानों की बचत करना और खज़ानों को मन्सा-वाचा-कर्मणा श्रेष्ठ कर्मों में लगाना। सिद्धि है खुशी की अनुभूति, आत्म्-सन्तुष्टि।

''कैचिंग पॉवर और टचिंग पॉवर के लिए वर्तमान समय साइलेन्स शक्ति अपने पास जितनी हो सके जमा करो। जब चाहो, जैसे चाहो वेसे मन और बुद्धि को कन्ट्रोल कर सको। व्यर्थ संकल्प स्वप्न में भी टच नहीं करें - ऐसा माइण्ड कन्ट्रोल चाहिए। इसीलिए कहावत है - मन जीते जगत जीत।''

अ.बापदादा 5.3.08

Q. क्या विकल्प से पाप लगता है ?

विकल्प से पाप लगता है। कई बार बाबा ने कहा पाप लगता है और कई बार कहा है विकल्प से पाप नहीं लगता है, जब विकल्प के अनुसार कर्म कर लेते हैं तो पाप लगता है। अब दोनों में यथार्थ क्या है, वह हमको विचार करना है।

विवेक कहता है कि संकल्प से भी पाप या पुण्य होता है। योग भी शुद्ध संकल्प है और योग से पाप कटते हैं तो उसके विपरीत विकल्प से पाप लगता भी अवश्य है। विकल्प का आधार भी देहाभिमान है और जहाँ देहाभिमान होगा, वहाँ विकार होंगे ही और विकार के कारण विकर्म होंगे और विकर्म से पाप अवश्य लगेगा। संकल्प-विकल्प भी एक मानसिक कर्म है।

कोई बच्चा हतोत्साहित होकर पथभ्रष्ट न हो जाये, इसलिए कहीं-कहीं बाबा ने कहा है - विकल्प से पाप नहीं लगता, पाप तब लगता है जब उस अनुसार कर्म करते हैं। परन्तु सत्य ये है कि संकल्प-विकल्प से भी पाप-पुण्य होता है।

जब संकल्प से पुण्य जमा हो सकता है तो पाप भी अवश्य लगना चाहिए। योग भी एक प्रकार की संकल्प की ही क्रिया है, जो आत्मा को पावन बनाती है और वातावरण को शुद्ध काती है। वातावरण को शुद्ध बनाना पुण्य का कार्य है। ऐसे ही विकल्प से वातावरण दूषित होता है और आत्मा का पाप बढ़ाता है।

Q. क्या अभी के पुरुषार्थ का फल भविष्य में ही मिलेगा या अभी भी कोई प्राप्ति है। यदि अभी भी प्राप्ति है तो वह क्या है ?

अभी भी प्राप्ति है और अभी की प्राप्ति भविष्य से भी श्रेष्ठ है। परमात्मा के साथ से, ईश्वरीय ज्ञान के मनन-चिन्तन से अतीन्द्रिय सुख का अनुभव, यथार्थ ज्ञान के साथ मुक्ति-जीवनमुक्ति का यथार्थ अनुभव परमधाम की मुक्ति और सतयुग की जीवनमुक्ति से पदमगुणा श्रेष्ठ है, जो

अभी संगमयुग पर ही होता है। वास्तविकता ये है कि मुक्ति का यथार्थ अनुभव परमधाम में और जीवनमुक्ति का अनुभव सतयुग में भी नहीं होगा।

Q. ज्ञान-योग से पुराने स्वभाव-संस्कार, विकर्मों का बोझ खत्म होता है? यदि हाँ तो कहाँ तक और कैसे, यदि नहीं तो क्यों?

ज्ञान-योग से आत्मा का पुराना स्वभाव-संस्कार परिवर्तन होता है, मिटता नहीं है अर्थात् पुराना मर्ज हो जाता है और नया इमर्ज हो जाता है। मर्ज हुआ 5000 साल बाद अपने समय पर फिर इमर्ज होता है। आत्मा पर विकर्मों का जो बोझा है, वह खत्म हो जाता है और आत्मा पावन बन जाती है। दूसरे कल्प में जब द्वापर से विकारों के वशीभूत होकर विकर्म करते, पाप-कर्म करते, तब फिर विकर्मों और पापों का बोझा चढ़ना आरम्भ होता है।

Q. क्या कोई आत्मा, किसी दूसरी आत्मा के सुख-दुख का कारण हो सकती है? यदि हाँ तो कैसे और कितना?

नहीं, कोई आत्मा किसी दूसरी आत्मा के सुख-दुख का कारण नहीं हो सकती। मूल कारण उसका अपना ही कर्म होता है, दूसरी आत्मा तो निमित्त मात्र होती हैं, जो उनके परस्पर हिसाब-किताब पर आधारित होता है।

''अपने दिल में दूसरों के प्रति जैसी भावना होती वैसा ही दूसरों से रिटर्न मिलता है। जैसे गुम्बज में जो आवाज करते वही आवाज वापस आता है।''

अव्यक्त बापदादा 7.3.90

''यह है सच्ची कमाई, जो करेगा सो पायेगा। ऐसे नहीं कि बाप कमाई करेगा तो बच्चों को मिल जायेगी। नहीं, बच्चों को भी यह सच्ची कमाई करानी है। यह समझने की बातें हैं। खानपान की भी बहुत परहेज़ चाहिए। ... बचचों के लिए बहुत परहेज़ है। बाहर वालों के लिए इतनी नहीं है।'' सा.बाबा 13.5.08 रिवा.

Q. क्या वहाँ सतयुग-त्रेता में ऐसे समझेंगे कि हम अगले जन्म के कर्मों के अनुसार राजा, प्रजा, दास-दासी बने हैं और उस स्थिति के ऊंच-नीच की महसूसता होती है? यदि वहाँ राजा, प्रजा, दास-दासी की ये फीलिंग होगी और कर्मों का ये ज्ञान होगा तो दुख की फीलिंग क्यों नहीं होगी?

''सर्विस नहीं करेंगे तो मिलेगा क्या? वहाँ कोई बादशाह बनते हैं तो जरूर कोई अच्छे कर्म किये हैं। यह तो कोई भी समझ सकते हैं। यह राजा-रानी हैं, हम दास-दासियाँ हैं तो जरूर आगे जन्म में कर्म ऐसे किये हैं। बुरे कर्म करने से बुरा जन्म मिलता है। कर्मों की गति तो

चलती रहती है। अब बाप तुमको अच्छे कर्म करना सिखलाते हैं। वहाँ भी ऐसे जरूर समझेंगे कि अगले जन्म के कर्मों के अनुसार ऐसे बने हैं। बाकी क्या कर्म किये हैं, वह नहीं जानेंगे। ... पिछाड़ी में सबको साक्षात्कार होगा।'' सा.बाबा 2.3.04 रिवा.

हमारे विचार से ऐसी अनुभूति वहाँ नहीं होगी। यदि राज-प्रजा, दास-दासी की फीलिंग हो, तो उसका दुख भी अवश्य होगा। सतयुग में दुख की फीलिंग नहीं होती है, ये सिद्ध करता है कि वहाँ ये राजा, प्रजा, दास-दासी की फीलिंग नहीं होगी, भल हर एक अपना वह कार्य करेगा। वहाँ सभी अपना-अपना कार्य प्रेम-भाव से करेंगे। हम समझते हैं कि बाबा ने ये बात हमारे पुरुषार्थ में तीव्रता लाने के लिए कही है और हमको अपने पुरुषार्थ में तीव्रता लानी भी चाहिए। यथार्थ पुरुषार्थ न करने का पश्चाताप हमको इसी जीवन में शरीर छोड़ते समय होगा। अन्त में तो होगा ही लेकिन उससे पहले भी आत्मा उसके लिए पश्चाताप करती है, उसको अनुभव करती है परन्तु समय निकल जाने के बाद कुछ कर नहीं सकती।

Q. क्या हर आत्मा अपने ही कर्म से सुखी-दुखी होती है ? कैसे कहें कि हर आत्मा अपने कर्मानुसार सुखी-दुखी होती है ?

हाँ, हर आत्मा अपने ही कर्मो अनुसार सुखी-दुखी होती है। इस सत्य पर हम विचार करेंगे तो देखेंगे - एक ही समय, एक ही वातावरण, एक समान परिस्थिति में रहते कोई आत्मा सुख का अनुभव करती तो कोई आत्मा दुख का अनुभव करती है। ये कर्म रूपी बीज का ही प्रभाव है। जन्म से ही कोई सुखी, कोई दुखी होता है। परमात्मा न्यायकारी समदर्शी है, यह विश्व-नाटक सत्य, न्यायपूर्ण, कल्याणकारी है फिर भी इसमें कोई आत्मा सुखी, कोई दुखी है तो इसका कारण क्या है ? इस सत्य पर विचार करेंगे तो आप आपही अनुभव करेंगे कि आत्मा के सुख-दुख का मूल कारण उसका अपना ही कर्म है।

Q. क्या कोई कर्म अकर्म होता है, यदि हाँ तो कैसे और कब होता है और नहीं तो क्यों और कैसे ? अकर्म कौनसा कर्म है ?

नहीं। ये सृष्टि कर्म क्षेत्र है और ये विश्व-नाटक कर्म-फल-कर्म पर आधारित है, यहाँ कोई भी कर्म फल-रहित न होता है और न हो नहीं सकता है। हर कर्म का फल जाने-अन्जाने कर्ता को मिलता ही है। बाबा ने कहा है - सतयुग में तुम्हारे कर्म अकर्म होते हैं परन्तु हमको इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि बाबा ने कोई बात किस उद्देश्य से कही है। बाबा ने ये बात संगमयुग के श्रेष्ठ कर्मों और द्वापर-कलियुग के विकारी विकर्मों की भेंट में कही है। वास्तव में कोई कर्म अकर्म नहीं होता है। हर कर्म का फल होता है। सतयुग में जो दो कलायें कम होती

हैं, वे कर्मो और साधन-सम्पत्ति के भोग के फल स्वरूप ही होती हैं तो अकर्म कहाँ हुआ। अकर्म अर्थात् जिस कर्म का अच्छा या बुरा कोई फल न हो, ऐसा कोई कर्म इस विश्व-नाटक में होता नहीं है। सतयुग-त्रेता के कर्मों को विकर्म कह नहीं सकते क्योंकि वे विकारों के वशीभूत नहीं होते हैं और सुकर्म भी नहीं कह सकते क्योंकि उन कर्मों से आत्मा की चढ़ती कला नहीं होती, इसलिए दोनों की भेंट में उन कर्मों को अकर्म कहा गया है।

कर्म अकर्म होना माना आत्मा निर्लेप है। पहले-पहले जब आत्मायें परमधाम से आती हैं तो आत्माओं को निराकारी दुनिया की आकर्षण होती है और वे अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होती हैं इसलिए वे स्वयं को निर्लेप अनुभव करती हैं परन्तु कोई भी आत्मा जो देह धारण करती है, उसके कर्म न अकर्म हो सकते हैं और न ही वह निर्लेप हो सकती है। निर्लेप एक परमात्मा ही है क्योंकि उसको अपना शरीर नहीं है। आत्मा जब देह से न्यारी अपनी आत्मिक स्थिति में स्थित होती है, तो वह देह के सर्व धर्मों, सुख-दुख से मुक्त होती है, इसलिए ऊपर से आने वाली आत्माओं ने आत्मा को निर्लेप कह दिया है। परन्तु कोई भी आत्मा जिसका कोई भी हिसाब-किताब बाकी है, वह देह से न्यारी आत्मिक स्वरूप की स्थिति में अधिक समय नहीं रह सकती है। ऋषि-मुनियों ने निर्लेप शब्द का प्रयोग भी कर्मातीत, अकर्म शब्द के समान ही प्रयोग किया गया है।

''पवित्रता की प्रत्यक्ष निशानी है - हैपी अर्थात् खुशी। अगर खुशी नहीं है तो अवश्य कोई अपवित्रता है अर्थात् संकल्प वा कर्म यथार्थ नहीं हैं तब खुशी नहीं है। अपवित्रता सिर्फ 5 विकारों को नहीं कहा जाता है। लेकिन सम्पूर्ण आत्माओं के लिए, देवात्मा बनने वालों के लिए अयथार्थ, व्यर्थ, साधारण संकल्प, बोल वा कर्म भी सम्पूर्ण पवित्रता नहीं कहा जायेगा।''

अ.बापदादा 13.01.86

Q. कर्म और पुरुषार्थ में क्या अन्तर है ? या दोनों एक ही बात है ?

ये विश्व-नाटक कर्म और फल, पुरुषार्थ और प्रालब्ध पर आधारित एक घटना-चक्र है। पुरुषार्थ अर्थात् जो कर्म पुरुष अर्थात् आत्म-कल्याण की भावना से किया जाता है, उसे पुरुषार्थ कहते हैं। जो कर्म हम दैनिक जीवन-निर्वाह अर्थ करते हैं, वे व्यवहारिक कर्म होते हैं। यथार्थ पुरुषार्थ संगमयुग पर ही होता है, द्वापर से भी आत्मायें आत्म-कल्याण की भावना से कर्म करते हैं, वह भी पुरुषार्थ है अर्थात् उससे आत्मा की शक्ति की गिरती कला की गति मन्द हो जाती है।

Q. क्या स्थूल रत्नों (पत्थरों) से आत्माओं की ग्रहचारी उतर सकती है ? यदि हाँ तो कैसे और यदि नहीं तो क्यों ? आत्मा पर वास्तविक ग्रहचारी है क्या ?

आत्मा पर वास्तविक ग्रहचारी देहाभिमान की है, जिससे ही आत्मा विकर्म करके दुख भोगती है। आत्मा की यह ग्रहचारी स्थूल पत्थरों से नहीं उतर सकती। आत्मा की ग्रहचारी तो यथार्थ ज्ञान और परमात्मा की मधुर याद से ही उतर सकती है। स्थूल पत्थरों का भी जो प्रभाव देखने में आता है, वह वस्तु और व्यक्तियों से हिसाब-किताब चुक्तू करने का निमित्त मात्र है। पक्के निश्चयबुद्धि ज्ञानी आत्मा की बुद्धि इस बात में जा नहीं सकती। यद्यपि ये निर्विवाद सत्य है कि आत्मा के संकल्पों का प्रभाव जड़ तत्वों पर और जड़ तत्वों का प्रभाव आत्मा पर पड़ता ही है। स्थूल रतनों को पहनने या धारण करने से जो ग्रहचारी उतरती अनुभव होती है, वह भी उस आत्मा की अपनी भावना के आधार पर ही अनुभव होती है क्योंकि आत्मा के संकल्पों का उसके जीवन पर गहरा प्रभाव होता है।

Q. आज जो लोग अपनी ग्रहचारी उतारने के लिए विभिन्न प्रकार के स्थूल रतनों अर्थात् पत्थरों का प्रयोग करते हैं, उसका आधार क्या है ?

आत्मा की स्थिति का स्थूल तत्वों पर और स्थूल तत्वों का आत्मा की स्थिति पर प्रभाव अवश्य होता है। स्थूल रतनों से जो अपने कर्मभोग या समस्याओं को हल करने का पुरुषार्थ करते हैं, उसमें उनके अपने संकल्प का बहुत बड़ा प्रभाव होता है, उस संकल्प की दृढ़ता के अनुसार ही स्थूल रतनों का भी प्रभाव होता है। वास्तव में ये गायन परमात्मा के द्वारा दिये गये ज्ञान रतनों का है।

श्रेष्ठ पुरुषार्थी आत्मायें, जिनके सम्बन्ध-सम्पर्क से अनेक आत्माओं का कल्याण होता है, उनकी बाबा ने रतनों से तुलना की है अर्थात् रतनों की संज्ञा दी है, इसलिए भक्तों ने स्थूल रतन समझकर स्थूल रतनों से ग्रहचारी उतारने का विधि-विधान बनाया और प्रयोग करते हैं। परन्तु ये है चेतन्य रतनों की बात। उन स्थूल रतनों का प्रयोग करते और कराते आत्माओं की कलायें गिरती ही गई हैं और गिरती ही जाती हैं, इसलिए ये कैसे कहा जा सकता कि उनसे आत्मा की ग्रहचारी उतरती है। ये भी अपने कर्मों के भोग को पूरा करने का ही एक विधि-विधान है।

''दृढ़ संकल्प करो, दृढ़ता सफलता की चाबी है। दृढ़ संकल्प में जरा कमी नहीं लाओ क्योंकि माया का काम है हार खिलाना और आपका काम क्या है ? आपका काम है - बाप के गले का हार बनना, न कि माया से हार खाना। तो सभी यह दृढ़ संकल्प करो - मैं सदा बाप के गले की विजयमाला हूँ। ... बापदादा की विजय माला के मणके हैं, पूज्य आत्मायें हैं। भक्त आपकी माला का मणका जपते-जपते अपनी समस्याओं को समाप्त करते हैं। ऐसे श्रेष्ठ मणके हो। ...

तो सबका संकल्प क्या है ? बाप समान बनना है।''

अ.बापदादा 18.3.08

Q. क्या परमपिता परमात्मा की छत्रछाया में बैठी आत्मा पर किसी प्रेतात्मा या रिद्धि-सिद्धि वाले का प्रभाव हो सकता है ? यदि हाँ तो क्यों और कैसे ?

नहीं। यदि हमको परमात्मा पर अटल विश्वास है, हम उसकी छत्रछाया में हैं तो हमारे ऊपर किसी प्रेतात्मा या रिद्धि-सिद्धि वाले का प्रभाव हो नहीं सकता परन्तु हमारे में देहाभिमान के वश अहंकार नहीं होना चाहिए, इस विषय में किसको चेलेन्ज भी नहीं करना चाहिए। अहंकार और चेलेन्ज करना देहाभिमान है, एक विकर्म है, जो अपना प्रभाव अवश्य दिखायेगा। अहंकार आत्मा को परमात्मा की याद भुला देता है, उसकी कल्याणमयी छत्रछाया से वंचित कर देता है और जब परमात्मा की छत्रछाया से वंचित हो गये तो उन प्रेतात्माओं और रिद्धि-सिद्धि वालों का प्रभाव अवश्य होगा। निश्चयबुद्धि की विजय और संशयबुद्धि की हार निश्चित होती है।

Q. क्या जो यहाँ सर्व सुखों का अनुभव नहीं करता, इस जीवन से परेशान है, वह भविष्य जीवन में या सतयुग में सर्व सुखों का अनुभव कर सकता है ?

ये प्रकृति का नियम है कि भविष्य जीवन वहीं से आरम्भ होगा, जहाँ से अभी समाप्त होगा। तो जो अभी सर्व सुखों का अनुभव नहीं कर रहा है, उसके लिए भविष्य जीवन में सर्व सुखों का अनुभव करना असम्भव ही है।

मुक्ति-जीवनमुक्ति परमात्मा पिता का वर्सा है। संगमयुग ही यथार्थ मुक्ति-जीवनमुक्ति के अनुभव का युग है। ड्रामा की अटल भावी और कर्म के अटल विधान और सिद्धान्त को जानने और निश्चय वाला किसी भी घटना से अप्रभावित आत्मा ही निर्भय-निश्चिन्त होकर इस मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव कर सकता है। जननी-जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयशी। बाप अभी है तो उसका प्यार भी अभी ही मिलेगा। अभी बाप के प्यार की अनुभूति स्वर्ग से भी श्रेष्ठ है। अभी का परमात्म-प्यार और अतीन्द्रिय सुख ही भविष्य सुख का आधार है। इसलिए बाबा बार-बार कहते - तुम्हारा ये शरीर भी चला जाये लेकिन खुशी न जाये क्योंकि ये खुशी ईश्वरीय वर्सा है।

''आधा कल्प बाप की समर्थी का वर्सा मिलता है, आधा कल्प फिर माया वह समर्थी गँवा देती है। यह है भारत की बात।... बाप कहते हैं - बच्चे, सदैव हर्षित रहो। यहाँ के हर्षितपने के संस्कार फिर साथ ले जायेंगे।''

सा.बाबा 6.4.04 रिवा.

Q. शुभ-भावना और शुभ-कामना तथा न्याय-प्रक्रिया में क्या सामन्जस्य है ?

शुभ-भावना और शुभ-कामना तथा न्याय-प्रक्रिया में गहरा सम्बन्ध है। यथार्थ न्याय सम्बधित सभी पक्षों के प्रति शुभ-भावना और शुभ-कामना रखने वाला व्यक्ति ही कर सकता है। जिसका किसी एक पक्ष के प्रति अधिक झुकाव होगा, वह कभी भी यथार्थ न्याय नहीं कर सकता है। परमात्मा को धर्मराज इसीलिए कहा जाता है क्योंकि वह सर्व आत्माओं के प्रति शुभ-भावना और शुभ-कामना रखने वाला है, सर्व का कल्याणकारी है।

Q. क्या समर्थ और उत्तरदायी आत्मा को किसी आत्मा को पाप कर्म करते हुए देखकर, जानकर उसको साम-दाम-दण्ड-भेद से रोकना ही शुभ-भावना और शुभ-कामना है, न्याय है, कर्तव्य है या करने देना शुभ-भावना और शुभ-कामना है, न्याय है, कर्तव्य-पालन है ?

देश, काल, परिस्थिति, व्यक्ति को देखकर और अपनी शक्ति अर्थात् अधिकार और कर्तव्य को ध्यान में रखते किसी आत्मा को पाप-कर्म से रोकना ही शुभ भावना और शुभ कामना है, कर्तव्य पालन है परन्तु उसमें उलझना नहीं चाहिए, अपनी स्थिति को खराब नहीं करना चाहिए। शुभ भावना और शुभ कामना से किये हुए पुरुषार्थ वाले की स्थिति कब खराब नहीं होगी, व्यर्थ संकल्प नहीं चलेंगे, उसको अपने कर्तव्य पालन की खुशी होगी। शुभ भावना और शुभ कामना से किया हुआ पुरुषार्थ सफल अवश्य होगा अर्थात् पाप-कर्म करने वाला उसको अनुभव करेगा और यथा शक्ति उससे अपने को मुक्त भी अवश्य करेगा।

Q. किन्ही दो व्यक्तियों के द्वारा किसी समान या समकक्ष पाप कर्म, विकर्म करने पर उनको समान दण्ड देना यथार्थ है या बड़े-छोटे, नये-पुराने, अपने निकट या दूर का भेद करके न्याय करना न्याय है ?

समान पाप-कर्म करने वाले दो व्यक्तियों के पाप-कर्म का दण्ड देने में अन्तर उनकी बौद्धिक स्थिति के आधार पर अवश्य करना होगा और होगा ही परन्तु बड़े-छोटे, नये-पुराने, अपने-पराये के आधार पर नहीं।

Q. किसी पाप कर्म करने पर शुभ भावना, शुभ कामना, ड्रामा समझ कर छोड़ देना न्याय है या संगठन के हित को देखकर दण्ड देना न्याय है ?

गायन है - परिवार के लिए व्यक्तिगत हित को, समाज के लिए परिवार के हित को, देश के लिए समाज के हित को और विश्व के लिए देश को हित को त्याग देना ही महान पुरुष की महानता है। इसलिए संगठन के हित को देखकर दण्ड देना न्यायपूर्ण है।

Q. यदि कोई न्याय अयुक्त प्रतीत होता है तो आवाज उठाना उचित है या ड्रामा समझकर आंखे बन्द कर लेना न्याय है, उचित है ?

वर्तमान समय यज्ञ का कार्य ज्ञान सागर, सर्वशक्तिवान, धर्मराज, सर्व के कल्याणकारी, सर्वज्ञ परमपिता परमात्मा की छत्रछाया में, उनकी श्रीमत के आधार पर, उनकी मार्ग-दर्शना में चल रहा है। वह सर्वज्ञ है, हम उनकी भेंट में अल्पज्ञ हैं, इसलिए हमको उनकी न्याय-प्रक्रिया, विधि-विधान में श्रृद्धा और विश्वास रखना ही हमारे व्यक्तिगत और संगठन के लिए न्यायपूर्ण है। हम अपने अभीष्ठ लक्ष्य के लिए पुरुषार्थी हैं, इसलिए अपने अभीष्ठ लक्ष्य में सफलता के लिए हमको उन बातों से आंखे बन्द कर अपने मन-बुद्धि को अपने अभीष्ठ लक्ष्य पर केन्द्रित रखना ही हमारे लिए और यज्ञ के लिए हितकर और न्यायपूर्ण है। आवश्यकता के समय अपना विचार देना अलग बात है।

जो बात हमारे अधिकार और कर्तव्य क्षेत्र में नहीं है, उसमें न जाना ही हमारे लिए हितकर और न्यायपूर्ण है। जिस कार्य को, न्याय को परमपिता परमात्मा जो सर्वज्ञ है, सर्वशक्तिवान है, बुद्धिमानों की बुद्धि है, सर्व समर्थ है, फिर भी वह साक्षी होकर देखता है तो हम क्यों उसमें अपने संकल्प और शक्ति को व्यर्थ करते हैं। ये एक विचारणीय सत्य है।

लोभ, मोह, भय (मृत्यु-भय, मान-शान का भय, अहित की परिकल्पना का भय) का न्याय-प्रक्रिया में महत्वपूर्ण स्थान है। जो आत्मा इन विकारों से ग्रसित होगा, वह कभी भी सत्य न्याय नहीं कर सकता है।

Q. प्राय: हम किसी भी बात को न जानते, न समझते हुए भी उसके विषय में अपना निर्णय दे देते हैं। वह निर्णय अपने मन में हो या शब्दों में हो - ये कहाँ तक यथार्थ है?

किसी भी बात को न जानते, न समझते हुए भी उसके विषय में अपना निर्णय दे देना बुद्धिहीनता की निशानी है, ज्ञान की कमी है। ऐसे निर्णय देने वाले अपने पाप-कर्मों का खाता बढ़ाते हैं और अपने समय-शक्ति को व्यर्थ नष्ट करते हैं।

यथार्थ निर्णय वही दे सकता है, जो अपनी आत्मिक स्थिति में स्थित हो और उसकी बुद्धि एक परमात्मा की याद में हो। परमात्मा धर्मराज भी है और जो उनकी मधुर स्मृति में होगा, उसका निर्णय अवश्य ही यथार्थ होगा। सबके प्रति शुभ भावना, शुभ कामना रखना हमारा परम कर्तव्य है परन्तु देश-काल-परिस्थिति को देखते हुए यथार्थ निर्णय करना भी हमारा परम कर्तव्य है। इसके लिए बाबा ने कहा - लव और लॉ का बैलेन्स रखना है। न्याय ऐसा हो, जो व्यक्ति का भी अहित न हो और संगठन की भी मर्यादा भंग न हो तब ही उसे यथार्थ न्याय कहा जायेगा।

उत्तरदायी होकर भी कोई यथार्थ न्याय नहीं करता, स्वार्थ, लोभ-मोह आदि के वशीभूत गलत

न्याय करता है तो वह पाप का भागी होता है।

उत्तरदायी न होते अपने अधिकार-कर्तव्य की सीमा के बाहर होकर, सत्य को न जानते हुए व्यक्त या मन्सा में किसी घटना के विषय में गलत न्याय देकर, उसे वातावरण फैलाने वाले पर भी पाप चढ़ता है।

समर्थ होकर भी किसी अन्याय के प्रति आवाज न उठाने वाला भी पाप का भागी बन जाता है। महाभारत में भी इसका वर्णन है। असमर्थ होते भी समय पर अन्याय के प्रति आवाज उठाने वाला पाप के बोझ से बच जाता है। जैसा कि महाभारत में विकर्ण ने किया, जिसके फलस्वरूप वह युद्ध के समय विजयी पक्ष में आ गया अर्थात् विजयी हुआ।

Q. कर्मातीत स्थिति और विकर्माजीत स्थिति में क्या अन्तर है ?

पूर्ण कर्मातीत आत्मायें परमधाम में ही होती हैं और विकर्माजीत सतयुग-त्रेता में होती हैं। कर्मातीत अर्थात् मुक्त आत्मा और विकर्माजीत अर्थात् जीवनमुक्त आत्मा। आत्मा संगमयुग पर ही कर्मातीत और विकर्माजीत बनने का पुरुषार्थ करती हैं। यहाँ जो यहाँ जितना इसका अभ्यास करता है, वह उतना ही उनका यहाँ भी अनुभव करता है और वहाँ सतयुग में भी जीवनमुक्ति का अनुभव करता है। यहाँ की कर्मातीत और विकर्माजीत स्थिति का अनुभव परमधाम की कर्मातीत स्थिति और स्वर्ग की विकर्माजीत स्थिति से अनन्त गुणा श्रेष्ठ और आनन्दमय है। वास्तविक अनुभव अभी का ही है, जब आत्मा सुकर्म और विकर्म दोंनों का ज्ञान भी होता है कर्मातीत और विकर्माजीत का भी ज्ञान होता है और अनुभव भी होता है।

Q. क्या धर्मराजपुरी सूक्ष्मवतन में अलग कोई स्थान है, जहाँ आत्माओं के कर्मों का हिसाब-किताब होता है ?

Q. क्या धर्मराज का अपना कोई स्वतन्त्र अस्तित्व है अर्थात् उनकी अपनी आत्मा है, यदि है तो कैसे और यदि नहीं तो धर्मराज कौन ?

अन्त में ब्रह्मा तन में पधारे शिवबाबा और ब्रह्मा बाबा अर्थात् बापदादा ही धर्मराज के रूप में होंगे क्योंकि धर्मराज का अलग से कोई अस्तित्व नहीं है।

''विनाश होने के पहले सब विकर्म योग से भस्म करो। नहीं तो जन्म-जन्मान्तर के विकर्मों की सज़ा धर्मराजपुरी में बहुत खानी पड़ेगी। ... यह भी बाप साक्षात्कार करायेंगे कि बार-बार तुमको समझाया था। ... ईश्वर का बच्चा बनते हो तो फिर विकार नहीं होना चाहिए। ''

सा.बाबा 1.2.08 रिवा.

''मनुष्य भगवान को ही धर्मराज समझते हैं। ... गर्भ जेल में धर्मराज तुमको सज़ा देते हैं। जो पाप किये हैं, उनका साक्षात्कार कराकर सज़ा देते हैं। सतयुग में तो होता है गर्भ महल। ... द्वापर-कलियुग में गर्भ जेल होता है।''

सा.बाबा 3.6.08 रिवा.

Q. कर्मों की गहन गति क्या है?

दो-तीन साल में बाबा ने कई बार यह बात कही है कि वर्तमान समय बच्चों को कर्म की गहन गति भूल गई है। कर्म की गहन गति भूलने से आत्मा विकर्मों के सम्बन्ध में बेपरवाह हो जाती है, जिससे विकर्म होते रहते हैं। श्रेष्ठ कर्मों में प्रवृत्ति रहने के लिए कर्मो की गहन गति के विषय में क्या-क्या बातें बाबा ने बताई हैं और कर्म की गहन गति क्या है, वह हमारी बुद्धि जाग्रत रहना अति आवश्यक है।

''कर्मों की गति बड़ी गुह्य है। जैसे ड्रामा का अटेन्शन रहता है, आत्मिक स्वरूप का अटेन्शन रहता है, धारणाओं का अटेन्शन रहता है, ऐसे ही कर्मों की गुह्य गति का भी अटेन्शन आवश्यक है। ... आप विशेष आत्मायें हो, साधारण आत्मायें नहीं हो। विश्व-कल्याण के निमित्त, विश्व-परिवर्तन के निमित्त बनी हुई हो।''

अ.बापदादा 15.12.07

''अभी कर्मों की गुह्य गति का ज्ञान मर्ज हो गया है, इसलिए अलबेलापन है। ... आप लोगों की अपनी स्थिति तो न्यारी और प्यारी है लेकिन दूसरों की बातों में समय तो देना पड़ता है।''

अ.बापदादा 21.11.92 दादियों से

''यह छोटे-छोटे सूक्ष्म पाप श्रेष्ठ सम्पूर्ण स्थिति में विघ्नरूप बनते हैं। ... ये अति सूक्ष्म व्यर्थ कर्म बुद्धि को, मन को ऊंचा अनुभव करने नहीं देते हैं ... अल्पकाल के मनमौजी नहीं बनो, सदाकाल की रुहानी मौज में रहो ... कर्मों की गुह्य गति के ज्ञाता बनो।''

अ.बापदादा 21.11.92

ये विश्व-नाटक कर्म और फल पर आधारित एक घटनाचक्र है, जिसमें कर्म प्रधान है। आत्मा जैसा कर्म करती है, उस अनुसार उसको उसका फल भोगना ही पड़ता है। इसलिए कर्मों का ज्ञान और श्रेष्ठ कर्म करने की शक्ति का साधन और साधना का ज्ञान होना अति आवश्यक है। परमात्मा इस विश्व-नाटक का पूर्ण ज्ञाता है, वही आकर कर्मों की गहन गति का ज्ञान देता है और पुराने विकर्मों से मुक्त होने लिए योग सिखाता। हमारे वर्तमान और भविष्य के कर्म श्रेष्ठ हों, जिससे हमारे जीवन में भी सुख-शान्ति हो और विश्व भी सुख-शान्ति सम्पन्न बने, उसके लिए कर्म की गहन गति के साथ-साथ श्रेष्ठ कर्म करने की शक्ति का भी विधि-विधान बताता है। श्रेष्ठ कर्म करने की प्रेरणा या ज्ञान तो अनेक धर्म-पिताओं और महान

आत्माओं ने समय-समय पर दिया लेकिन उनको करने की शक्ति आत्मा में कैसे आये, उसका रास्ता न किसी के पास था, न है और न ही किसी ने बताया, जिसके कारण निरन्तर कर्मों में गिरावट आती गई और उसके फलस्वरूप व्यक्तिगत जीवन में और समग्र विश्व में दुख-अशान्ति बढ़ती गई और बढ़ती जा रही है। यह काम परमात्मा का है, जो अभी कर रहा है। इसलिए हमको कर्मों की गहन गति के विषय में जरूर सोचना चाहिए और बाबा ने जो ज्ञान दिया है, उसको बुद्धि में रखकर ही कर्म करना चाहिए। कर्मों की गति तो अति गहन है परन्तु उसको समझने के लिए यहाँ कुछ विचार किया गया है, जो कर्मों की गहन गति के आगे सागर में बूँद के समान है।

* ये विश्व-नाटक एक कर्मक्षेत्र है, जहाँ आत्मायें आकर कर्म करती हैं और कर्मानुसार अच्छा या बुरा फल दुख-सुख के रूप में भोगती हैं। कोई भी आत्मा कर्म के बिना यहाँ रह नहीं सकती और कोई भी कर्म फलहीन नहीं हो सकता। इसलिए कर्म के फल के विषय में चिन्ता न कर श्रेष्ठ कर्म करने का पुरुषार्थ करना चाहिए। इस सम्बन्ध में एक बात और स्मृति में रखना अति आवश्यक है कि हर आत्मा को अपने ही कर्मों का अच्छा या बुरा फल मिलता है अर्थात् भोगना होता है।

''मेहनत बिगर फल थोड़ेही मिल सकता है। बाप तो पुरुषार्थ कराते रहते हैं। भल होता ड्रामा अनुसार ही है परन्तु पुरुषार्थ तो करना होता है। ... पुरुषार्थ तो तुमको करना ही है। पुरुषार्थ से ही प्रालब्ध बनती है। मनुष्य पूछते हैं - पुरुषार्थ बड़ा या प्रालब्ध ? अब बड़ी तो प्रालब्ध है परन्तु पुरुषार्थ को बड़ा रखा जाता है, जिससे प्रालब्ध बनती है।''

सा.बाबा 6.8.04 रिवा.

* परमात्मा कर्म की गुह्य गति का पूर्ण ज्ञाता है परन्तु उसका फल देने में उसका कोई सीधा सम्बन्ध नहीं है। विश्व-नाटक में कर्म और फल का विधि-विधान नूँधा हुआ है, परमात्मा उसका ज्ञान मनुष्यात्माओं को देता है। उसके अनुसार जो जैसा करता है, वैसा फल पाता है।

* वर्तमान जीवन जीवात्मा के भूतकाल के कर्मों का फल है और भविष्य जीवन का बीज है अर्थात् हमारा भविष्य जीवन का आधार वर्तमान के कर्म हैं और हमको जो भी सुख-दुख मिल रहा है, वह पूर्व कर्मों का फल है। पूर्व कर्म इस जन्म के भी हो सकते हैं और अनेक पिछले जन्मों के भी हो सकते हैं।

* सारे कल्प में संगमयुग ही सुकर्म का युग है। सतयुग-त्रेता अकर्म का और द्वापर-कलियुग विकर्मों के युग हैं। अभी हम श्रेष्ठ कर्म करके सारे कल्प के लिए कर्मफल का खाता जमा

करते हैं अर्थात् कर्मफल जमा करने का युग संगमयुग ही है।

* कर्मातीत बनने के बाद कोई भी आत्मा इस कर्मक्षेत्र पर नहीं रह सकती है। कर्मातीत आत्माओं की दुनिया परमधाम है।

* परमात्मा से प्रतिज्ञा कर तोड़ना भी महान पाप-कर्म है क्योंकि उससे परमात्मा के ज्ञान का अपमान होता है। तोड़ने वाला परमात्मा की निन्दा कराने का निमित्त बन जाता है। इसलिए बाबा ने कहा सत्गुरु का निन्दक ठौर न पाये अर्थात् वह सतयुग में श्रेष्ठ पद नहीं पा सकता है।

* तन-मन-धन परमात्मा को समर्पित करके उसमें अपनेपन की भावना रखना या वापस लेना या लेने का संकल्प रखना भी विकर्म है पापकर्म है। इसके लिए भक्ति मार्ग में भी दान देकर उसे मांगना या वापस लेना बड़ा पाप मानते हैं। इस सत्य को समझाने के लिए शास्त्रों में भी इस सम्बन्ध में अनेक उदाहरण लिखे गये हैं।

* यज्ञ में बना ब्रह्मा भोजन का तिरस्कार करना और फेंकना भी पाप है, उसका भी आत्मा को पश्चाताप करना पड़ता है और उसके फलस्वरूप कभी न कभी भोजन की कमी महसूस करना पड़ती है। इसलिए भक्ति में यज्ञ के परसाद का और ब्रह्मा-भोजन का विशेष महत्व है

* सर्वशक्तिवान परमात्मा का बनकर अल्पज्ञ आत्माओं या यथाशक्ति सम्पन्न आत्माओं से किसी चीज की अपेक्षा रखना, मांगना भी पाप-कर्म है क्योंकि इससे भी परमात्मा का अपमान है।

* रिद्धि-सिद्ध वालों से अपना या दूसरों के कल्याण की इच्छा रखना या उनके द्वारा किसी के प्रति कुछ कराना भी सर्व के कल्याणकारी ज्ञान सागर सर्वशक्तिवान परमात्मा का अपमान कराना है और परमात्मा की शक्ति में संशयबुद्धि होना है। जिसके विषय में अव्यक्त बापदादा ने मधुवन के क्लास में स्पष्ट कहा है कि यह महापाप है।

* दूसरों को शिक्षा देना और स्वयं न करना भी पाप-कर्म है क्योंकि इससे सिद्ध करता है कि वह उस कर्म के शुभाशुभ परिणाम को जानता है। जानकर भी ऐसा कर्म करना स्वयं ही स्वयं को धोखा देना है। लौकिक दुनिया में भी जानकार के लिए कर्म का फल अन्जान से अधिक होता है और ईश्वरीय विधि-विधान भी ऐसा ही है।

* जानकर या अलबेलेपन से यज्ञ की धन-सम्पत्ति को नुकसान करना भी एक विकर्म है। उससे भी अपना जमा का खाता खत्म होता है।

* यज्ञ के Behalf पर किसी व्यक्ति से व्यक्तिगत लाभ उठाना भी यज्ञ की चोरी है, जो भी

पाप के खाते में जमा होता है।

* जीवात्मा अपना आप ही मित्र और आपही अपना शत्रु है, इसलिए अपने कर्म के लिए किसी दूसरे को दोषी ठहराना भी पाप-कर्म है।

* ये कर्म और फल का विधि-विधान आत्मा का सारे कल्प तक चलता रहता है, परस्पर लेन-देन होता रहता है और कल्पान्त में आत्माओं का परस्पर का रहा हुआ सारा हिसाब चुक्ता होता है। इस सत्य को जानकर किसी के प्रति गलत धारणा बनाने से भी विकर्म का खाता बढ़ जाता है।

* ईर्ष्या-द्वेष भी एक मानसिक विकर्म है, जिसका फल मानसिक दुख-अशान्ति के रूप में आत्मा को भोगना पड़ता है। इससे व्यर्थ चिन्तन चलता है, जो आत्मिक शक्ति को ह्रासित करता है अर्थात् आत्मा को शक्तिहीन बना देता है।

* बाबा ने बताया है - ब्राह्मण आत्मा का किसी आत्मा के प्रति कुदृष्टि अर्थात् विकार की दृष्टि रखना महापाप है।

* कर्म रूपी बीज कभी निष्फल नहीं हो सकता है, इसलिए कर्म करके कभी भी अधीर्य नहीं होना चाहिए क्योंकि किसी कर्म का फल तुरन्त मिलता है, किसी का कुछ देर से मिलता है और किसी का समय आने पर मिलता है परन्तु मिलता अवश्य है, इसलिए ज्ञानी आत्मा को अपना धैर्य कभी नहीं खोना चाहिए। इसके लिए बाबा ने एक मुरली में कहा है - कोई बीज मौसम आने पर ही अंकुरित होता है, फल देता है।

* कृत्य-अकृत्य की आवाज़ अन्तर-आत्मा स्वयं करती है। जो शान्त चित्त होकर धैर्य से अपनी अन्तर-आत्मा की आवाज़ को सुनता है, वह सहज ही कृत्य-अकृत्य का निर्णय कर सकता है और यथार्थ निर्णय करके अकृत्य से बच सकता है।

* यज्ञ में दान का पैसा आता है, उसका सदुपयोग, दुरुपयोग, उपभोग करने वालों के साथ उन दान-दाताओं का लेनदेन का हिसाब-किताब बनता है, परमात्मा तो दोनों के बीच मध्यस्त है।

* यज्ञ के कणा-दाना का भी महत्व है, जिसके विषय में भी बाबा ने बताया है और कहा है कि यज्ञ का कणा-दाना भी वेस्ट नहीं करना है, उसका भी हिसाब होगा।

* यज्ञ की मान-मर्यादा को कायम रखने, वातावरण को शुद्ध रखने और शुद्ध बनाने का उत्तरदायित्व यज्ञ में रहने वाली आत्माओं के ऊपर है, उससे उनका पाप-पुण्य का खाता प्रभावित होता है।

* विश्व-नाटक की यथार्थता को देखें तो इसमें धर्मराज का कोई स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं है परन्तु बाबा ने अनेक बार धर्मराज के विषय में महावाक्य उच्चारे हैं, उनकी यथार्थता पर विचार करें तो इस विश्व-नाटक की न्यायपूर्णता ही धर्मराज का रूप है, जिसके अनुसार हर आत्मा को अपने कर्म का फल अवश्य मिलता है। इसमें संकल्प, स्वांस, सेकेण्ड का भी हिसाब होता है। हम समझते हैं कि अन्त में ब्रह्मा बाबा ही धर्मराज के रूप में साक्षी होकर देखेगा और धर्मराज के रूप में हमारे सामने आयेगा। बाबा ने भी इस सम्बन्ध में कहा है।

* बाबा ने कहा है ट्रिबुनल भी ब्राह्मण आत्माओं के लिए ही बैठेगी और वर्तमान की निमित्त आत्मायें ही उस ट्रिबुनल में बैठेंगी और कर्म के फल कर निर्णय करेंगी।

''अभी तुम आसुरी कुल से ईश्वरीय कुल में आये हो, फिर अगर आसुरी कुल में गये अथवा उनको याद किया तो विकर्म विनाश नहीं होंगे। फिर अन्त में बहुत रोना पछताना पड़ेगा। पापों का बोझा रह जाता है तो फिर तुम्हारे लिए ट्रिब्यूनल बैठती है। ... नाम बदनाम किया तो बहुत सज़ा खानी पड़ेगी।'' सा.बाबा 4.6.08 रिवा.

* बाबा ने ये भी कहा है कि साक्षात्कार के बिना किसी को कोई सज़ा नहीं मिल सकती, इसलिए अन्त में सब साक्षात्कार होगा और उस अनुसार सज़ा मिलेगी।

* बाबा का बनकर श्रीमत के बिना विकारी सम्बन्धियों से सम्बन्ध जोड़ना, यज्ञ की साधन-सम्पत्ति उनके काम में लगाना, उसका भी गहरा हिसाब-किताब है।

* यज्ञ के विधि-विधान अनुसार बाबा का बनकर विकार में जाना और न बताने वाले पर बहुत कड़ा दण्ड है। धर्मराज बाबा को सच बताने से सजा कम हो जाती है। लौकिक दुनिया में भी ऐसा होता है कि जज को सच बताने से जज सजा हल्की कर देते हैं।

''यहाँ के कायदे भी हैं। बच्चा बना तो सारे जीवन के पाप भी लिखने पड़ें। धर्मराज शिवबाबा है। इस जन्म में मैंने यह-यह पाप किये हैं तो आधा माफ हो जाता है। यह भी लॉ है कि जज के आगे सच बोलते थे तो सजा कम हो जाती थी। भूल करके लिखे नहीं तो 100 गुणा दण्ड हो जाता है।'' सा.बाबा 13.5.08 रिवा.

* ये भी ध्यान में रखना अति आवश्यक है कि इस विश्व-नाटक में किसी को कोई धन-सम्पत्ति, पद, मान-शान मिलता है, वह उसके कर्मों अनुसार ही मिलता है, इसलिए किससे राग-द्वेष, ईर्ष्या-घृणा, का कोई स्थान नहीं है। हर एक को अपने कर्मों पर ध्यान देना है।

* ब्राह्मण आत्माओं के संकल्प का और साधारण आत्माओं के कर्म का फल समान होता है, इसलिए ज्ञानी आत्माओं को इस सत्य को विचार कर बहुत सावधान रहना चाहिए और

समझकर कोई संकल्प और कर्म करना चाहिए, जिससे कोई पाप-कर्म न हो। इसीलिए कहा गया है - सोच-समझकर कर्म करो।

* हर घटना या व्यवहार में आत्माओं का पूर्व का हिसाब-किताब चुक्ता होता है और नया बनता है, इसलिए किसी के विषय कब कोई व्यर्थ संकल्प या राग-द्वेष, घृणा आदि का भाव नहीं आना चाहिए।

* हर आत्मा का अपना ही कर्म उसके सुख-दुख का मूल कारण है, दूसरे व्यक्ति तो ड्रामा अनुसार निमित्त कारण बनते हैं।

* कर्म एक दर्पण है, जिसमें कर्ता की अन्तर्भावना, उसकी वंश परम्परा, उसके भूतकाल और वर्तमान काल के संस्कारों दर्शन होता है।

* साधारण रूप में जो कर्म अपने दिल को खाता है, वह विकर्म होता है।

* कर्म के विधि-विधान अनुसार पाप-कर्म करने वाले को बचाना या बचाने का प्रयत्न करने वाला भी उस पाप-कर्म में भागी बनता है।

* पाप-कर्म करने वाले को साधन-सम्पत्ति, राय-सलाह द्वारा सहयोग करने वाला भी उस पाप कर्म में भागीदार होता है।

* कर्म का फल हर चेतन प्राणी को मिलता है, जिसके आधार पर उनका पुनर्जन्म होता है, वे सुखी-दुखी होते हैं।

* कर्म के फल को निर्णय करने में कर्म के स्वरूप से कर्ता की भावना प्रधान होती है।

* सामूहिक रूप से किये गये कर्मों का फल सामूहिक रूप में भोगना पड़ता है। जैसे भूकम्प, सुनामी आदि2 में जो आत्माओं को सामूहिक दुख होता है, वह सामूहिक पाप-कर्मां के फल स्वरूप ही होता है।

* देश, समाज, संगठन द्वारा अनुचित या अन्यायपूर्ण किये गये कर्मों में उस देश या संगठन के द्वारा खुशी प्रगट करना, सहमति देना भी सामूहिक विकर्म हो जाता है और उसका भी फल सामूहिक रूप में भोगना पड़ता है।

* पाप-कर्म करने वाले की महिमा करना भी पाप-कर्म है।

* दुखी-अशान्त होना भी एक विकर्म है क्योंकि उससे दुख-अशान्ति का वायब्रेशन फैलता है, जो दुख-अशान्ति मय वातावरण का निर्माण करता है और वह वातावरण अन्य आत्माओं को भी दुखी-अशान्त बनाता है, इसलिए उससे पाप का खाता बढ़ता है। ऐसे ही खुशी में रहने,

योग में रहने से जो वातावरण बनता है, वह आत्माओं को खुशी प्रदान करता है, इसलिए वह पुण्य के खाते में जमा होता है।

* आत्माभिमानी स्थिति में किये गये कर्म अकर्म (सूक्ष्म ह्रास), देहाभिमान में किये गये कर्म विकर्म और आत्माभिमानी-परमात्माभिमानी स्थिति में किये गये कर्म सुकर्म होते हैं। सुकर्म कर्म करने का समय संगमयुग ही है।

सतयुग में जो कर्म करते, खाते-पीते, उसका फल तो होता है परन्तु उसे विकर्म या पाप नहीं कह सकते क्योंकि उससे किसी को दुख नहीं देते, अपनी जमा कमाई खाते रहते और खाकर खत्म कर देते। वहाँ के कर्मों को सुकर्म भी नहीं कह सकते क्योंकि वहाँ किसी को सुख देने की बात नहीं है क्योंकि सब सुखी ही होते हैं।

''यह भी तुम बच्चे अभी जानते हो - 21 जन्म तुम पुण्यात्मा रहते हो, फिर पापात्मा बनते हो। जहाँ पाप होता है, वहाँ दुख जरूर होगा।... ये सब बातें उनकी बुद्धि में ही बैंठेंगी, जिनकी बुद्धि में कल्प पहले बैठीं होंगी।'' सा.बाबा 21.8.04 रिवा.

* कर्म का विधि-विधान है - 'दुख देंगे तो दुख पायेंगे और सुख देंगे तो सुख पायेंगे', जो हर प्राणी पर प्रभावित होता है।

* भक्ति अर्थात् अज्ञान काल में कर्म का फल एक का एकगुणा और ज्ञान मार्ग में एक का सौगुणा होता है, जो विकर्म और सुकर्म दोनों पर समान रूप से प्रभावित होता है।

* बिना कारण के कोई कर्म नहीं होता, इसलिए बिना जाने किसी के विषय में गलत निर्णय करने या धारणा बनाने से भी आत्मा का पाप का खाता बढ़ता है।

* किन्हीं व्यक्तियों के सम्बन्ध में निर्णय करने में स्वार्थपरता के वशीभूत निर्णय करने वाले का उन व्यक्तियों के साथ अच्छा या बुरा हिसाब-किताब बनता है।

* समर्थ होकर पाप-कर्म का प्रतिरोध न करना भी पाप-कर्म है और असमर्थ होते भी समय आने पर सत्यता को स्पष्ट न करना भी पाप-कर्म है।

* बिना सोचे-विचारे कर्म करने से भी किसी आत्मा को दुख होता है तो वह भी पाप-कर्म है।

* पाप-कर्म से अर्जित धन-सम्पत्ति का उपभोग करना भी पाप-कर्म है।

* यदि हम कोई अच्छा या बुरा कर्म करते हैं और उसको देख-सुन कर और भी करते हैं तो उससे भी हमारा पाप-पुण्य का खाता प्रभावित होता है।

* दूसरे के लिए अशुभ सोचना या हीन भावना रखना भी पाप कर्म है।

* आवश्यकता से अधिक उपभोग करना भी विकर्म है, जिसका पश्चाताप आत्मा को रोग-शोक के रूप में करना ही पड़ता है। हर आत्मा को उतना ही उपभोग का अधिकार है, जिससे उसकी कार्य क्षमता बढ़ती है या स्थिर रहती है।

* सभी प्राणी पृथ्वी-पुत्र हैं, उनमें किसी को भी दुख देना या मारना पाप कर्म है, ऐसा करने वाले को प्रकृति से अवश्य ही दुख के रूप में फल भोगना पड़ता है।

* हर आत्मा अपने कर्मों अनुसार सुखी-दुखी होती है, इसलिए किसकी आलोचना करना, चर्चा करना भी ज्ञानी आत्मा के लिए विकर्म है। जीवात्मा अपना आपही मित्र है और आपही अपना शत्रु है।

* आवश्यकता से अधिक संग्रह भी विकर्म है, इसलिए ही सन्यास मार्ग और हठयोग में भी अपरिग्रह का नियम है। बाबा ने भी अनेक बार इस सम्बन्ध में महावाक्य उच्चारे हैं।

* कर्म का विधि-विधान है - अगर आप किसकी बुराई करेंगे, किसकी कमी को फैलायेंगे तो वह भी तुम्हारी कई गुणा बुराई अवश्य करेगा। इस सम्बन्ध में भी अव्यक्त बापदादा ने एक मुरली में इशारा दिया है।

* यदि हम किसी की बुराई को चित्त में रखेंगे तो हम कब प्रसन्नचित्त नहीं रह सकेंगे, शुभ चिन्तन नहीं कर सकेंगे।

* यज्ञ के सम्बन्ध में - यज्ञ में जो आत्मा अपने तन-मन-धन से बीज बोती है, उसको उसका ही फल मिलता है। ये बीज बोने के भी अनेक विधि-विधान हैं। यज्ञ के खर्च में बचत करता है, उसका वह बचत उसके खाते में जमा होती है और जो बरबाद करता है, उसका खाता कम होता है।

दूसरों की सेवा करके जो यज्ञ में धन की सेवा कराता है, उसमें भी उसका अंश जमा होता है।

* अभी संगमयुग पर सर्वात्माओं का उनके पार्ट अनुसार सारे कल्प का खाता जमा करना होता है। जो जितना जमा करता है, उस अनुसार आगे कल्प में उसका पार्ट चलता है, प्राप्ति होती है।

* कोई आत्मा कितने भी शुभ भाव और भावना से किसके साथ व्यवहार करता है परन्तु दूसरे को जितना सुख या दुख मिलता है, उसके फल स्वरूप करने वाले पहली आत्मा कितनी भी बड़ी हो, उसको भी उसके अच्छे का अच्छा और बुरे का बुरा फल भोगना ही पड़ता है। दुनिया वालों की बुद्धि में भी इस सम्बन्ध में विचार हैं, जो रामायण और महाभारत में अनेक उपाख्यानों में ऐसे विचार व्यक्त किये गये हैं। जैसे नारद का विष्णु को श्राप।

‘‘धर्मराज का खाता कोई कम नहीं है। बहुत सूक्ष्म हिसाब-किताब है। इसलिए निस्वार्थ सेवाधारी बनो। अपना स्वार्थ नहीं हो लेकिन कल्याण का स्वार्थ हो।… बाप को कुछ करना नहीं पड़ता है, सारा खेल ऑटोमेटिक है।’’ अ.बापदादा 25.11.95

‘‘श्रीमत पर न चले तो और ही दुर्गति को पायेंगे, फिर बहुत पश्चाताप करना पड़ेगा। फिर धर्मराजपुरी में शिवबाबा इस तन में बैठ समझायेंगे कि मैंने तुमको इस ब्रह्मा तन द्वारा इतना समझाया, पढ़ाया … परन्तु नहीं चले। … धर्मराज बाबा सज़ा देते हैं तो बहुत रड़ियां मारते हैं, जो कल्प-कल्प के लिए कायम हो जाती है।’’ सा.बाबा 29.1.08 रिवा.

‘‘अब नाटक पूरा होता है, अब हमको वापस जाना है। … कदम-कदम में पद्मों की कमाई है तो पद्मों का घाटा भी है। अगर सर्विस से जमा होता है तो उल्टे कर्मों से ना भी होती है। बाबा के पास सारा हिसाब रहता है। अब बाप सम्मुख पढ़ा रहे हैं, तो सारा हिसाब जैसे उनकी हथेली पर है।’’ सा.बाबा 29.1.08 रिवा.

‘‘कर्मों की गति बड़ी गुह्य है। जैसे ड्रामा का अटेन्शन रहता है, आत्मिक स्वरूप का अटेन्शन रहता है, धारणाओं का अटेन्शन रहता है, ऐसे ही कर्मों की गुह्य गति का भी अटेन्शन आवश्यक है। … आप विशेष आत्मायें हो, साधारण आत्मायें नहीं हो। विश्व-कल्याण के निमित्त, विश्व-परिवर्तन के निमित्त बनी हुई हो।’’ अ.बापदादा 15.12.07

Q. सूक्ष्म वतन में किये गये कर्मों का प्रभाव होता है, क्या ब्रह्मा बाबा सूक्ष्मवतन से जो कर्म कर रहे हैं, उनका उनके ऊपर प्रभाव हुआ है या हो रहा है

एक शिवबाबा को छोड़कर कोई भी आत्मा कहाँ भी मन्सा-वाचा-कर्मणा कोई भी कर्म करती है, उसका प्रभाव उसकी स्थिति पर अवश्य पड़ता है। इसलिए ब्रह्मा बाबा भी सूक्ष्म वतन से जो सेवा कर रहे हैं, उससे उनका भाग्य बनता है, स्थिति चढ़ती कला में जाती है, जिसके बाद ही वे निराकारी स्थिति में जायेंगे।

‘‘यहाँ तो तन-मन-धन सहित बलि चढ़ना पड़ता है। … श्रीमत तब मिले जब बलि चढ़े। सर्वशक्तिवान बाप के साथ योग लगाने से ही शक्ति मिलती है। बाप का नहीं बनते हैं तो शक्ति नहीं मिलती है। … सगे और लगे दो प्रकार के बच्चे हैं। सगे वे हैं, जो पवित्रता की राखी बांधते हैं। बाकी जो पवित्र नहीं रहते हैं, उनको सगे कह न सकें।’’

सा.बाबा 3.5.08 रिवा.

Q. कर्म-फल का विधि-विधान क्या है और उसका अन्य योनि की आत्माओं से क्या सम्बन्ध है ?

Q. जानवरों को जो सुख-दुख होता है, वह कर्म और फल के विधि-विधान अनुसार होता है या उनका कोई और विधि-विधान है ?

ये एक कर्मक्षेत्र है, जहाँ कर्म और कर्मफल का अनादि-अविनाशी खेल चलता है। कर्म और कर्मफल का विधि-विधान हर आत्मा पर प्रभावित होता है। कोई भी आत्मा, भले वह किसी भी योनि की क्यों न हो परन्तु हर आत्मा कर्म करती है और उसके अनुसार फल भोगती है। इसलिए ही हर आत्मा सुख-दुख का अनुभव करती है, जो कोई भी उसको देखकर समझ सकता है। परन्तु हर योनि की आत्मा के कर्म का फल निर्णय करने का ड्रामा में अलग-अलग विधि-विधान है, जो उसकी बौद्धिक योग्यता पर निर्भर करता है अर्थात् हर आत्मा का बुद्धिबल के आधार पर उसका फल उनको मिलता है। साधारण मनुष्यों के लिए -

साधारण मनुष्यों के अच्छे-बुरे कर्म का अच्छा-बुरा फल एक का एकगुणा होता है।

ब्राह्मण अर्थात् ज्ञानी आत्माओं के लिए - ब्राह्मण आत्माओं अर्थात् ज्ञानी आत्माओं के कर्म का फल एक का सौगुणा होता है क्योंकि उनको परमात्मा ने ज्ञान दिया है और ब्राह्मण आत्मायें कल्प-वृक्ष की जड़ में बैठी हैं, जिन पर सारे कल्प-वृक्ष का अर्थात् हर आत्मा का आधार है। ये विधि-विधान अच्छे-बुरे दोनों प्रकार के कर्मों पर प्रभावित होता है।

अन्य योनि की आत्माओं के लिए - मनुष्य संसार का सबसे बुद्धिमान प्राणी है, इसलिए उस पर इस विश्व के उत्थान-पतन का सारा दारोमदार है, इसलिए उसके कर्मों का फल अन्य योनि की आत्माओं की अपेक्षा विशेष होता है। यदि कोई मनुष्य किसी योनि की आत्मा को दुख देती है तो भले वह आत्मा उसको दुख न दे सके परन्तु प्रकृति से उसको उसका फल अवश्य मिलता है। मनुष्यों की उतरती कला और चढ़ती कला के कर्मों से अन्य योनि की आत्मायें भी प्रभावित होती है, जिससे उनके भी कर्म, संस्कार उसके अनुरूप बन जाते हैं।

हर योनि की आत्मा कर्म करती है और उसके कर्मों का सम्बन्ध उसी योनि की आत्माओं से या उसके समकक्ष योनि की आत्माओं से या प्रजातियों से होता है, उनके साथ ही उनका हिसाब-किताब बनता है और चुक्ता होता है। अन्य योनि की आत्मायें मनुष्य योनि से कम बुद्धिमान हैं, इसलिए उनके कर्म का फल उसी स्तर पर निश्चित होता है और वे उसे अपने बौद्धिक स्तर पर ही अनुभव करते हैं।

हर योनि की आत्मा अपनी योनि के अनुसार कर्म करती है और उस योनि के अनुसार उसको अपने कर्मों का फल मिलता है। ये मनुष्यों की भूल है या भ्रम है, जो समझते हैं कि मनुष्यात्मा अपने बुरे कर्मों का फल भोगने के लिए विभिन्न निम्न कोटि की योनियों में जन्म लेता है।

सत्यता ये है कि हर योनि की आत्मा को अपनी ही योनि में अपने कर्मों का अच्छा या बुरा फल मिलता है और वह उसी योनि में पुनर्जन्म लेकर भोगती है।

''जानवर भी किस्म-किस्म के होते हैं। कोई में क्रोध बहुत होता है। हर एक जानवर का स्वभाव अलग-अलग होता है। ... सबसे पहले दुख देने का विकार है काम कटारी चलाना।''

सा.बाबा 15.2.05 रिवा.

''इसको कयामत का समय कहा जाता है। सभी का हिसाब-किताब चुक्तू होना है। जानवरों का भी हिसाब-किताब चुक्तू होता है ना। कोई कोई राजाओं के पास रहते हैं, कितनी उनकी सम्भाल होती है।... यह भी ड्रामा में नूँध है।'' सा.बाबा 11.3.69 रिवा.

Q. कर्मातीत स्थिति के समीप पहुँचने की क्या पहचान है ?

वह आत्मा सहज और जब चाहे, जैसे चाहे, जितना समय चाहे, उस स्थिति में स्थित हो सकती है।

उसको घर की आकर्षण होगी, इसलिए वह इस देह में रहते अपने को देह से न्यारा अनुभव करेगी।

उसको जन्म और मृत्यु का कोई भय नहीं होगा।

वह कर्मभोग होते भी उसकी वेदना से मुक्त होगी अर्थात् कर्मभोग में भी कर्मयोग के परमसुख की अनुभूति में होगी।

Q. क्या देवतायें कर्मातीत होंगे या उनको कर्मातीत कहा जायेगा ?

नहीं। देवतायें विकर्माजीत होते हैं, कर्मातीत नहीं क्योंकि सतयुग-त्रेतायुग में विकार नहीं होता परन्तु कर्म तो होते हैं और कर्म का फल भी होता है, इसलिए उनको कर्मातीत नहीं कहा जा सकता है। कर्मातीत आत्मा परमधाम में ही होती है या परमपिता परमात्मा कर्म में आते भी कर्मातीत हैं क्योंकि वे निराकार हैं, उनको अपना शरीर नहीं है, इसलिए उनका कोई भी कर्म उनकी स्थिति को प्रभावित नहीं करता है। भिन्न समय के अनुसार ये चार शब्द हैं, इन पर विचार करके हम कर्मातीत अवस्था का राज़ सहज अनुभव कर सकते हैं। कर्मातीत - विकर्माजीत - विकर्मी - सुकर्मी। कर्मातीत परमधाम में, सतयुग-त्रेता में विकर्माजीत, द्वापर-कलियुग में विकर्मी और संगमयुग पर परमात्मा की श्रीमत पर सुकर्म करके सुकर्मी बनते हैं।

Q. क्या देवताओं के कर्मों को सुकर्म कहा जा सकता है ?

नहीं। सुकर्म उनको ही कहा जाता है, जिससे किसी आत्मा का कल्याण हो, चढ़ती कला हो।

सतयुग में किसी भी आत्मा का किसी भी प्रकार अकल्याण ही नहीं तो कल्याण किसका और सतयुग में आत्मा की चढ़ती कला भी नहीं होती इसलिए देवताओं के कर्मों को न सुकर्म कहा जा सकता है और न ही विकर्म क्योंकि उनके कर्मों से किसको दुख भी नहीं होता है। देवतायें कर्म तो करते हैं लेकिन उनसे कोई विकर्म नहीं होता है अर्थात् उनके कर्मों से किसको दुख नहीं होता है, इसलिए उनको विकर्माजीत कहा जाता है।

''बच्चों को सुकर्म-अकर्म-विकर्म की गति भी समझाते हैं। कर्म अकर्म कब होता है, फिर कर्म विकर्म कैसे बनते हैं। स्वर्ग में कोई बुरा काम होता नहीं, जो विकर्म बनें क्योंकि रावणराज्य ही नहीं है, इसलिए कर्म अकर्म बन जाते हैं। लेप-छेप तब लगता है जब विकर्म करते हैं।'' (सतयुग में सुकर्म भी नहीं होते, जिससे पुण्य का खाता जमा हो और न विकर्म होते हैं, जिससे पाप का लेप-छेप चढ़े और दुख हो। इसलिए वहाँ के कर्मों को अकर्म कहा जाता है)

सा.बाबा 14.4.07 रिवा.

Q. क्या साकार बाबा के समय के कर्म और फल के नियम-सिद्धान्तों और आज के कर्म-फल के नियम-सिद्धान्तों में कोई अन्तर है? यदि है तो क्या है?

नहीं, कर्म-फल का निमय-सिद्धान्त तो अविनाशी है परन्तु यहाँ सतयुग की राजाई स्थापन हो रही है, ये सम्पूर्ण जगत संगठित रूप में और व्यक्तिगत रूप में परिवर्तनशील है, इसलिए परिवर्तन होगा ही, जिस अनुसार कर्म के फल का निश्चय होगा और उसके फलस्वरूप ही सतयुग से त्रेता और फिर द्वापर-कलियुग आयेगा। राजायें बदलेंगे, मनुष्यों के सुख-साधन बदलेंगे, जो बदलते हुए कलियुग के अन्त तक पहुँचेंगे। इन सबका आभास आत्मा को अभी संगमयुग पर भी होगा और इन सबका बीजारोपण भी अभी संगमयुग पर ही होता है, जो आगे जाकर फलते-फूलते हैं।

''ऐसे हमारे जन्म तो बहुत हैं लेकिन सबसे महत्व इस जन्म का है।... समझते हैं कि मनुष्य जन्म अति दुर्लभ है। 84 लाख योनियों के बाद ही एक सुख का जन्म मिलता है। परन्तु ऐसा होता तो सभी मनुष्य सुखी होने चाहिए। ... यह जन्म सबसे उत्तम है।''

मातेश्वरी 24.6.65

''योग से विकर्म विनाश नहीं होंगे तो बहुत कड़ी सज़ा खानी पड़ेगी। जानवर आदि तो सजा नहीं खाते हैं। सजा मनुष्य के लिए है। ... इस समय मनुष्य जानवर से भी बदतर हैं, उनको ही फिर मनुष्य से देवता बनना है।'' सा.बाबा 2.4.07 रिवा.

Q. विकर्मों और व्यर्थ कर्मों के भोग का विधि-विधान क्या है?

विकर्मों का फल तो आत्मा दुख-अशान्ति के रूप में भोगती ही है परन्तु व्यर्थ कर्मों और

साधारण कर्मों का फल भी आत्मा को सजाओं के रूप में भोगना ही पड़ता है क्योंकि कर्म-फल के विधि-विधान के अनुसार कोई भी कर्म निष्फल नहीं होता है। आत्मा जो साधारण या व्यर्थ कर्म में अपना समय, संकल्प और शक्ति लगाती है, उसके फलस्वरूप आत्मा संगमयुग के परमानन्द से वंचित हो जाती है और उस समय, संकल्प, शक्ति से जो भविष्य फल बनने वाला है, वह भी नहीं बनता है। साधारण और व्यर्थ कर्मों के फलस्वरूप भी आत्मा को कुछ न कुछ दैहिक व्याधि आती ही है। आत्मा जो विकर्म करती, उससे दूसरी आत्मायें भी प्रभावित होती है, उसके फलस्वरूप आत्मा को गहरी दुख-अशान्ति भोगनी पड़ती और उसके निदान के लिए अन्य आत्माओं से भी सम्बन्ध जोड़कर हिसाब-किताब चुक्ता करना पड़ता है। साधारण और व्यर्थ कर्मों का फल पश्चाताप के रूप में अधिक भोगना होता है, जो अभी भी होता है और अन्त में भी होता है।

Q. विकर्मो का कारण क्या है अर्थात् मनुष्य विकर्म क्यों करता है और उसका निवारण क्या है ?

अज्ञानता जनित देहाभिमान के वशीभूत 5 विकार और भय विकर्मों का मूल कारण है। यथार्थ ज्ञान ही विकर्मों से मुक्ति का एकमात्र साधन है। भय भी अनेक प्रकार का होता है। यथा अन्धकारमय भविष्य का भय, मृत्यु का भय, कर्मभोग का भय, कर्मभोग के समय कौन मदद करेगा, उसका भय, मान-प्रतिष्ठा का भय, शत्रुओं का भय आदि-आदि। वास्तविकता को देखें तो ये सब बातें विकर्मो का कारण है और ये सब बातें विकर्मों के फलस्वरूप ही होती हैं क्योंकि सृष्टि का सारा खेल चक्रवत् है। यज्ञ में समर्पित होकर और बाबा के बच्चों को भी यह भय भयभीत करता है, जिससे वे भी अनेक प्रकार के विकर्म कर बैठते हैं। यथा असुरक्षा की भावना से प्रेरित यज्ञ में रहकर यज्ञ का पैसा बाहर जमा करना, सर्वज्ञ-सर्वशक्तिवान परमात्मा का बनकर अल्पज्ञ आत्माओं से आशा रखना, उनके साथ सम्बन्ध स्थापित करना। वास्तव में परमात्मा का बनकर अल्पज्ञ आत्माओं से आशा रखना भी एक विकर्म है क्योंकि उससे परमात्मा और ज्ञान की निन्दा कराते हैं। यथार्थ सत्य को देखा जाये तो जो ड्रामा में पहले हुआ होगा, वही होगा, हमारे शुभ कर्मों का संचित हमको यत्र-तत्र-सर्वत्र मदद करता है। इस सत्य को जानकर सभी प्रकार के भय से मुक्त होकर सुकर्मों में प्रवृत्त होना ही उज्ज्वल-सुखमय भविष्य का एकमात्र साधन है। परमात्मा भी हमको मदद तब ही करता है, जब हम उसकी आज्ञा पर चलकर सुकर्म करते हैं।

''सतगुरु का निन्दक ठौर न पाये। काम-क्रोध के वश उल्टे कर्म करते हैं तो गोया बाप की

निन्दा कराते हैं, जिससे दण्ड के निमित्त बन जाते हैं।''

सा.बाबा 29.1.08 रिवा.

Q. पाप-कर्म का निर्णय किस आधार पर होगा या होता है ? वह दर्पण क्या है, जिससे हम सहज समझ सकें, अनुभव कर सकें कि यह पाप-कर्म है ? पाप-कर्म के फल का निर्णय क्या और कैसे होता है ?

कोई भी कर्म पाप-कर्म, साधारण कर्म, पुण्य-कर्म है, इसके निर्णय में कर्ता की भावना बहुत महत्वपूर्ण है। उदाहरणार्थ - बाबा ने कहा है विकार में जाना सबसे बड़ा पाप-कर्म है। अब प्रश्न उठता है कि ये पाप कर्म तो है परन्तु ये सबके लिए समान रूप से लागू नहीं होता है, इस कर्म के फल का निर्णय हर व्यक्ति के लिए अलग होता है। स्त्री-पुरुष जो सन्तानोत्पत्ति के लिए विकार में जाता हैं तो उसको कुछ अंश में दुख-अशान्ति की भोगना तो मिलेगी परन्तु उनका कर्म पाप-कर्म नहीं कहा जायेगा। वे ही व्यक्ति अगर विकार में मनोरंजन या इन्द्रीय सुख के लिए जाते हैं तो उसको प्रकृति की ओर से रोग-शोक, कर्मभोग में रूप में पहले से अधिक भोगना भोगनी होगी। परन्तु अगर कोई ब्रह्मा कुमार-कुमारी विकार में जाते हैं तो उनका ये कर्म महापाप के खाते में जमा होगा और उनको रोग-शोक, कर्मभोग के रूप में पहले वालों से अधिक भोगना तो भोगनी ही होगी लेकिन ईश्वरीय आज्ञा का उलंघन करने, अपनी प्रतिज्ञा को भंग करने के फलस्वरूप बहुत पश्चाताप करना होगा और विकल्पों के फलस्वरूप कर्मभोग की भोगना भी पहले वाले दोनों से अधिक होगी। उपर्युक्त तीनों परिस्थितयों के विषय में विचार करें तो देखेंगे - पहले वाले दोनों व्यक्तियों को विकार में जाने के लिए चोरी या झूठ बोलने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि उनको उसके लिए सामाजिक छूट मिली हुई है, उनको अधिकार है परन्तु जो ब्रह्मा कुमार-कुमारी हैं, उनको न ये सामाजिक अधिकार है और न ही ईश्वरीय आज्ञा है, इसलिए उनको उसके लिए झूठ बोलना होगा, चोरी-छिपे विकार में जाने की चेष्टा करेंगे या विकार में जायेंगे, जिससे उनका पाप में पाप का खाता बढ़ता जायेगा। वास्तविकता पर विचार करें तो ऐसे विकार में जाने वाले ब्रह्मा कुमार-कुमारियों की स्थिति मजदूरों और जमादारों से भी बदतर है अर्थात् मजदूर या जमादार उनसे अच्छे है क्योंकि उनको उसके लिए न झूठ बोलने की आवश्यकता है और न ही चोरी की आवश्यकता है, उसके लिए वे स्वतन्त्र हैं। इन तथ्यों पर विचार करें तो हमको पाप-पुण्य के विषय में सत्य का निर्णय करना सहज होगा और हम अनेक प्रकार के पापों से सहज बच जायेंगे।।

Q. क्या परमात्मा की याद से बुरे संस्कार भस्म होते हैं ? यदि होते हैं तो कैसे और नहीं होते हैं तो पावन बनने का क्या विधि-विधान है ?

अच्छे और बुरे दोनों ही प्रकार के संस्कार आत्मा में अविनाशी भरे हुए हैं। जब बुरे संस्कार अपनी चरम सीमा पर होते हैं तब परमात्मा आकर यथार्थ ज्ञान देते हैं और योग सिखलाते हैं। परमात्मा के साथ योग से आत्मा के अच्छे संस्कार इमर्ज होते हैं अर्थात् जाग्रत होते हैं और बुरे संस्कार मर्ज हो जाते हैं। याद का नियम है कि आत्मा जिसको याद करती है, तो उसके अनुरूप गुण-धर्म आत्मा में आते हैं अर्थात् इमर्ज होते हैं। इस विधि-विधान के अनुसार परमात्मा की याद से हमारे ईश्वरीय संस्कार और दैवी संस्कार जाग्रत होते हैं और आसुरी संस्कार आधे कल्प के लिए मर्ज होते हैं, भस्म नहीं।

Q. क्या किसी आत्मा के स्थान पर किसी दूसरी आत्मा को कोई जमदूत ले जा सकते हैं? यदि ले जा सकते हैं तो वे जमदूत कौन हैं, क्या उनकी अपनी आत्मायें हैं? यदि हैं तो विनाश के बाद वे आत्मायें कहाँ रहती हैं?

अलग से जमदूतों का कोई अस्तित्व नहीं हैं और जब जमदूतों का ही अस्तित्व नहीं है तो किसी आत्मा के स्थान पर किसी दूसरी आत्मा को ले जाने का प्रश्न ही नहीं उठता है। आत्मा के अपने विकर्म ही अन्त समय जमदूत के रूप में दिखाई देते हैं। बाबा ने कहा है कब-कब आत्मा कहाँ छिप जाती है, जो बाद में क्रियाशील हो जाती है। जब जमदूतों का कोई स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं है अर्थात् उनकी आत्मायें ही नहीं है तो विनाश के बाद वे कहाँ रहेंगी, यह भी प्रश्न नहीं उठता है।

''मैं कालों का काल भी हूँ। अन्त समय जो जमघटों आदि का साक्षात्कार होता है क्योंकि पाप करते हैं तो सज़ा भी खाते हैं। बाकी जमघट आदि कोई हैं नहीं।... बच्चों को पहले-पहले यही निश्चय करना है कि यही हमारा बाप, टीचर और सतगुरु है।''

सा.बाबा 21.3.07 रिवा.

Q. हम योग स्थिति में बैठे हैं और उस किसी आत्मा के चीखने की आवाज़ आ जाये कि बचाओ-बचाओ या पास ही किसी शेर के दहाड़ने की आवाज़ आ जाये तो हमको क्या करना चाहिए या उस समय हमारा क्या कर्तव्य है?

वास्तविकता ये है कि सही योग में बैठे व्यक्ति के सामने ऐसी बात हो नहीं सकती। बाबा ने कहा है योग में तो सुनना भी बन्द हो जाता है। दूसरी बात यदि हम सही योग में बैठे हैं तो उसके वायब्रेशन के अन्दर ऐसी कोई घटना हो नहीं सकती। तीसरी बात बाबा ने कहा है - अन्त समय ये सब होगा, उस समय तुम्हारी अचल-अडोल स्थिति रहे, उसके लिए अभी से ही तैयार रहना है अर्थात् योग स्थिर रहे।। चौथी बात अब आत्मा अपनी यथार्थ आत्मिक स्थिति में होती है तो कृत्य का संकल्प स्वत: आता है, उसकी शुभ में अभिरुचि और अशुभ में अरुचि

स्वत: होती है, उसके लिए अभी से सोचने की आवश्यकता नहीं है। अभी आवश्यकता है देह से न्यारी अपनी आत्मिक स्थिति में स्थित होने के सफल अभ्यास की। बाबा ने कहा है - तुमको चिन्ता और चिन्तन दोनों से परे जाने का अभ्यास करना है।

Q. क्या किसी दुर्घटना, जैसे किसी हिंसक जीव द्वारा किसको घायल कर देना या मार देना आदि को सुनकर या देखकर हमको भयभीत होकर अपने यथार्थ पुरुषार्थ या पथ से विचलित होना चाहिए ?

नहीं। वास्तविकता को विचार करें तो हमको अपने अभीष्ट पथ अहिंसा से कब विचलित नहीं होना चाहिए और अपने सिद्धान्त पर अटल रहना चाहिए। हमको हर बात के पॉजिटिव पथ को विचार करना चाहिए। 1. योग और शुभ भावना, शुभ कामना का प्रभाव जड़, जंगम और चेतन पर अवश्य पड़ता है, 2. हमारा शुभ कर्म का खाता संचित है तो कोई भी हमको दुख नहीं दे सकता है, 3. ड्रामा के ज्ञान को भी विचार करें तो हमको किसी भी हिंसक घटना को देखकर कोई हिंसक वृत्ति या संकल्प को करने की आवश्यकता नहीं है। हम अपने सत्य, अहिंसा के पथ पर सदा अटल रहेंगे तो उसके प्रभाव से कोई हिंसक जीव भी हमारे ऊपर वार नहीं कर सकता है। इसके लिए ही गायन है कि सतयुग में शेर और गाय एक घाट जल पीते हैं। हठयोगी ऋषि-मुनियों के आश्रमों में भी शेर आदि शान्त में बैठे दिखाते हैं।

अब प्रश्न उठता है कि क्या अपनी सुरक्षा के लिए हम भी हिंसक वृत्ति को धारण करें अर्थात् उसके लिए अस्त्र-शस्त्र को धारण करें, प्रबन्ध करें, उसका विधि-विधान सीखें ? वास्तविकता पर विचार करते हैं और अनेक घटनाओं को देखते हैं तो अनुभव होता है कि ये विधि-विधान कारगर नहीं है क्योंकि समय पर यथार्थ बुद्धि ही काम करती है। इसलिए इन सब बातों से मुक्त होकर अपनी आत्मिक शक्ति का खाता संचित करेंगे तो ही हम सदा सुरक्षित रहेंगे।

Q. शास्त्रों में जो राजा बलि और दानवीर कर्ण के उपाख्यान हैं, वे कहाँ से आये हैं

अभी बाबा जो कहते हैं कि कोई भी आत्मा तुम्हारे दर पर आये परन्तु खाली हाथ न जाये, उसके आधार पर ही राजा बलि के दान और दानवीर कर्ण के विषय में उपाख्यान बनाये हुए हैं।

''ऐसा समय आयेगा जब सभी भिखारी रूप से आप लोगों से यह भीख मांगेगे। ... दाता के बच्चे तो सभी को देने वाले ठहरे। आप सभी की एक सेकेण्ड की दृष्टि के, अमूल्य बोल के भी प्यासे सामने आयेंगे। ऐसा अन्तिम दृश्य अपने सामने रखकर पुरुषार्थ करो। ऐसा न हो कि दर पर आयी हुई कोई भूखी आत्मा खाली हाथ जाये। साकार में क्या करके दिखाया ?''

अ.बापदादा 17.7.69

जमा का खाता

परमात्मा ने हमको आत्मिक शक्ति को जमा करने का रास्ता दिखाया है और अनुभव कराया है और साथ ही हमको समय और हमारे कर्तव्य का ज्ञान भी दिया है, उस कर्तव्य को हम सफलता पूर्वक निभा सकें, उसके लिए साधनों का ज्ञान भी दिया है और साधना भी सिखाई है।

''अपना बैंक बैलेन्स भी नोट करना है। ... जमा करने का समय भी नहीं है और अपने जमा के खाते से सन्तुष्ट भी नहीं हो तो फिर क्या होगा? ... अपनी कमाई से खुद भी सन्तुष्ट न रहेंगे तो औरों को क्या करेंगे। ... ऐसा समय आयेगा जब सभी भिखारी रूप से आप लोगों से यह भीख मांगेगे। ... दाता के बच्चे तो सभी देने वाले ठहरे। जमा होगा तो दे सकेंगे।''

अ.बापदादा 17.7.69

''जब जमा होगा तब तो औरों को भी भीख दे सकेंगे। दाता के बच्चे तो सभी को देने वाले ठहरे। आप सभी की एक सेकेण्ड की दृष्टि के, अमूल्य बोल के भी प्यासे सामने आयेंगे। ऐसा अन्तिम दृश्य अपने सामने रखकर पुरुषार्थ करो। ऐसा न हो कि दर पर आयी हुई कोई भूखी आत्मा खाली हाथ जाये। साकार में क्या करके दिखाया?''

अ.बापदादा 17.7.69

Q. कितने प्रकार से हम अपना खाता जमा कर सकते हैं और दुआओं का खाता और पुण्य के खाते जमा में क्या अन्तर है, दोनों को जमा करने का क्या विधि-विधान है?

बाबा ने खाता जमा करने की तीन विधियां बताई हैं। एक अपने स्व पुरुषार्थ से अर्थात् ज्ञान-योग के अभ्यास से आत्मा को पावन बनाना अर्थात् आत्मिक शक्तिका खाता जमा करना, दूसरा दैवी परिवार में सन्तुष्ट रहकर और सबको सन्तुष्ट करने से पुण्य का खाता जमा करना और तीसरा निस्वार्थ भाव से आत्माओं की सेवा करके दुआओं का खाता जमा करना। तीनों प्रकार से आत्मा की शक्ति जमा होती है, जो सारे कल्प तक चलती है और भिन्न-भिन्न प्रकार से फल देती है अर्थात् सुख देती है।

''सेवाधारियों को एक तो दुआओं का खाता जमा होता है, दूसरा सेवा के पुण्य का खाता जमा होता है, तीसरा ब्राह्मणों के समीप सम्बन्ध में आते हैं और बापदादा से मिलने का एक्स्ट्रा टर्न मिल जाता है।'' अ.बापदादा 30.11.99 पार्टी

''साइलेन्स शक्ति या अपने श्रेष्ठ कर्मों की शक्ति जमा करने की बैंक सिर्फ अभी खुलती है। और किसी भी जन्म में जमा करने की बैंक नहीं है। अभी अगर जमा नहीं किया तो फिर ये बैंक ही नहीं होगी तो जमा किसमें करेंगे!'' अ.बापदादा 5.3.08

''अभी जो करना है वह कर लो। अगर सोचते रहेंगे ... तो समय आयेगा जो ये सोच पश्चाताप के रूप में बदल जायेगा। इसलिए बापदादा पहले से ही इशारा दे रहा है कि साइलेन्स की शक्ति जमा करो। कुछ भी हो एक सेकेण्ड में साइलेन्स में खो जाओ।''

अ.बापदादा 5.3.08

''बापदादा ने पहले भी बच्चों को यह सूचना दे दी है कि जमा के खाते जमा करने का समय अब संगमयुग ही है। इस संगमयुग पर अब जितना जमा करने चाहो, कर सकते हो। सारे कल्प का खाता अब जमा कर सकते हो। फिर जमा के खाते की बैंक ही बन्द हो जायेगी।''

अ.बापदादा 18.3.08

''एक है - अपने पुरुषार्थ प्रमाण खज़ाने जमा करना, दूसरा है - दुआओं का खाता। ... सन्तुष्टता दुआओं का खाता बढ़ाती है और तीसरा खाता है - पुण्य का खाता। पुण्य का खाता जमा करने का साधन है ... मन, वाणी, कर्म, सम्बन्ध-सम्पर्क में आते सदा निस्वार्थ और बेहद की वृत्ति, स्वभाव, भाव और भावना से सेवा करना।''

अ.बापदादा 18.3.08

''चेक करो - स्व-पुरुषार्थ का खाता, दुआओं का खाता और पुण्य का खाता कितनी परसेन्ट में जमा हुआ है ? ... बापदादा ने सुना दिया है, इशारा दे दिया है कि अभी समय की समीपता तीव्रगति से आगे बढ़ रही है, इसलिए अपनी चेकिंग बार-बार करनी है।''

अ.बापदादा 18.3.08

''बापदादा से जो खज़ाने मिले हैं, उनको जमा करने की बहुत सहज विधि है। विधि कहो या चाबी कहो ... तीन बिन्दियां। सभी के पास है ना यह चाबी ? तीन बिन्दियां लगाओ और खज़ाने जमा होते जायेंगे।''

अ.बापदादा 18.3.08

Q. हमारा खाता जमा है, उसकी परख क्या है ?

धन जमा होने की पहली परख है सम्पन्नता और सन्तुष्टता और जो सन्तुष्ट होता है, वह प्रसन्न अवश्य होता है। जिसके पास धन होता है, वह सन्तुष्ट होता है, इसलिए उसके अन्दर औरों को भी सम्पन्न और सन्तुष्ट, सुखी बनाने की भावना होती है। ये ईश्वरीय खज़ाने अविनाशी हैं और इनसे सम्पन्न और सन्तुष्ट आत्मा दूसरों को देने बिगर रह नहीं सकती। सन्तुष्टता स्वयं में ही बहुत बड़ा खज़ाना है।

जिसका पर्याप्त खाता जमा होगा, वह आत्मा सदा राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति, ईर्ष्या-घृणा, इच्छा-आकांक्षा, आशाओं से मुक्त सदा सम्पन्न-सन्तुष्ट-प्रसनन होगी। उसके मन

में सदा दूसरों को देने का ही संकल्प होगा, किसी से कुछ लेने की इच्छा-आकांक्षा नहीं होगी। दूसरे से लेने की इच्छा-आकांक्षा वाला तो स्वयं ही भिखारी है, वह दूसरों को कैसे दे सकेगा।

जिसका खाता जमा होता है, वह नशे और खुशी में रहता है, जो नशा और खुशी उसके चेहरे और चलन से दिखाई देती है। स्थूल धन भी जिसके पास जमा होता है, उसके चलन और चेहरे से नशा और खुशी दिखाई देती है परन्तु उसमें अहंकार भी रहता है और उसमें सन्तुष्टता नहीं रहती है क्योंकि उसमें प्रतिस्पर्धा अधिक रहती है, उसमें ईर्ष्या-द्वेष, भय-चिन्ता रहती है। जिसका आत्मिक शक्ति का खाता जमा होता है, उसमें नशा और खुशी तो रहती है परन्तु उसमें नम्रता रहती हे, इसलिए ही गायन है कि फलों से सम्पन्न वृक्ष झुक जाता है।

राजा बलि और दानवीर कर्ण के उपाख्यान अभी बाबा जो शिक्षा देते हैं, उसकी ही यादगार स्वरूप बने हुए हैं। बाबा ने अनेक बार कहा है - कोई भी दुखी, प्यासी आत्मा आपके दरवाजे पर आकर खाली हाथ न जाये।

''अपना बैंक बैलेन्स भी नोट करना है।... जमा करने का समय भी नहीं है और अपने जमा के खाते से सन्तुष्ट भी नहीं हो तो फिर क्या होगा ?... अपनी कमाई से खुद भी सन्तुष्ट नहीं रहेंगे तो औरों को क्या करेंगे।''
अ.बापदादा 17.7.69

Q. आत्मा का पुण्य-पाप का खाता का हिसाब कैशबुक है या खाताबही (Ledger) अर्थात् + - or - or ö और भोग से + - कम होता है ?

संगमयुग पर खाता जमा करने और सारे कल्प में खाता जमा करने के विधि-विधान में कुद भिन्नता है क्योंकि संगमयुग पर आत्माओं को सारा पुराना खाता खत्म करके घर वापस जाना होता है। संगमयुग पर परमात्मा ज्ञान देते हैं और श्रेष्ठ कर्म सिखलाते हैं, उसके अनुसार जो पुरुषार्थ करते हैं, उससे हमारा आधे कल्प का पाप का खाता खत्म हो जाता है और पुण्य का खाता जमा रहता है, इसलिए सतयुग-त्रेता में आत्मायें उसको उपभोग करते हुए सदा खुशी रहती हैं। सतयुग-त्रेता में आत्माओं का कोई खाता जमा नहीं होता है, उपभोग करने से केवल जमा किया हुआ खाता कम होता रहता है। संगमयुग पर पुरुषार्थ करके जो आत्मिक शक्ति का खाता जमा करते हैं, वह आत्मिक शक्ति का खाता चलता तो सारे कल्प है परन्तु द्वापर से दोनों प्रकार के खाते चलते हैं अर्थात् आत्मायें अच्छे-बुरे दोनों प्रकार के कर्म करते हैं, इसलिए दोनों प्रकार के खाते चलते हैं, जिससे आत्मा को सुख और दुख दोनों होते हैं।

यदि सदा कैशबुक के समान है तो जब जमा का पूरा खाता खत्म होकर पाप का खाता बढ़ जाये तब ही आत्मा को दुख होना चाहिए परन्तु द्वापर से आत्मा को सुख और दुख

समयानुसार दोनों ही होते हैं इससे समझ में आता है कि खाता खाताबही के समान जमा होता है अर्थात् पुण्य कर्म का भी फल मिलता है तो पाप कर्म का भी फल मिलता है। पाप-पुण्य दोनों के खाते संचित होते हैं।

''देही-अभिमानी बन उपकार करने से भविष्य 21 जन्मों के लिए पूँजी जमा होती है। देहाभिमान में आकर अपकार करने जो जमा हुआ होता है, वह भी खत्म हो जाता है। ... जो उपकार करना नहीं जानते हैं, वे जरूर अपकार ही करेंगे, आसुरी मत पर।''

सा.बाबा 14.3.08 रिवा.

योग और धारणा

Q. यथार्थ योग की स्थिति क्या है ?

आत्मा की परमात्मा के साथ वह एकाग्रता, जहाँ इन्द्रियों की सर्व क्रियायें बन्द हो जायें, वही योग की यथार्थ स्थिति है। जहाँ चेतन हो परन्तु चेतनता न हो, जिसको बीजरूप स्थिति, स्वीट साइलेन्स की स्थिति, ज्वालारूप स्थिति के रूप में भी बाबा ने बताया है। इस स्थिति में आत्मा का आत्मिक शक्ति का सबसे अधिक विकास होता अर्थात खाता जमा होता है।।

बिन्दु बन बिन्दू रूप बाप को परमधाम में याद करना ही यथार्थ योग है। शिवबाबा को ब्रहमा तन में याद करना, परमात्मा के गुणों शक्तियों का चिन्तन करना, ज्ञान का मन्थन-चिन्तन करना सेकेण्ड स्थिति है। शिवबाबा या ब्रह्मा बाबा के चित्र को सामने रख, उस पर मन-बुद्धि को एकाग्र करना यथार्थ योग नहीं है और ये एकाग्रता समयान्तर में आत्मा के गिरावट का कारण बन जाता है।

''बाप कहते हैं - जो भी आकारी, साकारी, निराकारी चित्र हैं, उनको तुम्हें याद नहीं करना है। ... बाप कहते हैं अब चित्रों को देखना बन्द करो। यह है भक्तिमार्ग। ... बच्चे कोई भी चित्र को नहीं देखो। मामेकम् याद करो, बुद्धियोग ऊपर लटकाओ। ... एक बाप बस दूसरा न कोई।''

सा.बाबा 20.2.08 रिवा.

''दिन प्रतिदिन उन्नति होती जायेगी। नई-नई प्वाइन्ट्स निकलती रहती है।... जो सर्विस में तत्पर हैं, वे झट पकड़ लेते हैं। जो सर्विस में नहीं रहते, उनकी बुद्धि में कुछ भी नहीं बैठता है। ... कोई बिन्दी को सामने रखकर थोड़ेही याद करना होता है। यह तो समझने की बात है। ... अपने को आत्थ्मा बिन्दी समझ मुझे याद करो।''

सा.बाबा 11.9.07 रिवा.

Q. हमारा योग यथार्थ है अर्थात् योग की सफलता की कसौटी क्या है ?

योग ठीक होगा तो विकर्म विनाश होंगे, जिससे आत्मा को खुशी होगी। योग सही होगा तो आत्मिक शक्ति बढ़ेगी, जिससे विकारों की आकर्षण कम होगी, जीवन में निर्भयता होगी। योग सही होगा तो हमारे अन्य आत्माओं के साथ सम्बन्ध मधुर होंगे। योग सही होगा तो बाप की मदद का अनुभव होगा।

Q. भगवानोवाच्य - एक निराकार परमपिता परमात्मा की याद से ही विकर्म विनाश होते हैं, तो परमात्मा को कहाँ याद करें और किस रूप में याद करें ? परमात्मा को परमधाम में याद करने का क्या प्रभाव है और ब्रह्मा-तन में याद करने का क्या प्रभाव है ?

अपने को बिन्दु समझ बिन्दुरूप बाप को बिन्दुरूप में परमधाम में याद करने से आत्मा के सबसे अधिक विकर्म विनाश होते हैं, आत्मा का आत्मिक शक्ति के जमा का खाता बढ़ता है। परमात्मा को परमधाम में याद करने से आत्मिक शक्ति का खाता जमा होता है, आत्मा को मुक्ति की स्थिति का अनुभव होता है। ब्रह्मा तन में याद करने से ईश्वरीय कर्तव्यों में अभिरुचि बढ़ती है, दैवी गुण-शक्तियों की धारणा होती है और आत्मा को जीवनमुक्ति का यथार्थ अनुभव होता है।

''कोई कहे मैं 6-8 घण्टा योग में रहता हूँ तो बाबा मानेगा नहीं।... मुरली सुनना याद नहीं है। यह तो धन कमाते हो। याद में तो सुनना बन्द हो जाता है।... मुरली सुनने से विकर्म विनाश नहीं होंगे।... याद से ही सतोप्रधान बनेंगे।''

सा.बाबा 29.1.04 रिवा.

Q. परमात्मा की यथार्थ याद कब, कहाँ और कैसे अर्थात् परमात्मा को परमधाम में याद करना यथार्थ है या ब्रह्मा तन में याद करना है ?

दोनों ही रूपों में याद करना यथार्थ है और आवश्यक है क्योंकि आत्मा मुक्ति-जीवनमुक्ति दोनों ही चाहती है। परमधाम में याद करने से विकर्म विनाश होंगे, आत्मा पावन बनेंगी, मुक्ति की अनुभूति होगी, प्राप्ति होगी और ब्रह्मा तन में याद करने से आत्मा में दैवी गुणों की धारणा अच्छी होगी, जीवनमुक्ति की अनुभूति होगी। मुक्ति-जीवनमुक्ति दोनों ही आत्मा के अभीष्ठ लक्ष्य हैं और संगमयुग पर ईश्वरीय वर्सा है।

''बच्चे ने प्रश्न पूछा - शिवबाबा जब इधर आते हैं, मुरली चलाते हैं तो क्या परमधाम में भी है ?... तुम अपना बुद्धियोग वहाँ लगाओ, जीते जी इस शरीर को भूलते जाओ।''

सा.बाबा 22.5.07 रिवा.

‘‘मैं इस शरीर में आकर कहता हूँ कि तुमको याद वहाँ करना है, जहाँ अब जाना है। ऐसे नहीं कि यहाँ याद करना है। मैं यहाँ आया हूँ, तुम बच्चों का बुद्धियोग वहाँ लगाने के लिए। हे बच्चे, मुझे अपने घर परमधाम में याद करो। … अपने को आत्मा समझो और मुझे याद करो तो तुम मेरे पास आ जायेंगे।’’ सा.बाबा 30.3.08 रिवा.

Q. हमारी परमात्मा और घर की ओर तीव्र आकर्षण हो, उसका पुरुषार्थ अर्थात् साधन और साधना क्या है ?

संचित कर्मों का हिसाब-किताब खत्म करना और देह और देह की दुनिया को भूल अपने को देह से न्यारा समझने का सफल अभ्यास करने से आत्मा को परमात्मा और घर की याद सहज आयेगी लेकिन उसके लिए भी आत्मा को परमात्मा और घर परमधाम की याद का पुरुषार्थ करना ही होगा। सतत अभ्यास करने से ही वह सफलता मिलेगी अर्थात् आत्मा देह और देह की दुनिया को भूलने में समर्थ होगी, जिससे परमात्मा और घर की सहज याद रहेगी।

‘‘इसका नाम है ‘राजयोग’ अर्थात् राजाई प्राप्त करने के लिए योग और राजाई प्राप्त कराने वाले से योग। … अपने को शरीर से डिटेच समझो। इसमें आँखें मूँदने की भी दरकार नहीं है।’’ सा.बाबा 21.5.08 रिवा.

Q. परमात्मा की याद के साथ ब्रह्मा बाबा को याद करना यथार्थ है या नहीं ?

परमात्मा की याद से मुक्ति-जीवनमुक्ति का वर्सा मिलता है परन्तु परमात्मा की याद में अभीष्ठ सफलता कैसे प्राप्त हो, उसके लिए कैसे पुरुषार्थ करें, वह ब्रह्मा बाप को याद करने, देखने से समझ में आता है क्योंकि शिवबाबा तो पुरुषार्थ करते नहीं, ब्रह्मा बाबा ने पुरुषार्थ करके पद पाता है, फरिश्ता बना है। शिवबाबा ब्रह्मा तन में आया है तो शिवबाबा की याद के साथ ब्रह्मा बाबा की याद आना भी स्वभाविक है। इसलिए शिवबाबा कहते हैं - फॉलो फादर अर्थात् फॉलो फॉदर अर्थात् स्थिति में शिव बाप को फॉलो करो और पुरुषार्थ में ब्रह्मा बाप को फॉलो करो।

‘‘बेहद का बाप फिर से सतोप्रधान बना रहे हैं। मूल युक्ति यही बता रहे हैं कि अपने को आत्मा भाई-भाई समझो। भाई-भाई का आपस में बहुत प्यार होना चाहिए। … मूलवतन में तो प्रेम की बात नहीं रहती। … अब देहाभिमान होने के कारण एक-दो में वह प्यार नहीं है। … देहाभिममान में आने से ही अवगुण दिखाई देता है। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करें, भाई-भाई समझकर देखें तो गुण ही गुण दिखाई पड़ेगा।’’

सा.बाबा 20.3.04 रिवा.

Q. परमात्मा को याद की आवश्यकता क्यों ?

यथार्थ आध्यात्मिक ज्ञान अर्थात् आत्मा, परमात्मा, सृष्टि-चक्र, कर्मों की गहन गति आदि का ज्ञान मानव जीवन की परम-प्राप्ति है, जो चढ़ती कला का आधार है, वह हमको परमात्मा के द्वारा ब्रह्मा तन से प्राप्त हुआ है। परमात्मा की याद से यह ज्ञान प्रशस्त होता है और उसकी जीवन में धारणा होती है।

परमात्मा की याद से ही आत्मा के आत्मिक गुण जाग्रत होते हैं, आत्मा आत्म-स्थिति में स्थित होने में समर्थ होती है और परमात्मा की याद से ही आत्मा पावन बनती है।

परमात्मा की याद से ही आत्मा व्यर्थ यादों, व्यर्थ संग, जो पतनकारी हैं, उनसे मुक्त होती है।

प्रयत्न करना आत्मा का स्वभाविक गुण है, इसलिए हमको परमात्मा की याद का पुरुषार्थ अवश्य करना है, और सब ड्रामानुसार होगा।

''पहले शरीर को याद करने से फिर आत्मा याद आती है। पहले शरीर याद आयेगा क्योंकि शरीर बड़ी चीज है ना। फिर आत्मा जो सूक्ष्म है, वह याद आयेगी। ... बाप को तो अनेकों आत्माओं को याद करना पड़ता है। शरीर का नाम याद नहीं आता, सिर्फ रूप सामने आता है। ... कई पूछते हैं - हम कैसे याद करें ? शिवबाबा को ब्रह्मा तन में याद करें या परमधाम में यद करें ? बाबा कहते हैं - याद तो आत्मा को ही करना है परन्तु शरीर भी जरूर याद आता है।''
सा.बाबा 30.3.04 रिवा.

Q. परमात्मा ने कहा है प्यार से दिल से याद करो, मतलब से नहीं तो बाप की मदद अवश्य मिलेगी। तो ये दो रूप की याद में क्या अन्तर है और वह याद कैसी होगी ?

परमात्मा को प्यार से याद करना अर्थात् कोई परिस्थिति नहीं है तब भी परमात्मा से प्राप्त हुई प्राप्तियों को याद कर दिल से बाप का शुक्रिया मानते हुए याद करना। मतलब की याद अर्थात् जब कोई परिस्थिति आये तब या किसी कार्य की सिद्धि के लिए, कर्मभोग आदि से मुक्त होने के लिए याद करना और जब परिस्थिति समाप्त हो जाये तो भूल जाना या किसी चाहना या इच्छा पूर्ति के लिए याद करना।

Q. योग क्या है, योग क्यों और योग कैसे अर्थात् योग का विधि-विधान और प्रभाव क्या है ?

आत्मा का परमात्मा के साथ सम्बन्ध और उसकी मधुर स्मृति ही योग है। जीवात्मा का जिससे सम्बन्ध होता है, जिसकी याद होती है, उसके गुण-धर्म उसमें स्वत: आते हैं, इसलिए आत्मा को पतित से पावन, दुखी से सुखी, अवगुणी से गुणवान, शक्तिहीन से आत्मिक शक्ति सम्पन्न

बनने के लिए योग अति आवश्यक है अर्थात् योग ही एकमात्र साधन और साधना है। परमात्मा की मधुर याद ही योग है परन्तु ये विधि-विधान है कि जिसको याद करना होता है, उसके जैसा बनना अवश्य होता है अर्थात् परमात्मा निराकार बिन्दुरूप है तो उसको याद करने के लिए आत्मा को अपने आत्मिक स्वरूप अर्थात् बिन्दुरूप में स्थित होना ही पड़ेगा अर्थात् बिन्दुरूप में स्थित आत्मा ही परमात्मा को यथार्थ रीति याद कर सकेगी। उसके बाद जितनी भी याद है, वह नम्बरवार ही होगी और उनकी प्राप्ति भी नम्बरवार ही होगी।

''फालो फादर अर्थात् फुट-स्टेप फादर-मदर। निराकार बाप, साकार ब्रह्मा मदर को फालो करना। ... बापदादा सब जगह चक्कर लगाते रहते तो क्या देखा - हर सेन्टर पर और हर एक के घर में ब्रह्मा बाप के चित्र बहुत रखे हुए हैं। ... अच्छी बात है लेकिन बापदादा यह सोचते हैं कि चित्र को देख चरित्र भी याद आता है या सिर्फ चित्र को ही देखते हो ?''

अ.बापदादा 25.11.2000

Q. परमात्मा बल देते हैं ? तो क्या उनका बल मेरे में आता है और यदि उनका बल मेरे में आता है तो क्या उनका बल कम होता है ? क्योंकि यदि किसी से कोई शक्ति निकल कर दूसरे में प्रवेश कर रही है तो पहले वाले में जरूर कम होगी। यह बल देने का विधि-विधान क्या है ?

Q. परमात्मा को याद करने से सतोप्रधान बन जाते हैं, ये प्रक्रिया क्या है और कैसे चलती है ? क्या परमात्मा की याद से कोई शक्ति परमात्मा से निकल कर हमारे में प्रवेश करती है या परमात्मा से प्रगट होकर हमारे में भरती है या परमात्मा की याद से हमारे अन्दर से ही हमारी सोई हुई शक्ति जाग्रत होती है, जो आत्मा को सतोप्रधान बना देती है ?

वास्तव में आत्मा और परमात्मा एक ही वंश के हैं और दोनों ही सर्व गुणों और शक्तियों से परिपूर्ण हैं परन्तु आत्मा अपने स्वरूप को भूलने के कारण अपनी आत्मिक शक्ति को खो देती है अर्थात् विस्मृत होने के कारण निष्क्रिय हो जाती है, जो परमात्मा के द्वारा दिये गये ज्ञान और उनकी याद से पुन: जाग्रत हो जाती है। किसी भी आत्मा से शक्ति निकलने और दूसरी में प्रवेश होने का तो कोई प्रश्न ही नहीं उठता है क्योंकि आत्मा अविनाशी है, उसमें किसी तरह की घटती-बढ़ती हो नहीं सकती। परमात्मा भी एक आत्मा ही है, भले उसमें गुण-संस्कार विशेष है, जो अविनाशी हैं, इसलिए उसमें से भी शक्ति निकलने का प्रश्न नहीं उठता। इस सम्बन्ध में बाबा ने अनेक बार रानी के गले के हार उदाहरण दिया है अर्थात् शान्ति आत्मा के अन्दर नीहित है परन्तु विस्मृत होने के कारण वह बाहर ढूँढती है। जब परमात्मा स्मृति दिलाते हैं तो

आत्मा पुन: उसको अनुभव करने लगती है। हनूमान के विषय में ऐसी धारणा है कि उनको जब उनकी शक्ति की याद दिलाई जाती थी, तो वे असम्भव से कार्य भी सम्भव कर दिखाते थे।

''बाप ने इनमें प्रवेश किया ना। जो उनका खजाना है, वह ऐसे थोड़ेही दे देते हैं। तुम योगबल से लेते हो। वह तो सर्वशक्तिवान है ही। उनकी शक्ति कहाँ चली नहीं जाती है।''

सा.बाबा 11.6.04 रिवा.

''बल देने वाला भी मैं ही हूँ। मेरे में ही वह पॉवर रहती है। और सब आत्मायें यह नॉलेज और अपनी पॉवर जन्म-मरण के चक्र में आकर खो देते हैं। ... मैंने कुछ काम किया है, मेरा कुछ कर्तव्य है, इसलिए मेरी महिमा है।'' मातेश्वरी 24.4.65 रिवा.

Q. परमात्मा की याद या परमात्मा की मदद से हमारे क्या दुख दूर हो सकते हैं और कैसे?

Q. योग से क्या बदल सकता है और क्या नहीं बदल सकता है?

कहा गया है - Events can't be changed but we can change our attitude towards events. अर्थात् जो घटनायें ड्रामा में नूँधी हुई हैं, जो एक कल्प में हो चुकी हैं, वे कोई भी परिवर्तन नहीं कर सकता है और वे कभी भी परिवर्तन नहीं हो सकती हैं परन्तु विश्व-नाटक को जानने से, ज्ञान-योग के द्वारा उनके प्रति अपना दृष्टिकोण बदल लेते हैं तो उनसे प्राप्त होने वाले दुख से मुक्त हो जाते हैं।

हमारे जो हिसाब-किताब अन्य आत्माओं के साथ हैं वे परमात्मा भी कम नहीं कर सकता है क्योंकि दूसरों के साथ के हिसाब-किताब कम होने से उन आत्माओं के साथ अन्याय हो जायेगा और जो ड्रामा में नूँध है, उसको भी परमात्मा भी बदल नहीं सकता क्योंकि बदलने से ड्रामा की अनादि-अविनाश्यता ही परिवर्तन हो जायेगी परन्तु हमारे कर्मभोग या हिसाब-किताब के फलस्वरूप हमको जो वेदना होती है, वह परमात्मा की याद से यथार्थ ज्ञान से कम हो सकती है क्योंकि परमात्मा की याद से, उनकी मदद से आत्मा अपने स्वरूप में स्थित होगी, जिससे वेदना की महसूसता कम हो जायेगी। जो कर्म और व्यवहार जड़ प्रकृति के साथ है, जिसके फलस्वरूप हमको दुख मिलने वाला है, उसको योग के द्वारा अर्थात् परमात्मा की मदद से बदला जा सकता है अर्थात् दुख की महसूसता को कम किया जा सकता है।

Q. बाप की मिल्कियत क्या है और बाप को क्यों भूल जाते हैं? मिल्कियत भूल जाती है, इसलिए बाप भी भूल जाता है या बाप भूल जाता है तो मिल्कियत भी भूल जाती है?

बेहद के बाप की सच्ची मिल्कियत है ज्ञान-गुण-शक्तियां। अभी बाप ज्ञान-गुण-शक्तियाँ

आत्माओं को देते हैं। बाप से जो प्राप्तियां प्राप्त होती है, उनको भूल जाते हैं तो बाप भी भूल जाता है और जब बाप भूल जायेगा तो प्राप्तियां भी अवश्य भूल जायेंगी। यह चक्रवत् खेल है अर्थात् एक के पीछे दूसरा चक्रवत् चलता है।

एडॉप्टेड बच्चों को जिस बाप से मिल्कियत मिलती है, उनको भूल सकते हैं क्या ? ... अभी बाप कर्म-अकर्म-विकर्म का राज़ समझाते हैं।

सा.बाबा 11.9.04 रिवा.

Q. काम और क्रोध में क्या मूलभूत अन्तर है और दोनों का जीवन पर क्या प्रभाव है ?

देश-काल और परिस्थति को विचार करें तो द्वापर-कलियुग में काम अज्ञानता जनित सुखद क्रिया है क्योंकि उस समय सन्तानोत्पत्ति के लिए यह आवश्यक था परन्तु काम-वासना से आत्मिक शक्ति का सर्वाधिक ह्रास होता है। क्रोध जन्म से ही दुखदायी होता है परन्तु क्रोध से काम की अपेक्षा आत्मिक शक्ति का ह्रास कम होता है। इसलिए बाबा कहते हैं - पतित कामी को कहा जाता है, क्रोधी को नहीं अर्थात् पतित काम से बनते हैं, क्रोध से नहीं। सन्यासियों में भी क्रोध होता है परन्तु उनको पतित नहीं कहेंगे क्योंकि वे काम का त्याग करते हैं।

''क्रोध किया तो बाप का नाम बदनाम कर देंगे। ... काम और क्रोध यह दोनों बड़े दुश्मन हैं। क्रोध वाले बाप को याद कर न सकें। याद करने वाले सदैव शान्ति में रहेंगे।''

सा.बाबा 26.6.04 रिवा.

Q. क्रोध वाले बाप को याद क्यों नहीं कर सकते हैं ?

जब व्यक्ति क्रोध करता है तो जिसके ऊपर क्रोध करता है, वही उसकी बुद्धि में घूमता रहता है, उसके प्रति ही चिन्तन चलता है और कहावत है कि याद से याद मिलती है तो जिस पर क्रोध किया, उसको भी उसके प्रति चिन्तन अवश्य चलेगा। तो जब बुद्धि में दूसरे की याद है तो परमात्मा की याद कैसे आ सकती है क्योंकि बुद्धि में एक समय एक की ही याद ठहर सकती है।

Q. क्या बाबा को याद करें तो बरसात होगी ? क्या बरसात आदि के लिए बाबा को याद करना चाहिए ?

नहीं, क्योंकि 1. बाबा बरसात आदि के लिए नहीं आया है, 2. बाबा ड्रामा का पूर्ण ज्ञाता है, वह जानता है कि किस समय क्या होना है, इसलिए जो नहीं होना है, वह उसे कैसे करेगा, 3. बाबा ज्ञान का सागर है और वह हर आत्मा के विषय में जानता है, तो वह स्वयं ही जो करना होगा सो करेगा।

हमको बाबा को याद अवश्य करना है परन्तु बरसात आदि के लिए नहीं कहना है। बाबा सर्व

का कल्याणाकारी है, उनको जो करना है, वह आपही करेगा, कहने से नहीं।

Q. दुनिया में जो ट्रान्स में जाते हैं, भक्ति मार्ग में जो ट्रान्स में जाते हैं और अभी ज्ञान मार्ग में जो ट्रान्स में जाते हैं, उन तीनों में क्या अन्तर है और ट्रान्स का जीवन में क्या महत्व है ?

दुनिया में या भक्ति मार्ग में जो ट्रान्स में जाते हैं, उससे उनको समझ नहीं आता है, केवल अपने इष्ट का साक्षात्कार करते हैं और उस साक्षात्कार के बाद भी आत्माओं की उतरती कला ही होती है। अभी ज्ञान मार्ग में ईश्वरीय आज्ञानुसार जो ट्रान्स में जाते हैं, उससे ज्ञान के अनेक रहस्य खुलते हैं और खुले हैं परन्तु जो मनमर्जी से या ऐसे ही मनोरंजन के रूप में ट्रान्स में जाते हैं, वे अपना समय बरबाद करते हैं। इसलिए बाबा ने कहा है - ट्रान्स से कोई फायदा नहीं है, उसमें न योग है और न ही ज्ञान है, उसमें तो समय बदबाद होता है, उससे आत्मा की चढ़ती कला नहीं होती है। प्राय: देखा गया है मनमर्जी से ट्रान्स में जाने वालों में अधिकतर समयान्तर में ज्ञान से भागन्ती हो जाते हैं।

''ट्रान्स की कुछ भी बढ़ाई नहीं है। ट्रान्स तो एक पाई-पैसे का खेल है। तुमको कभी किसी को नहीं कहना है कि हम ट्रान्स में जाते हैं क्योंकि आजकल विलायत आदि में जहाँ-तहाँ ढेर के ढेर ट्रान्स में जाते हैं। ट्रान्स में जाने से न उनको कोई फायदा है, न तुमको कोई फायदा है। बाबा ने समझ दी है। ट्रान्स में न तो याद की यात्रा है, न ज्ञान है। ध्यान अथवा ट्रान्स वाला कभी कुछ भी ज्ञान नहीं सुनेगा, न कोई उससे पाप भस्म होंगे। याद से ही विकर्म विनाश होंगे।''

सा.बाबा 8.6.04 रिवा

Q. ट्रान्स और योग में क्या अन्तर है ?

योग में आत्मा अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर परमात्मा को याद करती है, जिससे योग के विधि-विधान अनुसार परमात्मा के साथ योग लगाने आत्मा में नीहित ज्ञान, गुण, शक्तियाँ जाग्रत होती है। योग में बुद्धि का विकास होता है, आत्मा की चढ़ती कला होती है। ट्रान्स एक खेलपाल है, जिससे अल्प काल के लिए खुशी तो मिलती है परन्तु उससे समय बदबाद होता है। घड़ी-घड़ी ट्रान्स में जाने की आत्मा की आदत पड़ जाती है तो उससे उतरती कला ही होगी क्योंकि उसमें चढ़ती कला का कोई काम तो किया नहीं। इसलिए बाबा कहते हैं ट्रान्स से ज्ञान-योग का कोई सम्बन्ध नहीं है, यह तो एक अल्प काल का खेलपाल है।

''कल्प-कल्प बाप आकर तुमको पढ़ाते हैं। अभी है संगमयुग, तुमको ट्रान्सफर होना है। ड्रामा के प्लेन अनुसार तुम पार्ट बजा रहे हो। इस पार्ट की महिमा है। बाप आकर पढ़ाते हैं ड्रामा अनुसार। ... अभी तुम बाप को और रचना के आदि-मध्य-अन्त को जान गये हो। बाप की

शिक्षा पाकर बहुत हर्षित होना चाहिए।'' सा.बाबा 8.6.04 रिवा

''इसको याद की यात्रा कहा जाता है। योग कहने से यात्रा सिद्ध नहीं होती है। तुम आत्माओं को यहाँ से जाना है, तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है। तुम अभी यात्रा कर रहे हो। उन्होंका जो योग है, उसमें यात्रा की बात नहीं है।'' सा.बाबा 8.6.04 रिवा

Q. दिव्य-दृष्टि अर्थात् ध्यान और साक्षात्कार में क्या अन्तर है और उस समय उन आत्माओं की क्या स्थिति होती है अर्थात् वे कहाँ होती हैं?

1. क्या ध्यान के समय वे आत्मायें शरीर से बाहर निकलकर सूक्ष्मवतन में जाती हैं, वहाँ जाकर बाबा से सन्देश का लेनदेन करती हैं या बाबा यहाँ आकर सन्देश की लेनदेन करता है या वहाँ से ही उनको साक्षात्कार कराता है?

2. बाबा के अव्यक्त होने से पहले और अभी के दिव्य-दृष्टि के पार्ट में क्या अन्तर है?

''ऐसा कोई कार्य होता था तो खुद साकार बाबा भी सन्देश क्यों पुछवाते थे? ... सूक्ष्मवतन है लेकिन अब सूक्ष्मवतन में आने-जाने के बजाये स्वयं ही सूक्ष्म वतनवासी बनना है। यही बापदादा की बच्चों में आशा है। ... बाप बच्चों की कमाई को देखते हैं और कमाई के लायक बनाते हैं, इसलिए यह सभी रहस्य से बोलते रहे।'' अ.बापदादा 2.2.69

''व्यक्त वतन में सूक्ष्मवतन वासी बनने से बहुत वण्डरफुल अनुभव करेंगे। ... सन्देशियों के अनुभव में कमाई नहीं है। लेकिन इसमें कमाई भी है और अनुभव भी है।''

अ.बापदादा 2.2.69

''ध्यान में आत्मा कहाँ जाती नहीं है। आत्मा निकल जाये तो शरीर ही खत्म हो जाये। यह सब है साक्षात्कार, रिद्धि-सिद्धि द्वारा भी ऐसे साक्षात्कार होते हैं। ... ड्रामानुसार उस समय पर वह साक्षात्कार होता है, जो ड्रामा में पहले से ही नूँध है। ... सूक्ष्मवतन में आने-जाने का साक्षात्कार आदि इस समय होता है।'' सा.बाबा 14.11.05 रिवा.

Q. आत्मा और शरीर में क्या सम्बन्ध दोनों के क्या गुण-धर्म हैं और सुख-दुख भोगने में दोनों की क्या भूमिका है?

आत्मा अपने मूल स्वरूप में सुख-दुख दोनों से न्यारी है, इसलिए जब आत्मा अपने मूल स्वरूप में स्थित है तो इन्द्रियों के कोई धर्म उसको प्रभावित नहीं करते हैं। शरीर जड़ तत्वों से बना है, उसमें अनुभव करने की अपनी कोई शक्ति नहीं है, इसलिए वह सुख-दुख का अनुभव कर नहीं सकता। आत्मा और शरीर दोनों का जब संयोग होता है, तब ही आत्मा सुख या दुख का अनुभव करती है। बाबा ने भी कहा है - योग में तो सुनना भी बन्द हो जाता है अर्थात् जब आत्मा अपने मूल स्वरूप अर्थात् बीजरूप स्थिति में स्थित होती है तो शरीर से न्यारी हो जाती

है, उस समय आत्मा सुख-दुख दोनों से न्यारी हो जाती है अर्थात् दोनों की अनुभूति से परे होती है। परन्तु बिडम्बना कहें या विधि-विधान कहें यह है कि शरीर में रहते आत्मा शत-प्रतिशत देह से न्यारी नहीं हो पाती है और हो नहीं सकती है, इसलिए जब आत्मा योग की उच्चतम स्थिति में स्थित होती है, तब उसको स्वीट साइलेन्स अर्थात् अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति होती है। बाबा ने कहा है - जब आत्मा पूर्ण कर्मातीत हो जायेगी तो इस शरीर में रह नहीं सकती। अब प्रश्न उठता है कि योग के पुरुषार्थ का क्या महत्व है - हम जितना ये न्यारा होने का पुरुषार्थ करेंगे, उतना अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करेंगे और यह पुरुषार्थ करते-करते ही शत-प्रतिशत वह अवस्था बनेगी और आत्मा कर्मातीत स्थिति को पायेगी। इसलिए पुरुषार्थ करना, करने का दृढ़ संकल्प रखना अति आवश्यक है और हमारा परम कर्तव्य है।

Q. हमारा यह योग जो परमात्मा सिखाते हैं, वह राजयोग क्यों है ?

बाबा ने हठयोग और राजयोग का अन्तर विभिन्न शब्दों में स्पष्ट किया है। यथा -

आत्मा अपने स्वरूप को जानकर और उसमें स्थित होकर कर्मेन्द्रियों पर शासन करती है, इसलिए इसको राजयोग कहा जाता है।

इस राजयोग के द्वारा परमात्मा राजवंश की स्थापना करते हैं क्योंकि अभी वर्तमान जगत में प्राय: सभी देशों का राजतन्त्र प्रजातन्त्र का है। राजशाही का प्राय: सभी देशों में अन्त हो गया है और यदि कहीं है भी तो वह नाममात्र की ही है।

इस योग का अभ्यासी राज कारोबार में अर्थात् गृहस्थ व्यवहार में रहते अभ्यास करते हैं, इसलिए इसको राजयोग कहा जाता है।

और सभी योगों अर्थात् हठयोग, भक्तियोग आदि आदि से आत्मा की उतरती कला ही होती है। यह राजयोग, जो परमात्मा सिखाते हैं, उससे ही आत्मा की चढ़ती कला होती है, इसलिए ये सर्व योगों का राजा राजयोग कहा जाता है।

राजयोग के सफल अभ्यासी को जीवन में सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता की अनुभूति होती है, इसलिए इसको राजयोग कहा जाता है क्योंकि राजा सदा सम्पन्न होता है। यदि चाहना है तो वह राजा नहीं लेकिन भिखारी है।

इस राजयोग से आत्मा जो पद पाती हैं अर्थात् देवी-देवता बनती हैं, उनके आगे सिंगल ताज वाले राजायें भी सिर झुकाते हैं, इसलिए इस योग को राजयोग कहा जाता है।

Q. परमात्मा को कहाँ, कैसे याद करना चाहिए ?

Q. अभी परमात्मा कहाँ है और उनको कहाँ और कैसे याद करें ?

परमात्मा सदा कहते - बच्चे मुझे सदा याद करो तो हम उनको कहाँ और कैसे याद करें, यह विचारणीय है। इस सम्बन्ध में विचार करना अति आवश्यक है।

1. वैसे तो परमात्मा पिता ने कहा है कि मुझको सदा ही परमधाम में याद करो, उस याद से ही विकर्म विनाश होंगे क्योंकि वहाँ मेरा सदा ही निवास है। वह याद ही नम्बरवन याद है।

2. परमात्मा सूक्ष्मवतन में ब्रह्मा बाबा के सूक्ष्म शरीर में प्रवेश होकर विश्व-कल्याण का कार्य कर रहे हैं, इसलिए जैसे साकार में ब्रह्मा बाबा के तन में भी शिवबाबा को याद करते थे, ऐसे अव्यक्त रूप धारी ब्रह्मा बाबा के तन में भी शिवबाबा को याद कर सकते हैं लेकिन वह दूसरे नम्बर की याद होगी।

3. शिवबाबा के गुण-कर्तव्यों को याद करते हुए साकार वतन में याद करें अर्थात् ईश्वरीय कार्य में सहयोगी रहें तो वह भी याद ही है लेकिन वह तृतीय नम्बर की याद होगी।

बाबा ने अनेक बार कहा है - बच्चे, मुझे सदा ही परमधाम में याद करो क्योंकि वहाँ मैं सदा रहता हूँ। यदि तुम ब्रह्मा तन में याद करते हो तो सामने हो तो याद कर भी सकते हो और यदि सामने नहीं हो तो ब्रह्मा बाबा कहाँ है, कैसे याद करेंगे। ब्रह्मा तन के लिए भी बाबा कहते हैं - मैं सदैव इसमें थोड़ेही रहता हूँ परन्तु जब बच्चे सामने होते हैं तो जब याद करते हैं तो शिवबाबा इनमें प्रवेश हो जाता है। ये बड़ी गुह्य पहेली है।

''बाप इस दादा के तन द्वारा श्रीमत देते हैं ... मन्मनाभव अर्थात् बाप को याद करो। इस दादा को याद नहीं करना है। दादा की आत्मा भी बाप को याद करती है तो तुमको भी बाप को याद करना है।''
सा.बाबा 18.12.07 रिवा.

Q. शिवबाबा के साथ की अनुभूति परमधाम में होगी ? यदि होगी तो कैसे होगी और यदि नहीं होगी तो उनके साथ की अनुभूति कहाँ और कैसे होगी ?

परमधाम में न देह है और देह न होने के कारण संकल्प भी नहीं है और जब देह और संकल्प ही नहीं है तो साथ की अनुभूति का तो प्रश्न ही नहीं उठता है। परमात्मा के साथ की अनुभूति सूक्ष्मवतन में और साकार वतन में ब्रह्मा बाबा के तन के साथ ही सम्भव है। अभी साकार का पार्ट तो पूरा हो गया, इसलिए वर्तमान समय अव्यक्त बनकर अव्यक्त रूपधारी बापदादा के साथ का अनुभव अव्यक्त वतन में ही करना होगा और हो सकता है। साकार रूप का पार्ट पूरा अवश्य हो गया परन्तु अभी भी बापदादा गुल्जार दादी के तन में आकर मिलते हैं, तो वह अनुभूति भी साथ की ही है। उस रूप में भी मिलन का अनुभव कर सकते हैं परन्तु वह स्थिति

सदा तो रहती नहीं है, इसलिए जब उस रूप में मिलते हैं, तब ही उसका अनुभव होगा, उसके बाद तो वह साथ की स्मृति ही होगी। इसलिए सदा ही बाबा कहते हैं - मुझे सदैव परमधाम में याद करो क्योंकि वहाँ हमारा स्थाई निवास स्थान है और उस याद से ही विकर्म विनाश होंगे। वह याद ही सबसे श्रेष्ठ है और उससे ही आत्मा को सबसे अधिक शक्ति मिलती है। इसके लिए अपने इस साकार तन में रहते देह और देह की दुनिया को भूलकर अपने बिन्दु स्वरूप में स्थित होकर शिवबाबा को परमधाम में बिन्दु रूप में याद करना है। इस याद से हमारे ऊपर जो देहाभिमान का लेपक्षेप चढ़ा है, वह समाप्त हो जायेगा और आत्मा पावन बन जायेगी।

''बाप कहते - मुझे याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। कोई देहधारी को याद नहीं करना है। बुद्धियोग ऊपर में लटका हुआ होना चाहिए। ऐसे नहीं कि बाबा यहाँ है तो बुद्धि भी यहाँ रहे। भल बाबा यहाँ है तो भी तुमको बुद्धियोग वहाँ शान्तिधाम में लगाना है।''

सा.बाबा 8.12.07 रिवा.

नम्बरवन में बाप को परमधाम में ही याद करना है, जिससे विकर्म विनाश होंगे। बाबा कहते हैं - देह सहित देह के सर्व धर्म छोड़ अपने को बिन्दु रूप आत्मा समझकर, बिन्दु रूप बाप को याद करना है। तो शिवबाबा के बिन्दु रूप की याद तो परमधाम में ही होगी। दूसरे नम्बर में शिवबाबा को ब्रह्मा तन में याद करना है। जब बाबा साकार में थे तो साकार में ब्रह्मा तन में याद करते थे परन्तु अभी बाबा सूक्ष्मवतन में हैं तो अपने को भी अव्यक्त रूपधारी बनकर अव्यक्त वतन में बाप को याद करना है क्योंकि हमको जीवनमुक्ति भी चाहिए, उसके लिए दैवी गुण भी धारण करना है। तो दोनों रूपों में बाप को याद करना होगा क्योंकि हमको मुक्ति-जीवनमुक्ति दोनों चाहिए। इसलिए दोनों रूप में याद करना आवश्यक है।

एक साकार मुरली में बाबा ने कहा है - बाबा दिल्ली जाता है, कानपुर जाता है, बॉम्बे जाता है तो तुम उनको कहाँ याद करेंगे, इसलिए परमधाम में याद करो। ऐसे नहीं कि तुम अपने बुद्धियोग को यहाँ-वहाँ भटकाते रहो।

''आत्मा शरीर पर सारा दिन सवारी करती है।... मैं इनमें सदैव नहीं रहता हूँ, मैं तो सेकेण्ड में आ-जा सकता हूँ। ... तुम बाप को याद करो और वह आया।''

सा.बाबा 27.12.07 रिवा.

''निराकार स्नेही जो होते हैं, उनकी यह विशेषता ज्यादा होती है कि वे निराकारी स्थिति में ज्यादा स्थित होंगे। साकार स्नेही चरित्रवान होंगे, उनका एक-एक चरित्र सर्विसएबुल होगा। दूसरा वह औरों को भी स्नेह में ज्यादा ला सकेंगे। इसलिए निराकारी और निरहंकारी दोनों समान चाहिए।''

अ.बापदादा 21.1.71

Q. बाबा कहते - सदा उड़ती कला में रहो, तो उड़ती कला क्या है और उसका क्या अनुभव होगा और उसका पुरुषार्थ क्या है ?

बाबा ने कहा है और अनुभव भी ऐसा है कि आत्मा सबसे सूक्ष्म है, हल्की है, इसलिए सबसे तेज उड़ने वाली है। जब आत्मा देह के बन्धन से मुक्त होती है तो सदा ही उड़ती कला में होती है। जो आत्मा यथार्थ ज्ञान को समझकर देह से न्यारी स्थिति में स्थित होती है तो वह उड़ती कला का अनुभव करती है। देह में रहते देह से न्यारी स्थिति अर्थात् देह और देही दोनों अलग अनुभव हों। जब आत्मा इस स्थिति के अनुभव में होती है तो वह अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करती है और उसमें शक्ति होती है कि वह कहाँ भी जा सकती है, कहाँ भी बैठी आत्मा को साकार के समान अनुभव करा सकती है। विचारणीय है कि जब तक आत्मा कर्मातीत नहीं बनी है, तब तक उसको देह से न्यारे होते भी सूक्ष्म देह अवश्य होगी और वह सूक्ष्म देह भी किसी भी बन्धन से मुक्त होती है अर्थात् वह बिना किसी भी रोक-टोक के कहाँ भी जा सकती है, प्रवेश कर सकती है और वह इस देह और दुनिया के आकर्षण से मुक्त होती है। इसलिए ही फरिश्तों को उड़ता हुआ दिखाते हैं। जितना-जितना हम देह में रहते देह से न्यारी स्थिति में रहने का अभ्यास करेंगे, उतना इस उड़ती कला का स्पष्ट अनुभव होगा। इसके लिए आत्मा को दैहिक सुखों और भोगों की नश्वरता, उनके दुष्परिणाम को और इस उड़ती कला अर्थात् आत्मिक स्थिति के शुभ-परिणाम को समझकर दैहिक सुखों से उपराम होना अति आवश्यक है क्योंकि जब तक दैहिक सुखों की आकर्षण है, तब तक आत्मा उड़ती कला का अनुभव कर नहीं सकती।

Q. ये विश्व-नाटक अनादि-अविनाशी है, जो हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है, अब प्रश्न उठता है कि परमात्मा का इसमें क्या महत्व है और उसको क्यों याद करें ? वह क्या कर सकता है या उसकी याद से क्या होता है, जिसके लिए आत्मायें उनको याद करती हैं और हमको भी याद करना ही चाहिए ?

परमात्मा स्वयं कहते हैं कि सब ड्रामा अनुसार होता है, ड्रामा में नूँध है, मैं इसमें कोई परिवर्तन नहीं कर सकता। परन्तु परमात्मा आत्माओं को आत्मा, स्वयं का अर्थात् परमात्मा का और विश्व-नाटक का ज्ञान देता है, जिससे हम अनुभव करते हैं कि परमात्मा ज्ञान-गुण-शक्तियों का सागर है और यह सृष्टि एक अनादि-अविनाशी नाटक है, जो हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है। वही योग का विधि-विधान बताता है, जिससे आत्मायें सदा सुखी बनती हैं। योग का नियम है कि आत्मा जिसको याद करती है, उसका ज्ञान-गुण-शक्तियाँ याद करने वाले में अवश्य आती हैं

अर्थात् धारण होती है। इसलिए हमको ज्ञान-गुण-शक्तियों से सम्पन्न बनना है तो उनको याद करना अति आवश्यक है और याद करना ही पड़ेगा क्योंकि उनकी याद के सिवाए ज्ञान-गुण-शक्तियों को धारण करने और पापों का खाता भस्म करके पावन बनने का कोई उपाय नहीं है।

Q. निराकार परमात्मा साकार तन में आये तो उसको परमात्मा कहेंगे और उनको साकार रूप में याद करना यथार्थ याद है ?

उनको प्रजापिता कहेंगे, बापदादा कहेंगे परन्तु परमात्मा नहीं कहेंगे। यदि उनको परमात्मा कहें और उनको परमात्मा समझ याद करते तो देह तो विनाशी है, इसलिए बुद्धियोग कभी स्थिर नहीं हो सकता। इसलिए बाबा ने कहा है - किसी भी देहधारी को परमात्मा नहीं कह सकते। निराकार बाप को परमधाम में याद करना सबसे श्रेष्ठ याद है, साकार तन में निराकार को याद करना भी सेकेण्ड नम्बर की याद हो जाती है। ''सब कहते हैं - निराकार परमात्माये नमः। ... ब्रह्मा देवतायें नमः कहते हैं। ब्रह्मा का नाम लेकर ऐसा कभी नहीं कहेंगे - ब्रह्मा परमात्माये नमः। परमात्मा एक निराकार को ही कहा जाता है। ... भल मैं भी इस देह द्वारा सुनाता हूँ परन्तु तुमको याद मुझ निराकार को ही करना है।''

सा.बाबा 18.6.07 रिवा.

Q. स्वप्नों का आधार क्या है और उनका हमारे योग पर क्या प्रभाव होता है ?

स्वपनों का आधार भी मनुष्य की जागृतावस्था की दिनचर्या ही होती है। जैसे जागृत अवस्था में संकल्प और कर्म होते हैं, उस अनुसार ही निद्रावस्था में स्वप्न आदि आते हैं। जैसे स्वप्न आते हैं, वैसे संकल्प जागृत अवस्था में भी चलते हैं और उनका प्रभाव योग की स्थिति पर भी होता है। पॉवरफुल योग के लिए दिनचर्या, खानपान, आदि सब पर ध्यान रखना अति आवश्यक है। पॉवरफुल योग से स्वप्नों को नियन्त्रित किया जा सकता है।

''ऐसे नहीं कि स्वप्न तो मेरे वश में नहीं है। स्वप्न का भी आधार अपनी साकार जीवन है। अगर साकार जीवन में मायाजीत हो तो स्वप्न में भी माया अंशमात्र में भी नहीं आ सकती। ... जो स्वप्न में कमजोर होता है, तो उठने के बाद भी वे संकल्प जरूर चलेंगे और योग साधारण हो जायेगा।... सदा मायाजीत अर्थात् सदा बाप के समीप संग में रहने वाले।''

अ.बापदादा 13.10.92 पार्टी 3

Q. व्यर्थ चिन्तन आत्मिक शक्ति के ह्रास का बड़ा कारण है परन्तु व्यर्थ चिन्तन का कारण क्या है और उनका निवारण क्या है ?

व्यर्थ चिन्तन का कारण है अज्ञानता से उत्पन्न अहंकार अर्थात देहाभिमान के वशीभूत राग-द्वेष, भय-चिन्ता, मान-शान, इन्द्रिय सुखों की आकर्षण और उनकी प्राप्ति में अन्य आत्माओं

को बाधक समझना या अपने कर्मभोग के लिए दूसरों को कारण समझना, दूसरों को दोषी समझना, अति महत्वाकांक्षी होने से व्यर्थ चिन्तन चलता है।।

आत्मा, परमात्मा और विश्व-नाटक के ज्ञान का मनन-चिन्तन कर उसको समझकर आत्मा-परमात्मा-ड्रामा के गुण-धर्मों को अनुभव करना ही व्यर्थ चिन्तन से मुक्ति का एकमात्र साधन और साधना है। आत्मा-परमात्मा, ड्रामा परमानन्दमय है, उसके सामने इन्द्रीय सुखों का कोई अस्तित्व नहीं है। हर आत्मा अपने कर्मभोग का मूल कारण स्वयं ही है। सभी आत्मायें अपना अनादि-अविनाशी पार्ट बजा रही हैं और ये विश्व-नाटक सत्य, न्यायपूर्ण, कल्याणकारी है। इस सत्य को धारण कर इस विश्व-नाटक के परमानन्द को अनुभव करने से हम व्यर्थ चिन्तन से सहज मुक्ति पा सकते हैं। इसके लिए ही परमात्मा ने ये सब ज्ञान दिया है।

Q. वर्तमान समय तमोप्रधान दुनिया है, जहाँ अनेक प्रकार के विघ्न आते हैं, जो आत्मा को परेशान कर देते हैं और आत्मा को अभीष्ट पुरुषार्थ करने नहीं देते हैं, तो उन विघ्नों को सहज पार करने का क्या उपाय है?

वास्तविकता तो ये है कि विघ्न भी आत्मा के पूर्व संचित कर्मों के फलस्वरूप ही आते हैं। ज्ञानी और योगी आत्मा के लिए विघ्न भी उन्नति का साधन बन जाते हैं परन्तु जो उनके रहस्य को नहीं समझ पाते हैं, वे उनमें उलझकर हताश-निराश होकर अभीष्ट पुरुषार्थ से विमुख हो जाते हैं। इन विघ्नों को पार करने के लिए बाबा ने अनेक प्रकार की युक्तियाँ बताई हैं। किसी भी विघ्न को सहज पार करने के लिए विघ्न को परखने, निर्णय करने और सामना करने की शक्ति क्रमशः अति आवश्यक है। जो आत्मा अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर परमात्मा की मधुर याद में रहती है, उसमें ये तीनों शक्तियाँ रहती हैं, जिससे वह सहज ही उनको पार कर लेती है। ऐसी योगी आत्मा के सामने या तो विघ्न आते ही नहीं है और आते हैं तो वह उन पर अवश्य विजयी बनता है।

‘‘विघ्नों को पार करने के लिए मुख्य कौनसी शक्ति चाहिए? ... पहले परखने और फिर निर्णय करने की शक्ति चाहिए। ... निर्णय शक्ति बढ़ाने के लिए कौनसा पुरुषार्थ करना है? ... निर्णय शक्ति बढ़ाने के लिए मुख्य खुराक यही है - अशरीरी, निराकारी और कर्म से न्यारे।’’ अ.बापदादा 26.6.69

मृत्यु और मृत्यु-विजय

मृत्यु विजय से पहले मृत्यु की वास्तविकता को जानना अति आवश्यक है। मृत्यु और जन्म इस विश्व-नाटक की अति आवश्यक और अपरिहार्य घटना है, जिसके कारण ये विश्व-नाटक अति रोचक और आनन्दमय है। मृत्यु और जन्म इस विश्व-नाटक में भिन्न-भिन्न पार्ट बजाने के लिए वस्त्र बदलना है, जो अति आवश्यक है। यह जड़ और चेतन का खेल है, जिसमें हर चीज का हर क्षण रूप परिवर्तन होता है। आत्मा चेतन है, उसके अनेक आत्माओं के साथ सम्बन्ध बनते और पूरे होते हैं, जिसके लिए आत्मा एक स्थान और सम्बन्धियों को छोड़कर दूसरे स्थान और सम्बन्धियों के साथ हिसाब-किताब पूरे करने और बनाने के लिए शरीर को छोड़ती है और नया धारण करती है। विश्व-नाटक की इस वास्तविकता की अनभिज्ञता के कारण आत्मा का अपने शरीर, स्थान और सम्बन्धियों से मोह हो जाता है, जिस मोह के कारण हर प्राणी मृत्यु से भयभीत है। बिना मृत्यु के जन्म का अस्तित्व नहीं रह सकता। मृत्यु और जन्म से ही आत्मा पुराना वस्त्र उतार कर नया धारण करता है अर्थात् जीवन में नवीनता लाती है।

Q. प्राय: संसार का हर प्राणी पुरानी देह का त्याग करने में भयभीत होता है। जब कि आत्मा अविनाशी है, जन्म और मृत्यु एक वस्त्र बदलना है, फिर जीवन के प्रति मोह क्यों, मृत्यु से भय क्यों ?

इस सबका कारण है आत्मा के अस्तित्व के विषय में अज्ञानता, मृत्यु की वास्तविकता से अनभिज्ञता और आत्मिक शक्ति की कमी, उसके कारण आत्मा पर देहाभिमान का प्रभावी होना। देहाभिमान के कारण देह और देह की दुनिया में मोह हो जाना।

Q. क्या मृत्यु पर विजय पायी जा सकती है, यदि पाई जा सकती है तो उसका साधन और साधना क्या है ?

मृत्यु की वास्तविकता को जानकर मृत्यु पर विजय पायी जा सकती है। आत्मा अविनाशी है, जन्म और मृत्यु एक वस्त्र बदलना है, इस सत्य को समझकर और सर्वशक्तिवान परमात्मा की याद से आत्मा इतनी शक्तिशाली हो जाये कि आत्मा के लिए जीवन और मृत्यु समान सुखदायी हो जाये तब ही आत्मा मृत्यु-भय और मृत्यु-दुख से मुक्त स्वेच्छा से देह त्याग करने में समर्थ होगी और इस जीवन में यथार्थ मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव कर सकेगी। मुक्ति-जीवनमुक्ति आत्मा का अभीष्ठ लक्ष्य है।

जैसे अव्यक्त बापदादा गुल्जार दादी के तन में आते हैं, मुरली चलाते हैं, बच्चों से मिलते हैं और चले जाते हैं। कर्तव्य करते हैं परन्तु किससे मोह नहीं है। नष्टोमोहा, स्मृति स्वरूप साक्षी स्थिति ही स्वेच्छा से देह त्याग के लिए मूलभूत आधार है। इस स्थिति में स्थित रहने का लम्बे समय से और गहन रूप का अभ्यास हो, तब ही हम समय पर स्वेच्छा से देह त्याग कर सकते हैं। अव्यक्त बापदादा की स्थिति को देखें तो देखते हैं कि कई बार स्टेज पर कोई अनचाही घटनायें भी हो जाती हैं, सभा में भी अनचाही घटनायें हो जाती है परन्तु बापदादा पर उसका कोई प्रभाव नहीं होता है और न ही बापदादा उसका कोई वर्णन करते हैं। बाबा सारा दृश्य साक्षी होकर खेल की तरह देखते हैं और समय पर चले जाते हैं। सेकेण्ड में देह में आने और देह से न्यारे होने का सतत और सफल अभ्यास हो, तब ही अन्त समय में स्वेच्छा से देह का त्याग करके मृत्यु-दुख और मृत्यु-भय से मुक्त हो सकते हैं। अव्यक्त बापदादा की प्रवेशता इस प्रक्रिया का सर्वोत्तम उदाहरण है। फालो फादर।

बाबा ने अनेक बार कहा है - तुम इस जगत में मेहमान हो। जैसे मेहमान का मेजमान के घर, व्यक्तियों और वस्तुओं में मोह नहीं होता है, उसको याद रहता है कि हमको यहाँ से जाना है तो जाने के समय सहज ही चला जाता है। जब हम अपने को इस देह और देह की दुनिया में मेहमान समझेंगे तो मृत्यु-दुख और मृत्यु-भय से मुक्त हो सकेंगे।

समय पर सहज और स्वेच्छा से शरीर छोड़ने के लिए आत्मा को जीवन में रहते विश्व-नाटक की सत्यता को जानकर अपने-पराये, राग-द्वेष, सुख-दुख आदि सबसे मुक्त, देह और देह की दुनिया से न्यारा होकर साक्षी स्थिति में रहने का अभ्यास बहुत लम्बे समय का चाहिए। तब ही समय पर स्वेच्छा से देह का त्याग कर सकते हैं और मृत्यु-दुख से मुक्त हो सकते हैं।

शुभ कर्मों और दुआओं का खाता जमा हो तो वे शुभ कर्म और दुआयें स्वत: बिना किसी दुख-दर्द के समय पर देह का त्याग करा देते हैं। सतयुग-त्रेता के समय सहज देह-त्याग का आधार भी ये शुभ कर्म ही हैं क्योंकि वहाँ तो आत्मा को आत्मा का यथार्थ ज्ञान भी नहीं होता है। दुनिया में भी अनेकों आत्माओं के ऐसे देह त्याग के उदाहरण हैं। संगमयुग पर परमात्मा के दिव्य कर्तव्य में सहयोगी बनना सबसे श्रेष्ठ और शुभ कर्म है, जिसका फल अनन्त गुणा मिलता है और परमात्मा और अन्य आत्माओं की दुआयें भी मिलती हैं।

मृत्यु-विजय और देह से सहज न्यारा होने की प्रक्रिया का मूलाधार है, देह सहित देह के सर्व सम्बन्धों कोभूलकर निर्संकल्प होकर एक परमात्मा में मन-बुद्धि को एकाग्र करना।

अन्त समय पर इस देह से स्थाई रूप से सहज न्यारा होने के लिए अभी से ही सहज इस देह से न्यारा होने और देह में प्रवेश होकर कर्म करने का अभ्यास होना परमावश्यक है, तब ही अन्त समय वह स्थिति होगी, जो जीवन की अन्तिम मंजिल है और जीवन की अन्तिम विजय है।

''अभी अचानक मौत हो जाती है। वास्तव में काल आना चाहिए पूरी आयु में। बरोबर भारत में कायदे अनुसार आयु पूरी होती थी, बूढ़े होते थे तो साक्षात्कार होता था कि अब फिर बच्चा बनेंगे ... यह पुराना चोला उतारना है।''

सा.बाबा 14.5.08 रिवा.

Q. अभी स्वेच्छा से शरीर छोड़ने का पुरुषार्थ करते और सतयुग में स्वेच्छा से शरीर छोड़ते। दोनों में अन्तर क्या है और सतयुग में शरीर छोड़ने के समय की स्थिति का निर्णायक बिन्दु (Critaria) क्या है ?

Q. देवतायें जरा-मृत्यु से मुक्त होते हैं, अमर होते हैं, मृत्यु उनके लिए वस्त्र बदलना होता है - तो मृत्यु या वस्त्र बदलने का निर्णायक बिन्दु क्या होता है और उसका निर्णय कैसे करते हैं ?

सतयुग में स्वेच्छा से शरीर छोड़ने में समय रूपी कांटा जब उस स्थान पर आता है तो ड्रामा अनुसार आत्मा की इस देह और इस देह की दुनिया से बुद्धि हट जाती है और जहाँ जाना है, वहाँ से लग जाती है। आत्मा को वहाँ की आकर्षण इतनी तीव्र होती है कि आत्मा एक सेकेण्ड भी इस देह में रहना नहीं चाहती या रह नहीं सकती और खुशी से देह का त्याग करके जहाँ जाना है, वहाँ चली जाती है। परन्तु अभी हम उसके लिए पुरुषार्थ करते हैं। अभी देह से न्यारा अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होने का जितना ही दृढ़ अभ्यास होगा, देह और देह की दुनिया से नष्टोमोहा होंगे, घर परमधाम की आकर्षण होगी, भविष्य सतयुग के लिए शुभ कर्मों का खाता जमा होगा तो अभी भी मृत्यु-भय से मुक्त जीवनमुक्त स्थिति का सुख अनुभव करेंगे और अन्त समय स्वेच्छा से देह का त्याग कर सकेंगे। अन्त समय वह संकल्प आयेगा और सहज ही इस देह से न्यारा हो जायेंगे।

जैसे नाटक के पार्टधारी एक पार्ट पूरा होने पर उनको अपनी वह ड्रेस उतारने और दूसरे पार्ट के लिए दूसरी ड्रेस पहनने का संकल्प स्वत: आता है, उसमें ड्रेस के खराब या अच्छी होने का प्रश्न नहीं होता परन्तु पार्ट अनुसार स्वेच्छा से ड्रेस बदलते हैं, ऐसे ही सतयुग में आत्मिक ज्ञान होने के कारण समय पर एक शरीर छोड़ दूसरा लेंगे। शरीर का पुराना होना और पार्ट का पूरा होना दोनों साथ2 होंगे और इस विश्व-नाटक में यथोचित पार्ट बजाने या श्रेष्ठ

जीवन का सुख लेने के लिए दोनों ही आवश्यक हैं।

दूसरों की दुआओं और योग-दान से भी देह भूल जाती है और सहज देह का त्याग कर सकते हैं। इसलिए आत्मा का दुआओं का जमा का खाता भी समय पर स्वेच्छा से देह के त्याग में सहयोग करता है।

जब तक हम परमात्मा पिता को नहीं पहचानते हैं, उनके नहीं बनते हैं, विश्व-नाटक की वास्तविकता नहीं समझते हैं, तब तक आत्मा की और विश्व की उतरती कला ही होती है, जिसके फलस्वरूप हर जन्म में आत्मा का जमा का खाता कम होता जाता है, जिसके फलस्वरूप दुख-अशान्ति बढ़ती जाती है, जो भी आत्मा को जाने-अन्जाने भयभीत करती है। अभी जब हम ज्ञान में आ जाते हैं, परमात्मा के बनकर उनकी मत पर अपना पुण्य का खाता जमा करने का पुरुषार्थ करते हैं तो हमारी चढ़ती कला होती है और हमको अपना अगला जन्म सुखदायी अनुभव होता है। इस सत्य को जानने वाला मृत्यु-भय और मृत्यु-दुख से मुक्त हो सकता है। जैसे एक व्यक्ति का पदोन्नति होकर ट्रान्सफर हो और दूसरे का पद-अवनति होकर ट्रान्सफर हो तो पदोन्नति वाला तो खुशी से जायेगा, सम्बन्धी भी खुशी से विदाई देंगे परन्तु पद-अवनति वाला दुखी होकर जायेगा। सतयुग से लेकिर कलियुग तक की स्थिति और संगमयुग की स्थिति ऐसी ही है। सतयुग-त्रेता में विकर्म नहीं होते, इसलिए दुख नहीं होता, जब कि द्वापर-कलियुग में दुख होता है।

जब आत्मा अपने सुखमय भविष्य के प्रति आश्वस्त होगी तो उसको मृत्यु का कोई भय नहीं होगा और इस जीवन की वस्तु और व्यक्तियों से लगाव भी नहीं होगा, जिससे आत्मा को मृत्यु का भय और मृत्यु का दुख नहीं होगा और समय पर सहज स्वेच्छा से देह त्याग कर सकेगी।

देह और दैहिक सम्बन्धों, वस्तुओं से उपराम हो जाना और नई देह, देह के सम्बन्धों का अप्रत्यक्ष में आकर्षण बन जाना।

‘‘अपने को अशरीरी समझने का अभ्यास करना है क्योंकि बहुत समय से अपने को अशरीरी नहीं समझा है। सतयुग में यह ज्ञान पूरा रहता है कि मैं आत्मा हूँ, मुझे यह पुराना शरीर छोड़कर नया लेना है। साक्षात्कार भी हो जाता है, चाहे परोक्ष या अपरोक्ष। समझते हैं - अभी शरीर की आयु पूरी हुई है। जैसे कोई मरने पर होता है तो कहते हैं - हमको ऐसा लगता है कि अब मैं मरूँगा, रह नहीं सकूँगा। वहाँ फिर समझते हैं अब यह शरीर बड़ा हो गया है, अब इसको छोड़ना है। अपने टाइम पर खुशी से छोड़ देते हैं। आत्मा का ज्ञान पूरा रहता है, बाप

का ज्ञान बिल्कुल नहीं है।'' सा.बाबा 26.08.03 रिवा.

''बच्चों की बुद्धि में खुशी का पारा चढ़ना चाहिए। यह तो समझाया है कि सतयुग में आत्मा का ज्ञान है, सो भी जब बूढ़े होते हैं तब अनायास ख्याल आता है कि यह पुराना शरीर छोड़, फिर दूसरा नया शरीर लेना है। यह ख्यालात भी पिछाड़ी के टाइम में आता है, बाकी सारा टाइम खुशी-मौज में रहते हैं। पहले यह ज्ञान नहीं रहता है।''

सा.बाबा 18.10.03 रिवा.

''देवताओं की आयु बहुत बड़ी होती है, तो साक्षात्कार होता है - अभी यह शरीर छोड़ जाकर बच्चा बनना है। तो यह अन्दर में आना चाहिए - हम आत्मा यह पुराना शरीर छोड़ जाकर गर्भ में निवास करेंगी। अन्त मते सो गते। संकल्प आता है - बूढ़े से तो हम क्यों न बच्चा बन जाऊं। आत्मा जब इस शरीर के साथ है, तब तकलीफ महसूस करती है।''

सा.बाबा 21.10.03 रिवा.

''ड्रामा प्लेन अनुसार हमने एक शरीर छोड़ दूसरा लिया। सुखधाम में आपेही खुशी से एक शरीर छोड़ते थे, दूसरा लेते थे। अब बाप खुशी से शरीर छोड़ने के लिए समझा रहे हैं। बच्चे समझते हैं - हम आत्मा परमधाम से आई हैं, यहाँ पार्ट बजाती हैं। पहले-पहले निश्चय चाहिए कि हम आत्मा अविनाशी हैं। ... आत्मा को कोई डर नहीं होना चाहिए।''

सा.बाबा 22.1.04 रिवा.

मृत्यु से भयभीत होना तो मूर्खता ही कहेंगे क्योंकि ये विश्व एक नाटक और देह का त्याग करना, नई देह लेना इसकी अपरिहार्य घटना है। मृत्यु तो नव-जीवन का संदेश है, उसको समय पर सहर्ष स्वीकार कर लेना ही सच्चा ज्ञान है। यथार्थ ज्ञानी के लिए मृत्यु भी जीवन के समान सदा सुखदायी होगी।

Q. मृत्यु-विजय अर्थात् स्वेच्छा से देह त्याग की प्रक्रिया क्या है ?

देह में रहते देह से न्यारी आत्मिक स्वरूप की स्थिति परमानन्दमय है, परम सुखमय है, उसका सफल अभ्यास ही सुखद और स्वेच्छा से देह त्याग का आधार है। दीर्घ काल का इस स्थिति का अभ्यास ही समय पर सहज देह से न्यारा होने में सफलता देगा। विश्व-नाटक की यथार्थता को जानकर राग-द्वेष, अहंकार-हीनता से मुक्त होकर, देह और देह की दुनिया से विमुक्त होकर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होने का सफल अभ्यास करना ही मृत्यु-विजय का अभीष्ठ पुरुषार्थ है अर्थात् नष्टोमोहा-स्मृतिस्वरूप स्थिति का दीर्घ काल का अभ्यास ही मृत्यु-भय और मृत्यु-दुख से मुक्त करके मृत्यु-विजय प्राप्त कराता है। इस अभ्यास को पक्का कराने के लिए बापदादा बार-बार ड्रिल करने के लिए प्रेरित करते रहते हैं।

‘‘तुम समझते हो हम खुद अपनी दिल से यह शरीर छोड़कर अपने घर जाकर फिर नये पवित्र सम्बन्ध में, नई दुनिया में आयेंगे। ... घड़ी-घड़ी बुद्धि में आना चाहिए कि हम अब घर जाने के लिए तैयारी कर रहे हैं। जो करेंगे वे ही साथ चलेंगे।’’

सा.बाबा 5.2.04 रिवा.

‘‘आपने शुरू में संकल्प किया था ना कि बाबा जायेंगे तो हम भी साथ जायेंगे, फिर ऐसा क्यों नहीं किया ? ... जब कहा था तो क्यों नहीं शरीर छोड़ा ? छोड़ सकते हो ? अभी छूट भी नहीं सकता क्योंकि जब तक हिसाब-किताब है अपने शरीर से, तब तक छूट नहीं सकता। योग से या भोग से हिसाब-किताब चुक्तू जरूर करना पड़ता है।’’

अ.बापदादा 25.1.69

‘‘मरने से डरते वे हैं, जिनका पूरा योग नहीं है। अरे, हम तो तैयारी कर रहे हैं वापस घर जाने की। ... सच-सच बाबा तुमको निर्वाणधाम जाने के लिए शिक्षा देते हैं। घर तो खुशी से जाना चाहिए।’’ सा.बाबा 20.5.08 रिवा.

‘‘दुनिया में कोई मरता है तो रोते हैं। अब तुम तो जीते जी छुट्टी ले लेते हो। ... अब तो सबको मरना है। क्रिया-कर्म करने वाले भी कोई नहीं होगा। यह तो भक्ति मार्ग की रस्म-रिवाज़ है। सतयुग में ऐसी बातें होती नहीं हैं। मोहजीत राजा की कहानी भी वहाँ की है।’’

सा.बाबा 24.5.08 रिवा.

Q. स्वेच्छा से देह-त्याग और सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता में क्या सम्बन्ध है ?

जितना-जितना हम अपनी सम्पूर्ण स्थिति में स्थित रहेंगे, उसका अभ्यास करेंगे, उतना ही स्वेच्छा से देह त्याग कर सकेंगे।

‘‘मैं आत्मा बिन्दुरूप हूँ, यह पहली-पहली बात है जो कि तुम सभी को बताते हो कि मैं आत्मा हूँ, ना कि शरीर। जब आत्मा होकर बिठाते हो तब ही उनको भी शरीर भूलता है।... जब उनको भुलाते हो तो क्या स्वयं शरीर से न्यारा होकर, न्यारे बाप की याद में नहीं बैठ सकते हो ?’’ अ.बापदादा 24.7.69

‘‘बिन्दु होकर बैठना कोई जड़ अवस्था नहीं है। जैसे बीज में सारा पेड़ समाया हुआ होता है, वैसे ही मुझ आत्मा में बाप की याद समाई होगी। ऐसे होकर बैठने से सब रसनायें आयेंगी। ... अपने को आत्मा समझकर फिर शरीर में आकर कर्म भी करना है परन्तु कर्म करते हुए भी न्यारा और प्यारा होकर रहना है।’’ अ.बापदादा 24.7.69

Q. मृत्यु-दुख और कर्मभोग का सम्बन्ध क्या है और उस पर विजय का पुरुषार्थ क्या है ?

वास्तव में मृत्यु-दुख और मृत्यु-भय भी एक कर्मभोग ही है क्योंकि बिना कर्म के आत्मा को

कोई दुख नहीं हो सकता है। इस दुख से छूटने का एकमात्र उपाय देह में रहते देह से न्यारा होने का सफल अभ्यास ही है, जिससे आत्मा मृत्यु-दुख, मृत्यु-भय और कर्मभोग से मुक्त हो सकती है। वैसे इस अनादि-अविनाशी नाटक में नूँधी हुई कोई भी घटना को टाला नहीं जा सकता परन्तु इस देह से न्यारा होने के अभ्यास से कर्मभोग के समय कर्मभोग की वेदना से मुक्त हो सकते है और जो कर्मभोग की वेदना से, कर्मभोग के दुख से मुक्त होगा, उसे न मृत्यु-दुख होगा और न ही वह मृत्यु से भयभीत होगा। वह तो वर्तमान संगमयुग के परमसुख की अनुभूति में रहेगा। इस प्रकार हम देखें तो देह से न्यारी स्थिति के सफल अभ्यास वाले को न मृत्यु का दुख होगा और न ही मृत्यु का भय होगा। मृत्यु उसके लिए वस्त्र बदलना होगा। कर्मभोग को भी वह खुशी-खुशी से चुक्ता करेगा।

Q. देह धारण करना और देह का त्याग करना जीवन की अपरिहार्य घटनायें हैं, जो इस विश्व-नाटक में पार्ट बजाने के लिए अनिवार्य है फिर भी आत्मा को मृत्यु-दुख और मृत्यु-भय क्यों ? मृत्यु-दुख और मृत्यु-भय से मुक्त होने का सहज साधन क्या है ?

देह के प्रति लगाव, अज्ञानतावश अशुभ की आशंका , आत्मा पर विकर्मों का बोझ, वस्तु-व्यक्तियों में मोह, उनके साथ हिसाब-किताब, भविष्य जीवन के प्रति अनिश्चतता, पूर्व जीवन के मृत्यु के समय के कटु-अनुभव आदि-आदि आत्मा के मृत्यु-भय और मृत्यु-दुख के मूल कारण है। यथार्थ ज्ञान, देह से न्यारेपन का सफल अभ्यास, परमात्मा की याद, श्रेष्ठ कर्मों का खाता संचय, सुन्दर-सुखमय भविष्य के प्रति निश्चिंतता आत्मा को मृत्यु-भय और मृत्यु-दुख से मुक्त कर अमृत्व प्रदान करते हैं।

आत्मा जब कर्मातीत होगी या कर्मातीत स्थिति के निकट होगी तब ही मृत्यु-दुख, मृत्यु-भय से मुक्त होगी और अन्त समय विनाश लीला को देखने में समर्थ होगी क्योंकि कर्मातीत आत्मा सुख-दुख दोनों की महसूसता से न्यारी होती है, इसलिए उसको असहनीय दुख के दृश्य भी प्रभावित नहीं करते। अन्त के समय विश्व-परिवर्तन के लिए अनेक अप्रिय घटनायें होंगी, उनको सहन करने और देखने में वे ही आत्मायें समर्थ होंगी जो कर्मातीत अर्थात् अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होंगे और वे ही अन्त समय देह और देह की दुनिया से सहज मुक्त हो मुक्तिधाम जा सकेंगे।

Q. देह से न्यारे होने की प्रक्रिया क्या है, उसका अनुभव क्या है ?

देह से न्यारे होकर इस देह और देह की दुनिया को देखने और पार्ट बजाने का अनुभव परम अनुपम है, जिसके आगे ये भौतिक सुखों, इन्द्रिय सुखों का कोई अस्तित्व नहीं है। शिवबाबा

ब्रह्मा तन में प्रवेश होकर देह से न्यारे होकर कर्म करने का अनुभव कराते हैं, उनके सानिध्य से, दृष्टि से आत्मायें देह से न्यारेपन का अनुभव करती हैं। मुक्ति-जीवनमुक्ति का ये अनुभव परम अनुपम है। देह और दैहिक सुखों के अस्तित्व को समझकर उनसे विरक्त होकर ही इस परम सुख का अनुभव किया जा सकता है। ये क्रिया भी चक्रवत है अर्थात् दैहिक सुखों से विरक्त होंगे तो इस अतीन्द्रिय सुख का अनुभव होगा, इस अतीन्द्रिय सुख में गहरे जायेंगे तो देह और दैहिक सुखों से विरक्त होंगे। इस अभ्यास से आत्मा सर्व दुखों से मुक्त हो जायेगी।

Q. मूर्छा (Coma), दवाई आदि से (enasthesia etc) अचेत होने और योग के पुरुषार्थ से देह से न्यारे हो जाना (Detached) तीनों में क्या समानतायें हैं और क्या विषमतायें हैं, तीनों के लाभ-हानि क्या हैं?

मूर्छा (Coma) आ जाना, दवाई (Medicine) से अचेत करना और आत्मा का स्वरूप में स्थित हो जाना अर्थात् देह से न्यारा हो जाना, तीनों स्थितियां प्राय: समान हैं क्योंकि तीनों में आत्मा का शरीर की कमेन्द्रियों से सम्बन्ध कटा हुआ होता है, समाचार आने-जाने के दरवाजे बन्द होते हैं परन्तु एक है अनेच्छा से बर्बस न्यारा हो जाना अर्थात् मूर्छा, दूसरी प्रक्रिया है आवश्यकता पर अनेच्छा से दवाइयों से अचेत करना और तीसरी प्रक्रिया है स्वेच्छा से न्यारा होना। पहली दोनों स्थितियाँ उतरती कला की हैं अर्थात् दोनों में आत्मा की उतरती कलायें होती हैं, आत्मा के कर्मभोग अर्थात विकर्मों के फल भोगने के लिए होती हैं जबकि तीसरी स्थिति चढ़ती कला की है और भविष्य जन्म-जन्मान्तर के लिए फल देने वाली है क्योंकि उसमें आत्मा के विकर्म विनाश होते हैं अर्थात् आत्मा पर देहाभिमान की अर्थात् अज्ञानता का जो लेपक्षेप (Lare, cut) चढ़ी है वह उतरती है अर्थात् आत्मा की देही-अभिमानी स्थिति चिर-स्थाई होती है। वास्तव में देखा जाये तो योग भी एक प्रकार का कर्मभोग ही है, जो आत्मा स्वेच्छा से भोगकर पूरा करती है। परमात्मा हमको अपने स्वरूप में स्थित होकर देह और देह की दुनिया से न्यारे होकर परमानन्द का अनुभव करने का प्रत्यक्ष प्रमाण दिखा रहा है और अनुभव भी कराता है। उसको याद करना माना उसको देखकर उस स्थिति को धारण करना।

शंकराचार्य और अन्य धर्मपिताओं के विषय में भी ऐसा वर्णन है और ब्रह्मा बाबा का प्रत्यक्ष प्रमाण हमारे सामने हैं। धर्मपिताओं या किसी भी आत्मा के लिए ये नहीं कहा जा सकता कि उनको वह स्थिति बिना पुरुषार्थ के मिली। हर आत्मा ने वह स्थिति अपने पुरुषार्थ से ही पाई है। भले ही वह पुरुषार्थ उसने इस जन्म में किया हो या इसके पूर्व जन्म में या कल्पान्त में किया हो। हमको भी यदि दुख-दर्द से मुक्त होना है तो पुरुषार्थ करके उस स्थिति को पाना है।

Q. संजीवनी बूटी क्या है ?

बाबा हमको आत्मा का जो ज्ञान देते हैं, उसको समझकर संकल्प करते ही देह सहित देह के सर्व धर्मों से न्यारे होकर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित हो जाना ही संजीवनी बूटी है, अमृत है, जो स्थिति सर्व दुख-दर्द, राग-द्वेष, भय-चिन्ता से मुक्त परमानन्दमय है, जिसको देने के लिए ही परमात्मा का इस धरा पर अवतरण हुआ है। परमात्मा पिता से प्राप्त ये परम-प्राप्ति है और इस अनुभव के सामने परमात्मा से प्राप्त अन्य सब प्राप्तियाँ तो गौड़ हैं। इस परम-प्राप्ति का अनुभव परमात्मा ने हमको कराया है और करा भी रहा है तथा उसको स्थाई बनाने के लिए प्रेरणा भी दे रहा है एवं आज्ञा भी दे रहा है।

Q. मृत्यु अच्छी चीज है या बुरी चीज है ?

अच्छी, वास्तव देखा जाये तो इस विश्व-नाटक में मृत्यु से अच्छी कोई चीज नहीं है क्योंकि मृत्यु ही आत्मा को एक पुराना वस्त्र उतार कर धारण करने का आधार है। परन्तु बिडम्बना ये है कि अज्ञानता जनित देहाभिमान के कारण हर आत्मा मृत्यु से भयभीत है। अभी परमात्मा ने हमको इस विश्व-नाटक का यथार्थ राज़ समझाया है, जिनकी बुद्धि में यह राज़ बैठ जाता है, उसको मृत्यु से कोई भय नहीं होता है और वे मृत्यु को वस्त्र बदलना अनुभव करते हैं। मृत्यु ही आत्मा के पुराना वस्त्र उतारकर नया धारण कर सुख भोगने का, जीवन में नई स्फूर्ति लाने का और इस विश्व-नाटक के सफल मंचन का आधार है। परन्तु देहाभिमान के वश विकारों के कारण आत्मा के लिए दुखदायी हो जाती है। मृत्यु अर्थात् एक शरीर को छोड़ने के बाद ही नया धारण करती है, जो आत्मा के नया पार्ट बजाने के लिए अति आवश्यक है। इस विश्व-नाटक की सत्यता पर विचार करें तो मृत्यु एक अपरिहार्य और सुखदायी घटना, इसलिए ज्ञानी पुरुष कभी मृत्यु से भयभीत नहीं होते हैं और न ही हमको इससे कभी भयभीत होना चाहिए।

Q. जीते जी मरना किसको कहा जाता है ?

देह में रहते देह को भूल जाना ही जीते जी मरना है। दूसरा लौकिक जीवन और लौकिक सम्बन्धियों को भूल कर बेहद के बाप का बन जाना ही जीते जी मरना है। जो जितना देह को भूलने का सफल अभ्यास करता है, वह उतना ही बेहद के बाप का बनता है। अभी संगमयुग पर बाबा सत्य ज्ञान देकर ये अभ्यास कराते हैं। सफलतापूर्वक जीते जी मरने का अभ्यास करने के लिए, परमात्मा लौकिक दुनिया के भी कई उदाहरण देते हैं, जो जीते जी मरने के ही विधि-विधान हैं। जैसे कन्या शादी करती तो जीते जी एक परिवार को छोड़कर दूसरे परिवार

की बन जाती, कोई बच्चे को गोद लेता है तो भी वह एक माता-पिता को छोड़कर दूसरे का बन जाता है।

चेतन हो परन्तु चेतना न हो अर्थात् शरीर में चेतन आत्मा होते भी कोई संकल्प न हो, जिसको हठयोग में निर्संकल्प समाधि कहा गया है, अभी बाबा ने जीते जी मरना कहा है। योग के सफल अभ्यास के लिए ये अभ्यास अति आवश्यक है।

''जीते जी मरने को साइलेन्स कहा जाता है।'' सा. बाबा 2.4.04 रिवा.

''अभी बाप जीते जी मरना सिखला रहे हैं। ... जैसे रात को आत्मा शरीर से अलग हो जाती है, जिसको नींद कहा जाता है।'' सा.बाबा 24.7.04 रिवा.

Q. जीना और मरना दोनों समान सुखदाई हों, उसके लिए अभीष्ट पुरुषार्थ क्या है ?

विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान को समझकर जीते जी देह का त्याग करने अर्थात् न्यारा होने और पुन: देह-धारण करने के अभ्यास की आवश्यकता है। जो विश्व नाटक की इस आवश्यकता और निश्चितता को समझकर इस देह से न्यारा होने का सफल अभ्यास करता है, उसके लिए जीवन और मृत्यु समान सुखदाई हो जाती है। दूसरा जो जीवन में श्रेष्ठ कर्मों को करके अपना पुण्य का खाता जमा कर लेता है, उसके लिए भविष्य सुखदाई होने के कारण उसको मृत्यु का कोई भय नहीं व्याप्त होता।

''इस पाँच तत्वों से बने शरीर में ममत्व हो गया है, इसलिए वे यहाँ रहने के लिए खींचते हैं। अब इनसे ममत्व निकाल अपने घर वापस जाना है। ... पांच तत्वों का बल आत्मा को खींचता है, इसलिए शरीर छोड़ने की दिल नहीं होती है। नहीं तो शरीर छोड़ने में और ही खुश होना चाहिए।'' सा.बाबा 29.2.08 रिवा.

Q. अकाले मृत्यु का अर्थ क्या है ?

कलियुग में विकर्मों का फल भोगने के लिए कई ऐसी घटनायें होती है, जिनको मनुष्य अकाले मृत्य कहते हैं परन्तु इस विश्व-नाटक में अकाले मृत्यु नाम की कोई घटना नहीं है क्योंकि सब अपने समय पर ही होता है।

''सतयुग में कब अकाले मृत्यु होता नहीं, काल आ नहीं सकता। सुखधाम में काल को आने का हुक्म नहीं। राम राज्य और रावण राज्य के अर्थ को भी समझना है।''

सा.बाबा 28.12.04 रिवा.

Q. अमरत्व का क्या तात्पर्य है और काल पर जीत कैसे पायी जा सकती है ?

आत्मा का अपने को मृत्यु-भय और मृत्यु-दुख से मुक्त अनुभव करना ही अमरत्व है। आत्मा अजर-अमर-अविनाशी है, उसके अस्तित्व को जानकर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर आत्मा काल पर जीत पा सकती है अर्थात् काल अर्थात् मृत्यु-भय और मृत्यु-दुख से मुक्त हो सकती है।

''काल पर जीत कैसे पाई जाती है, यह जो नॉलेज है, वह अमर बनाती है। ... देवताओं को कभी काल नहीं खाता। ... भारत अमरलोक था, कितनी बड़ी आयु थी। सर्प का मिसाल भी सतयुग के लिए है। एक खाल छोड़ दूसरी लेते हैं।''

सा.बाबा 12.3.04 रिवा.

Q. बाबा ने हमको अनेक प्रकार के खज़ाने दिये हैं और उनको जमा करने का विधि-विधान भी बताया है, तो अभी हम जो खज़ाने जमा करते हैं, वे भविष्य के लिए ही हैं या इस जीवन में भी उनका कोई विशेष महत्व है, उनसे कोई विशेष अनुभूति होती है ?

वास्तव में देखा जाये तो बाबा ने हमको जो खज़ाने दिये हैं, वे हमको इस जन्म में भी काम आते हैं और भविष्य अनेक जन्मों में भी काम आते हैं परन्तु इस जन्म में उनसे जो अनुभूति और प्राप्ति होती है, वह भविष्य में प्राप्त होने वाली प्राप्ति से पदमगुणा अधिक है। स्व-पुरुषार्थ से जो आत्मा देह से न्यारे होकर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होने का सफल अभ्यास करती है, वह इस जीवन में अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करती है और अन्त समय सहज ही देह का त्याग करती है अर्थात् मृत्यु-भय और मृत्यु-दुख से भी मुक्त रहती है। ऐसे ही सनतुष्टता द्वारा दुआओं का खाता और सच्ची सेवा द्वारा जमा किया हुआ पुण्य का खाता भी हमको इस जीवन में भी बेफिकर स्थिति का अनुभव कराता है और अन्त समय मृत्यु-दुख से मुक्त होने में भी सहयोग करती है।

''चेक करो - निमित्त और निर्मान बनने की विधि से हमारे खाते में कितने खज़ाने जमा हुए हैं। जितने खज़ाने जमा होंगे, भरपूर होगा, उनके चलन और चेहरे से भरपूर आत्मा का रुहानी नशा स्वत: ही दिखाई देगा। उसके चेहरे पर सदा रुहानी फखुर चमकता है और जितना ही रुहानी फखुर होगा, उतना ही वह बेफिकर बादशाह होगा।''

अ.बापदादा 18.3.08

''अभी बच्चे तीन प्रकार के खाते जमा किये हैं और कर सकते हैं। एक है - अपने पुरुषार्थ प्रमाण खज़ाने जमा करना, दूसरा है - दुआओं का खाता। दुआओं का खाता जमा होने का साधन है सदा सम्बन्ध-सम्पर्क में सन्तुष्टता ... सन्तुष्टता दुआओं का खाता बढ़ाती है और

तीसरा खाता है - पुण्य का खाता। पुण्य का खाता जमा करने का साधन है ... मन, वाणी, कर्म, सम्बन्ध-सम्पर्क में आते सदा निस्वार्थ और बेहद की वृत्ति, स्वभाव, भाव और भावना से सेवा करना।''
अ.बापदादा 18.3.08

''बापदादा से जो खज़ाने मिले हैं, उनको जमा करने की बहुत सहज विधि है। विधि कहो या चाबी कहो ... तीन बिन्दियां। सभी के पास है ना यह चाबी? तीन बिन्दियां लगाओ और खज़ाने जमा होते जायेंगे।''
अ.बापदादा 18.3.08

Q. सतयुगी देह-त्याग, कलियुगी देह-त्याग और संगमयुगी देह-त्याग की दिशा और दशा अर्थात् प्रक्रिया में क्या अन्तर है?

सतयुग में खुशी से बिना किसी कर्मभोग के समय पर देह-त्याग करते हैं परन्तु वहाँ भी भविष्य जन्म गिरती कला का होता है। कलियुग में मृत्यु-दुख से दुखी होकर, कर्मभोग से दुखी होकर, अनेच्छा से देह-त्याग करते हैं क्योंकि भविष्य जन्म गिरती कला का ही होता है और वर्तमान देह और दैहिक सम्बन्धियों से मोह-ममता होती है। संगमयुग पर कर्मभोग होते हुए भी ईश्वरीय स्मृति में देह-त्याग करते परन्तु अभी मृत्यु-भय से भयभीत नहीं होते क्योंकि संगमयुग पर भविष्य जन्म चढ़ती कला का होता है भले कर्मभोग के कारण वेदना आदि होती है। अभी भी परमात्मा का साथ है, उसकी मदद है और भविष्य में भी उनकी मदद मिलती रहेगी, इसके लिए आत्मा आश्वस्त रहती है।

देह-त्याग के लिए देह और देह की दुनिया को भूलकर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित हो जायें। आत्मा जब अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होगी तो दैहिक कर्मभोग होते हुए भी उसकी वेदना से मुक्त होगी। इसके लिए अभीष्ठ पुरुषार्थ है विश्व-नाटक की यथार्थता को जानकर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होने का पहले से अभ्यास। ये स्थिति आत्मा की संगमयुग पर ही होती है, जब आत्मा की चढ़ती कला होती है और आत्मा, परमात्मा, विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान होता है।

''सतयुग में जब बूढ़े होते हैं तो साक्षात्कार होता है कि जाकर बच्चा बनूँगा, माता के गर्भ में जाऊंगा परन्तु यह नहीं मालूम पड़ता कि फलाने घर में जाऊंगा।''
सा.बाबा 2.10.06 रिवा.

Q. क्या चाहते हुए शरीर का त्याग कर सकते हैं? यदि कर सकते हैं तो क्यों और कैसे और यदि नहीं कर सकते हैं तो क्यों?

विश्व-नाटक के विधि-विधान अनुसार समय पर आत्मा स्वेच्छा से देह का त्याग कर सकती है

और ये स्वेच्छा से देह-त्याग का विधि-विधान भी परमात्मा अभी संगमयुग पर सिखाते हैं अर्थात् संगमयुग पर परमात्मा देह से न्यारा होने का जो अभ्यास कराते हैं, उस संस्कार के आधार पर ही आत्मायें सतयुग-त्रेता में स्वेच्छा से देह का त्याग करते हैं। समय से पहले कोई भी आत्मा अपनी इच्छा से देह का त्याग नहीं कर सकती है। कोई आत्मायें जीवघात आदि के रूप में देह का त्याग करते हैं परन्तु वह भी ड्रामा में उनका देह त्याग का बना-बनाया विधि-विधान है, उस विधि-विधान अनुसार निश्चित समय पर ही आत्मा देह का त्याग करती है।

''बिन्दुरूप में स्थित रहने की कमी का कारण है कि पहला पाठ ही कच्चा है। कर्म करते हुए अपने को अशरीरी आत्मा महसूस करें। यह प्रैक्टिस सारे दिन में बहुत चाहिए। प्रैक्टिकल में न्यारा होकर कर्म में आना - यह जितना-जितना अनुभव करेंगे, उतना ही बिन्दुरूप में स्थित होते जायेंगे। ... विशेष काम समझकर बीच-बीच में समय निकाल कर यह अभ्यास करो।''

अ.बापदादा 23.7.69

''जितना-जितना न्यारा बनेंगे तो बिन्दुरूप तो है ही न्यारा। निराकार भी है तो न्यारा भी है। जब आप निराकारी और न्यारी स्थिति में स्थित होंगे तब ही बिन्दुरूप का अनुभव करेंगे। ... एक सेकेण्ड के अनुभव से कितनी शक्ति अपने में भर सकते हो, वह भी अनुभव करेंगे और ब्रेक देने तथा मोड़ने की शक्ति भी अनुभव करेंगे।''

अ.बापदादा 23.7.69

गीता ज्ञान और गीता ज्ञान-दाता

निराकार परमात्मा शिव ने गीता ज्ञान के द्वारा नई दुनिया सतयुग और आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना, जहाँ से सृष्टि-चक्र का नया चक्र आरम्भ हुआ, सर्व आत्माओं को परमात्मा से मुक्ति-जीवनमुक्ति का वर्सा मिला। राजयोग सिखाकर परमात्मा ने विश्व में पुन: राजवंश की स्थापना की क्योंकि कलियुग में सारे विश्व में प्रजातन्त्र की राज-व्यवस्था हो गई थी और अभी है भी। इसलिए गीता के भगवान और गीता ज्ञान की बहुत महिमा है परन्तु गीता लिखने वाले ने गीता ज्ञान के दाता, गीता के समय को अज्ञानतावश गलत लिख दिया है, जिससे गीता का महत्व कम हो गया है। गीता-ज्ञान के मुख्य विषयों के विषय में कई भ्रान्तियां हैं, जिसके लिए परमात्मा ने कहा है कि गीता में आटे में नमक के समान सत्य है। बाबा ने कहा है - जब तुम गीता ज्ञान-दाता, गीता ज्ञान के समय और गीता-ज्ञान को सिद्ध करोगे, तब तुम्हारी जीत होगी। अब ये कैसे होगा, इस सम्बन्ध में कुछ अहम् प्रश्न सामने आते हैं, जिनमें से कुछ यहाँ लिखे गये हैं।

Q. क्या गीता का भगवान किसी लौकिक न्यायालय में सिद्ध होगा ? या ये भी पुरुषार्थ की एक विधि है, जिसके द्वारा बाबा पुरुषार्थ के लिए प्रेरित करते हैं, जिससे सर्वात्माओं को बाप का सन्देश मिले ?

हमारा विवेक कहता है कि गीता ज्ञान-दाता किसी न्यायालय में सिद्ध नहीं होगा। बाबा ने कहा है जब गीता ज्ञान सिद्ध होगा तब गीता ज्ञान-दाता सिद्ध होगा, इसलिए हमको गीता ज्ञान को अपने जीवन में अपनाकर अपने स्वरूप और कर्तव्य से दुनिया के सामने सिद्ध करना होगा, जैसे ब्रह्मा बाबा ने हमारे सामने प्रत्यक्ष किया।

''अभी प्रत्यक्षता का प्लेन है - प्रैक्टिकल जीवन। बाकी प्रोग्राम्स करते हो, वह तो बिजी रहने के लिए बहुत अच्छा है लेकिन प्रत्यक्षता होगी आपके चलन और चेहरे से।''

अ.बापदादा 15.12.03

''अभी आप लोगों ने बापदादा की एक आशा पूरी नहीं की है। की है ? ... गीता के भगवान पर हिलाकर दिखाओ। ... थोड़ा-थोड़ा रिहर्सल तो करो, हिलाकर देखो क्या कहते हैं।''

अ.बापदादा 31.12.03 जूरिस्ट विंग

''बापदादा की एक बात अभी तक कोई भी वर्ग वाले ने नहीं की है। याद है, कौन सी ? (गीता के भगवान की) ये गीता वाली बात छोड़ो, वह तो बापदादा ने कहा भी है कि यह बात बहुत श्रेष्ठ है परन्तु यह बहुत सम्भाल कर करनी है। पहले एक ग्रुप ऐसा तैयार करो जो आपके साथी बनें। वे माइक बनें और आप माइट बनो।... अभी बापदादा की सभी बच्चों को यही शुभ राय वा श्रीमत है कि ऐसा ग्रुप तैयार करो, जो यह आवाज फैलाये कि यही परमात्म कार्य है। निर्भय होकर, नि:संकोच होकर बाप को प्रत्यक्ष करे। दृढ़ता से बोले, अथॉरिटी से बोले। आजकल के जमाने में स्थूल अथॉरिटी भी काम में आती है। लौकिक अथॉरिटी और परमात्म अथॉरिटी दोनों अथॉरिटी वाले आवाज फैला सकते हैं।''

अ.बापदादा 02.02.04

''अपने नॉलेजफुल स्वरूप को प्रत्यक्ष करना है। अभी समझते हैं कि शान्ति स्वरूप आत्मायें हैं, यह स्वरूप प्रत्यक्ष हुआ भी है और हो भी रहा है लेकिन नॉलेजफुल बाप की नॉलेज है तो यही है। अब यह आवाज हो। ... सबके मुख से आवाज निकले कि सत्य ज्ञान है तो यही है।''

अ.बापदादा 9.3.85

बाबा ने हमको आत्मा, परमात्मा, सृष्टि-चक्र, कल्प-वृक्ष, कर्मों की गुह्य गति, विभिन्न धर्मों आदि का जो ज्ञान दिया है, उसकी सत्यता सिद्ध होगी तब ही गीता ज्ञान दाता सिद्ध होगा। उसके लिए पहले वह ज्ञान हम सब बच्चों की बुद्धि में स्पष्ट हो, उस पर पूरा निश्चय हो, उसकी

जीवन में धारणा हो तब ही गीता का भगवान सिद्ध होगा। हम अपने दिल से पूछें - हमको ज्ञान की सत्यता पर कहाँ तक निश्चय है और वह हमारे जीवन में कहाँ तक प्रैक्टिकल में है। जब यह ज्ञान हमारे जीवन में प्रक्टिकल में होगा, तब ही हम गीता के भगवान को सिद्ध कर सकेंगे। जैसे ब्रह्मा बाबा ने ज्ञान को अपने जीवन से प्रत्यक्ष किया, ऐसे ही जब ज्ञान हमारे प्रैक्टिकल जीवन से प्रत्यक्ष होगा, तब ही सत्य ज्ञान का दाता अर्थात् गीता ज्ञानदाता परमात्मा प्रत्यक्ष होगा। बाबा के महावाक्य हैं - निश्चयबुद्धि विजयन्ति।

''तुम्हारा फर्ज है मनुष्य मात्र को यह पैगाम देना कि यह पुरुषोत्तम संगमयुग है। बेहद का बाप बेहद का वर्सा देने आया है। बाप कहते हैं - मामेकम् याद करो तो विकर्म विनाश होंगे, पाप कट जायेंगे। यह है सच्ची गीता।'' सा.बाबा 15.4.04 रिवा.

Q. क्या कोई लौकिक दुनिया वाला जज ये निर्णय कर सकता है कि गीता का भगवान श्रीकृष्ण नहीं, निराकार परमात्मा शिव है?

नहीं। इस विषय में हमारा मन्तव्य है कि गीता ज्ञान-दाता किसी लौकिक दुनिया के कोर्ट में सिद्ध नहीं होगा। लौकिक दुनिया का जज, जो स्वयं ही गीता ज्ञान और गीता ज्ञान-दाता को नहीं जानते, वे 'गीता ज्ञान-दाता कौन' का निर्णय कैसे कर सकते। किसी बात के विषय में यथार्थ निर्णय करने के लिए उचचे उच्च स्तार के ज्ञान की आवश्यकता होती है। ये जन-साधारण का कोर्ट (Public Court) है, जहाँ गीता ज्ञान-दाता कौन? सिद्ध होगा।

Q. क्या वह समय आयेगा जब कोई ब्रह्मा कुमार-कुमारी लौकिक दुनिया में किसी उच्च या उच्चतम न्यायालय में जज बनेगा और उसके सामने गीता ज्ञान के विषय में केस हो और वह निर्णय दे कि गीता ज्ञानदाता श्रीकृष्ण नहीं निराकार परमपिता परमात्मा शिव है?

नहीं। उपयुक्त सब बातों पर विचार करके ही इस बात निर्णय किया जा सकता है कि गीता का भगवान श्रीकृष्ण नहीं है, निराकार ज्ञानसागर परमात्मा शिव है - कैसे सिद्ध होगा अर्थात् यह सत्य किसी न्यायालय में सिद्ध होगा या पब्लिक कोर्ट अर्थात् जनता जनार्दन के बीच में सिद्ध होगा, ये बात विचारणीय है।

हमारा विवेक कहता है कि गीता का भगवान किसी न्यायालय में सिद्ध नहीं होगा, ये जनता-जनार्दन के बीच अर्थात् पब्लिक कोर्ट में ही सिद्ध होगा। जैसे ब्रह्मा बाबा ने शिवबाबा को अपने स्वरूप से प्रत्यक्ष किया, उनके कर्मों से शिवबाबा के कर्म प्रत्यक्ष हुए। ऐसे ही बच्चों को गीता ज्ञान की यथार्थ धारणा से गीता ज्ञान दाता को सिद्ध करना होगा। जब हम 'नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप' बनेंगे तो गीता का भगवान स्वत: ही सिद्ध हो जायेगा।

भगवानोवाच्य - तुम्हारी स्थिति ज्ञान की सत्यता को सिद्ध करेगी, जब ज्ञान सिद्ध होगा तो ज्ञान-दाता सिद्ध होगा।

जैसे ब्रह्मा बाबा ने अपनी स्थिति से गीता ज्ञान और गीता ज्ञान-दाता को हमारे सामने प्रत्यक्ष किया, ऐसे हमको अपनी स्थिति से गीता ज्ञान-दाता को प्रत्यक्ष करना है।

जब हम अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होंगे तो हमारे आत्मिक स्वरूप की स्थिति के प्रभाव से वे अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित हो जायेंगे और ज्ञान की सत्यता महत्ता को अनुभव करेंगे।

हमारे आत्मिक स्वरूप में स्थित होंने से उनको साक्षात्कार हो सकता है। जैसे ब्रह्मा बाबा के द्वारा अनेक आत्माओं को हुआ और वे बाबा के बन गये।

जब हम अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होंगे और परमपिता परमात्मा की याद में लीन होंगे हमारे स्वरूप में परमात्मा के स्वरूप को देखेंगे, परमात्मा के कर्तव्यों का अनुभव करेंगे।

तुम अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होंगे तो वे तुम्हारी दृष्टि-वृत्ति से सुख-शान्ति का अनुभव करेंगे। जैसे ब्रह्मा बाबा ने हमको कराया।

Son shows Father, बच्चे प्रत्यक्ष होंगे तो बाप प्रत्यक्ष होगा अर्थात् जब हमारी अवस्था ऐसी ऊंची होगी कि दुनिया हमारी तरफ आकर्षित होगी और हम उनको अपनी स्थिति का राज़ बतायेंगे तो वे आप ही इस सत्य को अनुभव करेंगे।

परमपिता परमात्मा ने जो गीता ज्ञान दिया है, उसके अनुरूप हमारे जीवन की धारणायें हो जायें, तब गीता ज्ञान सिद्ध होगा। जैसे ब्रह्मा बाबा ने कर के दिखाया।

गीता ज्ञान की धारणा ही गीता ज्ञान को और गीता ज्ञान दाता को प्रत्यक्ष करेगी। गीता ज्ञान का सार है - देह सहित देह से सर्व सम्बन्धों से नष्टोमोहा और स्मृति स्वरूप में स्थित। हमारी निराकारी, निरहंकारी, निर्विकारी स्थिति होगी तो वह स्थिति ही गीता ज्ञान दाता को सिद्ध करेगी।

''आपका चेहरा बताये कि यह दर्शनीयमूर्त हैं। ... चेतन्य में भी जैसे ब्रह्मा बाप को देखा, साकार स्वरूप में, फरिश्ता तो बाद में बना लेकिन साकार स्वरूप में होते हुए आप सबको क्या दिखाई देता था ? ... आपका कर्म, चलन, चेहरा स्वत: ही सिद्ध करेगा। भाषण से नहीं सिद्ध होगा। भाषण तो एक तीर लगाना है लेकिन प्रत्यक्षता होगी, इनको बनाने वाला कौन! रचना, रचता को प्रत्यक्ष करती है।'' अ.बापदादा 15.12.03

‘‘गीता का रचयिता जरूर चाहिए। ... मूलवतन, सूक्ष्मवतन, स्थूलवतन - इन तीनों लोकों को कहा जाता है त्रिलोकी, इनको जानने वाला त्रिलोकीनाथ, त्रिकालदर्शी परमपिता परमात्मा शिव है, यह उनकी महिमा है न कि श्रीकृष्ण की। कृष्ण की महिमा है - सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी, मर्यादा पुरुषोत्तम। उनकी भेंट करते हैं चन्द्रमा से। परमात्मा की भेंट चन्द्रमा से नहीं करेंगे।’’ सा.बाबा 11.11.03 रिवा.

Q. क्या कभी गीता के भगवान के विषय में कोर्ट में केस होगा ? यदि होगा तो उसको कौन करेगा अर्थात् ज्ञानी आत्माओं की ओर से केस होगा या अज्ञानी आत्माओं की तरफ से होगा ?

Q. क्या गीता का भगवान श्रीकृष्ण नहीं, ज्ञान सागर निराकार परमपिता परमात्मा शिव है - यह किसी लौकिक दुनिया के न्यायालय में सिद्ध होगा ?

Q. क्या परमपिता परमात्मा गीता का भगवान या परमात्मा सर्वव्यापी नहीं ... सिद्ध करने के लिए किसी न्यायालय में केस करने की स्वीकृति देगा ?

नहीं, क्योंकि परमात्मा सर्वात्माओं का पिता है, इसलिए परमात्मा कभी भी गीता के भगवान के विषय में केस करने की छुट्टी नहीं देंगे। बाबा ने एक बार किसी अन्य प्रसंग में कहा था - क्या बाप अपने बच्चों पर केस कर सकता है ? ये बाप तो विश्व-नाटक का पूर्ण ज्ञाता है और जिसको इस विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान है, वह किसी आत्मा पर कब भी कोई केस न कर सकता और न ही केस करने की स्वीकृति दे सकता है क्योंकि विश्व-नाटक के विधि-विधान अनुसार इसमें किसी आत्मा का कोई दोष नहीं है। हर आत्मा अपना अनादि-अविनाशी पार्ट बजा रही है।। वैसे भी धर्मपिताओं के विषय में किसी धर्मपिता ने केस नहीं किया, धर्मपिताओं पर अन्य लोगों के द्वारा केस किये गये हैं, फिर ये तो परमपिता है। ये तो बाबा उन गीता पाठियों और गीता प्रचारकों की सेवा अर्थ कहते हैं और उनके सामने गीता का भगवान हमारी चलन और चेहरे से सिद्ध होगा, जैसे ब्रह्मा बाप ने हमारे सामने सिद्ध करके दिखाया है।

गीता का भगवान श्रीकृष्ण नहीं, लेकिन निराकार परमात्मा शिव है - यह लौकिक दुनिया के किसी न्यायालय में सिद्ध नहीं हो सकता है।

‘‘आप सभी सोचते हो - बाप की प्रत्यक्षता जल्दी से जल्दी हो जाये लेकिन प्रत्यक्षता किस कारण से रुकी हुई है ?... बापदादा ने बाप समान बनने के लिए कहा है। क्या बनना है, कैसे बनना है, ‘समान ’ शब्द में यह दोनों क्वेश्चन उठ नहीं सकते। बस बाप समान बनना है।’’

अ.बापदादा 25.11.2000

‘‘युक्ति से कार्टून बनाना चाहिए, जिससे सिद्ध हो जाये कि गीता परमात्मा ने गाई और उससे कृष्ण को ऐसा बनाया।’’ सा.बाबा 7.11.07 रिवा.

Q. यदि परमात्मा केस करने की स्वीकृति नहीं देगा तो ये कैसे सिद्ध होगा ?

हमको अपने दृढ़ निश्चय और ज्ञान की यथार्थ धारणा तथा सर्वात्माओं के प्रति शुभ भावना शुभ कामना से सबको सिद्ध कर समझाना होगा और अपने चलन और व्यवहार से सिद्ध करना होगा अर्थात् सबको ज्ञान की सत्यता का अनुभव कराना होगा, जैसे ब्रह्मा बाबा ने हमको अनुभव कराया।

‘‘बाप के बने हो तो पेट के लिए तो मिलेगा ही, शरीर निर्वाह के लिए बहुत मिलेगा। जैसे वेदान्ती बच्ची है, उसने इम्तहान दिया, उसमें एक प्वाइन्ट थी - गीता का भगवान कौन ? उसने परमपिता परमात्मा शिव लिख दिया तो उनको नापास कर दिया और जिन्होंने कृष्ण का नाम लिखा था, उनको पास कर दिया। बच्ची ने सच बताया तो उसको न जानने के कारण नापास कर दिया। फिर लड़ना पड़े, मैंने तो यह सच-सच लिखा। गीता का भगवान है ही निराकार परमपिता परमात्मा शिव, देहधारी कृष्ण तो हो न सके। परन्तु बच्ची की दिल थी इस रुहानी सर्विस करने की तो छोड़ दिया।’’

सा.बाबा 23.6.04 रिवा.

‘‘गीता किस धर्म का शास्त्र है ? ब्राह्मण देवी-देवता धर्म का कहना ठीक है। गीता को सिर्फ देवी-देवता धर्म का शास्त्र नहीं कहेंगे, जब तक ब्राह्मणों को न मिलायें। ... देवताओं में यह ज्ञान ही नहीं है। वे यह भी नहीं जानते कि गीता कोई हमारे धर्म का शास्त्र है। ज्ञान है ब्राह्मणों को परन्तु सिर्फ ब्राह्मण धर्म का भी शास्त्र गीता नहीं कहेंगे।’’

सा.बाबा 10.10.07 रिवा.

Q. बाप को प्रत्यक्ष कौन करेंगे ?

जो स्वयं बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण होंगे। सम्पन्नता सम्पूर्णता का दर्पण है और सम्पन्नता, सन्तुष्टता का आधार है। सन्तुष्टता, सम्पन्नता का दर्पण है। हमारी सन्तुष्टता और प्रसन्नता ही परमात्मा पिता को प्रत्यक्ष करेगी।

‘‘बाप दादा देख रहे हैं कि मैजारिटी बच्चों के दिल में एक ही संकल्प है कि अभी जल्दी से जल्दी बाप को प्रत्यक्ष करें। ... लेकिन बाप को प्रत्यक्ष तब कर सकेंगे जब पहले अपने को बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण प्रत्यक्ष करेंगे।’’ अ.बापदादा 17.3.07

Q. बाबा को प्रत्यक्ष करने का आधार क्या है ?

स्व-परिवर्तन ही बाप को प्रत्यक्ष करने का आधार है। स्व-परिवर्तन अर्थात् स्वरूप में स्थिति

अर्थात् ज्ञान-स्वरूप स्थिति। बाबा ने कहा है - जब ज्ञान प्रत्यक्ष होगा तब ही ज्ञान-दाता प्रत्यक्ष होगा। स्व-परिवर्तन से ही विश्व परिवर्तन होगा। जब हम अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होंगे तो हमारी दृष्टि-वृत्ति, वायब्रेशन से अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित हो मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करेंगी, जो ही बाप को प्रत्यक्ष करने आधार है।

''पहले देहभान की वैराग्य वृत्ति, देह की बातों से वैराग्य वृत्ति, देह की भावना, भाव से वैराग्य वृत्ति चाहिए। ... श्रेष्ठ उन्नति तब होगी, जब वैराग्य वृत्ति का वायुमण्डल स्वयं में और सर्व में फैलायेंगे तब प्रत्यक्षता होगी। अभी तक प्रत्यक्षता नहीं हुई है, क्यों ? ... प्रत्यक्षता सहज नहीं हो सकती है। अभी चारो ओर बेहद की वैराग्य वृत्ति चाहिए। ब्रह्मा बाप को अन्त तक देखा कितनी बेहद की वैराग्य वृत्ति रही। अपनी देह से भी वैराग्य वृत्ति। बच्चों के सम्बन्ध से भी वैराग्य वृत्ति रही। तो लक्ष्य को लक्षण में लाना है।''

अ.बापदादा 18.1.08

मैं बोली दादियों सहित सबका यही संकल्प है कि परमात्म प्रत्यक्षता करनी ही है। बापदादा ने मीठा मुस्कराया और बोले - स्व-परिवर्तन का भी प्लेन हर एक ने दिल से बनाया ? ... बापदादा इन-एडवान्स सर्व बच्चों को स्व-परिवर्तन की पदमापदम गुणा मुबारक दे रहे हैं ... बापदादा अपने वरदानी हाथ से वरदान देते हुए बोले - बच्चे, ''सदा निमित्त भाव, निर्माण भावना, निर्मल वाणी द्वारा सहज सफलता भव''

अ.बापदादा 03.04.04 मधुर संदेश

Q. चाहते हुए भी स्व-परिवर्तन क्यों नहीं होता है ?

हद की आशायें, इच्छायें और परचिन्तन-परदर्शन। बाबा ने अनेक बार कहा है - इच्छायें अच्छा बनने नहीं देंगी, परदर्शन पतन की जड़ है।

''मैं बोली, बाबा सभी परिवर्तन चाहते परन्तु उमंग होते, सोचते भी क्यों नहीं कर पाते ? बापदादा मुस्कराते हुए बोले - बच्ची परिवर्तन की इच्छा होती है लेकिन साथ में चारो ओर की हद की इच्छायें कि मेरा नाम हो, मेरी शान हो, मेरा मान भी होगा वा नहीं ... यह तो नहीं हो जायेगा। ... बापदादा ने देखा है - विशेष कारण है एक-दो को देखना और एक-दो को हद की प्राप्ति में कापी करना अर्थात् फॉलो फादर के बजाये फॉलो एक-दो को करना। ... नॉलेजफुल ज्यादा हो जाते लेकिन पॉवरफुल होकर परिवर्तन नहीं कर पाते। ... सर्व बच्चों को पहले स्वयं में सम्पन्नता की प्रत्यक्षता करनी होगी, तब बाप की प्रत्यक्षता होगी।''

अ.बापदादा का सन्देश 30.03.04

Q. यथार्थ आध्यात्मिक ज्ञान क्या है ?

आत्मा-परमात्मा का, सृष्टि-चक्र का, कल्प-वृक्ष, कर्म सिद्धान्त का यथार्थ ज्ञान ही यथार्थ आध्यात्मिक ज्ञान है और उसकी धारणा ही यथार्थ आध्यात्मिकता है। यथार्थ आध्यात्मिक पुरुष परमात्मा ही है, वही इस ज्ञान का पूर्ण ज्ञाता और दाता है। उसके द्वारा दिये गये ज्ञान को समझकर उसकी धारणा करना आत्मा का काम है। यथार्थ आध्यात्मिक ज्ञान का समय संगमयुग ही है क्योंकि यथार्थ आध्यात्मिक ज्ञान ही सृष्टि-चक्र के परिवर्तन का आधार है।

''ज्यादा सोचना नहीं है, सोचने से निर्णय शक्ति कम हो जाती है। कितनी भी हलचल हो लेकिन संकल्प को एक सेकेण्ड में स्टॉप कर लो - यह प्रैक्टिस बहुत चाहिए। स्वभाव भी समय पर धोखा देता है। बहुत समय के अभ्यासी होंगे तब पास हो सकेंगे।''

अ.बापदादा 30.4.77

Q. लौकिक गीता में भी कुछ निम्नलिखित महावाक्य हैं, जिनका हमारे जीवन की सफलता से गहरा सम्बन्ध है और उनके विषय में बाबा ने भी ज्ञान दिया है परन्तु लौकिक गीता के महावाक्यों को पढ़ते-सुनते भी हमारी स्थिति वैसी क्यों नहीं बन पायी ?

जैसे - नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि ... मारुत:, न जायते ... हन्यते न हन्यमाने शरीरे, नष्टोमोहा-स्मृति लब्धा, मन्मना भव मध्याजी भव, जीवात्मा अपना आपही मित्र है और आपही अपना शत्रु है,

बाबा ने भी कहा है - आत्मा अजर-अमर-अविनाशी है, जन्म-मृत्यु सर्प के समान खाल बदलना है, नष्टोमोहा-स्मृति सवरूप बनो, मन मेरे में लगाओ,

ये सब ज्ञान ज्ञान की बातें प्रचलित गीता में भी लिखी हैं परन्तु आत्मा क्या है, शरीर में कहाँ रहती है, आत्मा कैसे अविनाशी है, उसमें कैसे अविनाशी पार्ट भरा हुआ है, जो पुनरावृत्त होता है, परमात्मा कौन है, क्या है, कब आते हैं, कैसे आते हैं, आकर क्या करते हैं, ये सृष्टि-चक्र का आदि-मध्य-अन्त क्या है, कैसे इसकी कलम लगती है, कैसे यह हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है, वर्तमान समय क्या है, कर्म-अकर्म-विकर्म की गति क्या है - इन सब बातों का यथार्थ और स्पष्ट ज्ञान अर्थात् इनके Facts Figures, Cause Effect सहित ज्ञान जो अभी परमात्मा ने दिया है, वह स्पष्ट न होने के कारण लौकिक गीता में भी उपर्युक्त महावाक्य सत्य होते भी उनके अनुसार जीवन नहीं बना सके, जो अभी परमात्मा ने ज्ञान दिया है, उससे हमारा जीवन बन रहा है।

Q. सत्य आध्यात्मिक ज्ञान की परख क्या है अर्थात् हमको जो ज्ञान मिला है, वही सत्य है, वह कैसे समझ सकते या किसको सिद्ध कर सकते हैं ?

1. आध्यात्मिक ज्ञान तर्क का विषय नहीं है और अन्धश्रद्धा से स्वीकार करने का विषय भी नहीं है, यह स्वचिन्तन और आत्मानुभूति का विषय है। यथार्थ ज्ञान का दाता ज्ञानसागर परमात्मा है। जो ज्ञान हमारे पास है या किसी मनुष्य के द्वारा दिया गया है और जो ज्ञान, ज्ञान सागर परमात्मा देता है, उसके विषय में निष्पक्ष भाव प्लस स्व-कल्याण की इच्छा से चिन्तन करने वाला ही यथार्थ निर्णय कर सकता है अर्थात् वही यथार्थ ज्ञान का फल आत्मानुभूति प्लस परमात्मानुभूति कर सकता है और आत्मानुभूति एवं परमात्मानुभूति वाला ही सम्पूर्णता और सम्पन्नता, आत्म-सन्तुष्टि का यथार्थ पुरुषार्थ कर सकता है। जिसको सम्पूर्णता प्लस सम्पन्नता प्लस आत्म-सन्तुष्टि की अनुभूति हो जाती है, उसकी और जानने की जिज्ञासा समाप्त हो जाती है और उसका सत्य ज्ञान से प्राप्त सुख का पुरुषार्थ चलने लगता है। वह स्वयं को अपने अभीष्ठ लक्ष्य की ओर बढ़ता हुआ अनुभव करता है।

सत्य ज्ञान वाला ही आत्मानुभूति और परमात्मानुभूति कर सकता है और वही ज्ञान सागर परमात्मा द्वारा इस विश्व-नाटक के सभी राज़ों अर्थात् विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान, कर्म-सिद्धान्त, योग का ज्ञान अर्थात् आत्मा के ऊपर विकर्मों और विकारों की खाद, लेपक्षेप, बोझा आदि खत्म करने का ज्ञान प्राप्त करके अपने अभीष्ठ लक्ष्य के लिए पुरुषार्थ करके सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता अर्थात् मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करने लगता है, जिससे उसकी सत्य ज्ञान प्राप्ति की जिज्ञासा समाप्त हो जाती है और यथार्थ ज्ञान को धारण कर मुक्ति-जीवनमुक्ति के अनुभव को स्थाई बनाने का पुरुषार्थ आरम्भ हो जाता है। वह इच्छामात्रम अविद्या की स्थिति को प्राप्त करके जीवन में सच्ची सुख-शान्ति का अनुभव करने का पुरुषार्थ करने लगता है। ये मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव होना ही सत्य ज्ञान की परख है।

2. सत्य ज्ञान से आत्मानुभूति होती है और आत्मानुभूति होने के कारण देहाभिमान अर्थात् अहंकार समाप्त होने लगता है और विश्व-प्रेम जाग्रत होने लगता है। इसीलिए संस्कृत में कहा गया है - विद्या ददाति विनयम् अर्थात् ज्ञानी पुरुष निर्मान होता है, अज्ञानी को अहंकार अधिक होता है। दुनिया में कहावत है - अध-जल गगरी छलकत जाये, भरी गगारिया चुपके जाये आदि आदि।

यथार्थ ज्ञान दृष्टि को आत्मिक बना देता है, भावना कल्याण की बना देता है, राग-द्वेष खत्म कर देता है। सत्य ज्ञान को सिद्ध करने में अहंकार नहीं आना चाहिए, तब ही सामने

वाला ज्ञान की सत्यता को अनुभव करेगा, स्वीकार करेगा।

3. लाभ-हानि, मान-अपमान, निन्दा-स्तुति, जय-पराजय में समान स्थिति अनुभव होने लगती है अर्थात् आत्मा अपने को विपरीत परिस्थिति में भी एकरस रखने में समर्थ होती है, जिससे वह विकर्मों से बच जाती है और उसकी सुकर्मों में प्रवृत्ति बढ़ जाती है। वह भी सत्य ज्ञान की धारणा को अनुभव करता है और दूसरे भी उससे वह अनुभूति करते हैं। सत्य ज्ञान एक अंकुश है, जो आत्मा को बुरे कर्मों से रोकता है और एक दिव्य प्रकाश के रूप में श्रेष्ठ कर्मों के लिए मार्ग-दर्शन करता है अर्थात् श्रेष्ठ कर्मों के लिए प्रेरित करता है।

4. सत्य ज्ञान अर्थात् जिससे देह भूल जाये, सहज अपने सत्य स्वरूप में स्थित हो जाये, परमशान्ति की अनुभूति हो, ज्ञान प्राप्ति के लिए इच्छामात्रम अविद्या की स्थिति हो, आत्म-कल्याण के लिए ज्ञान की जिज्ञासा समाप्त होकर आत्म-कल्याण का पुरुषार्थ आरम्भ हो जाये।

यथार्थ ज्ञान अर्थात् आत्मानुभूति + परमात्मानुभूति - जिज्ञासा - अहंकार - अज्ञानता = आत्म सन्तुष्टि = सम्पन्नता और भरपूरता की अनुभूति अर्थात् विकर्मों का खाता कम होना आरम्भ हो जाता, संस्कारों की अपवित्रता कम होकर, वह पवित्रता की ओर अग्रसर होने लगता।

5. सत्य ज्ञान की कसौटी - निश्चय करने के लिए अगर माध्यम सही है तो सत्य ज्ञान मन में कोई विरोधाभास (Contradiction) उत्पन्न नहीं करेगा, इसलिए आत्मा उसे सहज ग्रहण करेगी, उससे सदा सन्तुष्टि की अनुभूति होगी।

सत्य आध्यात्मिक ज्ञान आत्मा और विश्व की चढ़ती कला का आधार होता है। आत्मा को आत्मा के वास्तविक स्वरूप का अनुभव कराकर सच्ची सुख-शान्ति, पवित्रता, शक्ति की अनुभूति कराता है अर्थात् आत्मिक गुणों की अनुभूति और उनके विकास की अनुभूति कराता है।

ज्ञान की सत्यता-असत्यता का निर्णय वही कर सकता है, जिसको दोनों पक्षों का ज्ञान हो, उसकी स्थिति साक्षीदृष्टा अर्थात् वह लगावमुक्त हो। जिसकी बुद्धि में ये है कि हमारे पास जो ज्ञान है, वही सत्य है, सत्य आध्यात्मिक ज्ञान की सत्यता की अनुभूति कर नहीं सकता।

''सबसे बड़े से बड़ी शक्ति वा अथॉरिटी सत्यता की ही है। ... सत् अर्थात् सत्य और सत् अर्थात् अविनाशी। ... दुनिया में भी कहते हैं - सत्यम् शिवम् सुन्दरम्। साथ-साथ परमात्मा को सच्चिदानन्द स्वरूप भी कहते हैं। आत्माओं को सच्चिदानन्द स्वरूप कहते हैं।''

अ.बापदादा 20.3.87

''सत्य के लिए गायन है - सत्य की नाव डोलेगी लेकिन डूबेगी नहीं। आप लोग भी कहते हो - सच् तो बीठो नच। ... सत्यता की शक्ति वाला शक्तिशाली होगा, उसमें सामना करने की शक्ति होगी, इसलिए कब घबरायेगा नहीं।'' अ.बापदादा 20.3.87

''सत्यता वृद्धि को प्राप्त करने की विधि है। सत्यता की शक्ति से सतयुग बनाते हो, स्वयं भी सत्यनारायण बनते हो। ... सत्य ज्ञान है, सत्य बाप का ज्ञान है। इसलिए दुनिया से न्यारा और प्यारा है।'' अ.बापदादा 20.3.87

''सत्यता की शक्ति वाले विजयी अवश्य बनते हैं। सत्यता की प्राप्ति खुशी और निर्भयता है। ... सत्य ज्ञान, सत्य बाप, सत्य प्राप्ति, सत्य याद, सत्य गुण, सत्य शक्तियाँ सर्व प्राप्ति है। तो इतनी अथॉर्टी का नशा रहता है? ... सत्यता की अथॉरिटी वाले की वाणी में स्नेह और नम्रता होगी।'' अ.बापदादा 20.3.87

''सत्यता की अथॉरिटी वाले निरहंकारी होते हैं। तो अथॉरिटी भी हो, नशा भी हो और निरहंकारी भी हो। इसको कहते हैं सत्य ज्ञान का प्रत्यक्ष स्वरूप।''

अ.बापदादा 20.3.87

''निर्भयता की अथॉरिटी जरूर रखो। एक ही बाप का नया ज्ञान सत्य ज्ञान है और नये ज्ञान से नई दुनिया की स्थापना होती है, यह अथॉरिटी और नशा स्वरूप में इमर्ज हो। ... धरनी, नब्ज, समय यह सब देखकर ज्ञान देना - यही नॉलेजफुल की निशानी है।''

अ.बापदादा 20.3.87

''यह लक्ष्य जरूर रखो कि नई दुनिया का नया ज्ञान प्रत्यक्ष जरूर करना है। अभी स्नेह और शान्ति प्रत्यक्ष हुई है। बाप का प्यार के सागर का स्वरूप, शान्ति के सागर का स्वरूप प्रत्यक्ष किया है लेकिन ज्ञान स्वरूप आत्मा और ज्ञान सागर बाप है, यह प्रत्यक्ष कम हुआ है।''

अ.बापदादा 20.3.87

Q. यह कैसे कहा जा सकता कि इनमें भगवान आते हैं?

परमात्मा जो ज्ञान देते हैं तो उस ज्ञान की सत्यता परमात्मा के आने को सिद्ध करती है क्योंकि परमात्मा जो ज्ञान देते हैं, उससे अनेक अन्उत्तरित प्रश्नों का उत्तर मिल जाता है। जैसे सृष्टि की रचना का उत्तर, जिसको आज तक कोई नहीं दे सका है। और भी अनेक ऐसी बातें हैं, जिनका ज्ञान परमात्मा ने ब्रह्मा तन द्वारा दिया है, जो ब्रह्मा तन में परमात्मा की उपस्थिति अर्थात् प्रवेशता को सिद्ध करती है।

दूसरी बात - परमात्मा जब ब्रह्मा तन में प्रवेश करते हैं तो जो भी उनके सम्पर्क में आता है, वह अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करता है, जो स्वत: सिद्ध करता है कि ये परमात्मिक शक्ति है, उसको कहने की आवश्यकता नहीं होती, उसका अनुभव स्वत: उसको कहता है। ऐसे ही अनेक बातें हैं, जो ब्रह्मा तन में परमात्मा की प्रवेशता को सिद्ध करती हैं।

तीसरी बात - अनेक आत्माओं को अनेक प्रकार से दिव्य साक्षात्कार कराकर भी परमात्मा ने ब्रह्मा तन में उनकी प्रवेशता के राज़ को बताया है, उन आत्माओं का अनुभव भी ब्रह्मा तन में परमात्मा की प्रवेशता को सिद्ध करता है।

ऐसा ही अनुभव अभी भी जब अव्यक्त बापदादा गुल्जार दादी के तन में प्रवेश करते हैं, तो होता है। उनकी प्रवेशता से पहले और उनके जाने के बाद का वायब्रेशन और वातावरण से आत्मा परमात्मा की प्रवेशता को अनुभव करती है और कर सकती है परन्तु इसमें भावना और विवेक सन्तुलन अति आवश्यक है तथा आत्मा निष्पक्ष होकर इस सत्य को अनुभव करने का पुरुषार्थ करे।

''ड्रामा अनुसार पूरे टाइम पर आत्मा को जाना ही है। ड्रामा कितना एक्यूरेट है, इसमें कोई इन्एक्यूरेसी है नहीं। यह तुम जानते हो बाप भी ड्रामा अनुसार बिल्कुल एक्यूरेट टाइम पर आते हैं। एक सेकेण्ड का भी फर्क नहीं पड़ सकता है। यह कैसे मालूम पड़ता है कि इनमें बाप भगवान है। जब नॉलेज देते हैं। ... बाप ज्ञान का सागर नॉलेजफुल है। बाप नॉलेज में आप समान बनाते हैं।'' सा.बाबा 9.10.04 रिवा.

Q. यथार्थ आध्यात्मिक ज्ञान और उसकी धारणा की कसौटी (Test) क्या है?

नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप, बाप समान साक्षी स्थिति, अतीन्द्रिय सुखमय स्थिति, आत्मिक दृष्टि-वृत्ति, खोज खत्म हो जाना और बनने का सहज पुरुषार्थ होना, सन्तुष्टता का अनुभव होना।

Q. सारे ज्ञान का सार क्या है?

नष्टोमोहा-स्मृति स्वरूप हो जाना। नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप अर्थात् अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित हो परमानन्द का अनुभव करना क्योंकि आत्मिक स्वरूप परमानन्दमय है, परमात्मा परमानन्दमय है और ये विश्व-नाटकपरमानन्दमय है। ये संगमयुग का समय भी परमानन्दमय है। आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर परमानन्द का का अनुभव करना ही ज्ञान का सार है।

''तुमको कितनी अच्छी नॉलेज मिलती है। ... जिनकी बुद्धि में यह नॉलेज टपकती रहेगी, उनको अपार खुशी होगी। ... तुमको नॉलेज देने नॉलेजफुल बाप है, ... सदैव बुद्धि में यह

ज्ञान टपकता रहे तो तुम खुशी में रहेंगे, फिकर से फारिग हो जायेंगे।''

सा. बाबा 3.10.01 रिवा.

Q. गीता में है नष्टोमोहा-स्मृतिलब्धा, शिवबाबा ने भी कहा है - नष्टोमोहा और स्मृति स्वरूप बनो - तो किन-किन बातों से नष्टोमोहा बनना है और किन बातों में स्मृति-स्वरूप बनना है अर्थात किन-किन बातों की स्मृति जागृत रखनी है ?

स्मृति स्वरूप

अपनी देह से नष्टोमोहा और अपने आत्मिक स्वरूप की स्मृति,

दुनिया की वस्तु और व्यक्तियों से नष्टोमोहा और दूसरों को भी आत्मिक स्वरूप में देखना और सतयुगी दुनिया की स्मृति।

परमात्मा के स्वरूप, गुण-कर्तव्यों की स्मृति,

संगमयुग के समय और अपने संगमयुगी कर्तव्य की स्मृति,

संगमयुगी प्राप्तियों की स्मृति

अपने परमधाम घर की स्मृति,

सतयुगी दुनिया और सतयुगी स्वरूप की स्मृति

अपने पूज्य स्वरूप की स्मृति

अपने और विश्व-नाटक के अन्तिम समय की भी स्मृति,

विश्व-नाटक के आदि-मध्य-अन्त के ज्ञान की स्मृति,

बाबा ने कर्म के नियम-सिद्धान्तों का ज्ञान दिया है, उनकी भी स्मृति,

अपने श्रेष्ठ भाग्य की स्मृति,

विश्व-नाटक के ज्ञान की स्मृति,

सतयुगी दुनिया की स्मृति,

परमात्मा के द्वारा दिये गये वरदानों-स्वमानों के स्मृति स्वरूप,

अपने ईश्वरीय अधिकार और कर्तव्य के स्मृतिस्वरूप, ...

हम वानप्रस्थी हैं की स्मृति

नष्टोमोहा अर्थात्

इस पुरानी देह और पुरानी दुनिया से नष्टोमोहा

पुराने स्वभाव-संस्कार से नष्टोमोहा

पुराने सम्बन्धों से नष्टोमोहा

पुरानी दुनिया और दुनिया के पदार्थों से नष्टोमोहा

पुरानी दुनिया के पद, मान-शान से नष्टोमोहा

दैहिक अर्थात् भौतिक पदार्थों से नष्टोमोहा .....

ज्ञान के अहंकार से भी नष्टोमोहा

''समय की रफ्तार बहुत तीव्र गति से आगे बढ़ रही है। समय की गति को जानने वाले मास्टर सर्वशक्तिवान अपने को चेक करो कि हमारी गति तीव्र है ? ... तीव्र पुरुषार्थी के लक्षण विशेष दो हैं - एक है नष्टोमोहा और दूसरा है एवर-रेडी। सबसे पहले देहभान और देहाभिमान से नष्टोमोहा। जो इस देहभान और देहाभिमान से नष्टोमोहा है, उसके लिए और बातों में नष्टोमोहा होना मुश्किल नहीं है।''

अ.बापदादा 15.12.07

''देहभान की निशानी है - वेस्ट, व्यर्थ संकल्प, व्यर्थ समय - यह चेकिंग स्वयं ही अच्छी तरह से कर सकते हो। साधारण समय-संकल्प भी नष्टोमोहा होने नहीं देता। तो चेक करो - हर सेकेण्ड, हर संकल्प, हर कर्म सफल हुआ ? क्योंकि संगमयुग पर विशेष बाप का वरदान है - 'सफलता आपका जन्मसिद्ध अधिकार है', तो अधिकार सहज अनुभूति कराता है।''

अ.बापदादा 15.12.07

Q. परमानन्द अर्थात् योगानन्द और विषयानन्द दोनों का गायन है और दोनों में ही आनन्द शब्द आता है परन्तु एक से आत्मा मुक्त होना चाहती है और दूसरे में लीन होना चाहती है तो दोनों में क्या मूलभूत अन्तर है, जिसको जानने, समझने से आत्मा विषयानन्द से विमुक्त हो परमानन्द अर्थात् योगानन्द का गहन अनुभव सहज कर सकती है ?

योगानन्द आत्मा की चढ़ती कला का आधार है और उसका आधार परमात्मा और उसके द्वारा दिया गया आत्मा, परमात्मा और विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान है।

योगानन्द आत्मा ही आत्मा की चढ़ती कला का अर्थात् आत्मिक शक्ति के विकास का एकमात्र आधार है।

योगानन्द आत्मा को समस्त मानसिक-शारीरिक, सामाजिक व्याधियों से मुक्त करके इस विश्व को स्वर्ग बनाता है, जहाँ आत्मा को दैहिक, दैविक, भौतिक सभी प्रकार के सुख होते हैं। परस्पर सम्बन्धों में मधुरता होती है, आत्मा अमरत्व का अनुभव करती है।

योगानन्द से आत्मिक शक्ति बढ़ती है और जितना आत्मा उसमें गहरा जाती है, उसका अनुभव और गहरा होता जाता है।

योगानन्द भी एक अग्नि है, जिसमें आत्मा के विकर्मों का खाता भस्म होता है और आत्मा सच्चा सोना बन जाती है।

विषयानन्द का आधार यथार्थ ज्ञान की विस्मृति और देहाभिमान के वशीभूत हो आत्मा का देह और दैहिक आकर्षण है।

विषयानन्द आत्मा की उतरती कला और मृत्यु दुख का मूल कारण है, जिसके कारण ही यह विश्व स्वर्ग से नर्क और फिर रौरव नर्क बन जाता है।

विषयानन्द अनेक रोग-शोक, मानसिक, शारीरिक और सामाजिक व्याधियों का निमित्त कारण है, जिसके वशीभूत आत्मा अनेक प्रकार से दुख-अशानति का अनुभव करती है क्योंकि विषयानन्द से आत्मिक और शारीरिक शक्ति क्षीण होती है, परस्पर सम्बन्धों में कटुता आती है। विश्व-इतिहास को देखें तो इसके वशीभूत अनेक युद्ध हुए हैं, लाखों लोग जेलों में आजीवन कारावास भोग रहे हैं, अनेकों को मृत्यु-दण्ड भोगना पड़ा है, अस्पतालों में करोड़ो लोग असाध्य रोगों के ग्रसित असह्य पीड़ा को भोग रहे हैं। विषयानन्द के कारण अनेक जीवघात करते हैं, अनेक प्रकार से हत्यायें होती हैं।

विषयानन्द क्षणिक सुख है, जिसके बाद आत्मा उसको भोगने की अपनी शक्ति खो देती है। परन्तु विषयानन्द एक ऐसी अग्नि है, जो पुनः-पुनः प्रज्ज्वलित होकर आत्मा को जलाती रहती है और जीवात्मा मृत्यु के गाल में चली जाती है।

विषयानन्द एक साथ अनेक नहीं भोग सकते हैं परन्तु आत्मानन्द, परमानन्द, योगानन्द कितनी भी आत्मायें एक साथ अनुभव कर सकती हैं अर्थात् भोग सकते हैं। उसमें किसी का परस्पर द्वन्द नहीं होगा।

Q. सबसे श्रेष्ठ सुख क्या और क्यों है तथा सबसे निकृष्ट सुख क्या है और क्यों है ?

सबसे श्रेष्ठ सुख है योगानन्द, जो भोगने से वृद्धि को पाता है और सबसे निकृष्ट सुख है विषयानन्द, जो सबसे अधिक आत्मिक शक्ति को ह्रासित करता है और अजर-अमर आत्मा के मृत्यु-दुख का कारण बनता है।

Q. आध्यात्मिक शक्ति का स्वरूप क्या है ?

कर्म ही आत्मा की स्थिति का दर्पण है। कर्मों में श्रेष्ठता ही आध्यात्मिक शक्ति का दर्पण है। आध्यात्मिक शक्ति अर्थात् आत्मिक शक्ति। ये आत्मिक शक्ति सतयुग से लेकर कलियुग तक पार्ट बजाने के लिए आवश्यक है। इस आत्मिक शक्ति के आधार पर आत्मा जीवात्मा को किसी भी विकर्म करने से रोकती है। इस आध्यात्मिक शक्ति को जमा करने का समय अभी संगमयुग ही है। अभी परमात्मा हमको आत्मा, परमात्मा, सृष्टि-चक्र, कर्म के विधि-विधान का ज्ञान दिया है, जिसको आध्यात्मिक ज्ञान कहा जाता है अर्थात् ये आध्यात्मिक शक्ति है, जिसके आधार पर आत्मा सारे कल्प के लिए आत्मिक शक्ति जमा करती है।

Q. क्या हमारा ज्ञान मनोविज्ञान है ?

नहीं। हमारा ज्ञान आध्यात्मिक विज्ञान (Spiritual Science) है, मनोविज्ञान उसका एक अंश मात्र है क्योंकि मन आत्मा की एक शक्ति है। मन का आत्मा से अलग कोई अस्तित्व नहीं है जैसा कि मनोवैज्ञानिक मानते हैं। वर्तमान में मनोविज्ञान के रूप में जो पढ़ाई पढ़ाई जाती है, वह तो वास्तव में मनोविज्ञान भी नहीं है क्योंकि दुनिया में वे मन के यथार्थ अस्तित्व को ही नहीं समझते हैं। इस दुनिया में दो ही प्रकार की शक्तियां हैं। एक है आध्यात्मिक शक्ति और दूसरी भौतिक शक्ति। मनोविज्ञान जो अध्ययन करता है, मन की संकल्प शक्ति का स्थूल मस्तिष्क के सम्बन्ध से करता है परन्तु मस्तिष्क में मन कहाँ है, कैसे वह कार्य करता है, उसकी जानकारी नहीं है, जो अभी परमात्मा ने बताया है कि आत्मा भृकुटी में बैठकर मस्तिष्क के आधार से कार्य करती है।

Q. मनोविज्ञान और आध्यात्मिकता में क्या अन्तर है ?

मनोविज्ञान मन की स्वतन्त्र सत्ता मानकर उसका जीवन व्यवहार पर क्या प्रभाव पड़ता है, उसका अध्ययन करता है, जबकि आध्यात्मिकता आत्मा की प्रभु-सत्ता स्वीकार करती है और मन आत्मा की एक शक्ति है, उसका अपना कोई स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं है। इस सत्य का स्पष्ट ज्ञान आध्यात्मिकता के मूल स्रोत, ज्ञान सागर परमपिता परमात्मा ने दिया है। मन आत्मा से अलग कोई चीज नहीं है। मनोविज्ञान आत्मा के अस्तित्व के विषय में कुछ भी स्पष्ट करने में असमर्थ है।

Q. क्या ये कहा जा सकता है कि हमारे जैसा ही ज्ञान दूसरे धर्मशास्त्रों, धर्मों में भी है या हमारा ज्ञान भी दूसरे धर्मों, धर्मशास्त्रों जैसा है ?

नहीं। हमारा ये ज्ञान परमात्मा के द्वारा दिया गया है, जो ज्ञानसागर, सर्वज्ञ हैं, जो आत्मा की चढ़ती कला का आधार है जबकि और सभी ज्ञान अल्पज्ञ आत्माओं के द्वारा दिया गया है, जो आत्मा की उतरती कला का कारण है तो हमारे ज्ञान की दूसरे ज्ञान के साथ समानता कैसे हो सकती है। दोनों ज्ञानो को समान मानना यथार्थ समझ की कमी है। हमको परमात्म ने आत्मा, परमात्मा, सृष्टि-चक्र, कल्प-वृक्ष, कर्मों का जो ज्ञान दिया है और श्रेष्ठ कर्मों की शक्ति प्राप्त करने का साधन जो योग सिखाया है, इन सब बातों को यथार्थ रीति से समझकर, किसी धर्म-शास्त्र, धर्म, मठ-सम्प्रदाय के शास्त्र को पढ़कर देखें, उनके सतसंगों में जाकर देखें और उससे मिलायें और देखें कि इन सब बातों के विषय में स्पष्ट ज्ञान कहाँ पर है? एक आत्मा के विषय में भी कहाँ पर स्पष्ट ज्ञान नहीं है। आज तक सारा जगत अर्थात् धर्म-सत्ता वाले, साइन्स सत्ता वाले सृष्टि की रचना की पहेली को हल नहीं कर पाये, जो बाबा ने हमको सहज ही बताया है। इस प्रकार हम अपने को परमात्मा द्वारा ज्ञान मिला है, उसके महत्व को जाने और ऐसा कर्तव्य करें, जिससे अन्य भी उसके महत्व को अनुभव करें।

भारत और भगवान

''भारत ही सबसे अधिक पावन और भारत ही सबसे अधिक पतित बनता हे। पावन भारत को ही सुखधाम कहा जाता है। और कोई खण्ड को सुखधाम नहीं कहेंगे। भारत ही सुखधाम और भारत ही दुखधाम बनता है। जब बिल्कुल दुखधाम बन जाता है, तब फिर बाप आकर सुखधाम बनाते हैं।''

सा.बाबा 8.5.08 रिवा.

''भारत जितना दुखी और कोई देश नहीं है। भारत जितना सुखी भी और कोई देश हो नहीं सकता। ... यह तुम्हारा अमूल्य जीवन है। तुम पवित्र बनकर भारत को स्वर्ग बना देते हो। ... जो पवित्रता की अगुली देते हैं, मन्मनाभव रहते हैं, वे ही बाप के मददगार हैं।''

सा.बाबा 8.5.08 रिवा.

भारत और भगवान का क्या सम्बन्ध है, भारत-भूमि क्या है, उसमें क्या विशेषतायें हैं, भारत का इतिहास और भूगोल (History and Geography) क्या है, उसका विश्व के इतिहास और भूगोल से क्या सम्बन्ध है, विश्व के उत्थान और पतन में भारत की क्या भूमिका है, इस सब विषयों के विषय यथार्थ ज्ञान होगा तब ही हम इस बात का अनुभव करेंगे कि भारत भूमि में जन्म लेना कितना बड़ा स्वमान है, उस स्वमान और स्वाभिमान को स्मृति में रखकर हम

कर्तव्य करेंगे तो वे हमारे लिए और विश्व के लिए कल्याणकारी होंगे क्योंकि भगवान भारत में आये हैं और भारत से सारे विश्व का कल्याण कर रहे हैं, हम उनके बच्चे हैं तो उनके साथ हमारा भी कर्तव्य है कि हम उस कर्तव्य में सहयोग करें।

Q. क्या भारत या विश्व प्रजातन्त्र में सुखी-शान्त रहा है और रह सकता है?

Q. विश्व और भारत राजशाही में सुखी, शान्त और समृद्ध होता है या प्रजातन्त्र में? यथार्थ राजतन्त्र क्या है?

नहीं। क्योंकि प्रजातन्त्र तो कलियुग के अन्त की राज्य-व्यवस्था है। परमपिता परमात्मा ने कल्प के आदि में विश्व में राजाई की स्थापना की थी, जहाँ धर्म और राज्य सत्ता एक के हाथ में थी, उस राजशाही में सब सुखी थे। उस राजशाही में ही ये विश्व स्वर्ग था, जिसकी सुख-शान्ति की महिमा सभी धर्म और ग्रन्थों में है। उस राजशाही का केन्द्र-बिन्दु भारत था अर्थात् चक्रवर्ती राजाई वर्तमान भारत में ही थी। वास्तव में उस समय सारा विश्व ही भारत था, कोई विभाजन नहीं था, जिससे किन्हीं देशों और खण्डो का नामकरण नहीं था। हाँ, उस समय कई अन्य राजाइयाँ भी थी परन्तु वे सब एक ही चक्रवर्ती राजा के झण्डे के नीचे चलती थी। प्रजातन्त्र तो कलियुग की प्रथा है, जो थोड़े समय के लिए विश्व में आई है और शीघ्र ही समाप्त होने वाली है।।

राजशाही ही यथार्थ राजतन्त्र है। परमात्मा कल्पान्त में आकर विश्व में राजाई स्थापन करते हैं, जो उत्तरोत्तर गिरते-गिरते कलियुग के अन्त में प्रजातन्त्र हो जाता है। कलियुग के अन्त में प्राय: विश्व के सभी देशों में प्रजातन्त्र ही है या नाममात्र राजशाही है, जो तमोप्रधान राजतन्त्र है। भारत भी राजशाही में ही सम्पन्न होता है। सतयुग-त्रेता में भारत में देवी-देवताओं की राजाई थी, जो भारत का और समस्त विश्व का स्वर्णिम युग था परन्तु विचारणीय बात ये है कि वहाँ राजा-प्रजा में पिता-पुत्र के समान सम्बन्ध था अर्थात् राजा प्रजा को अपने पुत्र के समान सुखी-समृद्ध देखना चाहते थे और प्रजा भी राजा का अपने पिता के समान सम्मान करती थी।

''यह है राजाई प्राप्त करने का इम्तहान, जो परमात्मा के सिवाए कोई पढ़ा न सके।... गाया हुआ है - मैं तुमको राजाओं का राजा बनाता हूँ।''

सा.बाबा 4.9.06 रिवा.

''परिस्तान देहली को ही कहा जाता हा। बड़ी गद्दी देहली ही होगी। ... यह दैवी राजधानी स्थापन हो रही है। ... पार्ट तो जरूर बजाना ही है। जैसे ड्रामा में कल्प पहले पार्ट बजाया है, वैसे ही बजायेंगे। भारतवासी ही राज्य करते थे। भारतवासी ही देवी-देवता धर्म वाले हैं।''

सा.बाबा 5.9.06 रिवा.

‘‘विश्व के मालिक तो भविष्य में बनेंगे लेकिन बाप के सर्व ख़ज़ानों के मालिक अभी हो। विश्व राज्य-अधिकारी तो भविष्य में बनेंगे लेकिन स्वराज्य अधिकारी अभी हो। इसलिए बालक भी हो और मालिक भी हो।’’ अ.बापदादा 9.1.96

‘‘विदेश को भी भारत में ही समा जाना है। विश्व एक हो जायेगी। ... भारत वालों को भी खुशी होती है और आप लोगों को भी खुशी होती है। ... स्थापना की सेवा भी दिल्ली में जमुना घाट पर हुई और राज्य भी जमुना घाट पर करना है।’’

अ.बापदादा 9.1.96

‘‘सारे कल्प में राजा बनने की पढ़ाई कोई नहीं पढ़ता। ... अभी स्वराज्य मिला है, फिर विश्व का राज्य मिलेगा। ... सतयुग में प्रजा का प्रजा पर राज्य नहीं होगा, राजा का राज्य होगा। यह तो चक्र के अन्त में प्रजा का प्रजा पर राज्य है।’’

अ.बापदादा 6.1.90 पार्टी 2

Q. भारतीय सभ्यता और भारतवासियों में इतनी सहिष्शुणता, दया-भाव, दान-भावना, त्याग क्यों है, जो अन्य धर्मों और सभ्यताओं में देखने में नहीं आता है?

उदाहरणार्थ द्वापर के अन्त और कलियुग के आदि में भी अन्तिम हिन्दू राजा पृथ्वीराज चौहान ने अफगानिस्तान के मुसलमान आक्रमणकारी शासक मोहम्मद गोरी को 16 बार हराने और कैद करने के बाद क्षमादान दिया, जबकि मोहम्मद गोरी ने एक ही बार पृथ्वीराज को हराया और कैद करके उसकी आंखे फोड़ दी, फिर भी पृथ्वीराज ने अपनी वीरता का कैसे परिचय दिया, वह तो इतिहास गवाह है और उसको सभी जानते हैं। इसके अतिरिक्त महाराणा प्रताप, शिवाजी आदि के भी अन्य धर्मों के प्रति धर्मनिष्टा के अनेक उदाहरण हैं। ब्रह्मा बाबा ने भी सर्व धर्म की आत्माओं के कल्याणार्थ आदि से ही आवाह्न किया, निर्भयता से देश के विभाजन के समय और बाद में भी मुसलमानों का दिल जीतकर पाकिस्तान में रहे। विभाजन के बाद देश का जो संविधान बना, वह धर्म-निर्पेक्ष बनाया।

हम भारतवासी परमात्मा, जो सर्व आत्माओं के पिता हैं, उनके प्रत्यक्ष में बच्चे बने हैं। परमात्मा ने आत्मा, परमात्मा, सृष्टि-चक्र, कर्मों का ज्ञान कूट-कूट कर हमारे में भरा है। कल्प-वृक्ष में हम सारे वृक्ष के आदि पूर्वज हैं, वे पूर्वजपन के संस्कार भी परमात्मा ने हमारे में कूट-कूट कर भरे हैं, परमात्मा ने हमारे में सर्व आत्माओं के प्रति भाई-भाई की भावना जाग्रत की है, जो भारतीय सभ्यता का प्राण है। इस प्रभु-पालना और परमात्मा की डायरेक्ट सन्तान होने से हमारे संस्कारों में प्रेम, दया, करुणा भरी है, उससे मनुष्य तो क्या प्राणीमात्र के प्रति सहानुभूति रहती ही है और यह हमारा अविनाशी संस्कार बन गया है, जो सारे कल्प काम

करता है।

Q. भारत पर विभिन्न सभ्यताओं और देशों ने राज्य किया है, तो क्या हमारा दृष्टिकोण उनके प्रति शत्रुता या घृणा का होना चाहिए ? क्या उनका वह राज्य करना अनाधिकार था ?

यथार्थ ज्ञानी आत्मा किसी से भी शत्रुता, घृणा आदि नहीं कर सकती है क्योंकि हर आत्मा इस विश्व-नाटक में अपना अनादि-अविनाशी पार्ट बजाती है, इसलिए किसी पार्टधारी के प्रति शत्रुता, घृणा का तो प्रश्न ही नहीं है।

दूसरी बात भारत परमात्मा का जन्म-स्थान है और वह भारत में स्वर्ग स्थापन करता है। परमात्मा सर्वात्माओं का परमपिता है तो पिता की सम्पत्ति पर तो सभी को अधिकार होता ही है। इसलिए जाने-अन्जाने प्रायः सभी मुख्य धर्म वालों ने भारत पर राज्य किया है, भारत की प्रचुर सम्पत्ति पर उनकी निगाह रही है। आध्यात्मिक दृष्टि से देखें तो ड्रामानुसार उसको भी अनाधिकार नहीं कहा जा सकता है। वह भी उनका अधिकार था और ड्रामा में पार्ट था। यदि अनाधिकार कहेंगे तो उनके प्रति घृणा, शत्रुता होना स्वभाविक है। बाबा ने अभी हमको यथार्थ ज्ञान दिया है और अब उस सम्पत्ति पर हमारा अधिकार है, जो परमात्मा ज्ञान-योग से हमको दे रहा है, जिस ज्ञान-योग से हम भविष्य में स्वर्ग के मालिक बनेंगे। ये ज्ञान-योग की सम्पत्ति भी सर्व आत्माओं को अर्थात् अपने सर्व भाई-बहनों को बांटना हमारा परम कर्तव्य है, जो परमात्मा अभी हमसे करा रहे हैं।

Q. क्या अन्त समय विनाश होगा तो सारे संसार का सोना-चांदी, हीरे-जवाहर भारत में आकर एकत्रित हो जायेंगे या क्या होगा ?

ऐसा नहीं कि सारे विश्व का सोना-चांदी या अन्य भूगर्भ सम्पदा वर्तमान भारत में आकर एकत्रित हो जायेगी। अन्य भूखण्डों में भी सोना-चांदी, हीरे-जवाहर रहेंगे, जो वहाँ जब जनसंख्या का विस्तार होगा, सभ्यता का विकास होगा, तब निकलेंगे परन्तु अधिकांश भाग किसी न किसी रूप में भारत और भारत के आसपास के भूभागों में आकर एकत्रित हो जायेगा। भारत का भी विस्तार सुदूर पूर्व-पश्चित-उत्तर तक होगा।

Q. स्वर्ग भारत में ही होता है, इसका अर्थ क्या है ?

जब दुनिया में स्वर्ग होता है तब विश्व में धर्म और देश के आधार पर कोई विभाजन नहीं होता है, इसलिए सारी दुनिया ही एक होती है और सारे विश्व का राज्य एक चक्रवर्ती राजा के अधीन होता है, जिसकी राजधानी इन्द्रप्रस्त अर्थात् दिल्ली होती है, जो वर्तमान भारत में है। स्वर्ग की आदि वर्तमान भारत और इसके आसपास के क्षेत्र से ही होती है, जो त्रेता के अन्त

तक मिस्त्र, यूनान, मध्येशिया के उत्तरी भूभाग और वर्तमान चीज के दक्षिणी भूभाग तक विस्तार को पाता है अर्थात् यहाँ तक स्वर्ग होता है। इस प्रकार हम देखें तो स्वर्ग की आदि भारत से होती है और स्वर्ग अपने अन्तिम चरण में यहाँ तक विस्तार को पाता है।

''तुम समझाते हो स्वर्ग भी इस भारत में था, नर्क भी यहाँ है तो यह अक्षर वह लोग पकड़ कर कह देते स्वर्ग-नर्क यहाँ ही है।'' सा.बाबा 7.10.71 रिवा.

''भगवान सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का राज़ बताकर गया है, इसलिए भगत गाते हैं ... तुम्हारी दिल से लगता है बरोबर यह वही भक्तों का रक्षक भगवान है, जो कल्प-कल्प भारत में आकर जन्म लेते हैं, इनका अलौकिक जन्म गाया हुआ है। भारतवासियों को आकर पतित से पावन बनाते हैं।'' सा.बाबा 24.12.07 रिवा.

''सतयुग में प्रालब्ध भोगते हैं। वहाँ बाप को याद करने की कोई दरकार ही नहीं है। दुनिया वालों को पता नहीं कि भारतवासियों को बाप से प्रालब्ध मिलती है।... जितना मुझ बाप को याद करेंगे, उतना खाता जमा होगा। याद से ही पुराना विकारी खाता भस्म होता जायेगा।''

सा.बाबा 9.6.08 रिवा.

Q. भारत की सीमायें कब कैसी होंगी, भारत के उत्थान-पतन अर्थात् उत्कर्ष-अपकर्ष की कहानी कब कैसी रही और रहेगी ?

बृहत भारत - यद्यपि सतयुग से त्रेता के अन्त तक सारा ही विश्व एक था, जिसकी राजधानी इन्द्रप्रस्थ थी और आवासीय सीमायें सम्पूर्ण एशिया, पूर्वी-दक्षिणी योरोप, उत्तरी अफ्रीका तक विस्तृत थी अर्थात् त्रेता के अन्त और द्वापर के आदि में भारत की आवासीय सीमायें अपने विस्तार की चरम सीमा पर थी, जिसका द्वापर से विघटन आरम्भ हुआ और भारत का संकुचन आरम्भ हो गया। उस समय तक किसी देश का कोई नामकरण नहीं हुआ था।

संकुचित भारत - द्वापर से भारत का विघटन आरम्भ हुआ और कलियुग के अन्त में भारत के विघटन से पाकिस्तान बनने के बाद अपने सबसे संकुचित स्वरूप में आ गया।

भारत का उत्कर्ष - प्रथम लक्ष्मी-नारायण के सिंहासनारोहण के समय क्योंकि उसके बाद विश्व की उतरती कला आरम्भ हो गई और उत्तरोत्तर कलायें गिरती गई।

भारत का अपकर्ष - कलायें गिरते-गिरते भारत में आध्यात्मिक और राजनैतिक परतन्त्रता आई और 1936 से 1947 परमात्मा के अवतरण के बाद भी राजनैतिक दृष्टि से भी परतन्त्र और आध्यात्मिक दृष्टि से भी परतन्त्र रहा।

भारत के अपकर्ष से उत्कर्ष की यात्रा - परमात्मा का अवतरण तो 1936 में भारत में हुआ

अर्थात् भारत पर बृहस्पति की दशा आई परन्तु 1950 तक परमात्मा का कर्तव्य वर्तमान पाकिस्तान में चला, 1950 से परमात्मा का कर्तव्य वर्तमान भारत में चल रहा है और भारत पर बृहस्पति की दशा है। वृक्षपति परमात्मा के दिशा-निर्देश में भारत उत्तरोत्तर अपने उत्कर्ष की दिशा में अग्रसर है।

''तुम जानते हो - भारत में ही देवी-देवताओं का राज्य होता है। भारत ही प्राचीन अर्थात् पुराने से पुराना खण्ड है। ... भारत में लक्ष्मी-नारायण का राज्य था, तब यह भारत नया था, उस समय सिर्फ भारत खण्ड ही था।'' सा.बाबा 1.4.08 रिवा.

''सन्यासी पवित्रता की मदद से भारत को थमाते हैं। भारत जैसा सुखी पवित्र खण्ड और कोई होता नहीं है। ऊंचे ते ऊंचा भारत खण्ड ही गाया जाता है। फिर से भारत को नया बाप ही बनाते हैं। ... अब ड्रामा अनुसार फिर से भारत पुराना बना है।''

सा.बाबा 1.4.08 रिवा.

''भारत है शिवबाबा का बर्थ प्लेस। सोमनाथ का मन्दिर भी यहाँ है। मनुष्य यह भूल गये हैं कि भारत बड़ा तीर्थ है। ... भारत में ही बाप अवतार लेते हैं। ... तुम बच्चों को पुरानी दुनिया को भूलकर एक बाप को ही याद करना है। इस योग अग्नि से ही तुम्हारे पाप कट जायेंगे।''

सा.बाबा 1.4.08 रिवा.

Q. द्वापर के बाद भी आत्मायें आती रहती हैं, जो हिन्दू कहलाती हैं, उनको किस धर्म कहा जायेगा क्योंकि वे देवता धर्म में तो आते नहीं हैं और हिन्दू कोई धर्म है नही ?

बाद में भी कुछ आत्मायें परमधाम से आती हैं, जो हिन्दुओं के यहाँ जन्म लेती हैं और अपने को हिन्दू कहलाते हैं। ऐसी आत्मायें प्राय: छोटे-छोटे मठ-पंथों की होती हैं परन्तु उनकी अलग से किसी धर्म के रूप में पहचान नहीं होती है, इसलिए वे अपने को हिन्दू कहलाते हैं और अपने को उसी धर्म का मानते हैं।

''ऐसे भी नहीं कि सारी दुनिया स्वर्ग में जायेगी। जो कल्प पहले स्वर्ग में आये थे, वे ही भारतवासी फिर आयेंगे और सतयुग-त्रेता में देवता बनेंगे। वे ही फिर द्वापर से अपने को हिन्दू कहलायेंगे। यूँ तो हिन्दू धर्म में अब तक भी जो आत्मायें ऊपर से उतरती रहती हैं, वे भी अपने को हिन्दू कहलाती हैं लेकिन वे देवता नहीं बनेंगी और न ही स्वर्ग में आयेंगी। वे फिर भी द्वापर के बाद अपने समय पर ही उतरेंगी। देवता तुम ही बनते हो, जिनका आदि से अन्त तक पार्ट है। यह भी ड्रामा में बड़ी युक्ति है।''

सा.बाबा 15.9.04 रिवा.

Q. पुरानी दुनिया के विनाश के अन्तिम लड़ाई होती है, उसको महाभारत लड़ाई क्यों कहा जाता है, भारत से उसका क्या सम्बन्ध है?

इस लड़ाई के बाद ही भारत महान बनता है अर्थात् सब धर्म की आत्मायें परमधाम चली जाती हैं और विश्व के अनेक खण्डों का जल-मग्न होने के कारण नाम-निशान मिट जाता है। सारे विश्व में और किसी खण्ड या देश में जनसंख्या नहीं रहती है। जो जनसंख्या रहती है, वह वर्तमान भारत के आसपास ही रहती है और उसकी राजधानी वर्तमान दिल्ली के आसपास होती है। इस प्रकार सारे विश्व की बागडोर भारत के हाथ में आ जाती है। इसलिए इसको महाभारत लड़ाई कहा जाता है। इस लड़ाई के बाद ही भारत अर्थात् सारा विश्व स्वर्ग बन जाता है।

''विनाश सामने खड़ा है। इस महाभारी महाभारत लड़ाई द्वारा ही सुखधाम-शान्तिधाम के गेट्स खुलने वाले हैं। ... भारत सिरताज था, जो अभी कंगाल बना है। फिर सिरताज बन रहा है। यह वही लड़ाई है, जो 5000 वर्ष पहले लगी थी, जिससे भारत स्वर्ग बना था।''

सा.बाबा 1.4.08 रिवा.

''भारत सदा सुखी था, फिर से भारत को सदा सुखी बनाना बाप का ही काम है। भारत शिवालय था।... प्योरिटी थी तो पीस और प्रॉस्पेरिटी थी। सन्यासी भी भारत को मदद देने के लिए सन्यास करते हैं कि पवित्रता की ताकत मिले।''

सा.बाबा 1.4.08 रिवा.

अभी परमपिता परमात्मा सर्व आत्माओं का कल्याण कर रहे हैं और ये कल्याण का कार्य और सन्देश भारत से ही सारे विश्व में फैला रहे हैं, सर्व आत्माओं को सन्देश देने के लिए बच्चों को प्रेरित कर रहे हैं, सारे विश्व में सन्देश वाहकों को भेजा है, जिसके आधार पर विनाश के बाद सारा विश्व ही भारत बन जाता है।

एडवान्स पार्टी और एडवान्स जन्म एवं दादी जी

''दादी के 12 दिन समाप्त हो रहे हैं, दादी को साकार वतन में विशेष न्यारा और प्यारा इसेन्शियल कार्य के लिए निमित्तमात्र पार्ट बजाना पड़ रहा है। लेकिन दादी का जन्म और कार्य अति न्यारा है, वह फिर आकर विस्तार से सुनायेंगे। बापदादा को भी ड्रामा का नूँधा हुआ पार्ट बजाना पड़ता है और बजवाना पड़ता है।'' अ.बापदादा 6.9.07

''दादी बाबा को देखकर बहुत मीठा मुस्कराई और कहा - बाबा आपने क्या खेल रचाया है ? ... तो बाबा ने कहा मैंने खेल नहीं रचाया, बने हुए अनादि खेल में मैं भी खेल रहा हूँ, आप भी खेल रही हो।'' 6.9.07 वतन का सन्देश

पाँच तत्व, एडवान्स पार्टी, ब्राह्मण परिवार और देवतायें ... मम्मा और दीदी ने मिलकर दादी को ताज पहनाया। वह ताज भी लाइट का था ... फिर बाबा ने कहा - ओ मेरे वफादार, फरमानवरदार, ईमानदार, सुपात्र और सबूत देने वाले बच्चे, बाबा ने आपको इनाम दिया है कि आप कहाँ भी रहेंगी तो वतन में आती-जाती रहेंगी। तो दादी ने कहा - बाबा, यही इनाम मुझे चाहिए। ... बाबा ने कहा - बच्ची न वतन छोड़ना और न मधुबन को छोड़ना।

6.9.07 वतन का सन्देश

Q. बापदादा ने दादी को कौनसा राज़ बताया होगा, जिससे जन्म लेने का संकल्प न होते हुए भी दादी खुशी से जन्म लेने को राज़ी हो गई ?

बाबा ने कुछ महत्वपूर्ण कार्य, जो अभी सम्पन्न करने हैं, जिनके लिए दादी जी की विशेष आवश्यकता है अर्थात् दादी जी उनको करने में और करवाने में समर्थ हैं, उनके विषय में बाबा ने दादी जी को बताया होगा, इसलिए दादी जी कार्य के महत्व को जानकर बाबा के कहने पर जन्म लेने के लिए राज़ी हो गई होगी। स्वर्ग की स्थापना में जो कार्य रहे हुए हैं, उनके विषय में विचार करें तो निम्नलिखित कुछ आवश्यक कार्य रहे हुए हैं, जिनके विषय में बाबा ने अवश्य ही दादी जी को बताया होगा।

1. एडवान्स पार्टी वालों को भी वातावरण और साधन-सुविधायें वर्तमान जीवन अर्थात ब्राह्मणों से श्रेष्ठ ही मिलेंगी क्योंकि वे चढ़ती कला में ही जायेंगे भले ही उनको वहाँ ये स्पष्ट ज्ञान नहीं होगा परन्तु उनको बापदादा की मदद अवश्य मिलेगी अर्थात् एडवान्स पार्टी का जन्म भी चढ़ती कला का ही जन्म है, जो स्वर्ग की स्थापना में अति आवश्यक है।

2. विश्व-नाटक में सारे कल्प जन्म लेना और देह का त्याग करना ही पड़ता है, उससे कोई आत्मा छूट नहीं सकती है, तो फिर अभी जन्म लेने में क्यों घबराना है। जन्म लेना और छोड़ना

तो इस विश्व-नाटक का अभिन्न अंग है और अपरिहार्य है।

3. एडवान्स पार्टी वालों का जन्म भी कलियुगी मनुष्यों के सदृश्य नहीं होगा परन्तु उससे कुछ भिन्न ही होगा अर्थात् उनको जन्म देने वाले परिवार बहुत विकारी नहीं होंगे। नाममात्र सन्तानोत्पत्ति के लिए ही विकार में जायेंगे, जैसे द्वापर के आदि में जाते थे। उनके माता-पिता धार्मिक प्रवृत्ति के होंगे और उनके जन्म लेने से वे ज्ञान में आ सकते हैं और इस ज्ञान यज्ञ में सहयोगी बन सकते हैं परन्तु एडवान्स पार्टी वाले ज्ञान में नहीं आयेंगे, वे भविष्य के विश्व नव-निर्माण के कार्य में तन-मन-धन से सहयोगी रहेंगे।

4. एडवान्स पार्टी वाले ही सतयुग के आदि में जन्म देने वाली आत्माओं को योगबल से जन्म देने के निमित्त बनेंगे और अन्य आत्माओं को बनायेंगे, इसलिए वे ही योगबल से जन्म देने के विधि-विधान का अविष्कार करेंगे, जो नये विश्व के नव-निर्माण की एक महत्वपूर्ण घटना है, जो इस नर्क-स्वर्ग का भेद स्पष्ट करती है।

5. साइन्स वाले विनाश की तैयारी तो कर रहे हैं परन्तु उनको जब ये ज्ञान होगा, जागृति होगी कि भविष्य नई दुनिया स्वर्ग होगा तो उसके लिए भी तैयारी करेंगे, उनको यह प्रेरणा देने वाले भी एडवान्स पार्टी वाले ही होंगे।

यज्ञ की स्थापना के समय के जो बहनें-भाई एडवान्स पार्टी में गये, वे सब मिलते हैं लेकिन ये पहचान नहीं है ... बाबा ने कहा जैसे आपने वहाँ स्थापना की, ऐसे सतयुग की रचना के निमित्त भी आपको बनना है। ... वतन में मिलते हैं तो यह स्मृति आती है कि हमको स्थापना के निमित्त बनना है। परन्तु वहाँ साकार में रहते यह स्मृति नहीं रहती।

अ.बापदादा का सन्देश 27.12.07

''एडवान्स पार्टी वाले भी अपने-अपने पुरुषार्थ की प्रालब्ध प्रमाण भिन्न-भिन्न पार्ट बजा रहे हैं। ... वे भी आप लोगों का आवाह्न कर रहे हैं कि सम्पूर्ण बन दिव्य जन्म द्वारा नई सृष्टि के निमित्त बनो। उनमें दिव्यता है, पवित्रता है, परमात्म लगन है लेकिन ज्ञान क्लीयर इमर्ज नहीं है। यह स्मृति नहीं है कि हम संगमयुग से आये हैं। अगर ज्ञान इमर्ज हो जाये तो सभी भागकर मधुवन में आ जायें। ... ज्ञान की शक्ति है, शक्ति कम नहीं हुई है। ... महसूस करते हैं कि हमारा पूर्व जन्म और पुनर्जन्म महान रहा है और रहेगा।''

अ.बापदादा 19.3.2000

6. ब्राह्मण परिवार की भी वृद्धि तो होनी ही है और उसमें नियम-संयम अलबेले न हो जायें, उसकी प्रेरणा देने वाले या सहयोग करने वाले एडवान्स पार्टी वाले होंगे। इसलिए ब्राह्मण

परिवार की वृद्धि के लिए भी एडवान्स पार्टी वाले निमित्त बनेंगे, भले वे स्वयं ज्ञान में न आयें परन्तु उनको देखकर अन्य ज्ञान में आयेंगे।

7. सतयुग की आदि की जनसंख्या 9,16,108 को जन्म देने के लिए एडवान्स पार्टी वाले और उनके सम्बन्ध-सम्पर्क से सहयोगी बनने वाले ही होंगे। सतयुग की आदि की जनसंख्या यदि एक युगल एक बच्चा और एक बच्ची को जन्म दें तो भी उनकी संख्या कम से कम 9,16,108 तो होनी ही चाहिए। इसलिए एडवान्स पार्टी में अनेक आत्माओं को जन्म लेना ही पड़ेगा, तब ही स्वर्ग की स्थापना का कार्य सम्पूर्ण और सम्पन्न होगा

8. सूक्ष्म वतन में रहकर सेवा करने का पार्ट एक ब्रह्मा बाप का ही है क्योंकि वे ही शिवबाबा के माध्यम हैं। इसलिए एक ब्रह्मा का आदि से सूक्ष्म में साक्षात्कार होता रहा है अन्य किसी भी आत्मा का नहीं। परमधाम का गेट भी शिवबाबा के साथ ब्रह्मा बाबा को ही खोलना है, उनके पहले कोई आत्मा परमधाम केसे जा सकती है। इसलिए एडवान्स में जन्म लेना ही होगा।

9. एडवान्स पार्टी वालों का जन्म भी कर्म-बन्धन का नहीं कहेंगे, कर्म-सम्बन्ध का ही कहेंगे। कर्म-बन्धन तो सेवा के लिए नाममात्र ही होगा।

10. बापदादा ने दादी को अवश्य कहा होगा कि यदि आपको बाबा वतन में रखता है तो ब्राह्मण आत्मायें, जिनको आपसे अति प्यार है, वे आपको ही याद करने लगेंगी और शिवबाबा भूल जायेगा, जिससे उनका अहित ही होगा क्योंकि आत्मा पावन एक शिवबाबा की याद से ही बनती है। इसके लिए साकार में भी बाबा ने अनेक प्रकार से महावाक्य उच्चारण किये हैं।

11. बाबा ने दादी को वह परिवार भी दिखाया होगा, जहाँ उनको जन्म लेना है, इसलिए उस परिवार की भक्ति भावना को देखकर और जो कर्तव्य दादी जी को करना है, उसको जानकर दादी जी ने जन्म लेना स्वीकार किया होगा।

12. जैसे यज्ञ की स्थापना के आदि में और सेवा के आदि में दादी जी ने विशेष पार्ट बजाया, ऐसे ही नये विश्व की रचना में भी दादी जी को विशेष पार्ट बजाना है, उसके लिए विधि-विधान निश्चित करने हैं, उनकी नींव डालने के लिए भी दादी जी जैसी शक्तिशाली प्रेरणा-स्रोत विशेष आत्मा की आवश्यकता है, वह बात दादी जी को बाबा ने बताई होगी, तो उसको समझकर दादी जी ने जन्म लेना स्वेच्छा से स्वीकार कर लिया होगा।

''सतयुग में कोई अपवित्र नहीं होते और वहाँ बच्चे का इन्तजार भी नहीं होता है। यहाँ तो बच्चे का इन्तजार करते हैं। वहाँ समय अनुसार आपही साक्षात्कार होता है। मनुष्य तो कहते हैं - यह कैसे हो सकता है। भला यहाँ के सम्पूर्ण विकारी कैसे समझें कि वहाँ निर्विकारी होते हैं।''

सा.बाबा 26.10.07 रिवा.

दादी जहाँ जन्म लेगी, उसके माँ-बाप बहुत भक्ति-भावना वाले हैं और बड़ी आयु वाले हैं, उनको बच्चा होने की कोई सम्भावना भी नहीं है। जब गर्भ में हलचल होगी तो माँ ऐसा अनुभव करेगी कि कुछ होने वाला है। वे ऐसे समझेंगे कि भगवान ने कोई अवतार भेजा है, बच्चा नहीं अवतार भेजा है। ... इस रूप से दादी एडवान्स पार्टी को, साइन्स वालों को और आप ब्राह्मण आत्माओं को तीव्र पुरुषार्थ करने की सदा प्रेरणा देती रहेगी। ...बाबा गले से लगे, दृष्टि दी और दादी हम सबके बीच से वतन से चली गई।

6.9.07 वतन का सन्देश

अभी मैं वतन में आई हुँ तो गर्भ की याद नहीं है। मैंने कहा - कहते हैं गर्भ जेल होता है, गन्दगी होती है, आपको उसकी क्या फीलिंग है ? दादी बाबा को कहती है - बाबा, यह मेरे से क्या पूछती है ? दादी को कुछ भी याद नहीं था। तो बाबा ने कहा - अच्छा मैं तुमको इमर्ज कराता हूँ ... तो दादी ने कहा मैं साक्षी होकर देखती हूँ कि वह स्टेज क्या है, मेरे को वह कोई जेल नहीं लगता है या वहाँ कोई गन्दगी नहीं लगती है। मैं समझती हूँ कि मैं जैसे महल में सोई हुई हूँ। ... माँ को भी कोई दुख की फीलिंग नहीं है। मेरे जो माँ-बाप हैं, वे समझते हैं कि कोई अवतार आने वाला है, बच्चा नहीं समझते हैं। अभी मेरा चोला तैयार हो रहा है, जब तैयार हो जायेगा, तब बाहर आ जाऊंगी। ... बाबा ने कहा - सुना, अभी दादी को यह भूल जायेगा। (इस सन्दर्भ में महाभारत में शुकदेव के सम्बन्ध में भी वर्णन है कि उनको गर्भ भी महल के समान सुखदाई अनुभव होता था, बाहर आने की दिल नहीं होती थी)

25.10.07 सन्देश गुल्जार दादी

13. अभी तो विश्व में कहाँ भी राजाई नहीं है और सतयुग में राज-व्यवस्था राजाई की होती है तो फिर से राजाई स्थापन करने के लिए भी किसी आत्मा को निमित्त बनना ही है, वह काम भी दादी को करना है, उसके सम्बन्ध में भी बाबा ने दादी को बताया होगा। जो पुराने राजघराने हैं, उनसे सतयुग की राजाई की कलम लगने की बात जंचती नहीं है क्योंकि उनके जीवन व्यवहार, खानपान को देखें तो साधारण व्यक्तियों से भी पतित है तो उनसे सतयुग की राजाई की स्थापना होने की बात ही नहीं। ऐसे में सतयुग की राजाई की स्थापना किन्हीं भक्त आत्माओं के द्वारा ही होनी चाहिए, इसलिए ही बाबा ने दादी को भक्त-आत्माओं के घर में भेजने की अर्थात् जन्म लेने की बात कही है।

14. बाबा ने इस बात को भी बताया है कि अन्त समय विनाश के समय बहुत हलचल होगी,

हाहाकार होगा, उस समय एडवान्स पार्टी को उमंग-उत्साह में लाने, उनको हिम्मत दिलाने, उनका सहारा बनने में भी दादी जी को विशेष पार्ट बजाना है, वह बात दादी जी को बाबा ने बताई होगी, उस बात की महत्ता को समझकर दादी जी ने जन्म लेना आवश्यक समझा होगा और जन्म लेना स्वीकार कर लिया होगा।

15. अन्त में ब्रह्मा बाबा को भी बच्चे के रूप में जन्म लेना होगा और निराकार बाप भी वापस घर चला जायेगा, इसलिए उस समय एडवान्स पार्टी को किसी विशेषात्मा के सहयोग की आवश्यकता होगी, वह पार्ट दादी जी को बजाना है, वह बात भी दादी को बाबा ने अवश्य बताई होगी।

16. साधारण रूप में और विशेष एडवान्स पार्टी के रूप में जो आत्मायें जिन संस्कारों के साथ यहाँ से जाती हैं, उनमें वे गुण-संस्कार वहाँ अर्थात् गर्भ के समय और बाद में भी अवश्य रहते हैं। यथा - एडवान्स जो आत्मायें यहाँ देह से न्यारे होने का सफल अभ्यास करती हैं और करते हुए जाती हैं, इसलिए वे वहाँ वहाँ भी इस गुण के आधार पर गर्भ में और जन्म लेने के बाद उनमें वह संस्कार रहता है, जिसके कारण वे कहीं जाकर कर्म करने में, सेवा करने में, प्रेरणा देने में समर्थ होती हैं। इसलिए दादी भी गर्भ में रहते और जन्म लेने के बाद उस गुण-संस्कार के आधार पर कर्म करने में समर्थ होगी।

17. देश-काल-परिस्थितियों, विनाश और नई दुनिया की स्थापना अर्थात् स्थूल-सूक्ष्म निर्माण कार्य, योगबल से जन्म लेने-देने आदि की बातों पर विचार करें तो ऐसा लगता है कि सतयुग के आदि में आने वाली सभी आत्माओं को एडवान्स जन्म लेना ही पड़ेगा। इसके बाद ही वे दैवी जीवन में प्रवेश करेंगी।

18. कलियुग में कर्म-बन्धन का जन्म, सतयुग में कर्म-सम्बन्ध का जन्म होता है और संगमयुग पर सेवा के सम्बन्ध का जन्म होता है, जिसको एडवान्स पार्टी कहा जाता है। ये सेवा के सम्बन्ध का जन्म भी अति न्यारा और अति प्यारा है, जिसका महत्व सतयुग के जन्म से भी श्रेष्ठ है। सेवा के बन्धन से एडवान्स पार्टी में जो आत्मायें जाती हैं, वे पूर्व जन्म में जो परमात्मा के साथ से और ज्ञान की धारणा से देह से न्यारे होने का अभ्यास किया है, उनकी वह महारथ उनको एडवान्स जन्म में प्राप्त रहती है, जिससे वे एडवान्स पार्टी का कार्य सहज रीति कर सकते हैं। 27.9.07 के अव्यक्त सन्देश में भी बापदादा ने इस सेवा के सम्बन्ध के जन्म को विशेष बताया है।

जैसे शंकराचार्य आदि में देह से न्यारे होने की शक्ति थी, ऐसे ही एडवान्स पार्टी की आत्माओं

में भी वह शक्ति होगी और विनाश के समय वे भी सहज देह से न्यारी हो जायेंगी और वह संस्कार सतयुग में भी जाग्रत होगा।

19. यज्ञ से कोई भी बाबा को छोड़कर सेवा के लिए जाना नहीं चाहता था परन्तु जब यज्ञ में आवश्यकता हुई और बाबा ने सेवा के महत्व को समझाया तो सभी सेवा के लिए दिल से गये, ऐसे ही बाबा ने जब दादी को एडवान्स जन्म लेकर एडवान्स कार्य के महत्व को और आवश्यकता को अनुभव कराया होगा, तब दादी स्वेच्छा से एडवान्स जन्म लेकर एडवान्स कार्य करने के लिए तैयार हो गई होंगी।

ये सब बातें दादी जैसी ज्ञानी-योगी आत्मा की बुद्धि में पहले से भी अवश्य होंगी परन्तु समय अनुसार मर्ज हो जाती हैं, जो बाबा को स्मृति दिलानी पड़ती है। जैसे हनुमान के विषय में भी गायन है कि उनको जब याद दिलाते थे तो उनको अपनी शक्ति और कार्य की महत्ता का अनुभव होता था।

20. एडवान्स पार्टी और योगबल से जन्म

एडवान्स पार्टी वाली कुछ आत्मायें योगबल से जन्म देने की प्रथा अर्थात् विधि-विधान का अविष्कार भी करेंगी, उसका विकास भी करेंगी और सतयुग की प्रथम जनसंख्या की कुछ आत्माओं को जन्म भी देंगी और सम्बन्ध-सम्पर्क से और आत्माओं को भी तैयार करेंगी जो सतयुग की प्रथम जनसंख्या को योगबल से जन्म देने में समर्थ होंगी। उसमें भी वे ही आत्मायें होंगी, जो अपने पूर्व जन्म में थोड़ा ज्ञान लिया होगा और सम्बन्ध-सम्पर्क में आई होंगी या वर्तमान में यज्ञ की सहयोगी आत्मायें होंगी क्योंकि एकदम ज्ञान से अनभिज्ञ आत्मायें तो ये कार्य कर नहीं सकती और न ही वे एडवान्स पार्टी के सम्बन्ध सम्पर्क में आ सकती हैं। इस कार्य में भी दादी जी अवश्य अग्रिम भूमिका निभायेंगी।

विनाश के समय तक ये ज्ञान प्राय: लोप हो जायेगा। नहीं तो ज्ञान का वह संस्कार अर्थात् ज्ञान सतयुग में भी चला जायेगा। विनाश और स्थापना के अन्तिम बिन्दु पर आत्मा में यही शक्ति रहेगी कि वह सहज आत्मिक स्थिति में स्थित होकर देह से न्यारी हो जाये। यही शक्ति एडवान्स पार्टी की आत्माओं से योगबल से जन्म देने वाली आत्माओं को भी मिलेगी। विनाश के समय एडवान्स पार्टी में गई आत्मायें भी शरीर छोड़कर परमधाम जायेंगी और आकर योगबल से जन्म देने वाली आत्माओं के पास जन्म लेंगी। योगबल से जन्म देने वाली आत्मायें भी एडवान्स पार्टी की हो सकती हैं परन्तु जन्म लेने वाली आत्मायें अधिक आत्मिक शक्ति से सम्पन्न होंगी, उनका खाता अधिक संचित होगा, जिससे वे सतयुग में पहले आयेंगी

और एडवान्स पार्टी की आत्मायें योगबल के किन्ही सन्तानों को जन्म देकर परमधाम जायेंगी और आकर सतयुग के आदि में जन्म भी लेंगी।।

जो आत्मायें एडवान्स पार्टी में जा रही हैं या जायेंगी, वे स्वयं अपने माता-पिता को तैयार करेंगी, जो उनको योगबल से जन्म देंगे। इसलिए वे जहाँ जन्म ले रही हैं या लेंगी, वहाँ से जाने-अन्जाने ऐसी आत्मायें ज्ञान के सम्बन्ध-सम्पर्क में अवश्य आयेंगी और ज्ञान के प्रचार-प्रसार में सहयोगी बनेंगी। विवेक कहता है कि एडवान्स पार्टी में ऐसी कम से कम 9 लाख आत्मायें अवश्य जानी चाहिए, जो जाकर अपने माता-पिता को तैयार करें, जो सतयुग की प्रथम जनसंख्या को योगबल से जन्म दे सकें।

मैंने कहा - बाबा दादी इस सूक्ष्म सेवा से समय को जैसे समीप ला रही है परन्तु जब दादी जन्म ले लेगी, फिर क्या होगा। तो बाबा ने एक बहुत अच्छा राज़ सुनारया - इनका जो पिता जी है, वह भक्त भी अच्छा है, साहूकार भी है ... उसकी विशेषता है, जिससे सभी उसको रिगार्ड देते हैं। ... इनकी राय बड़ी अच्छी है। बड़ो-बड़ों का कनेक्शन दादी के पिता से दोस्ती का है। ... दादी जन्म भले लेगी लेकिन ज्ञान के आधार से दादी में जो टचिंग और कैचिंग पॉवर है, आध्यात्मिक शक्ति है और पिता जी के संस्कार भी ऐसे हैं ... इस कारण दादी की राय और पिता जी की राय को सब बड़े-बड़े भी मानेंगे।

29.11.07 अ.बापदादा का सन्देश भोग के समय

21. इस विश्व-नाटक के विधि-विधान अनुसार

जिस आत्मा ने जो पार्ट कल्प पहले बजाया है, वह समय आने पर उसको बजाये बिना रह नहीं सकती अर्थात् जिस आत्मा का जिन आत्माओं के साथ सम्बन्ध है, हिसाब-किताब है, उनके अनुसार उन आत्माओं के साथ सम्बन्ध जोड़ने, हिसाब-किताब को पूरा करने बिना रह नहीं सकती।

जिन आत्माओं के साथ आत्मा ने कल्प पहले पार्ट बजाया, ड्रामानुसार समय आने पर उन आत्माओं के बिना रह नहीं सकती।

इस विधि-विधान के आगे आत्माओं की तो ताकत क्या परमात्मा का आकर्षण भी आत्मा को बांध नहीं सकता। आत्मा उस पार्ट को बजाने, उन आत्माओं के साथ सम्बन्ध निभाने के लिए अवश्य जायेगी। इसके अनुसार दादी ने भी जो कल्प पहले पार्ट बजाया था, जिन आत्माओं के साथ बजाया था, वहाँ जाने के लिए बाबा के कहने पर सहज ही राजी हो गई होगी। इसलिए मैं उससे कोई सेवा नहीं कर सकती हूँ, इससे तो अच्छा नया शरीर लेकर ही सेवा करें।

22. बाबा ने दादी को दुबारा भेजा तो दादी ने देखा कि मेरा शरीर तो अब मेरे काम का नहीं है, तो उसको देखकर दादी जी ने जन्म लेकर सेवा करना ही अच्छा समझा होगा, इसलिए बाबा के कहने पर दादी ने सहज ही जन्म लेना स्वीकार कर लिया होगा। भले ही दादी यहाँ शरीर में थी तो ऐसे अनुभव नहीं करती थी कि इस शरीर से मैं अधिक सेवा नहीं कर सकती हूँ परन्तु जब वतन में गई और वतन से आकर साक्षी होकर देखा तो इस सत्य को महसूस किया और बाबा के कहने पर यज्ञ सेवा के लिए एडवान्स पार्टी में जन्म लेने की बात को स्वीकार कर लिया होगा।

बाबा ने कहा - बच्ची अभी पार्ट बजाने के लिए गई है, कर्मों के हिसाब से, कर्म-सम्बन्ध के हिसाब से नहीं गई है लेकिन सेवा के सम्बन्ध से गई है। यह सेवा के सम्बन्ध का जन्म बहुत न्यारा होता है। ... न्यारापन क्या-क्या होता है, कुछ तो बाबा सुनाओ। बाबा ने कहा - अभी नहीं सुनाऊंगा, जब जन्म ले लेगी फिर सुनाऊंगा।

27.9.07 का बापदादा का सन्देश दादी जी को भोग के समय

जैसे बाबा आप मुझे सर्टीफिकेट देते हो कि मैंने शुरू से लेकर सबको सम्मान दिया और उसके रिटर्न में सबकी दुआयें लीं ... ऐसे सबको सम्मान देना है और दुआयें लेनी हैं ... यह दिल की गिफ्ट हर एक मधुवन वाला देवे तब मैं कहूँगी कि हाँ मेरे को याद किया।

27.9.07 का बापदादा का सन्देश दादी जी को भोग के समय

''एडवान्स पार्टी में सब चाहिए। अभी आप लोग जायेंगे तो एडवान्स पार्टी भी तैयार चाहिए ना। कितने सारे चाहिए। तो एडवान्स पार्टी की तैयारी हो रही है क्योंकि सभी मातायें पक्की थीं। साकार बाप की पालना लेने वाली थीं तो पालना तो देंगी ना।''

अ.बापदादा 25.11.2000 एक्सीडेण्ट में 8 ने शरीर छोड़ दिया

वतन में रहते जीवनमुक्त स्थिति में बहुत न्यारी और प्यारी अवस्था थी। अभी बाबा ने मुझे शरीर में भेजा है, लेकिन मैं उस भान से न्यारी हूँ। बाबा इसका राज़ आपको बाद में सुनायेगा कि मेरा जन्म कैसे न्यारा है।

27.9.07 का बापदादा का सन्देश दादी जी को भोग के समय

जन्म तीन प्रकार से होता है - एक कर्म-बन्धन के कारण जन्म, दूसरा है कर्म-सम्बन्ध के कारण जन्म और तीसरा है सेवा के सम्बन्ध से एडवान्स जन्म। सतयुग-त्रेता के 20 जन्म कर्म-सम्बन्ध के और संगम पर सेवा के सम्बन्ध का एक जन्म होता है, इसलिए ही 21 जन्मों की जीवनमुक्ति का गायन है। ये सेवा के सम्बन्ध का जन्म अति न्यारा और प्यारा होता है, उसका गहरा राज़ है, जो बाबा बाद में बतायेंगे जब दादी जन्म ले लेगी।

बाबा ने कहा बच्ची को यह स्वतन्त्रता है कि जब चाहे तब बाबा के पास इमर्ज हो सकती है क्योंकि अभी गर्भ में कोई बन्धन नहीं है। अभी आत्मा स्वतन्त्र है, इसलिए आ-जा सकती है। ... बाबा कभी साइन्स वालों की तरफ, कभी ब्राह्मणें की तरफ, कभी भक्तों की तरफ चक्कर लगाता है। अमृतवेले बाबा के साथ चक्कर लगाने का या बाबा के डायरेक्शन से सेवा पर जाने का टाइम फिक्स है। 29.11.07 अ.बापदादा का सन्देश भोग के समय

एडवान्स पार्टी वाले बिना ब्रह्मा कुमार-कुमारी के परिचय के दिल के समीप हैं ... सभी एक-दो के विचारों के मिलन से बहुत नजदीक हैं। अभी दादी जायेगी तो दादी भी उनसे मिलेगी। ... उनमें मैं शक्ति भी भरता हूँ, डायरेक्शन भी देता हूँ कि कैसे कनेक्शन से आप सेवा कर सकते हो। 29.11.07 अ.बापदादा का सन्देश भोग के समय

अभी सभी अपने कर्म द्वारा, चेहरे द्वारा, चलन द्वारा बाबा को प्रत्यक्ष करें - दादी ने कहा यही मेरी आशा है। अभी दूसरी फालतू बातों में, व्यर्थ संकल्पों में, व्यर्थ कर्मों में समय गँवाने से किनारा कर दें। 29.11.07 अ.बापदादा का सन्देश भोग के समय

Q. गर्भ, गर्भ-महल और गर्भ-जेल का राज़ क्या है ?

दुनिया में और विशेषकर भारत में ये अभिधारणा है कि गर्भ एक जेल है, जहाँ आत्मा को अपने कर्मों का भोग भोगना पड़ता है। गर्भ में अनेक प्रकार गन्दे पदार्थों में रहकर आत्मा को अपने विकर्मों का पश्चाताप करना होता है परन्तु ऐसा नहीं है। गर्भ तो आत्मा को नयी देह धारण करने का एक साधन मात्र है। गर्भाशय में जो पदार्थ होते हैं, वे नई देह के निर्माण और पालन के आवश्यक होते हैं। उनमें रहते आत्मा सुख का भी अनुभव कर सकती है तो दुख का भी अनुभव कर सकती है। सुख-दुख दोनों की महसूसता कर्मों के अनुसार होती है। सतयुग-त्रेता में विकर्म होते नहीं, इसलिए गर्भ-महल के समान सुखदायी होता है और द्वापर-कलियुग में आत्मा के विकर्मों के कारण, तत्वों के दूषित होने के कारण, माता के संस्कारों और खान-पान के कारण आत्मा को गर्भ जेल के समान दुखदायी होता है। ऐसा भी नहीं है कि द्वापर-कलियुग में सभी आत्माओं को गर्भ दुख ही भोगना होता है। जो नई आत्मायें आती हैं, वे द्वापर-कलियुग में अपेक्षाकृत सुख की ही महसूसता करती हैं।

''बाप नई सृष्टि रचते हैं तो पहले-पहले बच्चे गर्भ महल में आते हैं, वे जैसे क्षीर सागर में हैं। यहाँ है गर्भ जेल, विषय सागर। बहुत सजायें खाते हैं।''

सा.बाबा 2.6.08 रिवा.

अभी मैं वतन में आई हुँ तो गर्भ की याद नहीं है। मैंने कहा - कहते हैं गर्भ जेल होता है, गन्दगी

होती है, आपको उसकी क्या फीलिंग है ? दादी बाबा को कहती है - यह मेरे से क्या पूछती है ? दादी को कुछ भी याद नहीं था। तो बाबा ने कहा - अच्छा मैं तुमको इमर्ज कराता हूँ ... तो दादी ने कहा मैं साक्षी होकर देखती हूँ कि वह स्टेज क्या है, मेरे को वह कोई जेल नहीं लगता है या कोई गन्दगी नहीं लगती है। मैं समझती हूँ कि मैं जैसे महल में सोई हुई हूँ। ... माँ को भी कोई दुख की फीलिंग नहीं है। मेरे जो माँ-बाप हैं, वे समझते हैं कि कोई अवतार आने वाला है, बच्चा नहीं समझते हैं। अभी मेरा चोला तैयार हो रहा है, जब तैयार हो जायेगा, तब बाहर आ जाऊंगी। ... बाबा ने कहा - सुना, अभी दादी को यह भूल जायेगा। 25.10.07 सन्देश गुल्जार दादी

दादीजी के एडवान्स में जन्म लेने से और उनके गर्भ के अनुभव से ये बात स्पष्ट होती है कि गर्भ केवल कर्मों के दण्ड भोगने के लिए ही नहीं है लेकिन गर्भ में भी आत्मा सुख और दुख दोनों का अपने कर्मानुसार अनुभव करती है, इस सन्दर्भ में महाभारत में भी शुकदेव का वर्णन है कि उनको गर्भ भी महल के समान सुखदाई अनुभव होता था, बाहर आने की दिल नहीं होती थी।

Q. दादी का पिता परमधाम से आने वाली नई आत्मा होगी या पहले से आई हुई कोई भक्त आत्मा होगी या ब्राह्मण परिवार से गयी हुई कोई आत्मा होगी ?

विवेक कहता है कि परमधाम से आने वाली कोई नई आत्मा होनी चाहिए क्योंकि नई आत्मा में ही इतनी शक्ति हो सकती है या फिर कोई पुरानी भक्त आत्मा होगी तो दादी के जन्म लेने के बाद वह ज्ञान में अवश्य आयेगी और यज्ञ सेवा में सहयोगी बनेंगी क्योंकि पुराने भक्तों को तो बाबा से स्वर्ग का वर्सा भी लेना है, इसलिए जब बाबा का बनेगी और सेवा करेगी तब तो बाबा से स्वर्ग का वर्सा मिलेगा।

मेरा सबसे बढ़िया अनुभव लास्ट में शरीर छोड़ते समय का था ... मेरी इच्छा थी कि मैं कर्मातीत अवस्था का अनुभव करूँ ... मुझे पता पड़ता था कि मैं जाने वाली हूँ परन्तु बोल नहीं सकती थी ... एक तो नष्टोमोहा स्थिति क्या होती है ... जीवन में रहते जीवनमुक्त स्थिति का अनुभव कर रही थी। अपने शरीर को, दादियों को तथा सभी अनन्य भाई-बहनों को साक्षी होकर देख रही थी। ... अन्त समय शरीर की जो फीलिंग थी, उससे भी बिल्कुल न्यारी हो गयी। वह बहुत अच्छा अनुभव था। ... आप सभी भी ऐसा पुरुषार्थ करो जो ऐसे कर्मातीत स्थिति के अनुभव में शरीर छूटे।

27.9.07 का बापदादा का सन्देश दादी जी को भोग के समय

Q. कर्मातीत स्थिति का अनुभव जैसा दादी ने अन्त समय किया और हम सबको भी करने के लिए प्रेरणा दी, उस अनुभव का आधार क्या है अर्थात् हमको वह कब और कैसे हो सकता है ?

कर्मातीत स्थिति के अनुभव और अन्त समय वह स्थिति रहे, उसके लिए योग द्वारा पुनाने खाते को खत्म करना, विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान को समझकर साक्षी होकर पार्ट बजाते हुए देह से न्यारे होने का सफल अभ्यास करना और नये विकर्मों अर्थात् पापों से बचना अति आवश्यक है। इस पुरुषार्थ द्वारा जब पुण्य का खाता भरपूर जमा होगा और पाप का खाता खत्म होगा और सम्बन्ध-सम्पर्क में सन्तुष्ट रहकर सन्तुष्ट करने से दुआओं का खाता भरपूर होगा तब ही इस स्थिति का अन्त समय अनुभव होगा। जिसका ऐसा पुरुषार्थ होगा, वह आत्मा उस अनुभव को अभी भी करेगी। जब अभी कर्मातीत स्थिति का अनुभव होगा तब ही अन्त समय उस स्थिति में देह का त्याग कर सकेंगे, जैसे दादी जी ने किया।

Q. अन्त समय कर्मातीत स्थिति के अनुभव के लिए किस पुरुषार्थ की आवश्यकता है ?

देह से न्यारे होने का सफल अभ्यास हो, अपनी देह के साथ भी मोह न हो।

जैसे अव्यक्त बापदादा मुरली के बीच में और अन्त में देह से न्यारे होने की ड्रिल कराते हैं, उस ड्रिल का सफल अभ्यास हो अर्थात् जब संकल्प करें तब उस स्थिति में स्थित हो जायें।

विकर्मों अर्थात् पाप का खाता पूरा खत्म हो

सुकर्मों अर्थात् पुण्य का खाता भरपूर जमा हो

सर्वात्माओं के प्रति शुभ भावना और शुभ कामना हो, जिससे अन्त समय उनकी भी हमारे प्रति शुभ भावना, शुभ कामना हो, उनकी दुआयें हमारे साथ हों।

सर्व व्यक्तियों और वस्तुओं से नष्टोमोहा स्थिति हो अर्थात् सबसे इस देह के साथ के हिसाब-किताब खत्म हों और एक परमात्मा के साथ बुद्धियोग हो, जिससे किसकी याद न आये और वे भी हमको न खींचे।

''आप सभी सोचते हो - बाप की प्रत्यक्षता जल्दी से जल्दी हो जाये लेकिन प्रत्यक्षता किस कारण से रुकी हुई है ? ... बापदादा ने बाप समान बनने के लिए कहा है। क्या बनना है, कैसे बनना है, 'समान ' शब्द में यह दोनों क्वेश्चन उठ नहीं सकते। बस बाप समान बनना है।''

अ.बापदादा 25.11.2000

''फालो फादर अर्थात् फुट-स्टेप फादर-मदर। निराकार बाप, साकार ब्रह्मा मदर को फालो

करना। ... बापदादा सब जगह चक्कर लगाते रहते तो क्या देखा - हर सेन्टर पर और हर एक के घर में ब्रह्मा बाप के चित्र बहुत रखे हुए हैं। ... अच्छी बात है लेकिन बापदादा यह सोचते हैं कि चित्र को देख चरित्र याद आते हैं या सिर्फ चित्र को ही देखते हो ?''

अ.बापदादा 25.11.2000

''जैसे मम्मा सूक्ष्मवतन में पवित्र फरिश्ता है ना। ... अन्त में जब कर्मातीत अवस्था होगी, तब लाइट दे सकते हैं। परन्तु तुम सम्पूर्ण बनते ही चले जायेंगे सूक्ष्मवतन में। जैसे बुद्ध, क्राइस्ट को दिखाते हैं। पहले-पहले पवित्र आत्मा धर्म स्थापन करने आती है, उनको लाइट दे सकते हैं, ताज नहीं।''

सा.बाबा 7.11.06 रिवा.

Q. संगमयुगी एडवान्स जन्म और सतयुगी देवताई जन्म में क्या मूलभूत अन्तर है, जिसके आधार पर एडवान्स जन्म में स्पष्ट ज्ञान न होते भी चढ़ती कला की स्थिति होती है और देवताई जन्म में उतरती कला की स्थिति होती है ?

शरीर छोड़ते समय के संकल्प की इसमें महत्वपूर्ण भूमिका है।

एडवान्स पार्टी वाली आत्माओं को भी सूक्ष्मवतन में विद्यमान बापदादा की मदद मिलती है क्योंकि वे उस संकल्प के साथ ही शरीर छोड़ते हैं और बाबा भी नई दुनिया की स्थापना के लिए मदद देने के लिए ही सूक्ष्मवतन में हैं और समय-समय पर उन आत्माओं को भी सूक्ष्मवतन में बुलाता रहता है।

संगमयुग पर आत्मायें ज्ञान का सूक्ष्म संस्कार लेकर ही एडवान्स जन्म लेती हैं, जबकि सतयुग में आत्मायें परमधाम से आती हैं और परमधाम जाते समय ये ज्ञान के संस्कार आत्मा में पूर्ण रूपेण मर्ज हो जाते हैं।

भले अभी एडवान्स पार्टी वाली आत्माओं को यह स्पष्ट ज्ञान नहीं है लेकिन ज्ञानी आत्माओं के द्वारा और अव्यक्त बापदादा के द्वारा जो ज्ञान का संस्कार वातावरण में प्रसारित हो रहा है, वह भी उनको अवश्य ही टच करता है।

ज्ञानी ब्राह्मण आत्माओं का योगदान और परमात्मा की मदद एडवान्स में गई आत्माओं में स्थापना का संस्कार जाग्रत करता है, जिससे उनकी चढ़ती कला होती है। इसलिए ही बाबा ने शरीर छोड़ने वाली आत्माओं को योगदान देने का विधि-विधान बनाया है और सिखाया है।

एडवान्स पार्टी की आत्मायें जो सेवा का संस्कार लेकर जाती हैं, उनका वह संस्कार सेवा करता है या कराता है, इसलिए उनकी चढ़ती कला होती है। सतयुग में सेवा करने का कोई प्रश्न ही नहीं क्योंकि वहाँ तो सभी सुखी, शान्त और सम्पन्न होते हैं।

यज्ञ की स्थापना के समय की जो बहनें-भाई एडवान्स पार्टी में गये, वे सब मिलते हैं लेकिन ये पहचान नहीं है ... बाबा ने कहा जैसे आपने वहाँ स्थापना की, ऐसे सतयुग की रचना के निमित्त भी आपको बनना है।... वतन में मिलते हैं तो यह स्मृति आती है कि हमको स्थापना के निमित्त बनना है। वहाँ यह स्मृति नहीं रहती।

अ.बापदादा का सन्देश 27.12.07

बापदादा और हम सभी (एडवान्स पार्टी) आपके सम्पन्न बनने का इन्तजार कर रहे हैं क्योंकि बापदादा और हम सभी आपके भाई-बहनों का आप सबसे दिल का प्यार है ... यहाँ का कार्य समाप्त कर तीव्र गति से उड़ो। ऐसा कोई तीव्रता का प्लॉन स्व-परिवर्तन और विश्व-परिवर्तन का जल्दी-जल्दी बनाओ। अ.दादी प्रकाशमणी 27.12.07

हम साइन्स वालों को प्रेर रही हूँ कि जल्दी-जल्दी वे कोई ऐसी नई इन्वेन्शन करें, जिससे शरीर छोड़ने में दुख कम हो और परिवर्तन हो जाये।... हिंसा करने वालों का हिंसा से वैराग्य आ जाये, ऐसा वायुमण्डल फैलाने के लिए बाबा ने कहा है तो हम सब मिलकर ऐसा वायुमण्डल फैला रहे हैं। अ.बापदादा का सन्देश 27.12.07

विशेष 5 जनों को बाबा वतन में बुलाता है, उनमें दीदी, दादी (मैं), चन्द्रमणी दादी, विश्वकिशोर भाई और पुष्पशान्ता दादी। ... बीच-बीच में औरों को भी बाबा इमर्ज करके बुलाता है कि आप ये अपनी सेवा करो और साकार में जो ब्राह्मण हैं, वे अपनी सेवा करें।

अ.बापदादा का सन्देश 27.12.07

जैसे आत्मा, परमात्मा और ड्रामा ये तीन बातें विशेष हैं, ऐसे वर्तमान समय अनुसार आपको कर्मों की गति पर भी विशेष अटेन्शन रखना चाहिए क्योंकि अभी लास्ट टाइम है। ... उसमें अभी अलबेलापन है। ... अभी मधुवन से माया चली जानी चाहिए। ... माया आयेगी। माया का काम है आना और मेरा काम है विजय प्राप्त करना।

अ.बापदादा का सन्देश 27.12.07

वायुमण्डल बनाने का काम एडवान्स पार्टी को दिया है। एक तरफ है एडवान्स पार्टी और दूसरी तरफ है एडवान्स में जाने वाली पार्टी। अभी दोनों का एक ही संकल्प होना चाहिए कि स्व-परिवर्तन से विश्व-परिवर्तन करना ही है।

अ.बापदादा का सन्देश 27.12.07

Q. एडवान्स पार्टी, एडवान्स जाने वाली आत्माओं और ब्राह्मण आत्माओं में क्या विशेष अन्तर है ? तीनों की कार्य विधि क्या और कैसी होगी ?

एडवान्स पार्टी और एडवान्स जाने वाली आत्माओं तथा ब्राह्मण आत्माओं तीनों को अव्यक्त

बापदादा की मदद मिलती है परन्तु ब्राह्मण स्पष्ट ज्ञान होने के कारण उसको अनुभव करते हैं परन्तु एडवान्स पार्टी वाले उसको प्रत्यक्ष में अनुभव नहीं करते परन्तु उनको भी आभास होता है कि कोई दिव्य शक्ति हमको प्रेर रही है, सहयोग दे रही है। चढ़ती कला में तीनों ही हैं क्योंकि आत्माओं की उतरती कला तो सतयुग से ही आरम्भ होती है। संगमयुग है चढ़ती कला का युग।

Q. एडवान्स में जाने वाली पार्टी से क्या आशय है अर्थात् उसमें कौनसी आत्मायें होंगी ?

हम समझते हैं कि जो आत्मायें सतयुग में पहले-पहले श्रीकृष्ण के साथ जन्म लेंगी, वे एडवान्स में जाने वाली आत्मायें कही जायेंगी या कहें कि अभी एडवान्स पुरुषार्थ करने वाली आत्माओं को एडवान्स में जाने वाली आत्मायें कहें। जो अभी एडवान्स पुरुषार्थ कर रहे हैं, वे ही सतयुग में पहले जन्म लेंगे, इस प्रकार दोनों आत्मायें एक ही हो गई।

''जगत अम्बा माँ बोली - एडवान्स पार्टी कब तक इन्तजार करे ? क्योंकि जब आप एडवान्स स्टेज पर जाओ तब एडवान्स पार्टी का कार्य पूरा हो। ''

अ.बापदादा 31.12.2000

Q. बाबा ने कहा है जब लक्ष्मी-नारायण गद्दी पर बैठते हैं तो पुरानी दुनिया के कोई भी नहीं रहेंगे। जब पुरानी दुनिया के कोई नहीं होंगे तो लक्ष्मी-नारायण के मात-पिता उनको गद्दी पर बैठायेंगे या क्या वहाँ के लोग उनको चुनकर गद्दी पर बैठायेंगे और यदि उनके मात-पिता गद्दी पर बैठायेंगे तो उनको पुरानी दुनिया का कहेंगे या नई दुनिया का कहेंगे क्योंकि उनका जन्म तो भोगबल से ही हुआ होगा, इसलिए उनको नई दुनिया का तो कहा नहीं जा सकता ?

Q. विनाश के बाद जब नये चक्र का आरम्भ होगा तो उस समय एडवान्स पार्टी वाली और एडवान्स में जाने वाली कितनी आत्मायें होंगी अर्थात् 9,16,108 पहले-पहले एडवान्स में जाने वाले होंगे और उनको जन्म देने वाले एडवान्स पार्टी वाले होंगे तो दोनों की मिलाकर कम से कम कितनी संख्या अन्त समय तक ब्राह्मणों की होनी चाहिए अर्थात् जो ब्राह्मण शरीर छोड़कर एडवान्स में गये हैं और अभी जो पक्के ब्राह्मण हैं, दोनों मिलाकर कितने होने चाहिए ?

एडवान्स में जाने वाले भी विनाश के समय शरीर छोड़ेंगे और एडवान्स पार्टी वालों के पास आकर जन्म लेंगे, लेकिन एडवान्स पार्टी वाले भी एडवान्स में आने वालों को जन्म देकर चले जायेंगे और आकर एडवान्स में जन्म ले सकते हैं। इस हिसाब से दोनों मिलाकर 17-18 के लगभग आत्मायें तो जरूर होनी चाहिए। साथ-साथ नई दुनिया के निर्माण कार्य में भी सहयोग करने वाले भी अवश्य होंगे।

Q. निमित्त, निर्मान और निर्मल वाणी के लिए जो दादी ने कहा है, वह धारणा कब और कैसे होगी ?

निमित्त, निर्मान और निर्मल वाणी की धारणा के लिए विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान की धारणा और आत्मिक स्वरूप का सफल अभ्यास अति आवश्यक है क्योंकि बिना विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान के निमित्त भाव सम्भव नहीं है और निर्मान और निर्मल वाणी के लिए आत्मिक शक्ति अति आवश्यक है। बिना यथार्थ ज्ञान के यदि हठ से हम ये स्थिति बना भी लेते हैं तो वह स्थाई नहीं रह सकती अर्थात् थोड़े समय रहेगी और कुछ समय के बाद हम उससे विचलित हो जायेंगे परन्तु जब हम इस स्थिति को यथार्थ ज्ञान की धारणा से बनायेंगे तो वह स्थाई रहेगी। विचारणीय है कि सतयुग में लक्ष्मी-नारायण सर्वगुण सम्पन्न ... सम्पूर्ण निर्विकारी थे, फिर भी यथार्थ ज्ञान की कमी और परमात्मा का साथ न होने के कारण उतरती कला में आये और विश्व अपनी इस वर्तमान दयनीय स्थिति में पहुँच गया। इसलिए ज्ञान की यथार्थ धारणा से ये स्थिति बनाना ही यथार्थ स्थिति है, जिससे चढ़ती कला होगी और हम निमित्त, निर्मान बन निर्मल वाणी द्वारा व्यवहार कर सकेंगे।

''दादी के तीन शब्द सदा याद रखना - निमित्त, निर्मान और निर्मल वाणी। यह तीन शब्द हर घड़ी, हर कार्य को आरम्भ करने के पहले याद करना। कार्य भले बदले लेकिन यह तीन शब्दों की स्मृति नहीं बदले। यह तीन शब्द ऐसे समझना जैसे अभी बापदादा, दीदी, दादी तीन हैं ना। ... तो बहुत जल्दी और सहज दादी के समान बन जायेंगे।''

अ.बापदादा 6.9.07

Q. यज्ञ के वर्तमान परिपेक्ष में कृत्य-अकृत्य, राइट-रांग का निर्णय कैसे करें, जिससे हमारा जीवन सदा सफलता के पथ पर अग्रसर रहे ?

हम देखते हैं कि वर्तमान जगत में और यज्ञ में अनेक अप्रत्याशित घटनायें हो रही हैं और होने वाली हैं, जिसके लिए ज्ञान सागर बाप ने पहले से ही हमको आगाह किया है, इशारा दे दिया है परन्तु शिवबाबा सर्वशक्तिवान है, ब्रह्मा बाबा भी मास्टर सर्वशक्तिवान है और दोनों की छत्रछाया सदा हमारे सिर पर है इसलिए जिसका बुद्धियोग उनके साथ है, उसकी वे स्वत: रक्षा करते हैं, उनको मार्ग दर्शन करते हैं और करते रहेंगे। साकार मुरलियां और अव्यक्त मुरलियां ज्ञान के अखुट भण्डार हैं, जो निश्चयबुद्धि होकर उनको पढ़ेगा, सुनेगा, उसके लिए बाबा की श्रीमत सदा ही स्पष्ट होगी और वह सदा ही निश्चिन्त होकर इस विश्व-नाटक की निश्चित भावी को साक्षी होकर देखते हुए चलता रहेगा, पार्ट बजाता रहेगा। ऐसा निश्चयबुद्धि सदा ही

इस विश्व-नाटक का अर्थात् इस जीवन का परमानन्द अनुभव करेगा और उसका मार्ग सदा ही प्रशस्त रहेगा। उसको कोई भी आत्मा भटका नहीं सकती है, प्रभावित नहीं कर सकती है। उसके मन में श्रीमत सदा ही स्पष्ट होगी, किसी भी कार्य के लिए किसी प्रकार की द्विविधा नहीं होगी।

Q. एडवान्स पार्टी वालों का जन्म चढ़ती कला का है या उतरती कला का है? यदि चढ़ती कला का है तो कैसे?

संगमयुग चढ़ती कला का युग है, इसलिए जिस भी आत्मा ने बाबा का बनकर निश्चबुद्धि होकर शरीर छोड़ा है या सतयुग की स्थापना से पहले शरीर छोड़ती है, वे सभी आत्मायें संगमयुग पर ही कही जायेंगी और जो आत्मा संगमयुग पर है उसकी चढ़ती कला निश्चित है क्योंकि उतरती कला तो जब वे परमधाम जाकर वापस पार्ट बजाने आयेंगे तब ही आरम्भ होगी। सभी एडवान्स पार्टी वाले सेवा का संकल्प लेकर जाते हैं, इसलिए वे वहाँ भी सेवा के निमित्त अवश्य बनते हैं और उनको बापदादा की प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष मदद मिलती ही रहती है, जिससे उनकी चढ़ती कला रहती है।

Q. एडवान्स पार्टी वालों का पुरुषार्थी जन्म कहेंगे? यदि हाँ तो वे कैसे और क्या पुरुषार्थ करते हैं? पुरुषार्थ का आधार क्या है?

है वह भी पुरुषार्थी जन्म ही परन्तु वर्तमान के पुरुषार्थी जन्म से न्यारा है। वर्तमान पुरुषार्थी जन्म में ज्ञान-योग से आत्मा को पावन बनाने का पुरुषार्थ करते हैं और एडवान्स पार्टी वाले अपनी आत्मिक शक्ति और परमात्मा की मदद से नई दुनिया के निर्माण का कार्य करते हैं, इसलिए बापदादा उनको भी समय प्रति समय वतन में इमर्ज कर प्रेरणा भी देते हैं, शक्ति भी देते हैं। वैसे भी अव्यक्त बापदादा उनको इन्डायरेक्ट सकाश देते रहते हैं, जिसको वे अदृश्य शक्ति के सहयोग के रूप में अनुभव करते हैं।

Q. एडवान्स पार्टी का क्या काम है और उनकी गति-विधि क्या है अर्थात् वे किस-किस कार्य के निमित्त हैं?

एडवान्स पार्टी के काम में मूल काम है, योगबल से सन्तान को जन्म देने की बात, जो ही स्वर्ग और नर्क की मूल सीमा रेखा है, जिसको समझने में दुनिया के अन्य लोग तो क्या ब्राह्मण आत्मायें भी समझने में भूल करते हैं अर्थात् पूर्ण रूप से विश्वस्त नहीं हो पाते हैं परन्तु विचारणीय यह है कि जो बात बाबा ने कही है, वह सत्य है और सत्य होगी।

एडवान्स पार्टी वाले भी बाबा के प्रेरणा से, बाबा के डायरेक्शन से वैज्ञानिकों, आदि की सेवा

करते हैं, दुखी-अशान्त आत्माओं के कल्याणार्थ कार्य करते हैं।

''एडवान्स पार्टी वतन में इमर्ज हुई, वे बापदादा से पूछ रहे थे कि हमको जिस सेवा के अर्थ निमित्त बनाकर भेजा है, वह सेवा कब शुरू होगी ? ... ऐसी आत्मायें योगबल से जन्म देने के निमित्त बन नई सृष्टि की स्थापना करेंगी। ... उनमें भी कुछ आत्माओं का अलग पार्ट भी है। सभी का एक जैसा पार्ट नहीं है लेकिन मैजारिटी का नई सृष्टि की स्थापना का पार्ट बना हुआ है। ... जब आप कहेंगे एवर-रेडी, तब उन्हों की सेवा आरम्भ होगी।''

अ.बापदादा 3.4.97

एडवान्स पार्टी को ही योगबल से जन्म देने का विधि-विधान का अविष्कार करना और ऐसी पार्टी तैयार करना है, जो योगबल से जन्म देने में समर्थ हो।

नई दुनिया सतयुग का स्थूल-सूक्ष्म निर्माण करना अर्थात् उसके लिए नये विधि-विधान बनाना तथा निर्माण कार्य करना और कराना।

नई राजाई की स्थापना करना क्योंकि अभी कलियुग के अन्त में कहाँ भी राजा-रानी का राज्य नहीं है, इसलिए सतयुग की राजाई की स्थापना करना एडवान्स पार्टी का काम है।

एडवान्स पार्टी का संगठन बनाकर रखना, जिससे विनाश के समय अपनी स्थिति अटल-अचल रख सकें।

विनाश के लिए भी वैज्ञानिकों आदि को प्रेरित करना।

साधारण रूप में और विशेष एडवान्स पार्टी के रूप में जो आत्मायें जिन संस्कारों के साथ यहाँ से जाती हैं, उनमें वे गुण-संस्कार वहाँ अर्थात् गर्भ के समय और बाद में भी अवश्य रहते हैं। यथा - एडवान्स जो आत्मायें यहाँ देह से न्यारे होने का सफल अभ्यास करती हैं और वे वहाँ भी इस गुण के आधार पर गर्भ में और जन्म लेने के बाद उनमें वह संस्कार रहता है, जिसके कारण वे कहीं जाकर कर्म करने में समर्थ होती हैं। इसलिए दादी भी गर्भ में रहते और जन्म लेने के बाद उस गुण-संस्कार के आधार पर कर्म करने में समर्थ होगी।

''हुनर तो सब सीख रहे हैं। साइन्स का कितना घमण्ड है। यही साइन्स फिर वहाँ भी काम आयेगी। यहाँ सीखने वाले वहाँ जाकर दूसरा जन्म ले महल आदि बनायेंगे।''

सा.बाबा 15.11.06 रिवा.

Q. सतयुग के आदि में जो 9,16,108 की जनसंख्या होगी, उनको योगबल से जन्म देने वाली आत्मायें कौन होंगी अर्थात् कोई नई आत्मायें ऊपर से आयेंगी या यहाँ से गई हुई

एडवान्स पार्टी की आत्मायें होंगी या ब्राह्मणों के सम्बन्ध-सम्पर्क में आने वाली सहयोगी पुरानी दुनिया की पतित आत्मायें होंगी ?

कुछ एडवान्स पार्टी वाली आत्मायें भी भी योगबल से जन्म देकर परमधाम जायेंगी और फिर आकर एडवान्स में अर्थात् सतयुग के आदि में जन्म लेंगी।

एडवान्स में जो आत्मायें जा रही हैं, वे ऐसी आत्माओं को सम्बन्ध-सम्पर्क में लायेंगी, जो इस ईश्वरीय ज्ञान के सम्बन्ध में भी आयेंगी, वे भी योगबल से जन्म देने के निमित्त बनेंगी परन्तु जो एडवान्स पार्टी में जाने वाली आत्मायें हैं, वे ज्ञान में नहीं आयेंगी।

एडवान्स में जाने वाली आत्मायें ही योगबल से जन्म देने की प्रथा अर्थात् विधि-विधान का अविष्कार करेंगी अर्थात् आरम्भ करेंगी।

Q. अब प्रश्न उठता है कि 84 जन्म कौन लेंगे और सतयुग के आदि की 9 लाख जनसंख्या कहाँ से और कैसे आयेगी ? जब यहाँ 9 लाख पूरे ब्रह्मा कुमार-कुमारी बनेंगे तब तो सतयुग के आदि में आयेंगे और फिर उनको योगबल से जन्म देने वाले भी एडवान्स पार्टी में जाने वाले ब्रह्मा कुमार-कुमारी ही होने चाहिए क्योंकि पतित तो योगबल से जन्म दे न सकें ?

''84 जन्म गाये जाते हैं। बाबा ने पूछा - यहाँ तुम बैठे हो तो क्या सब 84 जन्म लेंगे या कोई 80-82 जन्म भी लेंगे ? क्या सब पास होंगे ? क्या भागन्ती हो जाने वालों के जन्म कम-जास्ती नहीं होंगे ? ... वे फिर सतयुग में कैसे आयेंगे ? वे तो प्रजा में भी बहुत देरी से आयेंगे क्योंकि ग्लानि करते हैं।'' सा.बाबा 2.12.06 रिवा.

Q. बापदादा वतन में ब्राह्मणों और एडवान्स पार्टी वाली आत्माओं को ही इमर्ज करते है, प्रेरणा देते हैं, सहयोग देते हैं या अन्य आत्माओं को अर्थात् धर्म-नेतायें, राज-नेतायें, वैज्ञानिकों आदि को भी इमर्ज करके प्रेरणा देते, शक्ति देते, डायरेक्शन देते हैं ?

शिवबाबा ने नई दुनिया की स्थापना, पुरानी के विनाश और नई दुनिया के पालना के लिए आत्माओं को योग्य बनाने के लिए ब्रह्मा तन में प्रवेश किया है और दोनों इस कर्तव्य को पूरा करने का कार्य कर रहे हैं, इसलिए बापदादा अन्य धर्म-नेतायें, राज-नेतायें, वैज्ञानिकों आदि को भी अवश्य वतन में इमर्ज करके यथा योग्य कार्य करने की प्रेरणा देता होगा, डायरेक्शन देता होगा और उसको करने की शक्ति उनको देता होगा। अव्यक्त बापदादा ये कार्य प्रेरणा अर्थात् संकल्प से भी करता होगा और बुलाकर भी करता होगा। विचारणीय है कि परमात्मा और प्रजापिता ब्रह्मा बाबा न केवल ब्राह्मणों के कल्याण के निमित्त हैं, बल्कि वे सारे विश्व की आत्माओं अनादि पिता और आदि पिता है और नई दुनिया की स्थापना, पुरानी के विनाश और

सर्वात्माओं में उनके पार्ट अनुसार शक्ति देने के निमित्त हैं। हमको हमारे अनुसार देते हैं और हमको देने का विधि-विधान अलग है और अन्य आत्माओं को देने का विधि-विधान उनका है। बाबा ने कहा है - मैं तत्वों सहित सारे विश्व को पावन बनाने आया हूँ।

वास्तव में वे भी ब्रह्मा बाबा के बच्चे ही कहे जायेंगे। उनको भी अव्यक्त बापदादा का सहयोग मिलता है, जिस अनुभव के आधार पर ही वे इस ईश्वरीय कार्य में सहयोगी बनेंगे। ब्रह्मा सृष्टि का रचता है तो कोई उनके प्रत्यक्ष में बच्चे हैं और कोई अप्रत्यक्ष में हैं। तब तो सभी शिवबाबा को और ब्रह्मा बाबा को किसी न किसी रूप में याद करते हैं।

''यह है रुहानी युनिवर्सिटी, जहाँ सारे युनिवर्स की आत्मायें आकर पढ़ती हैं। ... तुम्हारा यह पैग़ाम कोई न कोई प्रकार से सबको जरूर पहुँचना चाहिए। ... जो भी विश्व में जीवात्मायें हैं, वे उस माशूक को याद जरूर करती हैं। ये प्वाइन्ट्स अच्छी रीति धारण करनी हैं।''

सा.बाबा 11.11.05 रिवा.

Q. बापदादा ब्राह्मणों को, एडवान्स पार्टी की आत्माओं को और अन्य आत्माओं को भी वतन में इमर्ज करके प्रेरणा देता, डायरेक्शन देता, सहयोग-शक्ति देता है तो तीनों की अनुभूति में क्या अन्तर है ?

ब्राह्मण को साकार में बाबा ने सारा ज्ञान दिया है, इसलिए उनको साकार में और वतन में इमर्ज होने पर बापदादा के सानिध्य का, मदद का स्पष्ट अनुभव होता है। एडवान्स पार्टी वालों को साकार में उसका अनुभव नहीं होता है परन्तु जब बापदादा वतन में इमर्ज करते हैं तो ब्राह्मणों के समान बापदादा के सानिध्य का, सहयोग का अनुभव होता है, साकार अनुभव की स्मृति इमर्ज होती है। अन्य आत्माओं को जब बापदादा इमर्ज करता है, प्रेरणा देता है, डायरेक्शन देता है, मदद देता है तो उनको बापदादा की फीलिंग नहीं होगी अर्थात् ये अनुभूति नहीं होगी कि परमात्मा हमको मदद दे रहा है, डायरेक्शन दे रहा है परन्तु उनको लगेगा कि कोई उनको प्रेर रहा है, अन्दर से उनको प्रेरणा आयेगी, कल्प पहले किये गये कार्य की स्मृति इमर्ज होगी और वे उस कार्य को पूरा करने की शक्ति अनुभव करेंगे और उसको पूरा करेंगे। तीनों प्रकार की आत्मायें साकार वतन में हैं परन्तु परमात्मा की स्पष्ट अनुभूति ब्राह्मणों को ही होती है।

Q. योगबल से जन्म देने वाली आत्मायें कौन होंगी ?

जो ब्रह्मा कुमार-कुमारियां पुरानी देह को छोड़कर एडवान्स पार्टी में गई हैं, वे होंगी या वे एडवान्स पार्टी वाली आत्मायें योगबल से जन्म देने की प्रक्रिया का अविष्कार कर, वहाँ पुरानी दुनिया की अन्य आत्माओं को तैयार करेंगी, जैसे बाबा यहाँ देवी-देवता बनने वालों को तैयार

कर रहा है। विवेक कहता है कि एडवान्स पार्टी के सहयोग से ज्ञान के सम्बन्ध-सम्पर्क में आने वाली आत्मायें जो सहयोगी बनेंगी, वे और एडवान्स पार्टी वाली आत्मायें ही सतयुग की पहली जनसंख्या को योगबल से जन्म देंगी।

Q. क्या जिन्होंने ईश्वरीय ज्ञान नहीं लिया होगा, वे बाहर वाली आत्मायें एडवान्स पार्टी की प्रेरणा से सतयुग में प्रथम जन्म वाली आत्माओं को जन्म देंगी और यदि देंगी तो क्या वे ब्रह्मा के बच्चे कहे जायेंगे या नहीं ?

विवेक कहता है कि पुरानी दुनिया की कोई आत्मा जो ब्रह्मा कुमार नहीं बनी या जिसने इस ईश्वरीय ज्ञान की धारणा नहीं की, वह किसी को योगबल से जन्म नहीं दे सकती है। योगबल से जन्म देने वाली आत्मायें या तो एडवान्स पार्टी में गई हुई होंगी या उनके द्वारा की गई सर्विस के आधार पर अपने जीवन को परिवर्तन करने वाली आत्मायें होंगी। वे आत्मायें भी डायरेक्ट या इन्डायरेक्ट ब्रह्मा कुमार-कुमारी ही कही जायेंगी क्योंकि वे ईश्वरीय कार्य में सहयोगी बनेंगी।

Q. ब्राह्मण जीवन और एडवान्स पार्टी के जीवन, उनके पुरुषार्थ और प्राप्तियों का क्या विधि-विधान है और क्या अन्तर है ?

यथार्थ पुरुषार्थ का जीवन ये ब्राह्मण जीवन ही है, जिसके लिए बाबा ने अनेक बार कहा है कि ये पुरुषार्थी जीवन है, जो करना है, वह अभी कर लो। ये शरीर छूटने के बाद तो बच्चा बनेंगे, उस समय कोई समझ ही नहीं होगी, जो कोई पुरुषार्थ कर सको। इसलिए अभी के पुरुषार्थ अनुसार ही भविष्य पद निश्चित हो जायेगा।

एडवान्स पार्टी वाले भले अभी सतयुग में या नये कल्प में नहीं गये हैं परन्तु उनको ये स्पष्ट ज्ञान नहीं है, इसलिए उनका अभी जैसा ज्ञान सहित पुरुषार्थ नहीं है। उनको अव्यक्त बापदादा जब वतन में बुलाता है, तब ये संगमयुग का ज्ञान इमर्ज होता है और वे बाबा की प्रेरणाओं को कैच कर उस अनुसार कर्म करने में समर्थ होते हैं। उनका जीवन न संगमयुगी ब्राह्मणों जैसा है और न ही सतयुग के देवताओं जैसा है। वे सतयुगी सृष्टि के निर्माण में, उसके विधि-विधानों को बनाने के निमित्त हैं।

विवेक कहता है कि अभी ज्ञान सहित जानकर जो पुरुषार्थ करते हैं, उसका सौगुणा फल प्राप्त होता है, वह एडवान्स पार्टी वालों को नहीं प्राप्त हो सकता है परन्तु फिर भी उनका जीवन अपेक्षाकृत सम्पन्न-सन्तुष्ट और चढ़ती कला ही होगा, सतयुग जैसा उतरती कला का नहीं। अव्यक्त बापदादा उनकी भी पालना करते हैं, इसलिए वे भी ब्राह्मण ही कहे जायेंगे।

Q. क्या ज्ञानी आत्मा को किसी के देह त्याग के समय आंसू आयेंगे और यदि आयेंगे तो किस हद तक अर्थात् बहकर नीचे गिरेंगे या आंखों में आकर आंखों में ही विलीन हो जायेंगे ?

Q. दैवी परिवार में कोई देह का त्याग करता तो भी रोते और लौकिक दुनिया में कोई देह का त्याग करता तो वे भी रोते तो दोनों में अन्तर क्या है और दोनों में क्या समानता है ?

Q. सतयुग है प्यार की दुनिया तो क्या सतयुग में भी ये आंसू रूपी प्यार के मोती आंखों में आयेंगे ?

Q. क्या किसी भी प्रसंग में शिवबाबा की रोने की छुट्टी है ?

मम्मा के विषय में किसी एक भाई ने अनुभव सुनाया कि एक बार किसी समाचार को सुनकर मम्मा की आंखों में आंसू आ गये तो उस भाई ने मम्मा को कहा - ... तो मम्मा ने कहा - ये आंखों में आंसू जरूर आये हैं परन्तु ये नीचे नहीं गिर सकते और वह नेत्र-जल आंखों में ही विलीन हो गया।

वैसे तो विश्व-नाटक की यथार्थता को जानने वाले को कभी आंसू आ नहीं सकते और यदि आ भी जाते हैं तो मम्मा के समान नीचे नहीं गिर सकते।

जब हमको आत्मा की अविनाश्यता और विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान है और कहा है तथा हम भी समझते हैं कि इस दैवी परिवार की कोई भी आत्मा शरीर छोड़कर जाती है, तो अच्छे कुल में ही जन्म लेगी अर्थात् उसकी चढ़ती कला ही होगी, तो किसी आत्मा के शरीर छोड़ने पर रोने की कोई दरकार नहीं है और यथार्थ ज्ञानी आत्मा को आंसू आ नहीं सकते। शरीर छोड़ने के समय दुनिया वाले रोते हैं और ज्ञान में होते भी जो रोते हैं, उन दोनों में स्वार्थ और देह के साथ लगाव ही मुख्य कारण है।

बाबा ने किसी भी परिस्थिति में हमको रोने की छुट्टी नहीं दी है, इसके लिए बाबा की श्रीमत नहीं है अर्थात् किसी भी परिस्थिति में रोना श्रीमत का उलंघन है।

Q. भक्ति में भी आत्माओं में भावना होती है, जिसके आधार पर वे भक्ति करते हैं। अभी निमित्त आत्माओं के प्रति हमारे मन में जो भावना होती है, जिसके कारण उनसे बिछुड़ने में आंसू आते हैं तो दोंनों में क्या अन्तर है और क्या सामन्जस्य है ?

Q. यदि प्यार के कारण बिछुड़ने पर आंसू आते हैं तो जो आत्मायें देह त्याग कर वतन में जाती हैं, उनके द्वारा भी ऐसी ही महसूसता आनी चाहिए ? क्या उनसे वह महसूसता आती है ? क्या ब्रह्मा बाबा, जो वतन में बैठे हैं, उनको ऐसी महसूसता आयेगी ? इस सत्य पर विचार कर हम निर्णय करें कि हमको आंसू आने चाहिए या नहीं क्योंकि अभी हमको उनके समान बनना है तो हमारी क्या स्थिति होनी चाहिए ?

Q. दुख के आंसू और प्यार के आंसुओं में क्या अन्तर है ?

प्यार में जो आंसू आते हैं, उनसे आंखे गीली अवश्य होती हैं परन्तु आंसू बहते नहीं हैं परन्तु दुख के आंसू बहते हैं, आत्मा दुख की अनुभूति करती है। वास्वतिकता तो ये प्यार से या दुख से जो भी आंसू आंखों में आते हैं, उनमें कोई न कोई अटेचमेन्ट अवश्य होती है। हम समझते हैं कि अव्यक्त बापदादा को किसी भी घटना को सुनने के बाद आंखों में आंसू नहीं आते हैं और न ही सतयुग, जो प्यार की दुनिया है, उसमें किसी घटना के कारण आंसू आते होंगे।

साक्षात्कार और ध्यान

Q. क्या आत्मा शरीर छोड़कर जाकर फिर शरीर में प्रवेश कर सकती है ?

विचारणीय है -

1. ड्राइवर मोटर को चालू करके बाहर जा सकता है तो क्या आत्मा इस शरीर से अस्थाई रूप से बाहर नहीं जा सकती है ?

2. DC बिजली के करेण्ट के समान आत्मा जा-आ सकती है क्योंकि आत्मा की गति तो करेण्ट की गति से भी तीव्र है तो क्या आत्मा शरीर से बाहर जाकर फिर शरीर में नहीं आ सकती है ? इतनी जल्दी तो शरीर शान्त नहीं हो सकता है।

3. जानबूझकर (Intentionally) शरीर को छोड़कर जाने और मृत्यु के द्वारा शरीर छोड़कर जाने में महान अन्तर है।

4. बाबा प्रकाशमणी दादी को वतन में इमर्ज करता है तो आत्मा सूक्ष्म शरीर के साथ जाती है या नहीं जाती है और यदि सूक्ष्म शरीर के साथ जाती है तो गर्भ में स्थिति नये शरीर के सूक्ष्म प्रतिरूप के साथ जायेगी या पहले वाले शरीर के साथ जायेगी। ये सब क्रियायें कैसे होती हैं ?

इन सब बातों पर विचार करने के बाद निष्कर्ष निकलता है कि आत्मा अस्थाई रूप से शरीर छोड़कर जा तो सकती है परन्तु ये सब होता ड्रामा अनुसार ही है। साक्षात्कार के रूप में भी हो सकता है। यथार्थ क्या है, वह तो बाबा ही जाने। यदि नहीं जा सकती है तो शंकराचार्य का परमाया प्रवेश का जो वृतान्त है, वह तो कपोल कल्पित ही कहा जायेगा।

Q. जब ध्यान में जाते हैं तो यदि आत्मा शरीर से अलग नहीं होती है तो झटका क्यों लगता

है, उसका क्या कारण है?

Q. गुल्जार दादी जब वापस आती है तो जो प्रतीक्षा करते हैं, वह क्या है?

आत्मा प्रवेश करती है या शरीर में रहते हुए Inactive होती है तो Active होने में समय लगता है।

Q. साक्षात्कार और ध्यान में क्या अन्तर है या दोनों एक ही हैं?

Q. ध्यान में जाते हैं तो आत्मा वतन में जाती है या यहाँ ही सूक्ष्मवतन का साक्षात्कार होता है? यदि यहाँ ही साक्षात्कार होता है तो बाबा से जो सन्देश लेते-देते हैं, वह ड्रामा अनुसार होता है या बाबा यहाँ टच करता है अर्थात् क्या और कैसे होता है?

Q. क्या आत्मा देह में रहते, देह से अलग होकर कहाँ जाकर कोई कार्य कर सकती है? यदि हाँ तो कैसे और यदि नहीं तो जो बाबा कहते तुम दुनिया में किसी भी कोने में बैठे कहाँ भी बैठी आत्मा की सेवा कर सकते हो, अनुभव करा सकते हो, वह कैसे होता है? कई आत्मिक शक्ति से सम्पन्न आत्मायें दूसरों के मन के भाव को कैसे जान लेते हैं?

Q. जिस दिन अव्यक्त बापदादा के मिलन का दिन होता है, उस दिन गुल्जार दादी सवेरे बापदादा को निमन्त्रण देने जाती हैं और शाम को आने के समय लेने जाती हैं तो ये प्रक्रिया क्या है और कैसे चलती है अर्थात् यहाँ से ही निमन्त्रण देती हैं या वतन में जाकर निमन्त्रण देती हैं?

स्थापना और विनाश

स्थापना

परमात्मा आकर स्वर्ग की स्थापना करते हैं, जिसके लिए चेतन आत्माओं और जड़ प्रकृति को भी पावन बनाते हैं। सतयुगी सृष्टि की स्थापना के लिए जड़-जंगम प्रकृति भी सतोप्रधान चाहिए, इसलिए ज्वालामुखी से निकली लावा और सुनामी के आने से अनेक घाटियां जो 5000 वर्ष में खाली हो गई हैं, वे उपजाऊ मिट्टी से भर जायेंगी।

अभी पृथ्वी जो साढ़े तेईस अंश पर झुकी हुई है, उसके 90 अंश पर सीधा होने से वातावरण में सन्तुलन हो जायेगा, जिससे सदाबहार मौसम रहेगा।

प्रकृति सतोप्रधान बन जायेगी अर्थात् हर तत्व अपने मूल स्वरूप में स्थित हो जायेगा।

खानियां भरपूर हो जायेंगी अर्थात् खनिज निकलते-निकलते जो खानियां खाली हो गई और वे

खनिज पदार्थ यत्र-तत्र-सर्वत्र बिखर गये, वे सूर्य के तापमान बढ़ने से और एटम-बॉम्बस की गर्मी से पुन: पिघल कर अपने मूल स्थानों पर एकत्रित हो जायेंगे। विचारणीय है कि उस समय कितना तापमान होगा और स्थिति क्या होगी।

नये सतयुगी महलों आदि का निर्माण होगा, नये बाग-बगीचे, पेड़-पौधे पैदा होंगे, जिससे सतयुगी सृष्टि बनेंगी।

Q. यदि सतयुग आदि से त्रेता अन्त तक की आत्मायें अभी ज्ञान में या सम्बन्ध-सम्पर्क में नहीं आती है तो उनको परमात्मा द्वारा स्वर्ग का अधिकार किस आधार पर मिलेगा क्योंकि वर्सा तो बीज बोने, परमात्मा का बनने के आधार पर ही मिलता है और यदि वे अन्त तक आयेंगी और अपना बीज बोयेंगी तो यह यज्ञ कब तक चलेगा अर्थात् विनाश कब तक होगा ?

जो आत्मायें ज्ञान सुनेंगी, बाप के डायरेक्ट बच्चे बनेंगे, सहयोगी बनेंगे, ज्ञान के प्रचार-प्रसार में और विनाश के बाद नई दुनिया के निर्माण में भी जो आत्मायें सहयोगी बनेंगी, उन सबको परमात्मा का वर्सा मिलेगा, जिससे वे सब त्रेता के अन्त तक स्वर्ग में अवश्य आयेंगी। विवेक कहता है कि बिना यज्ञ में सहयोग के किसी आत्मा को स्वर्ग का वर्सा मिल नहीं सकता। इसलिए त्रेता के अन्त तक आने वाली आत्मायें किसी न किसी रूप से यज्ञ में अर्थात् परमात्मा के स्थापना और विनाश के कार्य में सहयोगी अवश्य बनेंगी।

''अब विचार करो - सतयुग से त्रेता के अन्त तक कितनी सम्प्रदाय वृद्धि को पाती रहेगी। तो इतने सबको ज्ञान देने की सर्विस करनी है। इतने सबमें ज्ञान का बीज बोना है। ब्राह्मण बनने बिगर देवता नहीं बन सकते। प्रजा तो बहुत बननी है। त्रेता अन्त तक जो आने वाले हैं, उन सबको यह मन्त्र मिलना है। तीर उनको ही लगेगा, जो हमारे कुल का होगा।''

सा.बाबा 31.3.08 रिवा.

''त्रेता अन्त तक 33 करोड़ देवतायें हैं, उसकी तो बात ही छोड़ो लेकिन 9 लाख तो अच्छी आत्मायें चाहिए। क्योंकि वन-वन-वन शुरू होगा तो उस समय जो भी प्रकृति होगी, व्यक्ति होंगे, वैभव होंगे - वे सब नम्वर-वन होंगे। ... नम्बर-वन प्रजा भी कम-से-कम बाप के स्नेह का अनुभव अवश्य करेगी। ... सिर्फ परिवार के भाई-बहनों का स्नेह नहीं लेकिन सदा बाप का स्नेह रहे।''

अ.बापदादा 31.12.89

''आदि की 9 लाख ... सिर्फ परिवार के भाई-बहनों का स्नेह नहीं लेकिन सदा बाप का स्नेह रहे। जिनकी सेवा करते, वे बाप के स्नेह की अनुभूति करें। उनके दिल से बाबा निकले, तब तो प्रजा बनेंगे। ब्रह्मा की प्रजा अर्थात् पहले विश्व-महाराजन की प्रजा बनेंगी। जिसकी प्रजा

बननी है, उसका स्नेह तो अभी से चाहिए ना।''

अ.बापदादा 31.12.89

Q. क्या हम सतयुग के सुखों के लिए ब्राह्मण बने हैं अर्थात् क्या ब्राह्मण जीवन का लक्ष्य है कि विनाश जल्दी हो और हम सतयुग में जायें और सतयुगी भौतिक सुखों का उपभोग करें ?

इस पुरुषोत्तम संगमयुग पर परमपिता परमात्मा के सानिध्य का सुख परम सुख है, जो सतयुग के भौतिक सुखों से कोटि-कोटि गुणा श्रेष्ठ है। अभी के सुख के आगे सतयुग का सुख तो कुछ भी नहीं है। परमपिता परमात्मा और ज्ञान ही आत्मा का परम लक्ष्य है, इसलिए विनाश की प्रतीक्षा में जीने वाले अपने समय और संकल्प को व्यर्थ ही गँवा रहे हैं। जो आत्मायें परमात्मा के सानिध्य और ईश्वरीय सेवा के परम सुख को अनुभव कर रहीं हैं, उनका ही जीवन सार्थक है और वे कभी सतयुग की प्रतीक्षा में नहीं रहेंगे। जो यहाँ के परम सुख की अनुभूति में होगा, वही सतयुग के सुखों को भी उपभोग कर सकेगा। इसलिए ब्राह्मण जीवन का लक्ष्य सतयुग के सुख नहीं लेकिन संगमयुग का अतीन्द्रिय सुख है, जो सारे कल्प में नहीं मिल सकता है।

Q. आत्मायें सतयुग के लिए .. उत्सुक (Eager) क्यों होते अर्थात् विनाश की प्रतीक्षा क्यों करते हैं ?

जिनको वर्तमान की प्राप्तियों के महत्व का, वर्तमान के सुख का यथार्थ अनुभव नहीं है, इस ब्राह्मण जीवन से दुखी हैं, वे ही विनाश की प्रतीक्षा करते हैं। जो वर्तमान के अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करेगा, उसे सतयुग जल्दी आये, विनाश जल्दी हो - ये संकल्प भी नहीं आयेगा और न आ सकता है। इसके लिए भक्तों ने भी गाया है - कंचन हू कलधौत के धाम करील के कुन्जन ऊपर वारों। अर्थात् जिन्होंने श्रीकृष्ण को भगवान माना, उनके लिए उनके सानिध्य का सुख स्वर्ग के सुखों से भी श्रेष्ठ है।

''कोई कहते हैं जल्दी विनाश हो तो हम स्वर्ग में चलें। परन्तु अभी तो बाप से बहुत खज़ाना लेना है। अभी राजधानी कहाँ बनी है, फिर जल्दी विनाश कैसे करायेंगे। बच्चे अभी लायक कहाँ बने हैं, अभी तो बाप पढ़ाने के लिए आते रहते हैं।''

सा.बाबा 7.1.08 रिवा.

''सतयुग में भल सुख था, फिर भी धीरे-धीरे सीढ़ी नीचे ही उतरते हैं। सीढ़ी चढ़ने में एक सेकेण्ड लगता है, उतरने में 5 हजार वर्ष लगते हैं। ... ये ज्ञान अभी ही मिलता है, सतयुग में यह ज्ञान होता ही नहीं। ... हीरे जैसा जन्म देवताओं का नहीं कहेंगे क्योंकि कल्याणकारी धर्माऊ युग यह है। संगमयुग पर ही कल्याण होता है और जितने भी युग हैं, उनमें अकल्याण ही होता है क्योंकि डिग्री कम होती जाती है।'' सा.बाबा 29.10.07 रिवा.

‘‘दूसरा प्रश्न - बापदादा कहते थे सभी को साथ ले जायेंगे लेकिन वह तो चले गये। ... जब बारात ही सज रही है तो अकेले कैसे जायेंगे। अभी तो सूक्ष्मवतन में ही अव्यक्त रूप से स्थापना का कार्य चलता रहेगा। जब तक स्थापना का कार्य समाप्त नहीं हुआ है तब तक बिना कार्य सफल किये हुए घर नहीं लौटेंगे। साथ ही चलेंगे। ... बाप अपने वायदे से बदल नहीं सकते।’’

अ.बापदादा 2.2.69

‘‘जब तक स्थापना का कार्य समाप्त नहीं हुआ है तब तक बिना कार्य सफल किये हुए घर नहीं लौटेंगे। ... अभी आप सबके साथ ही अव्यक्त रूप से स्थापना के कार्य में लगे रहेंगे। जब तक स्थापना का पार्ट है तब तक अव्यक्त रूप से आप सभी के साथ ही है।’’

अ.बापदादा 2.2.69

Q. ये विश्व एक अनादि-अविनाशी नाटक है, जो हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है तो विनाश भी अपने समय पर होगा और आत्मायें भी ड्रामानुसार अपने समय पर परिवर्तन होंगी फिर भी बाबा क्यों कहता कि अपनी सम्पूर्णता और सम्पन्नता की डेट बताओ अर्थात् बाबा का भाव-अर्थ क्या है ?

वास्तव में सब ड्रामा अनुसार अपने समय पर होना ही है अर्थात् समय पर सब सम्पूर्ण और सम्पन्न बनेंगे ही परन्तु बाबा बच्चों को सम्पूर्ण और सम्पन्न देखना चाहता है, जिससे बच्चे अभी इस विश्व-नाटक का यथार्थ सुख अनुभव कर सकें। दूसरी बात ये विश्व-नाटक कर्म-फल और कर्म पर आधारित है, जिसके अनुसार जो करेगा, सो पायेगा अर्थात् जो अभी सम्पूर्ण और सम्पन्न बनेंगा, वही अन्य आत्माओं को भी सम्पूर्ण और सम्पन्न बनाने की सेवा कर सकेगा, जिसके अनुसार उसको भविष्य में उसका फल मिलेगा। कर्म आत्मा का स्वभाविक स्वभाव है, जिसके अनुसार कोई भी आत्मा इस कर्मक्षेत्र पर कर्म के बिना रह नहीं सकती। इसलिए यदि आत्मा अच्छा कर्म नहीं करेगी तो वह बुरा कर्म जरूर करेगी, इसलिए बाबा चाहते कि बच्चे सम्पूर्ण और सम्पन्न स्थिति में स्थित होकर अच्छा कर्म करें, जिससे स्वयं को भी सुख मिले और अन्य को भी सुख मिले। किसी कर्म में कर्ता के लक्ष्य और भावना का महत्वपूर्ण स्थान है अर्थात् जैसा लक्ष्य होगा, उस अनुसार कर्म होंगे। इसीलिए बाबा कहते - तुम सदा अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित रहो और दूसरों को भी आत्मिक स्वरूप में देखो क्योंकि आत्मिक स्वरूप सम्पूर्ण और सम्पन्न है।

‘‘अभी तुम समझते हो फिर इस समय ही शिवबाबा आयेंगे। फिर कोई और समय बाप को आने की दरकार ही नहीं। सतयुग से त्रेता तक आना नहीं है, द्वापर से कलियुग तक भी आने

का नहीं है। वह आते ही हैं कल्प के संगमयुग पर।''

सा.बाबा 2.12.05 रिवा.

Q. क्या अभी हमारे जो किताब आदि हैं, वे विनाश के समय भूगर्भ में दब जायेंगे और द्वापर से वे निकलेंगे ? अथवा क्या होगा ?

वास्तव में विश्व-नाटक के नियम-सिद्धान्त अनुसार जो बना है, वह विनाश अवश्य होगा, इसलिए ये सब किताब आदि सब अवश्य विनाश हो जायेंगे। फिर द्वापर से आत्मा में नीहित स्मृति के आधार पर पहली गीता शास्त्र बनायेंगे और बाद में अन्य शास्त्र आदि बनेंगे।

Q. हमारा ये जन्म हमारे पूर्व कर्मों का फल है, जो हमको भोगना ही है और हमारे वर्तमान के कर्मों अनुसार ही हमारा भविष्य जीवन और जन्म होगा, फिर विनाश की जल्दी क्यों ?

वास्तव में ज्ञानी आत्मा को विनाश की कोई जल्दी नहीं होगी और न होनी चाहिए, आवश्यकता है अभी परमात्मा पिता को याद करने और श्रेष्ठ कर्म करने की, जिनके ऊपर हमारा वर्तमान और भविष्य आधारित है, जो हर परिस्थिति में किये जा सकते हैं अर्थात् मृत्यु-शैय्या पर लेटा व्यक्ति भी परमात्मा की याद से, अपने संकल्प, दृष्टि-वृत्ति से श्रेष्ठ कर्म कर सकता है। जब हम कर्म श्रेष्ठ करेंगे तो हमारा भविष्य अवश्य ही श्रेष्ठ होगा। इसलिए बाबा बार-बार मुरलियों में कहते - बच्चे, तुम्हारा ये जन्म सतयुग से भी श्रेष्ठ और सुखमय है। इस जन्म में ही तुम सतयुग के लिए कमाई करते हो, इसलिए कभी इससे ऊबना नहीं। अभी तुम परमात्मा पिता के साथ हो, जिसके लिए भक्त कितना पुरुषार्थ करते हैं। इसलिए इस जीवन के महत्व को जानने वाले को कभी भी विनाश की जल्दी नहीं होगी और न ही वह अपने पुरुषार्थ में अलबेला होगा। पुरुषार्थ ही जीवन है और पुरुषार्थ हीनता ही मृत्यु है।

Q. श्रीकृष्ण के जन्म होते ही विनाश शुरू होगा या विनाश के बाद श्रीकृष्ण का जन्म होगा या श्रीकृष्ण के जन्म होने के बाद विनाश हो ?

विवेक कहता है कि विनाश शुरू होने के बाद ही श्रीकृष्ण का जन्म होना चाहिए क्योंकि भगवानोवाच्य - देवताओं के पैर पतित दुनिया में नहीं पड़ सकते। विनाश शुरू होते ही विकारों से जन्म लेने का विधि-विधान बन्द हो जायेगा और समय का कांटा नई दुनिया के तरफ चला जायेगा, पुराने कल्प की आत्माओं का आना बन्द हो जायेगा, जिसके बाद आत्माओं का परमधाम जाना आरम्भ होगा और श्रीकृष्ण की आत्मा पहले परमधाम जाकर फिर आकर जन्म लेगी क्योंकि विनाश के समय श्रीकृष्ण की आत्मा को ही पहले परमधाम घर में जाना है।

विनाश

परमात्मा के नई दुनिया की स्थापना और पुरानी दुनिया का विनाश दो मुख्य कर्तव्य हैं और दोनों कर्तव्य समानान्तर चलते हैं। दोनों का केन्द्र बिन्दु एक ही है, इसलिए दोनों का परस्पर घनिष्ट सम्बन्ध है। जितना स्थापना का कार्य सम्पन्न होता जाता है, उतना विनाश की तैयारी होती जाती है।

Q. विनाश के समय बचने वाली आत्माओं की स्थिति कैसी होगी या विनाश के समय आत्माओं की स्थिति कैसी होगी ?

अभी बाबा जो देह से न्यारे निर्संकल्प होकर बिन्दु रूप में स्थित होने का अभ्यास कराते हैं, जिससे हम आत्मायें उस समय उसी निर्संकल्प स्थिति में स्थित हो जायेंगी और बहुत काल तक वह निर्संकल्प समाधि की स्थिति रहेगी, जिसके बीच में महा-विनाश की प्रक्रिया पूरी होगी और बहुत काल तक निर्संकल्प स्थिति में रहने के कारण उनको पूर्व का सब कुछ भूल जायेगा, भूख-प्यास का प्रभाव भी नाममात्र रहेगा अर्थात् रहेगा ही नहीं, उनको वह निर्संकल्प स्थिति ही खीचती रहेगी और वे उस स्थिति में परिवर्तित दुनिया को देखती रहेंगी, जो बड़ी शान्त और सुखमय दिखाई देगी। इसलिए बाबा कहते हैं, उस स्थिति और विनाश को देखने के लिए अभी से ही पुरुषार्थ करना है। जिन्होंने ऐसा पुरुषार्थ पहले से किया होगा, वे ही बचेंगे और विनाश की लीला को देख सकेंगे।

''समाप्ति का नगाड़ा बजाना तो बहुत सहज है ... कम से कम 108 नम्बरवन, 16 हजार नम्बर टू, 9 लाख नम्बर थ्री तो तैयार हो जायें। राजधानी तो तैयार होनी चाहिए।''

अ.बापदादा 12.12.98

Q. क्या स्वराज्य अधिकारी अर्थात् स्व-स्थिति में स्थित आत्मा को विनाश की जल्दी होगी या उसको जल्दी विनाश की इच्छा होगी ?

नहीं, क्योंकि संगमयुग का सुख सतयुग से भी श्रेष्ठ है, जो उस सुख की अनुभूति में होगा, उसको जल्दी विनाश हो, उसकी इच्छा न होगी और न हो सकती है।

''सतयुग में देवी-देवतायें पवित्र होते हैं। वे विष से पैदा नहीं होते हैं। नहीं तो उनको सम्पूर्ण निर्विकारी क्यों कहते ? ... अब फिर से देवी-देवता धर्म की स्थापना हो रही है। ... एक तो योग अग्नि से आत्मायें पवित्र बन जायेंगी, बाकी सब सजायें खाकर हिसाब-किताब चुक्तू कर जायेंगे। यह है ईश्वर की भट्ठी, सबको पावन बनाने के लिए।''

सा.बाबा 15.8.07 रिवा.

‘‘यहाँ गर्भ-जेल में सजायें खाते हैं। सतयुग में न गर्भ-जेल और न वह जेल होता है क्योंकि वहाँ पाप ही नहीं होता, जो सजायें खानी पड़ें। ... जो अच्छे कर्म करते हैं, वे अच्छे कुल में जन्म लेते हैं।’’ सा.बाबा 14.8.07 रिवा.

‘‘ज्ञान सागर एक निराकार बाप को ही कहा जाता है, उनसे ज्ञान गंगायें निकलती हो। बाप ही ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त की नॉलेज देते हैं। सतयुग में सूर्यवंशी राजायें थे। आठ बादशाही चली।’’ सा.बाबा 3.9.07 रिवा.

‘‘तुम बच्चों के पास दुख आ नहीं सकता। तुम जानते हो इतना बड़ा विनाश हमारे लिए हो रहा है, तो तुमको अन्दर में ह्रास नहीं आ सकता। अगर आता है तो कच्चे हैं, ज्ञान की पूरी अवस्था नहीं है।’’ सा.बाबा 8.9.07 रिवा.

‘‘देवतायें पतित दुनिया में तो राजाई कर न सकें। तो पुरानी दुनिया का विनाश भी चाहिए। विनाश होना भी है जरूर परन्तु अभी थोड़ी देरी है। तुम्हारा अभी नये झाड़ का सेपलिंग ही पूरा नहीं लगा है।’’ सा.बाबा 11.10.07 रिवा.

‘‘तुम जानते हो हम ज्ञान से कैसे पारसबुद्धि बनते हैं। जब तुम पारसबुद्धि बन जायेंगे तब यह दुनिया भी पत्थरपुरी से बदल पारसपुरी बन जायेगी, जिसके लिए बाबा पुरुषार्थ कराते रहते हैं।’’ सा.बाबा 8.1.08 रिवा.

Q. विनाश की प्रक्रिया कब, क्यों और कैसे ?

बाबा ने अनेक बार कहा है - जब तुम कर्मातीत बनेंगे तब विनाश होगा। कर्मातीत अर्थात् हमारा यहाँ कोई भी कर्म अर्थात् पार्ट इस विश्व रंगमंच पर नहीं रहेगा। हमारी घर जाने की लगन लग जायेगी परन्तु लगन तब लगेगी जब हम कर्मातीत अर्थात् सम्पूर्ण बनेंगे।।

सर्व आत्माओं को बाप का सन्देश मिल जायेगा। ब्रह्मा बाबा भी अभी वतन में बैठा है और आत्माओं को प्रेरित करने का पार्ट बजा रहा है, जिससे सबको बाप का सन्देश मिल जाये, आत्मायें पावन बनकर मुक्ति-जीवनमुक्ति के ईश्वरीय अधिकार को प्राप्त कर लें। ब्रह्मा बाप सर्व जीवात्माओं का पिता है। जब तक सबका कल्याण नहीं होता तब तक वह भी घर जा नहीं सकता, इसलिए बाबा सूक्ष्म वतन से ये कार्य सम्पन्न कर रहा है और हम आत्माओं को भी तीव्र गति से करने के लिए प्रेरित कर रहा है।

जब तुम पावन बन जायेंगे अर्थात् तुम जब पावन बनेंगे तो तुम्हारे लिए दुनिया भी पावन चाहिए तो पुरानी दुनिया का विनाश अवश्य होगा। एक भी आत्मा शत प्रतिशत पावन बन जायेगी अर्थात् शिव बाबा के समान बन जायेगी तब विनाश आरम्भ हो जायेगा। एक भी आत्मा शत

प्रतिशत पावन बनेगी तो अन्य सभी आत्मायें भी यथा शक्ति और अपने पार्ट के अनुसार अवश्य ही पावन बन जायेंगी। इसलिए ब्रह्मा बाबा भी अभी सूक्ष्म शरीर के साथ सूक्ष्म वतन में है।

जब तुम देवता बन जायेंगे। देवताओं के पैर पतित दुनिया में पड़ नहीं सकते। इसलिए देवता बनने से विनाश अवश्य होगा और नई दुनिया की स्थापना भी अवश्य होगी। जब सर्व आत्मायें परमधाम से इस धरा पर आ जायेंगी, तब वापस जाना आरम्भ होगा।

''तुम्हारा इम्तहान तब होगा जब तुम्हारी राजधानी पूरी स्थापन हो जायेगी।... ज्ञान पूरा हो जायेगा तब लड़ाई भी लगेगी। ... अभी तो कोई सौ परसेन्ट बने नहीं हैं। अभी तो घर-घर में पैगाम पहुँचाना है।''

सा.बाबा 23.2.04 रिवा.

''तुम्हारी स्थिति सर्व आत्माओं को मुक्ति दिलायेगी, विनाश को समीप लायेगी।''

अ.बापदादा 17.3.03

''तुम देह सहित सब कुछ बाबा पर बलि चढ़ाते हो। ... तो फिर बाप कहते - मेरा सबकुछ तुम बच्चों के लिए है। ... तुम्हारा इम्तहान तब पूरा होगा जब विनाश होगा। एक तरफ पढ़ाई पूरी होगी और विनाश शुरू हो जायेगा।''

सा.बाबा 26.2.08 रिवा.

Q. क्या आप चाहते हैं कि समय से पहले जल्दी विनाश हो ?

नहीं। क्योंकि बाबा ने हमको ड्रामा का ज्ञान दिया हुआ है और हम जानते हैं कि विनाश अपने समय पर ही होगा। हाँ हमारी इच्छा और पुरुषार्थ है कि हम अपने मूल सवरूप में स्थित होकर इस सुगमयुगी मुक्ति-जीवनमुक्ति का परम सुख अधिक से अधिक अनुभव करें और दूसरों के लिए भी सहयोगी बनें।

''बाप तो बच्चों को बहुत थोड़ा समझाते हैं। ... बाप तो कहते हैं - अपने को आत्मा समझो, मुझ बाप को याद करो और सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान जो सुनाता हूँ, वह धारण करो। ... अब माला के राज को भी तुम बच्चे ही जानते हो। नम्बरवार पढ़ाई अनुसार ही माला में पिरोये जाते हैं। पहले-पहले यह निश्चय चाहिए कि यह ईश्वरीय पढ़ाई है।''

सा.बाबा 24.3.04 रिवा.

''प्रजापिता ब्रह्मा का पार्ट वण्डरफुल है। यह बाप विचार सागर मंथन कर तुमको सुनाते रहते हैं। कितनी वण्डरफुल नॉलेज है। ... टीचर स्टूडेण्ट को कभी 100 मार्क्स नहीं देंगे, कुछ कम देंगे। वह है ऊंचे ते ऊंचा, हम हैं देहधारी, तो बाबा मिसल 100 परसेन्ट कैसे बनेंगे ? ये बड़ी

गुह्य बातें हैं। कोई सुनकर धारण करते हैं तो खुशी होती है। ... अनेक प्रकार की मार्क्स हैं। कोई निमित्त है, बहुतों को ज्ञान लेने के लिए प्रबन्ध करते हैं तो उनको भी फल मिल जाता है।''

सा.बाबा 24.3.04 रिवा.

''तुम ऐसे नहीं कहेंगे कि विनाश जल्दी हो तो हम स्वर्ग में जायें क्योंकि यह जीवन बड़ी दुर्लभ है। ... जल्दी मरें, यह वे ही कहेंगे, जिनको माया बहुत तंग करती है या कोई कर्मभोग है, उससे छूटना चाहते हैं। ... जब समय आयेगा तो न चाहते भी सबको जाना पड़ेगा।''

सा.बाबा 7.2.08 रिवा.

Q. बाबा ने कहा पहले आये वे ही पहले घर जायेंगे - इस सत्य को समझ कर विचार करो कि ये सब कब और कैसे होगा ? कब एटमिक वार होगी ?

हम पहले आये हैं तो हमको ही पहले जाना है परन्तु जायेंगे तब जब सम्पूर्ण बनेंगे, इसलिए विनाश के विषय में सोचने से पहले सोचो हम सम्पूर्णता के निकट कहाँ तक पहुँचे हैं।

''पहले नम्बर में देवी-देवताओं की आत्मायें आई, उनके पीछे दूसरे नम्बर वाले आते हैं।... जो पहले आते हैं तो जाना भी पहले उनको ही है।''

सा.बाबा 18.03.03 रिवा.

Q. स्थापना-विनाश की प्रक्रिया अर्थात् सम्पूर्णता और सम्पन्नता का दर्पण क्या है ?

ब्रह्मा बाबा। ब्रह्मा बाबा के शिव बाप समान सम्पूर्ण होते ही स्थापना का कार्य पूरा हो जायेगा और विनाश की प्रक्रिया आरम्भ हो जायेगी। इसका अर्थ ये नहीं कि हमको अपना पुरुषार्थ नहीं करना है। हमको ब्रह्मा बाप समान पुरुषार्थ करना ही है, तब ही हमको फल मिलेगा। ब्रह्मा बाबा का सम्पूर्ण होना अर्थात् शिवबाबा का कार्य पूरा हो जाना अर्थात् विश्व की सर्व आत्माओं को बाप का सन्देश मिल जाना। ब्रह्मा बाबा के सम्पूर्ण होते ही विश्व की सभी आत्मायें नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार सम्पूर्ण बन जायेंगी। ब्रह्मा बाबा सारे विश्व का पितामह है, उनको सारे विश्व की आत्माओं को साथ लेकर परमधाम जाना है। शिवबाबा जड़, जंगम और चेतन सहित सारे विश्व का पतित-पावन है। हम आत्मायें उनके बच्चे हैं तो हम सबको मिलकर सारे विश्व की आत्माओं को ये सन्देश देने का कार्य पूरा करना है। जब ये कार्य पूरा होगा तब ही हम सम्पूर्ण बनेंगे और घर जायेंगे।

उपर्युक्त स्पष्टीकरण का ये अर्थ नहीं कि ब्रह्मा बाबा अभी सम्पूर्ण नहीं बना है परन्तु सम्पूर्णता की परिभाषा क्या है, यह भी समझना अति आवश्यक है। सम्पूर्ण अर्थात् बाप समान अर्थात् शिवबाबा के समान निराकार स्थिति ही सम्पूर्ण स्थिति है, उससे पहले की सभी स्थितियाँ उसकी भेंट में ... कही जायेंगी। ये भी बात ध्यान देने की है कि परमधाम में जाने का अन्तिम क्लास

कहें या पड़ाव कहें, सूक्ष्मवतन है। ब्रह्मा बाबा साकार वतन से सम्पूर्ण बन गये परन्तु आगे के क्लास से भी पास करना ही है। हम सब को भी उनके जैसा पुरुषार्थ करके उनके साथ जाना है। ऐसे ही मम्मा तथा अन्य आत्मायें जो एडवान्स पार्टी में गई हैं, उन्होंने इस ब्राह्मण जीवन का क्लास पास कर लिया इससे सम्पूर्ण बन गये परन्तु सम्पूर्णता के अन्तिम पड़ाव परमधाम में जाने के लिए आगे का क्लास भी पास करने ही होंगे। इस सम्बन्ध में महाभारत में युधिष्ठिर के महाप्रयाण का उदाहरण बहुत सुन्दर है - अन्तिम गेट पर भी परीक्षा देनी पड़ी। साथ ही जब तक शिवबाबा पढ़ा रहा है, तब तक ब्रह्मा बाबा सहित हम सबको पढ़ना है अर्थात् कुछ बाकी है, जिसे भरपूर करना ही है। सम्पूर्णता अर्थात् स्थिति में भी सम्पूर्णता और कर्तव्य में भी सम्पूर्णता। जब तक नई दुनिया की स्थापना का कार्य पूरा नहीं हुआ है तब तक न हमारा, न ब्रह्मा बाबा का और न शिवबाबा का कार्य सम्पूर्ण हुआ है।

कर्म करते हुए भी इस विश्व-नाटक में एक शिवबाबा के सिवाए किसकी भी स्थिति एकरस नहीं रह सकती है। हर आत्मा की स्थिति या तो चढ़ती कला में होगी या उतरती कला में होगी। परमधाम में आत्मिक स्वरूप में स्थित आत्मा ही एकरस स्थिति में रहती है क्योंकि वहाँ न देह है और न कोई कर्म होता है। ब्रह्मा बाबा को सूक्ष्म वतन में सूक्ष्म देह भी है और उससे कर्म भी करते हैं तो स्वभाविक उसका फल भी उनको अवश्य मिलेगा।

Q. क्या विनाश के समय सृष्टि में जलमई होगी ?

नहीं। विनाश के समय सारी पृथ्वी तो जलमई नहीं होगी परन्तु विनाश के समय अणु-युद्ध और भूकम्प आदि प्राकृतिक आपदाओं के कारण अभी जो पृथ्वी अपनी धूरी पर साढ़े तेईस अंश झुकी है, वह 90 अंश पर स्थित हो जायेगी तो सागर की दिशा और दशा बदलेगी, जिससे इस पृथ्वी का अधिकांश भूभाग जलमग्न हो जायेगा। ड्रामानुसार उस समय पृथ्वी की कुछ पहाड़ी चोटियां बचेंगी और उन पर कुछ योगयुक्त आत्मायें बचेंगी। बाद में अन्य भूभाग अस्तित्व में आयेंगे, जहाँ जनसंख्या वृद्धि होगी और नये विश्व का नव-निर्माण होगा।

Q. विनाश कब और कैसे तथा उसका वर्तमान जीवन से सम्बन्ध क्या है ? विनाश को देखने के लिए कैसे शक्ति धारण करें ?

विवेक कहता है कि सतयुगी राजाई की स्थापना पूरी हो, सतयुग की आदि में आने वाली कम से कम 9,16,108 आत्मायें सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता का भरपूर अनुभव करें, तब विनाश होगा। सतयुग की आदि में जन्म लेने वाली आत्माओं की जितनी संख्या होगी और उनको योग बल से जन्म देने वाली आत्माओं

की तैयारी पूरी हो जायेगी, तब ही विनाश होगा। इसलिए विनाश के लिए उत्सुक (Eager) होने की कोई आवश्यकता नहीं है, बल्कि सतयुग के योग्य बनने की उत्सुकता और पुरुषार्थ की आवश्यकता है। वास्तविकता तो ये है कि वर्तमान संगमयुगी जीवन सतयुगी जीवन से भी महत्वपूर्ण है और सुखदायी है, उसका सुख लेना और संगमयुगी ब्राह्मण जीवन का कर्तव्य पूरा करना अर्थात् स्वयं को सम्पूर्ण और सम्पन्न बनाना और सर्वात्माओं को बाप का सन्देश देना हमारा परम कर्तव्य है, उस कर्तव्य को पूरा करने में अपना समय, शक्ति और संकल्प लगाना है।

जो एडवान्स पार्टी में आत्मायें जा रही हैं, वे ही जाकर योगबल से जन्म देने वाली आत्माओं को तैयार करेंगी और सम्भव है कि एडवान्स पार्टी में अर्थात् सतयुगी संगमयुगी जीवन में इतनी आत्मायें जायें, जितनी सतयुग आदि की जनसंख्या होगी। इसलिए हमको सतयुग या विनाश की प्रतीक्षा में ये संगमयुगी जीवन का समय नहीं बिताना है बल्कि इस संगमयुगी जीवन का सुख लेना है और संगमयुगी ब्राह्मण जीवन का कर्तव्य सम्पन्न करना है। अभी हम अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित हो जायें तो ये जीवन परमानन्दमय है क्योंकि देह से न्यारा आत्मिक स्वरूप परमानन्दमय है, जिसके लिए बाबा अनुभव करा रहा है और पुरुषार्थ करा रहा है। वह अनुभव करना और उसको स्थाई बनाना हमारा पुरुषार्थ है। हमको विनाश की उत्सुकता क्यों!

जब स्थापना का कार्य पूरा होगा अर्थात् जब हम आत्मायें इस विश्व-नाटक के सत्य ज्ञान को धारण कर इस देह और दैहिक सुखों से नष्टोमोहा और स्मृति स्वरूप स्थिति में स्थित होंगे। विनाश के लिए तो बाबा ने पहले ही बताया है कि एटॉमिक वार, सिविल वार और प्राकृतिक आपदायें तीनों का कार्य साथ-साथ चलेगा। उस स्थिति को वे ही आत्मायें देख सकेंगी, जो अपनी आत्मिक स्थिति में स्थित, एक परमात्मा की याद में होंगी।

''वह समय ऐसा होता है, जो किसको घुटका खाने का समय नहीं रहेगा। ऐसे भी नहीं कि यह सभी उस समय होंगे। कोई मर भी जायेंगे। होंगे वे ही जो कल्प-कल्प थे। जो उस समय एक बाप की याद में होंगे, वे ही विनाश की लीला को देख सकेंगे। तुम सभी साक्षी होकर देखेंगे।... विवेक कहता है विनाश तब होगा, जब बाम्बस गिरेंगे।''

सा.बाबा 14.4.04 रात्रि क्लास रिवा.

''यह 84 जन्मों का चक्र है। तुम जानते हो 5000 वर्ष पहले हमारा राज्य था। ... जो भी एक्टर्स हैं, सबको यहाँ अन्त में हाजिर होना ही है।... ऊपर से आना पूरा हो जाता है, तब लड़ाई लगती है।''

सा.बाबा 14.7.07 रिवा.

''तुम्हारा यह जन्म बहुत दुर्लभ है। देवताई जन्म से भी तुम यहाँ बहुत सुखी हो क्योंकि बाप की शरण में हो। यहाँ तुम अथाह कमाई करते हो, जो फिर जन्म-जन्मान्तर भोगेंगे। ... यह है अविनाशी ज्ञान रतनों की कमाई, जो वहाँ अथाह धन बन जाता है।''

सा.बाबा 7.1.08 रिवा.

''कोई कहते हैं जल्दी विनाश हो तो हम स्वर्ग में चलें। परन्तु अभी तो बाप से बहुत खज़ाना लेना है। अभी राजधानी कहाँ बनी है, फिर जल्दी विनाश कैसे करायेंगे। बच्चे अभी लायक कहाँ बने हैं, अभी तो बाप पढ़ाने के लिए आते रहते हैं।''

सा.बाबा 7.1.08 रिवा.

''कुछ भी याद नहीं आये, देह भी अपनी नहीं तो और क्या अपना है।। ... जब संकल्प किया कि सबकुछ तेरा तो एवर-रेडी हो गये ना। सभी ने दृढ़ संकल्प कर लिया है कि मैं बाप की और बाप मेरा। ... समय आप मालिकों का इन्तजार कर रहा है। कम से कम 9 लाख तो तैयार चाहिए ना।''

अ.बापदादा 20.12.92 पार्टी 5

''आप विचारवान हो, समझदार हो, बेचारे नहीं लेकिन कभी-कभी कोई-कोई बच्चों में एक कमजोर संकल्प उठता है - सोचते हैं कि क्या विनाश होना है या होना नहीं है। ... बापदादा सोचते हैं - हंसी की बात है कि विनाश को सोचना अर्थात् बाप को विदाई देना।''

अ.बापदादा 16.12.2000

''कभी भी विनाश आदि की बातों को अपना आधार बनाकर अलबेले नहीं होना। अचानक होना है। ... आज भी सम्भव है। इतना एवर-रेडी रहना ही है। ... आप समय का इन्तजार नहीं करो लेकिन अभी समय आपका इन्तजार कर रहा है।''

अ.बापदादा 16.12.2000

''विनाश तो अचानक होना है। एक घण्टा पहले भी बापदादा एनाउन्स नहीं करेगा, नहीं करेगा, नहीं करेगा। अगर अचानक नहीं हो होगा तो पेपर कैसे होगा और नम्बर कैसे बनेंगे। पास विद् ऑनर का फाइनल सर्टीफिकेट का पेपर तो अचानक में ही होना है।''

अ.बापदादा 16.12.2000

''सभी को सन्देश दिया। अभी आयें या नहीं आयें लेकिन समय आने पर याद आयेगा कि हमें भी पर्चा मिला था और ढूँढेंगे आपको कि वे सफेद वस्त्र वाली बहनें कौनसी थीं, जिन्होंने पर्चा दिया था लेकिन हमने नहींसुना। ... सभी की सेवा आत्माओं तक पहुँची और बाप के पास भी जमा होती ही है।''

अ.बापदादा 31.12.2000 टीचर्स

''कयामत के समय हिसाब-किताब चुक्तू कर आत्मा पवित्र बन जाती है। इस कयामत के

समय की बहुत महिमा लिखी है। सब आत्माओं को हिसाब-किताब चुक्तू करके वापस घर जाना है। ... जब विनाश का समय होता है तो सब आत्मायें आ जाती हैं। ... वहाँ से सब आत्मायें आती हैं, तब फिर बाप सबको ले जाते हैं। बाप कहते हैं - भल मैं यहाँ हूँ तो भी आत्मायें आती रहती हैं।'' सा.बाबा 14.4.08 रिवा.

Q. ब्राह्मण जीवन का समय कितना है? क्या एडवान्स जन्म का समय ब्राह्मण जन्म में गिना जायेगा?

शिवबाबा के अवतरण की वेला से सतयुग में प्रथम लक्ष्मी-नारायण के गद्दी पर बैठने तक का समय संगमयुग का समय ही माना जायेगा। उसमें शिवबाबा के अवतरण से विनाश तक का समय पुरुषार्थ का समय है और विनाश के बाद से लेकर प्रथम लक्ष्मी-नारायण के गद्दी पर बैठने तक का समय सतयुगी दुनिया के नव-निर्माण का समय है, जिसको बाबा ने सफाई और निर्माण का समय कहा है।

इस प्रकार हम विचार करें तो संगमयुग के समय में ब्राह्मणों का समय, एडवान्स पार्टी का समय और सतयुग की आदि से प्रथम विश्व-महाराजन के गद्दी पर बैठने तक का समय अर्थात् नव-निर्माण का समय सब संगमयुग का ही माना जायेगा। समय और स्थिति को देखते हुए विवेक कहता है कि सतयुग के आदि में जन्म लेने वाली आत्माओं में बाद में आने वाली कुछ आत्माओं को छोड़कर प्राय: सभी आत्माओं को एडवान्स जन्म लेना होगा। एक ब्रह्मा बाबा ही सूक्ष्म वतन में ठहर का कार्य कर रहा है क्योंकि वह शिवबाबा का रथ है। अभी भी शिवबाबा ब्रह्मा बाबा के सूक्ष्म शरीर के साथ ही गुल्जार दादी के तन में प्रवेश करते हैं।

''मैं आता ही एक बार संगम पर हूँ। मेरा आना और जाना, उसके बीच का जो समय होता है, उसको संगम कहा जाता है। ... मेरी आयु इतनी ही है, जितना समय मैं आता हूँ। ... फिर जब राजयोग सिखाकर पूरा करता हूँ तो पतित दुनिया विनाश को पाती है और मैं चला जाता हूँ।'' सा.बाबा 15.1.08 रिवा.

विनाश के सम्बन्ध में परमात्मा के महावाक्य -

1. विनाश तब होगा जब तुम बच्चे विनाश को भूल जाओगे।

2. विनाश तब होगा जब स्थापना का कार्य पूरा होगा अर्थात् स्थापना के लिए पहले सतयुग के आदि की नौ लाख जनसंख्या सम्पूर्ण और सम्पन्न बननी चाहिए।

जब तुम बच्चे सम्पूर्ण बनेंगे तब ही स्थापना का कार्य पूरा होगा अर्थात् तुम्हारे में कम से कम आदि की 9 लाख, 16 हजार एक सौ आठ तो अवश्य ही सम्पूर्णता की स्थिति को प्राप्त होने

चाहिए। विवेक कहता है - सतयुग आदि की जनसंख्या की 9,16,108 आत्मायें तो अवश्य ही सम्पूर्ण स्थिति में होनी चाहिए और सतयुग के आदि की जनसंख्या अर्थात् 9,16,108 देवी-देवताओं को योगबल से जन्म देने के लिए कम से कम 9 लाख एडवान्स पार्टी में भी अवश्य जाने चाहिए, जो योगबल से उनको जन्म दे सकें क्योंकि कोई भी पुरानी दुनिया की आत्मा योगबल से जन्म नहीं दे सकती है। वैसे तो यदि एक युगल एक को योगबल से जन्म देता है तो जन्म देने वालों की संख्या 18 लाख से भी अधिक होनी चाहिए। यदि दो को अर्थात् एक बच्चा और एक बच्ची को जन्म देता है तो भी 9,16,108 तो होने ही चाहिए। पुरानी दुनिया की तमोप्रधान आत्मायें तो किसी आत्मा को योगबल से जन्म देने में समर्थ नहीं हो सकती हैं, इसलिए या तो वे सभी आत्मायें एडवान्स पार्टी की होंगी या सम्बन्ध-सम्पर्क वाली सहयोगी आत्मायें हो सकती है। अब ये सब कैसे और कब तक होगा, यह विचारणीय विषय है।

3. जब सर्वात्मायें ऊपर से नीचे आ जायेंगी अर्थात् जब परमधाम से आना बन्द होगा, तब ही जाना आरम्भ होगा अर्थात् तब विनाश होगा।

4. जब सर्वात्माओं को बाबा का सन्देश मिल जायेगा, तब विनाश होगा क्योंकि जब सबको घर के रास्ते का पता पड़ेगा तब तो सब वापस जायेंगे।

कम से कम 9 लाख आत्मायें विदेही स्थिति की अनुभूति में हों क्योंकि जब अभी विदेही स्थिति की अनुभूति में होंगी, तब ही सतयुग में इस स्थिति में रहेंगे। वैसे तो सतयुग-त्रेता दोनों युगों में आत्माओं की स्थिति विदेही होती है, जिसके कारण ही वहाँ मृत्यु-भ्य और मृत्यु-दुख नहीं होता और दोनों युगों में इच्छामात्रम् अविद्या अर्थात् सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता की स्थिति में होती है तो जब यहाँ उस स्थिति की अनुभूति में होंगी, तब ही वहाँ उनकी यह सथिति होगी। यदि यहाँ नहीं तो वहाँ कैसे हो सकती है क्योंकि ये संगमयुग ही उस स्थिति का आधार है।

''पूछते हैं कितनी देरी है? बाबा कहते हैं - तुम अभी तैयार कहाँ हुए हो, जो स्वर्ग में जा सको। ड्रामा तो बना हुआ है। जितनी-जितनी स्थापना होती जा रही है, उतना विनाश ज्वाला भी धीरे-धीरे बढ़ती जा रही है। ... भारत अविनाशी खण्ड है। बाप भी यहाँ आये हैं ना। ड्रामा में ऐसे ही है कि योगबल से ही राजाई मिलती है।''

सा.बाबा 4.10.07 रिवा.

5. विनाश के लिए भी संसार की परिस्थितियां इतनी गम्भीर हो जायें, जो आत्माओं का जीना

मुश्किल हो जाये और सभी आत्मायें नहीं तो कम से कम संसार की जनसंख्या की आधी आत्मायें तो अवश्य कहने लगें कि अब ये दुनिया विनाश होनी चाहिए अर्थात् इसमें अब सुधार की गुंजाइश नहीं है, ये दुनिया रहने लायक नहीं है।

मैंने बाबा को कहा - दादी तो कहती है कि अभी बाबा बताये कि कितनी आत्मायें ऊपर हैं, बाबा सबको नीचे भेजे तो परमधाम का गेट खुले और हम सब जायें। तो बाबा ने कहा - अभी तो कितने ऐसे स्थान हैं, जहाँ पर बाबा का सन्देश गया ही नहीं है। अनेक आत्माओं को बाप का सन्देश ही नहीं मिला। अ.बापदादा 24.6.99 सन्देश

मम्मा ने कहा वर्तमान समय को देखते हुए एक तो सभी बच्चों को बेहद की वैराग्य वृत्ति धारण करनी है और वह तब होगी, जब हर एक यह लक्ष्य रखे कि मुझे विदेही बनना है। बेहद के वैराग्य से ही विदेही अवस्था जल्दी आ सकती है। तो समय को देखते हुए इन दो बातों पर अटेन्शन देकर अपनी स्थिति को ऊंच बनाओ और बाबा की हम बच्चों में जो आश है, वह पूरी करो। अ.बापदादा 24.6.99 सन्देश

''यह 84 जन्मों का चक्र है। तुम जानते हो 5 हजार वर्ष पहले हमारा राज्य था। ... जो भी एक्टर्स हैं, सबको यहाँ अन्त में हाजिर होना ही है।... ऊपर से आना पूरा हो जाता है, तब लड़ाई लगती है।'' सा.बाबा 14.7.07 रिवा.

''बाबा ने कहा कि अगर बच्चों के जीवन में यह चार स्तम्भ (निराकारी, निरहंकारी, निर्विकारी और निविघ्न) पक्के हैं तो बेगमपुर के बादशाह हैं। ... ब्रह्मा बाबा कह रहा है जब आप बच्चे मेरे पास वतन में आओ, तब तो मैं परमधाम में जाऊं, गेट खोलूँ। ... जब बच्चे पहले फरिश्ता बनें, वतनवासी बनें तब मैं परमधाम का गेट खोलूँ। ... बाबा विशेष महारथी बच्चों को बुला रहा है।'' अ.बापदादा 31.7.99 सन्देश

अब हर एक अपने से पूछे कि हम निराकारी, निरहंकारी, निर्विकारी, निविघ्न स्थिति में हैं, फरिश्ता बने हैं ?

''तुम अभी ब्रह्मा मुख वंशावली हो। जितने सतयुग-त्रेतायुग में देवी-देवतायें होंगे, उतने ही अब ब्रह्मा मुख वंशावली बनने हैं।... पिछाड़ी तक बच्चे वृद्धि को पाते रहेंगे।''

सा.बाबा 9.11.07 रिवा.

''अभी सभी के दिल में यही संकल्प है कि अब जल्दी-जल्दी ड्रामा की सीन चलकर खत्म हो लेकिन जल्दी होगी ? हो सकती है ? होगी या हो सकती है ? भावी जो बनी हुई है, वह तो बनी हुई बनी ही रहेगी।'' अ.बापदादा 2.2.69

''जब तक तुम्हारी सूर्यवंशी राजधानी स्थापन नहीं हुई है, तब तक विनाश नहीं हो सकता है। राजधानी स्थापन हो, बच्चों की कर्मातीत अवस्था हो, तब फाइनल लड़ाई होगी। तब तक रिहर्सल होती रहती है।'' सा.बाबा 23.1.08 रिवा.

Q. अब हम चैक करें -

हमारी स्थिति सतयुग के योग्य बनी है?

हमको विनाश की इच्छा क्यों होती है, जब कि संगम का सुख और प्राप्तियाँ सतयुग से भी श्रेष्ठ हैं?

क्या स्वराज्य अधिकारी अर्थात् स्व-स्थिति में स्थित आत्मा को विनाश जल्दी होगी, उसको इच्छा होगी?

क्या सर्व आत्माओं को बाप का और घर का परिचय मिला है, जिससे वे परमधाम जा सकें?

विनाश के लिए बेचैनी क्यों जबकि भविष्य का आधार वर्तमान प्राप्तियाँ और स्थिति हैं?

Q. इन महावाक्यों पर विचार कर हम निर्णय करें कि विनाश कब तक होगा, संगमयुग कितना समय चलेगा हमारा क्या कर्तव्य है और हमको अभी क्या पुरुषार्थ करना है?

''ब्राह्मण जीवन अर्थात् जैसे आवाज़ में आना सहज है, वैसे आवाज़ से परे हो जाने का अभ्यास भी सहज हो जाये। इसकी विधि है - राजा होकर चलना अर्थात् राजा होकर कर्मेन्द्रियों को चलाना। ... आप राजयोगी हो। ... राजयोगी अर्थात् मास्टर सर्वशक्तिवान राजा आत्मा। एक भी कर्मेन्द्री धोखा नहीं दे। स्टॉप कहा तो स्टॉप। भविष्य में लॉ और ऑर्डर पर चलने वाला राज्य है, लेकिन उसकी स्थापना तो यहाँ ही होनी है।''

अ.बापदादा 30.11.92 पार्टी 3

कम से कम 9 लाख आत्माओं को सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता का अनुभव प्रत्यक्ष होना चाहिए और जिनको स्वयं में होगा, उनसे अन्य आत्माओं को भी अवश्य होगा। तब तो वे सतयुग में आगे आने वाली आत्माओं को उसके योग्य बना सकेंगी। जब कम से कम 9 लाख आत्मायें सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता की अनुभूति में हों अर्थात् इच्छा मात्रम् अविद्या की स्थिति में हों, तब नई दुनिया की स्थापना का कार्य पूरा हो और पुरानी दुनिया का विनाश हो।

''इस संगमयुग की महिमा बड़ी भारी जबरदस्त है।... मैं भारत में ही आता हूँ, भारत में ही स्वर्ग होता है।... एक्यूरेट टाइम कुछ नहीं कह सकते, बाकी हाँ जब राजधानी पूरी स्थापन हो जायेगी, बच्चे कर्मातीत अवस्था को पायेंगे तो ज्ञान खत्म हो जायेगा और लड़ाई आरम्भ हो

जायेगी।''   सा.बाबा 15.1.08 रिवा.

''समझना, चाहना और करना - तीनों को समान बनाओ। तीनों को समन करना अर्थात् बाप समान बनना। ...करना ही है, जान चली जाये लेकिन प्रतिज्ञा नहीं जाये - ऐसा दृढ़ संकल्प ही बाप समान सहज बनायेगा।''   अ.बापदादा 18.1.93

''अब सबका पार्ट पूरा हुआ है, सब आत्मायें इकट्ठी होंगी। जब सब आ जायेंगी तब फिर जाना शुरू होगा। फिर विनाश शुरू हो जायेगा। ... ब्रह्मा की रात पूरी हो तब बाप ब्रह्मा तन में आकर ब्राह्मण रचते हैं और उनको राजयोग सिखाते हैं।''

सा.बाबा 20.2.08 रिवा.

Q. विनाश कैसे होगा अर्थात् विनाश के समय क्या स्थिति होगी, क्या-क्या घटनायें होंगी ?

अणु-युद्ध होगा, जिससे वातावरण में गर्मी बढ़ेगी, भूकम्प होगा, बड़े-बड़े बाँध आदि फट जायेंगे, जो तबाही मचायेंगे। विनाश के समय पांचो तत्व अपनी भूमिका निभायेंगे अर्थात् सागर उथल खायेगा, सुनामी आदि आयेंगी, सूर्य के तापमान और अणु-युद्ध से गर्मी बढ़ेगी, जिससे नार्थ-साउथ पोल की बर्फ पिघलने से जल-स्तर बढ़ जायेगा, जिससे समुद्र के किनारे के भूभाग जलमग्न हो जायेंगे। जल दूषित हो जायेगा।

सूर्य का ताप बढ़ जायेगा, जिससे वातावरण गर्म हो जायेगा, मनुष्य का जीना कठिन हो जायेगा।

वातावरण में प्राणवायु (ऑक्सीजन) कम हो जायेगी, जिससे प्राणियों का जीना कठिन हो जायेगा।

ज्वालामुखी फटेंगे, भूकम्प आयेंगे।

अति-वृष्टि, अनावृष्टि के कारण अकाल आदि पड़ेगा, जिसके लिए बाबा ने कहा है - अन्न का एक दाना भी नहीं मिलेगा, हीरा देंगे तो भी एक गिलास पानी नहीं मिलेगा।

तेज हवायें चलेंगी, जिससे तूफान आदि आयेंगे।

उल्कामुख गिरेंगे

अणु-बॉम्बस के फटने से जो धरती-प्रकम्पन होगा, उससे आज जो पृथ्वी साढ़े तेईस अंश झुकी है, वह 90 अंश पर सीधी हो जायेगी, जिससे जल-प्रवाह परिवर्तन होगा, जिससे अनेक भूभाग जल-मग्न हो जायेंगे और अनेक नये भूभाग अस्तित्व में आयेंगे।

भारत में गृह-युद्ध होगा, मारामारी होगी, खून की नदियां बहेंगी अर्थात् इस समय जो 110

करोड़ जनसंख्या है और आगे जो बढ़ने वाली है, वे सब मरेंगे। केवल 18-20 लाख बचेंगे। उस दृश्य को देखने और सहन करने की भी आत्मा में शक्ति चाहिए।

भयंकर और ऊंची-ऊंची सुनामी आयेंगी, जिससे पृथ्वी पर भार बढ़ जायेगा और पृथ्वी के अनेक भूभाग अन्दर धंसेगी, जिससे ज्वालामुखी आदि फटेंगे, जिससे लावा निकलेगा और सुनामी आदि से मिट्टी और अनेक प्रकार के खनिज सागर से पहाड़ियों की घाटियों में भर जायेंगे। जब सुनामी उतरेंगी तो उन घाटियों पर अनेक प्रकार की वनस्पति उगेगी और वहाँ जनसंख्या का विस्तार होगा। यह कार्य भारत में ही होगा।

Q. विनाश के समय हमारी स्थिति कैसी हो और उसके लिए अभीष्ट पुरुषार्थ क्या है ?

विनाश के समय जो विकराल परिस्थितियां होगी, उनको सहन करने, देखने और उन परिस्थितियों में स्थिर रहने के लिए कितनी शक्ति चाहिए, वह हम स्वयं ही विचार कर सकते हैं। जिसके लिए बाबा ने भी कहा है कि जो पक्के योगी होंगे, अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होंगे, वे ही विनाश के समय ठहर सकेंगे।

उस समय जिनका देह से न्यारे होने का सफल अभ्यास होगा, वे ही स्थिर रह सकेंगे क्योंकि वे भूख-प्यास, मोह-ममता से परे होंगे, इसलिए वे परिस्थितयां उनको प्रभावित नहीं करेंगी।

बाबा ने कहा जो हमारे सच्चे बच्चे होंगे, वे उस समय भी भूख नहीं मरेंगे परन्तु इन शब्दों के रहस्य को भी समझना आवश्यक है। ऐसा नहीं कि उनको सब चीजें प्राप्त होती रहेंगी परन्तु उन परिस्थितियों में वे देह से न्यारे होंगे तो उनकी कमी उनको खलेगी नहीं और वे उन परिस्थितियों को सहज ही खुशी-खुशी पार लेंगे।

जो सच्चे योगी होंगे, जिनकी लाइन क्लीयर होगी, उनको बाबा की टचिंग आयेगी अर्थात् उनको स्वत: ही टच होगा, अन्दर से प्रेरणा आयेगी, जिससे वे सूरक्षा के स्थानों पर चले जायेंगे।

गृह-युद्ध के समय अगर स्थिति योगयुक्त होगी तो मारने वाले आयेंगे तो हमारे से उनको ऐसा वायब्रेशन आयेगा, जो उनकी वृत्ति उस समय परिवर्तन हो जायेगी। पास वाले को मार कर चले जायेंगे, हमको छोड़ देंगे या उनको हमारे ऐसा साक्षात्कार हो जायेगा, जो वे डर जायेंगे या हमारे प्रति श्रृद्धा जागृत हो जायेगी, जिससे वे हमको नहीं मारेंगे।

जैसे शंकराचार्य आदि में देह से न्यारे होने की शक्ति थी, ऐसे ही एडवान्स पार्टी की आत्माओं में भी वह शक्ति होगी और विनाश के समय वे भी सहज देह से न्यारी हो जायेंगी और वह

संस्कार सतयुग में भी जाग्रत होगा।

विनाश के समय तक ये ज्ञान प्राय: लोप हो जायेगा। नहीं तो ज्ञान का वह संस्कार अर्थात् ज्ञान सतयुग में भी चला जायेगा। विनाश और स्थापना के अन्तिम बिन्दु पर आत्मा में यही शक्ति रहेगी कि वह सहज आत्मिक स्थिति में स्थित होकर देह से न्यारी हो जाये। यही शक्ति एडवान्स पार्टी की आत्माओं से योगबल से जन्म देने वाली आत्माओं को भी मिलेगी। विनाश के समय एडवान्स पार्टी में गई आत्मायें शरीर छोड़कर परमधाम जायेंगी और आकर योगबल से जन्म देने वाली आत्माओं के पास जन्म लेंगी। योगबल से जन्म देने वाली आत्मायें भी एडवान्स पार्टी की ही होंगी परन्तु जन्म लेने वाली आत्मायें अधिक आत्मिक शक्ति से सम्पन्न होंगी, उनका खाता अधिक संचित होगा, जिससे वे सतयुग में पहले आयेंगी।

जो आत्मायें एडवान्स पार्टी में जा रही हैं या जायेंगी, वे स्वयं अपने माता-पिता को तैयार करेंगी, जो उनको योगबल से जन्म देंगे। इसलिए वे जहाँ जन्म ले रही हैं या लेंगी, वे आत्मायें जाने-अन्जाने ज्ञान के सम्पर्क में अवश्य आयेंगी और ज्ञान के प्रचार-प्रसार में सहयोगी बनेंगी। विवेक कहता है कि एडवान्स पार्टी में ऐसी कम से कम 9 लाख आत्मायें अवश्य जानी चाहिए, जो जाकर अपने माता-पिता को तैयार करें, जो सतयुग की प्रथम जनसंख्या को योगबल से जन्म दे सकें।

‘‘जब देवतायें वाम मार्ग में जाते हैं तो धरती की उथल-पाथल भी होती है। सोने-हीरे के महल सब नीचे चले जाते हैं।... अभी इसका विनाश होना है। तुम देखेंगे अर्थक्वेक आदि होती रहेगी।... राजाई स्थापन होगी और विनाश आरम्भ होगा। अन्त में तुम बहुत मज़े देखेंगे, आदि से भी जास्ती।’’ सा.बाबा 21.12.07 रिवा.

‘‘शिवबाबा का मृत्यु तो हो न सके। जैसे शिवबाबा आया है, वैसे चले जायेंगे। ज्ञान पूरा हो गया, लड़ाई शुरू हो जायेगी। ... सतयुग का पूरा वृतान्त है नहीं। अर्थ-क्वेक आदि होती है, उसमें सब टूट-फूट पड़ते हैं, नीचे चले जाते हैं। इन बातों में बुद्धि से काम लेना है। यह खाना बुद्धि के लिए है।’’ सा.बाबा 22.12.07 रिवा.

Q. विश्व के विनाश से हमारे पुरुषार्थ का क्या सम्बन्ध है?

विश्व के विनाश से हमारे आध्यात्मिक पुरुषार्थ का कोई विशेष सम्बन्ध नहीं है क्योंकि हर युग में आत्मा जो करती है, उस अनुसार फल पाती है, इसलिए आध्यात्मिक पुरुषार्थ की तीव्रता के लिए तो हमको ये ध्यान में रखना है कि हमारे शरीर के विनाश होने से पहले अभीष्ट पुरुषार्थ करके सम्पूर्णता को पा लें, जिसके लिए बाबा ने बताया है कि शरीर अचानक कभी भी छूट

सकता है और नये जन्म में तो ये ज्ञान नहीं होगा, परमात्मा की यथार्थ अनुभूति नहीं होगी तो पुरुषार्थ क्या कर सकेंगे। इसलिए विश्व के विनाश को न देख अपने शरीर के विनाश को देखने वाले ही अपने पुरुषार्थ में तीव्रता ला सकते हैं और अभीष्ट पुरुषार्थ करके सम्पूर्णता को पा सकत हैं।

''बुद्धि कहती है कि अजुन अभी विनाश में थोड़ा देरी है। अभी राजधानी कहाँ स्थापन हुई है। राजाओं, सन्यासियों आदि को अजुन ज्ञान कहाँ दिया है। ... भगवान ने यज्ञ रचा है सारी दुनिया का परिवर्तन करने के लिए।'' सा.बाबा 8.9.07 रिवा.

''अभी तुम कामी मनुष्य से निष्कामी देवता बन रहे हो। ... तुम जानते हो कि अभी राजधानी स्थापन हुई नहीं है, अभी लड़ाई लग ही नहीं सकती। कर्मातीत अवस्था अजुन कहाँ हुई है।'' (Q. विनाश कब होगा ? बाबा के इन महावाक्यों से हम समझ सकते हैं कि विनाश कब होगा।) सा.बाबा 17.9.07 रिवा.

Q. विनाश के सम्बन्ध में उपर्युक्त बातों को देखने, समझने, विचार करने के बाद प्रश्न उठता है - क्या परमात्मा विनाश के लिए आते हैं, क्या हम विनाश के आधार पर परमात्मा के बने हैं या जी रहे हैं, विनाश का हमारे जीवन से क्या सम्बन्ध है, विनाश से हमारे पुरुषार्थ का क्या सम्बन्ध है, क्या हमको पुरुषार्थ में अलबेला हो जाना चाहिए या और तीव्र पुरुषार्थ करके संगमयुग के सुख का अनुभव करना चाहिए ?

परमात्मा का अवतरण विनाश के लिए नहीं लेकिन स्थापना के लिए होता है, विनाश तो विश्व-नाटक की एक नेचुरल प्रक्रिया है क्योंकि हर चीज नये से पुरानी और पुरानी होकर विनाश होती है। संगमयुग पर हमारा ये जीवन सर्वोत्तम जीवन है और मुक्ति-जीवनमुक्ति का परम-सुख का समय यही है। जो तीव्र पुरुषार्थ करके अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होने का पुरुषार्थ करता है, सम्पूर्णता को पाता है, वही संगमयुग का सुख अतीन्द्रिय सुख अनुभव करेगा और भविष्य सतयुगी सुख का अधिकारी बनेगा, साक्षी होकर इस विश्व-नाटक को देखने का सुख अनुभव करेगा और अन्त समय होने वाली भयावह परिस्थितियों को देखने और सहन करने में समर्थ होगा। वही अन्त में सहज देह का त्याग करके परमात्मा के साथ परमधाम वापस जा सकेगा। दुनिया के विनाश की चिन्ता न करके नये विश्व की स्थापना का जो कर्तव्य करना है, उसमें अपना समय-संकल्प-शक्ति लगाना है और उसके लिए पुरुषार्थ करना है। जो करेगा, वह पायेगा अर्थात् उस अनुसार नये विश्व में पद पायेगा।

एवर-रेडी और अचानक

ये विश्व-नाटक अचानक का बना हुआ है अर्थात् किसी आत्मा को इसके भविष्य की घटनाओं का ज्ञान न होने के कारण कोई भी घटना होती है, वह अचानक ही होती है और उस घटना में सफल होने के लिए या उसको सहन करने के लिए जो पहले से अपनी तैयारी करके रखते हैं, वे पास हो जाते हैं। इस सन्दर्भ में ही बाबा ने हमको अचानक और एवर-रेडी का पाठ पढ़ाया है और कहा है कि तुम अभी से ही तीव्र पुरुषार्थ करके अपनी सम्पूर्ण-सम्पन्न स्थिति को बनाकर रखो अर्थात् एवर-रेडी रहो, जिससे तुम अचानक के किसी भी परीक्षा में पास हो सको।

Q. शिवबाबा सदा एवर-रेडी रहने के लिए कहते हैं तो एवर-रेडी के लिए बाबा का भाव-अर्थ क्या है अर्थात् वह स्थिति क्या है और कैसे होगी, जिसके लिए हम कहें कि हम एवर-रेडी हैं? एवर-रेडी स्थिति के लिए अभीष्ट पुरुषार्थ क्या है?

बाबा सदा एवर-रेडी बनने के लिए कहते हैं तो एवर-रेडी का भाव-अर्थ ये नहीं कि हम मरने के लिए रेडी हैं या विनाश अभी हो जाये तो हम रेडी हैं या सतयुग में जाने के लिए हम मन से तैयार हैं परन्तु रेडी अर्थात् हमारी स्थिति सम्पूर्ण-सम्पन्न-सन्तुष्ट-प्रसन्नता की हो, तब कहेंगे कि एवर-रेडी हैं अथवा बाबा जो कहे, उसको करने के लिए हम तैयार हैं तो कहेंगे कि हम एवर-रेडी हैं। इसके लिए हमारी स्थिति ज्ञान-गुण-शक्तियों से सम्पन्न हो और हमारा जमा का खाता भरपूर हो। मरने के लिए रेडी हैं या सतयुग में जाने के लिए रेडी हैं या परमधाम में जाने के लिए रेडी है, वह कोई बड़ी बात नहीं लेकिन हमारी स्थिति सम्पूर्ण और सम्पन्न हो, तब कहेंगे हम रेडी हैं। बाबा ने अनेक बार कहा है कि सतयुग में पहले आने वाले सर्वगुण सम्पन्न ... अर्थात् सम्पूर्ण स्थिति को प्राप्त किये हुए होंगे और परमधाम में जाने के लिए भी आत्मा को सम्पूर्ण बनना ही है। भले ही सतयुग के आदि में भी सबके पास धन-सम्पत्ति-पद तो नम्बरवार होंगे और परमधाम में जाने वाली आत्माओं में भी नम्बरवार ही होंगी परन्तु उनमें किसी तरह का पाप का लेपक्षेप नहीं होगा, देह और देह की दुनिया की कोई आकर्षण नहीं होगी। ऐसी एवर-रेडी आत्मा की परख है कि वह जब और जहाँ चाहे संकल्प करेगी तो अपनी मूल स्थिति अर्थात् बिन्दुरूप स्थिति में स्थित हो जायेगी। इस प्रैक्टिस से हम अपनी एवर-रेडी स्थिति की जांच कर सकते हैं। हमारी सम्पूर्णता और सम्पन्नता ही हमारी एवर-रेडी स्थिति की पहचान है।

बाबा सदा कहते हैं - सब अचानक होना है अर्थात् विनाश किसी भी समय हो सकता है, शरीर

किसी भी समय छूट सकता है, इसलिए सदा एवर-रेडी रहो अर्थात् सदा अपनी सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता की स्थिति में रहो, जिससे हम अचानक के किसी भी परीक्षा में पास हो सकें। इस स्थिति की अनुभूति में रहना ही एवर-रेडी स्थिति है।

आत्मिक स्वरूप परमानन्दमय है, इसलिए अपने परमानन्दमय आत्मिक स्वरूप में सदा स्थित रहना या जब चाहें तब उस स्थिति में स्थित हो जायें तब ही कहेंगे कि हम एवर-रेडी हैं।

विनाशी वस्तु और व्यक्तियों से नष्टोमोहा और अपने अविनाशी आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर अविनाशी परमात्मा की मधुर स्मृति में सदा रहना ही एवर-रेडी स्थिति है।

इस तमोप्रधान विश्व में किसी भी समय कोई भी परीक्षा आ सकती है, उसका सामना करने और उस पर विजयी बनने के लिए तैयार रहना ही एवर-रेडी स्थिति है।

हम ईश्वरीय सेवा पर हैं, इसलिए हमारे सामने कोई भी आये और जिस आशा से आये, उसको परखकर उसकी आशा पूर्ण करने की स्थिति में सदा स्थित रहना एवर-रेडी स्थिति है।

बाबा ने हमको सारा ज्ञान दिया है, उसकी धारणा स्वरूप बनकर रहना एवर-रेडी स्थिति है, जिससे हम किसी के प्रश्न का यथोचित उत्तर देकर उसे सन्तुष्ट कर सकें।

सतयुग के आदि में आने के लिए उसके अनुरूप ज्ञान-गुण-शक्तियों से सम्पन्न बनना ही एवर-रेडी स्थिति है।

यथार्थ आत्मिक स्वरूप में स्थित आत्मा को मृत्यु-भय, मृत्यु-दुख, कर्मभोग प्रभावित नहीं कर सकता, इसलिए उनके प्रभाव से मुक्त रहना एवर-रेडी स्थिति है, इसके लिए देह से न्यारा होने का सफल अभ्यास चाहिए, जिसके लिए अव्यक्त बापदादा भी मुरली के बीच-बीच में अभ्यास कराते हैं। इसलिए संकल्प करते ही उस स्थिति में स्थित होने का सफल अभ्यास ही एवर-रेडी स्थिति है।

लक्ष्य और लक्षण को समान बनाना ही एवर-रेडी स्थिति है।

ये सब ब्राह्मण जीवन के कर्तव्य हैं, जिनको सम्पन्न करके अपनी सम्पूर्ण स्थिति में स्थित रहना एवर-रेडी स्थिति है अर्थात् बाप समान स्थिति है।

सदा साक्षी होकर इस विश्व-नाटक के हर दृष्य को देखना और ट्रस्टी बनकर पार्ट बजाते हुए निर्संकल्प और निर्विकल्प स्थिति में रहना ही एवर-रेडी स्थिति है।

इच्छा और प्राप्ति, संकल्प और स्वरूप में, चाहना और करने में सन्तुलन आना ही एवर-रेडी स्थिति है।

विश्व-नाटक के ज्ञान को यथार्थ रीति समझकर, उसके धारणा स्वरूप बनना ही एवर-रेडी स्थिति है। किसी भी घटना को देखते हुए कोई भी प्रश्न न उठे, तब कहेंगे कि एवर-रेडी हैं।

एवर-रेडी अर्थात् सम्पूर्ण और सम्पन्न स्थिति अर्थात् सम्पूर्ण निर्विकारी स्थिति में स्थित रहना।

एवर-रेडी अर्थात् हमारा सेवा का कार्य पूरा हो अर्थात् हमारी कोई भी जिम्मेवारी अधूरी न हो।

एवर-रेडी अर्थात् इच्छा मात्रम् अविद्या अर्थात् हमारी कोई भी इच्छा न हो, जिसके लिए अन्त में संकल्प चले।

एवर-रेडी अर्थात् हमारी बुद्धि में अपना आत्मिक स्वरूप, बाप और घर के अतिरिक्त और कुछ भी न हो।

एवर-रेडी अर्थात् हमारा कोई कर्म-बन्धन या कर्म-सम्बन्ध का खाता बाकी न हो, जो हमको अनत समय अपनी तरफ खींचे।

''अच्छा, अभी एक सकेण्ड में फरिश्ता बन विशेष जहाँ यह अर्थ क्वेक हुई है, वहाँ चारो तरफ फरिश्ता बन उड़ती कला द्वारा शान्ति, शक्ति और सनतुष्टता की सकाश फैलाकर आओ। एक सेकेण्ड में चक्कर लगाकर आओ।''

अ.बापदादा 4.02.2001

''सर्व शक्तियां, योग का बल, स्नेह का चुम्बक यह सब साधन समय के लिए तैयार हैं? ... तो हे विश्व-कल्याणी, विश्व-परिवर्तक आत्मायें आपके सर्व साधन एवर-रेडी हैं? सर्व शक्तियां आपके ऑर्डर में हैं? आर्डर किया अर्थात् संकल्प किया और वह शक्ति हाजिर हो जाये अर्थात् सेकेण्ड भी न लगे।'' अ.बापदादा 4.02.2001

''बाबा ने पहले से ही बता दिया है कि आश्चर्यजनक बातें होंगी लेकिन बच्चों को आश्चर्य वा क्वेश्चन मार्क न लगाये, सेकेण्ड में फुल स्टॉप लगाने का अभ्यास पक्का करना है। ... ड्रामा की हर सीन को साक्षी होकर कल्याण की भावना से देखो। देश में कुछ भी हो हमारे लिए बेहद के वैराग्य की सूचना है।''

अ.बापदादा 10.5.97 सन्देश

बाबा ने कहा कि जब बच्चों का संकल्प श्रेष्ठ है फिर स्वरूप और संकल्प में अन्तर क्यों? चाहना और करना में अन्तर पड़ जाता है। इसका कारण समझती हो कि ये अन्तर क्यों? इसकी दो बातें हैं। बच्चे त्यागी तो बने हैं लेकिन सर्वंश त्यागी बनना है और दूसरा बेहद के वैरागी बनना है। अ.बापदादा 6.6.97 सन्देश

‘‘ब्रह्मा बाप के हर कार्य के उत्साह को तो देखा ही है। ... ब्रह्मा बाप कहते हैं - बच्चों से पूछो, अगर बाप चाबी दे दे तो आप एवर-रेडी हो ? ... सभी को साथ ले जाना है। कम से कम 9 लाख तो साथ जायें। नहीं तो राज्य किस पर करेंगे। ... ब्रह्मा बाप की बच्चों प्रति यही शुभ-कामना है कि एवर-रेडी बनो और बनाओ।’’

अ.बापदादा 18.1.2000

‘‘एडवान्स पार्टी वाले कहते हैं - हम तो तैयार हैं। किस बात के लिए ... यह प्रत्यक्षता का नगाड़ा बजायें तो हम सभी प्रत्यक्ष होकर नई सृष्टि की रचना के निमित्त बनेंगे। हम तो आवाह्न कर रहे हैं कि नई सृष्टि की रचना करने वाले आयें। अभी सारा काम आपके ऊपर है।’’

अ.बापदादा 18.1.2000

‘‘बापदादा की विशेष आशा है कि सभी को कम से कम मालूम तो पड़ जाये कि हमारा बाप आया है। ... जैसा समय वैसा स्वरूप बनाना ही है, इसलिए बापदादा भी ड्रामा के बन्धन में तो है ना।’’

अ.बापदादा 3.3.2000

‘‘शिव बाप ने ब्रह्मा बाप को कहा - विनाश वा परिवर्तन करना तो एक चपटी बजाने की बात है। लेकिन आप पहले 108 नहीं, आधी माला बनाकर दो। ... आप चपटी बजायेंगे और वे तैयार हो जायेंगे। ... ब्रह्मा बाप ने कहा अभी सभी बच्चे एक विशेषता जल्दी से जल्दी धारण कर लेंगे तो माला तैयार हो जायेगी। ... निर्माण और निर्मान का बैलेन्स।’’

अ.बापदादा 19.3.2000

‘‘कुछ भी याद नहीं आये, देह भी अपनी नहीं तो और क्या अपना है। ... जब संकल्प किया कि सबकुछ तेरा तो एवर-रेडी हो गये ना। सभी ने दृढ़ संकल्प कर लिया है कि मैं बाप की और बाप मेरा। ... समय आप मालिकों का इन्तजार कर रहा है। कम से कम 9 लाख तो तैयार चाहिए ना।’’

अ.बापदादा 20.12.92 पार्टी 5

Q. बाबा ने अनेक बार कहा है - बच्चे एवर-रेडी रहो, अचानक कुछ भी हो सकता है। तो एवर-रेडी स्थिति क्या है और अचानक क्या हो सकता है अर्थात् बाबा का भाव-अर्थ क्या ? क्या बाबा ने दुनिया के विनाश के लिए अचानक शब्द बोला है ?

वास्तव में ये सारा विश्व-नाटक ही अचानक का है अर्थात् इसमें सभी घटनायें अचानक ही होती हैं और अचानक ही होने वाली हैं। अचानक होना ही इस विश्व-नाटक की शोभा है अर्थात् विशेषता है। जो आत्मायें सदा हर परिस्थिति और घटना का सामना करने के लिए तैयार रहते हैं अर्थात् एवर-रेडी रहते हैं, वे उनको सहज ही पार कर लेते हैं और विजयी बन जाते हैं। अचानक ही आत्मा पर कोई भी कर्मभोग, आता है, अचानक ही मृत्यु होती है

इसमें कोई सन्देह नहीं कि दुनिया का विनाश भी अचानक होना है, जिसके लिए बाबा ने ये भी कहा है कि जब तुम विनाश को ही भूल जायेंगे तब विनाश अचानक होगा। परन्तु बाबा ने अचानक के लिए जो उदाहरण दिये हैं, उन पर विचार करें तो इस शरीर का विनाश कब भी हो सकता है, जिसके लिए बाबा ने मम्मा का, ब्रह्मा बाबा का, दादी चन्द्रमणी आदि-आदि का उदाहरण दिया है, इसलिए हमको दुनिया के विनाश के लिए उत्सुक या प्रतीक्षा न करके हमारे शरीर का कब भी अचानक विनाश हो सकता है, इसलिए हमको एवर-रेडी रहना है।

अब एवर-रेडी अर्थात् सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता की स्थिति की अनुभूति, ब्राह्मण जीवन के कर्तव्यों की सम्पन्नता, स्वयं से और सर्व से सन्तुष्टता का सर्टीफिकेट।

एवर-रेडी अर्थात् संकल्प करते ही हम अपनी देह से न्यारे होकर अपनी अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित हो जायें। जो इस मूल स्थिति के लिए एवर-रेडी होगा, वह हर बात में सहज ही एवर-रेडी हो जायेगा और हर परिस्थिति और घटना को सहज पार कर लेगा। इसलिए ही बाबा सदा ही इस अभ्यास पर जोर देते हैं।

''समय प्रकृति द्वारा चेलेन्ज कर रहा है। समय की समीपता को कामन बात नहीं समझो। अचानक और एवर-रेडी शब्द को अपने कर्मयोगी जीवन में हर समय स्मृति में रखो। ... जितना साइलेन्स की शक्ति को स्व के प्रति प्रयोग करने की प्रैक्टिस करते रहेंगे, उतना ही औरों के प्रति भी शान्ति की शक्ति का प्रयोग होता रहेगा।''

अ.बापदादा 2.2.08

''अपने पुरुषार्थ से सन्तुष्ट हो, सम्पूर्ण होने का क्या प्लेन बनाया है ? जब अपने को बदलेंगे तब औरों की सर्विस करेंगे। ... स्व-पुरुषार्थ से सन्तुष्ट का, सर्व की सन्तुष्टता का, निमित्त बनी हुई आत्माओं से सन्तुष्टता का ... ये सभी सर्टीफिकेट धर्मराजपुरी में काम आयेंगे।... ट्रिबुनल में भी यही महारथी बैठते हैं।'' अ.बापदादा 21.1.71 पार्टी 2

Q. बाबा ने कहा एवर-रेडी अर्थात् ब्राह्मणपन के सारे कर्तव्य पूरे कर लेना, तो ब्राह्मणपन के कर्तव्य क्या-क्या है ?

जब ब्राह्मणपन के कर्तव्यों का ज्ञान होगा तब ही हम उन कर्तव्यों को सम्पन्न कर सकेंगे, इसलिए उनका स्पष्ट ज्ञान होना भी अति आवश्यक है। सर्व आत्माओं को बाप का सन्देश देना, सर्व पापों का खाता भस्म कर सम्पूर्ण और सम्पन्न बनना, राग-द्वेष, भय-चिन्ता, ईर्ष्या-द्वेष, इच्छा-आकांक्षा आदि से मुक्त हो सदा अतीन्द्रिय सुख में रहना, एक बाप की अव्यभिचारी याद अर्थात् देह और दुनिया की स्मृति से मुक्त होना।

ब्राह्मण अर्थात् सदा अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित रहना, दूसरों को भी उनके आत्मिक स्वरूप मे देखना और उनको भी उनके आत्मिक स्वरूप में स्थिति कर आत्मिक स्वरूप की अनुभूति कराना, अतीन्द्रिय सुख का अनुभव कराना। ईश्वरीय और दैवी संस्कार-स्वभाव को धारण करना।

''अपने आप से पूछो ब्राह्मणपन के जो कर्तव्य करने हैं, वे सभी किये हैं। ब्राह्मण जीवन के सर्व कर्तव्य सम्पन्न करने के बाद ही सम्पूर्ण बनेंगे।... अपने ब्राह्मणपन के कर्तव्य को सम्पन्न करने के लिए अपने को सम्पूर्ण बनाओ।... हिम्मते बच्चे मदद दे बाप। ... अब अपने सम्पन्न स्वरूप को अनुभव करने का जिद्द करो।'' अ.बापदादा 21.1.71

''जो तन से, मन से, सहयोग से सबसे नम्बरवन हो और हर कार्य में हर समय एवर-रेडी हो, इसको कहा जाता है वारिस। ... हर कार्य में नम्बर आगे आये।''

अ.बापदादा 31.12.98

चेक करो जैसे तूफान आये, भूकम्प आये ... आप श्रेष्ठ आत्माओं के पास जो साधन हैं - सर्व शक्तियां, योग का बल, स्नेह का चुम्बक यह सब साधन समय के लिए तैयार हैं? ... एवर-रेडी बनना सिर्फ अपने अशरीरी बनने के लिए नहीं। वह तो बनना ही है लेकिन जो साधन स्वराज्य अधिकार से प्राप्त हुए हैं, परमात्म वर्से में मिले हैं, वे सब एवर-रेडी हैं, जो समय पर किसी भी आत्मा को दे सको? अ.बापदादा 4.02.2001

Q. सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता और एवर-रेडी स्थिति में क्या सामन्जस्य है?

जो आत्मा सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता की स्थिति में होगी वह हर समय एवर-रेडी स्थिति में होगी, उसको किसी भी कार्य के लिए संकल्प-विकल्प नहीं होगा। संकल्प ही वह उठेगा, जो पूरा होने वाला होगा और उसके सामने कार्य भी वही आयेगा, जिसको करने के लिए वह समर्थ होगी।

Q. एवर-रेडी का भाव-अर्थ क्या है, वह स्थिति क्या है?

संकल्प करते ही बाप समान अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित हो जाये, दूसरा संकल्प भी न आये। हम हैं ही आत्मा, तो उसमें स्थित होने के संकल्प का भी कोई प्रश्न ही नहीं है। विश्व-नाटक की यथार्थता को समझ ईर्ष्या, राग-द्वेष से मुक्त नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप होंगे तब ही यह स्थिति होगी।

''तो इस वर्ष एवर-रेडी। बाप के दिल की आशाओं को पूर्ण करने वाले आशाओं के दीपक बनना ही है। बाप की आशाओं को तो जानते ही हो। ... बापदादा बच्चों के बिना अकेला जा

नहीं सकता, ब्रह्मा बाप भी बच्चों के लिए मुक्ति का गेट खोलने के लिए इन्तजार कर रहे हैं, एडवान्स पार्टी भी इन्तजार कर रही है। आप इन्तजार करने वाले नहीं, लेकिन इन्तजाम करने वाले हो।'' अ.बापदादा 2.4.08

''जो बच्चे बाप के कर्तव्य में निमित्त बने हुए हैं, उनको यह बात हर वक्त याद रखनी है कि हमें हर समय हर हालत में एवर-रेडी और आलराउण्डर होना है ... आप निमित्त बने हुए बच्चों को यह स्लोगन याद रखना चाहिए कि हम जो कर्म करेंगे, मुझे देख और सभी करेंगे। हर समय अपने को ऐसा समझो जैसे हम ड्रामा की स्टेज पर सभी के सामने पार्ट बजा रहे हैं।''

अ.बापदादा 18.5.69

Q. सम्पूर्णता का दर्पण क्या है ?

सम्पूर्णता का दर्पण है सम्पन्नता और जहाँ सम्पन्नता होती है, वहाँ सन्तुष्टता और प्रसन्नता निश्चित ही होती है। प्रसन्नता हर आत्मा के जीवन का लक्ष्य है, उसका आधार है सम्पूर्णता अर्थात् सर्व प्राप्तियों से सम्पन्न स्थिति।

''कर्मातीत अवस्था वाले को कोई दुख हो न सके। वह इस छी छी दुनिया में रह न सकें। वह चले जायेंगे (विनाश के समय)। बाकी जो रहेंगे, वह कर्मातीत न बनें होंगे .. विनाश के समय भी कुछ तो बचेंगे।... रेगुलर मुरली पढ़ते रहेंगे तो घुटका आदि सब मिट जायेंगे।''

सा.बाबा 27.12.68

''बाप तुमको मूलवतन, सूक्ष्मवतन, स्थूलवतन और सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त की फुल नॉलेज देते हैं, जिससे तुम फुल बनते हो। देवी-देवतायें हैं ही फुल ... तुम सर्वशक्तिवान बाप से योग लगाकर, शक्ति लेकर माया पर विजय पाते हो। समझते हो - अभी हमारा 84 जन्मों का ड्रामा पूरा होता है।'' सा.बाबा 8.5.08 रिवा.

Q. सम्पन्नता का आधार क्या है ?

सम्पन्नता का आधार है सम्पूर्णता अर्थात् ईश्वरीय ज्ञान, गुण, शक्तियों से परिपूर्ण स्थिति। परमात्मा पिता आया ही है हम आत्माओं को ज्ञान, गुण, शक्तियों से सम्पन्न बनाने। हर आत्मा अपने मूल स्वरूप में सम्पन्नता अर्थात् सम्पूर्ण है।

''जैसे सुनना सहज लगता है, ऐसे ही सुनने से परे स्वीट साइलेन्स की स्थिति भी जब चाहो, जितना समय चाहो, उतना समय मालिक होकर ... आत्मा राजा बनकर मन-बुद्धि-संस्कार को अपने कन्ट्रोल में कर सकते हो ? मन-बुद्धि-संस्कार तीनों के मालिक बनकर ऑर्डर करो - स्वीट साइलेन्स और स्वीट साइलेन्स का अनुभव करो। ... अभी-अभी अधिकारी की स्टेज

पर स्थित हो जाओ।'' अ.बापदादा 30.11.07

''समय की रफ्तार बहुत तीव्र गति से आगे बढ़ रही है। समय की गति को जानने वाले मास्टर सर्वशक्तिवान अपने को चेक करो कि हमारी गति तीव्र है? ... तीव्र पुरुषार्थी के लक्षण विशेष दो हैं - एक है नष्टोमोहा और दूसरा है एवर-रेडी। सबसे पहले देहभान और देहाभिमान से नष्टोमोहा। जो इस देहभान और देहाभिमान से नष्टोमोहा है, उसके लिए और बातों में नष्टोमोहा होना मुश्किल नहीं है।'' अ.बापदादा 15.12.07

''एवर-रेडी का अर्थ है - मन-वचन-कर्म, सम्बन्ध-सम्पर्क सब में एवर-रेडी। समय का अचानक आर्डर हो तो एवर-रेडी। और अचानक ही होना है।... इसलिए बापदादा समय की समीपता का बार-बार इशारा दे रहा है।'' अ.बापदादा 15.12.07

''विंग्स - कोई स्कूल, कालेज इस आध्यात्मिक नॉलेज को मानें और सब क्लासेज में इसको एड करें। ... ऐसे सभी वर्ग वाले विशेष रिजल्ट का ग्रुप निकालें। ... कोई वारिस होगा, कोई माइक होगा, ग्रुप में दोनों प्रकार के हो सकते हैं। ... लेकिन स्व-उन्नति, स्व-परिवर्तन, स्व के अटेन्शन की सेवा और विश्व सेवा दोनों का बैलेन्स चाहिए। ... आपका बैलेन्स होगा और विश्व में नारा लगेगा।'' अ.बापदादा 15.12.07

बैलेन्स, समान स्थिति और एकरस स्थिति

Q. किन बातों में बैलेन्स रखने के लिए और किन परिस्थितियों में एकरस स्थिति रखने के लिए बाबा ने कहा है?

बाबा ने कहा है - बैलेन्स से ब्लेसिंग्स मिलती हैं। तो किन-किन बातों में बैलेन्स चाहिए, वह भी बुद्धि में रहेगा तो ही बैलेन्स स्थापित करने का पुरुषार्थ कर सकेंगे। बैलेन्स अर्थात् दोनों में समानता हो अर्थात् जब चाहें तब दोनों में किसी भी स्थिति में सहज स्थित हो जायें। ऐसे ही बाबा ने कुछ विशेष विपरीत परिस्थितियों में एकरस स्थिति धारण करने की श्रीमत दी है, तो उनका भी ज्ञान होना और बुद्धि में जाग्रत रहना अति आवश्यक है।

बैलेन्स अर्थात् समानता, जिससे परमात्मा की और सर्व की ब्लेसिंग्स मिले, उसके लिए -

आत्मा और देह अर्थात् आध्यात्मिकता और भौतिकता का, स्व-सेवा और विश्व-सेवा का, ज्ञान और योग का, भावना और विवेक का, लौकिक और अलौकिक का, अधिकार और कर्तव्य का, गम्भीरता और रमणीकता का, साकार और निराकार की स्मृति का, लव एण्ड लॉ का,

निर्मानता और अथॉरिटी का, रहम और रुहाब का, न्यारे और प्यारे का, स्नेह और शक्ति का, सोचने और करने का, आदर्श और यथार्थ का, शिक्षा और क्षमा का, मेडिसिन और मेडिटेशन का, स्वमान और सम्मान का अर्थात् स्वमान में रहना है और सर्व को सम्मान देना है, योग और सेवा का, प्रश्नों का उत्तर देने-खोजने और प्रश्नों से पार निर्संकल्प स्थिति में स्थित होने का, निराकारी-आकारी-साकारी स्थिति में सहज स्थित होने का, निर्संकल्प और निविकल्प स्थिति का बैलेन्स, कथनी और करनी में समानता, संकल्प को स्टार्ट करने और संकल्प को स्टॉप करने में समानता अर्थात् बैलेन्स, में बैलेन्स रखने से आत्मा को अपनी, परमात्मा की और अन्य आत्माओं की ब्लेसिंग मिलती हैं अर्थात् आत्म सन्तुष्टि (Self Satisfection) भी होती है तो अन्य आत्माओं को भी सन्तुष्टि होती है, जिससे दूसरों की दुआयें भी मिलती हैं। अपने को अपनी दुआयें भी मिलती हैं अर्थात् सन्तुष्टि होगी कि हमारा पुरुषार्थ सही है। बैलेन्स अर्थात् जब चाहें तब उस स्थिति में स्थित हो जायें, उसके लिए समय न लगे, संकल्प न चले।

''ज्ञान सहित जो प्रेम होता है, वही यथार्थ प्रेम होता है। ... आप सोचते होंगे कि शिवबाबा बहुत कठोर है लेकिन जो होता है, उसमें रहस्य और कल्याण है। ... बापदादा में शुद्ध मोह बच्चों से भी जास्ती है लेकिन बापदादा और बच्चों में एक अन्तर है। बापदादा और बच्चों में एक अन्तर है। वह शुद्ध मोह में आते भी निर्मोही है और बच्चे मोह में हैं तो उसका स्वरूप बन जाते हैं। या तो प्यारे बनते हैं या तो न्यारे बनते हैं लेकिन बापदादा न्यारे और प्यारे साथ-साथ बनते हैं। यह अन्तर जो रहा हुआ है, वह मिटायेंगे तो अन्तर्मुख, अव्यक्त, अलौकिक बन जायेंगे।''

अ.बापदादा 2.2.69

एकरस स्थिति रखना

मान-अपमान, निन्दा-स्तुति, जय-पराजय, लाभ-हानि, जीवन-मृत्यु, प्राप्ति-अप्राप्ति, शत्रु-मित्र, अपने-पराये के सम्बन्ध में कोई भी बात आये तो हमारी एकरस स्थिति रहे, जब ही जीवन सुखी रहेगा और आध्यात्मिक जीवन की सफलता के लिए यथार्थ पुरुषार्थ कर सकेंगे।

''सेकेण्ड में निर्णय हो और सेकेण्ड में कार्य को प्रैक्टिकल में करके सफल करो। सोचना और करना - इसका भी बैलेन्स चाहिए। ... कई सोचते बहुत हैं लेकिन जितना सोचते हैं, उतना करते नहीं हैं और कई फिर करने में लग जाते हैं और सोचते पीछे हैं कि ठीक किया या नहीं ? ... तो सोचना और करना दोनों साथ-साथ हों।'' अ.बापदादा 25.2.91

''ज्ञानयुक्त रहम के साथ-साथ स्वयं की रुहानियत का रुहाब भी अवश्य होता है। उसमें रहम

और रुहाब दोनों का बैलेन्स रहता है। ... ज्ञान सहित रहमदिल आत्मा कभी भी किसी के ऊपर चाहे गुणों के ऊपर, चाहे सेवा के ऊपर, चाहे किसी प्रकार के सहयोग प्राप्त होने के कारण आत्मा पर प्रभावित नहीं हो सकती।'' अ.बापदादा 31.3.90

''जब तक किसको अनुभव नहीं होता है, तब तक स्टूडेण्ट नहीं बन सकता। ... सिर्फ सन्देश वाले नहीं लेकिन रेग्यूलर कुछ न कुछ अनुभूति करने वाले बनेंगे। ... ऐसी दवाई दो, जो बीमारी का नाम-निशान नहीं रहे। वह है मेडिटेशन। ... तो मेडिसिन और मेडिटेशन दोनों में बैलेन्स हो।'' अ.बापदादा 15.12.99

''योग और सेवा का बैलेन्स हो, योगी जीवन हो, कर्म करते भी योग हो, तब सफलता होगी।'' 25.10.07 अ.बापदादा का सन्देश

* बाबा ने जो बात कही है, उसे यथार्थ रीति से समझने और अनुभव करने के लिए हमको अपने को उन परिस्थितयों में स्थित करना होगा, उसके लिए अहंकार और हीनता से मुक्त होंगे, तब ही वह अनुभव होगा। जब हमारा दिल बाप के दिल से मिला होता है, तब हमको बाप की बात की यथार्थता का अनुभव होता है क्योंकि उस समय हमारी स्थिति अहंकार-हीनता से मुक्त निर्संकल्प-निर्विकल्प स्थिति में होती है।

''जब चाहो तब संकल्प में आओ, विस्तार में आओ और जब चाहो तब विस्तार को फुल स्टॉप में समा दो। स्टार्ट करने और स्टॉप करने की दोनों ही शक्तियां समान रूप में हैं? ... ऐसे कर्मेन्द्रिय जीत बनो तब प्रकृतिजीत बन कर्मातीत स्थिति के आसनधारी सो विश्व-राज्य अधिकारी बन सकेंगे।'' अ.बापदादा 18.1.08 रिवा.

''तुम्हारी कथनी और करनी एक जैसी होनी चाहिए। ... जिसका अशरीरी बनने का बहुत पुरुषार्थ होगा, वे ही अन्त में कर्मातीत अवस्था को पा सकेंगे।... कर्मेन्द्रियां वश होती जायेंगी, इसको ही कर्मातीत अवस्था कहा जाता है।''

सा.बाबा 18.1.08 रिवा.

''लक्ष्य और लक्षण समान हों। ... अपना खज़ाना अपने ही काम में नहीं आये तो विश्व का खज़ाना क्या सम्भालेंगे! इसलिए सर्व खज़ानों से सम्पन्न बनो और विशेष वर्तमान समय यही सहज पुरुषार्थ करो कि सर्व से, बापदादा से हर समय दुआयें लेते रहें।''

अ.बापदादा 30.11.92

''स्व-उन्नति और सेवा की उन्नति दोनों का बैलेन्स ... बैलेन्स की प्राप्ति है - ब्लेसिंग्स। बैलेन्स वाले को ब्लेसिंग नहीं मिले, यह हो नहीं सकता।''

अ.बापदादा 10.12.92 डबल विदेशी

''वायदे करने वाले तो बहुत हैं लेकिन निभाने में नम्बरवार हो जाते हैं। तो संकल्प और कर्म को प्लॉन और प्रक्टिकल दोनों में समान बनाओ।... व्यर्थ के समय-संकल्प को जमा के खाते में जमा करो।''

अ.बापदादा 30.11.99

''अभी लक्ष्य और लक्षण में अन्तर है। जब लक्ष्य और लक्षण समान हो जायेंगे तो लक्ष्य प्रैक्टिकल में आ जायेगा। ... उसके लिए पुरुषार्थ में तीव्रता चाहिए। पुरुषार्थ है लेकिन तीव्र पुरुषार्थ चाहिए। तीव्रता की दृढ़ता की एडीशन करो।''

अ.बापदादा 17.3.07

''गम्भीर बनो लेकिन अन्दर गम्भीरता हो, बाहर चेहरा मुस्कराता हो। ... ब्रह्मा बाप का मुस्कराना, जगदम्बा का मुस्कराना, अपनी दादी का मुस्कराना याद है ना! ... जोर से हंसना नहीं, मुस्कराना है क्योंकि बापदादा को अभी तीव्र पुरुषार्थ चाहिए।''

अ.बापदादा 17.3.07

''हमेशा स्व-सेवा और विश्व-सेवा दोनों का बैलेन्स रखो, एक-दो को सेवा का उमंग दिलाओ लेकिन साथ में स्व को उमंग-उल्हास भी दिलाओ। बैलेन्स रखो। बैलेन्स करने से ब्लेसिंग मिलेंगी।''

अ.बापदादा 17.3.07

''ब्राह्मण कल्चर है ही स्वमान में रहो और स्व-राज्य अधिकारी बनो। ... सच्ची और साफ दिल पर बाप राज़ी होता है। ... जो प्लेन बनाये, उनको प्रैक्टिकल में लाना। सिर्फ एक बात याद रखना कि सेवा और स्व-उन्नति के बैलेन्स में अन्तर नहीं आये।''

अ.बापदादा 23.10.99

''ई-मेल ... सिर्फ सेवा का साधन समझकर यूज़ करना, साधनों के वश नहीं होना। ... आदि में भी कोई इतने साधन नहीं थे और अन्त में भी नहीं रहेंगे। ... साधन के पीछे साधना कम नहीं हो। ... जैसे एक सेकेण्ड में साधन यूज़ करते हो, ऐसे ही बीच-बीच में कुछ समय साधना के लिए भी निकालो।''

अ.बापदादा 23.10.99

''सेवा के बीच-बीच में स्व-उन्नति या साधना न करने से थकावट का प्रभाव होता है। बुद्धि भी थकती है तो हाथ-पांव भी थकता है। बीच-बीच में अगर साधना के लिए समय निकालो तो जो थकावट होती है, वह दूर हो जाये। ... एक्शन-कान्शस हो जाते हो तो एक्शन-कान्शस की मार्क्स तो मिलती है, वेस्ट तो नहीं जाता है लेकिन सोल-कान्शस की मार्कस और एक्शन-कान्शस की मार्क्स में अन्तर होगा ना।''

अ.बापदादा 23.10.99

‘‘इस नये वर्ष में ब्रह्मा बाप के द्वारा उच्चारे हुए महावाक्य सदा याद रखना - निराकारी, निरहंकारी, निर्विकारी और साथ में नव-निर्माणधारी। सदा निर्मान और निर्माण के कर्तव्य का बैलेन्स रखते उड़ते रहना।... सदा ब्रह्मा बाप को हर कदम में फॉलो फादर करते रहना।’’

अ.बापदादा 31.12.99

‘‘मालिक के साथ बालक भी हो और बालक के साथ मालिक भी हो। बालक बनने से सदा बेफिकर, डबल-लाइट और मालिक अनुभव करने से मालिकपन का रुहानी नशा रहता है। ... अभी-अभी मालिक और अभी-अभी बालक ... यह सीढ़ी है। कभी चढ़ो और कभी उतरो। इससे सदा हल्के रहेंगे।’’

अ.बापदादा 31.12.92 पार्टी 4

‘‘याद और सेवा का बैलेन्स सदा आगे बढ़ाता है। ... प्रवृत्ति में रहते सभी न्यारे और प्यारे रहते हो ना। ... संकल्प में भी बन्धन-मुक्त।’’

अ.बापदादा 31.12.92 पार्टी 4

‘‘सदा हर कर्म में फॉलो ब्रह्मा बाप। ब्रह्मा बाप भी सदा ‘हर्षित और गम्भीर’ दोनों के बैलेन्स की एकरस स्थिति में रहे।’’

अ.बापदादा 31.12.92 पार्टी 5 डबल विदेशी

बाबा ने कहा - मैं देख रहा था कि बच्चों का स्व-उन्नति और सेवा का बैलेन्स कितना है। जो बैलेन्स को जानता है, उसको करामत कहा जाता है। मैं देख रहा था कि बच्चों में बैलेन्स की करामत कितनी है? मैंने कहा बाबा आपको क्या दिखाई दिया, तो बाबा ने कहा बैलेन्स की अभी भी आवश्यकता है। ... बैलेन्स की जीवन हो। सेवा और याद के साथ कर्मयोगी जीवन का महत्व हो तब सिद्धि स्वरूप बनेंगे।

25.10.07 सन्देश गुल्जार दादी

‘‘निराकार स्नेही जो होते हैं, उनकी यह विशेषता ज्यादा होती है कि वे निराकारी स्थिति में ज्यादा स्थित होंगे। साकार स्नेही चरित्रवान होंगे, उनका एक-एक चरित्र सर्विसएबुल होगा। दूसरा वह औरों को भी स्नेह में ज्यादा ला सकेंगे। इसलिए निराकारी और निरहंकारी दोनों समान चाहिए।’’ अ.बापदादा 21.1.71

‘‘बालकपन और मालिकपन - सर्विस के सम्बन्ध में बालकपन और अपने पुरुषार्थ की स्थिति में मालिकपन अच्छा है। सम्पर्क और सर्विस में बालकपन तथा याद की यात्रा और मन्थन करने में मालिकपन चाहिए। साथियों और संगठन में बालकपन तथा व्यक्तिगत में मालिकपन - यह है युक्तियुक्त चलना।’’ अ.बापदादा 21.1.71

‘‘आप शक्तियों में प्रेम और शक्ति के दोनों गुण समान होने चाहिए। जितना शक्ति स्वरूप, उतना ही प्रेम स्वरूप। ... यह है शक्तिपन की अन्तिम सम्पूर्णता की निशानी।’’

अ.बापदादा 13.3.69

Q. बाबा ने अनेक बार यह श्रीमत दी है कि स्व-उन्नति और सेवा की उन्नति का बैलेन्स रखो ? तो स्वउन्नति क्या है अर्थात् उसका मापदण्ड क्या है ? स्व-स्थिति और सेवा की उन्नति के बैलेन्स का मापदण्ड क्या है ?

स्व-उन्नति अर्थात् आत्मा जब जो संकल्प करे, उसमें सहज स्थित हो जाये। आत्मा जो चाहे मन-बुद्धि वही कर्म करे। आत्मा सदा राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति, इच्छा-आकांक्षा से मुक्त रहकर सदा परमानन्द का अनुभव करे क्योंकि आत्मिक स्वरूप इन सबसे मुक्त परमानन्दमय है।

साथ-साथ बाबा ने सेवा के लिए भी कहा है। सेवा करने से आत्माओं की जो दुआयें मिलती हैं, ज्ञान का चिन्तन चलता है, वह भी आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर परमानन्द का अनुभव करने में बहुत मदद करता है।

स्व-उन्नति और सेवा की उन्नति का मापदण्ड है कि आत्मा स्वयं भी अतीन्द्रिय सुख में रहेगी और सन्तुष्टता का अनुभव करेगी तथा जिन आत्माओं की सेवा करेंगे, वे भी अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करेंगे और सन्तुष्टता का अनुभव करेंगे तथा सम्बन्ध-सम्पर्क में आने वाली आत्मायें भी सन्तुष्टता का अनुभव करेंगी, प्रापति का अनुभव करेंगी।।

‘‘हिम्मत नहीं है, इसलिए बीच-बीच में कुछ न कुछ ऐसा परवश होकर कर लेते हैं लेकिन उनको भी कुछ शिक्षा, कुछ रहम, कुछ आत्मिक स्नेह की आवश्यकता है। ... बैलेन्स हो। शिक्षा के साथ हिम्मत और स्नेह दिल का, बाहर का नहीं लेकिन दिल का स्नेह दोनों का बैलेन्स रखकर शिक्षा देना है।’’

अ.बापदादा 30.11.07 दादियों से

‘‘प्रत्यक्षता और प्रतिज्ञा - दोनों का बैलेन्स सर्व आत्माओं को बापदादा द्वारा ब्लेसिंग्स प्राप्त होने का आधार है। ... जान चली जाये लेकिन प्रतिज्ञा नहीं जा सकती। ... प्रतिज्ञा दृढ़ होने के बजाये कमजोर होने का वा प्रतिज्ञा में लूज़ होने का एक ही मूल कारण है - बहानेबाजी।’’

अ.बापदादा 18.1.93

‘‘बालकपन भी पूरा तो मालिकपन भी पूरा रखना है। इसलिए कहा कि संगम पर ठहरना है। ... बालकपन अर्थात् निर्संकल्प हो ... मालिकपन अर्थात् मालिक बन अपनी राय देना।’’

अ.बापदादा 17.4.69

विभिन्न धर्म और उनकी स्थापना

Q. बाप आकर जो धर्म स्थापन करते हैं और अन्य धर्म स्थापक आकर जो धर्म स्थापन करते हैं तो दोनों के धर्म स्थापन करने के विधि-विधान में क्या विशेष अन्तर होता है ?

परमात्मा आकर जब धर्म स्थापन करते हैं तो पुरानी दुनिया खत्म होती है और धर्म के साथ नई दुनिया भी स्थापन होती है। परमात्मा के आने से सर्वात्माओं को मुक्ति-जीवनमुक्ति मिलती है, सर्वात्मायें घर परमधाम में जाती हैं और सृष्टि का नया चक्र आरम्भ होता है।

परमात्मा आकर धर्म और राजाई दोनों की स्थापना करते हैं, इसलिए सतयुग-त्रेता में धर्म-सत्ता और राज-सत्ता दोनों एक के ही हाथों में होती है अर्थात् सर्व आत्माओं में दोनों ही गुणों का बैलेन्स होता है। इसलिए परमात्मा जो ज्ञान देते हैं, उसको रिलीजियो-पॉलिटीकल नॉलेज कहा जाता है।धर्म-स्थापक जो धर्म स्थापन करते हैं, उनकी भल बाद में राजाई तो चलती है परन्तु उनकी धर्म-सत्ता और राज-सत्ता अलग-अलग हाथों में होती है।

परमात्मा जो धर्म स्थापन करते हैं तो आत्मायें परमधाम में वापस जाती हैं परन्तु धर्म-स्थापक जो धर्म स्थापन करते हैं, तो उनके धर्म की आत्मायें ऊपर से नीचे आती हैं।

परमात्मा जब आते हैं तो दुनिया में राज-सत्ता प्रजातन्त्र में बदल जाती है, जिस प्रजातन्त्र से परमात्मा राज-तन्त्र की स्थापना करते हैं।

परमात्मा आकर आत्मा, परमात्मा, सृष्टि-चक्र, कल्प-वृक्ष, कर्म की गहन गति, योग आदि आदि का सारा ज्ञान देते हैं, जिससे आत्माओं की और विश्व की चढ़ती कला होती है, जबकि धर्म-पिता आकर केवल गुणों का अर्थात् धारणाओं का ही ज्ञान देते हैं, जिससे धर्म की स्थापना तो होती है और उसके आधार पर आत्माओं की और विश्व की उतरती कला की गति कुछ मन्द तो होती है, परन्तु उतरती कला रुकती नहीं है और न ही कोई आत्मा चढ़ती कला में जाती है और न विश्व की चढ़ती कला होती है।

जब परमात्मा धर्म-स्थापन करने आते हैं तो अधिकांश आत्मायें इस धरा पर होती हैं और जो रही हुई होती हैं, वे भी उनके होते हुए ही इस धरा पर आ जाती हैं परन्तु धर्म-स्थापकों के धर्म-स्थापनार्थ आती हैं तो सर्व आत्मायें नीचे नहीं आती हैं।

परमात्मा के धर्म-स्थापनार्थ आने के बाद विनाश होता है और विश्व में एक ही धर्म वंश रह जाता है, जब कि अन्य धर्म-स्थापकों के आने के बाद विभिन्न धर्मवंश बढ़ते ही जाते हैं।

परमात्मा आकर सभी धर्मवंशों का ज्ञान देते हैं, परन्तु अन्य कोई धर्म-स्थापक किसी

अन्य धर्म का ज्ञान नहीं देता है।

परमात्मा जब धर्म स्थापन करते हैं तो बताते हैं कि मैं धर्म की स्थापना करने आया हूँ परन्तु कोई भी धर्म-स्थापक उस समय नहीं कहता कि मैं कोई नया धर्म स्थापन करने आया हूँ। उनके धर्म की पहचान और नामकरण तो बाद में होता है।

परमात्मा आकर आत्माओं के साथ जड़-जंगम प्रकृति को भी पावन बनाते हैं परन्तु कोई और धर्म-स्थापक ऐसा न ही करता है और न ही कर सकता है।

''अभी दैवी राजधानी स्थापन हो रही है। बाप आकर सबको राज्य-भाग्य देते हैं। और कोई धर्म स्थापन करने वाले राज्य-भाग्य नहीं दे सकते हैं। ... वे सिर्फ धर्म स्थापन करते हैं, फिर उनके धर्म की वृद्धि होती है। ... उनके पिछाड़ी उनके धर्म की आत्मायें नीचे उतरती हैं। सबकी सद्गति करने वाला एक शिवबाबा है।''

सा.बाबा 24.4.08 रिवा.

Q. दूसरे धर्म-पितायें आते हैं तो वे भी परकाया में प्रवेश करते हैं परन्तु उससे निकल सकते हैं या नहीं ? यदि नहीं निकल सकते हैं तो शंकराचार्य का परकाया प्रवेश, मुसलमान धर्म में कहते कि कोई फरिश्ता आता था और कुरान की आयतें आदि सुनाकर जाता था - यह सब क्या है ?

दूसरे धर्म-पितायें आते हैं तो वे भी परकाया में प्रवेश करते हैं, उससे निकल भी सकते हैं परन्तु वे सूक्ष्म शरीर के साथ ही रहते हैं। सूक्ष्म शरीर से निकलकर वापस परमधाम नहीं जा सकते। उस सूक्ष्म शरीर के साथ ही इस आकाश तत्व में विचरण कर सकते हैं, अपने धर्म की आत्माओं की सेवा करते हैं। उस सूक्ष्म शरीर के साथ ही शंकराचार्य ने परकाया प्रवेश किया और मुसलमान धर्म में जो फरिश्ते का गायन है, उसी का प्रतिरूप है। उस समय पुरानी आत्मा और नई धर्म-स्थापक की आत्मा सूक्ष्म और स्थूल दोनों में साथ-साथ ही रहती है। ब्रह्मा बाबा और शिवबाबा के समान अलग-अलग नहीं रह सकती और कार्य नहीं कर सकती है।

''बीज को देखने से सारा झाड़ बुद्धि में आ जाता है। बाप इस झाड़ का बीजरूप है, उनको इस झाड़ का और सृष्टि-चक्र का सारा नॉलेज है। ... अभी तुम बीज और झाड़ दोनों को जानते हो। ... यहाँ तुम्हारा नया झाड़ स्थापन होता है, इसलिए माया भी सामना करती है। दूसरे धर्म वालों का ऐसा नहीं होता है। उसकी आत्मायें तो ऊपर से आती हैं, पार्ट बजाने।''

सा.बाबा 24.10.06 रिवा.

Q. देवी-देवता धर्म वालों के लिए बाबा ने श्याम-सुन्दर क्यों कहा, जबकि सभी धर्म वाले

पहले पावन फिर पतित बनते हैं?

''जैसे बाप समझाते हैं - श्याम-सुन्दर। यह देवी-देवताओं के लिए है। जब वे सतोप्रधान से तमोप्रधान बनते हैं तो वे ही सुन्दर से श्याम बनते हैं। ऐसे श्याम-सुन्दर और कोई धर्म में नहीं बनते हैं। ... इण्डिया वालों के फीचर्स बदली होते जाते हैं। उन्होंके लिए ही श्याम-सुन्दर का गायन है, और कोई धर्म वालों के लिए नहीं।''

सा.बाबा 10.3.04 रिवा.

शरीर और आत्मा दोनों किसी और धर्म वाले के पावन नहीं होते, केवल भारत में देवी-देवताओं के ही होते हैं और भारतवासी ही द्वापर से पतित बनते हैं तो आत्मा और शरीर दोनों पतित बन जाते हैं। इसलिए उनके लिए ही श्याम-सुन्दर कहा जा सकता है। दूसरे धर्म वंश की आत्मायें जब आती हैं तो उनकी आत्मा पावन होती परन्तु शरीर तो पतित बीज से ही बनता है।

''(गीता में) भूल से कृष्ण का नाम डाल दिया है, होना चाहिए परमात्मा का। बाप ने कहा है धर्म स्थापन करने वाले गर्भ से पैदा हो न सके। वह आत्मा प्रवेश करती है .. प्योर आत्मा प्रवेश करती है जैसे बाबा इसमें प्रवेश हो धर्म स्थापन कर रहे हैं। पतित कोई धर्म स्थापन कर न सके।''

सा.बाबा 29.6.71 रिवा.

Q. देवी-देवता धर्म की स्थापना कौन करता है अर्थात् शिवबाबा या ब्रह्मा बाबा और दोनों के कर्तव्य में क्या अन्तर अर्थात् कौन क्या करता है क्योंकि शिवबाबा तो सतयुग में पालना करने आते ही नहीं हैं?

Q. परमपिता परमात्मा और ब्रह्मा दोनों को क्रियेटर कहा जाता है तो एक क्रियेशन के दो क्रियेटर कैसे हुए अथवा परमपिता परमात्मा किसका क्रियेटर है और प्रजापिता ब्रह्मा किसका क्रियेटर है?

परमपिता परमात्मा शिवबाबा है नई दुनिया का क्रियेटर क्योंकि पुरानी दुनिया को नया बनाना शिवबाबा का ही काम है और प्रजापिता ब्रह्मा है देवी-देवता धर्म का क्रियेटर अर्थात् स्थापक क्योंकि वह शिवबाबा के द्वारा दिये गये ज्ञान की धारणा करके आदर्श बनकर दिखाता है, जिससे देवी-देवता धर्म की स्थापना होती है। शिवबाबा ने भी कहा है - जो स्थापना करते हैं, उनको ही पालना भी करनी है तो ही देवी-देवता धर्म की स्थापना करके, उसकी नारायण के रूप में पालना करते हैं।

''परमात्मा प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा नई सृष्टि रचते हैं। ... सृष्टि कैसे रची जाती है, एडम को

आदि देव ब्रह्मा कहेंगे। परन्तु वह क्रियेटर नहीं है। ... रचयिता है निराकार शिवबाबा।''

सा.बाबा 14.5.08 रिवा.

''यह है सबका बाप, सर्व का पतित-पावन। सिर्फ मनुष्यों का नहीं, 5 तत्वों का भी है। सर्व की सद्गति करने वाला है ऊंचे ते ऊंचा बाप। सृष्टि में महिमा करने लायक एक बाप ही है, दूसरा न कोई। ... धर्म स्थापकों की क्या महिमा है। धर्म स्थापक तो अपने धर्म वालों को नीचे ले आने के निमित्त बनते हैं। ... जो धर्म स्थापन करते हैं, उनको फिर पालना जरूर करनी है।''

सा.बाबा 14.2.07 रिवा.

''तुम जानते हो ब्रह्मा द्वारा ब्राह्मण, देवता, क्षत्रिय धर्म की स्थापना हो रही है। जिससे स्थापना हुई, उनको ही फिर पालना करनी है।'' सा.बाबा 22.3.07 रिवा.

''अभी तुम समझते हो - हम बाप के साथ बैठे हैं। वह सबसे ऊंच ते ऊंच परमपिता परमात्मा है, फिर सेकेण्ड नम्बर में ब्रह्मा है। वह रुहानी पिता, यह जिस्मानी पिता।... इसमें दोनों कम्बाइण्ड हैं। वह हम आत्माओं का बाप और यह फिर है मनुष्यों का पिता, प्रजापिता ब्रह्मा।''

सा.बाबा 3.6.08 रिवा.

''क्राइस्ट क्रिश्चियन्स का जिस्मानी बाप हुआ। रुहानी बाप सभी एक ही है। वह निराकार बाप आकर साकार शरीर का लोन लेते हैं।'' सा.बाबा 3.6.08 रिवा.

Q. राजाई तो सब धर्म वालों की चलती है, फिर बाबा क्यों कहते कि राजाई शिवबाबा ही स्थापन करते हैं, और कोई धर्म-स्थापक राजाई नहीं स्थापन करते हैं ?

कलियुग के अन्त में विश्व में राजाई खत्म हो जाती है, सभी देशों में राज-व्यवस्था प्रजातन्त्र की हो जाती है। शिवबाबा आकर फिर विश्व में राजतन्त्र की राज-व्यवस्था स्थापित करते हैं और देवी-देवता धर्म की आत्मायें जब ऊपर से उतरती हैं तो राजाई में ही उतरती हैं अर्थात् सतयुग की आदि से राजाई स्थापन हो जाती है। अन्य धर्मों की राजाई बाद में चलती है। इसलिए बाबा कहते - राजाई मैं ही आकर स्थापन करता हूँ।

''अभी दैवी राजधानी स्थापन हो रही है। बाप आकर सबको राज्य-भाग्य देते हैं। और कोई धर्म स्थापन करने वाले राज्य-भाग्य नहीं दे सकते हैं। ... वे सिर्फ धर्म स्थापन करते हैं, फिर उनके धर्म की वृद्धि होती है। ... उनके पिछाड़ी उनके धर्म की आत्मायें नीचे उतरती हैं। सबकी सद्गति करने वाला एक शिवबाबा है।''

सा.बाबा 24.4.08 रिवा.

Q. भारत में विभिन्न धर्म हैं, उस धर्मवंश की आत्मायें और सब अपने को हिन्दू कहलाते हैं तो उसमें देवी-देवता धर्म वाले कौन हैं, उसकी पहचान कैसे हो ?

बाबा ने कहा है - कि जो देवी-देवता धर्म वाले होंगे, वे शिव की या देवी-देवताओं की भक्ति, पूजा आदि अवश्य करते हों या इस जन्म में नहीं भी करते हो परन्तु पिछले जन्मों में अवश्य की होगी, इसलिए जब उनको ज्ञान सुनाओगे तो उनको दिल से लगेगा और इन सब तथ्यों को सहज स्वीकार कर लेंगे और जो पुराने भक्त होंगे, वे तुरन्त ज्ञान में चल पड़ेंगे।

''आर्य समाज तो दयानन्द ने स्थापन किया है। वह भल नया धर्म है। परन्तु वह कोई देवी-देवता धर्म के नहीं हैं। ... अभी देवी-देवता और ब्राह्मण धर्म प्राय: लोप है।''

सा.बाबा 10.10.07 रिवा.

Q. भारत में विभिन्न धर्म हैं, उनमें आदि सनातन देवी-देवता धर्म की आत्माओं की पहचान कैसे हो ?

आदि सनातन देवी-देवता धर्म वाले देवी-देवताओं के, शिव के पुजारी या उनको मानने वाले अवश्य होंगे। वे स्वर्ग-नर्क को भी अवश्य मानते होंगे और नर्क से स्वर्ग में जाने की इच्छा अवश्य रखते होंगे, जिसके आधार पर जब उनको यह ज्ञान मिलता है, तो सहज ही निश्चय हो जाता है और वह ब्रह्मा तन में आये परमात्मा की मत पर चलने के लिए दृढ़ संकल्प हो जाता है।

Q. क्या जैसे देवी-देवता धर्म की कलम लगती है, ऐसे ही अन्य धर्मों की भी कलम लगती है ? यदि लगती है तो दोनों की कलम लगने में क्या अन्तर है ?

सभी धर्मों की कलम लगती है परन्तु देवी-देवता धर्म की कलम उसी धर्म वंश की आत्मायें जो शूद्र बन जाती हैं, उनको ही परमात्मा आकर ब्राह्मण और फिर ब्राह्मण से देवता बनाते हैं। अन्य धर्मों की कलम देवी-देवता धर्म की आत्मायें जब वाम मार्ग में जाते हैं, तो उनमें से ही किसी एक की आत्मा के तन में धर्मपिता आकर अपने धर्मवंश की कलम लगाते हैं और कुछ आत्माओं को परिवर्तन करते हैं, जिनके यहाँ उनके धर्म की और आत्मायें आकर जन्म लेती रहती हैं। देवी-देवता धर्म की वाम मार्ग में गई जो आत्मा आदि में धर्म परिवत्रन करती हैं या उसकी स्थापना में सहयोगी बनती हैं, वे प्राय: अनत तक उसी धर्म में रहती हैं। अन्त समय ही वे परिवर्तन होकर ब्राह्मण बनते हैं। वृक्ष से नई शाखा का निकलना भी कलम लगना ही है, जिसमें तने से रेशे शाखाओं में जाते हैं।

देवी-देवता धर्म की कलम परमपिता परमात्मा लगाते हैं, जो फिर पुनर्जन्म में नहीं आते हैं। उसके बाद विनाश होता है, सब आत्मायें घर वापस जाती हैं, सबको मुक्ति-जीवनमुक्ति मिलती है। अन्य धर्मों की जब कलम लगती है तो आत्मायें वापस नहीं जाती हैं बल्कि परमधाम से उनके धर्मवंश की आत्मायें आना आरम्भ होती हैं। वे धर्मपिता भी यहाँ ही पुनर्जन्म

लेकर अपने धर्मवंश की पालना करते हैं।

देवी-देवता धर्म की कलम लगने से सृष्टि का काया-कल्प होता है अर्थात् नया कल्प-वृक्ष पैदा होता है परन्तु अन्य धर्मों की जब कलम लगती है तो नया वृक्ष नहीं पैदा होता है परन्तु नई शाखा की कलम लगती है और वही पुराना वृक्ष वृद्धि को पाता है।

''ब्रह्मा है साकारी सृष्टि का पिता। ... वास्तव में आदि सनातन देवी-देवता धर्म कहना भी राँग है। वह तो है सतयुग का धर्म। यह आदि सनातन ब्राह्मणों का धर्म जो है, वह प्राय: लोप हो गया है। देवता धर्म से भी पहले यह ब्राह्मण धर्म है, जिसको चोटी कहते हैं। इनको कहा जायेगा संगमयुगी आदि सनातन ब्राह्मण धर्म।''

सा.बाबा 15.4.08 रिवा.

Q. क्या जिस तन में धर्मपितायें आकर अपने धर्म की कलम लगाते हैं, वह और उसके साथ निमित्त बनी आत्मायें उसी समय या कुछ समयान्तर में उसी कल्प में वापस अपने मूल धर्म में आती हैं?

नहीं, वृक्ष के गुण-धर्मों पर विचार करें तो देखने में कहता है कि उसी कल्प में वे आत्मायें वापस अपने मूल धर्म में नहीं आते हैं, वे जाकर उसी नये धर्म की वृद्धि और पालना के निमित्त बनते हैं। कल्पान्त के संगमयुग पर जब परमात्मा आते हैं, तब ही वे वापस अपने मूल धर्म में आते हैं। ऐसी आत्मायें बाद में आने वाली आत्मायें ही होती हैं, जो त्रेता के अन्त में परमधाम से देवी-देवता धर्म में आती हैं।

Q. क्राइस्ट को क्रास पर किस धर्म की आत्माओं ने चढ़ाया?

देवी-देवता धर्म की जो आत्मायें द्वापर से अपने धर्म-कर्म को भूलकर विकारों के वशीभूत विकर्मों में प्रवृत्त हो जाते, उन्होंने ने ही क्राइस्ट को क्रास पर चढ़ाया होगा क्योंकि जैसे तने से मुख्य शाखायें निकलती है, वैसे ही उन आत्माओं से ही विभिन्न धर्मों की शाखा निकलती हैं, वे तने वाली आत्मायें ही पहले कन्वर्ट होते हैं और वे ही उस नये धर्म की स्थापना का विराध करती हैं इसलिए उन आत्माओं ने ही क्राइस्ट को क्रास पर चढ़ाया होगा। अन्य धर्मपिताओं को जो सताया, उसमें भी उन आत्माओं का ही विशेष पार्ट होता है और फिर वे ही संगमयुग पर परमात्मा की श्रीमत पर उनकी ज्ञान से पालना करने के निमित्त बनकर हिसाब-किताब चुक्ता करते हैं।

''धर्म की स्थापना में विघ्न तो पड़ते ही हैं। क्राइस्ट के समय में भी ऐसे कई निकले, जिन्होंने उसकी निन्दा आदि की। आसुरी सम्प्रदाय ने उसको मार डाला, पहचाना नहीं।''

सा.बाबा 18.4.08 रिवा.

ब्राह्मण जीवन

Q. ब्राह्मण जीवन क्या है, ब्राह्मण जीवन के गुण-धर्म और विशेषतायें क्या हैं, जिसके कारण इसका इतना महत्व और गायन है ?

Q. ब्राह्मण जीवन को चोटी क्यों कहा गया है, इसका आधार क्या है ?

ब्राह्मण जीवन चोटी कहा गया है क्योंकि यह जीवन सारे कल्प में सर्वोच्च है। इसके क्या-क्या गुण-धर्म और विशेषतायें हैं, उनका ज्ञान हमारी बुद्धि में स्पष्ट होगा और सदा जागृत होगा, तब ही हम इसका सुख अनुभव कर सकेंगे और उसके अनुरूप कर्तव्य कर सकेंगे।

यह एक ही संगमयुगी ब्राह्मण जीवन है, जो सारे कल्प में चढ़ती कला का जीवन है, और तो सारे कल्प में आत्मा और समग्र विश्व की उतरती कला ही होती है।

इस ब्राह्मण जीवन में ही आत्मा का परमात्मा से साकार में और अव्यक्त में मिलन होता है, जो परम-सुखमय और देव-दुर्लभ है, इसके सुखद अनुभव के कारण ही दुख के समय आत्मायें परमात्मा को याद करती हैं।

इस जीवन में ही आत्मा को परमात्मा से आत्मा, परमात्मा, सृष्टि-चक्र के तीनों-कालों, तीनों लोकों, आदि का ज्ञान होता है, जिस ज्ञान के साथ आत्मा यथार्थ मुक्ति-जीवनमुक्ति का सुख अनुभव करती है अर्थात् इस ब्राह्मण जीवन में ही मुक्ति-जीवनमुक्ति का सुर-दुर्लभ सुख प्राप्त होता है।

अतीन्द्रिय सुख अर्थात् आनन्द का जो गायन है, उसकी अनुभूति आत्मा को इस जीवन में ही होती है क्योंकि अतीन्द्रिय सुख या आनन्द किसी भौतिक सुख-साधन या व्यक्ति के प्यार पर आधारित नहीं होता है। यह तो अविनाशी आत्मा को अविनाशी परमात्मा के सानिध्य और सत्य ज्ञान पर आधारित होता है, इसलिए वह उत्तरोत्तर वृद्धि को पाता है। सारे कल्प के लिए आत्मिक शक्ति जमा करने का यही एक समय और जीवन है।

इस जीवन में ही आत्मा स्वदर्शन चक्रधारी, त्रिलोकीनाथ अर्थात् त्रिलोक की ज्ञाता बनती है।

इस जीवन में ही आत्मा, परमात्मा के साथ विश्व-कल्याण का कार्य करती है।

इस जीवन में ही आत्मा पुरुषार्थ कर पावन बनती है और पावन बनकर घर परमधाम जाती है अर्थात् मुक्ति में जाती है।

इस जीवन के पुरुषार्थ से आत्मा फरिश्ता बनती और फरिश्ता से देवता बनती है अर्थात् जीवनमुक्त दुनिया सतयुग में जाती है।

इस जीवन में ही आत्मा को परमात्मा से अनेकानेक स्वमान और वरदान प्राप्त होते हैं, जो आत्मा को श्रेष्ठ शान का अनुभव कराते हैं, जो देवताओं को भी प्राप्त नहीं होते।

इस ब्राह्मण जीवन में ही आत्मा को सुख-शान्ति, पवित्रता, आनन्द की चरमोत्कृष्ट प्राप्ति होती है, जो सुर-दुर्लभ है, जिसके कारण ही इस ब्राह्मण जीवन को चोटी कहा जाता है।

इस जीवन में ही आत्मा को अपार दुखों का ज्ञान होते हुए भी अपार सुख की अनुभूति होती है।

इस जीवन में ही आत्मा कर्मभोग से मुक्त कर्मातीत स्थिति का अनुभव करती है।

इस जीवन के समान सुख सतयुग में भी नहीं हो सकता, इसलिए ही इस जीवन को चोटी कहा जाता है। सतयुग-त्रेतायुग के सुखों की प्राप्ति का आधार भी इस जीवन के कर्तवय हैं।

इस जीवन की ये सभी विशेषताओं बुद्धि में रहती हैं तो ये जीवन परमानन्दमय अनुभव होता है और किसी भी परिस्थिति में आत्मा इससे हताश-निराश नहीं है। अभी बाबा ने हमको जो ज्ञान, गुण, शक्तियाँ दी हैं, इनका यथार्थ रीति ज्ञान होगा, अनुभव होगा, निश्चय और धारणा होगी तो ही ये जीवन परमानन्दमय अनुभव होगा और होता है।

''अभी यह साइलेन्स की शक्ति ही विश्व परिवर्तन करेगी। यह चारो ओर की हलचल मिटाने वाले कौन हैं ? जानते हो ना ! सिवाए परमात्म पालना के अधिकारी आत्माओं के और कोई नहीं कर सकता। तो आप सभी को यह उमंग-उत्साह है कि हम ब्राह्मण आत्मायें ही बापदादा के साथ भी हैं और परिवर्तन के कार्य के साथी भी हैं।''

अ.बापदादा 18.2.08

''बाप ने ब्रह्मा द्वारा तुम ब्राह्मणों को रचा है, बाप से जरूर वर्सा मिलना चाहिए। यह थोड़ी सी बात भी कोई समझ जाये तो 21 जन्मों के लिए अहो सौभाग्य। वहाँ कभी दुखी वा विधवा नहीं होगे। यह भी किसकी बुद्धि में पूरा नशा नहीं रहता है।''

सा.बाबा 21.2.08 रिवा.

Q. हमारे जीवन का लक्ष्य क्या है, हमको इस जीवन में और क्या चाहिए ?

मुक्ति-जीवनमुक्ति हर आत्मा के जीवन का अभीष्ठ लक्ष्य है। इसके लिए हमको चाहिए देह और देह की दुनिया से न्यारे होने की शक्ति, जो शक्ति हमको परमात्मा की याद और उसके ज्ञान की धारणा से प्राप्त होती है, वह शक्ति ही हमको मुक्ति-जीवनमुक्ति की अनुभूति करायेगी। ज्ञान सागर परमात्मा ने हमको जो ज्ञान दिया है और योग का जो रास्ता बताया है, वह इस लक्ष्य को प्राप्त कराने में सक्षम है, पर्याप्त है परन्तु आत्मा अपनी प्राप्तियों को भूलकर अन्य अयथार्थ बातों में चली जाती है, दूसरों को देखता है और उनकी प्राप्तियों को देखकर

ईर्ष्या-द्वेष में अपना समय और शक्ति बरबाद करके अपने अभीष्ठ लक्ष्य से भटक जाती है और अन्त में पश्चाताप करके दुखी होती है। अन्त में हमको पश्चाताप न करना पड़े और अभी भी जीवन का सच्चा सुख अनुभव कर सकें, उसके लिए हमको अपनी प्राप्तियों को पहचान कर उनका सदुपयोग करना चाहिए, यही हर आत्मा का पावन कर्तव्य है। मुक्ति-जीवनमुक्ति हर आत्मा का ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार है।

ये ब्राह्मण जीवन, जीवन का वह सर्वोच्च शिखर है, जिसको पाने के लिए गौतम बुद्ध, राजा भर्तृहरि, राजा गोपीचन्द, मीरा आदि अनेक महापुरुषों ने राजाई को त्याग कर पुरुषार्थ किया। अभी वह जीवन हमको प्राप्त है, इसके महत्व को जानकर इसको सफल करना हमारा कर्तव्य है। इसके यथार्थ महत्व को जानने वाला ही इसके सच्चे सुख को अनुभव कर सकता है।

Q. इस पुरुषार्थी जीवन में सबसे अच्छी अवस्था क्या है?

ड्रामा के यथार्थ ज्ञान को बुद्धि में धारण करके इसे साक्षी होकर देखना और अपनी आत्मिक स्थिति में स्थित होकर परमात्मा की मधुर स्मृति में स्थित होना ही पुरुषार्थी जीवन में सबसे अच्छी अवस्था है, जहाँ आत्मा सहज ही मुक्ति-जीवनमुक्ति का सुर-दुर्लभ सुख अनुभव करती है

Q. मानव जीवन का प्रयोजन क्या है?

Q. ब्राह्मण जीवन का प्रयोजन क्या है?

सुख-शान्ति में रहना ही मानव जीवन का लक्ष्य है। मनुष्य तो क्या प्राणीमात्र के जीवन का लक्ष्य सुख-शान्ति मय जीवन है और हर प्राणी उसके लिए प्रयत्नशील है। परन्तु विडम्बना ये है कि इसमें सदा काल की सुख-शान्ति न किसी को मिली है और न ही मिल सकती है क्योंकि ये विश्व-नाटक ज्ञान-अज्ञान, भूल-भुलैया, सुख-दुख, जीत-हार, उत्थान-पतन का खेल है। इसलिए हर आत्मा को अपने पार्ट और पार्ट के समयानुसार दोनों का अनुभव करना ही पड़ता है। वास्तविकता ये है कि सुख से ही दुख का और दुख से ही सुख का अस्तित्व है अर्थात् एक अनुभव होने से ही दूसरे का अनुभव होता है। बिना एक के दूसरे का अनुभव सम्भव नहीं है अर्थात् सुख के अनुभव वाले को ही दुख का अनुभव होता है या हो सकता है और दुख के अनुभव से ही सुख का अनुभव होता है। भले ही देवी-देवता धर्म वाली आत्मायें जो आदि में आती हैं, वे आधे कल्प तक सुख का अनुभव करती हैं परन्तु उनको भी समयानुसार दुख का अनुभव करना ही पड़ता है और जो आत्मा कलियुग के अन्त में आती है, उसको भी अपने पार्ट के अनुसार सुख-दुख दोनों का अनुभव होता है। इसके इस विधि-विधान के कारण ही इसको

न्यायपूर्ण कहा जाता है। इस विश्व-नाटक की यथार्थता को देखें तो ये विश्व-नाटक परमानन्दमय है, जो इसके यथार्थ रहस्य को जानता है, उसके लिए ये परमानन्दमय है।

अब प्रश्न है कि इस रहस्य को जानने और अनुभव करने के बाद हमारा कर्तव्य क्या है? परमात्मा पिता ने हमको आत्मा-परमात्मा और विश्व-नाटक का सत्य ज्ञान दिया है, इसलिए इसकी निश्चित भावी को जानकर, निश्चयबुद्धि, निश्चिन्त और निर्संकल्प होकर साक्षी बनकर इस विश्व-नाटक को देखें और ट्रस्टी होकर पार्ट बजाते हुए इस विश्व-नाटक के परमानन्द को अनुभव करें क्योंकि ये विश्व-नाटक परमानन्दमय है, जिसके आनन्द को अनुभव करने का समय ये संगमयुग ही है, जब हमको परमात्मा द्वारा इसका यथार्थ ज्ञान मिलता है। इस विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान आत्माओं को परमात्मा का परम उपहार है। आत्मिक स्वरूप परमनन्दमय है, परमात्मा परमानन्द का सागर है और ये विश्व-नाटक परम सुखमय है। जो आत्मा इन तीनों के यथार्थ राज़ को समझ लेता है, वह सदा ही अपने स्व-स्वरूप में स्थित होकर परमशान्ति, परमानन्द और परमसुख की अनुभूति में रहता है। आवश्यकता है इनके राज़ को समझना और अनुभव करना और उस स्थिति में स्थित होने का सफल अभ्यास करना। इसलिए ही बाबा ये ड्रिल कराते हैं और स्थाई बनाने के लिए अर्थात सदा उस स्थिति में रहने के लिए प्रेरणा देते हैं।

जो स्वयं इस अनुभूति में रहता है, उससे अन्य आत्माओं को भी उसकी अनुभूति अवश्य होती है। ये अनुभूति करना और सर्व आत्माओं का कराना ही ब्राह्मण जीवन का प्रयोजन है।

Q. हमारे इस ब्राह्मण जीवन का लक्ष्य क्या है और उसका अभीष्ठ पुरुषार्थ क्या है?

आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करना और कराना ही ब्राह्मण जीवन का लक्ष्य है, जिस स्थिति में आत्मा के स्वभाविक गुण स्वतः ही प्रगट होते हैं। एक निराकार परमात्मा की अव्यभिमचारी याद ही उसका एकमात्र साधन और साधना है। वह याद स्थिर रहे, उसके लिए ही ज्ञान सागर परमात्मा ने सारा ज्ञान दिया है। परमात्मा की मुरली ही ज्ञान के यथार्थ रहस्य को समझने और अव्यभिचारी याद में रहने का आधार है। बाबा की श्रीमत ही श्रेष्ठ बनाने वाली है, बाबा की मुरली ही सच्ची श्रीमत है।

जो व्यक्ति, वस्तु, पुस्तक हमको अपने उस लक्ष्य को प्राप्त करने में मदद करे, उसका पठन-पाठन हमारे लिए हितकर है। सत्यता ये है कि एक बाप की याद और उसका ज्ञान ही हमको अपने उस लक्ष्य को प्राप्त करा सकता है और कराता है, इसलिए उसकी मुरली ही हमारे लिए पठन-पाठन योग्य है।

Q. ब्राह्मण जीवन में क्या आकर्षण (Charm) है या ब्राह्मण जीवन में क्या आकर्षण है, जिसके कारण मनुष्य का जीवन में इतना मोह है कि असाध्य रोगों से ग्रसित, मृत्यु-शैय्या पर पड़ा हुआ व्यक्ति भी शरीर छोड़ना नहीं चाहता ? क्या मौज से खाना-पीना, रहना, साधन-सम्पत्ति का उपभोग करना, उसका संग्रह करना यही जीवन का आकर्षण है या इस जीवन का कोई और प्रयोजन है ?

अनेक विकर्मों के कारण आत्मा को गर्भ में महान दुख होता है, जो आत्मा में संस्कार रूप में नीहित है, वह स्मृति, आत्मा का वर्तमान वस्तु-व्यक्तियों में लगाव, विकर्मों के कारण भविष्य में गिरती कला के जीवन का दुख, उसका सूक्ष्म में आभास आत्मा को शरीर छोड़ने नहीं देता। सतयुग-त्रेता में ऐसी महसूसता नहीं होती है। परन्तु वर्तमान ब्राह्मण जीवन कल्प में सबसे मूल्यवान और सारे कल्प के लिए खाता जमा करने का जीवन है, सारे कल्प की अनुभूतियों का बीज बोने का समय है, परमात्मा के संग में अतीन्द्रिय सुख अनुभव करने का यही एक जीवन है, सुर-दुर्लभ मुक्ति-जीवनमुक्ति का यथार्थ अनुभव करने का यही जीवन है। इसलिए हर ब्राह्मण आत्मा का संकल्प रहता कि जब तक जीते हैं, तब तक अच्छे कर्म करके अपना खाता जमा करते रहें, परमात्मा के सानिध्य के सुख का अनुभव करते रहें, मुक्ति-जीवनमुक्ति के सुख का अनुभव करते रहें इसलिए ब्राह्मण भी असाध्य कर्मभोग होते भी इस देह को त्याग करना नहीं चाहते।

अभी हमको ये भी ज्ञान है कि हर आत्मा को इस जीवन में या भविष्य जीवन में अपने विकर्मों का हिसाब-किताब चुक्ता करना ही होगा तो क्यों न हम इसी देह से उसे चुक्ता कर लें, जिससे हमारे सिर से बोझा उतर जाये। परमधाम घर तो कर्मातीत बनकर ही जा सकते हैं।

सतयुग से कलियुग तक मनुष्य का जीवन ऐसा ही है जैसे पहाड़ पर वर्षा पानी, जो सतत नीचे को ही बहता रहता है। भले ही कितनी भी रुकावटें आयें परन्तु उसकी गति नीचे को ही रहेगी और उसके लिए वह सतत प्रयत्नशील रहेगा। परन्तु ये ब्राह्मण जीवन विशेष जीवन है। अभी हमको परमात्मा से आत्मा, परमात्मा और विश्व-नाटक का ज्ञान मिला है, जिसके आधार हम अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित हो सकते हैं, जो स्थिति परम शान्ति और परमानन्दमय है, परमात्मा का साथ परमानन्दमय है और ये विश्व-नाटक परमानन्दमय है। अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर साक्षी स्थिति में जो इस विश्व-नाटक को देखता वह इसके परम अद्भुत सुख को अनुभव करता है और सतत चढ़ती कला का अनुभव करता है। ये सुख अनुभव करना और कराना ही इस ब्राह्मण जीवन का आकर्षण है।

Q. संगमयुगी ब्राह्मण कितने पकार होते हैं और कैसे ?

एक हैं प्रत्यक्ष में ज्ञान सुनकर ब्राह्मण बनने वाले, उनमें भी दो प्रकार के हैं एक साकार पालना वाले और दूसरे हैं साकार में अव्यक्त पालना वाले। दूसरे हैं एडवान्स पार्टी वाले ब्राह्मण। वे भी ब्राह्मण हैं क्योंकि वे अभी देवता तो बनें नहीं हैं क्योंकि अभी स्वर्ग आया ही नहीं है और उनको शूद्र कह नहीं सकते क्योंकि शुद्र तो उतरती कला वाले हैं और एडवान्स पार्टी वाले तो चढ़ती कला वाले हैं, इसलिए वे भी ब्राह्मण ही हैं और उनकी पालना भी अव्यक्त ब्रह्मा बाप के द्वारा ही होती है। अव्यक्त ब्रह्मा बाप द्वारा उनको भी सारे दिशा-निर्देश मिलते हैं। जब तक आत्मा परमधाम नहीं जाती, विनाश नहीं होता, समय का कांटा सतयुग की ओर नहीं मुड़ता, तब तक किसी भी आत्मा को न देवता कहा जा सकता और न ही सम्पूर्ण कहा जा सकता। वे सभी आत्मायें, संगमयुग पर हैं, वे सभी ब्राह्मण कही जायेंगी और वे सभी चढ़ती कला में हैं और उनकी पालना भी ब्रह्मा बाप द्वारा ही होती है। भले ही वह पालना प्रत्यक्ष हो या अप्रत्यक्ष हो। दादी के शरीर छोड़ने के बाद भोग के सन्देशों में भी बाबा ने इस सत्य को स्पष्ट किया है कि बापदादा या ब्रहमा बाबा उनको भी दिशा-निर्देश देता है।

Q. क्या कोई आत्मा ब्राह्मण कुल में जन्म ले सकती है और यदि ले सकती है तो कैसे ?

ले सकती है। कई बच्चों के मां-बाप उनके जन्म लेने से 5-6 मास पहले ही ज्ञान में आ जाते हैं तो अवश्य ही उस मां के गर्भ में आत्मा के प्रवेश होने के लिए पिण्ड पहले से ही तैयार होता है और आत्मा के प्रवेश होने से पहले वे ब्राह्मण बन जाते हैं। ऐसे यज्ञ में अनेक उदाहरण हैं। आत्मा के गर्भ में प्रवेश होने के बाद या उससे कुछ समय पहले से ही वे विकार में न जाने का संकल्प कर लेते हैं, बाबा के बन जाते हैं, इसलिए ऐसे ब्राह्मणों के पास आत्मा जन्म ले सकती है।

Q. ये संगमयुगी जीवन परम-प्राप्तियों से परिपूर्ण, परमानन्दमय है, सभी वेद-पुराण, धर्म-ग्रन्थ इसकी गौरव-गाथा से भरे हुए हैं, ये सदा परमानन्दमय अनुभव हो, इसके लिए अभीष्ठ पुरुषार्थ क्या है ?

परमात्मा से हमको अनेकानेक प्राप्तियां हुई हैं, जिनमें विशेष आत्मा, परमात्मा, विश्व-नाटक तथा कर्म-सिद्धान्त का ज्ञान है, उसकी ज्ञान की जीवन में धारणा हो तथा आत्मिक स्वरूप में स्थित होने का सफल अभ्यास हो तो ये जीवन परम-प्राप्तियों से परिपूर्ण सदा ही परमानन्दमय अनुभव होगा।

किसी की स्थूल-सूक्ष्म प्राप्तियों, मान-शान, पद से ईर्ष्या न करके अपनी प्राप्तियों को देखने,

सदुपयोग करने वाला ही इस जीवन के और इस विश्व-नाटक के सच्चे सुख को अनुभव कर सकता है। हर आत्मा को जो भी प्राप्ति है, वह उसके अपने पुरुषार्थ और ड्रामा के पार्ट अनुसार ही प्राप्त है और प्राप्त होगी। इस सत्य को समझकर व्यर्थ से विमुक्त हो, अपनी प्राप्तियों को देख अपने समर्थ स्वरूप में स्थित होकर इस विश्व-नाटक के परम-सुख को अनुभव करना ही सच्चा ज्ञान है और उसके लिए प्रयत्न करना ही सच्चा पुरुषार्थ है। इसका आधार है बाबा की मुरली का महत्व जानना और उस अनुभव से उसका अध्ययन करना, मनन-चिन्तन करना।

Q. जीवन की परम-प्राप्ति क्या है अर्थात् जीवन की सर्वश्रेष्ठ प्राप्ति क्या है ?

परमपिता परमात्मा की प्राप्ति। परमात्मा से आत्मा, परमात्मा और विश्व-नाटक के ज्ञान की प्राप्ति, जो आत्मा की चढ़ती कला का आधार है और जिससे ही हम मुक्ति-जीवनमुक्ति का परम-सुख सहज अनुभव कर सकते हैं, जो हर आत्मा का अभीष्ठ लक्ष्य है और आत्माओं को परमात्मा पिता का वर्सा है। इस सत्य ज्ञान को पाकर ही आत्मा साक्षी होकर इस विश्व-नाटक को देखती है और परमानन्द का अनुभव करती है।

जो हुआ, वह टल नहीं सकता और जो नहीं हुआ, वह हो नहीं सकता परन्तु जो हुआ, वह अच्छा हुआ, जो हो रहा है, वह अच्छा है और जो होगा, वह भी अच्छा होगा। ये विश्व-नाटक सत्य, न्यायपूर्ण और कल्याणकारी है।

हर आत्मा अपना अनादि-अविनाशी पार्ट बजा है और हर जीवात्मा अपने कर्मों अनुसार सुख-दुख भोग रहा है। जीवात्मा अपना आप ही मित्र है और आप ही अपना शत्रु है।

पवित्रता ही जीवन है। पवित्रता अर्थात् आत्मिक स्वरूप में स्थिति। जहाँ पवित्रता है, वहाँ सुख-शान्ति अवश्य होगी, ब्रह्मचर्य की स्वभाविक धारणा होगी, इच्छामात्रम् अविद्या होगी। सर्व आत्माओं के प्रति शुभ भावना, शुभ कामना होगी, परिणाम स्वरूप उसके प्रति सर्व की शुभ भावना, शुभ कामना होगी।

पवित्र आत्मा को समय पर कृत्य का संकल्प स्वतः आयेगा, उसकी शुभ में अभिरुचि और अशुभ में अरुचि स्वभाविक होगी। कोई व्यर्थ चिन्तन नहीं होगा।

इस विश्व-नाटक में न कोई अपना है और न कोई पराया है। न कोई हमारा मित्र है और न ही कोई हमारा शत्रु है। न किसी ने हमको कुछ दिया है और न ही हमारा कुछ लिया है, इसलिए राग-द्वेष का प्रश्न ही नहीं।। जो आज अपना है, वह कल पराया होगा और पराया अपना होगा। दाता एक बाप है, उसने जो दिया है, वही अपना है और हमारे जीवन के लिए हितकर है।

बाबा ने ज्ञान भी दिया और अनुभव भी कराया कि तुम आत्मा हो, परमधाम के रहने वाले हो, संसार एक नाटक है, जहाँ हर आत्मा अपना अनादि-अविनाशी पार्ट बजा रही है। इस विश्व-नाटक की यथार्थता को जानकर अपने अनन्त स्वरूप में स्थित होकर परम शान्ति का, बाप के साथ विश्व-कल्याण की सेवा कर परमानन्द का और साक्षी होकर इस विश्व-नाटक को देखते और ट्रस्टी होकर पार्ट बजाते हुए परम सुख का अनुभव करो और कराओ - यही इस ब्राह्मण जीवन की परम प्राप्ति है।

Q. ब्राह्मण जीवन का अभीष्ट कर्तव्य क्या है ?

ब्राह्मण जीवन परमानन्दमय जीवन और परम-प्राप्तियों से परिपूर्ण है, उसकी यथार्थता को जानकर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर रहना और साक्षी होकर इस विश्व-नाटक में पार्ट बजाना तथा अन्य आत्माओं के लिए इन परम-प्राप्तियों के अनुभव का मार्ग प्रशस्त करना ही ब्राह्मण जीवन का कर्तव्य है। विश्व में अनन्त प्रकार की प्राप्तियां हैं, जो किसी भी एक आत्मा को प्राप्त होना सम्भव नहीं है और अनन्त प्रकार का ज्ञान है, जो किसी भी एक व्यक्ति के समझना सम्भव नहीं है, इसलिए उसके लिए लालायित न होकर अपने आत्मिक स्वरूप को समझकर, उसमें स्थित रहना हर आत्मा के सम्भव है, पुरुषार्थ करके उसमें स्थित होना ही ब्राह्मण आत्मा का परम कर्तव्य है, जिस कर्तव्य को पूरा करने से और सारे कर्तव्य स्वतः पूरे हो जाते हैं। स्व-परिवर्तन से ही विश्व-परिवर्तन और अन्य आत्माओं के परिवर्तन का कार्य सम्भव है।

''समय की पुकार, भक्तों की पुकार, दुखी आत्माओं की पुकार, आपके स्नेही-सहयोगी आत्माओं की पुकार आप ही पूर्ण करेंगे ना! ... विश्व-परिवर्तक आपका टाइटिल है, विश्व-परिवर्तन आपका कार्य है और आपका साथी कौन है ? बापदादा के साथ-साथ आप भी इस कार्य में निमित्त बने हो। तो क्या करना है ?'' अ.बापदादा 2.4.08

''अभी विशेष अपनी शक्तियों की सकाश चारो ओर फैलाओ। जब प्रकृति सूर्य की शक्ति ... तो क्या आप अपनी शक्तियों की सकाश वायुमण्डल में नहीं फैला सकते हो ? आत्माओं को अपनी शक्तियों की सकाश से दुख-अशान्ति से नहीं छुड़ा सकते! ... जैसे स्थापना के आदिकाल में बापदादा की तरफ से अनेक आत्माओं को सुख-शान्ति की सकाश मिलने का घर बैठे अनुभव हुआ, संकल्प मिला वहाँ जाओ।'' अ.बापदादा 2.2.08

''विश्व की दुखी-अशान्त आत्माओं को दुख-अशान्ति से छुड़ाने के लिए अपनी शक्तियों द्वारा सकाश दो। जैसे प्रकृति का सूर्य ... अपनी किरणों के बल से परिवर्तन करता है। ऐसे मास्टर

ज्ञान सूर्य अपने प्राप्त हुए सुख-शान्ति की किरणों से, सकाश से आत्माओं को दुख-अशान्ति से मुक्त करो। मन्सा सेवा से, शक्तिशाली वृत्ति से वायुमण्डल को परिवर्तन करो।''

अ.बापदादा 15.12.07

Q. सतोप्रधान पुरुषार्थ ज्ञान में आने के प्रारम्भिक काल में होता है या अन्त में शरीर छोड़ते समय?

वैसे तो सारा ही ब्राह्मण जीवन और संगमयुग पुरुषार्थ का समय है और चढ़ती कला का है परन्तु अपने व्यक्तिगत जीवन और संगठित जीवन को देखने से अनुभव में आता है कि ब्राह्मण जीवन का आदि काल सतोप्रधान पुरुषार्थ का होता है। यज्ञ का संगठित रूप में और आत्माओं का व्यक्तिगत रूप में नियम-संयम, खान-पान, जीवन व्यवहार, परमात्मा की याद का पुरुषार्थ पहले अच्छा रहता है और समयान्तर में ढीला होता जा रहा है। अच्छे-अच्छे अग्रणी भाई-बहनें विकारियों के हाथों का बना हुआ या हाथों से छुआ हुआ, दृष्टि से प्रभावित खा-पी रहे हैं। पदार्थों और साधन-सम्पत्ति में भी ऐसी ही स्थिति हो गई है।

Q. हमारे जीवन के लिए उत्तरदायी कौन है? क्या कोई व्यक्ति, सेन्टर, यज्ञ, परमात्मा हमारे जीवन के लिए उत्तरदायी है? क्या हमको उनके ऊपर आधारित रहना चाहिए? या किसी दुख-दर्द के लिए उनको उत्तरदायी ठहराना चाहिए?

परमात्मा ज्ञान का सागर है, उसने इस विश्व-नाटक का सारा ज्ञान हमको दे दिया है और इस विश्व-नाटक के सारे राज़ों का, विधि-विधानों का, कर्मों का ज्ञान दे दिया है और इस सत्य को भी बता दिया है कि इस विश्व-नाटक में हर आत्मा अपने जीवन के लिए स्वयं ही उत्तरदायी है क्योंकि ड्रामानुसार हर आत्मा का अपना ही कर्म उसके सुख-दुख का कारण है। भक्ति मार्ग की गीता में भी ये अक्षर हैं - जीवात्मा अपना आप ही मित्र है और आपही अपना शत्रु है। तुलसीदास ने भी कहा है - कर्म प्रधान विश्व रचि राखा, जो जस कीन्ह तासु फल चाखा। परमात्मा ने ये भी बताया है कि परमात्मा यह सत्य ज्ञान देने के लिए ही इस सृष्टि में अवतरित होता है। उस ज्ञान को पाकर जो आत्मा एक कदम परमात्मा के इस मार्ग पर बढ़ाता है, यज्ञ में बीज बोता है, परमात्मा उसका सौगुणा फल उसको देता है और हजार गुणा मदद करता है। ये भी ड्रामा का एक लॉ है। इस सत्य को समझकर विचार करो - हमारे जीवन के लिए उत्तरदायी कौन है? क्या हमको किस पर आधारित रहना चाहिए? भक्ति मार्ग में भी कहा है - करु बहियां बल आपनो छाड़ि बिरानी आश, जाके आंगन है नदी वह कस मरे प्यास।

हर आत्मा चाहे वह समर्पित हो, ट्रस्टी ब्रह्माकुमार हो या ब्रह्माकुमार न भी हो, वह अपने जीवन

के लिए स्वयं ही उत्तरदायी है, दूसरी आत्मायें उसके साथ कर्मों के हिसाब-किताब और ड्रामा के पार्ट अनुसार केवल निमित्तमात्र हैं। इसलिए ज्ञानी पुरुष को किसी भी परिस्थिति में किसको दोष देकर, किसके प्रति राग-द्वेष का भाव लाकर अपने विकर्मों का खाता नहीं बढ़ाना चाहिए। अपने को उत्तरदायी समझकर अपने कर्मों को श्रेष्ठ करने का पुरुषार्थ करना चाहिए। जो इस सत्य को समझकर कर्म करता है, वही जीवन के सच्चे सुख को प्राप्त करता है, उसी का जीवन सफल है।

धर्म और परमात्मा सर्वशक्तिवान है और हर प्रकार से आत्माओं की रक्षा करते हैं। आत्मा को उन पर किसी भी परिस्थिति में अपना निश्चय और विश्वास खोना नहीं चाहिए। सदा उन पर विश्वास रखकर शुभ कर्मों में प्रवृत्त रहने वाले को कोई भी आत्मा कब धोखा नहीं दे सकती। गायन है - जाको राखे साइयां मार सकै न कोइ, बाल न बांका कर सकै जो जग वैरी होये। ज्ञानी पुरुष को ड्रामा के इस सत्य को कभी भूलना नहीं चाहिए।

तुम किसका बुरा नहीं सोचोगे या बुरा नहीं करोगे तो तुम्हारा बुरा हो नहीं सकता - ड्रामा के इस सत्य पर अटल निश्चय कर, व्यर्थ संकल्पों से मुक्त होकर सदा निश्चिन्त रह अपने अभीष्ट लक्ष्य के लिए पुरुषार्थ कर इस संगमयुग के सच्चे सुख को स्वयं भी अनुभव करो और दूसरों को भी कराओ। ये संगमयुगी जीवन परम प्राप्तियों से परिपूर्ण है।

Q. विचार करो बाबा ने हमको क्या दिया है, हमारे पास क्या है और अब हमारा कर्तव्य क्या है? हम क्या कर सकते हैं और हमको क्या करना चाहिए? समय की पुकार क्या है और हम क्या कर रहे हैं?

Q. क्या ये जीवन इन्द्रिय सुख-साधनों की प्राप्ति, उनके संग्रह, उनके उपभोग, उनकी प्राप्ति की खुशी मनाने के लिए ही है? क्या उनकी प्राप्ति की ये खुशी हमको अपने अभीष्ट लक्ष्य की प्राप्ति करायेगी?

इन सब बातों पर विचार करके अभीष्ट लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अभीष्ट कर्तव्य करो। अपनी प्राप्तियों और विश्व-नाटक की यथार्थता पर विचार करें तो हमारा कर्तव्य है कि हम बाप समान अपने मूल स्वरूप में स्थित साक्षी होकर इस विश्व-नाटक को देखें, उसका सुख लें और ट्रस्टी होकर पार्ट बजायें। अपने समय, शक्ति, संकल्प को विश्व नव-निर्माण के श्रेष्ठ कार्य में लगायें, जिससे हमारा भविष्य उज्ज्वल हो। विश्व-नाटक की यथार्थता पर विचार करें तो यही हमारे हाथों में है। अविनाशी सुख, मुक्ति-जीवनमुक्ति हर आत्मा के जीवन का लक्ष्य है, जो परमात्मा के द्वारा दिये साधनों अर्थात् ज्ञान-गुण-शक्तियों की धारणा से ही सम्भव है। स्थूल

साधन तो निमित्त मात्र हैं। जो ईश्वरीय प्राप्तियों को भूलकर भौतिक सुखों और साधनों के पीछे जाता है, वह स्वयं ही स्वयं को धोखा देता है। स्थूल साधनों की प्राप्ति का आधार भी ईश्वरीय प्राप्तियां और ईश्वरीय कर्तवय ही है। देह से न्यारा आत्मिक स्वरूप परमानन्दमय है, इस स्वरूप का जितना गहन अभ्यास होगा, उतना ही जीवन में परमानन्द का अनुभव होगा। मुक्ति-जीवनमुक्ति संगमयुग की परम प्राप्ति है और मानव जीवन का परम लक्ष्य है।

''अवतार सदा परमात्म पैगाम ले आते हैं। आप सभी संगमयुगी श्रेष्ठ आत्मायें भी परमात्म पैगाम देने के लिए, परमात्म मिलन कराने के लिए अवतरित हुए हो। ... यह देह सेवा के अर्थ बाप ने लोन में दी है। .. जब देह ही मेरी नहीं तो देह का भान कैसे आ सकता है।''

अ.बापदादा 24.2.84

Q. क्या साधन-सम्पत्ति, पद की प्राप्ति ही जीवन की सफलता, जीवन का चरमोत्कर्ष है ?

नहीं। साधन-सम्पत्ति, पद तो इस विश्व-नाटक में पार्ट बजाने के लिए साधन मात्र हैं, उनकी प्राप्ति ही जीवन का चरमोत्कर्ष समझ लेना तो एक भ्रान्ति है। साधन-सम्पत्ति, पद की प्राप्ति से प्राप्त सुख की अपेक्षा विश्व-नाटक के ज्ञान को समझकर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर परमपिता परमात्मा की मधुर स्मृति में मुक्ति-जीवनमुक्ति के अनुभव का सुख पदमापदम गुणा श्रेष्ठ है। इस ईश्वरीय जीवन में ईश्वरीय प्राप्तियों की धारणा करना और ईश्वरीय कर्तव्य में सहयोगी बनना सर्वोच्च जीवन है, मानव जीवन का चरमोत्कर्ष है। जीवन के उत्कर्ष में स्थूल साधन-सम्पत्ति, पद के साथ ईश्वरीय ज्ञान, गुण, शक्तियों का महत्वपूर्ण योगदान है।

''थोड़ी सी चीज न मिलने से दुख होता है। पाई-पैसे की चीज न मिलने से मुर्झा जाते हैं। यह सब है देहाभिमान का रोला। बाप कहते हैं - मैं साक्षी होकर देखता हूँ, कितने बच्चे विनाश को पाते हैं। कहेंगे यह भी ड्रामा। हम अशरीरी हैं, जैसे कि मरे पड़े हैं, दुनिया भी मरी पड़ी है। हमारा इस दुनिया से कोई काम नहीं है। हमारा काम है स्वीट होम से। अपनी अवस्था को जमाना है।''

सा.बाबा 1.11.73 रिवा.

Q. संगमयुगी ब्राह्मण जीवन सर्वोत्कृष्ट जीवन है, इसका क्या आधार और विशेषतायें क्या हैं ?

संगमयुग कल्प सर्वश्रेष्ठ समय है, ईश्वर सर्व आत्माओं में सर्वश्रेष्ठ परम-आत्मा है और उससे प्राप्त ईश्वरीय ज्ञान, गुण, शक्तियां सर्वश्रेष्ठ सम्पत्ति है, सर्व प्राप्तियों का आधार हैं एवं ईश्वरीय कर्तव्य सर्वश्रेष्ठ कर्तव्य है। अभी हम ईश्वर की गोद में, ईश्वर की छत्रछाया में हैं। इस

संगमयुगी ब्राह्मण जीवन की इन विशेषताओं पर विचार करें तो हम अनुभव करेंगे कि ये हमारा जीवन तीनों कालों में और तीनों लोकों में सर्वश्रेष्ठ जीवन है।

''संगमयुगी स्वर्ग सतयुगी स्वर्ग से भी ऊंचा है क्योंकि अभी दोनों संसार के नॉलेजफुल बने हो। ... इतने न्यारे पंख ज्ञान और योग के मिले हैं, जिससे तीनों ही लोकों का चक्र लगा सकते हो। ... इस संसार का गायन है - अप्राप्त नहीं कोई वस्तु ब्राह्मणों के संसार में।... परमात्म गोदी है याद की लवलीन अवस्था में झूलना। ... यह अलौकिक गोद सेकेण्ड में अनेक जन्मों के दुख-दर्द भुला देती है।'' अ.बापदादा 20.11.85

''अपने इस संगमयुगी श्रेष्ठ संसार को सदा स्मृति में रखो। इस संसार के इस जीवन की विशेशताओं को सदा स्मृति में रख समर्थ बनो, स्मृति स्वरूप बनो तो नष्टोमोहा स्वत: ही बन जायेंगे। ... सदा ये अन्तर स्पष्ट इमर्ज रूप में रखो कि वह पुराना संसार क्या और यह संगमयुगी संसार क्या!'' अ.बापदादा 20.11.85

Q. क्या ये ब्राह्मण जीवन इन्द्रिय सुखों और साधन-सम्पत्ति के संग्रह के लिए है ?

इन्द्रिय सुख तो सारे कल्प भोगे और आगे भी भोगते रहेंगे, अभी भी दुनिया में अनेक मनुष्यों को अपार साधन-सम्पत्ति और सुख-साधन प्राप्त हैं। इन्द्रिय सुख तो जानवरों को भी प्राप्त है। परन्तु ये ब्राह्मण जीवन इन्द्रीय सुखों के लिए नहीं लेकिन ईश्वरीय सुखों और ईश्वरीय कर्तव्य के लिए मिला है। इस सत्य को जानकर इन्द्रिय सुखों से विरक्त होकर ईश्वरीय सुखों और ईश्वरीय कर्तव्य में प्रवृत्त होने वाले का ही ये ब्राह्मण जीवन सफल है और परम सुखमय है। ईश्वरीय सुख और उनका आधार ईश्वरीय ज्ञान-गुण-शक्तियों की प्राप्ति का समय ये संगमयुग ही है। वर्तमान समय ईश्वरीय कर्तव्य भी परम सुखदायी है। इस सत्य को समझने वाले ही ईश्वरीय कर्तव्य को करने और उसमें सफलता प्राप्त करते हैं।

Q. मानव जीवन का लक्ष्य क्या है ?

मुक्ति-जीवनमुक्ति हर प्राणी के जीवन का लक्ष्य है और वह जाने-अन्जाने उसके लिए प्रयत्नशील रहता है क्योंकि हर प्राणी मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभवी है अर्थात् सारे कल्प में अनुभव अवश्य करता है। परन्तु मनुष्य एक बुद्धिमान प्राणी है, इसलिए वह इसके महत्व को समझता है और उसके महत्व को जानकर उसके लिए पुरुषार्थ करता है परन्तु कोई भी मनुष्य मुक्ति-जीवनमुक्ति का यथार्थ मार्ग नहीं जानता है, इसलिए मनुष्य जितना भी पुरुषार्थ करता है, वह दिनोदिन जीवनबन्ध में ही फंसता जाता है। संगमयुग ही वह सुन्दर समय है, जब परमात्मा पिता आकर मुक्ति-जीवनमुक्ति का यथार्थ रहस्य भी बताते हैं, अनुभव भी कराते हैं और उस

अनुभव को चिर-स्थाई बनाने का रास्ता भी बताते हैं। संगमयुग की ज्ञान सहित मुक्ति-जीवनमुक्ति ही यथार्थ मुक्ति-जीवनमुक्ति है। परमात्मा तो हर आत्मा को इसका अनुभव कराते हैं परन्तु उसको चिर-स्थाई हर एक अपने पुरुषार्थ अनुसार नम्बरवार ही करते हैं।

Q. हम आत्माओं का अभीष्ट लक्ष्य कया है और उसके लिए अभीष्ट पुरुषार्थ क्या है ?

आत्मा का अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर परमशान्ति का अनुभव करना, फरिश्ता स्वरूप में स्थित होकर परमानन्द का अनुभव करना और कराना तथा विश्व-नाटक की यथार्थता को जानकर साक्षी होकर इसे देखाना और ट्रस्टी होकर पार्ट बजाते हुए इसके परम सुख का अनुभव करना और कराना ही हमारे जीवन का लक्ष्य है। इसके लिए अभीष्ट पुरुषार्थ है विश्व-नाटक की यथार्थता को जानकर अपने को देह से न्यारा अनुभव करना, सेकण्ड में देह में आना और सेकेण्ड में देह से न्यारा होने का सफल अभ्यास करना। जैसे ब्रह्मा बाबा ने करके दिखाया।

बाप समान बनना अर्थात् साकार ब्रह्मा बाप के समान पुरुषार्थ करके सम्पूर्णता को पाना और निराकार शिव बाप के समान निराकारी स्थिति में स्थित होना और होने का अभ्यास करना।

Q. आध्यात्मिक जीवन का अभीष्ट लक्ष्य क्या है और उसकी सफलता क्या है ?

आध्यात्मिक जीवन का लक्ष्य है - मुक्ति-जीवनमुक्ति की प्राप्ति क्योंकि हर आत्मा को मुक्ति-जीवनमुक्ति का वर्सा परमात्मा से मिला था, जो अभी नहीं है तो उसे चाहती है और उसके लिए यथा सम्भव पुरुषार्थ करती है। परमधाम, मुक्तिधाम है, जो आत्माओं का अविनाशी घर है और सतयुग-त्रेता युग है जीवनमुक्तिधाम परन्तु परमधाम की मुक्ति और सतयुग की जीवनमुक्ति का कोई विशेष महत्व नहीं है। यथार्थ मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव इस पुरुषोत्तम संगमयुग का ही है, जिसका ही गायन है क्योंकि मुक्तिधाम में देह ही नहीं है, इसलिए मुक्ति का कोई अनुभव नहीं है और सतयुग में जीवनबन्ध का अनुभव नहीं, इसलिए वहाँ जीवनमुक्ति के अनुभव का कोई विशेष महत्व नहीं है अर्थात् अनुभव ही नहीं है कि हम कोई जीवनमुक्त स्थिति में हैं। मुक्ति-जीवनमुक्ति का यथार्थ अनुभव संगमयुग पर ही होता है। वर्तमान में जो आत्मा विश्व-नाटक की यथार्थता को जानकर राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति, ईर्ष्या-घृणा, इच्छा-आकांक्षा से मुक्त होकर देह से न्यारे होने का सफल अभ्यास करती है, वही इस पुरुषार्थी जीवन में मुक्ति-जीवनमुक्ति का देव-दुर्लभ सुख अभी भी अनुभव करती है और भविष्य में जीवनमुक्ति को प्राप्त करेगी। 'अभी नहीं तो कभी नहीं'।

''अपने से पूछो - क्या मुक्तिधाम में मुक्ति का अनुभव करना है वा सतयुग में जीवनमुक्ति का

अनुभव करना है वा अब संगमयुग में मुक्ति-जीवनमुक्ति का संस्कार बनाना है ? ... कहते हो - ईश्वरीय संस्कार से नया दैवी संसार बना रहे हैं। तो अब संगम पर ही मुक्ति-जीवनमुक्ति के संस्कार इमर्ज चाहिए ना। तो चेक करो - सर्व बन्धनों से मन और बुद्धि मुक्त हुए हैं ?''

अ.बापदादा 15.10.07

''इस ब्राह्मण जीवन में कई बन्धनों से तो मुक्त हुए हो लेकिन सर्व बन्धनों से मुक्त हैं या कोई बन्धन अभी भी अपने बन्धन में बांधता है ? इस ब्राह्मण जीवन में मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करना ही ब्राह्मण जीवन की श्रेष्ठता है क्योंकि सतयुग में जीवनमुक्ति और जीवनबन्ध दोनों का ज्ञान ही नहीं होगा। अभी अनुभव कर सकते हो कि जीवनबन्ध क्या है और जीवनमुक्त क्या है।''

अ.बापदादा 15.10.07

Q. बेहद के बाप परमपिता परमात्मा की यथार्थ में प्रापर्टी क्या है ? ईश्वरीय वर्सा क्या है और कब प्राप्त होता है ?

ज्ञान, गुण, शक्तियाँ ही यथार्थ में परमात्मा की सम्पत्ति है, यही ईश्वरीय वर्सा है, जिसके फलस्वरूप ही स्वर्ग का वर्सा मिलता है। ईश्वर परमपिता परमात्मा अभी मिला है तो वर्सा भी अभी ही मिलना चाहिए, जो मिल रहा है। ज्ञान, गुण, शक्तियाँ जो अभी वर्से के रूप में मिल रही हैं, स्वर्ग तो उनका फल है, प्रतिबिम्ब है।

''समय फास्ट जा रहा है। ... अतीन्द्रिय सुख साधनों के आधार पर नहीं है। ... सर्व सम्पत्ति है ? गुण, शक्तियाँ, ज्ञान - यह सम्पत्ति है। उसकी निशानी क्या होगी ? अगर मैं सम्पत्ति में सम्पन्न हूँ तो उसकी निशानी क्या ? सन्तुष्टता। ... अभी के संस्कार, भविष्य का संसार बनेगा। ... यह चैकिंग एक दर्पण है, इस दर्पण से अपने वर्तमान और भविष्य को देखो।''

अ.बापदादा 05.03.04

Q. विश्व की वर्तमान और यज्ञ की वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए हमारा कर्तव्य क्या है ?

विश्व की और यज्ञ की वर्तमान परिस्थितियों को देखें तो सर्वत्र साधन और सत्ता की खींचातान है, हर व्यक्ति अधिकार के प्रति अधिक जागरूक है और कर्तव्य के प्रति उदासीन है, जिसके कारण हर व्यक्ति सोचता है कि साधन-सम्पत्ति का उपभोग करने का अधिकार उसको ही है। इन सब बातों को देखकर मनुष्य का संकल्प उठना अवश्य सम्भावी है क्योंकि मनुष्य एक बुद्धिमान चेतन प्राणी है और उसमें भी विशेष जो यज्ञ में समर्पित हुये हैं, उनके जीवन व्यवहार और बातचीत को देखते हैं तो अनेक प्रकार के प्रश्न सामने आते हैं। कुछ लोग तो इन संकल्प-विकल्पों के जाल में फंस कर भटक जाते हैं परन्तु इस सत्य की सदा याद रहे कि अधिकार

और कर्तव्य जीवन रूपी गाड़ी के दो चक्र हैं, जो समानान्तर चलते हैं तो जीवन सुखमय होता है। जो पक्के निश्चयबुद्धि हैं, जिनका बुद्धियोग परमात्मा के साथ है, वे समझते हैं कि परमात्मा ही विश्व का, यज्ञ का और हर आत्मा के लिए रक्षक, मददगार है, वह उनकी मदद अवश्य करेगा। इसलिए वे निश्चिन्त रहते हैं।

परमात्मा ने अभी हमको आत्मा, परमात्मा (स्वयं) और विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान दिया है। इन तीनों के गुण-धर्मों, विशेषताओं के ऊपर हम विचार करें तो तीनों ही परमानन्दमय है। जो आत्मा इन तीनों के गुण-धर्मों और विशेषताओं को समझता है, अनुभव करता है और उनको जीवन में धारण कर लेता है, उसके लिए ये संगमयुगी जीवन परमानन्दमय है, इसके लिए ही परमात्मा का इस रंगमंच पर अवतरण होता है और इसके लिए ही उसने हमको ये ज्ञान दिया है। इन तीनों के गुण-धर्मों और विशेषताओं को समझना और धारण करना हर आत्मा का अपना कर्तव्य है।

इस ईश्वरीय जीवन के विषय में भी विचार करें तो इसमें दो बातें महत्वपूर्ण हैं। एक तो जो आत्मा, परमात्मा और सृष्टि चक्र के गुण-धर्मां और विशेषताओं को समझकर परमात्मा के साथ योगयुक्त होकर इस संगमयुगी जीवन के परम सुख को अनुभव करता है। दूसरा जो इनके विषय में अधिक नहीं सोच-समझ सकते हैं या समझने की आवश्यकता न समझकर अपने तन-मन-धन, मन्सा-वाचा-कर्मणा परमात्मा के प्रति समर्पित होकर उनको याद करना ही एकमात्र कर्तव्य समझते हैं, उनके सारे कार्य परमात्मा सिद्ध करता है, जिससे वे भी सदा परम सुख के अनुभव में रहते हैं। इसके विषय में प्रचलित गीता में भी है - जो एक मेरे बनकर मेरे को ही भजते हैं, उनका योगक्षेम मैं स्वयं करता हूँ।

''अभी विशेष अपनी शक्तियों की सकाश चारो ओर फैलाओ। जब प्रकृति सूर्य की शक्ति... तो क्या आप अपनी शक्तियों की सकाश वायुमण्डल में नहीं फैला सकते हो ? आत्माओं को अपनी शक्तियों की सकाश से दुख-अशान्ति से नहीं छुड़ा सकते! ... जैसे स्थापना के आदिकाल में बापदादा की तरफ से अनेक आत्माओं को सुख-शान्ति की सकाश मिलने का घर बैठे अनुभव हुआ, संकल्प मिला जाओ।'' अ.बापदादा 2.2.08

''अभी एक सेकेण्ड में सारी सभा जो भी जहाँ हैं, वहाँ मन को एक ही संकल्प में स्थित करो - मैं और बाप परमधाम में अनादि ज्योतिबिन्दु स्वरूप हूँ, परमधाम में बाप के साथ बैठ जाओ। ... अभी वर्तमान समय के हिसाब से मन-बुद्धि को एकाग्र करने का अभ्यास, जो कार्य कर रहे हो, उसी कार्य में एकाग्र करो, कन्ट्रोलिंग पॉवर को ज्यादा बढ़ाओ। मन-बुद्धि, संस्कार

तीनों के ऊपर कन्ट्रोलिंग पॉवर।'' अ.बापदादा 2.2.08

Q. ट्रस्टी जीवन क्या और ट्रस्टी के गुण-धर्म-कर्तव्य क्या-2 हैं?

ट्रस्टी जिसका ट्रस्टी होता है, उसकी पूरी निष्ठा से सम्भाल करता है, परन्तु उसमें अपना मोह आदि नहीं रखता है, इसलिए वह उसके लाभ-हानि से प्रभावित नहीं होता है।

''बाप कहते हैं - तुम देह सहित जो कुछ है, वह सब कुछ मेरे को दे दो, मैं तुम्हारी आत्मा और शरीर दोनों को पवित्र बना दूँगा और फिर राजाई पद भी दूँगा। तुम्हारे पास जो कुछ है, वह सब बलि चढ़ो, मुझे ट्रस्टी बनाओ, मेरी श्रीमत पर चलो।''

सा.बाबा 29.4.08 रिवा.

''कहाँ भी ममत्व नहीं होना चाहिए। अपने को ट्रस्टी समझकर पालना करो। बाप की अमानत है। देह सहित देह के सब सम्बन्धों के हम ट्रस्टी हैं। ... शिवबाबा को तो कोई दुख नहीं होगा। वह तो पूरा ट्रस्टी है। कोई को कुछ हुआ कहेंगे अपना हिसाब-किताब चुक्तू कर जाकर दूसरा शरीर लिया। ... इतने सब मनुष्य शरीर छोड़ेंगे तो शिवबाबा को दुख होगा क्या! और ही खुशी होती है कि यह पुराना छी-छी शरीर छुड़ाये बच्चों को वापस ले जाऊंगा।''

सा.बाबा 30.4.08 रिवा.

''बाप भी देखते हैं कि सब कुछ हमको अर्पण कर फिर हमारी श्रीमत पर कैसे चलते हैं। कोई उल्टा-सुल्टा खर्चा कर पापात्माओं को तो नहीं देते हैं। शुरू में इसने भी सब कुछ अर्पण कर ट्रस्टी होकर दिखाया ना। सब कुछ ईश्वर को अर्पण कर खुद ट्रस्टी बन गया। बस किसको भी कुछ नहीं दिया। ईश्वर के अर्थ दिया तो सब ईश्वर के काम में ही लगना है ... इनको देखकर फिर औरों ने भी ऐसे किया।'' सा.बाबा 2.8.06 रिवा.

Q. जो ब्रह्माकुमार-कुमारी बनकर पतित बन जाते हैं तो क्या वे सतयुग के आदि में आ सकते हैं? यदि आ सकते हैं तो कैसे और उनकी स्थिति क्या होगी?

ब्रह्मा कुमार-कुमारी बनकर अगर पतित बन जाते तो दण्ड के भागी तो बनते ही हैं परन्तु अगर फिर चेतना आ जाती है और पुरुषार्थ करके अन्त में भी विकारों, जिसमें मूल काम विकार है, उस पर विजय पा लेते तो वे सतयुग के आदि में आ सकते हैं, जिसके लिए बाबा कहते हैं - एक-दो बार की तो बाबा माफ कर देता है परन्तु यदि कोई लम्बे समय तक विकार में जाता रहता है तो उसके लिए ऐसा पुरुषार्थ करना असम्भव सा ही है। ऐसी आत्मायें जो बाद में पुरुषार्थ करके आती भी हैं तो भी उनका पद तो कम हो ही जाता है। इसके लिए ही गायन है - रहिमन डोरा प्रेम का, मत तोड़ो चटकाये। तोड़े से जुड़ता नहीं, जुड़े गांठ पड़ जाये।

सुख का आधार एवं दुख-अशान्ति का कारण और निवारण

दुख-अशान्ति का मूल कारण है इच्छाओं और प्राप्तियों में असन्तुलन, प्रिय का वियोग और अप्रिय की संयोग तथा देहाभिमान के वश किये गये विकर्म। परमात्मा आकर जो सत्य ज्ञान देते हैं, तो आत्मा यथार्थ पुरुषार्थ करके अर्थात् परमात्मा की याद और अपने मूल स्वरूप में स्थित होने का सफल अभ्यास करती है, जिससे आत्मा का देहाभिमान रूपी अज्ञान अन्धकार मिट जाता है और आत्मा अपने मूल स्वरूप में स्थित हो जाती है। जब आत्मा अपने मूल स्वरूप में स्थित होती है तो इच्छाओं और प्राप्तियों में पूर्ण सन्तुलन होता है, जिससे इच्छा मात्रम् अविद्या की स्थिति होती है और आत्मा परम सुख का अनुभव करती है।

Q. जीवन में दुख-अशान्ति का कारण क्या और उसका निवारण क्या है अर्थात् दुख-अशान्ति की प्रक्रिया आत्मा पर कैसे प्रभावित होती है ? दुख-अशान्ति की पहेली का हल क्या है ?

यथार्थ ज्ञान की विस्मृति से आत्मिक शक्ति का ह्रास होता है, आत्मिक शक्ति के ह्रास से आत्मा शक्तिहीन हो जाती है, जिससे देहाभिमान शक्तिशाली हो जाता है और आत्मा पर प्रभावी हो जाता है। देहाभिमान के वशीभूत शक्तिहीन आत्मा विकारों के वशीभूत अनेक विकर्मों में प्रवृत्त होती है और विकर्मों के फलस्वरूप दुख-अशान्ति होती है। परमात्मा के संग, यथार्थ ईश्वरीय ज्ञान और आत्मिक स्वरूप के सफल अभ्यास से ही इस दुख-अशान्ति से मुक्ति सम्भव है। जब आत्मा देहाभिमान से मुक्त अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होती है तो उसकी इच्छायें-आशायें-आकांक्षायें बहुत कम होती हैं और जो होती हैं, वे अवश्य पूर्ण होती हैं, इसलिए आत्मा को किसी प्रकार की अप्राप्ति की अनुभूति नहीं होती है और आत्मा सुख-शानति का अनुभव करती है।

''यह जो आत्मा का शरीर है, इसमें आत्मा का बहुत मोह पड़ गया है, इसलिए थोड़ी भी बीमारी आदि होती है तो डर लगता है - कहाँ शरीर न छूट जाये। ... वहाँ आत्मा और शरीर दोनों पवित्र रहते हैं। फिर वह बल खलास हो जाता है तो 5 तत्वों का बल आत्मा को खींचता है।... आत्मा का 5 तत्वों के पुतले से मोह हो गया है, इसलिए इसको छोड़ने की दिल नहीं होती है। नहीं तो विवेक कहता है - शरीर छूट जाये और हम बाबा के पास चले जायें।''

सा.बाबा 3.3.04 रिवा.

दुख-अशान्ति की पहेली का हल - Sufferings are due to vicious action, vices are due to body-consciousness, body-consciousness is due to

ignorance. Ignorance can be removed by real spiritual knowledge, real spiritual knowledge is given by Knowledgeful God Father Shiva on the Auspicious Sangam Yuga of Kalpa. He is giving that knowledg. Now or Never.

Q. बापदादा चाहते हैं - कारण को निवारण में परिवर्तन करो तो कारण का निवारण अर्थात् कारण, निवारण में परिवर्तन कब और कैसे होगा ?

जब हम आत्मायें ईश्वरीय प्राप्तियों से सम्पन्न होंगे तो अपने को सदा सन्तुष्ट और प्रसन्न अनुभव करेंगे और जब हम सन्तुष्ट और प्रसन्न होंगे तो किसी प्रकार का कारण हो नहीं सकता। इसलिए ईश्वरीय प्राप्तियों को स्मृति में रख, उनको धारण करना ही कारण का निवारण है। जिसका अपना कोई कारण नहीं होगा और कारण को निवारण करने का अनुभव होगा, वही दूसरों के कारणों का भी निवारण करके, उनको भी कारणों से मुक्त करके मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करा सकेगा।

''कारण सामने आने से वा कारण सोचने से निवारण नहीं होता है।... पहले अपने अन्दर से इस शब्द से मुक्त होंगे तो दूसरों को भी मुक्त कर सकेंगे।... अपने पुरुषार्थ में भिन्न-भिन्न कारण शब्द के कारण मुक्ति का दरवाज़ा बन्द है।'' अ.बापदादा 18.3.08

''दुखी-अशान्त आत्मायें चिल्लाती हैं - हे मुक्तिदाता मुक्ति दो। क्या आपको उन आत्माओं की पुकार सुनने नहीं आती है ? लेकिन मुक्तिदाता बन पहले इस 'कारण' शब्द को मुक्त करो, तो स्वत: ही मुक्ति का आवाज़ आपके कानों में गूँजेगा। ... जब 'निवारण' का स्वरूप बन जायेंगे तो सर्वात्माओं को निर्वाणधाम, मुक्तिधाम में सहज जाने का रास्ता बताये मुक्त कर लेंगे।'' अ.बापदादा 18.3.08

'''मैं कौन', यह शब्द बार-बार स्मृति में लाओ और अपने भिन्न-भिन्न स्वमान, भगवान से मिले हुए टाइटिल। ... स्वमान की लिस्ट सदा अपनी बुद्धि में मनन करते रहो। इसी नशे में रहो तो कारण शब्द ही मर्ज हो जायेगा और निवारण, हर कर्म में दिखाई देगा। निवारण का स्वरूप बन जायेंगे।'' अ.बापदादा 18.3.08

Q. सुख-शान्ति-आनन्द कहा जाता है ? तो आनन्द क्या है, उसकी अनुभूति क्या है और उसकी अनुभूति कब और कहाँ होती है ?

आनन्द = सुख+शान्ति। आनन्द की अनुभूति कल्प के पुरुषोत्तम संगमयुग पर ही होती है, जब आत्मा का परमात्मा से मिलन होता है और परमात्मा से प्राप्त सारा ज्ञान आत्मा में जाग्रत

होता है। शान्ति परमधाम में होती है और सर्व भौतिक सुख-साधनों की प्राप्ति सतयुग में होती है परन्तु आनन्द का अनुभव संगमयुग पर ही होता है जब आत्मा को परमात्मा से आत्मा-परमात्मा के साथ तीनों लोकों और तीनों कालों का ज्ञान मिलता है, जिसकी धारणा से आत्मा देह में रहते देह से न्यारे आत्मिक स्वरूप में स्थित होती है।

यथार्थ ज्ञान से देह में रहते देह से न्यारी निर्संकल्प और निर्विकल्प स्थिति में आत्मा जो शान्ति और सुख का अनुभव करती है, वही आनन्द की स्थिति है। आनन्द के लिए आत्मा को भौतिक साधनों की कोई आवश्यकता नहीं है। उसके लिए ईश्वरीय साधनों की आवश्यकता है, जो परमात्मा पिता ने अभी हमको दिये हैं। जो आत्मा अभी इस आनन्द अर्थात् अतीन्द्रिय सुख के अनुभव में रहती है, वही सतयुग के साधनों की अधिकारी बनती है।

Q. सुख-दुख का निर्णायक बिन्दु (Critaria) क्या है ?

सुख-दुख के निर्णय में आत्मा की मानसिक स्थिति महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। दूसरे के पास अधिक प्राप्तियां, अपने पास कम देखकर आत्मा दुख का अनुभव करती है। ऐसे ही दूसरे को अधिक दुखी देखकर आत्मा अपने कम दुख को भूल जाती है और अपने को सुखी अनुभव करती है। इसलिए सुख-दुख का निर्णय भी आत्मा दूसरों को देखकर करती है। आत्मा के अपने पूर्व अनुभव भी आत्मा में नीहित रहते हैं, वे भी सुख-दुख के निर्णय में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। आत्मा के लिए मृत्य-दुख ऐसा ही एक दुख है। कर्मभोग से आत्मा को दुख-दर्द होता है लेकिन जब आत्मा इस सत्य को समझ लेती है कि ये कर्मभोग हमारे ही बुरे कर्मों का परिणाम है तो कर्मभोग होते भी उसकी वेदना अर्थात् उसके दुख की महसूसता बहुत हद कम हो जाती है। परन्तु जब आत्मा अज्ञानतावश अपने दुख या कर्मभोग का कारण दूसरे को समझता है तो दुख की महसूसता अधिक बढ़ जाती है।

Q. इस परम दुख की दुनिया में क्या स्मृति रहे, जिससे जीवन में परम सुख की अनुभूति होती रहे ?

आत्मिक स्वरूप परमानन्दमय है, परमात्मा की स्मृति परमानन्दमय है और ये विश्व-नाटक परमानन्दमय है। अपने आत्मिक स्वरूप में स्थिति हो और स्मृति रहे कि हमको वापस घर परमधाम जाना है, परमात्मा सुख-शान्ति-आनन्द का सागर है और उसका हाथ हमारे सिर पर है, उसकी छत्रछाया हमारे ऊपर है और उसका सदा साथ है। इस विश्व-नाटक की दिव्यता और अद्भुतता का ज्ञान बुद्धि में हो और साक्षी होकर इस विश्व-नाटक को देखें तो हम सदा परम सुख का अनुभव करेंगे। हम अपने को चेक करें कि हमको इस परम सुख की अनुभूति

कितनी है। इससे हमारे ज्ञान की धारणा की परख हो जाती है।

Q. जीवन की सफलता अर्थात् सदा सुखमय जीवन का सहज मार्ग क्या है ?

वर्तमान संगमयुगी जीवन परम प्राप्तियों से परिपूर्ण है, उन प्राप्तियों के महत्व को अनुभव करके उनका सदुपयोग करने वाले को ये जीवन और ये विश्व-नाटक परम सुखमय अनुभव होता है। जो अभी सुखमय जीवन का अनुभव करता है, उसका भविष्य भी अवश्य सुखमय होगा क्योंकि वर्तमान जीवन भविष्य जीवन का बीज है अर्थात् आधार है। वर्तमान जीवन की प्रापतियों को भूलकर भविष्य की लालसा में जीने वाला न वर्तमान का सुख अनुभव करता है और न ही भविष्य का सुख पा सकता है। वर्तमान ही भविष्य का आधार है। ईश्वरीय ज्ञान, गुण, शक्तियाँ महान हैं और जीवन में परम सुख को देने वाली हैं।

Q. क्या भौतिक साधन-सम्पत्ति आत्मा को स्थाई सुख-शान्ति दे सकते हैं ?

नहीं। साधन-सम्पत्ति तो सुख-शान्ति मय जीवन का एक अंग (Factor) मात्र हैं। आत्मा को स्थाई सुख-शान्ति के लिए तन-मन-धन, सम्बन्ध-सम्पर्क, प्रकृति आदि सब स्वस्थ चाहिए तब ही आत्मा को स्थाई सुख-शान्ति की अनुभूति हो सकती है। इसमें आत्मा के कर्मों का महत्वपूर्ण स्थान है। कर्मों का खाता जमा करने में ज्ञान, गुण, आत्मिक शक्ति, चरित्र की विशेष भूमिका है। आत्मा को स्थाई सुख-शान्ति की अनुभूति के लिए प्रकृति का पावन होना परमावश्यक है। बाबा ने कहा है - सुखमय जीवन के लिए तन का, मन का, जन का, धन का अर्थात् चारो प्रकार सुख चाहिए। दूसरे शब्दों में कहें कि सुखमय जीवन के लिए भौतिक सुख-साधन भी चाहिए तो आध्यात्मिक सुख-साधन भी चाहिए क्योंकि ये जीवन आत्मा और शरीर दोनों के सम्पर्क से अस्तित्व में आया है।

Q. सबसे श्रेष्ठ सुख क्या है ?

आत्मिक सुख। विश्व-नाटक की यथार्थता को जानकर इस देह में रहते देह और देह की दुनिया से न्यारी स्थिति में स्थित होने से प्राप्त सुख परम अद्भुत, सुर-दुर्लभ और सर्वश्रेष्ठ सुख है, जो कल्प के संगमयुग पर ही आत्माओं को परमात्मा के साथ और परमात्मा के ज्ञान से प्राप्त होता है। जिसको अतीन्द्रिय सुख भी कहा जाता है।

Q. जीवन की सर्वोच्च सुख की स्थिति कब, कहाँ और कैसे है ?

1. क्या जब प्रथम बार बाबा से मिलते हैं तब ? - जब आत्मा बाबा की शक्ति से अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर परमसुख का अनुभव करती है। या

2. जब सम्पूर्ण बनकर घर जाते अर्थात् अन्त समय ? जब आत्मा अपने पुरुषार्थ से, ज्ञान की धारणा से, योग के अभ्यास से अपनी सतोप्रधान स्थिति में स्थित होती है और परम सुख को अनुभव करती है। या

3. जब सतयुग में प्रथम जन्म लेते, तब ? जब आत्मा पूर्ण सतोप्रधान होती परन्तु आत्मा की उतरती कला होती है, स्पष्ट ज्ञान भी नहीं होता है, परमात्मा का साथ भी नहीं होता परन्तु भौतिक सुख अपनी चरम-सीमा पर होता है। या

4. अभी संगमयुग के पुरुषार्थी जीवन में, जब पुरुषार्थ करके आत्मा अपने आत्मिक स्वरूप की स्थित और परमात्मा की मधुर स्मृति से मुक्ति-जीवनमुक्ति का परमसुख का अनुभव करती है, तब ?

अभी संगमयुग पर आत्मा को परमात्मा का साथ है, आत्मा को तीनों लोकों, तीनों कालों का ज्ञान है परन्तु संगमयुग होने के कारण आत्मा के पुराने हिसाब-किताब के फलस्वरूप, पुराने स्वभाव-संस्कार के कारण विकर्मों का खाता संचित होने के कारण कब-कब दुख-दर्द का भी अनुभव हो जाता है परन्तु अभी आत्मा की चढ़ती कला है। आत्मिक स्वरूप परमानन्दमय है, परमात्मा का साथ परमानन्दमय है, ये विश्व-नाटक परम सुखमय है परन्तु अनुभव करना आत्मा का अपना कर्तव्य है। जब और जहाँ भी आत्मा अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होती, इस विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान की स्मृति होती और परमात्मा की मधुर स्मृति में होती तो आत्मा को जो सुख अनुभव होता वह सुर-दुर्लभ है, वह त्रिलोक में कहाँ भी प्राप्त नहीं हो सकता। हमारे अनुभव और विचार में अभी संगमयुग का सुख ही सवोत्तम सुख है।

विश्व-नाटक की यथार्थता को जानकर सतत अभ्यास करने वाला ही इस परम आनन्द को अनुभव कर सकता है। जो साधन-सम्पत्ति से, इन्द्रीय सुख-साधनों से इस जीवन में परम सुख को पाना चाहता है, वह कभी अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सकेगा क्योंकि इन्द्रीय सुखों की कोई सीमा नहीं है और साधन-सम्पत्ति से कब किसकी तृप्ति नहीं हो सकती। इसीलिए राजा भर्तृहरि ने कहा है - संसार की सम्पूर्ण सम्पत्ति भी एक मनुष्य के लिए पर्याप्त नहीं है।

Q. सुख-शान्ति अर्थात् मुक्ति-जीवनमुक्ति हर आत्मा के जीवन का लक्ष्य है। सुख-शान्ति का आधार क्या है और सुख-शान्ति का दर्पण क्या है ?

शान्ति आत्मा का स्वधर्म है और परमधाम में आत्मा परम शान्ति में रहती हैं। परन्तु आत्मा जीवन में रहते सुख-शान्ति की अनुभूति करना चाहती है। जीवन में सुख-शान्ति का दर्पण है सन्तुष्टता। सन्तुष्टता का आधार है सम्पन्नता और सम्पन्नता का आधार है सम्पूर्णता। सम्पूर्णता

के लिए आत्मा में ज्ञान, गुण और शक्तियों की पूर्ण धारणा हो अर्थात् केवल ज्ञान नहीं लेकिन ज्ञान-गुण-शक्तियों की धारणा हो, स्थिति हो, तब ही आत्मा सुख-शान्ति का अनुभव कर सकती है।

''सुख है? शान्ति है? सम्पत्तिवान हैं? सुख अभी साधनों के आधार पर तो नहीं है? अतीन्द्रिय सुख है? ... सम्पत्ति से सम्पन्नता होती है। सर्व सम्पत्ति है? गुण, शक्तियाँ, ज्ञान - यह सम्पत्ति है। अगर मैं इस सम्पत्ति में सम्पन्न हूँ तो उसकी निशानी क्या? सन्तुष्टता। ... यह चेकिंग एक दर्पण है।'' अ.बापदादा 05.3.04

Q. मानव जीवन की सर्वोत्तम प्राप्ति क्या है और अभी हमको क्या प्राप्त है?

इस प्रश्न पर विचार करें तो परमपिता परमात्मा और उससे प्राप्त सत्य ज्ञान ही जीवन की सर्वोत्तम प्राप्ति है और उस ज्ञान से अपने यथार्थ आत्मिक स्वरूप में स्थित होना जीवन का सर्वश्रेष्ठ सुख है, जो अभी हमको प्राप्त है। इस सुख का अनुभव करना और कराना ही इस जीवन का परम कर्तव्य है।

''यह तो समझते हैं कि ये राजधानी स्थापन हो रही है। ... वहाँ यह ख्यालात नहीं रहती है कि इसने पुरुषार्थ नहीं किया है, इसलिए यह पद मिला है। नहीं, कर्म-विकर्म की बातें सब यहाँ बुद्धि में हैं। कल्प के संगमयुग पर ही बाप यह सब समझाते हैं। ... बाप रास्ता बताते हैं, ऐसे नहीं कि बाप सुख देते हैं। बाप सुख का रास्ता बताते हैं। रावण भी दुख देते नहीं हैं लेकिन दुख का उल्टा रास्ता बताते हैं। बाप न दुख देते हैं, न सुख देते हैं, सुख का रास्ता बताते हैं। फिर जो जितना पुरुषार्थ करे। ... अगर बाप देता हो तो फिर सबको एक जैसा वर्सा मिलना चाहिए।'' सा.बाबा 13.7.04 रिवा.

Q. वह कौनसा साधन है, जो परमात्मा पिता ने हमको दिया है, जिस साधन से हर आत्मा सुख-शान्ति को पा सकती है, पा रही है और उसका प्रैक्टिकल स्वरूप क्या है?

आत्मा, परमात्मा और विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान जो परमात्मा ने हमको दिया है, उससे हर आत्मा सुख-शान्ति को पा सकती है। जो आत्मा इस ज्ञान को समझकर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होगी, वह परम सुख-शान्ति की अनुभूति अवश्य करेगी, इसमें अमीर-गरीब, स्थूल साधन-सामग्री या स्थान आदि की कोई बात नहीं है। बाबा जो कहते हैं कि तुम दुखी आत्माओं की पुकार सुनो और उनको मुक्ति-जीवनमुक्ति दो, उसका यही आधार है। ईश्वरीय ज्ञान सुख-शान्ति का अखुट भण्डार है, जिससे हर आत्मा सुख-शान्ति पा सकती है। यही ज्ञान का सार है।

Q. कर्मभोग से सहज मुक्त होने का विधि-विधान और साधन क्या है ?

असन्तुष्टता, अज्ञानता और अज्ञानतावश दूसरों को अपने दुख या कर्मभोग का कारण समझने से हमारे कर्मभोग की फीलिंग कई गुणा अधिक बढ़ा देती है, जबकि सत्य ज्ञान और सन्तुष्टता हमारे कर्मभोग की फीलिंग को घटा देती है, जिससे आत्मा सहज ही कर्मभोग से मुक्त हो जाती है। कोई भी कर्मभोग हमारे ही अज्ञानतावश किये गये कर्मों का फल है, जिसको भोगने के बिना मुक्त नहीं हो सकते हैं। योग भी एक प्रकार का भोग ही है, जो आत्मा स्वेच्छा से भोगकर पूरा करती है।

''अन्तिम पेपर मे पास होने के मुख्य है निर्भयता का गुण... निर्भयता के लिए निराकारी बनना है। जितना निराकारी अवस्था में होंगे, उतना निर्भय होंगे। भय तो शरीर के भान में आने से ही होता है।'' अ.बापदादा 26.5.69

Q. दुख-अशान्ति से छूटने का यथार्थ पुरुषार्थ क्या है ?

विश्व-नाटक की यथार्थता को समझकर देह और देह की दुनिया से नष्टोमोहा होकर अपने मूल आत्मिक स्वरूप में स्थित होना ही दुख-अशान्ति से छूटने का एकमात्र साधन है। निराकार परमपिता परमात्मा की मधुर स्मृति आत्मिक स्वरूप में स्थित होने का मूलाधार है।

पवित्रता

पवित्रता अर्थात् सम्पूर्णता, पवित्रता अर्थात् आत्मिक स्थिति, पवित्रता अर्थात् सम्पन्नता-सन्तुष्टता, पवित्रता अर्थात् राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति, ईर्ष्या-घृणा, पवित्रता अर्थात् देह-भान और देहाभिमान से मुक्त स्थिति, आदि से मुक्त स्थिति। परमात्मा पिता ने पवित्रता के लिए हमको सारा ज्ञान दिया है।

Q. सच्ची पवित्रता क्या है, कब और कहाँ होती है ?

Q. सतयुग की पवित्रता और संगमयुग की पवित्रता अर्थात् देवताओं की पवित्रता और ब्राह्मणों की पवित्रता में क्या अन्तर है ?

देवताओं की पवित्रता आत्मिक शक्ति के आधार पर है परन्तु ब्राह्मणों की पवित्रता यथार्थ ज्ञान और परमात्मिक शक्ति के आधार है, इसलिए देवताओं की पवित्रता गिरती कला की पवित्रता है परन्तु ब्राह्मणों की पवित्रता चढ़ती कला की पवित्रता है, चढ़ती कला का आधार है। ब्राह्मणों की पवित्रता सर्व शक्तियों से सम्पन्न पवित्रता है, इसलिए ब्राह्मणों का सुख अतीन्द्रिय सुख अर्थात् आनन्द के रूप में गाया जाता है और देवताओं का सुख केवल सुख है, जो भौतिक

साधनों के आधार पर है। सर्व धर्मों और शास्त्रों में संगमयुग पर परमात्मा और ब्राह्मणों के कर्तव्यों का ही गायन है। देवताओं के विषय में भी जो गायन करते हैं, उसमें अधिकांश गायन संगमयुग के ब्राह्मणों के कर्तव्यों का ही करते हैं क्योंकि वे देवताओं को भी भगवान समझ लेते हैं।

Q. पवित्रता का दर्पण क्या है ?

प्रसन्नता पवित्रता का दर्पण है अर्थात् जब जीवन में पवित्रता है तब ही आत्मा प्रसन्न रह सकती है। प्रसन्नता का आधार सन्तुष्टता है, सन्तुष्टता का आधार सम्पन्नता है। सम्पन्नता अर्थात् ईश्वरीय ज्ञान, गुण, शक्तियों की भरपूरता अर्थात् धारणा।

बाबा ने पवित्रता शब्द कब-कब ब्रह्मचर्य की धारणा के लिए प्रयोग किया है और कब-कब आत्मा की सम्पूर्ण स्थिति अर्थात् बाप समान स्थिति के लिए प्रयोग किया है। ब्रह्मचर्य की धारणा के बाद ही ज्ञान-गुण-शक्तियों की धारणा होती है। यथार्थ ज्ञान को समझने अर्थात् धारण करने से ही योग में सफलता मिलती है, जिससे आत्मा पवित्र बनती है। इसलिए सत्य यह है कि पवित्रता अर्थात् ब्रह्मचर्य की धारणा और ज्ञान-गुण-शक्तियों की धारणा एक-दूसरे पर आधारित हैं अर्थात् चक्रवत् हैं।

''सच्ची सत्यता की शक्ति सम्पन्न इस समय इस संगमयुग पर आप सभी बन रहे हो। इस संगमयुग की श्रेष्ठ प्राप्ति है - सत्यता की शक्ति, पवित्रता की शक्ति। इसकी प्राप्ति सतयुग में आप सभी ब्राह्मण सो देवताओं की आत्मा और शरीर दोनों पवित्र बनते हैं। सारे सृष्टि-चक्र में और कोई भी आत्मा और शरीर दोनों पवित्र नहीं बनते।''

अ.बापदादा 30.11.07

''सभी दिल से और अनुभव से कहते हो - पवित्रता तो हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। ... पवित्रता वा सत्यता प्राप्त करने के लिए आप सभी ने पहले अपने सत् स्वरूप आत्मा को जान लिया, अपने सत बाप, सत शिक्षक, सतगुरु को पहचान लिया और पा लिया। जब तक कोई अपने सत स्वरूप, सत बाप को नहीं जानते तब तक सम्पूर्ण पवित्रता, सत्यता की शक्ति आ नहीं सकती।''

अ.बापदादा 30.11.07

Q. प्राय: कई भाई-बहनें कहते हैं ज्ञान के विस्तार में क्या जाना है, बाबा कहते हैं बाबा को याद करना है, जिससे धारणा अच्छी हो। अब प्रश्न उठता है कि धारणा क्या चीज है, धारणा का भाव-अर्थ क्या है ?

Q. बाबा ने कहा है पवित्रता की धारणा अच्छी होगी तो योग अच्छा लगेगा और योग अच्छा होगा तो ज्ञान-गुण-शक्तियों की धारणा अच्छी होगी। तो धारणा शब्द का अर्थ क्या है ?

हमारी इस पढ़ाई के चार सब्जेक्ट हैं - ज्ञान, योग, धारणा और सेवा। चारो ही सब्जेक्ट में पास होंगे तब ही पास होंगे। धारणा में मूल धारणा है - हम आत्मा हैं, देह नहीं। इस मूल धारणा को ही बाबा ने सदा काल पक्की करने को कहा है, इसमें सारी धारणायें समाई हुई हैं। इस धारणा को ही पक्का करने के लिए बाबा ने ज्ञान, योग, धारणा और सेवा के चारो सब्जेक्ट का ज्ञान दिया हैं। इन चारो में जो सन्तुलन रखता है, वह इस जीवन में भी परम सुख का अनुभव करता है और भविष्य में भी परम सुख पाता है। किसी एक सब्जेक्ट की अति में चला जाना और तीन की उपेक्षा करने वाला धोखा खा लेता है। बहुधा लोग दैवी गुणों की धारणा को ही धारणा कहते हैं परन्तु धारणा का अर्थ है किसी चीज को धारण करना अर्थात् जीवन में अपनाना। जहाँ तक दैवी गुणों की धारणा की बात है, सतयुग की आदि में हमारा जीवन सर्व गुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण था फिर भी हमारी उतरती कला हुई। तो उसका कारण क्या है अर्थात् अभी हमारी चढ़ती कला किस आधार पर होती है ? ये एक विचारणीय बात है। ब्रह्मा बाबा ने मुरली में चारो ही सब्जेक्ट को समान स्थान दिया है। ज्ञान ही तीन सब्जेक्ट का आधार है अर्थात् यथार्थ ज्ञान की धारणा अन्य सब धारणाओं का आधार है, जो ही चढ़ती कला का आधार है।

Q. आत्मा पवित्र होगी तब धारणा होगी ? आत्मा कैसे पवित्र होगी और पवित्र होने पर किस बात की धारणा होगी ? पवित्रता से भाव-अर्थ क्या है ?

Q. धारणा नहीं होती इसलिए किसको समझा नहीं सकते। किस बात की धारणा नहीं होती और क्यों नहीं होती जो किसको समझा नहीं सकते ?

धारणा शब्द में अनेक बातें आ जाती हैं। ज्ञान की भी धारणा है, दैवी गुणों की भी धारणा है। ज्ञान की धारणा होगी तो योग अच्छा लगेगा, योग अच्छा होगा तो दैवी गुणों की धारणा होगी। पवित्रता भी एक दैवी गुण है। पवित्रता अर्थात् ब्रह्मचर्य व्रत की धारणा होगी तो योग अच्छा लगेगा और ज्ञान की अच्छी धारणा होगी। जब ज्ञान की धारणा होगी, योग का सफल अभ्यास होगा तब आत्मा पवित्र बनेगी अर्थात् आत्मा के ऊपर देहाभिमान की जंक उतरेगी। इस विश्व में हर बात चक्रवत् है। ज्ञान-योग-धारणा-ज्ञान चक्रवत् चलता है। हठयोग में भी अष्टांग योग में धारणा का विशेष महत्व है।

''अब तुम पढ़ते हो फिर पढ़ाते भी हो। कोई पढ़ते हैं लेकिन दूसरों को समझा नहीं सकते हैं क्योंकि धारणा नहीं होती है। बाबा कहेंगे तुम्हारी तकदीर में नहीं है तो बाप क्या करे। यदि सबको आशीर्वाद करे तो सब स्कॉलरशिप ले लेवें।'' सा.बाबा 27.4.04 रिवा.

Q. सम्पूर्ण पवित्रता क्या है ? क्या ब्रह्मचर्य के पालन करने वाले को पवित्र कहेंगे ? यदि हाँ तो क्यों और यदि नहीं तो क्यों ? क्या देवताओं को सम्पूर्ण पावन कहेंगे ? यदि देवतायें सम्पूर्ण पावन हैं तो कब तक और कहाँ तक ? क्या सम्पूर्ण निर्विकारी और सम्पूर्ण पवित्र में कोई अन्तर है ? सतयुग में जो आत्मा दूसरा जन्म लेती है, उसको सम्पूर्ण पवित्र कहेंगे ? निर्विकारी और सम्पूर्ण निर्विकारी में कोई अन्तर है ?

सम्पूर्ण पवित्रता अर्थात् सम्पूर्ण निर्विकारी। सम्पूर्ण पवित्र तो जो आत्मायें सतयुग के आदि में पहले जन्म में आती हैं, उसको ही कहेंगे क्योंकि वहाँ आत्मा भी सम्पूर्ण पावन, प्रकृति भी सम्पूर्ण पावन। तो वह है पवित्रता की चरमोत्कृष्ट स्थिति। उसके बाद तो आत्मा और प्रकृति की कलायें उतरती जाती हैं।

जो भी आत्मा परमधाम से आती है, वह सम्पूर्ण पवित्र ही होती है परन्तु उतरती कला के या अपवित्र वातावरण में आते ही उसकी पवित्रता की स्थिति गिर जाती है।

देवतायें जब पुनर्जन्म में आते हैं तो उनको सम्पूर्ण पावन तो नहीं कहेंगे परन्तु वे सम्पूर्ण निर्विकारी अवश्य होते हैं क्योंकि विकारों की प्रवेशता द्वापर से होती है। इसलिए बाबा ने कई बार कहा है - सम्पूर्ण पावन श्रीकृष्ण को ही कहेंगे, नारायण को नहीं। सन्यासी पवित्र बनते हैं परन्तु देवताओं की पवित्रता और सन्यासियों की पवित्रता में अन्तर है। क्या-क्या अन्तर है, वह भी बाबा ने बताया है। देवताओं की आत्मा और शरीर दोनों पावन होते हैं परन्तु सन्यासियों की आत्मा तो पावन होती है परन्तु शरीर विकार से पैदा होता है।

''पहले-पहले है श्रीकृष्ण फर्स्ट पावन मनुष्य, उनकी महिमा ज्यादा है। लक्ष्मी-नारायण की इतनी महिमा नहीं है क्योंकि बच्चे पवित्र सतोप्रधान होते हैं।''

सा.बाबा 12.5.08 रिवा.

''मुख्य बात है पवित्रता की। ... बाप कहते हैं - काम महाशत्रु है, इस पर जीत पहनो। इस पर जीत पाने से ही तुम पवित्र बनेंगे। ... जब आत्मा सम्पूर्ण बन जायेगी तो फिर यह पतित शरीर नहीं रहेगा। फिर जाकर पावन शरीर लेंगे।''

सा.बाबा 11.10.04 रिवा.

''आप सभी ने पूरे जन्म के लिए पक्का व्रत चाहे खान-पान का, चाहे मन के संकल्प की पवित्रता का, वचन का, कर्म का, सम्बन्ध-सम्पर्क में आते हुए कर्म का पूरे जन्म के लिए पक्का पवित्रता का व्रत लिया है ? ... पवित्रता ब्राह्मण जीवन का आधार है। पूज्य बनने का भी आधार है तो श्रेष्ठ प्राप्ति का भी आधार है।'' अ.बापदादा 5.3.08

''सभी चेक करो कि ... सिर्फ ब्रह्मचर्य की पवित्रता नहीं लेकिन मन-वचन-कर्म, सम्बन्ध-सम्पर्क में भी पवित्रता का पक्का व्रत लिया है ? ... चेक करो - पक्का व्रत लिया है ? सदा काल का व्रत लिया है ? ... प्यार में मैजारिटी पास हैं लेकिन पवित्रता के व्रत में चारो रूप में मन्सा-वाचा-कर्मणा, सम्बन्ध-सम्पर्क में सम्पूर्ण पवित्रता का व्रत निभाने में परसेन्टेज आ जाती है।'' अ.बापदादा 5.3.08

Q. पवित्र आत्मा की क्या पहचान है अर्थात् पवित्रता की यथार्थ धारणा क्या है ?

आत्मा जब चाहे, जहाँ चाहे, जितना समय चाहे अपनी मन-बुद्धि को वैसे एकाग्र कर ले, यही पवित्र आत्मा की पहचान है। पवित्र आत्मा राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति, इर्ष्या-घृणा, इच्छा-आकांक्षा से मुक्त होती है, इसलिए संकल्प-विकल्पों से मुक्त होने के कारण मन-बुद्धि उसके नियन्त्रण में होते हैं। पवित्र आत्मा की दृष्टि सदा आत्मा पर रहती है।

Q. पवित्रता का भाव-अर्थ क्या है ? क्या ब्रह्मचर्य का पालन ही पवित्रता है।

पवित्रता अर्थात् सम्पूर्णता अर्थात् 100 प्रतिशत आत्मिक स्थिति अर्थात् बाप सम्पन्न स्थिति अर्थात् बीजरूप स्थिति अर्थात् ब्रह्माचारी अर्थात् ब्रह्मा बाप समान (ब्रह्मा बाप निराकार शिवबाबा एवं साकार ब्रह्मा बाबा दोनों का प्रतीक है क्योंकि दोनों गुण-कर्तव्यों का अनुभव ब्रह्मा तन द्वारा ही होता है) अर्थात् देह में रहते ब्रह्मा बाप समान आत्मिक स्वरूप में स्थिति अर्थात् सदा सम्पन्न-सन्तुष्ट-प्रसन्न स्थिति अर्थात् साक्षी स्थिति। इन सब बातों के आधार पर हम अपनी सम्पूर्ण पवित्रता की स्थिति को परखेंगे तो सहज परख सकेंगे और उसके लिए क्या पुरुषार्थ करना है, वह कर सकेंगे।

Q. कोई तुम से पूछे - तुम पावन हो या पतित हो तो क्या उत्तर देंगे ?

हम पावन बनने का पुरुषार्थ कर रहे हैं और पतित-पावन परमात्मा हमको पावन बना रहा है। अभी हम परमात्मा से पावन बनने के लिए पढ़ रहे हैं।

''तुमसे कोई पूछेंगे कि तुम सम्पूर्ण पावन हो ? तो क्या कहेंगे ? भल पवित्र तो हैं परन्तु कायदे अनुसार जब तक यह शरीर है तो तुमको सम्पूर्ण पावन नहीं कह सकते। ... सम्पूर्ण पावन बन जायें फिर तो खेल ही खलास हो जाये, फिर यह शरीर छोड़ना पड़े। यह किसको समझाना बड़ा गुह्य ज्ञान है। यहाँ किसको सम्पूर्ण कह न सकें क्योंकि हम खुद कहते हैं कि यह व्यक्त है, वह अव्यक्त है। सम्पूर्ण अव्यक्त अन्त में बनेंगे, फिर यह शरीर नहीं रहेगा। यह सम्पूर्ण बन गये फिर ज्ञान भी पूरा हो जाता है।'' सा.बाबा 8.03.03 रिवा.

''सृष्टि को तमोप्रधान बनना ही है। फिर भक्ति में इतनी जो साधना करते हैं, उससे कुछ मिलता

है या नहीं। यह विचार भी नहीं किया जाता है। अब समझते हैं, कुछ भी मिलता नहीं।''

सा.बाबा 25.03.03 रिवा.

Q. सन्यासियों और देवताओं की पवित्रता में क्या अन्तर है, जिससे देवताओं के मन्दिर बनते, सन्यासियों के नहीं ?

सन्यासियों की आत्मा पवित्र होती है परन्तु देह तो विकार से ही पैदा होती है, इसलिए उनके मन्दिर नहीं बन सकते परन्तु देवताओं की आत्मा और शरीर दोनों पावन होते, इसलिए उनके मन्दिर बनते हैं क्योंकि देवताओं का जन्म योगबल से होता है।

''सन्यासी पवित्र बनते हैं तो उनकी महिमा तो बढ़नी ही है। विवेक कहता है - जो पवित्र बनते हैं, उनकी महिमा जरूर बाप को करानी है। तुम पवित्र बनते हो तो तुम्हारी कितनी महिमा होती है।''

सा.बाबा 12.2.08 रिवा.

''पतित किसको कहा जाता है - यह मनुष्य नहीं जानते हैं। सन्यासी कुछ जानते हैं। समझते हैं इन विकारों से हम नर्कवासी बने हैं, ...सबसे जास्ती पावन भारत ही था सो अब पतित बना है। सन्यासियों को भी सम्पूर्ण पावन नहीं कह सकते हैं क्योंकि पतित दुनिया में बैठे हैं।''

सा.बाबा 14.5.08 रिवा.

Q. पवित्र आत्माओं की दुनिया कहाँ है ?

परमधाम या ब्रह्मलोक है पवित्र आत्माओं की दुनिया। सतयुग है देवात्माओं की दुनिया। जब आत्मा परमधाम से इस धरा पर पार्ट बजाने आती है, तो आते ही उसकी पवित्रता की कलायें कम होने लगती हैं परन्तु देवताओं को अपवित्र नहीं कह सकते, इसलिए सतयुग को देवात्माओं की दुनिया स्वर्ग कहा जाता है।

श्रीमत और निश्चयबुद्धि

परमात्मा पिता की श्रीमत ही ब्राह्मण जीवन का आधार है। श्रीमत ही आत्मा और समग्र विश्व की चढ़ती कला का आधार है। जो श्रीमत के अनुसार चलता है, कर्म करता है, वह स्वत: ही बाप के दिल पर रहता है और उसको बाप की मदद अवश्य मिलती है, उसको मदद मांगने की आवश्यकता नहीं होती।

बाबा की मूल श्रीमत है - तुम देह नहीं, आत्मा हो। अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित रहो और दूसरे को भी आत्मिक स्वरूप में देखते हुए व्यवहार में आओ। इस मूल श्रीमत के पालन के लिए और सारी श्रीमत बाबा ने दी हैं।

''देही-अभिमानी बनना बहुत बड़ी मंजिल है। ऐसे थोड़ेही विश्व का मालिक बन जायेंगे। सितम भी सहन करने पड़ेंगे। ... आखरीन विजय तुम बच्चों की है ही। तुम सिर्फ बाप की याद में रहो। यह है योगबल, जो बाप तुम्हें एक ही बार सिखलाते हैं।''

सा.बाबा 7.5.08 रिवा.

Q. निश्चयबुद्धि आत्मा की निशानी क्या है ?

निश्चन्ता ही निश्चय की निशानी है। जो आत्मा अपने वर्तमान और भविष्य की सम्पन्नता के प्रति आश्वस्त होता है, वह सदा ही निश्चिन्त रहता है।

''जो खज़ानों के मालिक और परमात्म-बालक हैं, वे सदा ही स्वप्न में भी बेफिकर बादशाह हैं क्योंकि उनको निश्चय है कि यह ईश्वरीय खज़ाने इस जन्म में तो क्या लेकिन अनेक जन्म साथ हैं, साथ रहेंगे, इसलिए वे निश्चयबुद्धि निश्चिन्त हैं।''

अ.बापदादा 18.3.08

Q. श्रीमत का आधार क्या है ?

शिवबाबा ने ब्रह्मा तन के द्वारा डायरेक्ट और इन्डायरेक्ट रूप में श्रीमत दी है अर्थात् जब बाबा साकार में थे तो शिवबाबा ने उनके तन द्वारा विभिन्न व्यक्तियों को उनकी आवश्यकता अनुसार व्यक्तिगत रूप में भी श्रीमत दी है और सर्व आत्माओं के वर्तमान भविष्य को जानते हुए मुरली में सभी बातों के लिए श्रीमत दी है। वास्तव में बाबा की मुरली सर्व बातों और परिस्थितियों के लिए बाबा ने श्रीमत दी है। जो उस भाव और भावना से मुरली पढ़ता है, सुनता है, उसके सामने हर समय और हर बात के लिए समयानुसार श्रीमत स्पष्ट रहती है। उसको कब सोचना नहीं पड़ता है।

Q. निश्चय और विजय में क्या सामन्जस्य है अर्थात् दोनों में क्या सम्बन्ध है ?

Q. निश्चयबुद्धि विजयन्ति का भाव क्या है ?

बाबा ने हमको सारा ज्ञान दिया है, हर परिस्थिति और जीवन व्यवहार के लिए श्रीमत दी है। बाबा ने जो श्रीमत दी है, उस पर जिसको पूरा निश्चय होता है और उस निश्चय और नशे से कार्य करता है, उसको उस कार्य में सफलता अवश्य मिलती है।

जिसको परमात्मा और उनके द्वारा दिये गये ज्ञान में पूरा निश्चय होता है और उस निश्चय और नशे से रहता है, व्यवहार करता है, उसको ये जीवन परमानन्दमय अनुभव होता है।

ये वर्तमान जीवन चढ़ती कला का जीवन है। जो निश्चयबुद्धि आत्मा श्रीमत के अनुसार कर्म

करता है, उसको ये जीवन उत्तरोत्तर चढ़ती कला में अनुभव होता है।

निश्चय और विजय एक ही सिक्के के दो पहलू हैं या कहें जीवन रूपी गाड़ी के दो पहिये हैं, जिन पर ये गाड़ी सफलतापूर्वक चलकर अपने गन्तव्य पर पहुँचती है। निश्चयबुद्धि विजयन्ति कहा जाता है। निश्चय बुद्धि अर्थात् आप में निश्चय, बाप में निश्चय, ड्रामा में निश्चय, दैवी परिवार अर्थात् यज्ञ के विधि-विधान में निश्चय और अपने कर्मों पर भी निश्चय। आत्मा में निश्चय अर्थात् आत्मा के गुण-शक्तियों में निश्चय और आत्म-विश्वास से परिपूर्ण। बाप में निश्चय अर्थात् बाप के हर बोल में निश्चय, उनके गुण-शक्तियों-कर्तव्य में निश्चय। ड्रामा में निश्चय अर्थात् ड्रामा जो है, जैसा है, उसको यथार्थ रीति समझना और निश्चय करना, ड्रामा के सत्य, न्यायपूर्ण और कल्याणकारी स्वरूप में निश्चय, ड्रामा के कर्म और फल के विधि-विधान में निश्चय। परिवार में निश्चय अर्थात् यज्ञ के विधि-विधान में निश्चय। अपने कर्म और कर्म-फल में निश्चय अर्थात् हम अभी जो कर्म कर रहे वे सुकर्म हैं और उनका फल अवश्य ही कल्याणमय होगा। जिस आत्मा को ये सब निश्चय होगा, उसके हर कार्य में सफलता अवश्य होगी क्योंकि निश्चय के अनुसार ही कर्म होता है। ऐसी निश्चयबुद्धि आत्मा सदा निश्चिन्त, निर्भय, निर्संकल्प होगी। ये है संगमयुग की निश्चयबुद्धि विजयन्ति की स्थिति। द्वापर-कलियुग में भी दृढ़ संकल्प और दृढ़-निश्चय से कार्य में सफलता अवश्य होती है। वास्तविकता को देखें तो सर्वव्यापी का गलत सिद्धान्त होते भी 1500 साल से चलता आ रहा है।

''निश्चयबुद्धि नम्बरवार नहीं होते, पुरुषार्थ में नम्बरवार होते हैं। पक्के निश्चयबुद्धि की निशानी है ... उनकी दृष्टि सदैव निशान (आत्मा) की ओर होगी।''

अ.बापदादा 8.5.69

''निश्चयबुद्धि बच्चे कैसे भी सरकमस्टांस में अपनी स्व-स्थिति की शक्ति से सदा विजय अनुभव करेंगे। ... निश्चयबुद्धि विजयी आत्मा को अपने मन में, अपने कर्म प्रति कभी द्विविधा नहीं होगी। ... बाप में निश्चय के साथ-साथ स्वयं में भी निश्चय चाहिए।... निश्चयबुद्धि का निर्णय स्वयं प्रति और दूसरों के प्रति सहज, सत्य और स्पष्ट होगा।... सत्य निर्णय होने के कारण मन में जरा भी मूँझ नहीं होगी, सदैव मौज होगी।... निश्चयबुद्धि विजयी आत्मा सदा अपने को बाप के सहारे के नीचे समझेंगे, सहारा देने वाला बाप मेरे साथ है।... निश्चयबुद्धि सदा बेहद के वैराग्यवृत्ति में होंगे।... निश्चयबुद्धि विजयी आत्मा सदा दूसरों की हिम्मत बढ़ायेगा, कब किसको नीचा दिखाने की कोशिश नहीं करेगा।... निश्चयबुद्धि का व्यर्थ समाप्त होगा। व्यर्थ समाप्त होना, यह निश्चयबुद्धि की निशानी है।''

अ.बापदादा 25.11.85

‘‘जैसा निश्चय वैसा कर्म, वाणी में हर समय चेहरे पर रुहानी नशा दिखाई देगा। हर कर्म, संकल्प में विजय सहज प्रत्यक्ष फल के रूप में अनुभव होगी। ... क्वेश्चन मार्क समाप्त, हर बात में बिन्दु बन बिन्दु लगाने वाले होंगे। निश्चयबुद्धि हर समय अपने को बेफिकर बादशाह सहज और स्वत: अनुभव करेंगे।’’

अ.बापदादा 27.12.87

‘‘निश्चयबुद्धि बच्चे कैसे भी सरकमस्टांस में अपनी स्व-स्थिति की शक्ति से सदा विजय अनुभव करेंगे। ... निश्चयबुद्धि विजयी आत्मा को अपने मन में, अपने कर्म प्रति कभी द्विविधा नहीं होगी। ... बाप में निश्चय के साथ-साथ स्वयं में भी निश्चय चाहिए। ... निश्चयबुद्धि का निर्णय स्वयं प्रति और दूसरों के प्रति सहज, सत्य और स्पष्ट होगा। ... सत्य निर्णय होने के कारण मन में जरा भी मूँझ नहीं होगी, सदैव मौज होगी। ... निश्चयबुद्धि विजयी आत्मा सदा अपने को सहारे के नीचे समझेंगे, सहारा देने वाला बाप मेरे साथ है। ... निश्चयबुद्धि सदा बेहद के वैराग्यवृत्ति में होंगे। ... निश्चयबुद्धि विजयी आत्मा सदा दूसरों की हिम्मत बढ़ायेगा, कब किसको नीचा दिखाने की कोशिश नहीं करेगा। ... निश्चयबुद्धि का व्यर्थ समाप्त होगा। व्यर्थ समाप्त होना, यह निश्चयबुद्धि की निशानी है।’’

अ.बापदादा 25.11.85

Q. निश्चयबुद्धि विजयन्ति कहा है तो क्या-2 निश्चय हो, जिससे आत्मा को जीवन में सदा विजय की अनुभूति हो ? आत्मा, परमात्मा और ड्रामा के विषय में बाबा जो ज्ञान दिया है, उसकी सही समझ हो और उसकी धारणा हो, उनके विधि-विधानों का गुण-धर्मों का अनुभव हो, उन पर पूरा निश्चय होगा तो उसी अनुसार हमारे कर्म होंगे और हमको सदा ही जीवन में विजय का अनुभव होगा अर्थात् ये जीवन सदा सफल सुखमय अनुभव होगा।

परमात्मा पिता जिस समय जो कहते हैं, उसमें निश्चयबुद्धि होकर, उसको उसी रूप में मानने और कर्म करने वाले की सदा ही विजय होती है, उसमें सदा ही कल्याण समाया हुआ होता है।

जीवन में सदा विजय का अनुभव करने के लिए बाबा ने कहा है - अपने आप में निश्चय, बाप में निश्चय, ड्रामा में निश्चय और इस दैवी परिवार में भी निश्चय हो तो ये ब्राह्मण जीवन सदा सफल अर्थात् विजयी अनुभव होगा।

Q. जो आत्मायें यज्ञ की स्थापना के समय आई और बाद में बेगरी पार्ट आदि के कारण चली गई, वे अधिक भाग्यशाली कही जायेंगी या जो बाद में आई और अन्त तक यज्ञ सेवा में रहेंगी, वे अधिक भाग्यशाली कही जायेंगी ?

भले जो आत्मायें बाद में आई परन्तु जब से आई तब से निर्विघ्न होकर यज्ञ सेवा में रहीं और हैं, वे आत्मायें ही अधिक भाग्यशाली हैं क्योंकि गायन है अन्त भला तो भला। भल जो आत्मायें स्थापना के समय ज्ञान में आई, उन्होंने साकार के सानिध्य का सुख लिया, निराकार बाप की साकार द्वारा पालना ली, उनकी गोद ली, वह भी उनका बड़ा भाग्य था परन्तु यथार्थ पुरुषार्थ न करने के कारण बेगरी पार्ट के समय को सहन नहीं कर सके और संशयबुद्धि होकर लौकिक दुनिया में चले गये।

Q. यज्ञ के वर्तमान परिपेक्ष में श्रीमत क्या है, उसका निर्णय और उसका पालन कैसे करें ?

Q. यज्ञ के वर्तमान परिपेक्ष में श्रीमत का विधि-विधान क्या है अर्थात् इस समय हम श्रीमत का निर्णय कैसे करें ?

अव्यक्त बापदादा को भी सन्देश भिजवाकर श्रीमत ले सकते हैं परन्तु उसमें भी समझ की विशेष आवश्यकता है। बाबा ने साकार और अव्यक्त मुरलियों में सब प्रकार की श्रीमत दी हुई है, श्रृद्धा और विश्वास के साथ उनका अध्ययन करने वाले को समय यथार्थ श्रीमत अवश्य टच होती है या मुरली से सामने आ जाती है। अव्यक्त स्थिति में स्थित होकर श्रृद्धा-विश्वास के साथ योगयुक्त स्थिति में अव्यक्त बापदादा को सामने रखकर विचार करेंगे, रूह-रुहान करेंगे तो सही श्रीमत अवश्य मिलेगी।

श्रीमत ब्राह्मण जीवन की सफलता का आधार है परन्तु यथार्थ श्रीमत क्या है, उसका निर्णय करना और निर्णय करके पालना करने के लिए बुद्धि क्लीन, क्लियर और विशाल चाहिए। किसी विशेष परिस्थिति के विषय में श्रीमत का यथार्थ निर्णय करने के लिए बाबा की मूल श्रीमत, जो बाबा नित्य मुरलियों में देते हैं और प्राय: सभी मुरलियों बाबा की वह श्रीमत है, वही श्रीमत है और उसका पालन करना यथार्थ श्रीमत पर चलना है। इसलिए निश्चयबुद्धि होकर मुरली को पढ़ना और उससे देश-काल-परिस्थिति के अनुसार श्रीमत कर निर्णय करना ही वर्तमान परिपेक्ष में यथार्थ है। बाबा की मूल श्रीमत है - अपने को देह से न्यारा बिन्दु रूप में स्थित कर देह की दुनिया को भूलकर एक बाप की अव्यभिचारी याद में स्थित होना। जो बाबा की इस श्रीमत को पालन करने वाला होगा, उसके सामने हर परिस्थिति के लिए बाबा की श्रीमत स्पष्ट होगी। बाबा ने कहा है कि साकार या अव्यक्त मुरलियों में बाबा की जो श्रीमत है, वही यथार्थ श्रीमत है। जो व्यक्ति बाबा की प्रथम श्रीमत का पालन करने वाला होगा, उसको निमित्त आत्मा, वह भले स्वयं कैसी भी हो लेकिन उस व्यक्ति को बाबा की यथार्थ श्रीमत की याद ही दिलायेगी क्योंकि बुद्धिमानों की बुद्धि बाबा को उसने याद किया है। देश-काल और

परिस्थिति में निमित्त आत्मा को समझना भी विशेष बात है परन्तु बाबा की प्रथम श्रीमत को पालन करने वाले के सामने ये कोई समस्या नहीं होगी।

यदि श्रीमत लेने वाला निश्चयबुद्धि होकर शिवबाबा की याद में निमित्त बने हुए को निमित्त समझकर उससे श्रीमत के विषय में बात करता है तो निमित्त भी उसको यथार्थ श्रीमत की ही याद दिलायेगा

देश-काल-परिस्थिति के अनुसार बाबा के कमरे में या किसी पवित्र स्थान पर बाबा की याद में श्रीमत के विषय में निर्णय करेंगे तो भी बाबा श्रीमत को टच कर सकता है।

श्रीमत का निर्णय करने के बाद उसके विषय में किसी प्रकार का संकल्प-विकल्प, संशय, द्विविधा नहीं होगी तो उसको सफलता अवश्य मिलेगी।

1. कोई भी साधारण आत्मा भी है और उसे बाप पर पूरा निश्चय है तो बाप उसे यथार्थ मार्ग प्रदर्शना अवश्य देगा। हर आत्मा अपने कर्म के लिए स्वयं जिम्मेवार है।

2. श्रीमत का निर्णय करते और उस चलते हुए इस सत्य को भूलना नहीं चाहिए कि किसी मनुष्य के भाग्य का निर्णय किसी एक बात के आधार पर नहीं होता है। भाग्य का निर्णय में अनेक बातों का प्रभाव होता है।

Q. ज्ञान मार्ग में होते भी विभिन्न व्यक्तियों की प्राप्तियों, स्थिति को देखते हुए हमारा कर्तव्य क्या है?

ये विविधतापूर्ण विश्व-नाटक है, विविधता ही इसकी शोभा है परन्तु आध्यात्मिक पुरुषार्थ में सफलता के लिए ज्ञानी आत्मा को विभिन्न व्यक्तियों की प्राप्तियों का, स्थितियों का चिन्तन न करके अपने को देखना, अपनी प्राप्तियों को देखना, उनका सदुपयोग करना और एक परमात्मा की याद में स्थित हो इस विश्व-नाटक का परमानन्द अनुभव करना चाहिए क्योंकि ये विश्व-नाटक परमानन्दमय है, परमात्मा परमानन्दमय है और आत्मिक स्वरूप परमानन्दमय है। परमानन्द का अनुभव करना और कराना यही इस ब्राह्मण जीवन की सफलता है, जीवन की परम प्राप्ति है और ज्ञानी आत्मा का कर्तव्य है।

Q. निश्चयबुद्धि और यज्ञ का बेगरी पार्ट - यज्ञ में ड्रामानुसार बेगरी पार्ट आया, जिसकी यज्ञ के इतिहास में बहुत चर्चा है परन्तु विचारणीय विषय है कि क्या सर्वशक्तिवान परमात्मा के द्वारा रचे हुए यज्ञ में बेगरी पार्ट आ सकता है? फिर भी यदि आया तो ये बेगरी पार्ट क्यों आया, उसमें परमात्मा और ड्रामा का क्या राज़ भरा हुआ है या भरा हुआ था? क्या परमात्मा जैसे आदि में ब्रह्मा को टच कर सकता है, वैसे बेगरी पार्ट के समय किसी अन्य आत्मा को टच

नहीं कर सकता था ?

बेगरी पार्ट से यज्ञ को लाभ अनेक प्रकार के लाभ हुए हैं, उनको भी जानना अति आवश्यक है। बेगरी पार्ट के कारण यथार्थ तपस्वी आत्माओं में तपस्या बढ़ी, आत्माओं में सहनशक्ति बढ़ी, जिस सहनशक्ति के आधार पर वे आत्मायें जब विश्व-सेवा के लिए बाहर निकलीं तो अनेक मायावी आकर्षणों और प्रभावों से मुक्त रहीं। बेगरी पार्ट के कारण ही यज्ञ-वत्सों में सेवा के लिए बाहर निकलने का संकल्प आया और दृढ़ हुआ। बेगरी पार्ट के कारण ही जो नाकाम आत्मायें थीं, जिनका वस्तु और व्यक्तियों में आकर्षण था, उनकी छटनी हो गयी और वे बाहर चली गयीं, जिससे यज्ञ का वातावरण शक्तिशाली हुआ। ये ड्रामा का विधि-विधान है कि जो तपस्या करता है, परमात्मा से वायदा करता है, उसकी प्रभु-प्रीति की परीक्षा भी अवश्य होती है। उसी विधि-विधान के अनुसार सच्चे-झूठे की परीक्षा और ईश्वरीय पढ़ाई की परीक्षा भी होनी थी, जो हुई और उसमें जो पास हुए, वे विजयी रतन बने।

Q. इस ईश्वरीय यज्ञ में बेगरी पार्ट क्यों आया ? क्या सर्वशक्तिवान परमात्मा के रचे यज्ञ में बेगरी पार्ट आ सकता है ?

यह भी एक रहस्यमय पहेली है, जिन्होंने उसको समझा, उनका ही जीवन सफल है। ये भी निश्चय की परीक्षा थी और हर एक के आध्यात्मिक जीवन में परीक्षा अवश्य सम्भावी है। बिना परीक्षा के आध्यात्मिक जीवन का पुरुषार्थ सफल हो नहीं सकता परन्तु हर आत्मा की परीक्षा अपनी-अपनी होती है और हो सकती है।

''बीच में बेगरी पार्ट चला, यह भी परीक्षा हुई थी। बहुत चले गये। इस सब में शिवबाबा का क्या राज़ था, वह गुड़ जाने, गुड़ की गोथरी जाने। कितने डरकर भाग गये। ... दो रोटी खाना, प्रभु के गुण गाना अर्थात् बाप और वर्से को याद करना।''

सा.बाबा 16.11.07 रिवा.

Q. क्या यज्ञ में जैसे पहले बेगरी पार्ट आया वैसे फिर आयेगा और यदि फिर आयेगा तो उसका स्वरूप क्या होगा ?

पहले जो बेगरी पार्ट आया, उसमें यज्ञ में पैसा नहीं था परन्तु दुनिया में आवश्यकता के साधन विद्यमान थे, परन्तु पैसे की कमी के कारण उनको खरीद नहीं सकते थे। आगे जो बेगरी पार्ट आयेगा, उसमें यज्ञ में पैसा तो होगा परन्तु दुनिया में उपभोग्य पदार्थों की कमी होगी, इसलिए पैसा होते भी वे मिलेंगे नहीं। जिसके लिए बाबा ने भी कहा है - एक गिलास पानी के लिए हीरा भी देंगे तो भी मिलेगा नहीं, अन्न का एक दाना भी नहीं मिलेगा, अन्न भी विषाक्त हो जायेगा

आदि आदि। इसलिए उन परिस्थितियों को सहन करने के लिए अभी से तपस्या करनी है। जो अभी से तपस्या करके अपने आत्मिक बल जमा करेंगे, वे उस बेगरी पार्ट के समय विजयी बनेंगे।

Q. समर्पित जीवन में हमारी सम्पत्ति क्या है, जो आपत्ति काल में हमारे काम आयेगी ?

श्रीमत पर किये गये श्रेष्ठ कर्मों का कर्मफल, बापदादा का हाथ और साथ, जिसके कारण समय पर सर्व दैवी परिवार और बाह्य जगत का सहयोग एवं प्रकृति का भी सहयोग समय पर अवश्य मिलता है। निश्चयबुद्धि सदा इस सत्य का अनुभव करते हैं और निश्चिन्त रहकर अभीष्ठ पुरुषार्थ करते हैं। जो परमात्मा के प्रति समर्पित होता है और उनकी श्रीमत पर चलता है, उसके ऊपर परमात्मा का हाथ सदा रहता है और श्रीमत का साथ रहता है, जिसके लिए ही गायन है - जा पर कृपा राम की होई, ता पर कृपा करे सब कोई। जिसका साथी है भगवान, उसको क्या रोकेगा आंधी और तूफान।

Q. क्या जो समर्पित होकर धन-सम्पत्ति इकट्ठा करते या करने के सोच-विचार में रहते, वे निश्चयबुद्धि हैं या उनको निश्चयबुद्धि कहेंगे ?

नहीं, उनको संशयबुद्धि ही कहा जायेगा। वास्तव में जिनको परमात्मा में, परमात्मा के ज्ञान में और अपने आप में निश्चय नहीं, विश्वास नहीं है, वे ही ऐसा करते हैं या करने की सोचते हैं। दुनिया में भी सच्चे सन्यासी, जैन साधू-साध्वी आदि हैं, वे भी इस बात की परवाह नहीं करते क्योंकि उनको जाने-अन्जाने परमात्मा पर और अपने कर्म पर विश्वास है। तो परमात्मा के डायरेक्ट बच्चे बनकर, उनके पास समर्पित होकर अपने भविष्य के प्रति चिन्तित कैसे हो सकते हैं और चिन्तित होकर अकृत्य कैसे कर सकते हैं। जिनको यथार्थ निश्चय नहीं है, वे ही ऐसे कृत्य करके अपने भविष्य को अन्धकामय बनाते हैं अर्थात् परमात्मा का बच्चा बनकर भी उनके सानिध्य का सच्चा सुख अनुभव नहीं कर पाते हैं। इसीलिए कहा गया संशयबुद्धि विनश्यन्ति, निश्चयबुद्धि विजयन्ति।

''ब्रह्मा बाप सर्व समर्पण के लक्ष्य से ही सम्पूर्ण बने। जितना समर्पण, उतना ही सम्पूर्ण। लेकिन समर्पण का भी विशाल रूप क्या है ? ... एक तो हर संकल्प, दूसरा हर सेकेण्ड अर्थात् समय, तीसरा कर्म और चौथा सम्बन्ध एवं सम्पत्ति जो भी है, वह भी समर्पण। ... आत्मा और शरीर के सम्बन्ध का भी समर्पण।'' अ.बापदादा 29.6.70

''जितना समर्पण, उतना ही सम्पूर्ण। ... इसलिए लक्ष्य सदैव सम्पूर्णता का रखना है, जो सम्पूर्ण मूर्त प्रत्यक्ष प्रख्यात हो चुके हैं, उनका लक्ष्य रखना है। जो अभी गुप्त हैं, प्रत्यक्षता में नहीं आये हैं, उनका भी लक्ष्य नहीं रख सकते।'' अ.बापदादा 29.6.70

Q. सर्वशक्तिवान परमात्मा के बच्चे और उनका साथ होते हुए भी ब्राह्मणों और विशेषकर समर्पित भाई-बहनों में असुरक्षा की भावना क्यों जागृत होती है या है ?

विश्व-नाटक की यथार्थता को देखें, परमपिता परमात्मा की शक्ति और उनके सहयोग पर विचार करें, कर्मों की गहन गति पर विचार करें और उसके विधि-विधान अनुसार कर्म करें तो वर्तमान ब्राह्मण जीवन में असुरक्षा की भावना हो नहीं सकती। असुरक्षा की भावना उनके ही जीवन में जागृत होगी, जो श्रीमत पर नहीं चलते, ब्राह्मण जीवन के अनुसार कर्म नहीं करते हैं और अलबेलेपन मे अपना समय और शक्ति को गँवाते हैं या जिनको परमात्मा के विधि-विधान पर, अपने कर्मों पर निश्चय और विश्वास नहीं है। ये सुकर्म करने का जीवन है, जो सुकर्म करता है, उसका भविष्य निश्चित ही उज्ज्वल होगा, उसके जीवन में असुरक्षा की भावना जागृत हो नहीं सकती।

Q. सबसे बड़ी विजय क्या है और उसका आधार क्या है ?

जीवन की सबसे बड़ी विजय है मुक्ति-जीवनमुक्ति की अनुभूति और उसका आधार है देह में रहते देह और देह की दुनिया से न्यारे अपने आत्मिक स्वरूप में स्थिति अर्थात् आत्मा देह में रहते देह से न्यारे आत्मिक स्वरूप में या जिस भी स्वरूप में जब स्थित होना चाहें। जब चाहें तब उसमें संकल्प करते ही स्थित हो जायें और साक्षी होकर विश्व-नाटक को देखें और ट्रस्टी होकर पार्ट बजायें, यह जीवन की सबसे बड़ी विजय है। यही सच्चा मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव है। देह में रहते देह से न्यारी स्थिति परमानन्दमय है और साक्षी स्थिति परम सुखमय है, जो विश्व के किसी साधन-सम्पत्ति या व्यक्ति से न अभी और न भविष्य में प्राप्त हो सकती। ये प्राप्ति अर्थात् अनुभूति ईश्वरीय ज्ञान की यथार्थ धारणा से ही सम्भव है, जिसके लिए ज्ञान सागर परमात्मा ये ज्ञान दे रहा है। ये अनुभूति न सतयुग के लक्ष्मी-नारायण को हो सकती और न इस विश्व के राजा-महाराजा, पदमपति को हो सकती है। इस विजय का आधार निश्चय है।

सतयुग भौतिक सुख-साधनों से परिपूर्ण हैं, आत्मिक शक्ति भी आत्मा में है, दैवी गुण और शक्तियां भी हैं परन्तु आध्यात्मिक साधन अर्थात् ईश्वरीय ज्ञान, गुण, शक्तियां वहाँ नहीं हैं। आध्यात्मिक साधनों से सम्पन्नता का समय ये पुरुषोत्तम संगमयुग ही है, जब आत्माओं के पिता परमात्मा से ये ज्ञान मिलता है और उसका सानिध्य होता है, मिलन होता है।

''ब्राह्मण अर्थात् निश्चयबुद्धि और निश्चयबुद्धि अर्थात् विजयी। तो हर एक ब्राह्मण निश्चयबुद्धि कहाँ तक बने हैं और विजयी कहाँ तक बने हैं। क्योंकि ब्राह्मण जीवन का फाउण्डेशन है निश्चय और निश्चय का प्रमाण है विजय।'' अ.बापदादा 15.4.92

पुरुषार्थ

संगमयुग पर पुरुषार्थ भी प्रालब्ध है अर्थात् संगमयुग पर पुरुषार्थ सतयुग के सुखों से भी अधिक सुखदायी है। परमात्मा की याद, विश्व-कल्याण की सेवा, अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होने का पुरुषार्थ, विश्व-नाटक के ज्ञान का मनन-चिन्तन आत्मा को जो सुख देता है, वह सतयुग के वैभव कभी नहीं दे सकते हैं। इसलिए यथार्थ पुरुषार्थी आत्मा कभी भी पुरुषार्थ से थकती नहीं है, हताश-निराश नहीं होती है। वह तो निरन्तर अतीन्द्रिय सुखों की अनुभूति में रहती है।

Q. पुरुषार्थ क्या है और विश्व-नाटक के ज्ञान का इस पुरुषार्थी जीवन में क्या महत्व है ?

ये विश्व-नाटक पुरुषार्थ और प्रालब्ध का एक खेल है। पुरुषार्थ आत्मा का निजी स्वभाव है, इसलिए आत्मा पुरुषार्थ के बिना रह नहीं सकती परन्तु यथार्थ पुरुषार्थ क्या है, उसको समझने के लिए भी पुरुषार्थ करना होता है। आत्मा, परमात्मा, कर्म और फल के साथ इस विश्व-नाटक के गुण-धर्मों को समझने के लिए भी आत्मा को पुरुषार्थ करना होता है और जब हम इन सबको यथार्थ रीति समझ लेंगें तो ही हम इस खेल का सुख अनुभव कर सकेंगे। इसके लिए ही परमात्मा ने हमको ये सारा ज्ञान दिया है और इनकी सत्यता को अनुभव करने के लिए क्या पुरुषार्थ करना है, उसका विधि-विधान भी बताया है।

इस पुरुषार्थी जीवन में जितना आत्मा, परमात्मा के ज्ञान का महत्व है, उतना ही विश्व-नाटक के ज्ञान का महत्व है, इसलिए बाबा ने तीन बिन्दियों को याद रखने और उसके महत्व पर बार-बार प्रकाश डाला है। उसके बिना हमारा योग सफल नहीं हो सकता है। यदि विश्व-नाटक का ज्ञान सही रीति से जीवन में धारण हो जाये, तो सहज ही आत्मा बीजरूप स्थिति में स्थित हो सकती है। ये विश्व-नाटक सत्य, न्यायपूर्ण और कल्याणकारी है, इस सत्य को समझने से सहज ही आत्मा व्यर्थ संकल्पों से मुक्त हो सकती है और बाबा जो ड्रिल करने के लिए कहते हैं, वह कर सकते हैं।

Q. सबसे श्रेष्ठ, अच्छा और सहज पुरुषार्थ क्या है ?

देह और देह की दुनिया से न्यारा होकर अपने आत्मिक स्वरूप अर्थात् बीजरूप स्थिति अर्थात् स्वीट साइलेन्स की स्थिति में स्थित होने का पुरुषार्थ ही सबसे श्रेष्ठ पुरुषार्थ है और उसमें स्थित होना ही पुरुषार्थ की सफलता है। इस स्थिति से सबसे अधिक आत्मिक शक्ति का विकास होता है।

विश्व-नाटक की यथार्थता को जानकर देह और देह की दुनिया से न्यारे अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर बाप को याद करने से आत्मा परमानन्द अर्थात् मुक्ति-जीवनमुक्ति का परम सुख अनुभव करती है। देह और देह की दुनिया से न्यारा बनने के लिए -

आत्मिक स्वरूप में स्थित होने के सतत अभ्यास करना

सेवा से दूसरों की दुआयें मिलती हैं, वह भी आत्मा को न्यारा बनने में मदद करती हैं,

बाप का आज्ञाकारी बन उनकी श्रीमत पर चलने से बाप की दुआयें मिलती हैं, वे न्यारा बनने में मदद करती हैं,

ईश्वरीय परिवार के सहयोगी बनने से परिवार की जो दुआयें मिलती हैं, वे भी न्यारा बनने में सहयोगी बनती हैं।

हम आत्मा हैं, देह नहीं - जो आत्मा अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित रहती है, उसके और सब पुरुषार्थ स्वत: हो जाते हैं। इसलिए ब्रह्मा बाबा ने सबसे अधिक इस स्थिति के लिए पुरुषार्थ किया और हमको भी श्रीमत देते हैं कि ये अभ्यास पक्का करो।

''इस पर आपस में विचार करना और जिन्होंने बिन्दुरूप का विशेष अनुभव किया, उनको औरों को अपना अनुभव सुनाकर अनुभवी बनाने की कोशिश करनी है परन्तु फिर भी अनुभव अपने अभ्यास करने से ही होगा।'' अ.बापदादा 19.4.69

''अतीन्द्रिय सुख में रहते हो ? अतीन्द्रिय सुख का अर्थ क्या है ? अतीन्द्रिय सुख अर्थात् अव्यक्त स्थिति में रह ईश्वरीय सुख का अनुभव करना। ... पुरुषार्थ दिन प्रतिदिन नया हो। भल खुद पुराने होते जायें लेकिन पुरुषार्थ नया होना चाहिए।''

अ.बापदादा 19.4.69

Q. सच्चा पुरुषार्थ क्या है ?

सच्चा पुरुषार्थ वह है, जो अपने आत्म-कल्याण के लिए सच्चे दिल किया जाता है। जो पुरुषार्थ स्वयं को भी सन्तुष्टि प्रदान करता है और दूसरों को भी सन्तुष्ट करता है, वही सच्चा पुरुषार्थ है। सच्चा पुरुषार्थ आत्मा को सहज ही देह से न्यारा कर देता है अर्थात् देह से न्यारी परमानन्दमय स्थिति का अनुभव कराता है।

सच्चा पुरुषार्थ आत्मा को कर्मभोग की वेदना से सहज मुक्त कर देता है।

सच्चा पुरुषार्थ वह है जो प्रभु-प्यार में किया जाता है, जिससे आत्मा अपने को रिफ्रेश अनुभव करती है।

सच्चा पुरुषार्थ आत्मा को मेहनत से मुक्त करता है अर्थात् आत्मा को किसी प्रकार की मेहनत की अनुभूति नहीं कराता है, परमात्म-प्यार से अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति कराता है। वास्तव में जो पुरुषार्थ भय से, दूसरों को दिखाने के लिउ या दूसरों को खुश करने के लिए या किसी प्रलोभन के वशीभूत किया जाता है, उसको सच्चा पुरुषार्थ नहीं कह सकते हैं। जो दूसरों को दिखाने या सन्तुष्ट करने के लिए पुरुषार्थ करते हैं, वे स्वयं को धोखा देते हैं, स्वयं को स्वयं ही ठगते हैं।

संगमयुग पर पुरुषार्थ ही प्रालब्ध है अर्थात् प्राप्ति है।

''कहेंगे हम तो शिवबाबा को ही याद करते थे परन्तु सचमुच याद में थे? बिल्कुल साइलेन्स में रहने से फिर यह दुनिया भी भूल जाती है। अपने को ठगना नहीं है कि हम तो शिवबाबा की याद में हैं। याद में देह के सब धर्म भूल जाने चाहिए। हमको शिवबाबा कशिश कर सारी दुनिया भुलाते हैं। ... अपने को मियां मिट्ठू समझ ठगी नहीं करना है।''

सा.बाबा 7.5.04 रिवा.

''सबसे प्यारा बाबा है। यह बाबा तो कमाल करते हैं, विश्व की नॉलेज देते हैं। बाप के सामने आते हैं तो बाप कशिश भी करते हैं। यहाँ बैठे-बैठे सब भूल जाता है। बाबा बिगर कुछ भी नहीं, सारी दुनिया को भुलाना ही है। वह अवस्था बड़ी मीठी अलौकिक होती है।''

सा.बाबा 7.5.04 रिवा.

Q. क्या शिवबाबा ने मम्मा-बाबा को, उनके पुरुषार्थ को देखकर ये पद दिया या ड्रामा अनुसार कल्प पहले अनुसार मिला है?

मम्मा-बाबा ने पुरुषार्थ तो बाद में किया परन्तु उनके पद को बाबा ने पहले ही स्पष्ट कर दिया था। इस बात पर विचार करें तो ये कहावत समझ में आती है, जिसका गायन है - होनहार विरवान के होत चीकने पात। शिवबाबा तो जानी जाननहार है परन्तु कल्प पूर्व के संस्कार मम्मा-बाबा दोनों के जीवन से ज्ञान में आते ही प्रगट होने लगे, जिसके अनुसार उनको शिवबाबा ने ये मम्मा-बाबा का पद दिया और भविष्य में प्रथम लक्ष्मी-नारायण बनने का पद स्पष्ट किया।

''शिवबाबा है सिखलाने वाला, बाकी सब, ब्रह्मा-सरस्वती, ब्राह्मण बच्चे सीखते हैं। ... यह दादा कोई ब्रह्मा नहीं था। मैं इस तन में आया तब यह ब्रह्मा बना।''

सा.बाबा 10.6.07 रिवा.

Q. संगमयुग और सतयुग के सुखों के लिए एक ही पुरुषार्थ है या अलग-अलग है?

जो संगमयुग के सुखों का उपभोग करता है, वही सतयुग के सुखों का उपभोग कर सकता है अर्थात् सतयुग के सुखों का आधार संगमयुग के सुख ही हैं। वास्तव में तो सतयुग के सुख

संगमयुग के सुखों का प्रतिबिम्ब मात्र हैं। संगमयुग के सुख ही सतयुगी सुखों का बीज हैं। संगमयुग के सुख अति महान हैं। जो संगमयुग के सुखों का उपभोग कर लेता है, उसको सतयुग के सुखों की कोई इच्छा नहीं रहती है। आत्मिक स्वरूप सच्चिदानन्दमय है, जिसका ज्ञान, स्थिति और सुख की अनुभूति संगमयुग पर ही सम्भव है। सतयुग में तो केवल अंशमात्र ही आत्मा का ज्ञान है और आत्मिक स्थिति है, यथार्थ ज्ञान अभी ही है। इसीलिए बाबा कहते हैं जो स्वराज्य अधिकारी बनेगा, वही विश्व का राज्य अधिकारी बनेगा। इसलिए जो संगमयुग के सुखों अर्थात् अतीन्द्रिय सुख, ईश्वरीय सानिध्य का सुख, योगानन्द की अनुभूति, ज्ञान-रत्नों के सुख को अनुभव करने के लिए पुरुषार्थ करता है अर्थात् उनको अनुभव करता है, उसको सतयुग के भौतिक सुख स्वत: प्राप्त होते हैं, उनके लिए अलग से कोई पुरुषार्थ नहीं करना होता है।

Q. परमानन्दमय जीवन का राज़ क्या है अर्थात् परमानन्दमय जीवन की अनुभूति केसे हो अर्थात् परमानन्द का अभीष्ट पुरुषार्थ क्या है ?

आत्मा, परमात्मा और विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान, उसका अनुभव और उस पर निश्चय ही परमानन्दमय जीवन की अनुभूति का यथार्थ पुरुषार्थ है, जिसके लिए ही परमात्मा ने ये ज्ञान दिया है और उनकी सत्यता को, उनके गुण-धर्मों को अनुभव करने के प्रेरणा देते रहते हैं, उसका विधि-विधान बताते रहते हैं। आत्मा का ज्ञान अर्थात् आत्मा के ज्ञान, गुण-शक्तियों, पार्ट का, परस्पर हिसाब-किताब का ज्ञान और अनुभव। परमात्मा का ज्ञान अर्थात् परमात्मा के ज्ञान, गुण-शक्तियों, कर्तव्य का ज्ञान और अनुभव। विश्व-नाटक का ज्ञान अर्थात् विश्व-नाटक के गुण-धर्मों, विधि-विधानों, विश्व-नाटक में कर्म के विधि-विधान का ज्ञान, उसका अनुभव और निश्चय। इन सब सत्यों का ज्ञान होगा, अनुभव होगा, जीवन में धारणा होगी तो ये जीवन अवश्य ही परमानन्दमय अनुभव होगा और अपने अधिकार और कर्तव्यों को समझकर उसके अनुरूप कर्म अवश्य होगा और जब कर्म अच्छा होगा तो उसका फल भी अवश्य ही अच्छा होगा।

आत्मिक स्वरूप परमानन्दमय है। विश्व-नाटक के विधि-विधान की यथार्थ को जानकर, निश्चयकर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित हो जाना ही परमानन्द अनुभव करने का सहज साधन और साधना है। इसके लिए न समय की, न स्थान की और न किसी साधन-सम्पत्ति की सीमा है और न ही कोई अन्य व्यक्ति इसमें बाधक या साधक हो सकता है। इसके लिए सत्य ज्ञान की धारणा, दृढ़ निश्चय, अटल विश्वास और सतत अभ्यास की आवश्यकता है। ज्ञान का मनन-चिन्तन, आत्मिक स्वरूप में स्थित होने का और परमात्मा की याद का सतत अभ्यास ही

इसके लिए अभीष्ट पुरुषार्थ है।

''चैक करो सफलता स्वरूप कहाँ तक बने हैं? अगर सफलता में परसेन्टेज है तो उसका कारण निश्चय में भी परसेन्टेज है। निश्चय सिर्फ बाप में है, यह तो बहुत अच्छा है लेकिन निश्चयबुद्धि अर्थात् बाप में निश्चय, स्व में निश्चय, ड्रामा में निश्चय और साथ-साथ परिवार में भी निश्चय। इन चारो निश्चय के आधार से सफलता सहज और स्वत: है।'' (वास्तव में सारा विश्व एक परिवार है क्योंकि सर्वात्मायें एक बाप के बच्चे हैं)

अ.बापदादा 14.11.02

Q. अभी के पुरुषार्थ से 21 जन्मों की राजाई कैसे और क्यों मिलती है?

सतयुग की स्थूल राजाई तो होती ही है लेकिन 21 जन्मों तक हम सोल-कान्शस रहते हैं, जिससे आत्मा का अपनी इन्द्रियों पर शासन होता है, जिसके फलस्वरूप प्रकृति भी दासी होती है। उसका आधार है कि अभी हम जो सोल-कान्शस रहने का पुरुषार्थ करते, स्वराज्य अधिकारी बनते हैं, उसका ही फल वहाँ मिलता है। बाबा ने भी कहा है और वास्तविकता भी ये है कि अभी हम जो योग का अभ्यास करते हैं, ज्ञान रतनों का दान करते हैं, तन-मन-धन से प्रत्यक्ष में और जानकर बाबा के बनते हैं, उनकी श्रीमत पर सफल करते हैं, उसके फलस्वरूप ही 21 जन्मों तक हमको स्थूल और सूक्ष्म राजाई मिलती है। जो यहाँ अपनी कर्मेन्दियों का राजा बनता है, वही भविष्य में भी राजा बनता है।

''पुरुषार्थ का समय ही अभी है। दुनिया में किसको पता नहीं है कि 21 जन्मों के लिए राजाई कैसे मिलती है। ... दिन-रात अपनी कमाई का चिन्तन रखना पड़े।''

सा.बाबा 30.12.06 रिवा.

Q. कारण को निवारण और समस्या को समाधान में परिवर्तन करने के लिए किस पुरुषार्थ की आवश्यकता है?

विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान को समझना और कर्म-सिद्धान्त की धारणा और आत्मिक स्वरूप के गहन अभ्यास से ही सारे कारणों का निवारण और सर्व समस्याओं का समाधान सम्भव है क्योंकि आत्मिक स्वरूप परमानन्दमय है, जिसमें कोई कारण या समस्या है ही नहीं। विश्व-नाटक सत्य, न्यायपूर्ण और कल्याणकारी है, इसलिए उसमें भी कोई समस्या नहीं है। इसके लिए ही ज्ञान सागर परमात्मा विश्व-नाटक और कर्म की गुह्य गति का ज्ञान दिया है और आत्मिक स्वरूप में स्थित होने के अभ्यास के लिए कहा है। ब्रह्मा बाबा ने भी इस आत्मिक स्वरूप में स्थित होने का गहन अभ्यास किया। इसलिए कारण के निवारण और समस्याओं के समाधान के लिए आत्मा, परमात्मा और विश्व-नाटक के ज्ञान की यथार्थ समझ और धारणा

करना अति आवश्यक है। ये ईश्वरीय ज्ञान सर्व समस्याओं का सहज समाधान है परन्तु आवश्यकता है इसको यथार्थ रीति समझने और जीवन में धारण करने की।

''विजयी तब बनें जब बापदादा ने जो इस वर्ष का काम दिया है कि कारण खत्म हो निवारण हो जाये, समस्या समाप्त हो समाधान हो जाये और मन्सा-वाचा-कर्मणा तीनों ही सेवायें इकट्ठी हों, उसका एग्जॉम्पुल बनकर दिखायेंगे।... मुझे बदलना है, मुझे एडजस्ट होना है, मुझे सहयोग देना है।'' अ.बापदादा 18.1.07

Q. सुख-शान्ति के सागर के बच्चे बनकर भी जीवन में खुशी क्यों नहीं रहती? खुशी स्थाई ठहर जाये, उसके लिए क्या पुरुषार्थ करें?

आत्मिक स्वरूप सम्पूर्ण-सम्पन्न-सन्तुष्ट है और प्रसन्नता अर्थात् खुशी से भरपूर है। अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित आत्मा सदा ही खुशी का अनुभव करती है, इसलिए अपने मूल स्वरूप में स्थित होना या स्थित होने का पुरुषार्थ ही सदा खुशी रहने का यथार्थ पुरुषार्थ है, इसके लिए बाबा ने जो ज्ञान दिया है, उसका मनन-चिन्तन करके उसकी सत्यता को अनुभव करें और परमात्मा की स्नेहयुक्त याद का सतत अभ्यास करें तो जीवन में सदा खुशी अवश्य रहेगी। वृक्ष को फलदायी बनाने के लिए जड़ में खाद-पानी देना होता है, पत्तों को नहीं।

''कई बच्चे लिखते - बाबा, हमको खुशी नहीं रहती है। ... तुम पूरा बाप को याद नहीं करते, तब खुशी नहीं ठहरती।... पूरा ज्ञान बुद्धि में नहीं है। पूरा याद नहीं करते हो इसलिए माया धोखा देती है।'' सा.बाबा 4.9.04 रिवा.

Q. जब अचल-अडोल, स्थेरियम अवस्था होगी तब पुरुषार्थ कर सकेंगे या पुरुषार्थ से अचल-अडोल, स्थेरियम अवस्था होगी?

ईश्वरीय ज्ञान की सत्यता को समझने और अनुभव करने से बुद्धि अचल-अडोल, स्थेरियम बन जाती है, जिससे आत्मा सहज ही निर्संकल्प और निर्विकल्प होकर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होने का, परमात्मा को याद करने का पुरुषार्थ कर सकती है। अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होने और परमात्मा की स्नेहयुक्त याद का सतत पुरुषार्थ करने अचल-अडोल, स्थेरियम स्थिति चिर स्थाई बन जाती है। इस प्रकार देखें तो ये सारा खेल चक्रवत् है।

''यह खेल बना हुआ है। ड्रामा में हर एक को पार्ट मिला हुआ है, इसमें बड़ी अचल, स्थेरियम बुद्धि चाहिए। जब तक अचल-अडोल, एकरस अवस्था नहीं तब तक पुरुषार्थ कैसे करेंगे। ... यह है गुप्त मेहनत।'' सा.बाबा 10.7.04 रिवा.

Q. हमारा लक्ष्य क्या है, उसको प्राप्त करने का अभीष्ठ पुरुषार्थ क्या है और हमारा समय, शक्ति, संकल्प कहाँ तक उसमें लगा है और लग रहा है?

बाप समान सम्पूर्ण और सम्पन्न बनना हर आत्मा का अभीष्ठ लक्ष्य है। वास्तव में हर आत्मा अपने मूल स्वरूप में बाप समान सम्पूर्ण और सम्पन्न परमानन्दमय है। इस सत्य को जानकर देह सहित देह के सब धर्मों को भूल कर एक बाप की अव्यभिचारी याद ही उसके लिए अभीष्ठ पुरुषार्थ है। चेक करो - कहाँ तक हमारा ऐसा पुरुषार्थ है अर्थात् हमारा समय, संकल्प और शक्ति कहाँ तक अपने अभीष्ठ लक्ष्य की प्राप्ति में लग रही है।

Q. जीवन में सबसे श्रेष्ठ पुरुषार्थ क्या है और सबसे बड़ी सफलता क्या है?

इस विश्व-नाटक की यथार्थता को जानकर देह में रहते देह सहित सब कुछ भूलकर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर साक्षी होकर इस विश्व-नाटक को देखने का अभ्यास ही सबसे बड़ा पुरुषार्थ है और इस स्थिति में स्थाई रूप में स्थित हो जाना ही जीवन की सबसे बड़ी सफलता है। आत्मिक स्वरूप परमानन्दमय है। इसलिए अव्यक्त बापदादा ड्रिल कराते हैं और श्रीमत देते हैं कि ये अभ्यास कर्म करते भी करते रहो।

Q. ज्ञान की हर प्वाइन्ट्स को शक्ति या शस्त्र के रूप में धारण करने के लिए क्या पुरुषार्थ है?

शस्त्र शत्रु पर विजय प्राप्त करने के लिए होता है। जब ज्ञान की हर प्वाइन्ट हमारे जीवन में शस्त्र के रूप में धारण होगी तो कब भी माया का कोई वार हमारे ऊपर नहीं होगा। माया सामने आयेगी परन्तु वार नहीं होगा, हार नहीं होगी। जब वार और हार नहीं होगी तो दुख नहीं होगा और जब दुख नहीं होगा तो जीवन में सदा सुख का अनुभव होगा। ये माया का वार और हार न होना ही ज्ञान की यथार्थ धारणा की निशानी है, शक्ति की निशानी है। इसके लिए मनन-चिन्तन करके ज्ञान की हर प्वाइन्ट की यथार्थता को अनुभव करना और उसको धारण करना, जिससे वह आवश्यकता के समय पर काम में आये, माया के वार को रोकने में समर्थ हो। शक्ति के रूप में धारण करना माना ज्ञान बुद्धि तक ही न हो, हमारे प्रैक्टिकल जीवन में हो।

''अन्तर यह है कि ज्ञान को प्वाइन्ट्स के रूप में धारण करना और ज्ञान की एक-एक बात को शक्ति के रूप में धारण करना - इसमें अन्तर पड़ जाता है। जैसे ड्रामा की प्वाइन्ट उठाओ। यह बहुत बड़ा विजय प्राप्त करने का शक्तिशाली शस्त्र है। जिसको ड्रामा के ज्ञान की शक्ति प्रैकटिकल जीवन में धारण है, वह कभी भी हलचल में नहीं आ सकता। सदा एकरस अचल-अडोल बनने और बनाने की विशेष शक्ति यह ड्रामा की प्वाइन्ट है। इसे शक्ति के रूप में

धारण करने वाला कभी हार नहीं खा सकता।'' अ.बापदादा 21.3.85

Q. ज्ञान मार्ग के पुरुषार्थ और भक्ति मार्ग के पुरुषार्थ में क्या अन्तर है और क्या-क्या समानतायें हैं अर्थात् यथार्थ सत्य को बिना जाने के पुरुषार्थ और सत्य को जानने के बाद के पुरुषार्थ में क्या अन्तर है?

यथार्थ सत्य को जानने के बाद पुरुषार्थ करने से उसका फल कई गुणा मिलता है और उससे आत्मा को अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति होती है, जो बिना जाने करने से नहीं होती है। बिना जाने भावना से भक्ति करने से आत्मा को अल्पकाल का फल अवश्य मिलता है। ज्ञान मार्ग के पुरुषार्थ से आत्मा की चढ़ती कला होती है परन्तु भक्ति मार्ग में सबकुछ करते भी आत्मा कलायें उतरती ही जाती हैं। यम-नियम का पालन करना ज्ञान मार्ग में भी पुरुषार्थ की सफलता के लिए आवश्यक है और भक्ति मार्ग में भी आवश्यक है। भक्ति मार्ग में मुक्ति-जीवनमुक्ति अर्थात् निर्संकल्प और निर्विकल्प समाधि के लिए पुरुषार्थ करते हैं लेकिन ज्ञान मार्ग में परमात्मा पिता हमको मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव कराते हैं और उस अनुभव को स्थाई बनाने के लिए पुरुषार्थ कराते हैं।

Q. खुशी सदा स्थाई रहे, उसका अभीष्ट पुरुषार्थ क्या है?

खुशी अर्थात् प्रसन्नता। प्रसन्नता का आधार है सम्पूर्णता। जहाँ सम्पूर्णता है अर्थात् सर्व प्राप्ति सम्पन्न स्थिति है, वहाँ ही सन्तुष्टता हो सकती है और जिसके जीवन में सन्तुष्टता होगी, वही प्रसन्नता का अनुभव कर सकता है। आत्मा का आदि स्वरूप सम्पूर्ण-सम्पन्न-सन्तुष्ट-प्रसन्न बाप समान ही है। इसलिए बापदादा सदा अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होने के अभ्यास के लिए प्रेरणा देते हैं। अव्यक्त बापदादा उसके लिए ड्रिल भी कराते हैं। अपूर्णता का कारण है, अज्ञानता अर्थात् अज्ञानता जनित देहाभिमान। जो आत्मा निश्चय और विश्वास के साथ बाबा की श्रीमत पर चलकर ज्ञान की सत्यता को अनुभव करता है और उसका अभ्यास करता है, उसके जीवन में खुशी स्थाई रहती है।

आत्मा का अभीष्ट लक्ष्य राजा बनना, साधन-सम्पत्ति का संग्रह करना नहीं है परन्तु जीवन का लक्ष्य सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता है, जिसके लिए ही बाबा ने ये सारा ज्ञान दिया है और ये ड्रिल कराते हैं।

Q. संगठित पुरुषार्थ और व्यक्तिगत पुरुषार्थ दोनों में क्या-क्या लाभ हैं?

इस पुरुषार्थी जीवन की सफलता के लिए दोनों ही प्रकार से पुरुषार्थ अति आवश्यक है।

व्यक्तिगत पुरुषार्थ करके जब संगठन में उसकी लेनदेन करने से एक-दो के अनुभव से एक-दो को लाभ होता है और साथ में बुद्धि में नये-नये प्वाइन्ट्स भी इमर्ज होते हैं, जिससे व्यक्तिगत और संगठित पुरुषार्थ और आगे बढ़ता है, उसमें सफलता होती है। इसलिए व्यक्तिगत रूप से ज्ञान का मनन-चिनतन करना, योग का अभ्यास करना और और संगठित रूप में उसकी लेनदेन करना हौर संगठित रूप में योग का अभ्यास करना दोनों आवश्यक हैं।

Q. स्वर्ग अर्थात् मुक्ति-जीवनमुक्ति का सुख हम आत्माओं का भाग्य है, यह ड्रामा में हमारा पार्ट ही है या हमारे पुरुषार्थ की बलिहारी है?

इस विश्व नाटक में ड्रामा का पार्ट और पुरुषार्थ का बड़ा सुन्दर और आश्चर्यजनक सन्तुलन है। दोनों साथ-साथ चलते हैं। अंशमात्र भी अन्तर नहीं हो सकता है। इसलिए स्वर्ग में जाना और स्वर्गिक सुखों की अनुभूति करना हमारा ड्रामा में बना हुआ पार्ट भी है और उस पार्ट को बजाने के लिए हमको पुरुषार्थ भी करना ही होता है। बिना पुरुषार्थ के वह पार्ट रिपीट नहीं हो सकता है क्योंकि इस विश्व-नाटक में कर्म और फल का अद्वितीय अविनाशी विधि-विधान है। इसलिए ये हमारा भाग्य भी है और हमारे पुरुषार्थ की बलिहारी भी है। बड़े भाग्य अर्थात् ड्रामा अनुसार परमात्मा के साथ हमारा मिलन हुआ है और परमात्मा ने हमको मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव कराया है और उस अनुभव को सदा काल स्थाई बनाने के लिए पुरुषार्थ करा रहा है और हम पुरुषार्थ कर रहे हैं। बाबा ने बताया है कि ये पुरुषार्थ और प्रालब्ध का अनादि-अविनाशी खेल है, इसलिए पुरुषार्थ करना हर आत्मा का परम कर्तव्य है।

Q. एक सोते हुए व्यक्ति के मौन और जागृत व्यक्ति के मौन में क्या अन्तर है, आत्मा पर दोनों का क्या प्रभाव है और दोनों में कौनसा मौन श्रेष्ठ है?

जागृत व्यक्ति ही पाप-पुण्य का निर्णय करके पुण्य कर्म करके अपने भविष्य के लिए पुण्य का खाता संचित कर सकता है, सोता हुआ व्यक्ति जागृत व्यक्ति की अपेक्षा पाप और पुण्य दोनों से मुक्त होता है। सोते हुए व्यक्ति को भी स्वप्न तो आते हैं और उन अच्छे-बुरे स्वप्नों का भी उसके जीवन पर प्रभाव पड़ता है और उस आत्मा का पाप-पुण्य का खाता प्रभावित होता है। जागृत व्यक्ति ही मौन धारण कर गहन योग-साधना कर सकता है, सोता हुआ नहीं। जागृतावस्था का प्रभाव ही उसके सोने की स्थिति पर पड़ता है और उसके स्वप्नों आदि का कारण बनता है।

इन्द्रिय सुखों और अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति भी जागृत व्यक्ति ही कर सकता है। भावना और लक्ष्य से भक्ति मार्ग में रखे गये मौन में भी आत्मा को अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति होती है और जब यथार्थ ज्ञान के साथ मौन का अभ्यास हो तो सोने में सुहागा ही हो जायेगा अर्थात्

विशेष आत्मिक सुख की अनुभूति होगी।

''आत्मा थककर सो जाती है। ऐसे भी नहीं कि उस समय कोई पाप विनाश होते हैं। हाँ कोई विकर्म नहीं होता है। ... सारा दिन सर्विस करके आत्मा कहती है मैं अब सोता हूँ, अशरीरी बन जाता हूँ।''

सा.बाबा 22.11.05 रिवा.

''ऐसे नहीं कि स्वप्न तो मेरे वश में नहीं है। स्वप्न का भी आधार अपनी साकार (जागृतावस्था) जीवन है। अगर साकार जीवन में मायाजीत हो तो स्वप्न में भी माया अंशमात्र में भी नहीं आ सकती। ... जो स्वप्न में कमजोर होता है, तो उठने के बाद भी वे संकल्प जरूर चलेंगे और योग साधारण हो जायेगा। ... सदा मायाजीत अर्थात् सदा बाप के समीप संग में रहने वाले।''

अ.बापदादा 13.10.92 पार्टी 3

Q. बाबा ने कहा है आगे कड़ी परीक्षायें आने वाली हैं, उनको पास करने अर्थात् सामना करने के लिए अभी से कड़ा पुरुषार्थ चाहिए - तो वह कड़ा पुरुषार्थ क्या है ?

''सदा समझो - हम नम्बरवन पुरुषार्थी बन रहे हैं, बन नहीं गये हैं।... जैसे रूह-रुहान करते हो, वैसे ही अपने पुरुषार्थ को शक्तिशाली बनाने के लिए भी कोई न कोई प्वाइन्ट विशेष रूप से बुद्धि में याद रखो। ... यह विशेष पुरुषार्थ करने का लक्ष्य रख आगे बढ़ना है। अगर ऐसी ढीली रिजल्ट में रहेंगे तो जो आगे आने वाली परीक्षायें हैं, ... परीक्षायें कड़ी आने वाली हैं, उनका सामना करने के लिए पुरुषार्थ भी कड़ा चाहिए।''

अ.बापदादा 19.6.69

देह में रहते, चलते-फिरते, कर्म करते हमको स्थूल देह से न्यारा अपना अव्यक्त फरिश्ता स्वरूप और मूल स्वरूप अर्थात् बिन्दुरूप स्मृति में रहे, सदा अन्तर्दृष्टि से दिखाई देता रहे, जो ही संगमयुगी पुरुषार्थ का लक्ष्य है और जीवन की सर्व सफलताओं का आधार है। उसके लिए योग का सतत और यथार्थ अभ्यास, अमृतवेले शक्तिशाली योग का अभ्यास, मुरली का गहन अध्ययन, खान-पान की श्रीमत अनुसार शुद्धि, रहन-सहन-सम्बन्ध-सम्पर्क में ईश्वरीय मर्यादाओं का पालन, सेवा भी निर्मान और जिम्मेदारी से करना, टी.वी, दुनियावी समाचारों की लेनदेन, पर-चिन्तन, पद-दर्शन में समय-संकल्प-शक्ति व्यर्थ न गंवाना, एकान्त और एकाग्रता का अभ्यास आदि आदि सब बातों को अपने लक्ष्य को सदा सदा सामने रख चेक करें कि श्रीमत अनुसार हैं और यदि नहीं हैं, कोई अलबेलापन है तो उनको दृढ़ता से ठीक करें, उनका पालन करें। जब ऐसी चेकिंग और नियम-संयम का पालन करेंगे, तब ऐसी स्थिति को बना सकेंगे, जिससे कड़ी परीक्षाओं को पास कर सकें।

''समझ का कोर्स भी पूरा हो चुका है। कोर्स पूरा हुआ गोया समझदार बन ही गये, फिर भी बेसमझ क्यों बनते हो ? मुख्य कारण यह देखा जाता है कि कोई न कोई में अलबेलापन आ गया है। ... जो अपने को ज्यादा समझदार समझते हैं, वे ज्यादा अलबेलापन में आ गये हैं। जैसे पहले-पहले पुरुषार्थ की तड़फन थी, ... वह तड़फन खत्म हो गई है ... सदा समझो - हम नम्बरवन पुरुषार्थी बन रहे हैं, बन नहीं गये हैं।''

अ.बापदादा 19.6.69

Q. ड्रामा, पुरुषार्थ और भाग्य में क्या अन्तर है और क्या-क्या समानतायें हैं ?

पुरुषार्थ अर्थात् कर्म और फल का ये विश्व-नाटक बना हुआ है। ड्रामा का पार्ट और पुरुषार्थ का संकल्प साथ-साथ चलता है और पुरुषार्थ करने के बाद उसका फल ही भाग्य कहलाता है। इस प्रकार हम देखें तो पुरुषार्थ और भाग्य एक दुसरे के पीछे चक्रवत् चलते हैं, जिनकी ड्रामा में अविनाशी नूँध है। यथार्थ पुरुषार्थ करके इस सत्य को जानने वाला ही इस विश्व-नाटक का आनन्द अनुभव करता है।

Q. सेवा हमारे जीवन का मुख्य अंग है, सेवा में मनवांच्छित सफलता प्राप्त करने के लिए यथार्थ पुरुषार्थ क्या है ?

सेवा ब्राह्मण जीवन मुख्य कर्तव्य है और ईश्वरीय जीवन का मुख्य अंग है। सेवा में मनवांच्छित सफलता प्राप्त करने के लिए हमारी सर्व के प्रति कल्याण की भावना हो, किसको हराने या नीचा दिखाने की भावना अंशमात्र भी नहीं हो और हमारे जीवन में सर्व प्राप्ति स्वरूप का नशा और खुशी हो। जीवन में अहंकार और हीनता न हो। ऐसा निर्मान चित्त ही विश्व का नव-निर्माण कर सकेगा। ये ब्राह्मण जीवन परम-प्राप्तियों से परिपूर्ण, परमानन्दमय है - इस सत्य की स्मृति सदा रखनी है। आन्तरिक खुशी ईश्वरीय सेवा में सफलता का मुख्य आधार है, जो स्वत: सेवा करती है। इसलिए ही कहा गया है विद्या ददाति विनयम्।

Q. बाबा कहता ज्ञान में चलने वाले अच्छे-अच्छे बच्चों को भी माया खा लेती है - इसका कारण क्या है ?

इस बात पर हम विचार करें और आंकड़े एकत्रित करें तो इस निष्कर्ष पर पहुँचेंगे कि ऐसे माया के वशीभूत होने वाले बच्चों ने अहंकार वश बाबा की दो मुख्य श्रीमत में से कम से कम एक का उलंघन अवश्य किया होगा। एक है खान-पान की परहेज, दूसरी मुरली रोज अध्ययन। जीवन की दो प्रक्रियायें हैं - एक है मनोमय, जिसमें मन-बुद्धि विशेष है, उसके लिए मुरली आवश्यक है और दूसरी अन्नमय, जिससे स्थूल देह का निर्माण होता है, जिसके लिए

खानपान की शुद्धि आवश्यक है। ज्ञान मार्ग में सफलता के लिए दोनों का समान सहयोग आवश्यक है। दोनों में से एक भी विकृति आत्मा को नीचे गिरा देती है।इस ईश्वरीय जीवन में अच्छी सफलता के लिए दोनों आवश्यक हैं, इसलिए दोनों का अच्छी रीति पालन करने वाला कब भी माया के वश हो नहीं सकता।

Q. अच्छे पुरुषार्थी की निशानी क्या है, उसका कर्तव्य क्या है?

अच्छे पुरुषार्थी की बुद्धि कब परचिन्तन, परदर्शन, परपंच में न जाकर सदा अपने निशान अर्थात् अपने आत्मिक स्वरूप पर रहेगी, वह देह को देखते हुए भी नहीं देखेगा। अपनी देह भी पर है अर्थात् आत्मा से अलग है। वह दूसरे को भी उनके मूल स्वरूप अर्थात् आत्मिक स्वरूप में ही देखेगा। जैसे अर्जन के लिए वर्णन है कि उसकी दृष्टि चिड़िया की आंख पर रही। ब्रह्मा बाबा की दृष्टि में अपना सम्पूर्ण स्वरूप ही रहा, इसलिए ही उन्होंने अपनी सम्पूर्ण स्थिति को प्राप्त किया।

Q. वर्तमान विश्व की चकाचौंध और यज्ञ में भी साधन और सत्ता की दौड़ को देखते हुए एक अच्छे पुरुषार्थी का क्या कर्तव्य है?

एक अच्छे पुरुषार्थी को दूसरों को न देख अपनी बुद्धि सदा अपने अभीष्ठ लक्ष्य पर ही केन्द्रित रखनी चाहिए, जिसके लिए वह भगवान के पास आया है और भगवान को अपनी बुद्धि में रखना चाहिए। तब ही वह अपने जीवन के अभीष्ठ को प्राप्त कर सकेगा। परमात्मा से प्राप्त मुक्ति-जीवनमुक्ति के परमानन्द के आगे ये साधन-सत्ता और दुनिया की चकाचौंध कुछ भी नहीं है। साधन और सत्ता की दौड़ और तेज होगी, दुनिया में भी चकाचौध बढ़ती ही रहेगी, ये भी एक परीक्षा है, इसमें भी पास होने के लिए हमको इससे उपराम होना है। अपने आदर्श ब्रह्मा बाबा को सदा ही सामने रखकर पुरुषार्थ करेंगे, तब ही हम अपने अभीष्ट लक्ष्य को पा सकेंगे।

आत्मिक स्थिति में स्थित साक्षी होकर इस विश्व-नाटक को देखने से आत्मा परम सुख को अनुभव करती है। इस सुख के अनुभव में रहना और समय पर निश्चिन्त होकर देह और देह की दुनिया का त्याग करना जीवन की परम प्राप्ति है। इस विश्व-नाटक का कोई कार्य किसके कारण न कब रुका है और न रुकने वाला है, ये अपनी गति से सदा चलता आया है और चलता रहेगा।

Q. हर चीज सतोप्रधान, सतो, रजो, तमो में अवश्य आती है, इस विश्व में कोई भी चीज स्थिर नहीं है तो हमारा जो पुरुषार्थ है, उसमें भी सतोप्रधान, सतो, रजो, तमो होता है? यदि होता है तो वह गति-विधि सतोप्रधान, सतो, रजो, तमो के क्रम से चलती है या तमोप्रधान, तमो, रजो

फिर सतो और सतोप्रधान क्रम से चलती है अर्थात् उसकी गति-विधि क्या है ?

अनेक आत्माओं के मुखरबिन्दु से ये सुनने को मिलता है कि पहले हमारा योग अच्छा था, अनुभव अच्छा होता था, परन्तु अभी वह स्थिति अनुभव नहीं होती है। समयान्तर में जब पुरुषार्थ करते-करते अलबेलापन आ जाता है, तो वह अनुभूति नहीं होती है। जैसे दुनिया में कोई चीज स्थिर नहीं है, वैसे ही पुरुषार्थ भी सदा एक रस या सदा चढ़ती कला का नहीं रहता है परन्तु यह कहना कठिन है कि पुरुषार्थ की गति सतोप्रधान से तमोप्रधान होती है या तमोप्रधान से सतोप्रधान होती है। हाँ ये निश्चित है कि आत्मा अभी संगमयुग पर सारे कल्प के लिए पुरुषार्थ करती है तो उसमें सतोप्रधानता और तमोप्रधानता अवश्य होगी।

Q. अमृतवेला का समय कब होता है ?

Q. अमृतवेला का प्रभाव क्या और कैसे आत्मा और शरीर को और प्रकृति को प्रभावित करता है ?

Q. वास्तविकता को देखें तो 24 घण्टों में हर क्षण अमृतवेला है क्योंकि पृथ्वी की गति और सूर्य की स्थिति को देखते हुए हर क्षण किसी न किसी स्थान या देश में अमृतवेले का समय होता ही है। फिर भी बाबा कहते हैं कि अमृतवेले का समय विशेष बच्चों के लिए है - इसका भाव-अर्थ क्या है ?

उपर्युक्त स्थिति को विचार करें तो हर क्षण अमृतेला है परन्तु हर स्थान या देश में सूर्योदय से 2-3 घण्टा पहले का समय अमृतवेला माना जायेगा, जो हर देश में अलग-अलग होगा। इसलिए हर देश के समय और वहाँ के सेवाकेन्द्र के हिसाब से जो अमृतवेला का समय निश्चित किया गया होता है, उस समय योगाभ्यास करने का विशेष महत्व होता है और उस समय आत्मा को विशेष शक्ति की अनुभूति होती है। रात को आत्मायें विकार में जाती हैं, उससे जो वायब्रेशन वातावरण में फैलता है, वह अमृतवेले के समय निष्क्रिय (Nutralise) हो जाता है, जिससे बापदादा की शक्ति भरी प्रेरणायें जो सूर्य के समान फैल रही हैं, उनको आत्मा सहज ग्रहण करने में समर्थ होती है। प्रकृति के विधि-विधान अनुसार प्राकृतिक वातावरण भी उस समय शान्त और सुखद होता है, जो तन-मन दोनों को रिफ्रेश करता है, जिससे आत्मा सहज मन-बुद्धि को एकाग्र करके ईश्वरीय प्रेरणाओं को कैच करती है। उसके बाद दिन आरम्भ होने से वातावरण में अनेक प्रकार के वायब्रेशन फैलने लगते हैं।

साइलेन्स की शक्ति

इस सीज़न में 31.10.07, 2.2.08, 5.3.08 की अव्यक्त मुरलियों में बापदादा ने साइलेन्स की शक्ति को जमा करने की विशेष श्रीमत दी है, इसलिए इसके विषय में पुरुषार्थ करना अति आवश्यक है।

देह में रहते देह से न्यारी स्थिति, ज्वालारूप स्थिति, बीजरूप स्थिति, बिन्दुरूप स्थिति, लाइटहाउस-माइटहाउस स्थिति, बाप समान स्थिति, कर्मातीत स्थिति एक ही स्वीट साइलेन्स की स्थिति के पर्यायवाची हैं। स्वीट साइलेन्स की स्थिति संकल्प और विकल्पों दोनों से परे होती है, जिसमें चेतन आत्मा शरीर में तो होती है परन्तु चेतना नहीं होती है अर्थात् देह की कोई क्रियायें नहीं होती है और होती भी हैं तो बहुत कम। इसके लिए बाबा ने एक मुरली में कहा है - योग में सुनना, देखना भी बन्द हो जाता है। इस स्थिति में स्थित होने से ही आत्मा के विकर्म विनाश होते हैं और आत्मा अपनी मूल शक्तियों और गुणों की अनुभूति करती है। आत्मा इस स्थित में अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करती है।

''गीता से ही राजयोग का वा स्वर्ग की राजाई का वर्सा मिलता है। ... तुम्हारा है साइलेन्स का घमण्ड, उनका है साइन्स का घमण्ड। ... हमेशा यह बुद्धि में रखो कि हमको विश्व का रचता बाप विश्व का मालिक बनाने के लिए पढ़ाते हैं।''

सा.बाबा 19.6.08 रिवा.

Q. साइलेन्स की शक्ति क्या है, उसको जमा करने का विधि-विधान क्या है ?

साइलेन्स की शक्ति अर्थात् आत्मिक शक्ति क्योंकि आत्मा का मूल गुण-धर्म शान्त है। आत्मा जब अपने मूल स्वरूप में स्थित होती है तो संकल्प-विकल्पों से परे अपने शान्त स्वरूप में होती है, जो शान्त स्वरूप परमानन्दमय है, बाप के समान ही सर्वशक्तियों और गुणों से परिपूर्ण है। परन्तु आत्मा के विश्व-नाटक में पार्ट बजाने और जन्म-मरण के चक्र में आने से आत्मा के वे गुण और शक्तियाँ विस्मृत हो जाते हैं। कल्पान्त में जब परमात्मा पिता आकर अपना अर्थात् स्वयं का, आत्मा और विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान देते हैं और अपने साथ योग लगाने का विधि-विधान बताते हैं, तब वे गुण और शक्तियां पुनः जागृत होती हैं। यथार्थ ज्ञान के साथ जब आत्मा अपने मूल शान्त स्वरूप की स्थिति में स्थित होकर देह में अर्थात् कर्म में आती है तो आत्मा को अपने सम्पूर्ण स्वरूप अर्थात् परम शान्त और शक्ति स्वरूप का अनुभव होता है। उस स्थिति में आत्मा के संकल्प बहुत कम होते हैं और जो होते हैं, वे सिद्धि स्वरूप अर्थात् सफलतामूर्त होते हैं। इसलिए उस स्थिति में आत्मा जो भी संकल्प करती है, वह सिद्ध हो जाता

है। इसलिए बाबा ने साइलेन्स की शक्ति के प्रयोग करने और उसके उपयोग से जो-जो कार्य सम्पन्न करने की जो बातें कही हैं, वे सब हो सकती हैं अर्थात् उससे हम अपने और अन्य आत्माओं के कर्मभोग का निदान कर सकते हैं, दूर बैठी आत्मा को शान्ति की अनुभूति करा सकते हैं, आत्माओं को बाप की ओर आकर्षित कर सकते हैं।

सारे कल्प में चाहे वह सतयुग हो या कलियुग हो, आत्मा जो भी पार्ट बजाती है, उससे ये आत्मिक शक्ति अर्थात् साइलेन्स की शक्ति क्षीण ही होती है। सारे कल्प में अभी संगमयुग पर ही जब परमात्मा आकर ज्ञान देते हैं तब आत्मिक शक्ति का विकास होता है। इसलिए बाबा ने कहा है कि इस साइलेन्स की शक्ति जमा करने की बैंक अभी संगमयुग पर ही खुलती है। इस समय जो जितना इस शक्ति को जमा करता है, उस अनुसार ही इस विश्व नाटक में उसका पार्ट श्रेष्ठ होता है और उतना ही अधिक समय तक चलता है क्योंकि जिसके पास जितना जमा होगा, वह उस अनुसार ही खर्च कर सकेगा। जो आत्मा सतयुग के आदि में आयेगी, वह पूरे कल्प पार्ट बजायेगी। तो उसको उस अनुसार इस शक्ति को जमा करने की आवश्यकता है, जो इस समय ही करना होगा।

इस आत्मिक शक्ति अर्थात् साइलेन्स की शक्ति को जमा करने का साधन और साधना है - बाबा ने जो आत्मा, परमात्मा, सृष्टि-चक्र, कर्म आदि का ज्ञान दिया है, उसकी यथार्थ समझ और उसको समझकर उसको अनुभव करके, उस अनुसार कर्म करना तथा एक परमात्मा जो सदा सम्पूर्ण है, सर्वशक्तिवान है, उनके साथ अव्यभिचारी योग स्थापित करना। इसके लिए इस शक्ति का महत्व अनुभव होना, उसका सुख अनुभव होना अति आवश्यक है। जब इसके महत्व को अनुभव करेंगे, तब ही हमारी उसके विकास के प्रति लगन तीव्र होगी और पुरुषार्थ में दृढ़ता होगी और जब लगन तीव्र होगी, पुरुषार्थ में दृढ़ता होगी तो सफलता अवश्य होगी अर्थात् साइलेन्स की शक्ति जमा होगी, जिसका आभास स्वयं को भी होगा और दूसरों को भी अवश्य होगा।

आत्मिक शक्ति अर्थात् साइलेन्स की शक्ति के विकास अर्थात् जमा करने का सर्वश्रेष्ठ, सर्वोपरि, सबसे प्रभावी विधि-विधान है - देह में रहते देह और देह की दुनिया से न्यारे होकर संकल्प-विकल्पों से परे, ज्ञान के चिन्तन से भी मुक्त बाप समान अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होना अर्थात् मास्टर बीजरूप स्थिति में स्थित होना। इस स्थिति में स्थित होने से आत्मा का आधे कल्प का देहाभिमान का लेपक्षेप और विकर्मों का रहा हुआ खाता भस्म होता है और जब आत्मा अपने इस लाइट हाउस माइट हाउस स्थिति में स्थित होती है तो उससे जो लाइट-माइट के वायब्रेशन्स प्रवाहित होते हैं, उनसे जड़-जंगम-चेतन तीनों ही प्रकृतियां प्रभावित

होती हैं अर्थात् उससे तीनों ही पावन होती हैं, जिससे आत्मा का आधे कल्प के लिए पुण्य का खाता जमा होता है। ये है आत्मिक शक्ति अर्थात् साइलेन्स की शक्ति को जमा करने की सर्वश्रेष्ठ प्रभावी स्थिति है। इसलिए बाबा ने कहा है - जब विशेष योग में बैठते हो तो ज्ञान का भी चिन्तन नहीं होना चाहिए। उस समय बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण स्थिति होनी चाहिए, उसकी अनुभूति होनी चाहिए।

द्वितीय स्थिति है - ज्ञान का मनन-चिन्तन, परमात्मा के गुणों और शक्तियों का चिन्तन, विशेष (Intentionally) किसके प्रति योग-दान करना अर्थात् सर्चलाइट होकर वायब्रेशन देना, आदि आदि।

तृतीय स्थिति है - श्रेष्ठ कर्म करके, ज्ञान-दान करके पुण्य का खाता जमा जमा करना। इससे आत्मा को दूसरों की दुआयें मिलती हैं, जिससे उसका पुण्य का खाता जमा होता है। ये पुण्य का खाता भी आत्मा के लिए अति आवश्यक है और समय पर बहुत काम करता है।

इन तीनों स्थितियों का नम्बरवार अलग-अलग प्रभाव है परन्तु ये तीनों परस्पर सम्बन्धित (Co-Related) हैं अर्थात् एक का प्रभाव दूसरे पर पड़ता है, एक की सफलता से दूसरे की सफलता निर्भर करती है, इसलिए समयानुसार तीनों प्रकार के कर्तव्यों को करने के लिए बाबा ने श्रीमत भी दी है, विधि-विधान भी बताये हैं।

बाबा के महावाक्यों के महत्व को समझकर, इस साइलेन्स की शक्ति के महत्व को अनुभव करना, उसका उपयोग करना, उसका विकास करना हमारा परम कर्तव्य है, जिसके निमित्त बाबा ने हमको ये दिव्य जन्म दिया है। जब हम इस कर्तव्य को सम्पन्न करेंगे, तब ही साइलेन्स की साइन्स पर विजय होगी और विश्व नव-निर्माण का कर्तव्य सम्पन्न होगा।

‘‘जब विशेष योग में बैठते हो, उस समय बीजरूप अवस्था में स्थित रहना चाहिए। उस समय फिर विचार सागर मन्थन करने की आवश्यकता नहीं है।... लेकिन बिन्दुरूप की स्थिति का पुरुषार्थ बहुत जरूरी है।’’ अ.बापदादा 19.4.69

‘‘जब चाहें तब इस शरीर रूपी वस्त्र को पहनें और जब चाहें तब उतार भी सकें - ऐसे प्रैक्टिस होनी चाहिए। शरीर का भान भूल भी जाये और भान में आवें भी।... यह अभ्यास तब तक नहीं हो सकता जब तक आप पहले एकान्त में बैठकर इस बिन्दु स्वरूप की स्थिति का अभ्यास पक्का न करो। ... जब कहते हो - पुरुषार्थ का समय कम है, तो मुख्य पुरुषार्थ तो अभी रहा हुआ है।’’ अ.बापदादा 19.4.69

‘‘बिन्दुरूप में स्थित होने के लिए जो बातें सुनाई, उनमें मुख्य बात ब्रेक पॉवर होनी चाहिए। ...

ड्रामा की प्वाइन्ट भी हर कर्तव्य में परिपक्व होनी चाहिए। यह सब्जेक्ट कुछ कम देखने में आती है।''
अ.बापदादा 19.4.69

''बिन्दुरूप की स्थिति में ज्ञान अन्दर मर्ज हो जाता है ... बीज में विस्तार समाया हुआ होता है ना। तो बिन्दुरूप अर्थात् बीजरूप। ... परन्तु यह निल नहीं है। यह ज्ञान स्वरूप हो जाना है। ... बिन्दुरूप सर्वगुण सम्पन्न और भरपूरता की अवस्था है।''

अ.बापदादा 19.4.69

Q. साइलेन्स की शक्ति की साइन्स की शक्ति पर विजय का भाव अर्थ क्या है ?

साइन्स की शक्ति का आधार भी साइलेन्स की शक्ति है अर्थात् आत्मिक शक्ति ही है। साइन्स में जितने भी अविष्कार हुए हैं, साधन बनें हैं, उनको बनाने वाली आत्मा ही है। आत्मा में ही साइन्स के अविष्कारों के संस्कार नीहित है, जो समय पर शरीर के माध्यम से पुन: जागृत होते हैं और साइन्टिस्ट विभिन्न अविष्कार करने में समर्थ होते हैं। बिना आत्मा के शरीर और साइन्स कुछ भी नहीं कर सकती है। जब साइन्स वाले इस सत्य को अर्थात् आत्मिक स्वरूप को अनुभव करेंगे, तब ही समझो साइलेन्स की साइन्स पर विजय हुई है। इस सत्य को साइन्स वालों को अनुभव कराने के लिए बाबा हमको प्रेरित करते हैं। इसके लिए स्थूल में भी उनको इस शक्ति का ज्ञान देना आवश्यक है और सूक्ष्म वायब्रेशन्स के द्वारा भी उनको प्रभावित करने की आवश्यकता है। इसलिए बाबा ने अनेक बार कहा है कि वाचा और मन्सा दोनों से एक साथ सेवा करो तो परिणाम अच्छा होगा। ये कार्य होना तो अवश्य है परन्तु जो निमित्त बनता है, उसको उसका फल मिलता है, ये इस विश्व-नाटक का विधि-विधान है।

साइन्स शक्ति से पुरानी दुनिया का विनाश होता है और नई दुनिया के स्थूल निर्माण का कार्य होता है परन्तु उस दुनिया का उपभोग करने वाले साइलेन्स शक्ति वाली वे आत्मायें होती हैं, जिन्होंने परमात्मा से योग लगाकर, उनकी श्रीमत पर चलकर साइलेन्स शक्ति जमा की है।।

Q. साइलेन्स शक्ति से क्या2 कार्य किये जा सकते हैं ?

साइलेन्स शक्ति से आत्मा और जड़ प्रकृति पावन बनती है, साइलेन्स शक्ति से आत्मा कर्मभोग पर विजय प्राप्त करती है अर्थात् उसकी वेदना से अपने को मुक्त कर सकती है, साइलेन्स शक्ति से आत्माओं को प्रेरित करके बाप का बच्चा बना सकते हैं,

''वाचा से सेवा तो करते ही हो और करते ही रहना है, छोड़ना नहीं है लेकिन अभी मन्सा और कर्म दोनों से साथ-साथ सेवा करो। मन्सा द्वारा वायब्रेशन फैलाओ, सकाश फैलाओ। वायब्रेशन वा सकाश दूर बैठे भी पहुँचा सकते हो। शुभ भावना, शुभ कामना द्वारा किसी भी आत्मा को

मन्सा सेवा द्वारा वायब्रेशन वा सकाश दे सकते हो।''

अ.बापदादा 31.12.07

''आप साइलेन्स की शक्ति द्वारा परिवर्तन की शक्ति को कार्य में लगाते हो, नेगेटिव को पॉजेटिव में परिवर्तन कर लेते हो। ... साइलेन्स की शक्ति से समस्या को समाधान स्वरूप बना देते हो। कारण को निवारण रूप में बदल देते हो। ... सर्व शक्तियां परमात्म वर्सा मिला है। ... बापदादा यही कहते हैं - बाप को याद करो और वर्से को याद करो।''

अ.बापदादा 31.10.07

''जितना-जितना अव्यक्त स्थिति में स्थित होंगे तो कोई मुख से बोल न बोले लेकिन उनके अन्दर के भाव को पहले से ही जान लेंगे। ... अपने को मेहमान समझेंगे तो फिर व्यक्त में होते हुए भी अव्यक्त में रहेंगे। मेहमान का किसी भी वस्तु या व्यक्ति के साथ लगाव नहीं होता है। इस शरीर में भी हम मेहमान हैं, इस पुरानी दुनिया में भी मेहमान हैं।''

अ.बापदादा 17.7.69

Q. साइलेन्स शक्ति बढ़ाने के लिए क्या साधन और साधना है?

''अपनी शक्तियों की सकाश वायुमण्डल में नहीं फैला सकते हो? ... इसका साधन है मन की एकाग्रता, याद की एकाग्रता। एकाग्रता की शक्ति को स्वयं में बढ़ाओ। जब चाहो, जैसे चाहो, जब तक चाहो तब तक मन को सकाग्र कर सको। अभी मास्टर ज्ञान सूर्य के स्वरूप को इमर्ज करो और शक्तियों की किरणे, सकाश फैलाओ।''

अ.बापदादा 2.2.08

''अभी वर्तमान समय के हिसाब से मन-बुद्धि को एकाग्र करने का अभ्यास ज्यादा बढ़ाओ ... यह अभ्यास आने वाले समय में बहुत सहयोग देगा। वायुमण्डल के अनुसार एक सेकेण्ड में कन्ट्रोल करना पड़ेगा। जो चाहें, वही हो। तो यह अभ्यास बहुत आवश्यक है, इसको हल्का नहीं करना क्योंकि समय पर यही अन्त सुहानी करेगा।''

अ.बापदादा 2.2.08

Q. साइलेन्स की शक्ति को जमा करने की बैंक अभी संगमयुग पर ही खुलती है, इसका क्या भाव-अर्थ है?

सारे कल्प में तो आत्मा जो पार्ट बजाती है, उससे आत्मिक शक्ति का ह्रास ही होता है। साइलेन्स शक्ति अर्थात् आत्मिक शक्ति को जमा करने का समय संगमयुग ही है, जब परमात्मा आकर यथार्थ ज्ञान देते हैं और योग सिखाते हैं। इसलिए बाबा ने अनेक बार कहा है - खाता जमा करने का, कमाई करने का समय ये संगमयुग ही और तो सारा कल्प जमा को

खर्च करने का समय है।

‘‘कोई ऐसा प्लॉन बनाओ, जिसमें जैसे साइन्स प्रत्यक्ष एग्जॉम्पुल दिखाती है, ऐसे ही साइलेन्स पॉवर के प्रत्यक्ष प्रमाण दिखाओ क्योंकि आजकल सुनने के बजाये, प्रमाण देखना चाहते हैं। ... तो लोगों में आकर्षण होगी।’’

अ.बापदादा 18.1.08 डाक्टर्स और इन्जीरियर्स

‘‘जैसे साइन्स प्रत्यक्ष फल दिखाती है, ऐसे साइलेन्स की शक्ति इतना स्पष्ट और सहज प्रत्यक्ष रूप में अनुभव कराये, जो सब कहें ब्रह्मा कुमारियों के पास सहज साधन है अनुभव कराने का।’’

अ.बापदादा 2.2.08

‘‘बापदादा ने विशेष अमृतवेले साथ में चलते हुए भी देखा है कि जितना ही दुनिया में तीनों सत्ताओं की हलचल है, उतना आप शान्ति की देवियां, शान्ति के देव शक्तिशाली शान्ति की शक्ति के प्रयोग करना चाहिए, उतना कम है।... बापदादा यह विशेष इशारा दे रहे हैं कि अभी शान्ति की शक्ति के वायब्रेशन्स चारो ओर फैलाओ।’’

अ.बापदादा 18.2.08

‘‘आपने विशेष ब्रह्मा बाबा और जगदम्बा को देखा कि स्वयं आदि देव होते भी शान्ति की शक्ति का कितना गुप्त पुरुषार्थ किया। ... सेवा की जिम्मेवारी कितनी भी बड़ी हो लेकिन सेवा की सफलता का प्रत्यक्ष फल शान्ति की शक्ति के बिना, जितना चाहते हैं, उतना नहीं निकल सकता। सेवा करो लेकिन शान्ति की शक्ति सम्पन्न सेवा करो।’’

अ.बापदादा 18.2.08

‘‘हर एक को अभी स्व के प्रति, सारे कल्प कल्प की प्रालब्ध राज्य की और पूज्य की इकट्ठा करने के लिए अभी समय है। अभी समय और नाजुक आना ही है, ऐसे समय पर शान्ति की शक्ति द्वारा टचिंग पॉवर और कैचिंग पॉवर बहुत आवश्यक होगी।’’

अ.बापदादा 18.2.08

‘‘अभी समय और नाजुक आना ही है, ऐसे समय पर शान्ति की शक्ति द्वारा टचिंग पॉवर और कैचिंग पॉवर बहुत आवश्यक होगी। उस समय ये साधन कुछ नहीं कर सकेंगे, सिर्फ आध्यात्मिक बल और बापदादा के डायरेक्शन्स की टचिंग ही कार्य करा सकेगी।’’

अ.बापदादा 18.2.08

‘‘तो चेक करो - ऐसे समय में बापदादा की टचिंग मन-बुद्धि में आ सकेगी ? इसमें बहुत काल का अभ्यास चाहिए। इसका साधन है - मन-बुद्धि सदा ही, कभी-कभी नहीं क्लीन और क्लियर। ... ज़रा भी किसी आत्मा के प्रति मन में बुद्धि में या किसी कार्य के प्रति, किसी

साथी-सहयोगी के प्रति नेगेटिव होगा तो उसको क्लीन और क्लियर नहीं कहा जायेगा।''

अ.बापदादा 18.2.08

''सेवा करते भी अगर साइलेन्स की शक्ति वाणी में नहीं है तो प्रत्यक्ष फल सफलता जितनी चाहते, उतनी नहीं होगी। ... जैसे आप प्राब्लम हल करने के लिए सर्विस की मीटिंग करते हो ना, ऐसे यह मीटिंग करो, यह प्लेन बनाओ।'' अ.बापदादा 18.2.08

''साइलेन्स शक्ति या अपने श्रेष्ठ कर्मों की शक्ति जमा करने की बैंक सिर्फ अभी खुलती है। और किसी भी जन्म में जमा करने की बैंक नहीं है। अभी अगर जमा नहीं किया तो फिर ये बैंक ही नहीं होगी तो जमा किसमें करेंगे!'' अ.बापदादा 5.3.08

''अभी जो करना है वह कर लो। अगर सोचते रहेंगे ... तो समय आयेगा जो ये सोच पश्चाताप के रूप में बदल जायेगा। इसलिए बापदादा पहले से ही इशारा दे रहा है कि साइलेन्स की शक्ति जमा करो। कुछ भी हो एक सेकेण्ड में साइलेन्स में खो जाओ।''

अ.बापदादा 5.3.08

''अभी बापदादा कौनसी ड्रिल कराने चाहते हैं . एक सेकेण्ड में शान्ति की शक्ति का स्वरूप बन जाओ। एकाग्र बुद्धि और एकाग्र मन। सारे दिन में एक सेकेण्ड बीच-बीच में निकाल यह अभ्यास करो। साइलेन्स का संकल्प किया और स्वरूप हुआ। इसके लिए समय की आवश्यकता नहीं है। एक सेकेण्ड का अभ्यास करो साइलेन्स का।''

अ.बापदादा 5.3.08

''जैसे औरों को समय की पहचान देते हो, ऐसे ही अपने को भी समय और अपने कर्तव्य की पहचान होनी चाहिए अर्थात् जिस समय जो अवस्था होनी चाहिए, वह रहनी चाहिए। जैसे योग में बैठते हो तो वह समय ऐसा है, जब बीजरूप अवस्था में स्थित रह सकते हो, तो उस समय फिर विचार सागर मन्थन करने की आवश्यकता नहीं है।'' अ.बापदादा 19.4.69

आत्मा जाने-अन्जाने जब अपने शान्त स्वरूप में स्थित होती है तो स्वत: ही उसको अपनी अनेक आत्मिक शक्तियों का आभास होता है, अनेक सुषुप्त स्मृतियां जागृत होती हैं और वह असम्भव से प्रतीत होने वाले कार्यों को सम्भव कर दिखाती है।

Q. बाबा ने कहा है साइलेन्स की शक्ति जमा करो, उसके लिए बीजरूप स्थिति का अभ्यास करना अति आवश्क है। इसके लिए विशेष एकान्त में बैठकर निर्संकल्प होकर बीजरूप स्थिति का अभ्यास करो और चलते-फिरते कर्म करते बीच-बीच में देह से न्यारे होने का अभ्यास भी करो तब ये साइलेंन्स की शक्ति जमा होगी। अब इस अभ्यास के लिए साधन

और साधना क्या है ?

आत्मा, परमात्मा, विश्व-नाटक, कर्म आदि का जो ज्ञान परमात्मा ने दिया है, उसको समझना, अनुभव करना और निश्चयबुद्धि होकर उस पर चलना। जितनी ज्ञान की धारणा होगी, उतना ही हम अपने मूल स्वरूप में स्थित होने में समर्थ होंगे। यथार्थ ज्ञान की धारणा से आत्म-विश्वास, परमात्म-विश्वास होता है, जिससे आत्मा राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति, ईर्ष्या-घृणा, इच्छा-आकांक्षा से मुक्त होंती है और इन सबसे मुक्त आत्मा ही निर्संकल्प स्थिति में स्थित हो शान्ति का अनुभव कर सकती है अर्थात् शान्ति की शक्ति जमा कर सकती है।

साइलेन्स की शक्ति का महत्व समझना और उसकी जीवन में क्या आवश्यकता है, उसको अनुभव करना। बाबा के महावाक्यों पर निश्चय करना।

इन सब बातों को समझेंगे तब भौतिक साधनों और इन्द्रिय सुखों से वृत्ति उपराम होगी और जब वृत्ति उपराम होगी तब ही बीजरूप स्थिति में स्थित होने का सफल अभ्यास कर सकेंगे। इन्द्रिय सुखों की आकर्षण ही इसमें सबसे बड़ी बाधा है।

इसके लिए एकान्त और अन्तर्मुखता के गहन अभ्यास की बहुत आवश्यकता है। खान-पान और व्यवहार में शुद्धि परमावश्यक है।

देह से न्यारी स्वीट साइलेन्स की स्थिति कैसी होगी, उसका अनुभव होगा, तब ही उसके विकास के लिए पुरुषार्थ हो सकेगा।

साइलेन्स की शक्ति जमा करने के लिए बाबा ने कहा है कि आप जब विशेष योग में बैठते हो तो बीजरूप स्थिति अर्थात् लाइटहाउस-माइटहाउस स्थिति में बैठो, कर्म करते भी बीच-बीच में इस स्थिति का अभ्यास करो परन्तु अनुभव ऐसा है कि वह अभ्यास या स्थिति होती नहीं है। उसमें कुछ न कुछ संकल्प चलते ही रहते हैं। इस स्थिति के सफल अभ्यास के लिए जैसे परमात्मा इस विश्व-नाटक का पूर्ण ज्ञाता होने के कारण सदा साक्षी स्थिति में रहता है, निर्संकल्प रहता है और सदा ही अपनी सम्पूर्ण स्थिति अर्थात् लाइटहाउस-माइटहाउस स्थिति में रहता है। ऐसे ही जब हमारी भी साक्षी स्थिति होगी तब ही देह और देह की दुनिया से न्यारे होकर निर्संकल्प होकर अपनी सम्पूर्ण स्थिति अर्थात् लाइटहाउस-माइटहाउस स्थिति में सहज स्थित हो सकेंगे। सहज ही विकर्मों का विनाश कर सकेंगे और पुण्य का खाता जमा कर सकेंगे, स्वीट साइलेन्स स्थिति का अनुभव कर सकेंगे, अपनी आत्मिक स्थिति का खाता जमा कर सकेंगे।

Q. बाबा ने कहा है - साइन्स की शक्ति पर साइलेन्स की शक्ति की विजय विश्व-परिवर्तन करेगी, इसका भाव-अर्थ क्या है और यह कब और कैसे होगा ?

अन्त समय जब साइन्स के साधन फेल हो जायेंगे, उस समय भी ये साइलेन्स की शक्ति काम करेगी और आत्मा को सुख-शान्ति की अनुभूति करायेगी। जो कार्य साइन्स के साधन नहीं कर सकते, वह कार्य ये साइलेन्स की शक्ति करके दिखायेगी।

''एक सेकेण्ड में स्वीट साइलेन्स की अनुभूति में खो जाओ। ... साइन्स पर साइलेन्स की शक्ति की विजय परिवर्तन करेगी। साइलेन्स शक्ति दूर बैठे भी किस आत्मा को सहयोग भी दे सकते हो, सकाश भी दे सकते हो, भटका हुआ मन शान्त कर सकते हो।''

अ.बापदादा 5.3.08

''अलर्ट रहने के लिए चेक करो - हमारा मन और बुद्धि सदा क्लीन और क्लियर है ?... ऐसे समय पर विजय प्राप्त करने के लिए मन में, बुद्धि में कैचिंग पॉवर और टचिंग पॉवर दोनों बहुत आवश्यक हैं।'' अ.बापदादा 5.3.08

''ऐसे सरकमस्टांश आने हैं जो कहाँ दूर बैठे हो लेकिन क्लीन और क्लियर मन और बुद्धि होगा तो बाप का इशारा, डायरेक्शन, श्रीमत जो मिलनी है, वह कैच कर सकेंगे। स्पष्ट टच होगा - यह करना है, यह नहीं करना है।'' अ.बापदादा 5.3.08

''कैचिंग पॉवर और टचिंग पॉवर के लिए वर्तमान समय साइलेन्स शक्ति अपने पास जितनी हो सके जमा करो। जब चाहो, जैसे चाहो वेसे मन और बुद्धि को कन्ट्रोल कर सको। व्यर्थ संकल्प स्वप्न में भी टच नहीं करें - ऐसा माइण्ड कन्ट्रोल चाहिए। इसीलिए कहावत है - मन जीते जगत जीत।'' अ.बापदादा 5.3.08

''जैसे स्थूल कर्मेन्द्रियों को ... ऐसे मन और बुद्धि की कन्ट्रोलिंग पॉवर आत्मा में हर समय इमर्ज हो। ऐसे नहीं कि योग के समय अनुभव होता है लेकिन कर्म के समय, व्यवहार के समय, सम्बन्ध-सम्पर्क के समय अनुभव कम हो। अचानक पेपर आने हैं। फाइनल रिजल्ट के पहले भी बीच-बीच में पेपर लिये जाते हैं।'' अ.बापदादा 5.3.08

''एक सेकेण्ड में स्वीट साइलेन्स की अनुभूति में खो जाओ।... साइन्स पर साइलेन्स की शक्ति की विजय परिवर्तन करेगी। साइलेन्स शक्ति दूर बैठे भी किस आत्मा को सहयोग भी दे सकते हो, सकाश भी दे सकते हो, भटका हुआ मन शान्त कर सकते हो।''

अ.बापदादा 5.3.08

''ब्रह्मा बाबा को देखा - जब भी कोई अनन्य बच्चा थोड़ा हलचल में वा शारीरिक हिसाब-किताब में रहा तो सवेरे-सवेरे उठकर बच्चे को साइलेन्स की शक्ति की सकाश दी और वे भी अनुभव करते थे। अन्त में इस साइलेन्स की सेवा का सहयोग देना पड़ेगा।''

अ.बापदादा 5.3.08

गुण, शक्तियां और कलायें

Q. ज्ञान, गुण, शक्तियों की धारणा का दर्पण क्या है?

स्वस्थिति। संकल्प करते ही अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित हो जाना, संकल्प की भी आवश्यकता न हो अर्थात् आत्मिक स्वरूप की स्थिति नेचुरल नेचर बन जाये। ज्ञान-गुण-शक्तियों की धारणा वाली आत्मा सदा परमानन्द के अनुभव में रहेगी क्योंकि आत्मिक स्वरूप परमानन्दमय है। इसलिए बाबा सदा ही कहते हैं - कुछ भी हो जाये लेकिन तुम्हारी खुशी न जाये।

Q. सतयुग से ही आत्मा की उतरती कला होती है - तो सतयुग से त्रेता के अन्त तक की उतरती कला और द्वापर आदि से कलियुग अन्त तक की उतरती कला में क्या अन्तर होता है, जिससे सतयुग-त्रेता में चार कलायें उतरती हैं और द्वापर-कलियुग में 12 कलायें उतर जाती हैं?

सतयुग-त्रेता में आत्मा जो उपभोग आदि करती है, उससे उसका पुण्य का जमा का खाता कम होता जाता है परन्तु आत्मा में देहाभिमान न होने से कोई पाप कर्म नहीं होता है, इसलिए कोई कट नहीं चढ़ती है। द्वापर से आत्मा का बचा हुआ जमा का खाता तो कम होता ही है, साथ में देहाभिमान के कारण विकार और विकारों के कारण पाप-कर्म भी होते हैं, इसलिए पुण्य का खाता जल्दी क्षीण होता है और आत्मा पर कट भी चढ़ जाती है, इसलिए दोनों तरह से आत्मा की शक्ति क्षीण होती है, इसलिए द्वापर-कलियुग में 12 कलायें उतरती हैं। इसलिए बाबा मुरली में कहते कि तुमको 63 जन्मों के पापों का खाता भस्म करना है।

Q. 16 कलाओं से क्या तात्पर्य है अर्थात् क्या किन्हीं विशेष नामों से 16 कलायें होती हैं या यह सम्पूर्णता की निशानी है?

16 कलायें सम्पूर्णता की निशानी है, जिसको चन्दामा के पूर्ण होने से लिया गया है। कोई विशेष नामों से 16 कलायें नहीं होती हैं। कुछ गुणों और कलाओं के नाम गाये जाते हैं परन्तु उनका 16 कला सम्पूर्ण स्थिति से सम्बन्ध नहीं है।

‘‘सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण कहा जाता है तो सर्व कलायें अभी भरेंगी ना। ... यह सम्पूर्ण स्टेज की निशानी है।’’ अ.बापदादा 5.10.71

‘‘इस ग्रुप में प्रश्नों का उत्तर देने में होशियार कौन है? देखने और परखने की शक्ति कहाँ तक आई है? योग की स्थिति में निरन्तर रहने वाला कौन है? ... यह क्यों पूछ रहे हैं क्योंकि अगर परखने की प्रैक्टिस होगी तो ... बहुत बातों में विजयी बन सकते हो। अगर परखने की शक्ति नहीं है तो विजयी नहीं बन सकते।’’ अ.बापदादा 16.10.69

‘‘परखने की शक्ति को तीव्र बनाने के लिए मुख्य कौनसा साधन है? परखने का तरीका कौनसा होना चाहिए? ... अव्यक्त स्थिति के साथ-साथ यथार्थ रूप से वही परख सकता है, जिनकी बुद्धि में ज्यादा व्यर्थ संकल्प नहीं होंगे, उनकी बुद्धि ही एक की याद में, एक के ही कार्य में और एकरस स्थिति में होगी, वे दूसरे को जल्दी परख सकेंगे।’’

अ.बापदादा 16.10.69

‘‘जितना बुद्धि की सफाई होगी, उतना ही योगयुक्त अवस्था में रह सकेंगे। यह व्यर्थ संकल्प और विकल्प जो चलते हैं, वे अव्यक्त स्थिति होने में विघ्न हैं। बार-बार इस शरीर की आकर्षण में आ जाते हैं, उसका मूल कारण है कि बुद्धि की सफाई नहीं है।... बुद्धि की सफाई अर्थात् बुद्धि को जो महामन्त्र मिला हुआ है, उसमें बुद्धि मगन रहे।’’

अ.बापदादा 16.10.69

‘‘सारा दिन इन संकल्पों-विकल्पों से बुद्धि थकी होने के कारण निर्णय करने की शक्ति में कमी आ जाती है, इसलिए विजयी नहीं बन सकते हो। हार खाने का मुख्य कारण यह है कि बुद्धि की सफाई नहीं है।’’ अ.बापदादा 16.10.69

‘‘हरेक के मस्तक की मणि की चमक बापदादा देखते हैं। ऐसे ही अगर आप सभी भी मस्तक की मणि को ही देखते रहो तो फिर यह दृष्टि और वृत्ति शुद्ध सतोप्रधान बन जायेगी। दृष्टि चंचल होती है, उसका मूल कारण यह है। मस्तक की मणि को न देख शारीरिक रूप को देखते हो।’’ अ.बापदादा 16.10.69

‘‘जैसे बापदादा लोन लेकर आते हैं ना। अभी तो दोनों ही लोन लेते हैं। ... वैसे ही आप सभी भी समझो कि हम लोन लेकर सर्विस के निमित्त आये हैं थोड़े समय के लिए। जब ऐसी स्थिति होगी तब बाप का प्रभाव दुनिया के सामने आयेगा।’’ अ.बापदादा 16.10.69

आत्मिक शक्ति और वास्तु-कला अर्थात् वास्तु-शास्त्र

अंग्रेजी में भी कहा गया है - Events can't be changed, but we can change our attitude towards events. बाबा ने भी विश्व-नाटक का जो सत्य ज्ञान दिया है, उसके आधार पर हम समझते हैं कि जो इस विश्व-नाटक में कल्प पहले जो हुआ है, वह टाला नहीं जा सकता है और जो नहीं हुआ है, वह हो नहीं सकता है क्योंकि ये विश्व-नाटक हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है। यदि इस विश्व-नाटक का ये सत्य ज्ञान बुद्धि में है तो हमको वास्तु के विषय में चिन्ता करने की कोई आवश्यकता नहीं है और न ही किसी प्रकार की चिन्ता होगी। परन्तु इसका मतलब ये नहीं कि हम वास्तु पर विचार नहीं करें। हम वास्तु-निर्माण के पहले विचार अवश्य करें परन्तु विश्व-नाटक के ज्ञान को बुद्धि में रखते हुए चिन्तित या अपनी ईश्वरीय शान से परे परेशान नहीं हों। ये अटल सत्य है कि यदि हम ईश्वरीय नियम-संयम का श्रीमत अनुसार पालन करते हैं तो हमारा अहित हो नहीं सकता।

Q. वास्तु-कला का जनक अर्थात् निर्माता कौन अर्थात् वास्तु-कला साइलेन्स की शक्ति का जनक है या साइलेन्स शक्ति वास्तु-कला का जनक है? किसका प्रभाव प्रधान है?

Q. क्या वास्तु-कला आत्मिक शक्ति का आधार है या आत्मिक शक्ति वास्तु-कला का आधार है?

सत्य ये है कि वास्तु-कला का जनक आत्मा है। हम अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर जो निर्णय करेंगे, जो निर्माण करेंगे या करायेंगे वह वास्तु-कला के अनुसार स्वत: होगा। आत्मिक शक्ति के आधार पर जड़ तत्व कार्य करते हैं, जड़ तत्वों के आधार पर आत्मा की स्थिति नहीं बदलती है। बाबा ने स्पष्ट कहा है - जब तुम आत्मायें पावन बनेंगी तो ये प्रकृति तुम्हारे आर्डर में होगी। प्रकृति भी आत्माओं को उनके कर्मों के अनुसार ही फल देती है। सुख-दुख की भोगना में आत्मा का कर्म प्रधान है।

Q. क्या वास्तु कला के आधार पर ड्रामा को बदला जा सकता है? यदि हाँ तो कैसे और यदि नहीं तो हमारा कर्तव्य क्या है?

विश्व-नाटक अनादि-अविनाशी है, इसलिए वास्तु-कला के द्वारा ड्रामा को नहीं बदला जा सकता है बल्कि ड्रामा अनुसार वास्तु-निर्माण होता है। हमारा कर्तव्य है कि हम अपना समय और शक्ति परमात्मा के द्वारा बताये गये कार्य में लगायें अर्थात् अपनी आत्मिक शक्ति के विकास में लगायें, वास्तु के चिन्तन में परेशान होकर ईश्वरीय नियम-संयम और कर्तवयों में ढीले न हों।

Q. बाबा के समय और बाबा के बाद 1990 तक जो भवन निर्माण हुए वे वास्तु-कला के आधार पर निर्माण हुए हैं या आत्मिक शक्ति के आधार पर निर्माण हुए हैं?

आत्मिक शक्ति के आधार पर। बाबा के समय और बाबा के बाद 1990 तक जो भवन निर्माण हुए वे वास्तु-कला के आधार पर निर्माण हुए हैं या नहीं हुए हैं, इसका कोई चिन्तन नहीं था, फिर सभी आत्मिक सुख में थे और यज्ञ हर तरह से विस्तार को पाता रहा है। उससे पहले यज्ञ में वास्तु के आधार पर उठने वाले प्रश्न नहीं थे, आत्माओं का इन बातों पर ध्यान ही नहीं था, इसलिए उसके प्रति इतने चिन्तित नहीं थे फिर भी यज्ञ का उत्तरोत्तर विकास हुआ है क्योंकि सभी अपनी आत्मिक शक्ति के विकास के लिए ईश्वरीय नियम-संयम के पालन में दृढ़ थे।

Q. क्या वास्तु-कला पर ध्यान केन्द्रित करने अर्थात् उस अनुसार निर्माण करने, सुधार करने से मृत्यु नहीं होंगी, कोई दुर्घटनायें नहीं होगी, कोई दुख-दर्द नहीं होगा, कोई विघ्न नहीं आयेंगे? दुर्घटनाओं और दुख-दर्द, विघ्नों का कारण हमारे संचित कर्म हैं या वास्तु-निर्माण?

Q. वर्तमान में हमारे व्यक्तिगत जीवन में और समग्र यज्ञ में अनेक प्रकार की अप्रिय घटनाओं और विघ्नों का कारण ईश्वरीय नियम-संयम में गिरावट और ढीलापन है या वास्तु-निर्माण?

वास्तविकता ये है कि सेवा और साधनों की वृद्धि के साथ हम ईश्वरीय नियम-संयम और ईश्वरीय मर्यादाओं के पालन में हल्के हो गये हैं, जिससे यज्ञ में विघ्न अधिक आ रहे हैं या अनुभव कर रहे हैं। विघ्नों का मूल कारण हमारे अपने कर्म हैं, वास्तु-निर्माण नहीं। वास्तु तो निमित्त कारण है। यदि हमने अपने कर्मों पर ध्यान नहीं दिया, ईश्वरीय नियम-संयम पर ध्यान नहीं दिया तो वास्तु-कला में कितना भी पुरुषार्थ कर लें परन्तु विघ्नों से मुक्त नहीं हो सकते हैं, अतीन्द्रिय सुख का अनुभव नहीं कर सकते हैं ।

हमारे इस सब कहने का मतलब ये नहीं कि हम वास्तु-निर्माण में वास्तु-कला पर ध्यान नहीं दें परन्तु उसके साथ अपने ईश्वरीय नियम-संयम, विधि-विधान का महत्व भी समझें और उसको ध्यान में रखें। बाबा ने जो कर्म की गहन गति का ज्ञान दिया है, उसको भी ध्यान में रखेंगे तब ही जीवन में सच्चा सुख पायेंगे।

वास्तु-कला का उपयोग करना अच्छा है परन्तु अपने हर विघ्न, हर कर्मभोग, कर्म-बन्धन आदि सबके लिए वास्तु-दोष को समझ लेना महान भूल होगी। वास्तु-कला लौकिक दुनिया की देन है, जो होते हुए भी पतन होता आया है और होगा ही और कर्मों के अनुसार कर्मभोग होगा ही। इन सबसे मुक्ति का एकमात्र साधन ईश्वरीय ज्ञान और योग ही है, जो ही चढ़ती कला

का साधन है। इसलिए अल्पज्ञ आत्माओं की बातों में भ्रमित होकर संगम के सुहावने समय को व्यर्थ नहीं करना है। ईश्वरीय नियम-संयम से वास्तु-दोष दूर होगा, वास्तु-कला या वास्तु-सुधार से ईश्वरीय सुख की अनुभूति सम्भव नहीं है, आत्मा की चढ़ती कला सम्भव नहीं है। इस तरह अपने ईश्वरीय ज्ञान और विधि-विधान के महत्व को कम समझकर उनमें ढीला होना संशयबुद्धि की निशानी ही कही जायेगी। निश्चयबुद्धि विजयन्ति। फिर भी जो आत्मायें इस चक्कर में आकर परेशान होती हैं, समय-साधन को लगाती हैं, यह उनका अपना पार्ट है और अपने कर्मों के हिसाब-किताब को चुक्ता करने का विधि-विधान ही है।

Q. आत्मा का प्रभाव तत्वों पर प्रधान है या तत्वों का प्रभाव आत्मा पर प्रधान है ? वास्तु-दोष की क्या स्थिति है

Q. आत्मा के दुख का कारण तत्व, आत्मा के कर्मों के आधार पर बनते हैं या तत्वों की विकृति अर्थात् वास्तु-दोष से आत्मा दुखी होती है ? सृष्टि का विधान क्या है ?

ये विश्व-नाटक जड़ और चेतन के सहयोग से बना है परन्तु आत्मा चेतन है, वह कर्म करती है और उसके फलस्वरूप सुख या दुख को भोगती है, जिसमें निमित्त कारण तत्व या जड़ प्रकृति बनती है। बाबा ने भी कहा है - 'रचता आत्मा है, न कि प्रकृति'; 'जब तुम आत्मायें पावन बनते हो तो तुम्हारे लिए प्रकृति भी पावन बनती है'; 'जैसा व्यक्ति होता है, वैसा ही फर्नीचर होता है'। इसलिए इस सत्य को अच्छी रीति आत्मसात कर लेना चाहिए कि ईश्वरीय नियम-संयम, विधि-विधानों को पालन करके अपने कर्मों के सुखार से ही हम सुखी हो सकते हैं, वास्तु तो निमित्त आधार है। यदि हम ईश्वरीय आज्ञानुसार अपने स्वरूप में स्थित होंगे तो जो निर्माण करेंगे, वह सब वास्तु-ज्ञान के अनुसार होगा। यदि हमने ईश्वरीय नियम-संयम के अनुसार चलकर अपने कर्मों का सुधार न किया तो वास्तु-सुधार के पीछे कितना भी पड़े रहें, उससे कुछ भी नहीं होगा और आज की तमोप्रधान बुद्धि के होते वास्तु भी कितना सही होगा, यह तो ड्रामा और परमात्मा ही जाने। वृक्ष हरा-भरा जड़ में खाद-पानी डालने से होता है, पत्तों को सींचने से नहीं।

Q. क्या हम अपने योगबल से वास्तु-दोष को निष्क्रिय कर सकते हैं या वास्तु-सुधार से कर्म-फल को टाल सकते हैं अर्थात् कर्म के फलस्वरूप आये दुख-दर्द से मुक्ति पा सकते हैं ? दोनों स्थितियों में हमारा क्या कर्तव्य है ?

यदि हमारे कर्म खराब हैं तो वास्तु-सुधार से हम उसके फल से मुक्त नहीं हो सकते हैं। योगबल से वास्तु-दोष के प्रभाव को निष्क्रिय किया जा सकता है क्योंकि योगबल से तत्व भी पावन बनते हैं।

बाप समान सम्पूर्ण और सम्पन्न

''आप सबका लक्ष्य है - बाप ब्रह्मा समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बनना है। तो ब्रह्मा बाप ने सर्व खज़ाने आदि से अन्तिम दिन तक सफल किया, इसका प्रत्यक्ष प्रमाण देखा। सम्पूर्ण फरिश्ता बन गया। अपनी प्यारी दादी को भी देखा सब सफल किया और औरों को भी सफल करने का सदा उमंग उत्साह बढ़ाया। तो ड्रामानुसार विशेष विश्व-सेवा के अलौकिक पार्ट के निमित्त बनी।''

अ.बापदादा 31.12.07

''बापदादा यही चाहते हैं कि जो प्रतिज्ञा की है - बाप समान बनने की तो हर एक बच्चे की सूरत में बाप की मूरत दिखाई दे। हर एक बोल बाप समन हो। बापदादा के बोल वरदान रूप बन जाते हैं। ... तो चेक करो - हमारी सूरत में बाप की मूरत दिखाई देती है? बाप की मूरत क्या है - हर बात में सम्पन्न।''

अ.बापदादा 5.3.08

''बाप हर बात में सम्पन्न है। ऐसे हर एक बच्चे के नयन, हर एक बच्चे का मुखड़ा बाप समान है, सदा मुस्कराता हुआ चेहरा है? कभी सोच वाला, कभी व्यर्थ संकल्पों की छाया वाला, कभी उदास, कभी बहुत मेहनत वाला चेहरा तो नहीं है?''

अ.बापदादा 5.3.08

''अभी एक मास अभ्यास करके ऐसी नेचुरल नेचर बनाओ जो सदा आपके चेहरे में बाप के गुण दिखाई दें, चलन से बाप की श्रीमत दिखाई दे। सदा मुस्कराता हुआ चेहरा हो, सदा सन्तुष्ट रहने और सन्तुष्ट करने की चाल हो। हर कर्म में, कर्म और योग का बैलेन्स हो।''

अ.बापदादा 5.3.08

Q. बाप समान बनने का लक्ष्य है तो बाप समान स्थिति क्या है और उसके लिए अभीष्ट पुरुषार्थ क्या है?

Q. सम्पूर्ण पवित्रता क्या है, सम्पूर्ण पवित्रता और बाप समान स्थिति में क्या अन्तर है और उसके लिए अभीष्ट पुरुषार्थ क्या है?

आत्मा-परमात्मा दोनों एक ही वंश के है और एक ही घर परमधाम के रहने वाले हैं, इसलिए आत्मिक स्वरूप बाप समान सम्पूर्ण और सर्व गुण-शक्तियों से सम्पन्न है और जो सम्पन्न है, वही सदा सन्तुष्ट और प्रसन्न रह सकता है। बापदादा यही चाहते हैं कि हर आत्मा अपने सम्पूर्ण-सम्पन्न स्वरूप में स्थित रहे, जिससे वह सदा सन्तुष्टता और प्रसन्नता का अनुभव करती रहे। इसलिए बाबा ने अनेक बार कहा है - शरीर चला जाये परन्तु खुशी न जाये।

बाबा ने अनेक बार कहा है - आत्मिक स्वरूप का ऐसा अभ्यास हो, जो संकल्प करते ही बाप समान अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित हो जायें। इसलिए बाबा कहते हैं - देहाभिमान ही नहीं लेकिन देहभान से भी मुक्त होना है क्योंकि शिव बाप में देह-भान भी नहीं है। ब्रह्मा बाबा ने इस पुरुषार्थ को करके ही अपने सम्पूर्ण और सम्पन्न अर्थात् बाप समान स्थिति को पाया है। अभी दोनों बाप हमको अपने समान बनाने का ज्ञान दे रहे हैं, शक्ति दे रहे हैं और प्रेरणा दे रहे हैं। ब्रह्मा बाप समान पुरुषार्थ करके शिव बाप समान बनना ही इस ब्राह्मण जीवन का परम कर्तव्य है और जब ये कर्तव्य पूर्ण होगा, तब ही अपने घर परमधाम में बाप के साथ जा सकेंगे।

आत्मा की सर्व दैहिक आकर्षणों से मुक्त अपने आत्मिक स्वरूप में स्थिति ही सम्पूर्ण पवित्रता है। इसलिए बाबा कहते हैं - तुमको देहाभिमान तो छोड़ो, देहभान से भी मुक्त होना है। आत्मा की ये स्थिति ही बाप समान स्थिति है क्योंकि परमात्मा बाप देहभान से भी मुक्त सदा पावन है, सम्पूर्ण है। उस सम्पूर्ण आत्मिक स्वरूप की स्थिति में किसी भी प्रकार का विकार नहीं है, कोई विकारी या व्यर्थ दृष्टि-वृत्ति, भाव-भावना न ही है और न ही हो सकती है। यही सम्पूर्ण पवित्रता है और इस जीवन का लक्ष्य है। यही आत्मा की सम्पूर्ण स्थिति है, यही कर्मातीत स्थिति है, यही बाप समान स्थिति है।

इस स्थिति के लिए दैहिक सुखों के अस्तित्व अर्थात् उसके प्रभाव को जानना अति आवश्यक है। कोई भी प्रकार का दैहिक सुख आत्मिक शक्ति को क्षीण अवश्य करता है अर्थात् उसको अपूर्णता की ओर ले जाता है। जबकि आत्मिक स्वरूप की स्थिति का अनुभव, उसका अभ्यास आत्मा को सम्पूर्णता की ओर आकर्षित करता है और परमात्मा के सानिध्य से उस आत्मिक शक्ति का विकास करता है, जिसके सतत पुरुषार्थ से आत्मा बाप समान सम्पूर्ण और सम्पन्न बनती है। जितना इस सत्य का अनुभव होगा, उतनी ही उसके प्रति लगन तीव्र होगी और उस अनुसार पुरुषार्थ होगा। आत्मिक स्वरूप सदा ही परमानन्दमय है।

जैसे साकार रूप में देखा - बात करते समय, खाना खाते समय एक-दो सेकण्ड के लिए भी शरीर से गायब देखने में आते थे। बात करते हुए अशरीरी, आत्मिक स्वरूप में देखते थे। यह बिन्दु स्वरूप की स्थिति में रहने का पुरुषार्थ था।... साकार रूप के सामने जब आप जाते थे तो एकान्त और अन्तर्मुखता खींचती थी... कभी-कभी लाइट-लाइट देखने में आती थी। यह बिन्दुरूप की स्थिति का प्रभाव है। अ.बापदादा 19.4.69

Q. शिवबाबा और ब्रह्मा बाबा के गुणों में क्या अन्तर है और क्या समानता है?

शिवबाबा ज्ञान-गुण-शक्तियों का सागर है अर्थात् सदा सम्पन्न है परन्तु ब्रह्मा बाबा ने अपने

पुरुषार्थ से शिवबाबा के ज्ञान-गुण-शक्तियों को धारण कर बाप समान सम्पूर्ण और सम्पन्न स्थिति बनाई है। शिवबाबा तो कभी जन्म-मरण के चक्र में नहीं आता है, इसलिए उनको सुख-दुख ... आदि का अनुभव ही नहीं है फिर भी उनमें सारा ज्ञान है परन्तु ब्रह्मा बाबा आदि से अन्त तक सारे चक्र में आते हैं, इसलिए वे अनुभवों के सागर है। दोनों मिलकर हमको सम्पूर्ण और सम्पन्न बनाते हैं। हमको दोनों के समान बनना है अर्थात् ब्रह्मा बाबा के समान पुरुषार्थ करके शिवबाबा के सामन स्थिति को पाना है। इसलिए बाप समान सम्पूर्ण और सम्पन्न बनने के लिए दोंनों के गुणों और कर्तव्यों का अच्छी रीति ज्ञान अति आवश्यक है। शिवबाबा ने समय प्रतिसमय ब्रह्मा बाबा के गुणों-विशेषताओं का वर्णन किया है और ब्रह्मा बाबा तो सदा शिवबाबा के गुणों का गायन करते हैं। हमारी बुद्धि में दोनों के गुणों और कर्तव्यों का ज्ञान स्पष्ट रहना चाहिए तब हम बाप समान बनने का पुरुषार्थ सहज कर सकेंगे।

Q. सम्पूर्णता सन्तुष्टता का और सन्तुष्टता प्रसन्नता का आधार है। तो हमारी सम्पूर्णता और परमात्मा की सम्पूर्णता में क्या अन्तर है और क्या सामन्जस्य है ?

परमात्मा से क्या-क्या प्राप्तियां हुई हैं, उनका स्पष्ट ज्ञान होगा और जीवन में धारणा होगी, तब आत्मा अपने में भरपूरता अर्थात् सम्पूर्णता का अनुभव अवश्य करेगी और जहाँ भरपूरता है, वहाँ सम्पन्नता है ही है। सम्पन्नता ही सन्तुष्टता का आधार है और जब जीवन में सन्तुष्टता होगी तो प्रसन्नता अवश्य होगी क्योंकि सन्तुष्टता प्रसन्नता की जननी है। परमात्मा निराकार है और सदा सम्पूर्ण और सम्पन्न सागर है, इसलिए उनके लिए सन्तुष्टता और प्रसन्नता है या नही है, इसका प्रश्न नहीं उठता। सन्तुष्टता-प्रसन्नता का प्रश्न देहधारियों के लिए उठता है और परमात्मा सर्व आत्माओं को सम्पूर्ण बनाने आता है, इसलिए परमात्मा को पाकर सभी आत्मायें प्रसन्नता का अनुभव करती हैं।

''सन्तुष्टता का आधार है - बाप द्वारा प्राप्त हुई सर्व प्राप्तियों में भरपूरता अर्थात् सम्पूर्णता। ... सन्तुष्टता की निशानी है प्रसन्नता अर्थात् वह स्वयं भी प्रसन्नचित्त होगी और दूसरे भी प्रसन्न होंगे।''

अ.बापदादा 17.3.91

Q. एक साधारण आत्मा, राजा और परमपिता परमात्मा की सम्पूर्णता में क्या समानता है, जिसके कारण साधारण आत्मा और राजा में अहंकार और हीनता का बीज अंकुरित नहीं हो सकता ?

अहंकार और हीनता दोनों नहीं होंगे तब ही आत्मा सच्ची प्रसन्नता का अनुभव कर सकेगी। वह कब और कैसे होगा। आत्मा और परमात्मा एक ही वंश के हैं, इसलिए आत्मिक स्वरूप

परमपिता परमात्मा के समान ही ज्ञान-गुण-शक्तियों से सम्पन्न और सम्पूर्ण है, इसलिए जब आत्मा अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होती है तो अपने को परमात्मा के समान ही ज्ञान-गुण-शक्तियों से सम्पन्न और सम्पूर्ण अनुभव करती है। इसलिए ही बाबा कहते - मैं तुमको अपने समान बनाता हूँ। आत्मिक स्वरूप में राजा-प्रजा, साधारण आत्मा का कोई प्रश्न नहीं है। ये प्रश्न तो तब उठता है, जब यहाँ पार्ट बजाते हैं। इसलिए पार्ट बजाते भी जो आत्मा अपने मूल स्वरूप की स्मृति में होगी, तो उसके सामने अहंकार-हीनता दोनों हो नहीं सकते क्योंकि आत्मिक स्वरूप में हर आत्मा अपने को परमात्मा की सन्तान सम्पन्न और सम्पूर्ण अनुभव करती है।

Q. संगमयुग पर सम्पूर्णता की प्राप्ति और भविष्य में लक्ष्मी-नारायण की प्राप्ति में क्या सामन्जस्य है ?

आत्मा के लिए सम्पूर्णता स्वत: में एक प्राप्ति है। अपनी सम्पूर्ण अर्थात आत्मिक स्वरूप में स्थित आत्मा को देव-दुर्लभ सुख अभी ही प्राप्त होता है। सम्पूर्णता को कितनी भी आत्मायें एक साथ प्राप्त कर सकते हैं और एक साथ ही उसका सुख अनुभव कर सकते हैं परन्तु लक्ष्मी-नारायण तो भविष्य में बनेंगे, जहाँ भौतिक सुख प्रचुर मात्रा में होगा परन्तु वहाँ सुख-साधन सबको अपने संगमयुग के पुरुषार्थ अनुसार नम्बरवार प्राप्त होंगे और उसको सभी एक साथ प्राप्त नहीं कर सकते हैं अर्थात् सभी लक्ष्मी-नारायण नहीं बन सकते हैं। सतयुग में वर्तमान का देव-दुर्लभ अतीन्द्रिय सुख प्राप्त नहीं होगा इसीलिए बाबा कहते कार्य करते बीच-बीच में समय निकाल कर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर उसे अनुभव करो और करते-करते उसको स्थाई बनाओ।

देह और देह की दुनिया को भूलकर अपने सम्पूर्ण स्वरूप में स्थित होना जीवन की सबसे महान प्राप्ति है, जीवन का सर्वश्रेष्ठ पुरुषार्थ है, जो हर आत्मा का अभीष्ट लक्ष्य है। उसके लिए हर आत्मा जाने-अन्जाने पुरुषार्थ भी अवश्य करती है और परमात्मा हर आत्मा को उसका अनुभव भी अवश्य कराते हैं। इसकी प्राप्ति के लिए न कोई प्रतिस्पर्धा है और न कोई प्रतिद्वन्दी है। प्रतिस्पर्धा उसके लिए होती जहाँ प्राप्ति सीमित हो और पाने वाले अनेक हों। इस स्थिति को तो हर आत्मा प्राप्त कर सकता है और करेगी भी अवश्य परन्तु कोई अल्प काल के लिए और कोई दीर्घ काल के लिए उसका सुख अनुभव करते हैं। सभी आत्मायें सम्पूर्ण बनकर ही परमधाम में जायेंगे। संगमयुग की सम्पूर्णता का सुख सभी आत्मायें अनुभव करती हैं परन्तु लक्ष्मी-नारायण के जीवन की प्राप्तियों अर्थात साधन-सम्पत्ति का सुख सर्व आत्मायें अनुभव न ही करती हैं और न ही कर सकती हैं परन्तु सतयुग में सर्व आत्मायें सम्पूर्ण सुख का अवश्य

अनुभव करेंगी। संगमयुग की सम्पूर्णता के आधार पर भविष्य सतयुग के सम्पूर्ण सुख के अधिकारी बनते हैं।

‘‘मालूम है आपका संगम का सम्पूर्ण रूप कौनसा है ? शक्तियों और पाण्डवों के रूप में यह संगम का जो सम्पूर्ण स्वरूप है, वह अब आप सभी को अपने में प्रत्यक्ष महसूस होगा। आपको मालूम पड़ेगा हमारे कौन से भक्त हैं और कौन सी प्रजा है। जो प्रजा होगी, वह तो नज़दीक आयेंगे और जो भक्त होंगे, वे आखरीन पिछाड़ी में चरणों पर झुकेंगे।’’

अ.बापदादा 16.7.69

ब्रह्मा और सृष्टि-रचना

परमपिता परमात्मा को सृष्टि का रचता कहा जाता है और ब्रह्मा को भी सृष्टि का रचता कहा जाता है। अब प्रश्न उठता है कि सृष्टि तो अनादि-अविनाशी है ओर एक ही है तो उसकी रचना का प्रश्न कैसे उठता है और एक सृष्टि के दो रचता कैसे हैं।

Q. नई सृष्टि की रचना कैसे होती है अर्थात् सृष्टि रचना की अति रहस्यमय पहेली का हल क्या है ?

ये सृष्टि पुरुष और प्रकृति का एक खेल है, जो अनादि-अविनाशी चलता रहता है इसलिए इसकी रचना का कोई प्रश्न ही नहीं उठता है परन्तु इस खेल का एक निश्चित समय है, जो 5000 वर्ष है, जिसके बाद यह पुनरावृत्त होता है। परमात्मा आकर इस खेल को पुनरावृत्त करते हैं, इसलिए उनको इसका रचता कहा जाता है। आत्मा जब पावन होती है तो सृष्टि भी पावन अवश्य होगी। परमात्मा आकर यथार्थ ज्ञान और योग से आत्माओं को पावन बनाते हैं, आत्माओं के पावन होने से सृष्टि स्वत: पावन हो जाती है। परमात्मा नई सृष्टि की रचना नहीं करते बल्कि आत्माओं को पतित से पावन बनाकर पुरानी सृष्टि से नई सृष्टि की कलम लगाते हैं। ये सृष्टि रचना की पहेली अति गुह्य है, जिसका हल आज तक कोई विद्वान-पण्डित, वैज्ञानिक, दार्शनिक, आदि नहीं कर पाये। सब सृष्टि की रचना के विषय में अनुमान ही लगाते आये हैं और जो भी बातें कही गई हैं वे सब अनुमानित हैं और विवेकयुक्त-तर्कसंगत नहीं हैं, उनमें अनेक प्रकार के विराधाभास हैं। इसलिए ये पहेली आज तक रहस्य बनी हुई थी। इस पहेली का यथार्थ हल परमात्मा ने अभी बताया है। अभी परमात्मा ने जो विश्व-नाटक की अनादि-अविनाश्यता का ज्ञान दिया है और इसकी कलम का जो राज़ बताया है, इससे इस पहेली का हल हो गया है। कलम का ज्ञान विश्व-नाटक की अनादि-अविनाश्यता को भी सिद्ध

करता है और इसके नवीनीकरण अर्थात् नई रचना के रहस्य को भी स्पष्ट करता है।

परमात्मा निराकार हैं, इसलिए वे इस कार्य को दादा लेखराज के तन द्वारा करते हैं और उनका नाम ब्रह्मा रखते हैं। सृष्टि-रचना के इस कार्य में ज्ञान देने का काम परमात्मा का है और उस ज्ञान को धारण करके, सबके सामने स्पष्ट करना दादा जी का काम है, इसलिए सृष्टि का रचता परमात्मा को भी कहा जाता हे और ब्रह्मा को भी कहा जाता है। वास्तव में ब्रह्मा-तन तो परमात्मा और दादा लेखराज की आत्मा दोनों के कर्तव्यों का माध्यम है, दोनों के कर्तव्यों का प्रतीक है।

Q. ब्रह्मा कौन है, ब्रह्मा का जन्म कैसे होता है और ब्रह्मा और परमात्मा में क्या सम्बन्ध है ?

वास्तव में ब्रह्मा उस तन का नाम है या दादा लेखराज की आत्मा के तन का नाम ब्रह्मा तब पड़ता है, जब उसमें परमपिता परमात्मा प्रवेश करते हैं अर्थात् जब उस तन में दोनों आत्माओं की प्रवेशता होती है अर्थात् जिस तन से दोनों पार्ट बजाते हैं। दादा लेखराज को ब्रह्मा नहीं कहा जा सकता है, ब्रह्मा तो उस तन का नाम है, जिसमें दोनों आत्मायें विद्यमान हैं या जिस तन से दोनों आत्मायें कार्य करती हैं। ब्रह्मा अर्थात् साकार और निराकार अर्थात् शिवबाबा अर्थात् परमात्मा। जब निराकार दादा लेखराज के तन में प्रवेश करते हैं, तब ब्रह्मा का जन्म होता है अर्थात् तब से ही वह तन ब्रहमा कहलाता है

''निराकार परमपिता परमात्मा साकार बाप प्रजापिता ब्रह्मा के द्वारा मनुष्य सृष्टि रचते हैं। ... ब्रह्मा को कैसे रचते हैं, वह भी परमात्मा बताते हैं। इन साधारण तन में, इनकी वानप्रस्थ अवस्था में इनमें प्रवेश करता हूँ। ... जरूर जो पहले सतयुग में आये होंगे, उनके ही अन्तिम जन्म के तन में बाप आये होंगे।'' सा.बाबा 10.6.08 रिवा.

Q. ब्रह्मा और भागीरथ का क्या सम्बन्ध है ? भागीरथ ने गंगा लाई, इसका क्या रहस्य है ?

ब्रह्मा-तन ही भागीरथ है अर्थात् ब्रह्मा के रथ के दो भागीदार हैं अर्थात् रथ एक है और रथी दो हैं। ब्रह्मा-तन में जब ज्ञान-सागर परमात्मा ने प्रवेश किया, तब से उस तन से ज्ञान-गंगा प्रवाहित हुई।

Q. ब्रह्मा और सरस्वती का क्या सम्बन्ध है ?

ब्रह्मा-तन में शिवबाबा ने प्रवेश किया और सरस्वती को मुख वंशावली बनाया अर्थात् जन्म दिया। ब्रह्मा और सरस्वती का बाप और बेटी का सम्बन्ध है। एक ज्ञान का देवता है और दूसरी ज्ञान की देवी है।

Q. ब्रह्मा का अन्य धर्मों से क्या सम्बन्ध है ?

ब्रह्मा सभी धर्मों का आदि पिता अर्थात् पितामह है। ब्रह्मा ही मनुष्य-सृष्टि का बीजरूप है। ब्रह्मा के द्वारा आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना होती है, उसके बाद उससे ही अन्य धर्म वंशों की कलम लगती है, इसलिए ब्रह्मा ही सर्व धर्मों का आदि पिता है। सभी धर्म-पितायें ब्रह्मा के द्वारा ही ईश्वरीय सन्देश लेते हैं, जो संगमयुग पर भी डायरेक्ट या इन्डायरेक्ट अपने धर्म वंश की आत्माओं को देते हैं और उसी आत्मिक शक्ति के आधार पर द्वापर के बाद आकर अपना धर्म स्थापन करते हैं। बाबा ने भी कहा है कि सभी धर्म-पितायें भी बाप से सन्देश लेने आयेंगे, जो वे अपने धर्मवंश की आत्माओं को देंगे परन्तु वे ब्रह्माकुमार नहीं बनेंगे।

Q. ब्रह्मा को भी अनेक भुजायें दिखाते हैं और देवियों को भी अनेक भुजायें दिखाते हैं तो ब्रह्मा और देवियों का क्या सम्बन्ध है और क्या रहस्य ?

जो आत्मायें ब्रह्मा द्वारा परमात्मा के बच्चे बनते अर्थात् उनकी भुजायें अर्थात् सहयोगी बनते हैं और फिर वे परमात्मा के कर्तव्य में सहयोगी बनकर अन्य आत्माओं को भी सहयोगी बनाते हैं, इसलिए वे उनकी भुजायें अर्थात् सहयोगी हो जाते हैं। उनमें सेवा के निमित्त अर्थात् सेन्टर-इन्चार्ज बहनें ही बनती हैं और उनके भी सहयोगी बनते हैं इसलिए देवियों को भी अनेक भुजायें दिखाई हैं परन्तु देवियों की भुजायें ब्रह्मा जितनी नहीं होती हैं और न ही दिखाते हैं।

''ब्रह्मा को अनेक भुजायें दिखाई हैं। ... ब्रह्मा की सन्तान वृद्धि को पाते रहते हैं, तो कितनी भुजायें हो जायेंगी ? 6-7 सौ करोड़ मनुष्य हैं, सब ब्रह्मा की भुजायें हैं। ब्रह्मा ने सृष्टि रची है तो बरोबर भुजायें हैं ना।'' सा.बाबा 7.6.08 रिवा.

Q. ब्रह्मा और दादा लेखराज में क्या सम्बन्ध है ?

दादा लेखराज ब्रह्मा-तन में भागीदार हैं अर्थात् दादा लेखराज का तन ही ब्रह्मा-तन बनता है, जब उसमें परमात्मा की प्रवेशता होती है। जब तक परमात्मा की प्रवेशता नहीं है, तब तक वह तन दादा की आत्मा का तन कहा जायेगा, ब्रह्मा-तन नहीं।

Q. ब्रह्मा और नई दुनिया की रचना का क्या सम्बन्ध है ?

ब्रह्मा-तन से परमात्मा नई दुनिया की स्थापना का ज्ञान देते हैं और दादा लेखराज की आत्मा उस ज्ञान को धारण कर, उसका स्वरूप बनते हैं और उसको अन्य आत्माओं के सामने प्रत्यक्ष करते हैं अर्थात् उस तन के द्वारा पुरुषार्थ करके देवी-देवता धर्म की स्थापना और फिर पालना के निमित्त बनते हैं। इसलिए बाबा ने कहा है कि जो जिस धर्म की स्थापना करता है, वही उसकी पालना भी करता है।

Q. शिवबाबा और ब्रह्मा बाबा के गुण-कर्तव्यों, विशेषताओं का अनुभव इस एक ही तन द्वारा

होता है तो दोनों के अन्तर को कैसे पहचाना जा सकता है ?

शिवबाबा ज्ञान का सागर है, वह इस सृष्टि-चक्र का ज्ञान देता है, इसके विभिन्न विधि-विधानों का ज्ञान देता है, कर्म की गुह्य गति का ज्ञान देता है। ब्रह्मा बाबा सारे कल्प में पार्ट बजाते हैं, इसलिए उनको सारे कल्प का और दुख-सुख, मान-अपमान, लाभ-हानि, निन्दा-स्तुति सबका अनुभव है, जो उनकी आत्मा में संस्कार रूप में संचित है, जिसको वे सुनाते रहते हैं। इस प्रकार हम देखें तो शिवबाबा ज्ञान का सागर है तो दादा की आत्मा अनुभवों का सागर है और दोनों सागरों का अनुभव हम ब्रह्मा तन से सुनकर या देखकर करते हैं। परमात्मा ने जो लक्ष्य हमको दिया है, दादा की आत्मा उसके लिए अभीष्ट पुरुषार्थ करते हैं, इसलिए पुरुषार्थ की विभिन्न विधियां भी हमको बताते हैं। शिवबाबा तो सदा साक्षी होकर इस विश्व की हर घटना को देखते हैं परन्तु ब्रह्मा बाबा सारे कल्प के सुख-दुख के अनुभवी होने के कारण दुखी आत्माओं को देखकर उसके दुख को अनुभव करते हैं और उसके प्रति उनमें रहम पैदा होता है। दोनों के गुण-कर्तव्य-संस्कार इस एक ही तन से अनुभव होते हैं, इसलिए जहाँ ब्रह्मा शब्द आता है, वहाँ दोनों के ही गुण-धर्म-संस्कार सामने आते हैं परन्तु दो आत्मायें होने के कारण दोनों के गुण-धर्म-संस्कार, कर्तव्य अलग-अलग अवश्य होंगे और हैं, जिनकी अनुभूति अन्तर्मुखी आत्मा करती ही है। ब्रह्मा बाबा चिन्तन करके भी अनेक बातें सुनाते हैं और समय प्रति समय अनेक बातों में करेक्शन भी करते रहते हैं।

Q. नई दुनिया की स्थापना में परमात्मा और ब्रह्मा का क्या पार्ट है, स्थापना में दोनों का क्या अस्तित्व है ?

Q. नई दुनिया अर्थात् स्वर्ग को रचने वाला और देवी-देवता धर्म की स्थापना करने वाला एक ही है या दो हैं ? यदि एक है तो वह कौन है अर्थात् शिवबाबा या प्रजापिता ब्रह्मा बाबा और यदि दो हैं तो उनमें कौन क्या कार्य करता है और कैसे करता है ?

इस बात की सत्यता को निर्णय करते समय यह बात विचारणीय है कि बाबा ने कहा है जो जिस धर्म की स्थापना करता है, वह उसकी पालना भी करता है। इसलिए देवी-देवता धर्म की स्थापना का कार्य ब्रह्मा का कहा जायेगा और नई दुनिया की सथापना अर्थात् पावन बनने के लिए ज्ञान देने का कार्य परमात्मा का कहा जायेगा।

''दुनिया एक ही है तो जरूर उसका रचयिता भी एक होगा। दो नहीं हो सकते। कहा जाता है - गॉड इज क्रियेटर। परमात्मा पुरानी दुनिया को नया बनाते हैं। नई दुनिया अथवा भारत स्वर्ग था। ... जरूर नई दुनिया रचने वाले ने भारत को नया बनाया होगा।''

सा.बाबा 9.6.08 रिवा.

''जो स्थापना करते हैं, फिर पालना भी वे ही करेंगे। स्थापना के समय का नाम, रूप, देश, काल अलग है और पालना का नाम, रूप, देश, काल अलग है। ... यह तो एक बाप का ही काम है, जो इस सारी सृष्टि को हेल से हेविन बनाते हैं। ... जब सभी का अन्त होता है, तब मैं आता हूँ, सभी को ज्ञान-योग से पावन बनाकर पार ले जाता हूँ। मैं आकर इन बच्चों के द्वारा कार्य कराता हूँ। बाप सबको साथ ले जाते हैं।''

सा.बाबा 31.5.04 रिवा.

उपर्युक्त महावाक्यों से स्पष्ट होता है कि आदि-सनातन देवी-देवता धर्म और स्वर्ग की स्थापना का काम ब्रह्मा बाबा का है, जैसे अन्य धर्मपिताओं का होता है और आत्माओं को ज्ञान देकर, योग सिखलाकर पावन बनाकर घर वापस ले जाने का काम परमात्मा का है, इसलिए उन्हें पतित-पावन, लिब्रेटर-गाइड भी कहते हैं। परन्तु विशेष बात ये है कि स्थापना का सारा काम दोनों एक-दो के साथ मिलकर और सहयोग से करते हैं, इसलिए दोनों के पार्ट में भेद करना और पहचानना अति कठिन कार्य है परन्तु जब दोनों अलग-अलग आत्मायें हैं तो दोनों का पार्ट और कार्य भी कुछ तो अलग-अलग होगा ही, जिसके आधार पर एक अभोक्ता रहता है और दूसरा कर्ता और भोगता दोनों ही है अर्थात् दोनों ही पार्ट बजाता है।

''मैं आता ही तब हूँ जब मुझे ब्रह्मा द्वारा देवी-देवता धर्म की स्थापना करनी होती है। ... फिर जो सथापना करेंगे, वे ही पालना करेंगे। ... मैं स्वर्ग का रचता हूँ। तुम बच्चों का भी यही धन्धा है।''

सा.बाबा 24.5.08 रिवा.

''देवतायें तो होते ही हैं सतयुग में, त्रेता में भी देवतायें नहीं होते हैं। त्रेता में है क्षत्रिय वर्ण। शास्त्रों में भी लिखा हुआ है ब्रह्मा के मुख से ब्राह्मण निकले और ब्राह्मणों को पढ़ाकर देवता और क्षत्रिय धर्म की स्थापना करते हैं।''

सा.बाबा 30.4.08 रिवा.

Q. शिवबाबा और ब्रह्मा बाबा के एक ही शरीर से पार्ट बजाते हुए भी दोनों के पार्ट में क्या अन्तर है और दोनों के पार्ट की क्या विशेषता है ?

ये तो सहज ही समझ की बात है कि जब शिवबाबा की और ब्रह्मा बाबा की आत्माओं का अलग-अलग अस्तित्व है, तो दोनों का पार्ट भी अलग-अलग ही होगा, भले दोनों अपना-अपना पार्ट एक ही शरीर से बजाते हैं परन्तु पार्ट तो अलग-अलग ही कहेंगे। पतित से पावन बनने का ज्ञान देना और उसके लिए श्रीमत देने का पार्ट शिवबाबा का है और उस ज्ञान को धारण कर, शिवबाबा की श्रीमत पर चलकर नई दुनिया के योग्य बनना और नई दुनिया की स्थूल-सूक्ष्म स्थापना करने का पार्ट ब्रह्मा बाबा का है। धर्म स्थापना के लिए धारणाओं का ज्ञान देना

शिवबाबा का काम है, उन धारणाओं के धारणा स्वरूप बनकर धर्म की स्थापना करना ब्रह्मा बाबा का काम है। इसके लिए शिवबाबा ने अनेक बार कहा है कि जो स्थापना करता है, वही पालना भी करता है। इससे हम स्वयं ही समझ सकते हैं कि देवी-देवता धर्म की स्थापना कौन करता है। नई दुनिया और देवी-देवता धर्म की स्थापना के लिए यथार्थ ज्ञान और उसकी धारणाओं का ज्ञान दोनों आवश्यक हैं। शिवबाबा और ब्रह्मा बाबा दोनों यह कार्य कैसे करते हैं अर्थात् उसकी स्थापना में दोनों क्या-क्या पार्ट बजाते हैं, यह विचारणीय है। धर्म-स्थापना के लिए धर्म-स्थापकों के द्वारा दिये गये ज्ञान को देखें तो उसमें आत्मा, परमात्मा, सृष्टि-चक्र का कोई ज्ञान नहीं है, उसमें केवल कुछ दैवी गुणों का का ही ज्ञान है, जिसके आधार पर उस धर्म-वंश की स्थापना होती है।

ब्रह्मा-तन से निराकार बाप नई दुनिया रचने और आत्माओं को पावन बनाने के लिए ज्ञान देने का कर्तव्य करते हैं और दादा की आत्मा भी इसी तन से देवी-देवता धर्म की स्थापना के लिए उस ज्ञान को धारण कर अन्य आत्माओं के सामने आदर्श रूप दिखाते हैं। दोनों के कर्तव्य एक ही तन से होते हैं। दैवी कर्तव्य अर्थात् दैवी गुणों की धारणा करना और सिखाना ब्रह्मा अर्थात् दादा का काम है। ज्ञान देना और तत्वों सहित सर्वात्माओं को पावन बनाना शिवबाबा अर्थात् ब्रह्मा का काम है। दोनों ही अपना-अपना कर्तव्य ब्रह्मा-तन से ही करते हैं। शिवबाबा दादा की आत्मा को ज्ञान देकर ब्रह्मा द्वारा आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना और उसकी पालना का निमित्त बनाते हैं। इसलिए शिवबाबा कहते हैं आदि सनातन देवी-देवता धर्म मैं रचता हूँ। शिवबाबा के गुण अर्थात् ईश्वरीय गुणों और दैवी गुणों में महान अन्तर है। शिवबाबा ईश्वरीय गुणों का सागर है, ब्रह्मा बाबा ईश्वरीय गुणों से दैवी गुणों का सागर बनता है। ''सब प्रश्नों का जबाब ब्रह्मा बाप की जीवन है। ... आप साइलेन्स वालों के लिए ब्रह्मा की जीवन ही एक्यूरेट कम्प्युटर है। इसलिए क्या-कैसे के बजाये जीवन के कम्प्यूटर से देखो।... साकार रचना के निमित्त साकार श्रेष्ठ जीवन का सेम्पुल ब्रह्मा ही बनता है।... जगतपिता का टाइटिल ब्रह्मा का ही है। जितना ही जगत का प्यारा, उतना ही जगत से न्यारा बन अभी अव्यक्त रूप में फॉलो अव्यक्त स्थिति भव का पाठ पढ़ा रहे हैं। किसी भी आत्मा का ऐसा और इतना न्यारापन नहीं होता।'' अ.बापदादा 19.12.85

''ब्रह्मा द्वारा स्थापना करते हैं परन्तु ब्रह्मा तो करते नहीं हैं। वह तो पतित से पावन बनते हैं।... ड्रामा प्लान अनुसार शिवबाबा में ज्ञान है। ऐसे नहीं कहेंगे कि इनमें ज्ञान कहाँ से आया ? नहीं, वह है ही नॉलेजफुल। वही तुमको पतित से पावन बनाते हैं।''

सा.बाबा 15.6.04 रिवा.

Q. क्या ब्रह्मा बाबा की आत्मा किसी जन्म बच्ची के रूप में जन्म लेता है अर्थात् स्त्री बनता है?

विवेक कहता है - नहीं। ज्ञान सागर शिवबाबा ने भी ब्रह्मा बाबा की आत्मा के आदि-मध्य-अन्त के तीनों जन्मों का जो राज़ बताया है, उसमें ब्रह्मा बाबा की आत्मा ने पुरुष रूप में ही जन्म लिया है अर्थात् आदि में श्रीकृष्ण या नारायण, मध्य में राजा विग्रमादित्य और अन्त में दादा लेखराज या ब्रह्मा के रूप में।

Q. साकार ब्रह्मा और अव्यक्त ब्रह्मा या सूक्ष्म वतन वासी ब्रह्मा में क्या अन्तर है? क्या साकार ब्रह्मा बाबा जो फरिश्ता बनकर सूक्ष्म वतन से जो कार्य कर रहे हैं, उनसे उनकी आत्मा प्रभावित होती है अर्थात् सूक्ष्म शरीर से कार्य करने का भी फल होता है?

विवेक कहता है - पहले शिवबाबा ने ब्रह्मा का जो सूक्ष्मवतन में साक्षात्कार कराया, वह साक्षात्कार मात्र था। वह साकार ब्रह्मा बाबा को उनके पुरुषार्थ के लिए अर्थात् उनको ऐसा बनना है, वह लक्ष्य शिवबाबा ने दिखाया। उस समय उस स्वरूप द्वारा जो सन्देश देने-लेने आदि का जो कारोबार होता था, वह शिवबाबा ही करते थे। अपने अव्यक्त स्वरूप के साक्षात्कार के लक्ष्य अनुसार पुरुथार्थ करके अभी साकार ब्रह्मा बाबा ने फरिश्ता रूप धारण किया है और सूक्ष्म वतन से शिवबाबा के साथ ईश्वरीय सेवा का कार्य कर रहे हैं। फरिश्ता रूप से ब्रह्मा बाबा जो कार्य कर रहे हैं, उसका फल भी उनको अवश्य मिलता है। इसीलिए अनेक सन्देशियाँ जो सन्देश सुनाती हैं, उससे पता चलता है कि अव्यक्त ब्रह्मा बाबा पहले की अपेक्षा अभी अधिक साक्षी हो गये हैं, उनमें लाइट-माइट अधिक अनुभव होती है अर्थात् वे शिवबाबा के समान बन गये हैं या बनते जा रहे हैं।

Q. अव्यक्त ब्रह्मा और धर्मराज में क्या सम्बन्ध है अर्थात् दोनों अलग-अलग हैं या एक ही हैं?

वास्तव में धर्मराज का अलग कोई अस्तित्व नहीं है। आत्मायें जो विकर्म, पाप-कर्म आदि करती हैं, उनके फलस्वरूप अन्त समय आत्माओं को अनेक प्रकार के साक्षात्कार होते हैं या कहें वे पाप-कर्मों का साक्षात्कार आदि होता है, जिससे हर आत्मा को अपने पाप-कर्मों का पश्चाताप करना होता है। शिवबाबा जैसे साक्षी है, उस अनुसार ब्रह्मा बाबा भी अन्त समय साक्षी हो जाता है अर्थात् बाप रूप का पार्ट पूरा हो जाता है, तब उनका ही धर्मराज के रूप में साक्षात्कार होता है। बाबा ने कहा भी है कि अन्त समय ब्राह्मणों के लिए ही ट्रिबुनल बैठेगी, जिसमें ये दादियां आदि ही होंगी और हर एक को अपने कर्मों का साक्षात्कार होगा और

पश्चाताप होगा। धर्मराज का साक्षात्कार भक्ति मार्ग में भी होता है और ज्ञान मार्ग में भी बाबा ने वर्णन किया है।

''मेरा सब पर प्यार है। तुम बच्चों को पढ़ाकर जीवनमुक्ति देता हूँ, और सबको मुक्तिधाम में ले जाते हैं। ... तुम जानते हो - पाप करेंगे तो दण्ड भोगना पड़ेगा परन्तु बाप दण्ड कभी नहीं देता है। वह करन-करावनहार है। धर्मराज के द्वारा सज़ा दिलाते हैं।''

सा.बाबा 12.6.08 रिवा.

Q. साकार ब्रह्मा बाबा की याद, अव्यक्त रूपधारी ब्रह्मा की याद और निराकार शिवबाबा की याद में क्या अन्तर है और उसका क्या फल है ?

Q. साकार ब्रह्मा बाबा और अव्यक्त रूपधारी ब्रह्मा बाबा के कर्तव्यों में क्या अन्तर है ?

साकार रूप में ब्रह्मा बाबा की आत्मा को तन के साथ दुख-दर्द की भी अनुभूति होती थी, अनेक प्रकार के हिसाब-किताब करने पड़ते थे परन्तु जब ब्रह्मा बाबा अव्यक्त हो गये तो इन सब बातों से मुक्त हो गये। जब ब्रह्मा बाबा अव्यक्त हो गये तो देह के बन्धन से मुक्त होने के कारण स्वतन्त्रता पूर्वक सेवा कर सकते हैं, इसलिए सारे विश्व की सेवा कर सकते हैं।

''दूसरा प्रश्न - ... साकार रूप को अव्यक्त क्यों बनाया ? इसके भी कई गुह्य रहस्य हैं। इसकी गहराई में जाना। सागर की लहरों में नहाने नहीं लग जाना लेकिन सागर के तले में जाना, फिर जो रतन मिलें, वे लेकर आना। यह सोचना कि इनका गुह्य रहस्य ड्रामा में नूँधा हुआ है। ऊपर कोई गुह्य रहस्य है। बिना रहस्य के तो कोई भी चलन हो ही नहीं सकती।''

अ.बापदादा 26.6.69

''शिवबाबा की आत्मा भी इसमें है। इसमें दोनों हैं। वह निराकार बाप, यह साकार फादर। यह फादर भी है तो मदर भी है। इनके द्वारा तुमको एडॉप्ट करते हैं।''

सा.बाबा 13.6.08 रिवा.

''कोई भी पतित आत्मा धर्म स्थापन नहीं कर सकती। जो भी धर्म स्थापक होते हैं, वे पहले-पहले पवित्र होते हैं, फिर अपवित्र शरीर में प्रवेश कर धर्म स्थापन करते हैं। ... यह ब्रह्मा का भी पतित शरीर है, उसमें ज्ञान सागर बाप आये हैं।''

सा.बाबा 13.6.08 रिवा.

Q. संगम की आयु, ब्रह्मा की आयु और दादा लेखराज की आयु में कितना अन्तर है अर्थात् तीनों की आयु कितनी गिनी जायेगी ?

दादा की आयु 60 साल क्योंकि 60 साल के बाद शिवबाबा की प्रवेशता से ब्रह्मा का जन्म हो गया। ब्रह्मा की आयु 100 साल के लगभग क्योंकि जब वह आत्मा परमधाम जायेगी और श्रीकृष्ण के रूप में जन्म ले लेगी तो ब्रह्मा का पार्ट पूरा हो जायेगा परन्तु संगम का समय आगे भी 25-30 साल तक नये कल्प में चलता रहेगा क्योंकि उसमें नई दुनिया के निर्माण का कार्य होगा। इस प्रकार हम देखें तो संगमयुग 125 साल के लगभग होगा। इस प्रकार हम विचार करें तो दादा की आयु 60 साल, ब्रह्मा की आयु 100 साल और संगमयुग की आयु 125 साल के लगभग होगी।

Q. मन्सा सेवा एवं मन्सा भोगना का स्वरूप क्या है ?

मन आत्मा की मुख्य शक्ति है, जिसका मानव जीवन के उत्थान-पतन में महत्वपूर्ण स्थान है। किसी भी कार्य को करने बीज मन्सा में ही अंकुरित होता है अर्थात् मन्सा ही मनुष्य के सारे कर्मों का बीज है। ये ब्राह्मण जीवन है ही स्व-सेवा और विश्व-सेवा के लिए। जैसे स्थूल कर्म, बोल से हम सेवा करते हैं, वैसे ही मन्सा द्वारा भी सेवा कर सकते हैं। मन्सा का प्रभाव वाचा और कर्म से कई गुणा अधिक प्रभावशाली है। मन्सा द्वारा दुनिया के किसी कोने में बैठकर हम दुनिया के किसी कोने में भी बैठी आत्मा की सेवा कर सकते हैं। किसी व्यक्ति विशेष की सेवा के अतिरिक्त हम लाइट हाउस माइट हाउस बनकर समग्र विश्व की सेवा कर सकते हैं। इस सबके लिए मन्सा बहुत पवित्र और शक्तिशाली चाहिए। मन्सा को पवित्र और शक्तिशाली बनाने के लिए एकमात्र साधन परमपिता परमात्मा से प्राप्त सत्य ज्ञान और उनके साथ योग है क्योंकि वही ज्ञान का सागर, सर्वशक्तिवान है।

जैसे मन्सा सेवा वाचा और कर्मणा से अधिक प्रभावशाली और महत्वपूर्ण है, ऐसे ही मानसिक भोगना शारीरिक भोगना से बहुत अधिक दुखदायी है। आत्मा के विकर्मों में प्रवृत्त होते ही मानसिक भोगना का दण्ड आरम्भ हो जाता है। उदण्डता या अज्ञानता के वशीभूत भले ही कोई उसे उस समय अनुभव करे या न करे परन्तु समय आने पर अनुभव होता ही है। मन्सा भोगना का प्रभाव शरीर पर भी पड़ता है और शारीरिक भोगना का भी कारण बन जाता है। जैसे कर्म का बीज संकल्प है वैसे शारीरिक भोगना का बीज है मानसिक भोगना।

मन्सा से उत्पन्न हुए संकल्पों के साथ प्रवाहित होने वाले सूक्ष्मातिसूक्ष्म कणों अर्थात् परमाणुओं से जो प्रकम्पन उत्पन्न होते हैं, वे दुनिया के किसी भी कोने में बैठी आत्मा को प्रभावित करते हैं और कर सकते हैं, जिनका प्रभाव व्यक्ति की भावना पर आधारित होता है। इस सत्य को जानकर खान-पान, व्यवहार को करने वाला ही इस आध्यात्मिक पुरुषार्थ में सफल होता है, वह मन्सा सेवा कर अपना भाग्य बना सकता है और अपने इस संगमयुगी आध्यात्मिक जीवन में मानसिक भोगना से बच सकता है क्योंकि ये मानसिक भोगना अपने अभीष्ठ पुरुषार्थ में भी बाधक बन जाती है। इसीलिए ही ज्ञान सागर बाबा ने हम आत्माओं को खान-पान, रहन-सहन आदि की परहेज बताई है। मानसिक भोगना से तथा शारीरिक व्याधियों से निदान पाने के लिए भी हम अपनी मन्सा का उपयोग कर सकते हैं अर्थात् अपने योगबल से उनसे मुक्ति पा सकते हैं। योग का स्थूल पदार्थों पर कैसे प्रभाव पड़ता है, उसको जानना, उन

पर निश्चय करके यथार्थ प्रयत्न करने वाला अनेक प्रकार की मानसिक एवं शारीरिक भोगना से बच सकता है।

यज्ञ में भोग लगाना भी आत्मा की मन्सा का प्रभाव जड़ तत्वों पर भी पड़ता है, उसको सिद्ध करने और उसका लाभ उठाने की एक प्रक्रिया है, जो आत्मा की आध्यात्मिक उन्नति में बहुत महत्वपूर्ण है। अव्यक्त बापदादा ने आदरणीय दादी जी के लिए शारीरिक व्याधि से निदान पाने के लिए योग के वायब्रेशन्स से प्रभावित (Charged) जल दवाई के रूप में पीने की श्रीमत दी थी।

निश्चयबुद्धि विजयन्ति कहा गया है और किसी भी प्रकार की सफलता में मन्सा का बड़ा योगदान है। निश्चय से विष भी निष्क्रिय हो जाता है, इसके भक्ति मार्ग में भी अनेक उदाहरण है और दुनिया में भी ऐसी अनेक घटनायें हुई हैं। किसी व्यक्ति को सांप ने काट लिया परन्तु उसने जान नहीं पाया तो उस पर विष का प्रभाव नहीं हुआ और काफी समय बाद जब उसने उस सत्य को जाना कि उस समय उसको सांप ने काटा था तो उस समय ही उस पर विष का प्रभाव हो गया क्योंकि निश्चय के आधार पर मानव-शरीर में अनेक प्रक्रियायें होती हैं जो उसकी दैहिक प्रक्रिया को प्रभावित करती हैं।

अनेक साधू-सन्त महात्माओं के उदाहरण हैं, जिन्होंने अपनी मन्सा को ऐसा शक्तिशाली बनाया कि उनको महान दैहिक पीड़ा होते भी अनुभव नहीं हुई। बाबा ने भी कहा है कि तुम बीमारी का चिन्तन और वर्णन करते रहोगे तो उसकी पीड़ा अर्थात् भोगना और बढ़ जायेगी।

''अभी वाणी के साथ मन्सा सेवा की ज्यादा आवश्यकता है। ... मन्सा सेवा में कोई साधनों का आधार नहीं चाहिए। ... इसलिए अभी वाचा और मन्सा सेवा का बैलेन्स रखो। मन्सा सेवा से आप करने वालों को भी बहुत फायदा है। क्यों ? जिस आत्मा की मन्सा सेवा करेंगे अर्थात् संकल्प द्वारा शक्ति देंगे, सकाश देंगे, वह आत्मा आपको दुआयें देगी और आपके खाते में स्व का पुरुषार्थ तो है ही लेकिन दुआओं का खाता भी जमा हो जायेगा।''

अ.बापदादा 15.12.2001

Q. कैसी स्थिति हो जो ज्ञान की यह सब बातें रियलाइज कर सकें ?

ये संगमयुगी ब्राह्मण जीवन सारे कल्प में सर्वश्रेष्ठ जीवन है। इस जीवन का यथार्थ सुख हम तब ही अनुभव कर सकेंगे, जब हम आत्मिक स्वरूप में स्थित होंगे और इस संगमयुगी जीवन का महत्व हमारी बुद्धि में होगा। ज्ञान के विभिन्न सत्यों, जिनका ज्ञान ज्ञान सागर परमात्मा ने हमको दिया है, उनका अनुभव करने के लिए, आत्मिक स्थिति में स्थित होकर उनके विषय में

विचार-सागर मंथन कर उनकी सत्यता को अनुभव करना अति आवश्यक है। इसीलिए बाबा बार-बार मुरलियों में कहता है - बाबा जो ज्ञान देता है, जो राज़ समझाता है, उनके विषय में विचार सागर मंथन करो, उसकी सत्यता को अनुभव करो। जब विचार सागर मंथन करके ज्ञान की सत्यता को अनुभव करेंगे, जीवन में उसके महत्व को अनुभव करेंगे, उनके प्रभाव को अनुभव करेंगे तब ही जीवन में उनका सुख अनुभव होगा।

''कितनी वेल्यूबुल पढ़ाई है। बाप के पास ही एक्यूरेट नॉलेज है, जो बच्चों को देते हैं। ... सारी सृष्टि ऐसे चक्र में फिरती रहती है। यह अनादि-अविनाशी बना-बनाया ड्रामा है, इसमें नई एडीशन हो नहीं सकती। गायन भी है - बनी-बनाई बन रही अब कछु बननी नाहिं, चिन्ता ताकी कीजिये जो अनहोनी होये। जो कुछ होता है, वह ड्रामा में नूँध है। साक्षी होकर देखना पड़ता है। ... इसमें रोने-रूसने की कोई बात नहीं। अफसोस उनको होता है, जो ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त को रियलाइज नहीं करते। ... ऐसी-ऐसी बातों पर विचार कर पक्का कर लेना चाहिए।'' सा.बाबा 12.2.04 रिवा.

Q. ज्ञान की इन सब बातों को कौन धारण कर सकेंगे ? क्या धारणा हो, जो ज्ञान की सब बातों की धारणा कर सकें ?

जिनको पवित्रता की धारणा होगी, बाबा के बताये गये नियम-संयम पर चलते होंगे अर्थात् जो पूरे आत्माभिमानी होंगे, उनको ही ज्ञान की इन सब बातों की धारणा होगी। जिनको ज्ञान की बातों की अच्छी धारणा होगी, वे ही इनका सच्चा सुख अनुभव करेंगे।

बाबा कहता है - ये ज्ञान रतन हैं और ज्ञान का एक-एक रतन लाखों रुपयों का है। इस सत्य को सदा ध्यान में रखना चाहिए कि ये विश्व-नाटक चक्रवत् चलता है और इसकी हर घटना चक्रवत् चलती है। पवित्रता की धारणा होगी तो ज्ञान की धारणा होगी और ज्ञान की धारणा होगी तो आत्मिक स्थिति का अभ्यास सहज होगा और पवित्रता की धारणा पक्की होगी। जब ज्ञान की धारणा पक्की होगी तो स्थिति बाप समान साक्षी होगी और ये विश्व नाटक एक खेल के समान सुखदायी अनुभव होगा।

''यह सृष्टि-चक्र कैसे फिरता है, यह तुम्हारे सिवाए और कोई नहीं जानते। तुम्हारे में भी नम्बरवार हैं। ... ज्ञान की धारणा सबको एकरस हो नहीं सकती है। इसमें ज्ञान चाहिए, याद चाहिए, धारणा बड़ी अच्छी चाहिए।... पिछाड़ी में तुमको एकदम भाई-भाई होकर रहना है। नंगे आये हैं, नंगे जाना है।'' सा.बाबा 12.2.04 रिवा.

''विचार सागर मंथन कर औरों को सुनाते रहेंगे तब चिन्तन चलेगा।... यह पढ़ाई है।

आमदनी में खुशी होती है। जिसके पास जितने ज्ञान रतन होंगे, उतनी खुशी भी होगी।''

सा.बाबा 12.2.04 रिवा.

Q. अधिकार और कर्तव्य जीवन रूपी गाड़ी के दो चक्र हैं, दोनों के सन्तुलन वाले की जीवन रूपी गाड़ी सफलतापूर्वक अपनी मंजिल पर पहुँच सकती है परन्तु ये संतुलन स्थिर कैसे हो?

जब हमको अपने अधिकार और कर्तव्य का यथार्थ ज्ञान होगा तब ही हम उनमें सन्तुलन रख सकेंगे। ये सन्तुलन ही जीवन की सफलता राज़ है। बिना कर्तव्य के अधिकार आत्मा को उदण्ड बना देता है और बिना अधिकार के कर्तव्य आत्मा में दासता के संस्कार पैदा करता है। अधिकार और कर्तव्य दोनों के सन्तुलन वाले की ही जीवन रूपी गाड़ी ठीक चलती है और अपनी मंजिल पर सफलतापूर्वक पहुँच सकती है। ऐसे सन्तुलन वाला सदा अपने जीवन में सन्तुष्टता रहता है और जीवन में प्रसन्नता का अनुभव करता है। बाबा ने हमको अधिकार और कर्तव्य दोंनों का ज्ञान दिया है और दोनों में सन्तुलन रखकर कार्य करने के लिए कहा है अर्थात् अपने अधिकार की रक्षा करते हुए अपने कर्तव्य को पूर्ण निष्ठा से पालन करने के लिए श्रीमत दी है।

''व्यक्त भाव में आ जाते हैं, उसका कारण है जो अपने को मेहमान नहीं समझते हैं। वस्तुओं पर भी अपना अधिकार समझते हैं। इसलिए उनमें अटेचमेन्ट हो जाती है। अगर अपने को मेहमान समझो तो फिर यह सभी बातें आपही खत्म हो जायें।''

अ.बापदादा 17.7.69

Q. अहंकार और हीनता आत्मा के बड़े शत्रु हैं, जो जाने-अन्जाने आत्मा को पतन के गर्त में गिरा देते हैं परन्तु किस सत्य की स्मृति और धारणा हो तो जीवन में अहंकार और हीनता न आये?

अहंकार और हीनता आत्मा के बड़े शत्रु हैं, जो आत्मा को सच्चे सुख का अनुभव होने नहीं देते और दोनों ही आत्मा के पतन का कारण बन जाते हैं। यथार्थ आत्मिक स्वरूप में अहंकार और हीनता का कोई अस्तित्व नहीं है। यथार्थ आत्मिक ज्ञान, ड्रामा के यथार्थ ज्ञान की धारणा और परमात्मा की छत्रछाया में रहने वाले पर इन दोनों की छाया नहीं पड़ सकती। विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान को भूलने के कारण देहाभिमान वश किसी को अपने से ऊंचा-श्रेष्ठ देखकर हीनता आती है और किसी को अपने से नीच अर्थात् साधनहीन देखकर अहंकार आता है। ड्रामा के यथार्थ राज़ को जानने वाले के लिए इस विश्व में न कोई ऊंचा है और न ही नीचा। ड्रामा के पार्ट अनुसार जो एक समय पर ऊंचा है, वही कब नीचा भी अवश्य होता है। इस परिवर्तनशील

विश्व-नाटक में एक जैसा समय किसी का भी नहीं रहता है। सब आत्मायें एक परमात्मा की सन्तान भाई-भाई हैं और विश्व-नाटक के अनादि-अविनाशी पार्टधारी हैं। हर आत्मा अपना पार्ट बजा रही है।

Q. अहंकार-हीनता (Superiority and inferiority) दोनों आत्मा के बड़े शत्रु हैं, इनसे मुक्त होने का साधन क्या है? अहंकार-हीनता है क्या?

अपने को श्रेष्ठ और दूसरे को निकृष्ट मानना अहंकार है तथा अपने को निकृष्ट समझ लेना और दूसरों को श्रेष्ठ समझकर दुखी होना हीनता है। वास्तव में इस विश्व-नाटक में अहंकार-हीनता का कोई स्थान नहीं है। आत्मिक स्वरूप में स्थित आत्मा पर इन दोनों का प्रभाव नहीं हो सकता क्योंकि हर आत्मा परमपिता परमात्मा की प्रिय सन्तान है और इस विश्व-नाटक में अनादि-अविनाशी पार्टधारी है, जो हर आत्मा समयानुसार बजाती है, इसलिए इसमें अहंकार और हीनता का कोई प्रश्न ही नहीं उठता है। अहंकार और हीनता तो देहाभिमान जनित एक मानसिक विकार है, जो आत्मा से अनेक प्रकार के विकर्म कराने का कारण बनता है और विकर्म कराकर आत्मा को दुखी बना देता है। सत्यता तो ये है कि हर आत्मा का ड्रामा में सुख-दुख दोनों का समान पार्ट है।

Q. किस स्थिति में स्थित आत्मा अहंकार-हीनता दोनों से मुक्त होती है, जहाँ मान-शान, साधन-सम्पत्ति निन्दा-स्तुति का भेद मिट जाता है?

विश्व-नाटक की यथार्थता को जानकर देह से न्यारी स्थिति में स्थित आत्मा में अहंकार-हीनता का नाम-निशान नहीं होता, इसके लिए बाबा देह से न्यारे अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होने की ड्रिल कराते हैं। जब आत्मा विश्व-नाटक की यथार्थता को समझ लेता है और अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होता है, तो उसके जीवन के बड़े-छोटे, अमीर-गरीब, अपना-पराया आदि सब भेद मिट जाते हैं क्योंकि सभी आत्मायें सर्वशक्तिवान परमात्मा की प्रिय सन्तान, हमारे प्रिय भाई हैं और इस अनादि-अविनाशी विश्व-नाटक में अनादि-अविनाशी पार्टधारी हैं, तो इसमें अहंकार और हीनता का स्थान ही कहाँ है। अहंकार-हीनता तो अज्ञानता जनित एक भ्रम है, जिसके वशीभूत आत्मा अनेक विकर्म करके अपने दुख-अशानति के लिए आपही खड्डा खोदती है।

Q. ज्ञान सागर बाप ने हमको जो ज्ञान दिया है, उसकी यथार्थ धारणा क्या है?

बाप समान जब चाहें, जिस स्थिति में स्थित होना चाहें तब उस स्थिति में सहज स्थित हो जायें अर्थात् जब चाहें तब देह में रहते साकार में पार्ट बजाते भी देह से न्यारे आत्मिक स्वरूप में

स्थित हो जायें, जब चाहें तब अपने अव्यक्त स्वरूप में स्थित हो जायें, जब चाहें तब अपने बीजरूप स्वरूप में स्थित हो जायें। सदा अपने देह से न्यारे आत्मिक स्वरूप में स्थित रहें और दूसरों को भी उनके आत्मिक स्वरूप में ही देखें। यही बाप समान ज्ञान स्वरूप स्थिति है। जब हम अपने ऐसे आत्मिक स्वरूप में स्थित होंगे और ऐसा अभ्यास होगा तो हमारी स्थिति सदा आनन्दमय रहेगी और दूसरों को भी आनन्द का अनुभव करायेगी। जैसे साकार में ब्रह्मा बाबा के जीवन से होता था।

Q. सन्यासियों ने परमात्मा के लिए नेति-नेति शब्द क्यों कहा और जो ज्ञान मार्ग में भी सत्य है ?

ब्रह्मलोक या ब्रह्म महतत्व तो अनन्त है। सन्यासी योगियों ने जब ब्रह्म महतत्व को परमात्मा समझकर उस पर अपना ध्यान केन्द्रित किया और उनको जब ब्रह्म महतत्व का साक्षात्कार हुआ तो उनको उसका कोई अन्त नहीं दिखाई दिया, जो वास्तविकता है, इसलिए उन्होंने परमात्मा को नेति-नेति समझ लिया और उस प्रकाशमय तत्व में अपने बिन्दुरूप के अस्तित्व को न समझने के कारण कह दिया कि आत्मा परमात्मा में लीन हो जाती है। हमको भी बाबा ने कई बार कहा है कि अगर ज्ञान न हो और बिन्दु रूप का साक्षात्कार हो तो तुम कुछ भी समझ नहीं पाओगे। इसलिए बाबा ज्योतिस्वरूप का साक्षात्कार कराते हैं। हमको अभी बाबा ने ज्ञान दिया है, तब ही हम इस सत्य को समझते हैं। यज्ञ स्थापना के आदि काल में भी परमात्मा के ज्योतिस्वरूप का ही साक्षात्कार होता था, इसलिए चित्र भी ऐसे ही बनाये थे। बिन्दुरूप तो बाबा ने बाद में स्पष्ट किया है।

Q. आत्मिक स्मृति और आत्मिक स्वरूप की स्थिति में क्या अन्तर है ?

आत्मिक स्मृति में स्थिति के लिए पुरुषार्थ करना होता है परन्तु आत्मिक स्थिति अर्थात् आत्मिक स्वरूप में स्थित आत्मा को आत्मिक स्मृति स्वत: रहती है। आत्मिक स्वरूप में स्थित आत्मा में आत्मिक गुण अर्थात् ज्ञान, गुण, शक्तियां आपही इमर्ज रहती हैं, उनको इमर्ज करने की आवश्यकता नहीं होती जबकि आत्मिक स्मृति में ज्ञान-गुण-शक्तियों की स्मृति तो रहती है परन्तु ज्ञान-गुण-शक्तियां इमर्ज नहीं रहती हैं, इसलिए समय पर उनकी स्मृति करनी होती है, जिससे वे कभी काम करते हैं और कभी नहीं भी करते हैं। आत्मिक स्थिति इस पुरुषार्थी जीवन का लक्ष्य, जबकि आत्मिक स्मृति उस लक्ष्म को प्राप्त करने का एक कदम है। आत्मिक स्थिति में स्थित आत्मा से ज्ञान-गुण-शक्तियों के वायब्रेशन्स का प्रवाह होता है, उससे जो वातावरण निर्मित होता है, वह अन्य आत्माओं को भी प्रभावित करता है अर्थात् आत्मिक

स्वरूप में स्थित करके अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति कराता है परन्तु आत्मिक स्मृति से ज्ञान-गुण-शक्तियों का प्रवाह नहीं होता है परन्तु उनकी स्मृति का प्रवाह अवश्य होता है, जो अन्य आत्माओं को पुरुषार्थ अर्थात् स्मृति के लिए प्रेरित करता है।

स्मृति एक ध्यान है और आत्मिक स्वरूप समाधि की स्थिति है अर्थात् स्मृति मंजिल पर पहुँचने की एक सीढ़ी है, जब कि स्वरूप में स्थिति आत्मा की मंजिल है। स्मृति आत्मिक गुणों और शक्तियों को इमर्ज करने का एक साधन और साधना है परन्तु स्वरूप में स्थिति साध्य है अर्थात् साधना का फल है अर्थात् साधना की सफलता है।

आत्मिक स्वरूप में स्थित आत्मा परमानन्द की अनुभूति में होती है परन्तु आत्मिक स्वरूप की स्मृति में सदा ये परमानन्द की अनुभूति हो आवश्यक नहीं है अर्थात् कभी होती है और कभी नहीं भी होती है।

आत्मिक स्वरूप में स्थित आत्मा को परमात्मा की आकर्षण स्वत: होती है क्योंकि सृष्टि के नियमानुसार हर तत्व अपने मूल तत्व की ओर स्वत: आकर्षित होता है, जब वह स्वतन्त्र होता है। आत्मिक स्मृति में परमात्मा की स्मृति करने का भी पुरुषार्थ करना होता है।

Q. जो अव्यक्त स्थिति में स्थित होंगे, वे ही अव्यक्त मिलन का अनुभव कर सकेंगे ? तो वह अव्यक्त स्थिति क्या है, कैसी है, उसका अनुभव क्या है, उसका पुरुषार्थ क्या है, उसके लिए साधन और साधना क्या है ?

अव्यक्त स्थिति में स्थित आत्मा को देह में रहते देह से न्यारे अपने आत्मिक स्वरूप का स्पष्ट अनुभव होगा।

उसको देह और देह की दुनिया में रहते देह और देह की दुनिया का कोई आकर्षण नहीं होगा, उससे विरक्त होगी।

अपना अव्यक्त फरिश्ता स्वरूप सदा उसके सामने दिखाई देगा क्योंकि अव्यक्त फरिश्ता स्वरूप में ही अव्यक्त बाप से मिलन मना सकते हैं, अनुभव कर सकते हैं। बिन्दु रूप में तो अनुभव का प्रश्न ही नहीं उठता है अर्थात् उसमें शान्ति का तो अनुभव होगा परन्तु बाप के साथ के मिलन का नहीं।

इस अनुभव की पुरुषार्थी और अभ्यासी आत्मा जब चाहे तब अपने जिस स्वरूप में स्थित होना चाहे हो सकती है अर्थात् बिन्दुरूप, फरिश्ता रूप, साकार कर्मयोगी रूप में सहज स्थित हो जायेगी।

अव्यक्त स्वरूप में स्थित आत्मा दूसरे के मन की बात अर्थात् मन के भाव को सहज

ही समझ लेंगे और अपने मन के भाव को बिना शब्दों के दूसरों को अनुभव करा सकेंगे। जैसे साकार बाबा के सानिध्य से अनुभव करते थे।

अव्यक्त रूप में स्थित आत्मा कहाँ भी रहते कहीं भी बैठी आत्मा को, देख भी सकते हैं और किसी बात विशेष का अनुभव भी करा सकते हैं और अपनी उपस्थिति का भी अनुभव करा सकते हैं।

अव्यक्त रूप में स्थित आत्मा स्वच्छन्द रूप से कहाँ भी विचरण कर सकती हैं।

अव्यक्त रूप में स्थित आत्मा राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति, ईर्ष्या-घृणा, इच्छा-आकांक्षा, अपने-पराये, शत्रु-मित्र के भाव से मुक्त सदा एकरस जीवनमुक्त स्थिति के अनुभव में रहेगी।

ऐसी आत्मा परचिन्तन, परदर्शन से सदा मुक्त अपने अभीष्ट लक्ष्य के प्रति एकाग्र होगी, उसके ही चिन्तन में रहेगी।

अव्यक्त स्थिति के लिए साधन-सामग्री - आत्मा, परमात्मा, सृष्टि-चक्र का स्पष्ट ज्ञान बुद्धि में हो और उसका अनुभव जीवन में हो। जैसे बाबा कहते हैं - मैं जो हूँ, जैसा हूँ, वैसा कोई विरले ही जानते हैं। ऐसे ही तीनों का ज्ञान, समझना, अनुभव करना और उस स्थिति में रहना। इसके साथ कर्म-सिद्धान्त का ज्ञान भी बुद्धि में होगा तब ही यथार्थ पुरुषार्थ होगा।

इसके अनुभव के लिए देह से न्यारे आत्मिक स्वरूप और फरिश्ता स्वरूप में स्थित होने का अभ्यास हो। देह से न्यारे फरिश्ता स्वरूप में स्थित होकर अपनी देह और देह की दुनिया को देखने का अभ्यास करें।

दूसरे को भी उसके आत्मिक स्वरूप में ही देखने का अभ्यास करें।

इस स्थिति के अनुभव के लिए मौन स्थिति या कम से कम और धीरे बोलने का अभ्यास आवश्यक है।

इस अभ्यास के लिए अन्तर्मुखता और एकान्तवास अति आवश्यक है। अन्तर्मुखता केवल मौन को नहीं कहा जाता लेकिन अपनी सर्व स्थूल-सूक्ष्म कर्मेन्द्रियों से न्यारे होकर अपने अन्तर्निहित आत्मिक स्वरूप में स्थित होना, आत्मिक स्वरूप का चिन्तन करना, परमात्मा के ज्ञान-गुण-शक्तियों का चिन्तन करना, आत्मिक सुख अर्थात् अतीन्द्रिय सुख के अनुभव में रहना ही अन्तर्मुख स्थिति है। इसके लिए एकान्त में बैठकर भी अभ्यास करना होगा और चिन्तन करके एक के अन्त में जाना होगा।

इन सब बातों का ध्यान होगा, ऐसा अभ्यास होगा तब ही अव्यक्त स्थिति का अनुभव होगा और

अव्यक्त रूपधारी बाप से मिलन मना सकेंगे।

''कई बच्चों ने सन्देश भेजा कि हमको भी अपने अव्यक्त वतन का अनुभव कराओ।... दिव्य बुद्धि के आधार पर जो अब अलौकिक अनुभव कर सकते हो, वह दिव्य दृष्टि द्वारा करने से भी बहुत लाभदायक, अलौकिक और अनोखा है।... अमृतवेले अव्यक्त स्थिति में स्थित होकर रूह-रुहान करो तो अनुभव करेंगे कि सचमुच बाप के साथ बातचीत कर रहे हैं। ... और बहुत गुह्य, गोपनीय रहस्य बुद्धियोग से अनुभव करेंगे।... अमृतवेले भी अव्यक्त स्थिति में वे ही स्थित हो सकेंगे, जो सारा दिन अव्यक्त स्थिति में और अन्तर्मुख स्थिति में स्थित रहेंगे।'' अ.बापदादा 2.2.69

''आज मैं आप सभी बच्चों से अव्यक्त रूप में मिलने आया हूँ। जो मेरे बच्चे अव्यक्त रूप में स्थित होंगे वे ही इसको समझ सकेंगे। ... अगर व्यक्त में देखेंगे तो बाप को नहीं देख सकेंगे।'' अ.बापदादा 23.1.69

''जो अन्त:वाहक शरीर से चक्र लगाने का गायन है, यह अन्तर की आत्मा वाहन बन जाती है। तो ऐसे अनुभव करेंगे जैसे बिल्कुल बटन दबाया, विमान उड़ा, चक्र लगाकर आ गये और दूसरे भी अनुभव करेंगे कि यहाँ होते हुए भी नहीं है। जैसे साकार में देखा ना - बात करते-करते भी सेकण्ड में हैं और अभी नहीं हैं।''

अ.बापदादा 20.01.86

Q. क्या सतयुगी-त्रेतायुगी राजाई के उत्तराधिकार की वंश परम्परा वर्तमान के सेन्टरों के उत्तराधिकार परम्परा से प्रभावित होगी अर्थात् सतयुग-त्रेतायुग की राजाई के उत्तराधिकार की वंश परम्परा और वर्तमान सेन्टरों के उत्तराधिकार की परम्परा में क्या सामन्जस्य है और क्या अन्तर है ?

इस सम्बन्ध में ये विचारणीय है कि बापदादा इस यज्ञ का मालिक है, वह जो श्रीमत देता है, वह सबको निर्विवाद मान्य होती है और होनी ही चाहिए परन्तु जिसके लिए बाबा ने प्रत्यक्ष में कुछ नहीं बोला है, उनका निर्णय कौन करे और कैसे हो यथा एक सेन्टर की बड़ी बहन शरीर छोड़ देती तो उसी सेन्टर की छोटी बहन यदि योग्य है, जो बड़ी बहन के अंग-संग रही, उसकी दिल से सेवा की तो वह उसकी उत्तराधिकारी है या उसका जोन इन्चार्ज या केन्द्रीय व्यवस्था जिसको चाहे, वह उत्तराधिकारी हो। सतयुग-त्रेतायुग के लिए तो बाबा ने कहा है कि वर्तमान संगमयुग के पुरुषार्थ अनुसार ही वहाँ आत्मा को वर्सा मिलता है। वहाँ का वर्सा किसी देहधारी माँ-बाप का नहीं होता है। देहधारी माँ-बाप तो केवल निमित्त होते हैं, वर्सा तो संगमयुग पर

बेहद के माँ-बाप से मिला हुआ है, जिसके आधार पर ही वहाँ सम्बन्ध जुटते हैं। द्वापरयुगी और कलियुगी राजाई में बहुधा राजा ही अपने उत्तराधिकारी का चयन करता रहा है। अभी हमारे यज्ञ का क्या विधि-विधान है, वह समझकर चलेंगे तो हम कहाँ धोखा नहीं खायेंगे और हमारा व्यर्थ चिन्तन भी नहीं चलेगा। यदि केन्द्रीय व्यवस्था ने या जोन ने बड़ी बहन की बीमारी में उसका कोई सहयोग नहीं किया तो जब उसने शरीर छोड़ दिया तो केन्द्रीय व्यवस्था या जोन की बड़ी बहन को उस सेन्टर की इन्चार्ज बहन की नियुक्ति करनी चाहिए या जिस बहन ने उसकी दिल से सेवा की, वही उत्तराधिकारी होनी चाहिए। यह विचारणीय है क्योंकि कई सेवाकेन्द्रों के विषय में ऐसी बातें आती हैं और परस्पर सम्बन्धों में कटुता आती है।

Q. ईश्वरीय प्राप्तियों का विधि-विधान क्या है?

नष्टोमोहा स्मृतिलब्धा स्वरूप अर्थात् ऐसी स्थिति वाला ही ईश्वरीय प्राप्तियों का अधिकारी है क्योंकि वह बाबा को प्रिय है।।

शत प्रतिशत नष्टोमोहा = शत प्रतिशत स्मृतिलब्धा और शत प्रतिशत स्मृतिलब्धा = शत प्रतिशत प्राप्ति स्वरूप अर्थात् ईश्वरीय सुख में। जैसे ब्रह्मा बाबा ने किया और अनुभव किया। यह ईश्वरीय प्राप्तियों का विधि-विधान है।

50 प्रतिशत नष्टोमोहा = 50 प्रतिशत स्मृतिलब्धा और 50 प्रतिशत स्मृतिलब्धा = 50 प्रतिशत प्राप्ति स्वरूप अर्थात् उस अनुसार ईश्वरीय सुख में।

जो नष्टोमोहा का पहला कदम उठा लेता है, उसको परमात्मा हजार कदम मदद देकर आगे का काम स्वयं पूरा कर देता है, उसमें सारी योग्यतायें बाबा स्वयं भर देता है। नष्टोमोहा ही इस ज्ञान मार्ग में सफलता का प्रथम कदम है।

Q. बाबा हमको क्या माल देते हैं?

बाबा के पास ज्ञान, गुण, शक्तियों का अविनाशी माल है, जिसकी डिलीवरी करने के लिए संगमयुग पर आते हैं। जो उनके वफादार, ईमानदार, फरमानबरदार बच्चे बनते हैं, वे ज्ञान, गुण, शक्तियों से मालामाल हो जाते हैं। उनके लिए फिर और कुछ प्राप्त करना शेष नहीं रह जाता है। वे सदा इच्छा मात्रम् अविद्या की स्थिति में रहते हैं। जिसके लिए ब्रह्मा बाबा ने कहा - 'पाना था सो पा लिया' अर्थात् अब कुछ पाना शेष नहीं रहा अर्थात् भरपूर हो गये। सम्पूर्णता अर्थात् भरपूरता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता अर्थात् अतीन्द्रिय सुख यह ईश्वरीय प्राप्तियों का विधि-विधान है।

‘‘एक बाप को याद करो, वह तुमको बहुत मालदार बनाते हैं। जीते जी मर जाओ। बाप आकर जीते जी मरना सिखलाते हैं। ... ज्ञान है ही तुम्हारे लिए। तुम प्रदर्शनी में ऐसा समझाओ जो मनुष्य समझें हमको एक बाप को ही याद करना है तब ही हम यह बन सकेंगे। ... बाप है ज्ञान का सागर। उस परम आत्मा में ज्ञान तो भरा हुआ है ना। ... बाप के पास जो माल है, वह मिलता रहेगा ड्रामानुसार। ... योग वाले फिर ज्ञानी भी होते हैं।’’

सा.बाबा 17.5.04 रिवा.

Q. साकार मिलन और अव्यक्त मिलन में क्या अन्तर है ?

अभी जो अपने पुरुषार्थ से अव्यक्त स्थिति में स्थित होकर अव्यक्त वतन में जाकर अव्यक्त बापदादा से मिलन मनायेगा, वही अव्यक्त मिलन का सुख अनुभव कर सकेगा। यद्यपि साकार में भी परमात्म-मिलन का यथार्थ अनुभव वे ही कर सके, जिन्होंने स्वयं आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर समझकर, पहचान से ब्रह्मा तन में आये परमात्मा से मिलन मनाया परन्तु साकार में जो आत्मा शुभ भावना से साकार बाबा के पास आती थी तो बाबा अपनी शक्ति से उसे देह से न्यारे आत्मिक स्वरूप में स्थित कर देते थे और वह आत्मा परमात्म मिलन अर्थात् मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करती थी, फिर उस मिलन के अनुभव को स्थाई रखना, बढ़ाना उस आत्मा का अपना पुरुषार्थ था। अभी भी अव्यक्त बापदादा गुल्जार दादी के साकार तन में आकर अनुभव कराते हैं परन्तु कर वे ही पाते हैं, जो अव्यक्त स्थिति के रहस्य को समझते हैं और उस स्थिति में स्थित होकर करते हैं। अभी जो आत्मा इस विश्व-नाटक की यथार्थता को जानकर अपने पुरुषार्थ से देह सहित देह की सारी दुनिया से न्यारे अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होगी, वही अव्यक्त मिलन का अनुभव कर सकेगा। वह साकार मिलन का अनुभव भी न्यारा और अति प्यारा था, अभी जो गुल्जार दादी के तन में अव्यक्त बापदादा आकर अनुभव कराते हैं, यह भी न्यारा-प्यारा है और जो अव्यक्त स्थिति में स्थित होकर अव्यक्त बापदादा से मिलन मनाते हैं, वह अति-अति न्यारा और प्यारा है और चिर-स्थाई हो सकता है।

‘‘आज मैं आप सभी बच्चों से अव्यक्त रूप में मिलने आया हूँ। जो मेरे बच्चे अव्यक्त रूप में स्थित होंगे वे ही इसको समझ सकेंगे। ... अगर व्यक्त में देखेंगे तो बाप को नहीं देख सकेंगे। ... अभी भी ऐसा नहीं समझना कि बाप है दादा नहीं है या दादा है तो बाप नहीं है। हम दोनों एक-दो से एक पल भी अलग नहीं हो सकते। ऐसे ही आप अपने को त्रिमूर्ति (बाप, दादा और मैं) ही समझो।’’

अ.बापदादा 23.1.69

Q. दुनिया और आत्माओं की कलायें तो सतयुग से ही गिरती जाती हैं, फिर बाबा ऐसा क्यों

कहते हैं कि दुनिया को पुराना रावण बनाते हैं, जबकि सतयुग में रावण होता ही नहीं ? बाबा के कहने का भाव-अर्थ क्या है ?

रावण अर्थात् देह-अभिमान। देहाभिमान का बीज है देह-भान, जो तो सतयुग में भी होता है, जिसके कारण आत्मा की कलायें गिरती हैं। सतयुग में आत्मा में जो देह-भान होता है, वही बढ़ते-बढ़ते त्रेता के अन्त में देहाभिमान में बदल जाता है। सतयुग-त्रेतायुग में सृष्टि की और आत्मा की कलायें तो गिरती हैं लेकिन मकान जब बनाते हैं, उस समय से ही उसको पुराना नहीं कहा जाता है, कुछ समय बाद ही पुराना कहा जाता है। इस भाव-अर्थ से ही बाबा ने कहा है कि दुनिया को पुराना रावण बनाते हैं।

दूसरी बात सतयुग-त्रेता में देह-भान के कारण आत्मा और विश्व की कलायें तो गिरती हैं परन्तु आत्मा से कोई विकर्म नहीं होते हैं, इसलिए किसी प्रकार का दुख नहीं होता है। आत्मा अपना संचित खाता भोगकर खत्म करती है परन्तु द्वारा से देहाभिमान आने से विकारों की प्रवेशता से विकर्म होते हैं और आत्मा पर विकर्मों का बोझा चढ़ता जाता हे, जिसके फल स्वरूप दुख-अशान्ति होती है। इच्छायें-आशायें-आकांक्षायें बढ़ने के कारण परस्पर सम्बन्धों में कटुता आने के कारण मारामारी होती है।

‘‘यूँ तो सारे झाड़ (उसमें चाहे फूल हैं या काँटे हैं) का बीज एक ही है परन्तु फूलों के बगीचे से फिर काँटों का जंगल बनाने वाला भी जरूर होगा। वह है रावण। ... रावण देह-अभिमान में ले आता है। ... हर एक अपने दिल से पूछे कि मैं किस प्रकार का फूल हूँ, किस प्रकार का माली हूँ ? बच्चों को विचार सागर मंथन करना पड़े।’’

सा.बाबा 4.6.04 रिवा.

विचारणीय विषय ये है कि फूलों के बगीचे को कांटों का जंगल बनाने वाला कौन है अर्थात् जब कांटों का जंगल बन जाता है तब रावण आता है या रावण के आने के कारण कांटों का जंगल बनता है। ये भी एक रहस्यमय पहेली है।

Q. हम आत्माओं की ज्ञान स्वरूप स्थिति कैसी होनी चाहिए अर्थात् ज्ञान स्वरूप स्थिति क्या है ?

हम आत्मा हैं, यह यथार्थ धारणा है तो हमारी स्थिति में निर्भयता, प्रेम, आनन्द, दया, पवित्रता, सुख-शानति आदि आदि जो आत्मा के स्वभाविक गुण है, वे स्वत: प्रगट होंगे और दूसरे भी उनको अनुभव करेंगे, जिससे हमारी ज्ञान-स्वरूप स्थिति का अनुभव होता है।

हम परमात्मा पिता की सन्तान हैं, ये धारणा होगी तो हमारी स्थिति क्या होगी। परमात्मा ज्ञान

का सागर है, सर्वशक्तिवान है, सर्व आत्माओं का पिता है, पतित-पावन ... की धारणा होगी, जिससे हमारा विश्व की सर्व आत्माओं से प्यार होगा, सर्व के कल्याण की स्वभाविक वृत्ति होगी। सारे विश्व के प्रति पारिवारिक भावना स्वत: जाग्रत होगी।

अभी बाबा ने हमको कल्प-वृक्ष का ज्ञान दिया है, जिससे हमको समझ आई है कि हम सर्वात्माओं के पूर्वज हैं और जब हम अपने पूर्वजपन के स्वमान में स्थित होंगे तो सर्वात्माओं प्रति श्रेष्ठ पालना का कर्तव्य स्वत: ही होगा। हमारे से विश्व-कल्याण का कार्य स्वत: और सहज ही होगा।

विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान की धारणा होगी तो हमारी स्थिति साक्षी-दृष्टा की होगी, जिससे हमारे मन में कोई व्यर्थ संकल्प नहीं उठेगा और आत्मा मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव सहज ही करेगी, जो सबसे श्रेष्ठ स्थिति है।

समय समीप आना अर्थात् हर बच्चे को सम्पन्न बनना। जब आप बच्चे सम्पन्न बनेंगे तब समय पर जो परिवर्तन होना है, वह हो सकेगा। तो समय इतला दे रहा है कि मैं समीप आ रहा हूँ और बाप बच्चों को सम्पन्न बनने का इशारा दे रहे हैं। बाबा ने सम्पन्न बनने के लिए आज सभी को एक शब्द याद दिलाया, वह शब्द है - 'करावनहार'। ... मैं बाप समान करावनहार हूँ, मालिक बनकर कर्मेन्द्रियों से कर्म कराने वाली। ये स्मृति रहेगी तो मन, बुद्धि, संस्कार जो सूक्ष्म कर्मचारी हैं, वे आपके आर्डर में चलेंगे।

अ.बापदादा का सन्देश 30.5.04 गुल्जार दादी के द्वारा

Q. क्या सब बाप समान सम्पन्न बनेंगे ?

हाँ, अन्त में परमधाम जाने के समय हर आत्मा आत्मिक स्थिति में स्थित होगी और बाप समान सम्पूर्ण पावन होगी। उस समय हर आत्मा की इच्छामात्रम् अविद्या की स्थिति होगी, इसलिए हर आत्मा बाप समान सम्पन्न होगी। परमधाम में सभी आत्मायें सम्पूर्ण होती है क्योंकि वह है सम्पूर्ण आत्माओं की दुनिया। नम्बरवार, ऊंच-नीच तो जब पार्ट में आते हैं, तब पार्ट अनुसार बनते हैं। सम्पूर्णता ही सम्पन्नता का आधार है और जो सम्पन्न होगा, वह सन्तुष्ट और प्रसन्न अवश्य होगा क्योंकि सम्पन्नता ही सन्तुष्टता और प्रसन्नता की जननी है।

Q. जीवन के सब प्रश्नों का उत्तर क्या है, जिससे सहज ही इस पढ़ाई में पास हो जायें ?

पुरुषार्थ में ब्रह्मा बाप को फॉलो करना और स्थिति में निराकार शिव बाप को फॉलो करने वाले सहज ही इस पढ़ाई में पास हो सकते हैं। सब प्रश्नों का उत्तर है ब्रह्मा बाप का जीवन है, जिन्होंने शिव बाप की श्रीमत पर चलकर उनको फॉलो कर सम्पूर्णता को पाया है। सम्पूर्णता-

सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता की स्थिति और अनुभूति ही हर आत्मा का और इस ईश्वरीय पढ़ाई का लक्ष्य है।

''सदा शान में रहने का, सदा प्राप्ति स्वरूप स्थिति में स्थित होने का सहज साधन है - 'फॉलो फादर'। ... सभी प्रश्नों का उत्तर एक ही बात है - 'फॉलो फादर'। ... कर्म बन्धनों से मुक्त होने में, कर्म सम्बन्ध को निभाने में, देह में रहते विदेही स्थिति में स्थित रहने में, तन के बन्धनों को चुक्तू करने में, मन की लगन में मगन रहने की स्थिति में, धन का एक-एक नया पैसा सफल करने में, साकार ब्रह्मा साकार जीवन में निमित्त बने।''

अ.बापदादा 19.12.85

Q. काम-वासना और कामोत्तेजना का कारण क्या है और उससे मुक्त होने का पुरुषार्थ क्या है ?

काम-वासना का पहला मूल कारण है आत्मिक स्वरूप की विस्मृति और देहाभिमान की आत्मा में प्रवेशता। इसलिए बाबा ने कहा है - देह सहित देह के सब धर्मों को भूल अपने को अविनाशी आत्मा समझो। काम-वासना का दूसरा कारण है - काम-भोग में सुख की परिकल्पना करन, ऐसी अभिधारणा का अन्तर्मन में नीहित होना, उसका निश्चय होना ही काम-वासना और कामोत्तेजना का कारण है। उस अभिधारणा से ही कामोत्तेजक अंगों-प्रत्यंगों की ओर आकर्षण होता, उनके सुख भोगने की इच्छा जाग्रत होती। तीसरा मूल कारण है - काम-वासना और कामोत्तेजना से होने वाली जीवन-शक्ति के हानि का यथार्थ ज्ञान का न होना, उसके महत्व की अनभिज्ञता।

काम-भोग या उसका चिन्तन एक मानसिक रोग है, वह कोई सुख नहीं है परन्तु यथार्थ सुख की अनुपस्थिति है, जिससे आत्मिक शक्ति का अति ह्रास होता है। उसमें सुख की परिकल्पना अज्ञानता जनित एक भ्रान्ति है। काम-भोग और उसका चिन्तन अनेक प्रकार से विकर्मों का कारण बनता है, जिससे पाप का खाता बढ़ाता है, इस सत्य की अनभिज्ञता चौथा कारण है।

काम-भोग में सुख की परिकल्पना एक मृग-मरीचिका ही है, जिससे आत्मा कभी सन्तुष्टता की अनुभूति नहीं कर सकता है और अन्त में अपनी जीवन-यात्रा को पूरा कर देता है।

अपने यथार्थ आत्मिक स्वरूप में स्थित आत्मा परम सुख का अनुभव करती है। आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर परमात्म चिन्तन, परमात्म-ज्ञान का चिन्तन ही उसके निदान का एकमात्र साधन है। काम को जीतने से आत्मिक शक्ति का विकास होता है और आत्मा परम-सुख का अनुभव करती है। निश्चयबुद्धि होकर परमात्मा के सानिध्य और उसके ज्ञान के चिन्तन से सहज

ही आत्मा अपने स्वरूप में स्थित हो जाती है और परम-सुख का अनुभव करती है। इसलिए ही कहा गया है - निश्चयबुद्धि विजयन्ति अर्थात् इस सत्य का ज्ञान, उस पर चिश्चय और सतत पुरुषार्थ करने से ही इस महाशत्रु से छुटकारा पाया जा सकता है। परन्तु बिडम्बना ये है कि सत्य परमात्मा, उससे सत्य ज्ञान को प्राप्त करके भी आत्मा यथार्थ पुरुषार्थ न करने के कारण इस काम महाशत्रु से हार खा लेते हैं। जो बाबा की श्रीमत पर दिल से पुरुषार्थ करते हैं, उनकी हार हो नहीं सकती। इसलिए निश्चयबुद्धि विजयन्ति कहा गया है।

''बाबा ऑर्डिनेन्स निकालते हैं - बच्चे, काम महाशत्रु है। यह तुमको आदि-मध्य-अन्त दुख देता है। अभी तुमको गृहस्थ व्यवहार में रहते हुए पावन बनना है। ऐसे नहीं कि देवी-देवता आपस में प्यार नहीं करते होंगे परन्तु वहाँ विकारी दृष्टि नहीं रहती है, निर्विकारी होकर रहते हैं।''

सा.बाबा 22.6.04 रिवा.

Q. श्रीकृष्ण का जन्मदिन 12 बजे रात्रि को दिखाते, शिव-जयन्ति, नव वर्ष आदि भी 12 बजे मनाते हैं तो ये 12 बजे मनाने की प्रथा कब से आरम्भ हुई, इसका आधार क्या है?

शिवजयन्ति, कृष्ण जयन्ति, नव-वर्ष आदि 12 बजे मनाना ये स्वतन्त्र भारत में ब्रिटिश साम्राज्य के दासता के अवशेष हैं क्योंकि ब्रिटेन में 12 बजे अमृतवेला होता है अर्थात् नये दिन का आरम्भ होता है। जब वहाँ नये दिन का आरम्भ होता है, तब भारत में आधी रात होती है। नये दिन के आदि को 12 बजे मनाने की प्रथा का आरम्भ अंग्रेजों ने अपने हिसाब से भारत में भी किया और वही प्रथा भारत की स्वतन्त्रता के बाद भी भारतवासी मानते-मनाते आ रहे हैं अर्थात् परतन्त्रता की लीक को पीटते आ रहे हैं। भारत में दिन का आदि अर्थात् अमृतवेला प्रात: 4 बजे के लगभग होता है और उस समय से ही नये दिन का आरम्भ होता है। भारत में ऐसी अनेक प्रथायें भारतवासी और भारत सरकार आज भी मनाती रहती है, जो ब्रिटिश साम्राज्य की प्रथायें हैं और वे भारत से वे मेल नहीं खाती हैं। यथा भारत में जो इतिहास पढ़ाया जाता है, जिसमें पढ़ाते कि भारत में आर्य मध्येशिया से आये, जब कि आर्यों की आदि भूमि वर्तमान भारत ही है।

''शिव जयन्ति ही हीरे तुल्य है। कृष्ण के चरित्र आदि कुछ हैं नहीं। ... श्रीकृष्ण का जन्म होता है अमृतवेले। अमृतवेला सबसे शुभ मुहूर्त माना जाता है। वे लोग कृष्ण का जन्म 12 बजे मनाते हैं परन्तु वह प्रभात तो हुई नहीं। ... 3-4 बजे का समय अमृतवेला है।''

सा.बाबा 7.7.04 रिवा.

Q. परमात्मा दैवी गुण और आसुरी गुण दोनों से न्यारा है तो परमात्मा में कौनसे गुण हैं और वे क्या हैं?

परमात्मा में ज्ञान-गुण-शक्तियां विशेष हैं, जिससे उनको परमात्मा कहा जाता है। परमात्मा में हैं ईश्वरीय गुण अर्थात् तीनों लोकों तीनों कालों का ज्ञान, पतितों को पावन बनाने, सर्व आत्माओं को लिब्रेटर कर मुक्ति-जीवनमुक्ति देने, शान्तिधाम-सुखधाम का गाइड बनने, मनुष्य सृष्टि का बीजरूप अर्थात् सृष्टि रूपी कल्प वृक्ष की कलम लगाने, आसुरी गुणों को खत्म कर दैवी गुणों की धारणा के लिए पढ़ाने आदि का गुण परमात्मा में है, जो न देवताओं में हैं और न असुरों में हैं।

Q. क्या भक्ति मार्ग में काशी कलवट आदि खाने से आत्मा के सर्व विकर्म विनाश होते हैं ?

भक्ति मार्ग में काशी कलवट खाने से कुछ विकर्म विनाश होते हैं, यदि सारे विकर्म विनाश हो जायें तो आत्मा कर्मातीत बन जाये। आत्मा कर्मातीत तो संगमयुग पर बाप की याद से ही बनती है।

‘‘काशी कलवट खाते हैं। हाँ, जो निश्चयबुद्धि होकर करते हैं, उनके विकर्म विनाश होते हैं, फिर नये सिर शुरू होगा हिसाब-किताब। बाकी मेरे पास नहीं आते हैं। मेरी याद से ही विकर्म विनाश होते हैं।’’ सा.बाबा 15.7.04 रिवा.

Q. क्या पावन या कर्मातीत आत्मा को दूसरी आत्माओं के सुख-दुख की फीलिग होगी ?

नहीं, कर्मातीत आत्मा सुख-दुख दोनों से न्यारी होती है, इसलिए वह साक्षी होकर इस सारे खेल को देखती है, इसलिए उसको किसी का सुख या दुख प्रभावित नहीं करता है परन्तु उसके सभी कर्म आत्माओं के कल्याणार्थ स्वत: ही होते हैं। कोई भी आत्मा इस कर्मक्षेत्र पर रहते हुए शत-प्रतिशत कर्मातीत नहीं हो सकती है। इसीलिए बाबा ने कहा है कि जब आत्मा कर्मातीत हो जाती तो यह देह रह नहीं सकती। कर्मातीत आत्माओं का स्थान परमधाम है। परमात्मा ही एक ऐसी आत्मा हैं, जो यहाँ पार्ट बजाते भी कर्मातीत है।

‘‘तुम बच्चों को बाप को याद करने में थोड़ी मुश्किलात होती है, इनको सहज है। फिर भी इनको भी पुरुषार्थ तो करना ही पड़ता है। … यह जितना नजदीक है, उतना फिर इनके ऊपर बोझा भी बहुत है। … ख्याल तो चलता है ना। बच्चियों पर कितनी मार पड़ती है तो जैसे दुख होता है। कर्मातीत अवस्था तो पिछाड़ी में होगी, तब तक ख्याल होता है।’’

सा.बाबा 24.7.04 रिवा.

‘‘मूसलाधार बरसात, अर्थ-क्वेक आदि सब होना है। अभी तुम बच्चों ने ड्रामा का सब राज़ समझा है।… तुम बच्चों को अच्छी रीति समझकर औरों को भी समझाना है, खुशी में भी रहना है।… भल कितने भी दुख, मौत आदि होंगे, तुम उस समय खुशी में होंगे। तुम जानते

हो मौत तो होना ही है। कल्प-कल्प का यह खेल है, फिकरात की कोई बात नहीं।''

सा.बाबा 24.7.04 रिवा.

Q. हम रावणराज्य में आ गये तो हमारा धर्म-कर्म गिर गया या हमारी स्थिति गिरने के कारण हमारे धर्म-कर्म गिर गये और ये दुनिया रावण राज्य बन गयी ?

वास्तविकता तो ये है कि सतयुग आदि में आत्मा जब परमधाम से आती है तो उसको अपना यथार्थ स्वरूप भूल जाता है ओर देह के भान में आ जाती है, जिससे आत्मिक शक्ति का ह्रास होना आरम्भ हो जाता है। आत्मिक शक्ति का ह्रास होते-होते वह देह का भान आधा कल्प के बाद देहाभिमान का रूप ले लेता है, जिससे आत्मा अपने दैवी धर्म-कर्म को भूलकर विकारों के वशीभूत हो जाती है, जिसके कारण ये सृष्टि स्वर्ग से नर्क बन जाती है अर्थात् रामराज्य, रावणराज्य बन जाता है। सृष्टि के विधि-विधान अनुसार धर्म-कर्म अति भ्रष्ट रावण के आने से हो जाते हैं।

''चढ़ती कला का और उतरती कला का भी चित्र है। उतरती कला में 5 हजार वर्ष और चढ़ती कला में एक सेकण्ड लगता है। ... बच्चों को स्वदर्शन चक्रधारी बनना है। सबको चक्र का भी ज्ञान देना है।... चढ़ती कला तो परमात्मा ही करा सकते हैं। बाकी तो एक-दो को नीचे ही गिराते रहते हैं। देवतायें भी नीचे गिरते जाते हैं। भल सुख में हैं परन्तु कला तो कम होती जाती है ना।'' सा.बाबा 4.10.07 रिवा.

''भल वहाँ भी थोड़ी-थोड़ी कला कमती होती जाती है परन्तु कहेंगे तो सम्पूर्ण निर्विकारी ना। एकदम सम्पूर्ण निर्विकारी श्रीकृष्ण को ही कहेंगे।... जरा-जरा कला कम होते-होते त्रेता में दो कला कम हो गई। पीछे विशश बनते हैं और गिरते-गिरते छी-छी बन जाते हैं।''

सा.बाबा 11.8.04 रिवा.

Q. क्या सतयुगी देवताओं को ब्रह्मा-भोजन की इच्छा होती है ? यदि नहीं तो किन देवताओं को ब्रह्मा भोजन की दिल होती है ?

नहीं, सतयुगी देवताओं को ब्रह्मा भोजन का ज्ञान भी नहीं है और वे इच्छामात्रम् अविद्या स्थिति में होते हैं। सूक्ष्म वतन वासी ब्रह्मा-विष्णु-शंकर के लिए भी यह बात लागू नहीं होती है। ये बात एडवान्स पार्टी में जाने वाली आत्माओं के लिए लागू होती है, जिनको बापदादा वतन में बुलाते हैं तब उनको ब्रह्मा भोजन की दिल हो सकती है।

''ब्रह्मा भोजन की बहुत महिमा है। इसलिए गाया जाता है - ब्रह्मा भोजन के लिए देवताओं को भी दिल होती है।'' सा.बाबा 12.8.04 रिवा.

Q. तनाव (Stress) क्या है ? तनाव का कारण क्या है और निवारण क्या है ?

तनाव एक मानसिक रोग है, जो आत्मिक शक्ति के ह्रास से और मनुष्य की अत्यधिक इच्छायें-आशाओं से पैदा होता है या अन्य आत्माओं के साथ पूर्व जन्म के दुर्व्यवहार के कारण होता है क्योंकि इच्छित की अप्राप्ति और अनेच्छित की प्राप्ति ही तनाव का मूल कारण है। यथार्थ आध्यात्मिक ज्ञान अर्थात् आत्मा, परमात्मा, विश्व-नाटक, कर्म के विधि-विधान आदि के सत्य ज्ञान और उसकी धारणा ही स्थाई रूप से तनाव-मुक्त होने का एकमात्र साधन है। और सब साधन अस्थाई हैं। मानसिक तनाव में वातावरण, खान-पान आदि की कुछ भूमिका भी अवश्य होती है।

Q. परमात्मा पिता को पाकर, ज्ञान को समझकर आत्मा इस युद्ध के मैदान में आकर भी इससे पलायन क्यों कर जाती है ?

आत्मा, परमात्मा और विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान की कमी अर्थात् उसके अनुभव और उसकी धारणा की कमी से आत्मा को अपने में आत्मा-विश्वास की कमी, परमात्मा के गुण-शक्तियों उनके सहयोग के यथार्थ अनुभव की कमी के कारण अपनी विजय के प्रति आश्वस्त न होने से आत्मा इस मैदान से पलायन कर जाती है, जो अन्त समय उसके पश्चाताप का कारण बन जाता है। बाप का बनकर बाप से विमुख हो जाना सबसे महान दुर्भाग्य है। इसलिए बाबा सदैव कहते हैं - मैं जो ज्ञान तुमको देता हूँ, ये अन्धश्रृद्धा से फॉलो करने का नहीं है, इसका मनन-चिन्तन करके इसकी सत्यता, इसकी उपयोगिता, इसके प्रभाव को अनुभव करो और उसको जीवन में धारण करो, तब ही उसका सच्चा अतीन्द्रिय सुख तुमको भासेगा और जो सदा अतीन्द्रिय की अनुभूति में होगा, उसका इस युद्ध-क्षेत्र से पलायन करने का प्रश्न ही नहीं उठता है। बाबा ये भी कहते हैं - अपनी घोट तो नशा चढ़े। बाबा की मदद तो हर आत्मा के लिए सदा है ही है, उसको लेना हर आत्मा का अपना कर्तव्य है।

''बाप का बनकर ट्रेटर बनकर यज्ञ में विघ्न डालते, उनका जितना बड़ा पाप बनता है, उतना अज्ञानी मनुष्यों का नहीं बनता है।... तुम्हारे में भी कोई तो ईश्वर के बनकर उनकी श्रीमत पर चलते हैं और जो नहीं चलते हैं, वे भस्मासुर बन जल मरते हैं।''

सा.बाबा 18.4.08 रिवा.

Q. दृढ़ संकल्प तो सभी करते हैं परन्तु दृढ़ संकल्प की परिभाषा क्या है अर्थात् दृढ़ संकल्प है क्या ?

दृढ़ संकल्प अर्थात् उस संकल्प को, उस प्रतिज्ञा को किसी भी कीमत पर पूरा करने का

संकल्। जिसके लिए परमात्मा ने कहा है - प्राण भले चले जायें लेकिन संकल्प को अवश्य पूरा करना है। जैसे ब्रह्मा बाबा ने करके दिखाया। रामायण में भी है - रघुकूल रीति सदा चलि आई, प्राण जाहिं वरु वचन न जाई। जो अपने संकल्प के प्रति ऐसा दृढ़ रहता है, उसको सफलता अवश्य मिलती है।

''दृढ़ संकल्प लेना तो कामन हो गया है। कहने में दृढ़ संकल्प आता है लेकिन होता है संकल्प। अगर दृढ़ संकल्प होता तो दुबारा नहीं लेना पड़ता।''

अ.बापदादा 22.01.86 टीचर्स सिलवर जुबली

Q. मनुष्य देवताओं की लायकी की महिमा गाते और अपनी ना-लायकी का वर्णन करते हैं परन्तु यथार्थ लायकी क्या है और देवताओं की लायकी तथा ब्राह्मणों की लायकी में किसकी लायकी महान है ?

ब्राह्मणों की। ब्राह्मणों की लायकी देवताओं से भी महान है क्योंकि ब्राह्मण ही पुरुषार्थ करके देवता बनते हैं। ब्राह्मणों के गुण-धर्म उनकी अपनी और विश्व की चढ़ती कला के आधार होते हैं, ब्राह्मण ही परमात्मा की श्रीमत पर विश्व की सेवा करते हैं। सभी शास्त्रों में, विभिन्न धर्मों में ब्राह्मणों के कर्तव्यों का ही गायन होता है परन्तु ब्राह्मणों का यथार्थ परिचय न होने के कारण, तन पतित होने के कारण चित्र देवताओं के बना देते हैं। हर मनुष्य को अपनी कमी-कमजोरी का आभास अवश्य होता है, वह दिल को खाता है, उसको दूर करने का संकल्प भी होता है, इसलिए देवताओं की लायकी की महिमा गाते हैं और अपनी ना-लायकी का उनके आगे वर्णन करते हैं।

''मनुष्य देवताओं की महिमा गाते हैं और अपने को पतित कहते हैं। पतित माना विकारी। ... खराब ख्यालात मुख्य हैं ही काम के। ... बाप तुमको लायक बनाते हैं, फिर तुम ना-लायक बन जाते हो। ना लायक क्यों कहते हैं ? क्योंकि पतित बन जाते हो।''

सा.बाबा 06.9.04 रिवा.

Q. पाप-पुण्य की परिभाषा क्या है और पुण्य जमा करने का साधन और साधना क्या ?

देहाभिमान के कारण विकारों के वशीभूत जो भी कर्म करते हैं, वह पाप के खाते में जाता है। ऐसे ही आत्माभिमानी और परमात्माभिमानी स्थिति में जो कर्म करते हैं, वह पुण्य के खाते में जमा होता है। किसी दूसरे की उपभोग्य वस्तु की ओर लालायित होना या उपभोग की इच्छा करना भी पाप है और आत्मा को उसका फल भोगना होता है। किसी अनाधिकृत वस्तु की ओर आकर्षित होना भी पाप कर्म है और उसका भी फल आत्मा को भोगना होता है। देवतायें न पुण्य कर्म करते हैं और न ही पाप कर्म करते हैं। वे संगमयुग पर पुण्य कर्म करके जमा की

हुई पूँजी को खाते हैं और खाकर खत्म कर देते हैं। सारी पुण्य की पूँजी खत्म करने के बाद परमात्मा को पुकारने लगते हैं। पुण्य की पूंजी जमा करने का समय संगमयुग ही है। इसलिए बाबा ने कहा है - पुण्य का खाता जमा करने का बैंक संगमयुग पर ही खुलता है, और सारे कल्प में ये बैंक ही नहीं होगा तो जमा करने का प्रश्न ही नहीं उठता है।

''अगर यहाँ आकर और फिर चले जाते तो सब कहेंगे शायद ईश्वर नहीं है, तब ऐसे छोड़कर निकलते हैं। उनको देखकर कितने संशयबुद्धि बन जाते हैं। उन सबका पाप उन पर चढ़ जाता है।'' सा.बाबा 18.4.08 रिवा.

''बाप के साथ योग लगायेंगे तो विकर्मो का बोझा उतरेगा और तुम विकर्माजीत बनेंगे।... बाप को फारकती दे, बुद्धि का योग और कोई संग जोड़ा तो भस्मासुर बन पड़ेंगे।... बाप का बनकर फिर फारकती दी तो वे हुए नम्बरवन अजामिल। उन जैसा पापात्मा और कोई होता नहीं।'' सा.बाबा 19.4.08 रिवा.

Q. देहाभिमानी को ठौर नहीं मिल सकता, देहाभिमानी से पाप अवश्य होता है - क्यों ?

देहाभिमानी की बुद्धि कब स्थिर नहीं हो सकती इसलिए वह श्रेष्ठ पुरुषार्थ करके श्रेष्ठ अनुभव नहीं कर सकता। उसके अन्दर विकार अवश्य होते हैं, जिससे विकारों के वशीभूत जो कर्म करता है, वह पाप के खाते में ही जाता है, जिसके फलस्वरूप उसको श्रेष्ठ फल नहीं मिलता है।

Q. चलते-फिरते फरिश्ता स्वरूप कब, कैसे और क्यों दिखाई देगा ? इसका क्या विधि-विधान है ?

मनुष्य का जैसा संकल्प होता है, उस अनुसार वायब्रेशन पैदा होते हैं और उस अनुसार ही सूक्ष्म शरीर निर्मित होता है, जिसकी प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष अनुभूति अपने को भी होती है और अन्य आत्माओं को भी होती है। ऐसे ही हम जब निरन्तर बाप की याद में होंगे तो उस अनुसार हमारे से वायबेशन पैदा होगा, जिससे देखने और सम्पर्क में आने वाली आत्माओं को भी बाप की याद आयेगी और उनको हमारे से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष बाप का साक्षात्कार होगा। बाप की याद आना भी एक प्रकार का साक्षात्कार ही है। अपने फरिश्ता स्वरूप की स्मृति और बाप की अव्यभिचारी याद से अपनी और अन्य आत्माओं की सेवा स्वत: होती है।

''अभी रहे हुए थोड़े समय में निरन्तर योगी, निरन्तर सेवाधारी, निरन्तर साक्षात्कार स्वरूप, निरन्तर साक्षात् बाप - इस विधि से सिद्धि प्राप्त करेंगे। ... अभी चलते-फिरते इसी अनुभव में चलो कि मैं फरिश्ता सो देवता हूँ। दूसरों को भी आपकी इस समर्थ स्मृति से आपका फरिश्ता

रूप वा देवी-देवता रूप ही दिखाई देगा।'' अ.बापदादा 18.2.86

''अभी युद्ध में समय नहीं गँवाओ। विजयीपन के संस्कार इमर्ज करो। ... दान दो, वरदान दो तो स्व का ग्रहण स्वत: ही समाप्त हो जायेगा। अविनाशी लंगर लगाओ क्योंकि समय कम है और सेवा आत्माओं की, वायुमण्डल की, प्रकृति की, भूत-प्रेत आत्माओं की, सबकी करनी है। उन भटकती हुई आत्माओं को भी ठिकाना देना है।... हर आत्मा को मुक्ति वा जीवनमुक्ति देनी ही है।'' अ.बापदादा 18.2.86

Q. रावण राज्य क्या है, जिसके आने से आत्मा वाम मार्ग अर्थात् विकारी मार्ग में चली जाती है और विकार में जाने से दुखी हो जाती है? विकार में जाने से रावण राज्य शुरू होता है या रावणराज्य में आने से विकार में जाते हैं?

देहाभिमान ही रावण है। सतयुग-त्रेता में आत्माओं को देह का भान तो था परन्तु देहाभिमान नहीं था, जिससे आत्मा अपनी आत्मिक शक्ति से स्थूल-सूक्ष्म कर्मेन्द्रियों पर नियन्त्रण रखती थी और उनको चलाती थी परन्तु धीरे-धीरे आत्मिक शक्ति का ह्रास होता गया और देह का भान बढ़ता गया, जिससे वह देह का भान देहाभिमान का रूप हो गया और द्वापर आदि में वह देहाभिमान आत्मा पर हावी हो गया। देहाभिमान आने से आत्मा वाम मार्ग अर्थात् विकार में चली जाती है। देहाभिमान का आत्मा पर हावी होना और आत्मा का विकार में जाना, भोगबल से सन्तानोत्पत्ति ही रावण राज्य का आरम्भ है, जो देहाभिमान के आत्मा पर हावी होने से होता है। रावणराज्य का आरम्भ और काम-विकार में जाने का विधि-विधान दोनों एक साथ ही आरम्भ होते हैं या कहें कि एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। काम विकार आत्मा के दुख का मूल कारण है।

''बाबा कहते हैं मैं तुमको पावन बनाकर जाता हूँ फिर तुमको पतित कौन बनाते हैं? रावण। ... देहाभिमान आने से विकारों के वश हो जाते हैं। उसको आसुरी मत कहा जाता है।... पावन बनाने के लिए पतित-पावन बाप को आना पड़ता है।''

सा.बाबा 9.4.05

''बाप कल्प-कल्प आकर समझाते हैं, देही-अभिमानी बनाते हैं। अपने को आत्मा समझो। तुम आत्मा हो, न कि देह। ... देहाभिमानी बनने से तुम्हारे से पाप हुए हैं। अब तुमको देही-अभिमानी बनना है।'' सा.बाबा 8.4.05

''आत्मा विकारी मार्ग में जाती ही तब है, जब रावणराज्य शुरू होता है। सतयुग में रावणराज्य ही नहीं तो विकार हो कैसे सकता। वहाँ है ही योगबल। भारत का राजयोग

मशहूर है। ... एक बार चिन्मियानन्द कह दे कि सचमुच भारत का प्राचीन राजयोग सिवाए ब्रह्माकुमारियों के कोई सिखला नहीं सकते, तो बस। परन्तु ऐसा कायदा नहीं है जो अभी यह आवाज़ हो।'' सा.बाबा 20.9.04 रिवा.

Q. भक्ति मार्ग में मरने के बाद शरीर की जो रस्म-रिवाज, क्रिया-कर्म, संस्कार आदि करते हैं, वह किसको फॉलो करते हैं?

ये संगमयुग ही सर्वाधिक महत्वपूर्ण है और सारे कल्प के रीति-रिवाजों, विधि-विधानों का बीज संगमयुग पर ही पड़ता है, जिसकी यादगार भक्ति मार्ग में अपनाते हैं। भक्ति मार्ग में भी जो क्रिया-कर्म, संस्कार आदि करते हैं, वे सब इस संगमयुग पर ब्राह्मणों द्वारा किये गये क्रिया-कर्मों, संस्कारों को ही फॉलो करते हैं। भले अज्ञानता या विस्मृति के कारण उनके विधि-विधानों और रूप में महान अन्तर हो जाता है।

''सतयुग में शरीर की क्या वेल्यू होगी। आत्मा चली गई, शरीर चण्डाल के हाथ में दे दिया, वह रस्म-रिवाज के अनुसार जला देंगे।... यहाँ तो कितना करते हैं। ब्राह्मण खिलाते हैं, यह करते हैं। वहाँ यह कुछ होता नहीं।'' सा.बाबा 25.10.04 रिवा.

Q. क्या भक्ति से सृष्टि नर्क बनती है या नर्क बनने से भक्ति आरम्भ होती है?

द्वापर से देहाभिमान के प्रभावी होने के कारण विकारों की प्रवेशता होती है और सृष्टि नर्क बन जाती है। विकारों के कारण आत्मा के कर्म गिरते हैं, जिनके फल स्वरूप आत्मा को दुख-अशान्ति की अनुभूति होती है, उस दूख-अशान्ति से मुक्त होने के लिए आत्मायें भगवान को याद करती हैं अर्थात् भक्ति करना आरम्भ करती हैं। वास्तव में भक्ति से तो आत्मिक शक्ति के पतन की गति मन्द होती है परन्तु भक्ति से दुनिया नर्क नहीं बनती है। नर्क तो आत्मिक शक्ति के ह्रास से आत्मा का देह के वश होना अर्थात् देहाभिमान के कारण विकारों की प्रवेशता से बनता है क्योंकि नर्क का आरम्भ तो त्रेता के अन्त और द्वापर आदि से ही हो जाता है उस समय तक तो आत्माओं ने भक्ति आरम्भ ही नहीं की है। भक्ति का तो आरम्भ ही तब होता है, जब आत्मायें नर्क में आकर दुखी होने लगती हैं।

संगम पर भक्ति सहित पुरानी दुनिया से वैराग्य होता है और ज्ञान मार्ग में प्रभु-प्यार का यथार्थ अनुभव होता है। भक्ति मार्ग में संगमयुग के प्रभु-प्यार की अनुभूति की स्मृति से अल्प-काल का सुख अनुभव होता है। बाबा ने कहाँ-कहाँ कहा है कि भक्ति से दुनिया नर्क बन जाती है, उसमें बाबा के कहने का भाव-अर्थ क्या है, वह भी समझने की बात है। बाबा के कहने का अर्थ है कि भक्ति से आत्मा की चढ़ती कला नहीं होती है, इसलिए भक्ति में फंसी हुई आत्माओं को

भक्ति से छुड़ाने के लिए बाबा यह बात कहते हैं क्योंकि भक्ति करते रहेंगे तो ज्ञान को पूरा उठा नहीं सकेंगे और नीचे ही गिरते रहेंगे।

''कई बच्चे इन्हीं सूक्ष्म वतन की बातें में कुछ ज्यादा चटक गये थे तो उनको छुड़ाने के लिए साकार में कहते थे कि यह सूक्ष्मवतन है ही नहीं। तो यह भी बच्चों को इस बात से बुद्धि हटाने के लिए कहा गया था लेकिन इसका भाव यह नहीं है कि अगर बच्चों से चीज छिपाई जाती है तो वह चीज खत्म हो जाती है। ... अभी तो सूक्ष्मवतन में ही अव्यक्त रूप से स्थापना का कार्य चलता रहेगा।'' अ.बापदादा 2.2.69

जैसे बाबा ने सूक्ष्मवतन की बातों के विषय में कहा है, ऐसे ही भक्ति से बुद्धियोग हटाने के लिए बाबा ये बात कहते हैं। वास्तव में तो भक्ति करने वालों के संस्कार भक्ति न करने वालों से अच्छे होते हैं।

Q. ज्ञान धन शिवबाबा से मिलता है या ब्रह्मा बाबा और सरस्वती मां से ? यदि शिवबाबा से ही ज्ञान मिलता है तो ब्रह्मा-सरस्वती से क्या मिलता है ?

ज्ञान का सागर शिवबाबा ही है, इसलिए ज्ञान धन शिवबाबा से ही मिलता है। ब्रह्मा बाबा और सरस्वती मां उस ज्ञान धन को धारण कर सहज करके हमको देते हैं, जिससे हम उस ज्ञान को सहज समझ सकते हैं और वे अपना अनुभव रूपी धन भी देते हैं, जिससे शिवबाबा से दिये गये ज्ञान धन को हम धारण करने में समर्थ होते हैं। इसलिए साकार और निराकार दोनों का महत्व है। हमको ब्रह्मा बाबा के समान पुरुषार्थ करके शिवबाबा के समान निराकारी स्थिति बनानी है। ब्रह्मा बाबा और सरस्वती माँ हमारी पालना कर हमारा बुद्धियोग शिवबाबा के साथ जुटाते हैं।

''जिसमें मैंने प्रवेश किया है, इनकी आत्मा में तो जरा भी यह नॉलेज नहीं थी। मैं इस तन में प्रवेश करता हूँ, इसलिए इनको भाग्यशाली रथ कहा जाता है। ... अभी तुम समझते हो हम सब बाबा और मम्मा के बच्चे हैं, उनसे हमको अथाह धन मिलता है।''

सा.बाबा 16.11.04 रिवा.

Q. अभी क्या2 साइन दिखाई देते हैं और दिखाई देंगे, जो सतयुग में काम आने वाले हैं ?

सतयुग में आत्मा जब आती है तो सम्पूर्ण-सम्पन्न-सन्तुष्ट-प्रसन्न स्थिति में होती है, तो वह सम्पूर्णता, समपन्नता, सनतुष्टता, प्रसन्नता, निर्भयता, परसपर प्रेम भाव, इन्द्रियजीत आदि के चिन्ह यहाँ ही ब्राह्मण जीवन में दिखाई देंगे। कौन क्या बनने वाला है, वह संस्कार भी यहाँ ही प्रत्यक्ष होंगे।

''होशियार होते जायेंगे, फिर वह होशियारी लेकर जायेंगे। ... अपने देश के नजदीक आते हैं तो झाड़ आदि दिखाई पड़ते हैं। तुमको भी पिछाड़ी में साक्षात्कार होते रहेंगे।''

सा.बाबा 24.11.04 रिवा.

Q. व्यर्थ संकल्पों का मूल कारण है क्यों-क्या की क्यू - तो ये क्यों-क्या की क्यू कैसे समाप्त हो ?

Q. क्यों की क्यू खत्म होगी तब ड्रामा की भावी पर एकरस होंगे या ड्रामा की भावी पर एकरस होंगे तब क्यों-क्या की क्यू खत्म होगी ?

ये भी एक विचारणीय प्रश्न है। विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान की धारणा और आत्मिक स्वरूप की स्थिति का सफल अभ्यास ही क्यों-क्या की क्यू का एकमात्र समाधान है। इसलिए ही बाबा ने हमको इस विश्व-नाटक का ज्ञान दिया है और उसके गुह्य राज़ों को आज भी समझाते रहते हैं। वैसे तो दोनों बातें एक दूसरे पर आधारित हैं और एक-दूसरे की पूरक हैं। क्यों-क्या के व्यर्थ संकल्पों को नियन्त्रित करके आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर परमात्मा की याद का अभ्यास करेंगे तो ज्ञान की धारणा होगी और ड्रामा के ज्ञान को विचार-सागर मन्थन करके समझेंगे तो क्यो-क्या के व्यर्थ संकल्पों को सहज नियन्त्रित कर सकेंगे।

''एक शब्द जिसमें व्यर्थ संकल्पों का बीज आ जाये। व्यर्थ संकल्प वा विकल्प जो चलते हैं तो एक ही शब्द बुद्धि में आता है कि यह क्यों हुआ। क्यों से व्यर्थ संकल्पों की क्यू शुरू हो जाती है। ... इस क्यू की समाप्ति के बाद ही सम्पूर्णता आयेगी। फिर क्यू लगेगी। जब क्यों शब्द निकलेगा फिर ड्रामा की भावी पर एकरस स्थीरियम रहेंगे।''

अ.बापदादा 5.3.70

Q. फेथफुल बनने का भाव-अर्थ क्या है ?

फेथफुल अर्थात् हमको अपने में पूरा फेथ, बाप में पूरा फेथ अर्थात् बाप के हर महावाक्य में निश्चयबुद्धि हो और बाप का भी मेरे में पूरा फेथ हो। साथ ही हमारा दैवी परिवार में भी फेथ हो और दैवी परिवार का भी मेरे में पूरा फेथ हो, तब कहेंगे फेथफुल।

हिम्मत है लेकिन फेथ नहीं है। फेथफुल के बोल ऐसे नहीं होते। फेथफुल का अर्थ ही है निश्चयबुद्धि। मन, वचन, कर्म हर बात में निश्चयबुद्धि। सिर्फ ज्ञान और बाप के परिचय में निश्चयबुद्धि नहीं लेकिन उसका संकल्प भी निश्चयबुद्धि का हो।

''जितना नॉलेजफुल होगा, उतना ही वह सक्सेसफुल होगा। सक्सेसफुल न होने का कारण क्या है ? फेथफुल कम। फेथफुल अर्थात् निश्चयबुद्धि। अपने में, बापदादा में और सर्व परिवार

की आत्माओं में फेथफुल होना पड़ता है। ... सक्सेस तो होती है लेकिन सक्सेसफुल हैं ?''

अ.बापदादा 11.7.70

Q. परमात्मा मनुष्य सृष्टि का ही बीजरूप है या सर्व योनियों की आत्माओं का बीजरूप है ? यदि मनुष्य आत्माओं का ही बीजरूप है तो अन्य योनि की आत्माओं का बीजरूप कौन है ?

वास्तव में परमात्मा सारी सृष्टि का बीजरूप है, जिसमें सर्व योनियों की आत्मायें भी आ जाती हैं। मनुष्य संसार का सबसे श्रेष्ठ, बुद्धिमान, चिन्तनशील प्राणी है, जिसके कारण उसके कर्म-संस्कारों, क्रिया-कलापों का प्रभाव सारे विश्व की सर्वात्माओं पर पड़ता है। इसलिए अन्य सर्व योनियों की आत्माओं का उत्थान-पतन भी मनुष्यों पर ही आधारित है। इसलिए परमात्मा मनुष्य तन में आकर मनुष्यों को ही सुधारते हैं। मनुष्य के सुधरने से अन्य सर्व आत्माओं का सुधार स्वत: ही हो जाता है। परमात्मा ने अनेक बार कहा है - परमात्मा सर्व आत्माओं का पिता है तो सर्व में तो सर्व आत्मायें आ जाती हैं, चाहे वे किसी भी योनि की हों परन्तु वे सृष्टि नया बीजारोपण करने अर्थात् कलम लगाने आते मनुष्य तन में हैं। वैसे तो परमात्मा को सर्व आत्माओं का पिता कहा जाता है और ब्रह्मा को सर्व धर्मों का आदि पिता पितामह कहा जाता है लेकिन वे सर्व धर्मों की स्थापना तो नहीं करते है, परन्तु वे जो धर्म स्थापन करते हैं, उनसे ही सर्व धर्म रूपी शाखायें निकलती हैं। ऐसे अन्य योनि की आत्माओं का भी मनुष्य योनि की आत्माओं से और परमपिता परमात्मा से सम्बन्ध है।

Q. बीजरूप स्थिति क्या है और अव्यक्त स्थिति क्या है अर्थात् दोनों एक स्थिति के ही पर्याय हैं या दोनों में कोई मूलभूत अन्तर है ?

बीजरूप स्थिति अर्थात् अपने निराकार स्वरूप में स्थित होना और उस स्थित में स्थित होकर बीजरूप निराकार परमात्मा बाप की याद में स्थित होना, जो निर्संकल्प अवस्था है और अव्यक्त स्थिति अर्थात् अव्यक्त रूप अर्थात् फरिश्ता रूप में स्थित होकर फरिश्ता स्वरूप बाप की याद में स्थित होना या अव्यक्त फरिश्ता स्वरूप बाप की याद से अव्यक्त फरिश्ता स्वरूप में स्थित होना और अव्यक्त रूप में निराकार बाप को याद करना। आत्मा के देह में रहते देह से न्यारी बीजरूप स्थिति परम शान्तिमयी है और अव्यक्त स्थिति परमानन्दमयी है। अव्यक्त स्थिति ही साक्षी-दृष्टा की स्थिति है, जो परम सुखमय है। जीवन में सफलता के लिए दोनों रूपों में परमात्मा पिता को याद करना अति आवश्यक है।

''अच्छा सारे दिन में अव्यक्त स्थिति कितना समय रहती है ? बिन्दु रूप के लिए नहीं पूछते हैं, अव्यक्त स्थिति कितना समय रहती है ?... अव्यक्त स्थिति के लिए कह रहे हैं। अव्यक्त

स्थिति आठ घण्टा बनाना बड़ी बात नहीं है। अव्यक्त की स्मृति अर्थात् अव्यक्त स्थिति।''

अ.बापदादा 18.6.70

Q. सृष्टि-चक्र और जीवन में सुख-दुख, पुण्य-पाप के संचित का क्रम क्या और कैसे चलता है ?

सतयुग-त्रेतायुग में	**द्वापर-कलियुग में**	**संगमयुग पर**
पुण्य - सुख	पुण्य - सुख, प्लस माइनस	पुण्य - सुख , प्लस माइनस
पुण्य का	पुण्य -पाप, जिससे	पुण्य -पाप , पुण्य और सुख का खाता
पाप औरदुख	प्लस होता है	घटता जाता है प्लस होता है
नेचुरल	नेचुरल	पुरुषार्थ से

अर्थात् सतयुग-त्रेतायुग में जितना सुख का उपभोग करते, उतना संगमयुग पर जमा किये हुए पुण्य के खाते से वह माइनस होता रहता है। जो क्रिया स्वभाविक अर्थात् नेचुरल चलती है।

द्वापर-कलियुग में जो बचा हुआ पुण्य का खाता होता है, उससे जो सुख भोगते, वह माइनस होता रहता है और देहाभिमान के वश जो विकर्म करते, उससे पाप का खाता प्लस होता जाता अर्थात् बढ़ता जाता है और जो भक्ति आदि करते, उससे पाप का खाता कुछ कम भी होता है अर्थात् पाप का खाता प्लस और माइनस दोनों होता है परन्तु नेट रिजल्ट में पाप का अर्थात दुख का खाता प्लस होता रहता है। द्वापर-कलयुग में भी ये क्रिया स्वभाविक चलती है।

संगमयुग पर जो बचा हुआ पुण्य का खाता होता है, उससे जो सुख भोगते हैं, वह माइनस जरूर होता है परन्तु परमात्मा से प्रापत ज्ञान-योग-धारणा-सेवा से पुण्य का खाता जमा होता है, साथ ही देहाभिमान पूरा मिटा तो होता नहीं है, इसलिए कुछ विकर्म भी होते हैं, जिससे जमा के खाते से कुछ माइनस भी होता रहता है परन्तु नेट रिजल्ट में पुण्य का खाता जमा ही होता है अर्थात् बढ़ता ही जाता है। संगमयुग पर ये क्रिया पुरुषार्थ से होती है।

Q. विकार आत्मा में हैं या शरीर में अर्थात् विकारी आत्मा बनती है या शरीर ? क्यों और कैसे ?

रचता आत्मा है, आत्मा ही अपने स्वरूप को भूलने के कारण देहाभिमानी बनती है, जिससे

उसमें विकारों की प्रवेशता होती है। आत्मा के संकल्पों के कारण ही शरीर में ग्रन्थियां रस स्राव करती हैं अर्थात् ऐसे द्रव्य पैदा होते हैं, जो काम-विकार आदि के कारण बनते हैं। आत्मा ही विकारों के वशीभूत अयुक्त खान-पान, व्यवहार, संग आदि करती, जिससे ऐसे संकल्प चलते हैं, जिससे शरीर में वे द्रव्य पैदा होते हैं। इसलिए सत्यता ये है कि आत्मा में ही विकार रहते हैं और वे विकारी संस्कार आत्मा मृत्यु के बाद भी अपने साथ नये जन्म में ले जाती है। यदि शरीर में विकार होते तो शरीर के साथ ही जल जाते और आत्मा नये जन्म में सम्पूर्ण निर्विकारी होती परन्तु देखा गया है कि बचपन से विकारों की दुर्गन्ध जीवन में आने लगती है, जो सिद्ध करती है कि विकार आत्मा में ही हैं।

Q. पूरे 84 जन्म कौन लेते हैं और कैसे ?

84 जन्म तो सतयुग के आदि में आने वाली सभी आत्मायें लेती हैं परन्तु 84 जन्मों का पूरा समय एक ब्रह्मा बाबा का ही होता है, उनके बाद हर आत्मा के 84 जन्म के समय में कुछ न कुछ समय कम तो अवश्य हो जायेगा।

''यह 84 जन्मों की कहानी है। भगवानुवाच है ना अर्जुन के प्रति कि तुम अपने जन्मों को नहीं जानते हो। एक को ही क्यों कहते हैं ? क्योंकि एक की गॉरन्टी है। ... सब बच्चे तो पूरे 84 जन्म लेने वाले नहीं हैं। ... इनकी तो सर्टेन है। ... मैं इनके लिए कहता हूँ, जिनके लिए तुमको भी सर्टेन है।''

सा.बाबा 19.2.05 रिवा.

Q. शिवबाबा कब आता है अर्थात् उस समय को कौनसा समय कहा जायेगा ?

शिवबाबा न स्वर्ग में आता है और न नर्क में आता है, वह संगमयुग पर आता है अर्थात् उनके आने से ही संगमयुग आरम्भ हो जाता है और नर्क के विनाश की तैयारी आरम्भ हो जाती है अर्थात् उनके आने से ही नर्क का विनाश और स्वर्ग की स्थापना का कार्य आरम्भ हो जाता है।

''तुम स्वर्ग में जाते हो, जिसकी बाबा स्थापना करते हैं। बाप खुद उस स्वर्ग में नहीं आते। खुद तो वाणी से परे वानप्रस्थ में जाकर रहते हैं। स्वर्ग में उनकी दरकार नहीं है। वह तो सुख-दुख से न्यारें हैं। तुम तो सुख में भी आते हो, तो दुख में भी आते हो।''

सा.बाबा 28.3.05 रिवा.

Q. सतयुग में नम्बरवार महल बनायेंगे, साधन-सम्पत्ति की प्राप्ति भी नम्बरवार होगी, फिर भी सब सुखी होंगे, तो उसका आधार क्या होगा ?

ये सृष्टि कर्म और फल का एक खेल है, जहाँ हर आत्मा को उसके कर्मों अनुसार ही फल मिलता है और कर्म ड्रामा अनुसार अर्थात् संस्कारों के अनुसार होता है। सतयुग-त्रेता में भी हर

आत्मा को साधन-सम्पत्ति की प्राप्ति उसके संगमयुग के कर्मों अनुसार ही होती है परनतु सतयुग-त्रेता का विधि-विधान है कि आत्मा को कर्मों अनुसार जितनी प्राप्ति होती है, उस अनुसार ही उसकी इच्छायें और आशायें होती हैं और उतनी ही बुद्धि आत्मा को होती है, जिससे आत्मा की इच्छाओं और प्राप्तियों में पूर्ण सन्तुलन होता है, जिससे हर आत्मा अपनी उन प्राप्तियों में ही सन्तुष्ट और प्रसन्न रहती है, इसलिए विभिन्न आत्माओं की प्राप्ति का अन्तर होते भी आत्मा को अन्तर की महसूसता नहीं होती है। आत्मा की इच्छायें और प्राप्तियों में सन्तुलन ही आत्मा के सुख का आधार है और असन्तुलन दुख का कारण बनता है। वर्तमान में आत्माओं की इच्छायें-आशायें अधिक हैं, प्राप्तियां कम हैं, इसलिए सभी आत्मायें दुखी रहती हैं। अनेक धन-सम्पत्ति से सम्पन्न व्यक्ति भी गरीबों की तरह ही दुखी होते रहते हैं और कई तो गरीबों से भी अधिक दुखी रहते हैं क्योंकि उनकी इच्छायें-आशायें-आकांक्षायें अधिक हैं। एक विशेष बात ध्यान देने योग्य है कि इच्छायें और आवश्यकतायें ही अविष्कारों की जननी हैं, इसलिए कलियुग में अनेक प्रकार के अविष्कार होते हैं, जिनसे सतयुग का निर्माण होता है और सतयुग में भी काम आते हैं जबकि सतयुग-त्रेता में देवतायें उन सबको पूरा कर देते हैं।

''कर्मो का हिसाब-किताब है ना। ... फर्क तो वहाँ भी रहता है ना। कोई सोने के महल बनायेंगे, कोई चाँदी के, कोई ईटों के भी बनायेंगे।'' सा.बाबा 7.4.05 रिवा.

Q. आत्माओं के ऊंच-नीच बनने का राज़ क्या है?

वास्तव में इस विश्व-नाटक में ऊंच-नीच की भावना का कोई स्थान नहीं है क्योंकि हर आत्मा का पार्ट पूर्व निश्चित है और सर्व आत्मायें ऊंच से ऊंच सर्वशक्तिवान परमात्मा की प्रिय सन्तान हैं। हर एक आत्मा अपना पूर्व निश्चित पार्ट बजा रही है और बजाना ही है परन्तु ये विश्व-नाटक कर्म और फल पर आधारित एक खेल है, इसलिए ऊंच-नीच बनने का आधार आत्मा के अपने ही कर्म हैं परन्तु कर्म ड्रामा अनुसार होते हैं और कर्मों अनुसार फल मिलता है क्योंकि ये विश्व-नाटक में कर्म और फल का अनादि-अविनाशी विधान नूँधा हुआ है। जो आत्मा अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होगी, उसको ऊंच-नीच की कोई महसूसता नहीं आयेगी, इसलिए सतयुग-त्रेतायुग में ऊंच-नीच पार्ट अर्थात ऊंच-नीच कर्म होते हुए भी, उसकी महसूसता नहीं होती है। ऊंच-नीच की महसूसता देहाभिमान के कारण होती है, इसलिए परमात्मा पिता हमको देहाभिमान से मुक्त कर देही-अभिमानी बनाते हैं। देही-अभिमानी आत्मा में अहंकार और हीनता दोनों ही नहीं होते हैं, इसलिए उसकी दृष्टि में ऊंच-नीच का कोई भेद उत्पन्न नहीं होता

है। ऊंच-नीच की भावना का उत्पन्न होना भी आत्मा की अज्ञानता का प्रतीक है अर्थात् अज्ञानता को सिद्ध करता है।

Q. क्या ज्ञान में भी अव्यभिचारी और व्यभिचारी स्थिति होती है ? यदि नहीं तो कैसे और हाँ तो क्यों और कैसे ?

विचारणीय विषय है - शिवबाबा के ज्ञान की है साकार और अव्यक्त मुरली परन्तु अन्य भाई बहनों के क्लास में मुरली से भी अधिक रस लेना, उनका फोटो आदि रखना अव्यभिचारी ज्ञान कहेंगे या व्यभिचारी ? बाहर के साहित्य का पठन-पाठन और उनके प्रति श्रृद्धा को व्यभिचारी ज्ञान कहेंगे या अव्यभिचारी ?

अव्यभिचारी स्थिति में एक परमात्मा की ही याद रहेगी। जो क्लास या साहित्य एक परमात्मा की याद में स्थित करे या उसकी याद दिलाये अर्थात् उसको सुनने से एक परमात्मा की ही याद आये, उसको ही अव्यभिचारी स्थिति या अव्यभिचारी ज्ञान कहेंगे। यदि हमारी बुद्धि का योग क्लास कराने वाले या उसको लिखने वाले के नाम-रूप में जाता है, तो उसको व्यभिचारी स्थिति कहेंगे। इसलिए बाबा ने किसी भी देहधारी को याद करने या उसका फोटो आदि रखने की मना की है। बाबा ने तो साकार मम्मा-बाबा के फोटो रखने की भी मना की है। बाबा ने अनेक बार कहा है, शिवबाबा को भूलकर इनको भी याद करते तो वे व्यभिचारी हैं। उनके विकर्म विनाश हो नहीं सकते।

''भक्ति भी पहले अव्यभिचारी होती है। एक शिवबाबा को ही याद करते हैं। ... तुम एक बाप से सुनो, अव्यभिचारी ज्ञान सुनो। और कोई से जो सुनेंगे, वह है झूठ।''

सा.बाबा 21.4.05 रिवा.

Q. क्या मीरा स्वर्ग में आयेगी, क्या वह ज्ञान में आयेगी ?

विवेक कहता है कि मीरा को श्रीकृष्ण से प्यार था, कृष्ण के प्यार में इतना सब सहन किया तो जरूर ज्ञान में आयेगी और ज्ञान को धारण कर स्वर्ग में भी आयेगी। सृष्टि के नियमानुसार जिसने बैकुण्ठ का अनुभव नहीं किया, श्रीकृष्ण या परमात्मा के प्यार का अनुभव नहीं किया, वह उसके लिए इतना सहन करे, ये सम्भव नहीं है। बाबा ने कहा है - जो शिव के भक्त होंगे, देवताओं के भक्त होंगे, वे ही ये ज्ञान अच्छी रीति सुनेंगे और धारण करेंगे। यदि कहीं पर बाबा ने ये कहा भी है कि मीरा स्वर्ग में नहीं आयेगी तो इसी सन्दर्भ में कहा है कि उसने साक्षात्कार किया, कृष्ण की भक्ति की, कृष्ण के साथ साक्षात्कार में डांस किया - उस पुरुषार्थ से स्वर्ग में नहीं आयेगी। परन्तु बाबा ने अनेक बार कहा है कि शिव के भक्त, देवताओं के

भक्त ही ज्ञान में पहले आयेंगे। शिवबाबा आकर भक्ति का फल ज्ञान देता है और ज्ञान का फल स्वर्ग मिलता है।

''साक्षात्कार है खेलपाल। मीरा ध्यान में खेलती थी, उनको ज्ञान नहीं था। मीरा कोई बैकुण्ठ में गई नहीं। यहाँ ही कहाँ होगी। इस ब्राह्मण कुल की होगी तो यहाँ ही ज्ञान लेती होगी। ऐसे नहीं कि डांस किया तो बस बैकुण्ठ में चली गई।''

सा.बाबा 11.5.05 रिवा.

Q. क्या यथार्थ में विश्व में मनुष्यों की वृद्धि हो रही है और जानवरों की संख्या कम हो रही है?

विवेक कहता है कि ऐसा होना नहीं चाहिए क्योंकि आत्मा अविनाशी है तो जानवरों की आत्मायें भी अविनाशी हैं, इसलिए उनकी संख्या कम हो नहीं सकती। ये सम्भव है कि पहले जो जानवर किसी एक छोटे से भूभाग में थे, वे विश्व के अन्य अनेक भूभागों में चले गये हो क्योंकि दूनिया में अनेक भूभाग बाद में अस्तित्व में आये हैं। इसलिए उन जानवरों की आत्मायें भी सारे विश्व में इधर-उधर कहाँ न कहाँ जन्म लेते ही होंगे।

बाबा आत्माओं तो क्या तत्वों को भी सतोप्रधान बनाते हैं। तो पशु योनियों की आत्माओं को क्यों नहीं पावन बनायें गे और वे क्यों नहीं परमधाम जायेंगी।

Q. मरजीवा स्थिति या जीते जी मरने की स्थिति क्या और कैसी है?

मरजीवा अर्थात् जीते जी मरना। यह स्थिति दो प्रकार की है। एक - जीते जी लौकिक परिवार, सम्बन्धों से मरकर बेहद के बाप के बन जाना और ईश्वरीय सम्बन्ध में आ जाना। दूसरी स्थिति - देह और देह की दुनिया को भूलकर निर्संकल्प होकर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थति हो जाना, जिसके लिए बाबा ड्रिल मराते हैं। इसी स्थिति को हठयोग में शवासन के रूप में और निर्संकल्प समाधि के रूप में अभ्यास करते हैं। जिसके लिए बाबा कछुये का मिसाल भी देते हैं। लौकिक दुनिया में भी जब कोई किसी दूसरे के बच्चे को गोद लेते हैं तो वह भी मरजीवा जन्म ही होता है क्योंकि बचचा जीते जी एक माँ-बाप को छोड़कर दूसरे का बन जाता है ओर उसको उत्तराधिकार में भी वैधानिक मान्यता मिल जाती है।

Q. बहुत सी बातों के विषय में बाबा दुनिया वालों की बातों का या धर्मों का उदाहरण देते हैं, तो उन बातों का उद्गम कहाँ से है अर्थात् उसकी आदि दुनिया वालों से हुई या बाबा ने की?

सबका बीज ज्ञान का सागर परमात्मा है, वह जो संगमयुग पर आकर सुनाता है, उन सुनी हुई बातों के आधार पर दुनिया वाले भक्ति मार्ग में अंशमात्र सुनाते हैं, जिसके लिए बाबा कहते हैं

- उसमें आटे में नमक के समान सत्य है। इसलिए सब प्रकार की बातों का उद्गम परमात्मा से ही होता है। वैसे तो इस सृष्टि का सारा खेल ही अनादि-अविनाशी है और चक्रवत् चलता है, इसलिए एक का आधार दूसरा बनता है।

Q. सहज में ब्रह्मचर्य की धारणा कैसे हो ?

ब्रह्मचर्य की धारणा कैसे हो ? ये तो दूर का प्रश्न है परन्तु आत्मिक स्वरूप में स्थित स्वराज्य अधिकारी आत्मा को काम विकार का संकल्प भी उत्पन्न नहीं हो सकता और देहाभिमानी आत्मा ब्रह्मचर्य की धारणा की कल्पना भी नहीं कर सकता है। सन्यासी आदि भी ब्रह्मचर्य की जो धारणा करते हैं, उसका आधार भी आत्म-कल्याण के संकल्प की दृढ़ता ही है इसलिए पुरुषार्थ ब्रह्मचर्य की धारणा का नहीं लेकिन आत्मिक स्वरूप में स्थित होने के पुरुषार्थ का है। जब आत्मिक स्वरूप में स्थित होंगे तो ब्रह्मचर्य की धारणा स्वतः ही होगी।

अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित आत्मा की दृष्टि-वृत्ति-स्मृति स्वतः पवित्र, खान-पान, व्यवहार स्वभाविक संतुलित और शुद्ध रहता है, इसलिए उसके लिए ब्रह्मचर्य की धारणा सहज और स्वतः होती है। परन्तु विचारणीय ये है कि आत्मिक स्वरूप की स्थिति के अभ्यास के लिए भी पहले ब्रह्मचर्य व्रत का पालना करना ही पड़ता है, भले ही वह हठ से ही क्यों न हो। इस सृष्टि का हर खेल चक्रवत् है और आत्मिक स्वरूप का अभ्यास और ब्रह्मचर्य की धारणा का पुरुषार्थ दोनों ही आवश्यक हैं।

Q. कब से राम को भूले हैं अर्थात् कब से रावण ने राम को भुलाया है ?

''अभी तुम रावण पर विजय पा रहे हो। जो पूरी विजय पायेंगे, वे ही रामराज्य के मालिक बनेंगे। ... रावण ने ही पहले-पहले अलफ से भुलाया है, फिर अलफ की मदद से हम रावण पर जीत पाते हैं।'' सा.बाबा 5.2.07 रिवा.

बाबा के उपर्युक्त महावाक्यों पर विचार करो कि रावण कब से आया और कब से हम राम को भूले। क्योंकि राम को तो हम सतयुग की आदि से भी भूल जाते हैं परन्तु राम का वर्सा सुख-शान्ति होने के कारण उनको याद करने की दरकार नहीं रहती है। वास्तव में देहभान ही देहाभिमान अर्थात् रावण का बीज है परन्तु सतयुग-त्रेता को रावणराज्य नहीं कह सकते हैं क्योंकि वह राम का वर्सा है, स्वर्ग है।

Q. नग्न सभ्यता का प्रादुर्भाव कहाँ से और किसके द्वारा हुआ अर्थात् किस धर्म की आत्माओं ने इस सभ्यता को जन्म दिया होगा ?

वास्तव में जब द्वापर के आदि में देवतायें वाम मार्ग में जाते हैं तो अर्थ-क्वेक आदि होती है, जिससे दैवी सभ्यता के अवशेष भी नष्ट हो जाते हैं, अनेक भूभाग अपने मूल भूभाग से कट जाते हैं, जिससे दैवी धर्मवंश की आत्मायें ही उन भूभागों में इस स्थिति में आ जाती हैं और विस्तार को पाती रहती हैं, फिर जब अन्य धर्म अर्थात् क्रिश्चियन आदि विस्तार को पाते हैं तो वे ऐसे स्थानों का पता लगाकर अपने धर्म का प्रचार-प्रसार उनके बीच में करके, उनको अपने धर्म में परिवर्तन कर लेते हैं। इस प्रकार देखा जाये तो नग्न सभ्यता भी परिस्थितियों वश देवी-देवता धर्म वंश की आत्माओं से ही आरम्भ हुई होगी और उससे तथा उसमें ही अन्य धर्म वंशों की स्थापना और विस्तार हुआ होगा।

''जो भी आत्मायें पहले-पहले आती हैं, वे सुख में ही आती हैं। क्रिश्चियन्स के लिए भी कहते हैं - जंगल में रहते थे, पत्ते पहनते थे, विकार की दृष्टि नहीं थी। सभी सुखी रहते थे क्योंकि पहला समय सतोप्रधान, फिर रजो, फिर तमो में आते हैं।''

सा.बाबा 26.4.07 रिवा.

Q. प्रिन्स बनने के लिए बेगर बनना क्यों आवश्यक है ?

इस विश्व-नाटक में न कुछ अपना है और न ही पराया है। सभी साधन-सम्पत्ति पार्ट बजाने के लिए मिली है। जो आज अपनी है, वह कल पराई हो जायेगी और पराई अपनी हो जायेगी। जो इस सत्य को जानकर सबसे ममत्व निकाल लेगा, वही निर्संकल्प होकर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर एक परमात्मा की याद में स्थित हो सकेगा और वही अन्य आत्माओं को भी आत्मिक स्वरूप का अनुभव कराकर उनकी सेवा कर सकेगा और जो सेवा करेगा, वही तो राजा बनेंगा अर्थात् प्रजा बनायेगा तब तो राजा बनेंगा। इसलिए प्रिन्स बनने के लिए शिवबाबा की श्रीमत पर बेगर बनना अति आवश्यक है। जो बेगर नहीं बनेगा, अपनी प्राप्तियों अर्थात् साहूकारी के नशे में रहेगा, वह ईश्वरीय सेवा कर नहीं सकता, इसलिए वह कभी राजा बन नहीं सकता। ब्रह्मा बाबा ने सबकुछ शिवबाबा को देकर पूरा बेगर बना, इसलिए ही वह स्वर्ग में पहला महाराजा बना।

''तुम जानते हो हम बेगर टू प्रिन्स बनेंगे। ... यह बाबा तो है सबसे बड़ा बेगर। इसमें पूरा बेगर बनना होता है।... निश्चयबुद्धि ही जानते हैं - हमारा जो कुछ है, वह बाबा को दे दिया। ... यह तो ट्रस्टी है। बाबा का इनमें कोई मोह नहीं है। इसने अपने पैसे में ही मोह नहीं रखा, सब कुछ शिवबाबा को दे दिया तो फिर शिवबाबा के धन में मोह कैसे रखेंगे। यह ट्रस्टी है।''

सा.बाबा 6.5.04 रिवा.

Q. परमात्मा के द्वारा दिये गये ज्ञान के सर्व रहस्य अर्थात राज़ हमारे सामने प्रत्यक्ष हैं, उन सब पर विचार करके अपने को चेक करो कि वे सब हमारे अनुभव, निश्चय और धारणा में हैं ? यदि हैं तो हमारी अवस्था कैसी होनी चाहिए ?

परमात्मा ज्ञान का सागर और सर्व आत्माओं का मुक्ति-जीवनमुक्ति दाता है, जिसको ज्ञान के सर्व रहस्यों का यथार्थ ज्ञान और अनुभव होगा, वह सदा ही इस विश्व-नाटक को साक्षी होकर देखेगा और परमात्मा के समान मुक्ति और ब्रह्मा बाबा के समान मुक्ति-जीवनमुक्ति का परम-सुख, परमानन्द को अनुभव करेगा। यदि हमको सदा ये अनुभूति होती है तो ही समझो कि हमने ज्ञान के सब राज़ो को समझा है और अनुभव किया है।

Q. क्या शास्त्र लिखने वालों ने परमात्मा से सम्मुख में ये ज्ञान सुना होगा ?

पहले तो प्रश्न स्पष्ट नहीं है क्योंकि दुनिया में अनेक शास्त्र हैं, किस शास्त्र के विषय में ये प्रश्न है। बिना सुने और अनुभव किये किसको कोई स्मृति आ नहीं सकती और उसके विषय में लिख नहीं सकता। हिन्दू धर्म अर्थात् देवी-देवताओं को मानने वालों के जो शास्त्र हैं और उनमें भी विशेष गीता शास्त्र लिखने वाले ने अवश्य ही परमात्मा से ये ज्ञान सुना होगा। और भी रामायण, महाभारत, भागवत् आदि शास्त्र लिखने वालों ने भी कुछ न कुछ परमात्मा से सम्मुख में ज्ञान अवश्य सुना होगा।

Q. मृग-मरीचिका या रुण्य के पानी का हमारे ब्राह्मण जीवन से क्या भाव-अर्थ या तुलना है ?

इन्द्रिय सुखों का आकर्षण और इन्द्रिय सुख हमारी आत्मिक शक्ति को क्षीण करने वाले हैं और अभीष्ठ लक्ष्य अर्थात् सम्पूर्ण पवित्रता, सुख-शान्ति से वंचित करके परिणाम में दुख का ही कारण बनते हैं। वह कभी जीवन के परम लक्ष्य अर्थात् सदा काल की सुख-शान्ति को पा नहीं सकता।

Q. पावन बनने का भाव-अर्थ क्या है ?

शत प्रतिशत आत्माभिमानी बनना ही पावन बनना है।

Q. फॉलो फादर क्या है और कैसे ?

ब्रह्मा बाप समान पुरुषार्थ कर शिव बाप समान सम्पूर्ण और सम्पन्न बनना ही फॉलो फादर है। ब्रह्मा बाप समान आत्मिक स्वरूप का सतत अभ्यास होगा तब ही ये स्थिति होगी। इसके लिए शिव बाप और ब्रह्मा बाप दोनों के गुण-कर्तव्यों का ज्ञान और अनुभव हो।

‘‘बापदादा तीन रूप से बच्चों को देख रहे हैं। बाप रूप बच्चों को ... टीचर रूप से स्टूडेण्ट्स

को ... सत्गुरु के फॉलो करने वालों को। ... मुख्य फॉलो कौन सा करना है ? ... मुख्य फॉलो यही करना है - अशरीरी, निराकारी, न्यारा बनना।''

अ.बापदादा 26.6.69

Q. बाबा बच्चों से क्या चाहता है ?

बाबा चाहता बच्चे सम्पूर्ण बन जायें अर्थात अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित हो परमानन्द का अनुभव करें। देह में रहते देह से न्यारी आत्मिक स्वरूप की स्थिति परमानन्दमय है परन्तु अज्ञानतावश देहाभिमान के कारण इन्द्रिय सुख और उनका आकर्षण, कर्म-भोग आत्मा को उस परम सुख से वंचित कर देता है।

बाबा चाहता है कि सभी बच्चे पूर्ण देही-अभिमानी, बाप समान स्थिति में स्थित हो जायें क्योंकि आत्मिक स्थिति सर्व प्राप्तियों से सम्पन्न, सदा सुखमय परमानन्दमय स्थिति है। जो आत्मा इस स्थिति में स्थित होता है, इस सुख का अनुभव कर लेता है, उसकी बुद्धि देह और दैहिक सुख-साधनों स्वत: उपराम हो जाती है। हम अपने को आत्मा समझें और दूसरों को भी आत्मा रूप में ही देखें। इसीलिए बाबा हमसे एक सेकेण्ड में देह से न्यारे आत्मिक स्वरूप में स्थित होने की ड्रिल कराता है और उसका निरन्तर अभ्यास करने के लिए कहता है।

''लास्ट नम्बन वाला बच्चा भी बाप का प्यारा है। तो बाप लास्ट नम्बर वाले बच्चे को भी सदा गुलाब देखना चाहते हैं। खिला हुआ गुलाब। ... अभी समय की समपीता का और अचानक होने का इशारा तो बापदादा ने दे ही दिया है। ऐसे समय के लिए एवर-रेडी और अलर्ट होना आवश्यक है।''

अ.बापदादा 5.3.08

Q. बाबा हमारे जीवन में परिवर्तन चाहते हैं और वह परिवर्तन क्यों और कैसे हो ? क्या हमारे परिवर्तन से परमात्मा का कोई स्वार्थ है ? परिवर्तन हुआ, उसकी पहचान क्या है ?

हमारे जीवन में मूल परिवर्तन, जिस पर जीवन का सारा परिवर्तन आधारित है वह है हम देह नहीं आत्मा हैं। बाबा हमको देहाभिमान से मुक्त अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित देखना चाहते हैं, जिसमें हमारा भी कल्याण है और अन्य आत्माओं को भी उससे लाभ है। परमात्मा का इसमें कोई स्वार्थ नहीं है, वह हमारे और विश्व के कल्याणार्थ हमारे जीवन में ये परिवर्तन चाहते हैं। सर्वशक्तिवान परमात्मा का हाथ हमारे सिर पर है और उनकी छत्रछाया हमारे ऊपर है। जो दृढ़ संकल्प रखते हैं, उनके जीवन में परिवर्तन अवश्य होता है।

स्व-परिवर्तन अर्थात् अपना परिवर्तन, न कि दूसरों का परिवर्तन। स्व-परिवर्तन अर्थात् देह-भान से स्व स्वरूप में परिवर्तन। स्व-स्वरूप सदा सम्पूर्ण और सम्पन्न है। सम्पन्नता सम्पूर्णता,

सन्तुष्टता और प्रसन्नता का दर्पण है।

''जैसे देहाभिमान नेचर और नेचुरल रहा, उसी प्रकार देही-अभिमानी स्थिति भी नेचुरल और नेचर हो। ... यथार्थ नेचर बाप समान बनने की है, इसमें मेहनत क्यों ? तो बापदादा अभी सभी बच्चों की देही-अभिमानी रहने की नेचुरल नेचर देखना चाहते हैं। ब्रह्मा बाप को देखा चलते-फिरते, कोई भी कार्य करते देही-अभिमानी स्थिति नेचुरल नेचर थी।''

अ.बापदादा 15.12.02

Q. किस सत्य का ज्ञान रहे तो हमारे सम्बन्ध सदा मधुर रहें ?

हम आत्मायें एक परमात्मा की अनादि सन्तान हैं और विश्व एक नाटक है, जहाँ हर आत्मा अपना अनादि-अविनाशी पार्ट बजा रही है। ड्रामानुसार हर आत्मा अपने कर्मों अनुसार सुखी-दुखी होती है, कोई दूसरा हमारे सुख-दुख का कारण नहीं है।

Q. ये सत्य है या किंवदन्ति मात्र है कि

1. एक मरने वाले व्यक्ति को कांच के हवा-प्रूफ बॉक्स में बन्द करके रखा और जब वह मरा तो उसकी आत्मा के बाहर निकलने से कांच क्रेक हो गया।

2. जापान के माओ धर्म वालों ने ... परमात्मा का फोटो खीचा, उसमें स्टार आया।

- रमेश भाई का लेख मार्च 04

क्या ये दोनों बातें यथार्थ है अर्थात् क्या आत्मा को कांच के हवा-प्रूफ बॉक्स से बाहर निकलने के लिए कांच का क्रेक होना आवश्यक है ? या कोई केमरा परमात्मा का फोटो निकाल सकता है ?

नहीं। मेरे विचार से ये दोनों बातें यथार्थ नहीं है अर्थात् आत्मा को बाहर निकलने के लिए कांच का क्रेक होना आवश्यक नहीं क्यों कि आत्मा कांच के परमाणुओं से भी सूक्ष्म है और न कोई स्थूल केमेरा आत्मा का फोटो निकाल सकता है। ये सम्भव है कि आत्मा और परमात्मा के अस्तित्व को सिद्ध करने के लिए ड्रामा में इस प्रकार की घटनाओं की कोई विशेष नूँध हो, जिस कारण ऐसा हुआ हो।

Q. विश्व-स्तरीय शक्ति (Cosmic energy) क्या है ?

विश्व में दो प्रकार की विश्व-स्तरीय शक्तियां है, जो सारे विश्व की घटनाओं का आधार हैं। एक है आत्मिक शक्ति और दूसरी है भौतिक शक्ति। दोनों एक दूसरे की पूरक हैं। विश्व का सारा खेल आत्माओं के लिए है परन्तु उस खेल में आत्मिक शक्ति और भौतिक शक्ति दोनों का

समान पार्ट है। दोनों के आधार पर ही ये विश्व-नाटक चलता है। समयानुसार दोनों ही शक्तियाँ एक-दूसरे को प्रभावित करती हैं।

Cosmic Energy वह अदृश्य शक्ति है, जो इस विश्व-नाटक के जड़-चेतन को चलाती है अर्थात् आत्मा सहित 5 तत्वों को गति प्रदान करती है।

Q. विकार में जाने से पाप-कर्म की प्रक्रिया क्या है, उसका आत्मा पर प्रभाव कैसे होता है ?

लौकिक गीता में भी है - कामोपजायते क्रोधा ... और वास्तविकता भी यही है कि काम से क्रोध की उत्पत्ति होती है, क्रोध से बुद्धि का नाश होता है और आत्मा विकर्मों में प्रवृत्त होकर अनेक पाप-कर्मों में प्रवृत्त होता है, जिससे वह अपने श्रेष्ठ लक्ष्य से गिर जाता है।

विकार में जाने से एक-दो की आकर्षण बढ़ जाती है, लगाव हो जाता है, जिससे परमात्मा की याद भूल जाती है। आत्मा का ये लगाव बढ़ने से आत्मा अनेक प्रकार के अन्य विकर्मों में प्रवृत्त होती है।

देहाभिमान के कारण आत्मा को विकार की आकर्षण होती है और विकार में जाने से देहाभिमान अधिक गहरा होता जाता है, जिससे विकार की प्रवृत्ति निरन्तर बढ़ती जाती है और आत्मा पतित बनती जाती है।

आत्मिक शक्ति का ह्रास हो जाता है, जिससे आत्मा श्रेष्ठ कर्म करने में असमर्थ हो जाती है और विकर्मों में प्रवृत्ति बढ़ जाती है।

आत्मा से जो वायब्रेशन प्रवाहित होता है, वह देहाभिमान का होता, विकारी होता, जो अन्य आत्माओं के ऊपर भी प्रभावित होता है अर्थात् उनको भी विकार के लिए प्रेरित करता है, जिससे वे भी पापी बनते हैं और उनके पाप कर्म से भी पाप कर्म करने वाले का पाप का खाता बढ़ता जाता है।

बाप की अवज्ञा होती, जिसका आत्मा पर दण्ड पड़ जाता है, आत्मा श्रापित हो जाती है।

''बाप के पास आकर फिर कीचक बनें तो पता नहीं धर्मराज क्या हाल करेंगे। वह इन बच्चों को साक्षात्कार कराया हुआ है। बहुत सजायें खाते थे, फिर बाबा से पूछा था, तो बाबा ने कहा - साक्षात्कार करायेंगे तो जरूर सहन करना पड़ेगा। इससे उनके पापों का जो पिछला हिसाब-किताब है, वह कम हो जायेगा। बाबा किसका भी रखता नहीं है।''

सा.बाबा 22.4.08 रिवा.

''ब्राह्मण बनकर ब्राह्मण कुल को कलंक नहीं लगाना है। कलंक लगायेंगे तो कुल कलंकित

बन जायेंगे। ... उन जैसा पापात्मा दुनिया में कोई होता नहीं है। ... परमपिता परमात्मा बेहद के बाप को फारकती दे देते हैं, उन जैसा पापात्मा इस दुनिया में कोई होता नहीं है। ... पाप से प्रतिज्ञा की तो पूरा निभाना है। गायन है - धरत परिये धर्म न छोड़िये।''

सा.बाबा 22.4.08 रिवा.

Q. किस बात की स्मृति रहे तो कोई चिन्ता और व्यर्थ चिन्तन नहीं हो ?

ये विश्व एक अनादि-अविनाशी नाटक है, जो हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है। इसमें जो हुआ अच्छा हुआ, जो हो रहा है वह अच्छा है और जो होगा वह भी अच्छा होगा। इसमें हर आत्मा अपने कर्मों अनुसार सुखी-दुखी होती है।

''बाप कहते हैं - बीती को कभी चितवो नहीं, ड्रामा में जो कुछ हुआ पास्ट हो गया, उसका विचार नहीं करो। ... अन्दर में सिर्फ बेहद के बाप को याद करना है। दूसरा डायरेक्शन क्या देते हैं ? 84 के चक्र को याद करो क्योंकि तुमको देवता बनना है।''

सा.बाबा 3.4.04 रिवा.

Q. आत्मा पर माया का वार क्यों होता है ?

आत्मा पर माया का वार क्यों होता है, वह तो दूर की बात है परन्तु माया है क्या, वह जानना अति आवश्यक है। अज्ञानता जनित देहाभिमान ही माया है। परमात्मा पिता ने हमको जो श्रीमत दी है अर्थात् जो नियम-संयम बताये हैं, उन पर सही रीति चलने वाले पर माया का वार हो नहीं सकता। यदि होता भी है तो वह भी परीक्षा के रूप में होता है कि हमने कहाँ तक पढ़ाई की है। परीक्षा को पास करके ही आगे क्लास में जाया जा सकता है। बाबा ने 22-4-08 की रिवाइज साकार मुरली में कहा है - बाबा माया को कहते हैं, तुम बच्चों की खूब परीक्षा लो, अच्छी रीति टेस्ट करो कि कहाँ तक पढ़ाई की है। एक मुरली में बाबा ने कहा है - बाबा माया को कहता है - माया बेटी जो बाबा के डायरेक्शन पर नहीं चलते, उनको खा जाओ।

Q. वर्तमान विश्व उन्नति के पथ पर है या पतन के पथ पर है ? यदि उन्नति के पथ पर है तो कैसे और यदि पतन के पथ पर है तो कैसे ?

ये संगमयुग का समय है, इसमें उत्थान और पतन, स्थापना और विनाश दोनों कार्य साथ2 चल रहे हैं। अभी ही परमात्मा के द्वारा आध्यात्मिक ज्ञान मिल रहा है और जो इस ज्ञान को फॉलो करते, वे अपने को संगमयुगी कहलाते हैं और वे उन्नति के पथ पर हैं। जो ज्ञान के पथ पर नहीं चलते, वे कलियुग वासी हैं और वे पतन के पथ पर हैं।

कलियुगी मनुष्यों के द्वारा जो Science and Technology के ज्ञान में वृद्धि हो रही है, वह

पुरानी दुनिया के विनाश के निमित्त भी बनेगी तो नई दुनिया की स्थापना के निमित्त भी बनेगी। ये साइन्स एवं टेक्नॉलॉजी का ज्ञान भी सतयुग में सुख के काम में आयेगा। इस प्रकार हम देखें तो आध्यात्मिक ज्ञान, भौतिक ज्ञान दोनों की वर्तमान जगत में उन्नति हो रही है। भगवानोचाच्य ये साइन्स पुरानी दुनिया के विनाश में भी काम आयेगी तो विनाश के बाद नई दुनिया की स्थापना में भी काम आयेगी। विनाश भी कल्याणकारी है।

वर्तमान जगत में सांसारिक मनुष्यात्माओं के जीवन में सुख-शान्ति, दैवी गुणों का पतन हो रहा है और आसुरी वृत्तियों में वृद्धि हो रही है। ब्राह्मणों के जीवन में आसुरी वृत्तियों का ह्रास और दैवी वृत्तियों, गुणों का विकास हो रहा है।

''सतयुग की आदि माना ज्ञान मार्ग की आदि। ऐसे नहीं कि जैसे भक्ति नीचे उतरती है वैसे ज्ञान भी उतरता है। नहीं, ज्ञान से तुम्हारी चढ़ती कला हो जाती है। तुम ऊंच से ऊंच पद पा लेते हो। सिर्फ वहाँ प्रारब्ध का सुख कम होता जाता है।''

सा.बाबा 5.7.71 रिवा.

Q. क्या वर्तमान में यज्ञ-व्यवस्था एक मत की ओर अग्रसर है ? यदि है तो कैसे और यदि नहीं है तो क्यों और कैसे ? या दोनों साथ-साथ चल रहे हैं ? ऐसे में हमारा कर्तव्य क्या है ? We are moving towards unity or diversity? or both tendencies going on side by side.

अभी हमारी आत्मा में सारे कल्प के संस्कार भर रहे हैं अर्थात् ये समय सतयुग से कलियुग के अन्त तक के संस्कारों का बीज बोने का समय है। इसलिए दोनों प्रकार के कार्य होंगे परन्तु हमको सारा खेल साक्षी होकर देखना है, किसी से प्रभावित नहीं होना है। हमको एकबल, एक भरोसा रखकर परमात्मा ने जो श्रीमत दी है, उस पर पूरा चलना है। जो एक परमात्मा के आधार पर चलेगा, उसको परमात्मा समयानुसार सही रास्ता अवश्य दिखायेगा।

Q. स्वर्ग है वण्डर आफ दि वर्ल्ड, उसको बनाने वाले नर्क वाले मनुष्य होंगे या स्वर्ग वाले होंगे ?

वास्तव में जब हम स्वर्ग में होंगे तो स्वर्ग को नहीं बनायेंगे, स्वर्ग बनेगा तब हम स्वर्ग में जायेंगे और नर्क वाले मनुष्यों में वह शक्ति कहाँ है, जो स्वर्ग को बना सकें। वे तो और ही दिनोदिन नर्क को रौरव नर्क बना रहे हैं। स्वर्ग बनाने वाले संगमयुगी मनुष्य ही होंगे। स्वर्ग का रचता परमात्मा है, उनकी मत पर संगमयुगी मनुष्य अपनी आध्यात्मिक शक्ति के द्वारा नर्क को स्वर्ग बना रहे हैं, उनमें कुछ डायरेक्ट संगमयुगी हैं कुछ इन्डायरेक्ट अर्थात् एडवान्स पार्टी के रूप

में संगमयुगी हैं। कलियुगी मनुष्य जो साइन्स एण्ड टेक्नॉलॉजी है, उसको विनाश के लिए प्रयोग कर रहे हैं और करेंगे, जबकि संगमयुगी मनुष्य उस साइन्स एण्ड टेक्नॉलॉजी को स्वर्ग के स्थूल निर्माण में प्रयोग करेंगे। जो नर्क को स्वर्ग बनाने में सहयोगी बनते हैं, वे ही स्वर्ग में जाकर वहाँ के सतोप्रधान सुखों का उपभोग करते हैं।

Q. सतयुग-त्रेता के कर्म-फल की महसूसता और द्वापर-कलियुग के कर्म-फल की महसूसता और संगमयुग के कर्म-फल की महसूसता में क्या अन्तर है?

किसी भी प्रकार के सुख-दुख की महसूसता शरीर के साथ ही होती है और एक की अनुभूति के लिए दूसरे की अनुभूति होना, उसका ज्ञान होना अति आवश्यक है। इस सत्य पर विचार करेंगे तो संगमयुग पर हमको सुख की जो महसूसता होती है, वह सर्वश्रेष्ठ है। सतयुग-त्रेता के कर्म-फल की महसूसता में सुख ही होता है, दुख का नाम-निशान नहीं होता है। द्वापर-कलियुग के कर्म-फल की महसूसता में सुख और दुख दोनों की महसूसता होती है। संगमयुग पर कर्म के फलस्वरूप सुख-दुख दोनों आता है, दोनों की महसूसता भी होती है परन्तु परन्तु यथार्थ ज्ञान होने के कारण दुख का प्रभाव अधिक नहीं होता है। दुख भी सुख में बदल जाता है।

Q. जीवन में सच्चा सुखी कौन है और कौन रह सकता है?

जो आत्मा, परमात्मा, ड्रामा और कर्म के यथार्थ ज्ञान को समझकर अपने अधिकार और कतव्यों में सन्तुलन रखकर कर्म करता है। इस विश्व-नाटक में राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति का कोई स्थान नहीं है। जो इस सत्य को जानकर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर इस विश्व-नाटक में पार्ट बजाता है, वही सच्चा सुख पाता है।

Q. सतयुग-त्रेता परमात्मा का वर्सा है या स्व-पुरुषार्थ का फल है?

परमात्मा स्वर्ग का रचयिता है, जो उसके साकार में बनते हैं, उनको ही स्वर्ग वर्से के रूप में प्राप्त होता है परन्तु स्वर्ग की प्राप्तियां अर्थात् सुख-साधन हर आत्मा को अपने स्व-पुरुषार्थ के फल स्वरूप नम्बरवार ही प्राप्त होते हैं, जिस पुरुषार्थ का विधि-विधान भी परमात्मा ही बताता है।।

Q. किस राज़ का ज्ञान रहे तो कर्म सदा श्रेष्ठ हों?

जीवात्मा अपना आप ही मित्र है और आप ही अपना शत्रु है। इस विश्व-नाटक में हर आत्मा का अविनाशी पार्ट नूँधा हुआ है और ये विश्व-नाटक कर्म-फल-कर्म पर आधारित एक घटनाचक्र है। पवित्रता ही जीवन है, काम विकार एक विकर्म है, जो आत्मा के दुख का मूल कारण है।

Q. क्या सूक्ष्म वतनवासी ब्रह्मा, विष्णु, शंकर की आत्मायें हैं और वे शिवबाबा के बच्चे हैं या

साक्षात्कार मात्र हैं ?

सूक्ष्मवतन वासी ब्रह्मा, विष्णु, शंकर का अपना कोई स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं है, इसलिए उनकी आत्मायें नहीं हैं। परमात्मा के तीन कर्तव्यों को समरुने के लिए वह केवल साक्षात्कार मात्र है। उसको भी बाबा ने अनेक रूपों से समझाया है। यदि उनकी अपनी स्वतन्त्र आत्मायें होती तो उनका साकार में अलग से पार्ट चलता।

''ब्रह्मा है शिव का बेटा। शिवबाबा अपने बच्चे, ब्रह्मा में प्रवेश कर तुमको ज्ञान देते हैं। ब्रह्मा, विष्णु, शंकर भी इनके बच्चे हैं। निराकार बाप के सब बच्चे निराकार हैं।''

सा.बाबा 25.8.04 रिवा.

Q. हम शान्तिधाम को याद करते ... तो क्या हम शान्तिधाम जाते है या उसको याद कर स्वयं शान्ति का अनुभव करते है ?

शान्तिधाम को याद करने से आत्मा शान्तिधाम जाती नहीं है लेकिन उस याद में स्थित होने से शान्तिधाम की परम-शान्ति की अर्थात् मुक्ति की अनुभूति करती है। अपने को शान्तिधाम अर्थात् ब्रह्मलोक में याद करने आत्मा में निर्संकलप स्थिति आ जाती है क्योंकि शान्तिधाम में कोंई संकल्प नहीं है, इसलिए आत्मा को शान्ति अनुभूति होती है। बाबा ने कहा है - मुझे शानतिधाम में याद करो तो तुम बीजरूप स्थिति में स्थित हो जायेंगे और तुम्हारे विकर्म भस्म होंगे, जिससे तुम्हारी आत्मिक शक्ति बढ़ेगी, आत्मा शान्ति का अनुभव करेगी। ये बीजरूप स्थिति योग की सबसे शक्तिशाली स्थिति है।

''बाप कहते हैं - मैं तुमको फिरसे गीता का ज्ञान सुनाता हूँ। जब तक जियेंगे, तब तक ज्ञान अमृत पियेंगे। ... देवतायें जो पावन थे, वे ही अब पतित बन गये हैं, फिर उनको ढूंढना पड़े। वे मन्दिरों में जल्दी मिलेंगे। ... सबसे ऊंचा यह अविनाशी ज्ञान रत्नों का धन्धा है। नौ रत्न की अंगूठी भी पहनते हैं। वह भी इनसे भेंट की है।''

सा.बाबा 16.10.07 रिवा.

''सतयुग में कोई अपवित्र नहीं होते और वहाँ बच्चे का इन्तजार भी नहीं होता है। यहाँ तो बच्चे का इन्तजार करते हैं। वहाँ समय अनुसार आपही साक्षात्कार होता है। मनुष्य तो कहते हैं - यह कैसे हो सकता है। भला यहाँ के सम्पूर्ण विकारी कैसे समझ सकते कि वहाँ निर्विकारी होते हैं।''

सा.बाबा 26.10.07 रिवा.

''आकाश तत्व बहुत सूक्ष्म है, उससे भी ऊपर सूक्ष्म शरीरधारी देवतायें रहते हैं। वह भी पोलार है, आकाश में बैठे हैं। फिर उससे भी ऊपर और आकाश है, उसमें आत्माओं के बैठने की जगह है। वह भी आकाश है, जिसको ब्रह्म तत्व कहते हैं। ... इस आकाश में खेल होता

है, तो जरूर रोशनी चाहिए। मूलवतन में खेल नहीं होता, वहाँ आत्मायें कर्मातीत स्थिति में रहती हैं।'' सा.बाबा 20.12.07 रिवा.

ज्ञान परम धन है जो इस धर्म-युद्ध में विजय का आधार है। सत्य आत्मिक ज्ञान वाले में मृत्यु का भय नहीं हो सकता, उसकी विकारी दृष्टि नहीं हो सकती, उसमें राग-द्वेष, भय-चिन्ता नहीं हो सकती क्योंकि आत्मिक स्वरूप इन सबसे मुक्त है। ज्ञान अर्थात् सत्य को जानना, मानना और बनना अर्थात् उस स्वरूप में स्थित रहकर कर्म करना।

Q. सागर अहमदाबाद, असलम बेग बागलकोट आदि जैसे केसों में हमारे यज्ञ के शीर्ष भाई-बहनें, सन्देशियां क्यों धोखा खाते हैं, उनके कर्मों को कैसे स्वीकार कर लेते हैं? उनके ऐसे कर्मों से हमारे यज्ञ की व्यवस्था पर, हमारे ज्ञान की क्षमता पर, बाबा की प्रत्यक्षता पर क्या प्रभाव पड़ता है? इस स्थिति में साधारण स्टूडेण्ट की क्या भूमिका होनी चाहिए?

बाबा के साथ हमारा सही योग होगा, तो कब ऐसी झूठी बातों पर हमारा विश्वास नहीं बैठेगा, बाबा हमको अवश्य टच करेगा, जिससे हम ऐसी बातों में नहीं जायेंगे अर्थात् ऐसी बातों के विषयमें हम अपनी सहमति व्यक्त नहीं करेंगे क्योंकि इससे भी सुनने वालों को हमारी बुद्धि की क्षमता और योग के विषय में सन्देह उत्पन्न होता है।

''सन्देशी पूरी रिपोर्ट दे सकती है कि किसकी बुद्धि बाहर भटकती है, कौन क्या करते हैं, किसको झुटका आता है, सब बता सकती है।'' सा.बाबा 8.5.04 रिवा.

Q. परमात्मा पिता आकर सारे सृष्टि-चक्र की हिस्ट्री-जॉग्राफी बताते हैं तो हिस्ट्री क्या है और जॉग्राफी क्या है?

Q. विश्व की रिलीजियो-पॉलिटिकल हिस्ट्री-जाग्राफी क्या है?

सृष्टि-चक्र का ज्ञान है हिस्ट्री और झाड़ तथा त्रिमूर्ति का ज्ञान है जॉग्राफी। परमात्मा आकर सृष्टि की जॉग्राफी और हिस्ट्री का सारा ज्ञान देते हैं और विश्व में एक राज्य, एक धर्म की स्थापना करते हैं। विश्व में जो राजशाही समाप्त हो गयी है, वह फिर से स्थापन करते हैं परन्तु उस राजशाही में सत्यता, प्रेम, श्रृद्धा-भावना का साम्राज्य होता है, अर्थात् राज्य-सत्ता और धर्म-सत्ता एक के ही हाथों में होती है, जिससे किसी प्रकार अनैतिकता नहीं होती है।

''तुम जानते हो इस रथ द्वारा बाप हमको सब राज़ समझाते हैं। रचता और रचना के आदि-मध्य-अन्त का राज़ समझाया है। ... नई दुनिया स्थापन करना उनका ही काम है। ऐसे नहीं कि वहाँ बैठे स्थापना करते हैं।'' सा.बाबा 22.12.04 रिवा.

‘‘यूँ तो सारी दुनिया के तीन फादर होते ही हैं। एक निराकार बाप, दूसरा प्रजापिता ब्रह्मा और तीसरा लौकिक बाप। परन्तु यह किसको भी पता नहीं है। ... ऊंच तें ऊंच बाप है, जो अब नई रचना रच रहे हैं। ... शिवबाबा रचता है, वही आकर बताते हैं कि मैं कैसे नई रचना रचता हूँ।’’ सा.बाबा 21.2.08 रिवा.

Q. तुमको कोई पूछते तुमको यहाँ क्या मिलता है, तो तुम क्या उत्तर देंगे ?

बाबा ने हमको जो ज्ञान दिया है, वह पूर्ण विवेकसंगत अनुभव होता है, उसमें कोई विरोधाभास नहीं है और उसको पाकर आत्मा सम्पन्नता, सन्तुष्टता और अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति करती है। इस ज्ञान को पाकर जो सृष्टि रचना के विषय में वैज्ञानिक, विद्वान, धर्म-नेता आदि आदि जो बताते आये हैं परन्तु वह सब विवेक संगत नहीं प्रतीत हुआ और उनमें अनेक विरोधाभास हैं परन्तु अभी परमात्मा ने जो सृष्टि-रचना का जो ज्ञान दिया है, वह पूर्ण विवेकसंगत है, इसलिए आत्मा उससे पूर्ण सन्तुष्ट है और हमको सम्पूर्ण पवित्रता के लिए पुरुषार्थ करने की शक्ति प्रदान कर रहा है।

‘‘तुम से कोई पूछेंगे तुमको क्या मिलता है ? जिसको बड़े-2 ऋषि-मुनि आदि कहते थे कि हम रचयिता और रचना के आदि, मध्य, अन्त को नहीं जानते हैं सो हम जानते हैं। रचयिता बाप के सिवाए रचना के आदि, मध्य, अन्त को कोई समझा नहीं सके।’’

सा.बाबा 3.6.71 रिवा.

‘‘अतीन्द्रिय सुख गोपी वल्लभ की गोप-गोपियों से पूछो। ... अनुभव में सुनाना चाहिए। बस क्या बताऊं दिल की बात। बेहद का बाप बेहद की बादशाही देने वाला मिला और क्या अनुभव सुनाऊं। इस जैसे खुशी और कोई होती नहीं है। ... यज्ञ में असुरों के विघ्न तो पड़ते ही हैं।’’ सा.बाबा 10.7.08 रिवा.

Q. पढ़ते-पढ़ते मर गये तो वह पढ़ाई खत्म हो जाती है और ये पढ़ाई खत्म नहीं होती - इसका राज़ क्या है ?

उस पढ़ाई को पढ़ते हुए कोई सुकर्म नहीं करते हैं, इस पढ़ाई में ज्ञान-योग, धारणा, सेवा के द्वारा हमारे सुकर्म होते हैं, जिसका फल अगले जन्म में मिलता है। योग सबसे अच्छा सुकर्म है।

‘‘पढ़ते-पढ़ते मर गया तो पढ़ाई खत्म हो जायेगी। वह है विनाशी पढ़ाई, यह है अविनाशी पढ़ाई। इसका कभी विनाश नहीं होता।’’ सा.बाबा 25.2.08 रिवा.

Q. ज्ञान माला और भक्त माला का गायन है तो भक्त माला में केवल देवी-देवताओं के भक्त होंगे या अन्य धर्मों के बड़ों की भी भक्त माला में गिनती होगी ?

वास्तव में सभी धर्मपिताओं आदि की भक्त माला में गिनती होनी चाहिए क्योंकि आधा कल्प है ही भक्ति मार्ग। बाबा ने कहा है - इस ज्ञान में देवी-देवताओं के भगत और शिवबाबा के भगत आयेंगे और जब वे ज्ञान में आयेंगे तो वे ज्ञान माला के हो गये और उनकी गिनती ज्ञान माला में अर्थात् स्वर्ग में आने वालों में की जायेगी।

''तुमको पावन बन रुद्र माला में पिरोना है। ... बाप कहते हैं - मेरी माला जो होगी, वह स्वर्ग की मालिक होगी। भक्त माला को भी तुम समझ गये हो। वह है रावण की माला। ... आपही पूज्य और आपही पुजारी कौन कैसे बनतें हैं, वह कितनी गुह्य बातें समझने की हैं।''

सा.बाबा 26.2.08 रिवा.

Q. काशी कलवट खाते हैं, शिव पर बलि चढ़ते हैं, उसका राज़ क्या है ? यथार्थ बलि चढ़ना किसको कहा जाता है ?

अभी आत्मायें शिवबाबा पर बलि चढ़ते हैं, अपना तन-मन-धन सब उनको अर्पण करते हैं, जिसका यादगार भक्ति में काशी कलवट के रूप में बलि चढ़ते हैं। यथार्थ बलि का उदाहरण ब्रह्मा बाबा है।

''भारत में दान-पुण्य बहुत करते हैं। इस समय तुम बचचे भी बाप को तन-मन-धन सब कुछ दे देते हो। तुम्हारे आगे मिसाल भी है। यह बाप निमित्त बना है क्योंकि समझते हैं - जैसा कर्म मैं करूँगा, मुझे देख और भी करने लग पड़ेंगे। ... यह तन-मन-धन देकर फौरन नष्टोमोहा बन गये। अपने बच्चों को वारस न बनाये, इन माताओं को बना दिया। ... कुछ भी ख्याल नहीं किया। हम तो बाबा के बन जाते हैं।'' सा.बाबा 6.5.08 रिवा.

''बेहद का वर्सा लेना है तो हद का सब कुछ देना पड़े। परन्तु बाप तो दाता है, वह कब लेते नहीं हैं। शिवबाबा है देने वाला। डायरेक्शन देंगे - ऐसे-ऐसे करो। ... अभी बाप के पास बलि चढ़ने से ही तुम मेरी मत पर चलेंगे।'' सा.बाबा 6.5.08 रिवा.

''शिवबाबा पर बलि चढ़ना है अर्थात् बच्चा बनकर पूरी सेवा करनी है। ट्रस्टी बनकर फिर पुरुषार्थ करना है तो मदद भी मिलेगी। पक्का निश्चय चाहिए - मेरा तो एक शिवबाबा दूसरा न कोई।'' सा.बाबा 13.5.08 रिवा.

Q. क्या कोई हमारा मित्र या शत्रु है, यदि है तो कैसे और यदि नहीं है तो कैसे ?

वास्तव में इस विश्व-नाटक में हमारा कोई मित्र-शत्रु नहीं है, हम सभी एक ही परमपिता परमात्मा की प्रिय सन्तान हैं, परस्पर प्रिय भाई-भाई हैं और मानवता के आदि पिता प्रजापिता ब्रह्मा बाबा की सन्तान होने के नाते प्रिय भाई-बहन हैं। ये मित्रता और शत्रुता का ड्रामा में एक पार्ट है, जिसको यथार्थ और रोचक बनाने के लिए ये शत्रुता-मित्रता का पार्ट चलता है। जो आत्मा विश्व-नाटक के इस रहस्य को समझ लेता है, उसकी न किसी से शत्रुता रहती है और न ही किसी से मित्रता के कारण राग होता है। वह राग-द्वेष दोनों से मुक्त रहता है।

Q. अपनी महिमा या प्रशंसा सुनने में जितनी ख़ुशी होती है, उतनी ही अपनी निन्दा या आलोचना सुनने में भी हो, उसकी साधना और साधन क्या है ?

हमारा पुरुषार्थी जीवन है, इस पुरुषार्थी जीवन में सच्ची सफलता पाने के लिए व्यर्थ संकल्पों से मुक्त होना अति आवश्यक है परन्तु निन्दा-स्तुति से प्रभावित आत्मा कभी भी निर्संकल्प और निर्विकल्प स्थिति में स्थित नहीं हो सकती है। स्तुति की इच्छा वाली आत्मा दूसरे की निन्दा अवश्य करेगी। वास्तव में अपनी निन्दा को सुनकर दुखी होने वाली आत्मा यथार्थ ज्ञानी नहीं है। यथार्थ ज्ञान तो आत्मा को निन्दा-स्तुति दोनों से मुक्त कर मुक्ति-जीवनमुक्ति का सुख अनुभव कराती है।

''स्तुति और निन्दा दो शब्द हैं। वर्तमान समय स्थिति स्तुति के आधार पर है। ... स्तुति होती है तो स्थिति भी रहती है। अगर निन्दा होती होती है तो निधन के बन जाते हैं अर्थात् धनी को भूल अपनी स्टेज छोड़ देते हैं।'' अ.बापदादा 17.4.69

Q. सात दिन के सप्ताह का विधान कहाँ से बना अर्थात् सप्ताह के सात दिन के आधार बाबा ने सप्ताह कोर्स की बात कही है या बाप ने सारे ज्ञान को देने के लिए सात दिन के कोर्स का और पावन बनने के लिए सात दिन की भट्ठी का विधि-विधान बनाया, जिसके आधार पर सप्ताह के सात दिनों की गणना की गई ?

सारे विधि-विधानों की नींव संगमयुग पर ही परमात्मा के द्वारा पड़ती है, जिसके यादगार में भक्ति मार्ग में अनेक प्रकार विधि-विधान बनते हैं। सात दिनों का नामकरण करके मास की गणना करने का विधि-विधान भी बाबा ने जो सप्ताह कोर्स दिया है, उसके आधार पर ही किया गया है। फिर बाबा अभी उस सप्ताह का उदाहरण देते हैं।

''योग में कोई 7 रोज़ अच्छी तरह रहे तो कमाल हो जाये। ऐसे कोई योग में मुश्किल टिक सकेंगे। मन भागता रहेगा।सात रोज़ मशहूर हैं। गीता, भागवत, ग्रन्थ का पाठ भी 7 रोज़ रखते हैं। यह रस्म-रिवाज़ इस संगमयुग की है। सात रोज़ भट्ठी में रहना पड़े।''

सा.बाबा 8.5.08 रिवा.

Q. बाबा ने कहा ज्ञान माला अलग है और भक्ति माला अलग है - तो ज्ञान माला में कौनसी आत्मायें आती हैं और भक्ति माला में कौन-कौन सी आत्मायें आती हैं ?

ज्ञान माला अर्थात् वैजन्ती माला, जिसमें बाबा ने नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार 8 की माला, 108 की माला और 16,108 की माला के विषय में अनेक प्रकार से बताया है परन्तु भक्त माला के विषय में बाबा ने विस्तार से तो नहीं बताया है लेकिन बाबा ने कहा है - भक्त माला भी है, उसका भी गायन है, उनकी भी महिमा होती है। तो भक्त माला में कौन-कौन और कितनी आत्मायें आयेंगी, जिनका गायन होगा या होता है। द्वापर से जब देवतायें वाम मार्ग में जाते हैं तो वे भी भक्त बन जाते हैं परन्तु संगमयुग पर जब परमात्मा आकर ज्ञान देते हैं, तो वे परमात्मा के बनकर ज्ञान-योग का अच्छा पुरुषार्थ करके ज्ञान-माला में गिने जाते हैं। इसलिए शिवबाबा के और देवताओं के भक्तों को भक्त माला में नहीं कहा जा सकता है। द्वापर से जो भी आत्मायें परमधाम से आती हैं और उनकी बहुत महिमा होती है, उनको ही भक्त माला में गिना जा सकता है, जिनमें विभिन्न मठ-पंथों के विशेष, धर्म-पितायें आदि गिने जायेंगे, जो ज्ञान में नहीं आते हैं परन्तु भक्ति मार्ग में उनकी विशेष महिमा गाई जाती है। इसलिए बाबा ने कहा है भक्त माला में 5-6 सौ करोड़ आत्मायें हैं।

''भगवान एक है, भक्त हैं अनेक। बाबा पूछते हैं - भक्त कितने हैं ? 5-6 सौ करोड़। ... तुम सब ड्रामा के एक्टर्स हो तो ड्रामा के क्रियेटर, डायरेक्टर का मालूम होना चाहिए।''

सा.बाबा 10.5.08 रिवा.

Q. परमपिता परमात्मा सत्, चेतन्य, आनन्द का सागर, ज्ञान का सागर ... है, उनका यह पद अविनाशी है। आत्मा का पार्ट भी तो हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है, तो मनुष्यों का पद अविनाशी क्यों नहीं हो सकता ?

परमात्मा निराकार है, इसलिए वह सदा परिपूर्ण है, उसके गुणों और शक्तियों में कब कोई घटत-बढ़त नहीं हो सकती है। आत्मायें शरीर धारण कर पार्ट बजाती हैं, इसलिए उनकी सदा एक रस सम्पूर्ण स्थिति रह नहीं सकती है। उनकी या तो चढ़ती कला होती है या उतरती कला होती है। एकरस स्थिति तो परमधाम में ही रहती है परन्तु आत्मायें सदा काल परमधाम में भी नहीं रह सकती हैं।

''परमात्मा मनुष्य सृष्टि का बीजरूप है, सत है, चैतन्य है, आनन्द का सागर है... उनका यह पद फार एवर है अर्थात् अविनाशी है। और कोई मनुष्य का पद अविनाशी हो नहीं सकता।

… बाप कहते हैं - मैं अनलिमिटेड हूँ, तुमको अन्लिमिटेड बना नहीं सकता। नहीं तो खेल कैसे चले। … यह कायदा नहीं है।'' सा.बाबा 12.5.08 रिवा.

Q. हम कैसे कह सकते कि आगे सतयुग अवश्य आयेगा अर्थात् हम कैसे किसको सिद्ध कर बता सकते हैं कि सतयुग आने वाला है ?

1. इस विश्व की हर घटना चक्रवत् (Cyclic) है, यथा दिन-रात का चक्र, साल में ऋतुओं का चक्र, आदि आदि अनेक प्रकार के चक्र हैं, जो चक्रवत् चलते हैं। ऐसे ही चार युगों का चक्र भी है, चलता रहता है। इस सम्बन्ध में परमात्मा ने जो ड्रामा के हू-ब-हू पुनरावृत्ति का ज्ञान दिया है, वह सत्य है, इसलिए कलियुग के बाद सतयुग ही आना है और वर्तमान विश्व की जो सथिति है, वह कलियुग के विनाश की स्थिति हे, इसलिए उसके बाद सतयुग अवश्य आना है।

2. सृष्टि रचना के विषय में जो भी बातें सामने आई हैं, उनमें कोई भी बात बौद्धिक स्तर पर खरी नहीं उतरती है परन्तु अभी जो परमात्मा ने इस कल्प-वृक्ष की कलम का राज़ बताया है, वह पूर्ण सत्य है और तर्कसंगत है। इसलिए अभी जो कलम लग रही है और पुरानी दुनिया के विनाश के जो चिन्ह दिखाई दे रहे हैं, इससे स्पष्ट हो जाता है कि आगे आने वाली नई दुनिया सतयुग ही होगी।

3. गीता में भी 'यदा यदाहि … सृजाम्हम्' तथा रामायाण में 'जब जब होये धर्म की हानि … सज्जन पीड़ा' आदि से भी सिद्ध होता है कि इस अधर्म की दुनिया के विनाश के बाद धर्म की दुनिया सतयुग ही आना है।

4. दुनिया में स्वर्ग-नर्क का गायन है परन्तु स्वर्ग-नर्क क्या होता है और कहाँ होता है, उसके विषय में परमात्मा ने जो ज्ञान दिया है, उससे स्पष्ट होता है कि यही दुनिया जो अभी नर्क बन गई है, इसके विनाश के बाद स्वर्ग की दुनिया सतयुग ही आना है।

5. बीज और झाड़ और फिर बीज और बीज से नये झाड़ का सिद्धान्त है। इस सृटि को उल्टा वृक्ष कहा गया है, इसका बीज रूप परमात्मा इसका सारा ज्ञान दे रहे हैं और आये हुए हैं नये झाड़ की स्थापना करने, इससे सिद्ध है कि सतयुग ही आगे आना है।

6. शास्त्रों में भी जलमई के समय मनु, सत्यरूपा और सप्त ऋषियों के बचने और उनसे नई सृष्टि की रचना की बात कही गई है।

7. महाभारत लड़ाई के चिन्ह भी सामने दिखाई दे रहे हैं तो महाभारत के बाद धर्म की विजय और धर्म का युग सतयुग ही आयेगा।

8. परमात्मा ने इस विश्व-नाटक के विषय में जो भी बातें बताई वे अनुभव गम्य ओर सत्य हैं, इसलिए उन्होंने ये सतयुग आने की जो बात कही है, वह भी सत्य हे।

9. अन्य धर्मों में भी लिखा है कि क्राइस्ट से तीन हजार वर्ष पहले भारत स्वर्ग था, अभी जो भारत नर्क बना है, तो फिर भी सतयुग स्वर्ग अवश्य आयेगा। अनेक स्थानों पर ऐसे लेख मिलते हैं, जो 5 हजार वर्ष के पुनरावख्ति को सिद्ध करते हैं और अभी अन्त का समय दिखाई देता है।

Q. पर-चिन्तन पतन की जड़ है और स्व-चिन्तन उन्नति की सीढ़ी है ? आत्मा पर दोनों का प्रभाव क्या है ?

परमात्मा ने पर-चिन्तन के लिए मना किया है परन्तु इसका Cause Effect क्या है और पर-चिन्तन क्यों नहीं करना चाहिए, उससे क्या हानियां हैं, उसका ज्ञान होगा तब ही हम पर-चिन्तन से मुक्त हो सकते हैं।

पर-चिन्तन से समय तो व्यर्थ जाता ही है और आत्मिक शक्ति का भी ह्रास होता हे।

पर-चिन्तन का प्रभाव आत्मा पर होता है क्योंकि जैसा चिन्तन वैसी हमारी स्थिति भी बनती है, जिससे हमारे कर्म प्रभावित होते हैं। आत्मा जब दूसरों की कमी-कमजोरियों का चिन्तन करता है तो वे कमी-कमजोरियां हमारे में भी आ जाती हैं।

कर्म का विधि-विधान है कि जो करेगा, सो भरेगा तो हमको पर-चिन्तन की क्या आवश्यकता है। यदि हम पर-चिन्तन में अपनी समय और शक्ति लगा देते हैं तो स्व-चिन्तन के लिए समय और शक्ति कहाँ से आयेगी अर्थात् स्व-चिन्तन न करने के कारण आत्मा की यथार्थ उन्नति नहीं हो सकती है।

जीवात्मा अपना आपही मित्र है और आपही अपना शत्रु है तो पर-चिन्तन की क्या आवश्यकता है।

हर आत्मा ड्रामा में निश्चित अपना पार्ट बजा रही है, तो हमको पर-चिन्तन की क्या आवश्यकता है।

इससे ईश्वरीय आज्ञा का उलंघन होता है और ज्ञान का डिस्रिगार्ड है।

साक्षी होकर इस विश्व-नाटक को देखना ही हमारा कर्तव्य है और परमात्मा ने हमको साक्षी होकर इस विश्व-नाटक को देखने के लिए कहा है। यदि हम आत्मिक स्थिति में स्थित होकर साक्षी होकर इस विश्व-नाटक को देखते हैं तो परमानन्द की अनुभूति करेंगे।

इन सब बातों को जानकर हम पर-चिन्तन करते हैं तो ज्ञान का अपमान करते हैं और ज्ञान का अपमान सो ज्ञान-दाता का अपमान है।

Q. दुख और दर्द अर्थात् वेदना में क्या मूलभूत अन्तर है और दोनों का कारण एवं प्रभाव क्या है ?

दर्द अर्थात् वेदना। दुख मानसिक क्रिया है और दर्द दैहिक क्रिया है। यदि दैहिक कर्मभोग अर्थात् वेदना है परन्तु आत्मिक स्थिति अच्छी है तो आत्मा उसमें दुख का अनुभव नहीं करेगी और पुरुषार्थ करके उससे मुक्त हो सकती है। किन्हीं सम्बन्धों के कारण, इच्छा-आकांक्षाओं और उनकी अपूर्ति ... के कारण दुख है तो दैहिक वेदना तो नहीं होगी परन्तु आत्मा दुखी अवश्य होगी।

दोनों के अलग-अलग कारण है। दुख का कारण सम्बन्धों में पाप-कर्म, इच्छायें-आकांक्षायें हैं और दर्द का कारण दैहिक हैं अर्थात् प्राकृतिक नियम-संयम का उलंघन। परन्तु दोनों एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं। प्राकृतिक नियम-संयम के उलंघन से दैहिक कर्मभोग होता है, जो वेदना का कारण है। सामाजिक नियम-संयम के उलंघन, आत्माओं का के परसपर दुषित वयवहार से सम्बन्धों में कटुता आती है, जो दुख का कारण बनती है। हठयोग की भाषा में देखें तो यमों के उलंघन से दुख होता है और नियमों के उलंघन से दर्द होता है।

Q. ज्ञान मार्ग और भक्ति मार्ग में क्या अन्तर है और दोनों का परस्पर क्या सम्बन्ध है ?

निराकार परमपिता परमात्मा शिव ज्ञान का सागर है, वही कल्पान्त में आकर सृष्टि-चक्र, कर्मों की गहन गति का, योग आदि का ज्ञान देता है और इस विश्व-नाटक के विधि-विधानों का ज्ञान देता है। ज्ञान परमात्मा संगमयुग पर ही आकर देते हैं और नये कल्प की कलम लगाते हैं परन्तु सृष्टि के नियमानुसार अर्थात् स्मृति-विस्मृति के सिद्धान्त के अनुसार वह ज्ञान संगमयुग के अन्त तक पुनः विस्मृत अर्थात् लोप हो जाता है। इसलिए जब नये कल्प में आत्मायें परमधाम से पार्ट बजाने आती हैं तो उनमें वह ज्ञान इमर्ज नहीं होता है। ज्ञान-योग से जो आत्मायें पावन बनती हैं और नई दुनिया की स्थापना में सहयोगी बनती हैं, वे नई दुनिया में नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार आकर अपनी आत्मिक शक्ति के आधार पर उसका उपभोग करती हैं। फिर जब सृष्टि के नियमानुसार आत्माओं की आत्मिक कम हो जाती हैं तो आत्मायें देहाभिमान के वशीभूत हो जाती हैं और विकर्मों में प्रवृत्त हो जाती हैं, जिसके फलस्वरूप दुख-अशान्ति की अनुभूति करती हैं और उससे मुक्त होने के लिए पुनः परमात्मा को याद करती हैं और भक्ति मार्ग का आरम्भ होता है, जो आधा कल्प चलता है। इस प्रकार देखें तो ज्ञान

केवल संगमयुग पर होता है, उसके बाद आधा कल्प ज्ञान की प्रालब्ध चलती है और आधा कल्प भक्ति चलती है। विनाश के बाद संगमयुग के नये कल्प के भाग में भी आत्माओं ज्ञान नाममात्र ही रहता है और लक्ष्मी-नारायण के गद्दी पर बैठने के बाद तो ज्ञान का नाम-निशान ही मिट जाता है।

''भक्ति मार्ग आधा कल्प चलता है, ज्ञान मार्ग आधा कल्प नहीं चलता है। ज्ञान तो एक ही समय बाप आकर समझाते हैं। फिर ज्ञान की प्रालब्ध 21 जन्म चलती है। ऐसे नहीं कि यह नॉलेज अथवा ज्ञान आधा कल्प चलता है।'' सा.बाबा 19.5.08 रिवा.

''भारत पूज्य था। सतयुग-त्रेता में पुजारीपन नहीं था। ... सतयुग में भक्ति मार्ग की कुछ भी सामग्री नहीं होगी। भक्ति आधा कल्प चलती है, ज्ञान कोई आधा कल्प नहीं चलता है। ज्ञान की प्रालब्ध आधा कल्प चलती है।'' सा.बाबा 11.6.08 रिवा.

''बाप कहते हैं - बच्चे, यह अनादि बना-बनाया ड्रामा है। आधा कल्प है भक्ति मार्ग और आधा कल्प है ज्ञान मार्ग। ... रामराज्य और रावणराज्य आधा-आधा है। कल्प की आयु ही 5000 वर्ष है। चार हिस्से का भी महत्व है।... स्वास्तिका में भी 4 भाग दिखाते हैं।''

सा.बाबा 3.6.08 रिवा.

''भक्ति का फल देने भगवान का आना पड़े। अब भगवान घर बैठे आये हैं भारत में। भारत उनका घर है ना। शिवरात्रि भी यहाँ मनाते हैं। शिव के मन्दिर भी यहाँ बहुत बने हुए हैं। शिवबाबा तुम बच्चों को बैठ नॉलेज देते हैं, जिसको ज्ञानामृत अथवा सोमरस भी कहते हैं।''

सा.बाबा 13.6.08 रिवा.

Q. दान कितने प्रकार का होता है? सबसे श्रेष्ठ दान क्या है और कौन कर सकता है?

दान अनेक प्रकार का होता है। भक्ति मार्ग के दान और ज्ञान-मार्ग के दान में भी कुछ विशेष अन्तर है। जैसे भक्ति मार्ग में किसी कन्या की शादी करा देना या सहयोग देने को भी दान कहते हैं परन्तु ज्ञान-मार्ग में परमात्मा ने इसको दान के रूप में नहीं माना है। धन-दान, अन्न-दान आदि के विषय में भी परमात्मा ने कुछ विशेष बातें बताई हैं। भक्ति में जो परमात्मा के नाम पर दान करते हैं, उसका फल अल्प काल के लिए मिलता है क्योंकि वह इन्डायरेक्ट करते हैं परन्तु अभी हम जो परमात्मा को अपना तन-मन-धन डायरेक्ट दान करते हैं, उसका फल अनेक जन्मों तक मिलता है। ज्ञान-मार्ग में दान के विषय में परमात्मा ने जो बताया है, उसमें ज्ञान-दान, योग-दान, गुण-दान, धन-दान मुख्य हैं। ज्ञान-दान को सबसे श्रेष्ठ दान माना गया है, जिसका भक्ति में भी महत्व है तो ज्ञान मार्ग में भी विशेष महत्व है। धन-दान में बाबा

ने गुप्त-दान को विशेष महत्व दिया है। अभी हम जो परमात्मा को डायरेक्ट तन-मन-धन दान करते हैं, ये सबसे श्रेष्ठ दान है, जिसका फल आत्मा को अनेक जन्मों तक मिलता है। इस तन-मन-धन के परमात्मा को दान का ही भक्ति मार्ग में वामन अवतार के रूप में दानवीर राजा बलि से तीन पैर पृथ्वी के दान में मांगने का वर्णन है।

''कृष्ण आदि देवताओं ने तो विकारों का दान शिवबाबा को देकर ऐसा पद पाया है, वे फिर दान कैसे लेंगे ? शिवबाबा कहते हैं यह 5 विकारों का दान दो तो छूटे ग्रहण। ... दान देकर फिर वापस नहीं लेना है। ... तुमको बाप मुक्ति-जीवनमुक्ति दोनों वर्सा देते हैं।''

सा.बाबा 15.2.08 रिवा.

Q. बाबा ने 3-3 बातें क्या-क्या समझाई हैं ?

होप, हील एण्ड हैपीनेस; हेल्थ, वेल्थ एण्ड हैपीनेस; त्रिलोक; टिवाटा; बाप, टीचर और सत्गुरु; तन-मन-धन; मन्वा-वाचा-कर्मणा; स्वर्ग, नर्क, शान्तिधाम; ब्रह्मा-विष्णु-शंकर त्रिमूर्ति; पास्ट, प्रजेन्ट एण्ड फ्युचर; सतो, रजो और तमो गुण; जड़, जंगम और चेतन प्रकृतियां; लाइट, माइट एण्ड डिवाइन इन्साइट; स्थापना, विनाश और पालना; त्रिताप - दैहिक, दैविक और भौतिक; आत्मा की स्थूल-सूक्ष्म-मूल तीन स्थितियां; कर्ता, भोक्ता और अभोक्ता; गति, सद्गति और दुर्गति; त्रिनेत्र; हरी, वरी एण्ड करी; आत्मा, परमात्मा और ड्रामा तीन बिन्दियां; स्वर्ग, नर्क और संगमयुग; तीन प्रकार के कर्म अर्थात् सुकर्म, विकर्म और अकर्म; लौकिक, अलौकिक और पारलौकिक तीन बाप ; ; ;

Q. शान्ति से सुख या सुख से शान्ति ?

वास्तव में शान्ति - सुख - शान्ति - सुख चक्रवत् चलता है।

Q. क्या सभी आत्मायें परमात्मा से शक्ति लेकर पावन बनती हैं ?

वास्वत में सभी आत्माओं को पावन बनने की शक्ति परमात्मा से ही मिलती है, तब तो सभी आत्मायें उनको याद करती हैं परन्तु हर एक के शक्ति लेने का विधि-विधान अलग-अलग है। वह डायरेक्ट हो या इन्डायरेक्ट हो। जैसे धर्मपितायें परमात्मा से शक्ति और सन्देश लेकर जाते हैं, वह वे अपने धर्म वंश की आत्माओं को देते हैं।

- कर्म की गति तो अति गहन है परन्तु यहाँ उसके अंशमात्र पर विचार करके लिखा गया है अर्थात् जो अंशमात्र अपने विचार में आया है, उसका वर्णन किया गया है।

- यज्ञ के किसी विधि-विधान, नियम-संयम को जो आत्मा स्वार्थपरता के वश तोड़ेंगे तो उनको उसक पश्चाताप अवश्य करना होगा।

- आत्माओं के कर्मभोग, कर्म-सम्बन्धों और कम्र-बन्धनों एवं परस्पर व्यवहार पर दृष्टि डालें और विचार करें तो कर्म की गहन गति का अहसास सहज होता है। दुखदायी कर्मभोग की वेदना से बचने का एकमात्र उपाय है देह से न्यारे होकर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होने का सफल अभ्यास।

Q. ड्रामा के पार्ट और कर्मों की गहन गति एवं पुरुषार्थ में क्या सम्बन्ध है?

ये विश्व-नाटक कर्म और फल आधारित एक खेल है। इसमें ड्रामा का पार्ट, कर्म और कर्मफल का बड़ा सुन्दर सन्तुलन है। पुरुषार्थ से पार्ट का परिवर्तन ड्रामा में अविनाशी नूँधा हुआ है, इसलिए पुरुषार्थ करना हर आत्मा का परम कर्तव्य है, जिस पुरुषार्थ से आत्मा अपने पार्ट में परिवर्तन कर सकती है और करती है। अपने पुरुषार्थ से आत्मा विकर्मों से बच सकती है और पिछले विकर्मों के फलस्वरूप होने वाली दुखदायी वेदना से आत्मिक स्वरूप का सफल अभ्यास कर बच सकते हैं या उसको हल्का कर सकते हैं।

''बेहद का बाप बच्चों को जीते जी मरने की अच्छी-अच्छी प्वाइन्ट्स सुनाते हैं। ... यहाँ तो जीते जी बाप का बनना है। ज्ञान सुनने के लिए जीते जी देह सहित सब बन्धन तोड़ अपने को आत्मा समझना है। ... भल गृहस्थ व्यवहार में रहो, सिर्फ देह सहित तुम्हारा जो कुछ है, उससे ममत्व मिटाओ।'' सा.बाबा 23.6.08 रिवा.

Q. सतयुग-त्रेता में लौकिक बाप से जो वर्सा पाते हैं, वह बेहद का बाप का वर्सा है, लौकिक बाप का नहीं और द्वापर-कलियुग में लौकिक बाप से जो वर्सा पाते हैं, वह लौकिक बाप है - यह कैसे कहेंगे?

सतयुग-त्रेता में लौकिक बाप भी कोई कमाई नहीं करते हैं और उनको ये संकल्प होता है कि हम बच्चों को ये वर्सा देते हैं और न बच्चों को संकल्प होता है कि हमको लौकिक बाप से कोई वर्सा मिल रहा है। वहाँ तो ड्रामा के अनुसार पार्ट बजाते रहते है। बाबा ने अभी आत्मिक शक्ति दी, उसके आधार पर प्रकृति दासी रहती है, इसलिए उसको बेहद के बाप का वर्सा कहते हैं। द्वापर से देहाभिमानी होने के कारण देने और लेने का संकल्प होता है, इसलिए उसको लौकिक बाप का वर्सा कहते हैं। वास्तव में द्वापर-कलियुग में भी हर आत्मा को अपने कर्मों के अनुसार फल वर्से के रूप में लौकिक बाप से मिलता है।

''तुम लौकिक बाप से जन्म बाई जन्म वर्सा लेते आये हो। ऐसे तो नहीं कि सतयुग में भी तुम लौकिक बाप का वर्सा लेते हो। नहीं, सतयुग में जो लौकिक बाप से वर्सा लेते हो, वह इस समय की यहाँ की कमाई है। ... सतयुग में वर्सा तुम अभी के पुरुषार्थ से पाते हो। अभी तुम

बेहद के बाप से बेहद का वर्सा पाते हो।'' सा.बाबा 23.6.08 रिवा.

''जो जीते जी मरते हैं, पवित्रता की प्रतिज्ञा करते हैं, वे सगे बच्चे हैं और जो पवित्र नहीं बनते, सिर्फ बाबा-बाबा कहते हैं परन्तु जीते जी मरते नहीं हैं, वे सौतेले बच्चे हैं। ... पवित्र बनने की प्रतिज्ञा कर बाप के पास आयेंगे तो बाप से वर्सा मिलेगा।''

सा.बाबा 23.6.08 रिवा.

''यह राजधानी स्थापन हो रही है। तुम ऐसे मत समझो कि हम शिवबाबा को देते हैं। नहीं, हम उनसे स्वर्ग की बादशाही का वर्सा लेते हैं। शिवबाबा तो दाता है। ... इस दादा का भी सब कुछ मैंने काम में लगाया ना। ... इस समय सब आत्माओं को बाप से वर्सा मिलना है।''

सा.बाबा 23.6.08 रिवा.

''अभी लौकिक बाप का वर्सा मिलना बन्द होने का है। स्वर्ग में तुमको जो लौकिक बाप से वर्सा मिलेगा, वह यहाँ की कमाई से मिलता है। ... हर एक को समझाओ - अब लौकिक बाप से वर्सा लेना बन्द होता है। अभी पारलौकिक बाप से 21 जन्मों के लिए वर्सा मिलता है।''

सा.बाबा 23.6.08 रिवा.

Q. लक्ष्मी-नारायण को यह सृष्टि-चक्र, कल्प-वृक्ष आदि का ज्ञान दिया जाये, तो क्या वे इसको समझेंगे ? यदि हाँ तो क्यों और कैसे और यदि नहीं तो क्यों और कैसे ? हम अभी इस ज्ञान को क्यों समझते हैं ?

लक्ष्मी-नारायण समझदार होते भी इस ज्ञान को नहीं समझ सकते हैं क्योंकि परमधाम से जाने-आने के बाद उनका पहला जन्म है, इसलिए उनकी आत्मा में चक्र के सुख-दुख का अनुभव नहीं है। ब्रह्मा बाबा और हम आत्माओं में सारे चक्र में पार्ट बजाया है और सुख-दुख का अनुभव किया है, इसलिए हमारी बुद्धि में ही यह ज्ञान आ सकता है और सहज आ जाता है। परमधाम जाने के बाद आत्मा में ये चक्र के सुख-दुख का अनुभव पूर्णतया मर्ज हो जाता है।

Q. सबसे श्रेष्ठ पुरुषार्थ कौन सा हे, जिसमें सर्व पुरुषार्थ समा जायें अर्थात् सिद्ध हो जायें ?

जब चाहें, जेसे चाहें, उस समय सेकेण्ड में देह से न्यारे आत्मिक स्वरूप में स्थित हो जायें और जितना समय चाहें स्थित रहें और इस विश्व-नाटक को साक्षी होकर देखते रहें।

Q. विनाश के समय अन्तिम परीक्षा में कौन पास हो सकेंगे ?

''मन को यह ड्रिल करानी है। एक सेकेण्ड में आवाज में, एक सेकेण्ड में आवाज से परे। एक सेंकेण्ड में सर्विस के संकल्प में आयें और एक सेकेण्ड में संकल्प से परे स्वरूप में स्थित

हो जायें। इस ड्रिल की बहुत आवश्यकता है। ... एक सेकेण्ड में अशरीरी हो जायें। जिनकी यह ड्रिल पक्की होगी, वे ही सभी परिस्थितियों का सामना कर सकते हैं।''

अ.बापदादा 16.10.69

''न्यारे तब हों सकेंगे जब जो कार्य करते हो वह न्यारी अवस्था में होकर करेंगे। अगर उस कार्य में अटेचमेन्ट होगी तो फिर एक सेकेण्ड में डिटेच नहीं हो सकेंगे। ... क्योंकि फाइनल पेपर अनेक प्रकार के भयानक और न चाहते हुए भी अपनी तरफ आकर्षित करने वाली परिस्थितियों के बीच होंगे। ... अगर इस सब्जेक्ट में नम्बर कम हैं तो फाइनल नम्बर में आगे नहीं आ सकेंगे।''

अ.बापदादा 16.10.69

''जो अन्तिम समय परिस्थितियों आने वाली हैं, उनकी भेंट में आजकल की परिस्थितियां तो कुछ भी नहीं हैं। उन परिस्थितियों के बीच पेपर होना है। ... अगर इस सब्जेक्ट (अशरीरीपन की ड्रिल) में नम्बर कम हैं तो फाइनल में नम्बर आगे नहीं आ सकते।''

अ.बापदादा 16.10.69

Q. जब बाबा साकार में था तो कोई भी उनसे मिलकर अपने दिल की बात कह सकता था और उनकी श्रीमत ले सकता था परन्तु अभी की परिस्थितियाँ भिन्न दिखाई देती हैं अर्थात् अभी बाबा तो अव्यक्त हो गये, साकार में जो मुख्य दादियाँ हैं, उनसे मिलने के लिए भी ब्राह्मणी की छुट्टी लेकर ही मिलना सम्भव है तो ऐसी परिस्थिति में हमारा कर्तव्य क्या है ?

परमात्मा अविनाशी है और संगमयुग पर परमात्मा का जो पार्ट है, वह भी अव्यक्त रूप में चल रहा है। जो निश्चयबुद्धि होगा, उसको बाप के साथ का अनुभव भी होगा और उसको यथा समय पर उसकी श्रीमत अवश्य मिलेगी, बाप उसको टच अवश्य करेगा। ड्रामा का भी ये अविनाशी नियम है कि जो नियम-संयम वाला है और परमात्मा पर श्रृद्धा-भावना और विश्वास है, उसको उसकी मदद अवश्य मिलती है अर्थात् ड्रामा में वह नूँध है, इसलिए अच्छे पुरुषार्थी को कभी हताश होकर अपनी श्रृद्धा-भावना और विश्वास को खोना नहीं चाहिए।

Q. पाप के खाते और आत्मा पर चट चढ़ने का क्या सम्बन्ध है, उसका क्या विधि-विधान है ?

आत्मा पर कट देहाभिमान की चढ़ती है, जो सतयुग के आदि के प्रथम जन्म और प्रथम सेकेण्ड से ही चढ़ना आरम्भ हो जाती है, जिसको देहभान के नाम से सम्बोधित किया जाता है, वह देहभान ही समयान्तर में देहाभिमान का रूप लेता है और पाप का खाता विकारों के वशीभूत किये गये विकर्मों से बढ़ता है। आत्मा पर कट चढ़ते-चढ़ते जब आत्मा अपने स्वरूप को भूलकर अपनी शक्ति को खो देती है, आत्मा का संगमयुग पर जमा किया पुण्य का खाता

खत्म हो जाता है, तब आत्मा पर देहाभिमान प्रभावी हो जाता है, जिससे आत्मा विकारों के वशीभूत होकर विकर्म अथ्रात् पाप कर्म करने लगती है, जिससे आत्मा का पाप का खाता बढ़ता है। संगमयुग पर जब आत्मा को परमात्मा से यथार्थ ज्ञान मिलता है तब उस ज्ञान और परमपिता परमात्मा की याद से आत्मा की कट उतरती है, जिससे आत्मा अपने स्वरूप को पहचानकर देही-अभिमानी बनती है, तब आत्मा श्रेष्ठ कर्म अर्थात् पुण्य कर्म करती है, जिससे आत्मा का पाप का खाता खत्म होता है। कर्मभोग से भी आत्मा का पाप का खाता खत्म होता है।

Q. गर्भ में मनुष्य की आत्मा कितने दिनों के बाद प्रवेश करती है ?

आत्मा गर्भ में जब पिण्ड तैयार हो जाता है तब प्रवेश करती है। पिण्ड को तैयार होने में 5 मास के लगभग लगते हैं परन्तु 5 मास के बाद हर आत्मा प्रवेश करती हो - कोई निश्चित समय सीमा (Hard and Fast) नहीं है। 5-10 दिन आगे पीछे भी हो सकता है।

''आत्मा को ही सत् और चेतन्य कहा जाता है। शरीर को सत् और चेतन्य कह नहीं सकेंगे। बच्चे का शरीर 5 महीने तक जड़ होते भी गर्भ में वृद्धि को पाता रहता है। वृद्धि को तो हर चीज पाती ही है परन्तु यह मनुष्य की आत्मा महान है।''

सा.बाबा 16.7.08 रिवा.

Q. 33.33 प्रतिशत में पास होने का विधि-विधान कहाँ से चालू हुआ ?

''अन्त में सबका हिसाब-किताब चुक्तू होगा, नम्बरवार। चुक्तू नहीं होगा तो सजा खानी पड़ेगी।... कम से कम 8 घण्टा तक याद रहेगी तो तुम पास हो जायेंगे। चार्ट रखो। तूफान तब आते हैं, जब तुम अपने को आत्मा समझ बाप को याद नहीं करते हो।''

सा.बाबा 18.7.08 रिवा.

Q. क्या संगमयुग केवल पुरुषार्थ का युग है अर्थात् केवल पुरुषार्थ के लिए ही है या संगमयुग की कोई और भी विशेषतायें हैं ?

संगमयुग केवल पुरुषार्थ के लिए नहीं है बल्कि संगमयुग के समान प्राप्तियाँ अर्थात् सुख त्रिलाक और त्रिकाल में कहाँ भी नहीं मिलता है। संगमयुग पर पुरुषार्थ ही प्रालब्ध है अर्थात् पुरुषार्थ सतयुगी प्रालब्ध से भी अधिक सुखदायी है। आत्मिक स्वरूप में स्थिति आत्मा परमशान्ति, परमानन्द का अनुभव करती है क्योंकि आत्मिक स्वरूप परमानन्दमय है। परमात्म-सानिध्य और परमात्म-प्यार परमानन्द का अनुभव कराता है क्योंकि परमात्मा परमानन्दमय है, जो त्रिकाल और त्रिलोक में कहाँ और कब नहीं मिल सकता है। विश्व-नाटक

के यथार्थ ज्ञान को यथार्थ रीति समझने वाली आत्मा को साक्षी होकर इसको देखने वाले को जो सुख मिलता है, वह परमसुख है, जो त्रिलोक और त्रिकाल में कब और कहाँ नहीं मिलता है ओर मिल सकता है। एक बच्चे को माता की गोद में माता के सानिध्य में जो सुख अनुभव होता है, वह ताउसी तख्त पर बैठने से अनुभव नहीं हो सकता है। ये संगमयुग ही मात-पिता की गोद है अर्थात् गोद के सुख का अनुभव कराने वाला है। जो इस संगमयुग के रहस्य को समझ लेता है, वह संगमयुग पर मुक्ति-जीवनमुक्ति का परम-सुख अनुभव करता है, उसके लिए ये संगमयुगी जीवन परमानन्दमय है। इसलिए ही परमात्मा पिता कहते हैं - बाप को बच्चों की मेहनत देखी नहीं जाती अर्थात् ये मेहनत मेहनत नहीं है, परमात्म-मोहब्बत है।

Q. क्या संगमयुग के अतिरिक्त किसी समय शिवबाबा को ये ज्ञान अनुभव में आता है ?

शरीर के बिना तो कब कोई अनुभव न होता है और न हो सकता है, इसलिए परमात्मा को भी संगमयुग के अतिरिक्त त्रिलोक का ज्ञान इमर्ज नहीं होता है, इसलिए वह भी उस समय त्रिलोकीनाथ नहीं है।

''बच्चे बाप को भूल जाते हैं। यह भूलना भी ड्रामा के अन्दर है। बाप आकर सभी राज़ समझाते हैं। ... बाप कहते हैं - बच्चे, तुम भी इस समय त्रिलोकीनाथ हो, तो मैं भी त्रिलोकीनाथ हूँ।'' सा.बाबा 24.7.08 रिवा.

Q. 21 पीढ़ी की गणना का सिद्धान्त क्या है अर्थात् एक मनुष्य के 21 जन्म से 21 पीढ़ी की गणना है या एक मनुष्य की वंशावली में दादे-परदादे-पोत्र-परपोत्रे के रूप में गणना होती है ? क्योंकि एक मनुष्य के शरीर छोड़ने तक उसकी वंशावली में 3-4 पीढ़ी पुत्र-पौत्रों की हो जाती हैं।

''समझते हैं - कोई समय भारत में रामराज्य था, अभी नहीं है, इसलिए रामराज्य की कोशिश करते हैं कि भारत में वर्ल्ड आलमाइटी अथॉरिटी रामराज्य हो। परन्तु यह किसी मनुष्य के हाथ में नहीं है। ... भारतवासियों को सतयुग-त्रेता में बेहद के बाप से 21 पीढ़ी का बहुत सुख मिला हुआ है।'' सा.बाबा 26.7.08 रिवा.

विचारणीय विविध प्रश्न

Q. ज्ञान-सागर मन्थन, अपने से बातें करना, रूह-रुहान करने में क्या अनतर है ?

Q. आत्मा, परमात्मा और ड्रामा के किन अटल सत्यों की धारणा हो तो ये जीवन परमानन्दमय अनुभव हो ?

Q. ईश्वरीय विधि-विधान क्या है ?

Q. निश्चयबुद्धि और न्याय प्रक्रिया में क्या सामन्जस्य है ?

Q. देह से न्यारी स्थिति में स्थित होने और परमधाम तथा स्वर्ग की स्मृति करने में क्या अन्तर है ?

Q. क्या दैवी घराने की आत्मायें भी विदेशी आक्रमणकारियों के द्वारा सताई जायेंगी ?

Q. Concentration - दृष्टि, शब्द,.. और योग में क्या अन्तर है ? दोनों में क्या समानतायें हैं और क्या अन्तर हैं ? दोनों के क्या लाभ हैं ?

Q. पावन बनने और दैवी गुण धारण करने में क्या अन्तर है और दोनों के लिए क्या पुरुषार्थ है ?

Q. व्यर्थ संकल्पों से मुक्त होने का साधन क्या है ?

Q. यह ज्ञान मनुष्यों की बुद्धि में क्यों नहीं बैठता है और कब बैठेगा ?

Q. जैसे बाप अपकारी पर उपकार करता है, वैसे हम भी अपकारी पर उपकार कब और कैसे कर सकेंगे ? अर्थात् इसके लिए क्या धारणा चाहिए ?

Q. सर्व आत्मायें बाप के बच्चे हैं तो वे सब कब और कहाँ और कैसे बाप से मिलती हैं ?

Q. द्वापर से तुम्हारे भक्तों की मनोकामनायें पूर्ण करता हूँ . तो वे भक्त कहाँ से आये और वे किस धर्म के हैं ? क्या वे सतयुग-त्रेता में आये या कब आये ? क्या त्रेता के बाद भी देवी-देवता घराने की आत्मायें आती रहती हैं ? या वे भक्त वे आत्मायें होती हैं, जो सतयुग में राजाओं की प्रजा आदि होते हैं ?

Q. ब्रह्मा बाबा को कितनी आत्मायें प्रत्यक्ष में देखेंगी, उनसे मिलेंगी या अनुभव करेंगी ?

Q. रामायण, महाभारत में वे कौन से उपख्यान हैं, जो हमारे ज्ञान की सत्यता को सिद्ध करते हैं ?

Q. हमारा योग सही है या नहीं है, इसकी कसौटी क्या है ?

Q. ज्ञान-सागर मन्थन, अपने से बातें करना, रूह-रुहान करने में क्या अनतर है ?

Q. आत्मा, परमात्मा और ड्रामा के किन अटल सत्यों की धारणा हो तो ये जीवन परमानन्दमय अनुभव हो ?

Q. ईश्वरीय विधि-विधान क्या है ?

Q. संस्कार कितने प्रकार के होते हैं ?

Q. निश्चयबुद्धि और सुन्दर-सुखमय मृत्यु का आधार क्या है ?

Q. निश्चयबुद्धि और न्याय प्रक्रिया में क्या सामन्जस्य है ?

Q. देह से न्यारी स्थिति में स्थित होने और परमधाम तथा स्वर्ग की स्मृति करने में क्या अन्तर है ?

Q. क्या दैवी घराने की आत्मायें भी विदेशी आक्रमणकारियों के द्वारा सताई जायेंगी ?

Q. समर्पित जीवन की मर्यादा और अन्ध-श्रृद्धा में क्या अन्तर है ?

Q. सुख, अतीन्द्रिय सुख, आनन्द, खुशी, नशा में क्या मूलभूत अन्तर है ?

Q. दृष्टि-वृत्ति-संकल्प-वायुमण्डल या दृष्टि-संकल्प-वृत्ति-वायुमण्डल या दृष्टि-स्मृति-संकल्प-वृत्ति-वायुमण्डल ?

Q. समर्पित जीवन की मर्यादा और अन्ध-श्रृद्धा में क्या अन्तर है ?

सारांश

उपर्युक्त सभी प्रश्नों के विषय में विचार करने के बाद प्रश्न उठता है कि क्या इन सब सत्यों को जानने के बाद हमारा पुरुषार्थ मन्द हो जायेगा अर्थात् क्या हम पुरुषार्थहीन हो जायेंगे ?

Q. आध्यात्मिक जीवन के गुण-धर्म क्या हैं, जीवन में अध्यात्मिकता का महत्व क्या है ?

Q. आध्यात्मिकता क्या है ?

Q. बाबा जो कहता है कि तुम्हारी उड़ती कला होनी चाहिए, वह उड़ती कला क्या है ?

ये विचारणीय प्रश्न हैं और अध्यात्मिकता अति रहस्यमय पहेली है। इन सब प्रश्नों का उत्तर ब्रह्मा बाबा के जीवन से सहज ही अनुभव कर सकते हैं। ब्रह्मा बाबा के जीवन पर विचार करें तो हम सहज ही इस पहेली को हल कर सकते हैं। भक्ति मार्ग में भी राजा भर्तृहरि, मीरा आदि के जीवन पर विचार करें तो हम इस अध्यात्मिकता के महत्व को समझ सकते हैं और उसके लिए अभीष्ट पुरुषार्थ कर सकते हैं।

ब्राह्मण जीवन परम-शान्ति, परमानन्द और परम-सुख को अनुभव करने का जीवन है अर्थात् जो परमात्मा के बताये नियम-संयम पर चलता है, वह जीवन में परम-शान्ति, परमानन्द और परम-सुख को अवश्य अनुभव करता है। यदि इन तीनों का अनुभव नहीं तो वह सच्चा ब्रह्मण नहीं है अर्थात् उसके जीवन में कहाँ न कहाँ ईश्वरीय नियम-संयम, ईश्वरीय मर्यादाओं की कमी अवश्य है।

Q. पुरुषार्थ का जीवन में क्या महत्व है ?

Q. जीवन क्या है और किसलिए है ? वर्तमान ब्राह्मण जीवन क्या है और किसलिए है ?

जीवन एक खेल है, जो आत्मा इस विश्व-नाटक में या सृष्टि रंगमंच पर खेलती है। जो आत्मा इस विश्व-नाटक को यथार्थ रीति समझकर ये खेल खेलती और देखती है, उसके लिए यह परमानन्दमय है। परमात्मा ही आकर इस सत्य का ज्ञान देते हैं।

हम ब्राह्मण परमात्मा के बच्चे हैं और परमात्मा से हमको सारा ज्ञान मिला है, उस ज्ञान को समझकर हम विचार करें - मैं कौन हूँ, मेरा कर्तव्य क्या है और मैं कहाँ तक उसको पूरा कर रहा हूँ ?

मैं चैतन्य आत्मा, परमात्मा की सन्तान हूँ, परमात्मा के समान ज्ञान-गुण-शक्तियों से सम्पन्न-सन्तुष्ट परमानन्दमय हूँ। सदा इस सर्वोच्च स्थिति की अनुभूति में रहना और दूसरों को

भी इसकी अनुभूति कराना, उनको उसका रास्ता बताना, यही ब्राह्मण जीवन है। अपने को सदा इस स्थिति और इस कर्तव्य में अपने को बिज़ी रखना।

Q. वर्तमान संगमयुग पर हमारा कर्तव्य क्या है ?

हमको अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर परम शान्ति, परमानन्द और परम सुख की अनुभूति में रहना और ड्रामा को साक्षी होकर देखना और ट्रस्टी होकर कर्म करना है। जो इस स्थिति में स्थित रहेगा, उसके सारे कार्य स्वतः होंगे। लौकिक गीता में भी लिखा है - जो मेरे प्रति समर्पित होता है, उसका योगक्षेम मैं स्वयं करता हूँ। बाबा ने भी ऐसा ही कहा है। ड्रामा इसकी अविनाशी नूँध है।

विविध ईश्वरीय महावाक्य

‘‘सभी पहचानेंगे तो नॉलेज से ही ना, और क्या देखेंगे। सोल प्रवेश करती है तो उनके बात करने से ही पता पड़ता है। शिवबाबा भी नॉलेज दे, तब समझें कि शिवबाबा बोलते हैं। यह ज्ञान ये तो दे न सकें। ... यह नॉलेज शिवबाबा के सिवाए कोई दे नहीं सकते।’’

सा.बाबा 14.6.08 रिवा.

‘‘बाबा उन्होंको सफेद पोशधारी का साक्षात्कार कराते हैं। इसलिए बाबा कभी हमारी ड्रेस बदलने नहीं देते हैं। तो उनकी नॉलेज से मालूम पड़ता है।’’

सा.बाबा 14.6.08 रिवा.

‘‘आधा कल्प जो खाता ना की तरफ चला गया है, वह खत्म करना है और नया खाता जमा करना है। ... अभी बाप श्रीमत देते हैं, जिससे हम श्रेष्ठ बनेंगे और हमारा आधा-कल्प के लिए खाता जमा हो जाता है। यह एक ही बार खाता जमा होता है।’’

सा.बाबा 27.6.08 रिवा.

‘‘कोई कहते हैं - बाबा, हम जल्दी जायें। कब विनाश होगा, हम कब जायेंगे ? यह कहना माना - बाबा आप वापस कब जायेंगे! अभी तुम शिवबाबा के पास बैठे हो, अभी ईश्वरीय सन्तान हो। ... ज्ञान सूर्य बाप तुम्हारी तकदीर जगा रहे हैं।’’

सा.बाबा 27.6.08 रिवा.

‘‘बिड़ला मन्दिर में लिखा हुआ है कि देहली को परिस्तान बनाया था। तो जरूर कब्रिस्तान को ही परिस्तान बनाया होगा। प्रलय तो नहीं होगी। ... अब यह सारी दुनिया को बताना है कि पतित दुनिया को पावन बनाने वाला शिवबाबा है।’’

सा.बाबा 2.7.08 रिवा.

‘‘कोई-कोई ट्रेटर भी निकल पड़ते हैं। समझाना चाहिए - यह युद्ध का मैदान है, माया बड़ी प्रबल है। कोई फेल हो जाते हैं। यह भी ड्रामा का खेल है। सब थोड़ेही विन कर सकते हैं। ... हार और जीत का खेल है। माया से हारे हार है, माया से जीते जीत है।’’

सा.बाबा 2.7.08 रिवा.

‘‘वहाँ पहले से साक्षात्कार होता है कि बच्चा आने वाला है। वहाँ मुख का प्यार होता है, विकार की बात ही नहीं है। वह है ही निर्विकारी दुनिया।’’

सा.बाबा 3.7.08 रिवा.

‘‘यह नॉलेज उठायेंगे भी वे जो राजधानी के मालिक बनने होंगे। फिर जो प्रजा में साहूकार

बनने वाले होंगे, वे ज्ञान सुनेंगे, बीज भी बोयेंगे लेकिन पढ़ाई ज्यादा नहीं पढ़ेंगे। वे पवित्र भी रहेंगे ... अगर पूरा निश्चय है तो रेग्यूलर पढ़ाना चाहिए।''

सा.बाबा 4.7.08 रिवा.

''बाबा ब्रह्मा द्वारा सब वेदों-ग्रन्थों का सार बताते हैं, उनको गीता कहा जाता है। ... अब यह सब खलास होना है। तुम बच्चों ने विनाश-स्थापना देखी है, इसलिए पुरुषार्थ कर रहे हो। बाबा के पास सबका पोतामेल रहता है।'' (Q. बाबा के पास पोतामेल कैसे रहता है? बाबा के अन्दर शक्ति है कि वह जब चाहे तब किसका भी पोतामेल देख सकता है।)

सा.बाबा 4.7.08 रिवा.

ड्रामा अनुसार यह सारा खेल ही ऐसा बना हुआ है। फिर वही गीता, चित्र आदि निकलेंगे। ... बाप का बनकर फिर जो भागन्ती हो जाते हैं, वे तो प्रजा में चण्डाल बनते हैं परन्तु जो यहाँ रहकर विकर्म आदि करते हैं, वे रॉयल घराने के चण्डाल बनते हैं। फिर भी पिछाड़ी में उनको ताज-पतलून मिल जाती है क्योंकि यहाँ बाप की गोद तो लेते हैं ना, इसलिए चण्डिका देवी की भी पूजा होती है।

सा.बाबा 10.7.08 रिवा.

जो अव्यक्त स्थिति में होंगे, उन्होंने अव्यक्त मूर्त को जाना-पहचाना। ... अभी स्थापना का कार्य ब्रह्मा का है न कि हमारा। अभी आप बच्चों की पालना ब्रह्मा द्वारा ही होगी। स्थापना के अन्त तक ब्रह्मा का ही पार्ट है। ... क्लास जैसे चलती है वैसे ही चलेगी। क्या सुनायेंगे? जो ब्रह्मा का तन मुकरर है तो मुरली उसी के तन द्वारा जो चली है, वही मुरली है। और सन्देशियों द्वारा थोड़े समय के लिए जो सर्विस करते हैं, उनको मुरली नहीं कहा जाता है। उस मुरली में जादू नहीं है। बापदादा की मुरली में ही जादू है।

अ.बापदादा 21.1.69

बाकी आज से सभी के लिए कौन निमित्त है, वह तो आप जानते ही हैं - दीदी तो है, साथ में कुमारका मददगार है। ... यह तो अचानक पेपर निकला परन्तु जो आने वाला पेपर है, वह बताते हैं। अब एकमत, अन्तर्मुख और अव्यक्त स्थिति में स्थित होकर सम्बन्ध में आओ।

अ.बापदादा 21.1.69

अपनी मूरत को देखने के लिए अपने पास दर्पण रखना चाहिए। ... जो अर्पणमय होगा, उनके पास ही दर्पण रहेगा। अर्पण नहीं तो दर्पण भी अविनाशी नहीं रह सकता। ... अव्यक्त मिलन भी वहीं कर सकता जो अव्यक्त स्थिति में होगा।

अ.बापदादा 17.5.69

‘‘अभी तुम यहाँ ऐसे बाप की गोद में आये जो जो बाप तुमको इस मृत्युलोक से अमरलोक में अथवा दुर्गति से सद्गति में ले जाने वाला है। ... ऐसे नहीं कि सद्गति सिर्फ तुमको ही मिलती है। सद्गति तो सबको मिलती है परन्तु ड्रामा अनसार किसको सतोप्रधान, किसको सतो, किसको रजो-तमो सद्गति मिलती है। ... पहले-पहले जो आत्मायें आती हैं, वे सुख भोगती हैं अर्थात् सद्गति में आती हैं।’’ सा.बाबा 8.7.08 रिवा.

‘‘शिवबाबा को याद करने के लिए ब्रह्मा तन को भी याद करना पड़े ना। ... ब्रह्मा के सिवाए तो शिवबाबा सुन न सके। ... गाया जाता है - विनाश काले विपरीत बुद्धि और विनाश काले प्रीत बुद्धि - किसके साथ ? शिवबाबा के साथ ब्रह्मा द्वारा।’’

सा.बाबा 9.7.08 रिवा.

‘‘भारत सदा श्रेष्ठाचारी था, तो स्वर्ग था। स्वर्ग में भी अगर भ्रष्टाचारी हों तो उनको स्वर्ग कैसे कहा जायेगा। ... द्वापर में ऐसे श्रेष्ठाचारी राजा-रानियों के मन्दिर बनाकर पूजा करते हैं तो जरूर खुद भ्रष्टाचारी हैं।’’

सा.बाबा 10.7.08 रिवा.

‘‘ड्रामा अनुसार यह सारा खेल ही ऐसा बना हुआ है। फिर वही गीता, चित्र आदि निकलेंगे। ... बाप का बनकर फिर जो भागन्ती हो जाते हैं, वे तो प्रजा में चण्डाल बनते हैं परन्तु जो यहाँ रहकर विकर्म आदि करते हैं, वे रॉयल घराने के चण्डाल बनते हैं। फिर भी पिछाड़ी में उनको ताज-पतलून मिल जाती है क्योंकि यहाँ बाप की गोद तो लेते हैं ना, इसलिए चण्डिका देवी की भी पूजा होती है।’’

सा.बाबा 10.7.08 रिवा.

‘‘ऊपर से धर्म स्थापन करने जो आत्मायें आती हैं, वे जरूर सतोप्रधान श्रेष्ठाचारी होंगी। उस समय भल माया का राज्य है परन्तु पहले-पहले आने वाले जरूर सतोप्रधान होंगे, तब तो उनकी महिमा होती है। ... फिर हर एक को सतो, रजो, तमों में आना ही है अर्थात् भ्रष्टाचारी बनना ही है।’’

सा.बाबा 10.7.08 रिवा.

अष्ट रत्नों में

- विचारणीय तथ्य यह है कि इनमें कौन-कौन समानान्तर पहली राजाई में राजा-रानी बनेंगे और दूसरी-तीसरी राजाई या जन्म में राजा-रानी बनेंगे। पहले जन्म में और पहली राजाई में

जो चक्रवर्ती महाराजा-महारानी होंगे और उनके साथ जो समानान्तर राजाइयों में राजा-रानी बनेंगे और जो दूसरे-तीसरी राजाई या जन्म के बाद चक्रवर्ती महाराजा-महारानी बनेंगे, उनमें कौन महान होंगे क्योंकि जो महान होंगे, वे ही अष्ट रतनों में और 108 की माला के मणके गिने जायेंगे। उदाहरणार्थ - भारत जब स्वतन्त्र हुआ तब स्वतन्त्र भारत के पहले प्रधान मन्त्री जवाहरलाल नेहरू और उनके मन्त्रिमण्डल में बनने वाले मुख्य-मुख्य मन्त्री महान मानें जायेंगे या आज जो प्रधान मन्त्री बन रहे हैं, वे महान माने जायेंगे। त्याग-तपस्या, बलिदान और देश के प्रति समर्पण भाव किसका महान है क्योंकि जिसकी त्याग-तपस्या, बलिदान और देश के प्रति समर्पण भाव महान है, वही महान माना जायेगा।

''सन्यासियों से भी कोई निकलेंगे, जो असुल देवी-देवता धर्म का होगा, वह झठ उठा लेगा। ... 3-4 जन्मों से कन्वर्ट हुए होंगे तो इतना जल्दी नहीं निकलेंगे।'' (सन्यासियों से भी निकलेंगे अवश्य क्योंकि जिस तन में शकराचार्य ने प्रवेश किया वह तो देवी-देवता धर्म का ही होगा)

सा.बाबा 14.7.08 रिवा.

''तुमको यह ज्ञान सब धर्म वालों को समझाना है। बोलो ... खुदा ही रचयिता और रचना की नॉलेज बता सकते हैं। वे तो रहते हैं शान्तिधाम में, उनको याद करने से तुम शान्ति का वर्सा ले सकते हो। ... ये ज्ञान सब धर्म वालों के लिए है।''

सा.बाबा 14.7.08 रिवा.

''नर से नारायण वा बेगर से प्रिन्स बनाने का वर्सा बाप बिगर कोई दे न सके। ... हम बाबा से बेहद का वर्सा ले रहे हैं। स्वर्ग का वर्सा है ही लक्ष्मी-नारायण वा प्रिन्स-प्रिन्सेज बनना।''
(**Q.** कौन-कौन से काम एक बाप ही कर सकता है?)

सा.बाबा 16.7.08 रिवा.

''सन्यासियों को बड़े-बड़े आदमी भी माथा झुकाते हैं - क्यों? वे पढ़े-लिखे तो सन्यासियों से भी जास्ती हैं परन्तु सन्यासी पवित्र हैं, सन्यास किया है, इसलिए बुद्धिमान माने जाते हैं। अभी तुम बुद्धिमान बनते हो। तुम अभी रचयिता ओर रचना के आदि-मध्य-अल्त को जानते हो।''

सा.बाबा 17.7.08 रिवा.

''तुम कहेंगे निराकार फिर कैसे आते हैं? हाँ, आ सकते हैं ... आत्मा को बुलाते हैं तो आत्मा दूसरे के शरीर में प्रवेश करती है। कोई तो भूत की आत्मायें बहुत चंचल होती हैं। पत्थर आदि भी मारती हैं। आत्मा शरीर में आती है तब तो कुछ कर सकती है। ... शुद्ध आत्मायें

भी आती हैं। जो कुछ पास हुआ, वह सब ड्रामा में नूँध है। यह ड्रामा का खेल है।''

सा.बाबा 17.7.08 रिवा.

''यह सुख-दुख का खेल है और भारत के लिए ही है। भारत हीरे जैसा था, सो अब कौड़ी जैसा बन पड़ा है। भारत में पवित्र गृहस्थ धर्म था, जिनके चित्र हैं। लक्ष्मी-नारायण का राज्य था। ... लक्ष्मी-नारायण दि फर्स्ट, सेकेण्ड, थर्ड चलते हैं। आठ गद्दियां चलती हैं, फिर चन्द्रवंशी की 12 चलती हैं।'' (Q. प्रश्न उठता है कि 8 गद्दियां और 12 गद्दियां समानान्तर चलती हैं या क्रमानुसार ?)

सा.बाबा 18.7.08 रिवा.

''अभी तो राजाई है नहीं, कोई किंग-क्वीन नहीं है, प्रजा का प्रजा पर राज्य है। ... बाप आलमाइटी अथॉरिटी, वन गवर्मेन्ट, वन राज्य स्थापन करते हैं। हाहाकार के बाद फिर जयजयकार होना है।'' सा.बाबा 18.7.08 रिवा.

''तुम बच्चे अपना तन-मन-धन भारत को स्वर्ग बनाने की सेवा में स्वाहा करते हो, बाप को मदद करते हो। ... जो जितना समफल करेंगे, उन्हें उतनी बड़ी वैकुण्ठ की बादशाही भी मिलेगी। लेन-देन का हिसाब है। बाप एक्सचेन्ज करते हैं। ... देह सहित देह के सभी सम्बन्धों को भूलो और अपने को ट्रस्टी समझो। यह सब ईश्वर का दिया है। ... बाबा को तुम्हारा पोतामेल मालूम होगा तो राय देते रहेंगे।'' (Q. यह लेन-देन का सिद्धान्त किन-किन बातों पर प्रभावित होता है, जिससे हमारा भाग्य बनता भी है तो बिगड़ता भी है ?)

सा.बाबा 18.7.08 रिवा.

''तीव्र पुरुषार्थी कभी विनाश की डेट का नहीं सोचते हैं। बहुत समय से अगर सम्पूर्णता के संस्कार होंगे तो अन्त में भी सम्पूर्ण हो सकेंगे। अगर अन्त में सम्पूर्ण बनेंगे तो बापदादा भी अन्त में थोड़ा दे देंगे।'' अ.बापदादा 25.10.69

''फाउण्डेशन को मजबूत करने के लिए गहराई की आवश्यकता होती है। ... ऊपर-ऊपर से नींव लगाने से मजबूती नहीं होती है। जितना गहराई से ज्ञान को धारण किया होगा, उतना ही अपने में मजबूती लाई होगी।'' अ.बापदादा 25.10.69

''एक बाप के साथ बुद्धियोग लगाने से अनेक प्राप्तियां होती हैं। सिर्फ 'एक' शब्द याद रखो तो उसमें सारा ज्ञान आ जाता है, स्मृति भी आ जाती है, सम्बन्ध भी आ जाता है, स्थिति भी आ जाती है और साथ-साथ जो प्राप्ति होती है, वह भी उस एक शब्द से स्पष्ट हो जाती है।'' Q. 'एक' शब्द कहाँ-कहाँ प्रयोग होता है ? जैसे एक की याद, एकरस स्थिति, एकमत ....

अ.बापदादा 25.10.69

''शिवबाबा निराकार है, उसकी पालना भी नहीं होती है। ... आत्मा गर्भ में तो अपना अंगूठा चूसती है। शिवबाबा को अंगूठा ही नहीं है, जो चूसना पड़े।''

सा.बाबा 21.7.08 रिवा.

''वास्तव में आदि सनातन देवी-देवता धर्म कहना रांग है। वह तो है सतयुग का धर्म। यह आदि सनातन ब्राह्मणों का धर्म है, जो प्राय:लोप हो गया है। परमपिता परमात्मा प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा ब्राह्मण धर्म रचते हैं। ... पहले-पहले यह ब्राह्मण धर्म है, जिसको चोटी कहते हैं। ... परन्तु ब्राह्मणों को राजधानी है नहीं, इसलिए लिखा जाता है - 'सतयुगी डीटी वर्ल्ड सावरन्टी तुम्हारा ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार है'।''

सा.बाबा 22.7.08 रिवा.

''गीता का भगवान श्रीकृष्ण, ईश्वर सर्वव्यापी है। आगे हम भी समझते थे कि ठीक कहते हैं। अब समझते हैं कि माया ने इनहों से ऐसा कहलाया है। माया भूल कराती है नीचे गिराने के लिए और बाबा अभूल बनाते हैं ऊंच चढ़ाने के लिए।'' **(Q.** माया कब और कहाँ भूल कराती है, वार करती है अर्थात् द्वापर से या अभी संगमयुग पर ? वास्तव में माया का वार अभी होता है क्योंकि अभी ही हमारी माया से लड़ाई है।)

सा.बाबा 22.7.08 रिवा.

''बाबा ने सन्यासियों के लिए भी समझाया है कि वे कोई देवताओं जैसे पावन नहीं बनते हैं। ... तुम यहाँ आये हो सम्पूर्ण पावन बनने के लिए। ... सतयुग में हैं 16 कला सम्पूर्ण, त्रेता में दो कलायें कम हो जाती हैं। पिछाड़ी में दो बच्चे भी हो जाते हैं, इसलिए उनको क्षत्रिय कहा जाता है।''

सा.बाबा 25.7.08 रिवा.

''ख्याल रखना है - जैसा कर्म हम करेंगे, हमको देखकर और भी करेंगे। ... जो अच्छी सर्विस करते हैं तो वे जरूर महाराजा-महारानी बनते हैं। कम सर्विस तो महाराजा-महारानी के दास-दासियां बन पड़ेंगे। ... बहुतों को दान करेंगे तो बहुतों की आशीर्वाद मिलेगी।''

सा.बाबा 25.7.08 रिवा.

''तुमको वर्सा दादे का मिलता है। दादे के वर्से पर सभी आत्माओं का हक होता है। (इसी सिद्धान्त की सत्यता को सिद्ध करने के लिए भारत पर प्राय: सभी धर्मों और सभ्यताओं का राज्य हुआ है।) ... कल्प पहले जो देवी-देवता बने थे, उनका ही सेपलिंग लग रहा है। ... देवी-देवता धर्म वालों को ही यह ज्ञान का तीर लगेगा।''

सा.बाबा 26.7.08 रिवा.

अमृत-धारा

''जिनकी बुद्धि में यह नॉलेज टपकती रहेगी, उनको अपार खुशी होगी ... सदैव बुद्धि में यह ज्ञान टपकता रहे तो तुम खुशी में रहेंगे, फिकर से फारिग हो जायेंगे।''

सा.बाबा 3.10.01 रिवा.

यह अटल सत्य है कि जो हुआ वह टल नहीं सकता और जो नहीं हुआ वह हो नहीं सकता। जो हुआ वह अच्छा हुआ, जो हो रहा है वह अच्छा है और जो होगा वह भी अच्छा होगा क्योंकि ये विश्व-नाटक सत्य, न्यायपूर्ण और कल्याणकारी है। पवित्रता ही जीवन है। पवित्रता अर्थात् आत्मिक स्वरूप में स्थिति, आत्मिक स्मृति, आत्मिक दृष्टि और आत्मिक वृत्ति। जहाँ पवित्रता है, वहाँ सर्व प्राप्तियां, सर्व सुख स्वत: होते हैं, इच्छामात्रम् अविद्या होती है। सर्व सम्बन्धों में मधुरता होती है, ब्रह्मचर्य की स्वभाविक धारणा होती है, राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति, ईर्ष्या-घृणा, इच्छा-आकांक्षा का नाम-निशान नहीं होता है। पवित्र आत्मा में समय पर कृत्य का संकल्प स्वत: जाग्रत होता है, उसकी शुभ में अभिरुचि और अशुभ में अरुचि स्वत: होती है, इसलिए सदा निर्संकल्प होती है। सर्व आत्माओं के प्रति उसकी शुभ भावना, शुभ कामना होती है, जिसके परिणाम स्वरूप सर्व की उसके प्रति शुभ भावना, शुभ कामना अवश्य होती है।

विश्व एक नाटक है, इसमें न कोई अपना है और न कोई पराया है। न कोई अपना मित्र है और न कोई अपना शत्रु है। जो आज अपना है, वह कल पराया होगा और पराया अपना होगा। न कोई हमको कुछ दे सकता है और न कोई हमारा कुछ ले सकता है। न किसी ने हमको कुछ दिया है और न ही हमारा किसी ने कुछ लिया है। हर आत्मा अपना अनादि-अविनाशी पार्ट बजा रही है और अपने कर्मों अनुसार सुख या दुख को पा रही है। इसलिए किससे राग-द्वेष, भय-चिन्ता का कोई प्रश्न ही नहीं।

दाता एक परमात्मा है, उसने हमको जो दिया है, वही हमारे लिए हितकर है। भगवानोवाच्य - बच्चे, तुम परमधाम के रहने वाले हो, इस सृष्टि पर पार्ट बजाने आये हो, अभी तुमको वापस घर चलना है। इस सत्यता को समझकर देह और देह की दुनिया से न्यारे होकर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर परम-शान्ति का अनुभव करो, बाप के साथ विश्व-कल्याण की सेवा कर परमानन्द का अनुभव करो और साक्षी होकर इस विश्व-नाटक को देखो और ट्रस्टी होकर पार्ट बजाते हुए परम सुख का अनुभव करो। यही सुख-शान्तिमय जीवन का सुगम पथ है।

इस सत्य पर दृढ़ निश्चय होगा और सतत् अभ्यास तथा सहज स्थिति होगी तब ही हम अपनी अन्तिम मंजिल सुखमय जीवन और सुखद मृत्यु को सहज प्राप्त कर सकेंगे अर्थात् राग-द्वेष, भय-चिन्ता से मुक्त होंगे। यही जीवन की परम-प्राप्ति, परमात्मा का परम वरदान है, इस ब्राह्मण जीवन का परम-पुरुषार्थ और इस जीवन का परम-कर्तव्य है।

यह बात भी ध्यान में रखना अति आवश्यक है - ड्रामा का ज्ञान और आत्मिक स्थिति रूपी दोनों पहिये साथ होंगे और उनके बीच में परमात्मा रूपी धुरी होगी तब ही गाड़ी सफलतापूर्वक चलेगी।

''ब्राह्मण अर्थात् निश्चयबुद्धि और निश्चयबुद्धि अर्थात् विजयी। तो हर एक ब्राह्मण निश्चयबुद्धि कहाँ तक बने हैं और विजयी कहाँ तक बने हैं। क्योंकि ब्राह्मण जीवन का फाउण्डेशन है निश्चय और निश्चय का प्रमाण है विजय।''

अ.बापदादा 15.4.92

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:-

स्पार्क – आध्यात्मिक अनुप्रयोग अनुसन्धान केन्द्र
(SpARC – Spiritual Applications Research Centre),
बेहतर विश्व निर्माण अकादमी,
ज्ञान सरोवर, आबू पर्वत - 307501
राजस्थान, भारत
मोबाईल: 9414 15 1879, 9414 00 3497,
9414 08 2607
फैक्स – 02974-238951
ई-मेल – bksparc@gmail.com,
sparc@bkivv.org